সাহিত্য-পরিষদ্রাত্ববিদী--- তং ৫০

শ্রীশ্রীপদকণ্পতরু

অর্থাহ

পদকর্জা বৈশ্ববনাদের সঞ্চলিত দার্গ্ধশতাধিক বৈশ্বব পদকর্জ্ব-গণের ভিন্ন সহজ্যের অধিফ দানামণি এবং সম্পাদকের সংস্থাত ও পরিশিন্টে মুক্তিত প্রোয় এক সহয় গদাবলি, শন্ধশেষ, পদস্তী, ভূমিকা ইত্যাধি-সম্বশিত পদসংগ্রহ।



দ্বিভীয় খণ্ড

(ভূতীয় শাখা)

শ্রীসতীশচন্দ্র রায় এম্ এ সম্পাদিত

কলিকাতা

Bearing Police

২৪০০১ অপাদ সারকুলার বোড, বস্বীয়-গাহিত্য-পরিষণ মন্দির হইতে

শ্ৰীরাসক্ষণ সিংহ কর্ত্তক

প্রকাশিত।

26.6

...

Barba;

8-102 0

Ban 294.5512 P1235

Printed by

P. C. Mittra, at the Visyakosha-Press

9. Visvakosha Lane, Baghazar, CALCUTTA.

THE ASIATIC SOCIETY
CALCUTTA 700016

Acc. No. 637.33

SL. NO- 065406

লিভক্ত-স্থান্টী তৃতীয় শাখা

প্রথম পত্নব		ं विषक	गृ हे क	
		विकश्मात्त्रत्र दवरणं अञ्चलका प रश्लोखा	2.3	
(सम्राह्माका)		বাজিকরের বেশে জীক্ষকের স্বরংদৌতা	·97	
निमद्र पृक्षी	A	চতুর্থ প লব		
इवर(पोका,)	~		
वबरमोजा,— शिन्नजान-वरुख	\$	(अप्रश्रमीका-महस्राग)		
यश्रधकोच्या भाषाण-व्रभ श्रीदणीत्रवश्र	•	श्रिक्त है(यान श्रितायात अध्यक्त वाया	49.5	
प्रश्मु हो, श्रीप्रांचा अस्टि	8	বৰুনা-কুলে যাধবী-কুজে জীৱাধার অভিদার	చర	
শীকৃষ্ণের প্রকৃষ্ণি	ŧ	শ্রীরাধান্তকের সংখা গ	(748)	
গোবৰ্দন-কুলে শ্ৰীক্ৰকেছ সহিত্য শ্ৰীকাধীর বিশন	¥	প্ৰথম প্ৰব		
,, ৰিতীয় পানৰ		(क्रमांमञ)		
্য বিতীয় প্রাব প্রথংদেখ্যি)		त्रमानम,विदनोत्रहतः	৫৮	
		লীৰাধান্তক্ষের নগালন	28	
चबरामीटका नियाजिमात्र,क्रिशोत्रहस)•	গাৰী ও ওবেৰ উক্তি	8 0	
শ্ৰীরাধার বিবাহিসার	:3	শ্ৰীয়াধা,—খাণীনভৰ্কা	87	
দিবাভিসারে জীরাধা ও জীক্ষের উক্তি-প্রত্যুক্তি		बिजाबाक्यस्थ मिन गुनिया जनम	63	
क्रिक्क वर्ष्य के द्वीतानात्र वर्षा त्वाथ क विवासकरक		वर्ष्ठ भन्नव		
উদ্ধি-প্ৰত্যুক্তি	78			
द्मित्रांशाक्राकत स्थ-मृद्ध मिनन	30	(ब्रामिनाव)		
ভূতীয় পল্লব		द्रत्नालाम् ,—अत्भोद्रहः	8 9	
• •		স্থীয় নিকটে জীয়াধায় হলোলয়ায়	34	
(वदश्यां का)		্বলোকারোভ্রাদ,—ত্রীগোরচন্ত	84	
पनरकोळा,विकोत्रक	>5	প্রীরাধার প্রতি স্থীর প্রস্থ	¢.	
पश्राताचा,—श्रीनकामण्डल	>	শীরাধার বদোদশার	45	
मानिकामीत द्वारन की तरकत्र प्रदर्शना	,	वश्च-वरमामनात्र,श्चीरशीत्रकक्ष	***	
गानिनीय त्यान कीक्ट्रक्रम प्रमध्योका		জীৱাৰাত্ৰ অভাবদোদগাৰ	₩8	
शतानीय स्वरण जैल्लाकम् यहरत्सेका	. 10	পুনক জীৱাধার প্রতি স্থীয়-প্রত	-	
दशानिनीय त्यान विकृतका वस्तारकोका	3.	- Anialu neaturita (* 1401)	*1	
THE WATER CAPT TO PROPERTY THE PROPERTY OF THE PARTY OF T			. 65	
	11.		, tring tro (2)	

.

	4,0		
(449	pla.	विषय	ঠাদ
ইয়াখার রুম্যালগেধান্তরাগ্	45	শ্ৰীকাণাৰ কপাছবাধ	2 ep.
প্ৰশত বাংসাপোধাহ্যাপ,— খ্রীগোবেন	۾ ۾	প্নক্ষ রূপাধ্যাগ খ্রীসৌরচন্ত্র (নবছীপ-নাপর	वि
পুন ण्ड केंद्रांचेत्र करमास्थाव	10	উব্জি)	223
प्रम्क करमामाह— मनोद्र हेस्टि	15	প্ৰশ্ন শ্ৰীকাৰাৰ কপানুৱাৰ	224
चनक वरमामत्त्री इ देवाली इंडस	β. v.	य क्रांसन श्रह्म	
एमण्ड वरमानवाद,मधीर देखि	F 2		
भूनण्ड रदमारभाव,लीवाबाह विका	₽8	(स्वारणधानुनाम)	
किवाबाद वर्ध-प्रतास्त्रीह	2,4	कर्तकर्वाच्चरायवः सक्तर-१७६ (स्थाकः)	23.3
সংস্থারৰ		व्यास्थ्रभा प्रतानाः - श्रीरानिकस्य	
(প্রতিস্থান্তাশ্)		क्षेत्रस्थ्य चिक्र श्रीवाषात्र व्यादणरामाञ्च	224
		<u>च्रेक्टलक काञ्चाक</u>	721
অভিসংবাদ্ধাণ,— দ্বিন্যোগ্ডন্ত শ্রীরাহার হেট্রী-কাশাংল দ্বেল নিজুতে অভিসায়	: ©	সুন্ধ স্থান্তার ক্রেম্বরণার	34.
न्त्रभाषाः दश्यान्त्रात्त्रभाष्ट्रभावनाः सिक्क-मसिद्धः श्रीवृद्देशास्त्रभाषान्त्रभावनाः	-	ीक्राम्य भूत्रमीत आंक औरनीयकास्त्र	
	23	कः (८क्कटरूर्या क	256
क्षकेत शहर		জীক্ষকের মুবলীর প্রতি 🖫 রাখ্যর আলেংলোভি	*
(भणुकांग २ क्र.७ (बलन)		প্ৰীৰাশাৰু জ্বিক স্বাস্থ্য নিকটে প্ৰীকল্পেন সুম্বলীৰ	
सर्वील-सामग्रीत शिक्त श्रेरभाव्यक्त	3.5	्रदेख- वर्गन	149
স্থীর সহিত্ত শ্রীরাধার উক্তি-শ্র সুস্থিত	× ¢	শ্রীদৌরচন্ত্রের নিজের প্রতি আক্রেপাক্তি	35:
শীরাধার জ্যোংশাখিলার	់គ។	श्रिशेषां भिरमण व्यक्ति त्याः संस्थातम	700
রাধা-কুণ্ডের তীর-নিকুল্পে শ্রীক্সকের সভিত		স্থান্ত্ৰের প্রতি গ্রীগৌরচন্ত্রের আফেপোঞ্চি	202
প্রীরাধার মিলন।	وال	भवीत्रत्व श्रांत्र श्रीचामात्र क्यात्मरणाहिक	>4 0
শীমাৰাস্থকের পরশ্বর নাম্বরাপ উক্তি প্রত্যুক্তি	46	म्छोत्र अभि क्षेत्राधात्र चारकरमाणि	2.54
বীৰাথাককের সংখাগ	> =	বিধাতার আদি শ্রীরাধার আকেপোঞ্জি	>4+
जीवश्वाकरकात अस्त <i>ास</i> मृह्याः	> > >	ক্ষপের প্রতি শীরাধার আন্দেশোক্তি	3.04
নবম পল্লব		জীরাধা কর্ত্ত্ব স্থীর নিকটে কলপের	
(८अ४-देविका)		চরিত্র-বর্গন	₹ 0€
८वर-टेन्डिसा,वी शोत्रस्त	>•₹	অবজনাদির প্রতি ত্রীগোরচজের আন্দেশোধি	
विश्वाचात्र क्षान-, गठिका,नवीत्र ऐकि	26/3	ভদ্তনাদির প্রতি দীরাধার আক্ষেপাকি	` > \$>
विशृतकार ध्यम ेयहिन्छ।	5+6	সুটিলার সহিত শ্রীরাধার উক্তি-প্রাত্যুক্তি	580
समय श्रम		ন্ধীর নিক্ট প্রিরাধার থেগোন্তি	> \$ 8 6
(দ্বশাসুরাগ)		জেনের অভি শ্রীরাধার আন্দেশোক্তি	386 Maria
প্রাধানের পক্ষর ও একার-ভেন্ন (ব্যোক্ত)		भूमण्ड अस्त्रान, न्योरनोत्रहत्त्र	· .
कारमध्यम् नामग्रस्य अस्पात्रभ्यकः (दशाकः) सामास्त्रामः विरमीत्रमञ्जलकः (स्वयोग-मानशीय-केरिकः			

1 वश्य	পৃষ্ঠাত	दिवन्न '	अव
াৰ্থন ডোল-বিচার,—স্থীসণের প্রশার উজি	ે ડહર	প্রীরাধার দিশ্বরাভিসার ও সিকুরে শ্রীস্থকের	
नृतन्त्र व्यवस्त्रात्र,	Suc	স্কৃতি বিধন	4.4
প্ৰত অনুমান, তিনালাক শ্ৰন্থকান প্ৰতি শ্ৰীনালাক অস্বাস	-	প্ৰদুভ দিনাৰকে শীলাধার অভিসাম	805
भूमक अध्यात— श्रीरकोत्र े	313	পুনন্দ শ্রীয়াধার ক্যোত্মান্তিসার	२५७
विवाधीय तरनांकावितस्य अञ्चला	3 4 2		
्रम्क जीवांचार अरक्ष्माञ्चान	396	৮ চভূমাশ পল্লব	
ाशी कर्जुक क्षित्रांथा-इटफार सूटक मटकानन	3 5 40	(ক্লোলান)	
দ্রাদশ প্রায		करणांस्राम,—शिर्णात्रहतः	. 535
(অভিদাবামুরাপ)		ন্ধীয় এবিধাবিশয়ক অপৌলান স্ত্রোলানে স্থীকায়ণ জীয়াধার অভিনারেটি	५5 8 ड
নজিগাৰাছ্যাগ, প্ৰত্যোৱচন্দ্ৰ	F-44	्रुव म् -ग्र ठ न	420
প্রীবাধার ভিষিত্তাভিদার	**	জীয়াধার অভিসার	A*
ierse parem appear	ययर	মাজনার কালে প্রাধার প্রতি স্বীয় উক্তি	229
কুল্লে শ্ৰীরাধার আগমন ৩ প্রিকৃকেই নিক্ট	প্ৰের	কুল্পে শ্রীক্রক্ষেয় সহিত শ্রীস্তাধার বিলৰ 🔑	₹\$ %
ক্লেখ-বূর্ণন	इंदर	রূপোল্লাদে আরাধার দহিত জীক্তকের উচ্চি-	
मध्याभ	>24	প্যকু)(উ	
অয়োদশ প ম্ব		শ ে শ্বাপ	₹₹≯
(স্বান্তিসাবোৎকণ্ঠা)		পूजक ऋत्माक्षाम,—-शिक्षीववध	२ २ २
शक्तिरादादक्षेत्र, औरशोदहस्र	297	শ্রীকৃষ্ণের রূপ	# ২২ ৩
শ্ৰীরাধার অভিনামেংকঠা	335	প্রীকৃষ্ণের কৃষ্ণে অভিসার	
শ্ৰীয়াধার নিকুলে অভিসায়	>>8	ভারতের প্রতি প্রীরাধ্যে বাংগ্রীর উলি	# १ ₹#
শ্ৰীৰাধাৰ অন্ত শ্ৰীকৃষ্ণের উংকণ্ঠা	事代と	শ্রিক্তকে কুজে শ্রীরাধার ক্ষিদার	₹₹#
শ্ৰীয়াধাক্তকের নিকৃত্তে নিশ্ন	26	জীলাধাক্য কৰ মিশ্ৰ	234
दिनास्त्र श्रीताशाज इकिमाणिगात	3316	পুনত জীৱাধার কভিষার	
জীৱাৰাৰ বৰাকালোচিত দিবাভিশাৰ		অভিগাৰিক। জীৱাধাৰ প্ৰতি জীকুক্ষেত্ৰ উল্লি	ં . ૨ ૨૪
জীৱাৰার শীভকালোচিত দিবাভিসার	559	স ভ োগ	440
পুনত জীৱাধাৰ ধ্ৰাকালোচিত অভিনার	, >>v	পঞ্চদশ পশ্নব	
Burme famb nel war Butets w	ভিদার		
		(সর্বকালোচিত নিত্য-রাস)	
শ্ৰিয়াৰাৰ প্ৰীপ্ৰসালোচিত দিবাভিনাৰ	2.0		२ ३३०
क्रिक्केश्वरूकः क्रितानांत्र जनाकिनांत्र क	830 m 1 944	্ প্ৰীৱাধা ও গ্ৰীকৃষ্ণের স্থীগণ সহ বাস-জীকা	
The Martin Contentant	T 14 400	বিপরীত-সজোগ	,
and Sugar Selferteness of the		वद्यामहनाहिक मर्ग	, s top

বিংশ পল্লব

(काम उरमामश्रीय)		্ব (প্ৰকাৰান্তৰ বাৎসলা-বস)	
विषय	श्रीय	वियम	পৃষ্ঠাত্ম
श्राम-त्रामानाच, — श्रिरमोत्रहतः	285	क्षकादास्त्र वादममान्त्रम,नीरभोतस्त	263
ন্ত্ৰীয় নহিত আগ্লেষ্ট্ৰেক্সে নীথাৰাৰ যাস-		बिङ्गारकत नवनी-१त्रम मीना	3 4 a
Centralia		भाकेहियी भीना जीट्योबहत्त	२ १ ७
शान-तरमामाह,— खेरगोत्रहत्व	269	विक्रुक्तवनदारमद्र भाष्ट्रीहेमी गीर्ग	٠
मधानावद निकंते श्रीकृतकत्र वाम-वामानाव		वरमहाबनावि जोग।—श्रीटनोबङ्ख	२ १ इ
कुलारकरी कर्कृत सांधाकूख-छीय-निक्रक		শ্রীস্ক্রতের বৎসচারণাদি কালা	10
নীরাধাঞ্জের সংক্রেন	₹81~	এক্বিংশ পল্লব	
ল্লগ-ক্রীড়া,— প্রিপৌরচল	26	(সধারদ গোষ্ঠলীল:)	
श्रीत्राक्ष औदांबाकाकात्र अन-क्रीफ़ा	₹8≯	(वार्ड-अमन — जी रगोत्रध्य	493
নপ্ৰদশ প্ৰব		े कृ रकद (शर्क-नक्त	*
(🚵 व्योषकानित्र वाषा-मीमा)		শ্ৰিক্ষকের পোষ্ঠ-দীশা ,	5/2
•		जिक्कास मधानत्वय महिक वन-एकामन	২৮৪
শ্ৰীকাৰৈত চয়েশ্ৰ অন্য-দীশা	२.००	প্রক্রিকের উত্তর-গোর কর্ণাৎ গোর্ম মইডে	
জীনত্যানক্চজের কম-লীলা	? ¢ ?	শ্ৰেড্যাগ্ৰন	হ্মণ
ब्रिटेड्डइस्ट्रब्ड म्य -गोला	₹€8	দ্বাবিংশ পল্লব	
অফ্টাদশ পল্লব		(প্রকারান্তর সধ্য-বাৎসল্য)
(গ্রীকৃষ্ণের জন্ম-লীলা)	,	(भाईविशासानि,—अत्भोत्रवस	520
ভত্ততি— শ্রীগোর চন্দ্র	269	শ্ৰীক্লকের গোষ্ঠ-বিষার	
क्षित्र कमानीमा (नत्यादम्)		ঞ্চিক্ত কৰ্ত্ৰ বাজিক-পদ্ধীৰ পৱ-ভোনস	345 .
শ্ৰীপাৰিকার কলোৎসৰ	২৬ 5 ⁽	প্রীক্ষমের স্থাপণ সলে বন-বিহার	121
উন্বিংশ পল্লব		ত্ৰয়োবিংশ পৰ্লৰ	. :
, 14	· .	(গোৰ্থন-লীলা)	` \ \ .
(কৌমারে।চিত বাৎসল্য)	,	त्मानक्षम-नाबा,जीरगोतहत्त	445
क्षामाम-कारमाहिक वारममा,—श्रीरभोत्रहर	¥ २७२	জ্ঞক্তম গোৰ্ছন-ধাৰণ দীলা	•••
- क्रिक विश्वय स्थितंत्र-कारणार्विक राष्ट्रम	NJ 240		1. 五氟烷烷
জীকুকের ক্লান্তর গীলা	₹₩#	চভূবিংশ পর্ব	, aq
ক্ৰৌমাৰ-শোগত-কালোচিত বাংৰন্য,	1. 188 8	(भवदकानीय महाबाग)	
		् रकृतिय-विश्वीसम्ब	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A
किक्कवित्रक दर्भगाव-रमीयक मारेगाकि	S National	विकास रहेंगी सानि असल सम्प्राण	
्र वादनता । -		TOILED IN THE STATE OF	

	10	• ,	
•	rėt u	विवय ?	1914
বিধৰ জাব-শরীকার্থ গোপীগণের প্রতি শ্রীক্সফের		क्रिक्क कर्क् के विश्वासाय विश्व -(ब्रोब	-888
জাৰ-পরাক্ষাৰ সোধান্যতিক জাত ভারত সংগ্রহণ স ক্লান্ত্রক পরিহাস-উল্লি	0.5	গ্ৰীবাৰার প্ৰতি গ্ৰীক্ষের পৰিহাস	986
कृत्वन नावशानाकाक खदल्लवर्ष शोभीनरनत्र देनरकाल्नि	6.9	ক্রীকৃষ্ণের প্রতি ত্রীরাধার ভর্গন-উল্ভি	•
প্রেণ্ডির স্থিত প্রক্রিকের মহারাদ	a .	গ্রীয়াধার প্রতি শ্রীক্ষকের সরস প্রত্যুক্তি	487
वान-मध्यम हरेटल विवाधीय महिल विकृत्स्यत	9	দ্ৰীর খচনে আদাধার গোবর্জন-কুলে প্রস্থান	⊘8 ⊁
काम-मञ्जन ११८७ जागराम गार्च नार्व कर्		ডদৰ্শনে শ্ৰীক্ষণেৰ তথ্য গমন ও শ্ৰীরাধার	
	O.b	সহিত মিলন	
ক্লফাথেবদ জীগাধার প্রবশতঃ তাহার নিকট হইতে		পোষ্ঠগনন সময়ে জীককের রূপ-দর্শনে জীরাধার	ľ
শ্রীক্ষাম অন্তর্ভান ও শ্রীরাধার সহিত		উ(-	#
গ্রেপীগণের মিবান	۵۰,۶	मध्यक-पूत्रणी यामन,	oe>
भ्राचाराज्य । नगान श्रीवाधात महिन्द्र अव्यव (ग्रांनीजंगव (यह		োঠে শ্রীক্ষণের সংকত-বুরলী বাদন	*
अक्षावात गार्क गणा प्रतान गणा पर अक्षावात सम्मा-लुलिटन वश्मी-वातम	৺ ৺	মপুরার পোরস-বিক্রম ছলে জ্রীরাধার গোর্চে	
শ্লীকৃষ্ণের সহিত পোশীগণের মিশন	955	গ্ৰন	વ્યર
श्रीकां । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	७>३	শ্রীরাণার প্রতি শ্রীকৃষ্ণের পরিহাস্-বাক্	
जामानमादन केश्रीशंकृत्कत्र सन-दर्शन	956	শ্রীকুষ্ণের রূপোলাশ	969
শ্রীরাধাকুকের কুলে ভোলনাদিশীশা		ভৎশ্রবদে শ্রীক্বকের প্রতি শ্রীবাধার ক্ষরিম	
भूत्रक होत्र,— श ्रिकोद्रहत्त	় * ৩১৭	ডৎ স্মা-ৰাক্য	968
पूर्ण के श्री श्री का का का निकास का न	410	শ্ৰীকৃষ্ণ ও জীৱাধার পরস্পারের প্রতি	*
प्र काट गटका र् (હર	ः - श्रेष्ट्रप्रांतिः	***
4	•(1	ক্ষম-মূলে শ্ৰীরাধাকক্ষম বিশন	969
পঞ্চবিংশ পল্লব	•	প্রকারান্তর দান-কেলিশ্রীগৌরচন্ত্র	,
(গোষ্ঠ-বিহার ও দান-লীলা)		মধুয়ার গোরস-বিজয় ছলে বড়াইর সহিত	
পোষ্ঠ-বিদান্ত,	05F	শ্রীবাধার শভিদার	oth
क्रीकृरक त्र त्वांडं-विद्यात	७१३	প্ৰথে শ্ৰীকৃষ্ণ-বাধাৰ সপৰিহান উক্ষি-প্ৰত্যুক্তি	<6>>
🖣 রাধান গোঠ-নিকুলে ছিবাভিসার	૭૭૨	গ্রীরাগান্ধফের নির্জন-কুলে গোপনে বিসন	***
স্থাপন্দে ছলমাপুর্জ্ক সংখত-ভূলে জীৱাধা	4	দিনান্তরে পুনশ্চ দান-কেশি	٠,
া সহিত্য 📆 ছকেছ বিশন 🕒 🕒		(भावन-विच्या प्रति श्रीवाशांत्र श्राक्तिनांत्र	***
केखर-एगार्ड कर्बार जिल्हरकत स्थानमन	0.08	ৰড়াইৰ ওঞ্জীকুঞ্চের সপরিধাস উক্তি প্রাকৃতি	960
ण्नण्ड त्यांक-्विकात्र,—श्रीरगोतककः		্ৰীকৃষ্ণ ও গ্ৰী ৰাধাৰ সপৰিবাস উক্তি অভু ন্তি	460
क्ष्महिक-निकाशिकक	 	জীৱাধাদে পরিত্যাগ করিয়া ছলে কথীলনের	
অক্তুত্ব সোই বিহাস	40%	व्यक्ति अस्य अस्य १५००	074
	4.50 005	करप्रांत विश्वासंस्था विनम	918
Bangs orthogram and estudies		अकृत र विशेषां नवामध्यय व्यक्ति नाव-	
	A 18 / 18 /		

1, 1

, •,	ন্ডু বিংশ পল্লব		বিষয়	yist a
	(त्भोका-दिलाम)		প্রকারান্তর হোরি-লীলা ইংগৌরচঞ্চ	6 50
	रिश्व		শ্ৰীক্ষকের জন-বুৰভিগণের সহিত কোরি-দীশা	8 + 4
	१९५५ स्रोक्श-विमान,	णुके!#	প্রীক্তকের অংগ নিজ প্রতিবিখ-দর্শনে অঞ্চ না	গৰী-
		ゆちこ	ত্রমে শ্রীরাধার সাস	8•3
	শ্লিম-গ্ৰহাৰ শ্ৰীৰাধাক্তকেৰ লোকা-বিন্দান	* 	্থকৈৰ্ত্ব জীৱাধার ভ্ৰমাপনয়নে মান-জন্ধন	
	সধীগণ সঙ্গে শ্রীক্সাধার মানস-গলা-ভারে গ্র নাথিক-ক্সণী শ্রীক্সকের নৌকার সদীগণ সহ	. 	अन्तर्भाक्षक कांच (धना	8.0
	व्यविश्व अस्तिहरू		নীতাধার অভিযাধেরৎকর)	8 • ¢
	व्यक्षतात्र कार्यास्य नवीत अत्रक सर्परन खेडावीत काल्या	34 ₩	শ্রীরাধার বিশিয়ে অভিসার	2+4
	নাবিকের বাহত শ্রীলাধার নাগরিকাস উক্তি-	,9	জীবাহা ও দ্বাগৰ দৰ 📆 ক্লাফের বসক-বিভার	8 • 9
	अपूर्णक कामवात्र न प्रकान अ	665	আকারাতর অসম-বিহাব, — শ্রীণৌরচন্দ্র	•*
	खपूराका समूनाव (नो का-विकाश—खोरशोब्हरू	-597	न्धीत प्रत्य जीवाशीय बभूगा-क्नानिकृत्य	
	न्योगंव भाष क्रियांच यहुमां-कृष्ण अमन	₹	ক্ষ ন্ডিগাঁৱ	3 * 1
	শ্রীক্ষের নৌশার স্থাপ্ত শহ শ্রীরাধার	19	ীত্বকের প্রতি দুকার বৈশরীতারশোচ্ত	
	wicated .	13 Pm	উক্তি	8 = 4
ı	শমুনার ভর্ম দর্শনে জীরাধার আল্ড।	৩৭৯	্রীক্ষকের জগুমন্তর জন্ম	#
	ৰড়াইর প্রান্ত শ্রীরাণার কুলিম তথ্যনা ও নো		শীরাধারুকের নিতুকে যিশন	82>
	শীরাধাকুফের মিলন	ITIN	भूमण्ड वामको-भूविभाव दुन्धा-विभिन्न ज्ञित्राद्यक	₹
	भूनक विशेष ः स्वीकानिकान	۳ دعن	भिन्न	336
		•••	ीकृत्कत्र शहका श्रीवाधात निक ते पृत्वीत शहर,	
	সপ্তবিংশ পল্লৰ		উতি ও শীরাধার অভিশার	*>€
	(रमस्ट-लीमा)		শ্ৰীৰাধাৰুকেৰ মিশন	*
			নাদৰী নাদ-নীলা—শ্রীলোরচন্ত্র	857
	यनव गौगा,— चीरतोत्रहस	÷.	জীরাধার বাসন্ধী পূর্ণিনাত কুলা-বিশিনে অভিনা	
	জীয়াধা ও স্থীগৰ সহ প্ৰীকৃষ্ণের বসন্ধ-লালা	*	खेशाधा ७ अवस्थातंत्रन मान खेल्ला सम्बोन	
	ৰপন্ধ-ৰৰ্ণন	4年8	न बागरकाण	832
	ছোরি-নীলা,—শ্রীনোরচন্ত্র	31-40	রাস-বিহারে মন্ত্রীগণের প্রতি শীক্তক বির্বিত	
	শ্ৰীমাণাকুকেয় হোরি-গীণা	9	वायशात पर्याप्त अधिमारम विश्वाशात व्यवस्थ	
	(बान-बोना	640		843
	विश्वासंत्र महिष्ठ विश्वासन्त (लान-नीना	929	নথীয় মূৰে জীগাৰার উদ্বেশ পাইরা জীগারার নিকট শীক্ষকের পদন	
	दाप्ति-वरनारगाव — शैरनोवरुख शिरामा	494	विकृतकत्र वर्गस्य शिक्षांत्र व्यवस्थातः	
	ক্ষীৰানায় প্ৰতি ন্থীসন্ত্ৰ পদাৰ ৰঞ্চনাবিবন্ধ	ر الميان مناسبات	व्यक्ष्यक्र व परन व्यक्षात्रक्ष नामकाम विश्वविद्यक्ष प्रमानम	
	Contractor was Section assessment	°a ⇔b ea ayayaka	श्रमण जागरी-जागरीमा केलोसक्य	
	digitus ner Maleia nertientu		Annie alections alema	
	Applete Mentalegin-gerim	V CONT	THE RESERVE THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE	公司 司 7

रिरा	পৃষ্ঠাত্ব	ত্ৰিংশ পল্লৰ			
শ্রীধাধান্তক্ষের বিদন ও রাস-কেলি	826	(ঝুলন-যাত্র।)			
সংস্থাপ	054	विषय	পৃষ্ঠাত		
म्न-भान, जी रत्रोत्रहत्त	802	भू नन, भैश्वा बहता	88>		
मधीशन मह शिवाबाक्टकार्य भूमा-अणुवकारा		নীয়াধাকুজের খুলন-দীলা	882		
ক্লীড়া- মুদ্ধ	*	विनावात सुगव,श्रीतिशकता	888		
ীরাধান্তদের সূপ-দোল-বিশাদ	8.95	क्रिमासद्य श्रीवाधान्नदक्षत्र यूगन	986		
भावना-विकास, चिंदगीबच्छ	8 40	একতিংশ পল্লয			
জিলাধাককের বাধনী-বিশাস	:1				
জন্ধীবিংশ পল্ল <i>ৰ</i>		(অভিযেক-লীলা) প্রীবাস পণ্ডিভের স্থরে গ্রীবোরসংক্ষর	8 1 0		
(স্থান-যাত্রা) লান-যাত্রা,—ঐগৌরচন্দ্র লীককের দান-যাত্রা	१७६ ४७४	অভিবেক অভিকানগছে ইংগানীয়াস প'উত্তের গৃহত জ্বীনোটাক ও শ্রীনিড্যানলের অভিবেক	862		
क्षेत्रम्थं दहरवन्न शान-बाजा	50 5	শ্রীগৌঙ্চন্দ্রের অবভারের পূর্ব্বে অভিষেক দেবগুণ নহ স্বয়পতিকর্ত্বক শ্রীক্রক্ষের	8€ ®		
উনত্তিংশ পল্লব		অভিবেদ শ্রীরাধার অভিবেদ	9 2 9		
(রণক্তো)		প্রন্ত গমতিথি-পূতা উপসংক্ষ শ্রীস্বাচের	м		
अभवाब स्टब्ब ब्रथाट्य भाविष्यमध्य गर्		भ िखटन क	845		
শ্ৰীপৌৰচজেম নৃত্য	800	এছকারের থার্থনা			



<u>শ্রীপ্রাপদকণ্পতরু</u>

(তৃতীয় শাখা)

শ্রীগোরচন্দ্র কামোদ।

ক লিযুগ-মত্ত-মতঙ্গজ-মরদনে^২ কুমতি-করিণি ছুরু গেল। পামর তুরগত নাম-মোতিঃ শত-দাম কণ্ঠ ভরি দেল। অপরুপ গৌর বিরা**জ**। শ্রীনবদ্বীপ-নগর-গিরি-কন্দরে উয়ল কেশরি-রাজ॥ ধ্রু॥ সংকীর্ত্তন-রণণ লক্ষতি শুনইতে দ্বরিত দীপি-গণ ভাগি । ভয়ে আকুল অণিমাদি মৃগীকুল পুণবভ^৮ গরব ভেয়াগি ॥ জ্যাগ যাগ যম তিরিপি বরত সম শশ প জন্মকি জরি যাতি। বলরাম দাস কহ অতয়ে সে জ্বগ মাহ হরি-ধনি>> শবদ খেয়াতি ॥১॥৬১৭॥ পাঠান্তর

বিশোষ দ্রেফীব্য—আনরা গ পুথির ৩র ও এর্থ শাখা প্রাপ্ত হই নাই; স্কতরাং অভংপর গ পুথির পাঠান্তর উদ্ধৃত করা যার নাই।

১। ইহা প-র-সাপুথির ১০৯১ সংখ্যক পদ। ২। 'বতক্স-মূর্দনে' ত্লে 'মতক্ষ্ম বদনে' ক, মিতক্ষজনবদনে প-র-সা। ৩। 'দূর' ক, চ। । 'মোতিম' ক। ৫। 'বন' ক, ঘ, চ; 'বনহ' । ৬। 'বীপগণ' ক, খ, চ, প-র-সা। १। 'ভাগ' ক। ৮। 'পূমবত' ক; 'পূমরত' ধ, ঘ, চ; 'পথরত' প-র-সা। ৯। 'তেয়াগ' ক। ১০। 'সম' চ; 'শশি' ক। ১১। 'হরি' ক, চ, (পাঠাস্তর—- 'ধনি')।

টাকা

>--২। "কলিমুগ" ইত্যাদি। কলিমুগরাপ (মন)-মন্ত মাতঞ্চের মর্দন অর্থাৎ বিনাশ হেডু (তদাপ্রিত) কুবৃদ্ধিরূপ হস্তিনী দূরে পলারন করিল। (স্ত্রী-জাতি অবধ্য বলিয়া পরিত্যক্ত হইল, ইহাও ব্যক্তিত হইতেছে)।

৩—8। "পামর" ইত্যাদি। (শ্রীগৌরাক)
নাম-রূপ (অমূল্য গজদস্ত-জাত) মৃক্তাসমূহের মালা
অধম ও দরিদ্র ব্যক্তিদিগকে কণ্ঠ ভরিয়া দিলেন।

e— १। "অপক্প" ইত্যাদি। অপূর্ব শ্রীগোরাল বিরাজ করিতেছেন। (বোধ হইতেছে যেন) শ্রীনব্দীপ নগরের পর্বত-শুহার অর্থাৎ পর্বত-চূড়ার ভার সমুচ্চ মন্দিরের গর্ভে সিংহ-শ্রেষ্ঠ উদিত হইয়াছেন।

৮—>>। "সংকীর্জন" ইত্যাদি। সংকীর্জনরপ বুদ্ধের হন্ধার শুনিয়া পাপরূপ (হিংল্ল প্রাণী) নৈকড়ে বাব সকল (সিংহের ভ্রেছে) পলাবন করিল। (যোইর্গ্বর্যা) অণিমা প্রভৃতি (নিরীহ প্রাণিস্বরূপ) ষুগীগষ্ক ভয়ে আক্ল (হইল); পুণাবান্ বাকি (পুণা-কার্যা-জনিত) গর্কা পরিত্যাগ করিল।

১২—১৫। "ত্যাগ" ইত্যাদি। দান, যজ্ঞা, সংযম, তীর্থ ও ব্রতস্থরণ (ক্ষুদ্র প্রাণী) শশক ও শুগাল (সকল) জালাতন হইল। (পদকর্তা) বল-রাম দাস কহিতেছেন,—এই জ্ঞাই ত জগতের মধ্যে (শ্রীগোরাঙ্গের উদয়ে) হরিধ্বনি শব্দ (এক অর্থে — 'হরি' 'হরি' শব্দ, অপর অর্থে 'সিংহ' 'সিংহ' শব্দ) প্রচারিত হইরাছে। ('হরি' শব্দের 'রুক্ষ' ও 'সিংহ' উভয় অর্থই প্রাদিদ্ধ বটে; এই পদে বলরাম দাস শ্রীগোরাঙ্গ-লীলার সহিত সিংহ-লীলার সাদ্ভা প্রদর্শিত করিরাছেন)। তুলনা কর্মন,—

"হরিঃ পুরটফুন্দরছাতিঃ কদশস্নীপিতঃ। সদা হৃদয়কন্দরে কুরভুবঃ শচীনন্দনঃ॥" —বিদশ্বমাধ্ব নাটক।

শ্রীরাগ।১

নিতাই গুণমণি মোর নিতাই গুণমণি। আনিয়াং প্রেমের বন্যা ভাসাইলেও অবনী॥ প্রেমের বন্যা লইয়া নিতাইও

আইলা গোড়দেশে।
ডুবিল ভকত সব দীন-হীন ভাসে ॥
দীন-হীন পতিত পামর নাহি বাছে।
ব্রহ্মার তুর্র ভ প্রেম সভাকারে যাচে ॥
আবন্ধ করুণা-সিন্ধু কাটিয়া মুহান ।
ঘরে ঘরে বুলে প্রেম-অমিয়ার বান ॥
লোচন বোলে আমার নিতাই যেবা
নাহি মানে ।

আনল জালি দিয়ে তার মাঝ মুখখানে• ॥২॥৬১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯২ সংখ্যক পদ। ২। 'অমিয়া' চ। ৩। 'ভাসাইয়া' ক; 'ভাষা-

ইল' প-র-সা। ৪। 'নিতাই আইলা' স্থলে 'আইলা নিতাই' ক, থ। ৫। 'জুহান' প-র-সা। ৬। 'আনল আলি' ইত্যাদি স্থলে 'আনল আলিয়া দি' ইত্যাদি ঘ; 'আনল আলিয়ে তার মুধ মাঝ থানে' প-র-সা।

টীকা

৭ — ৮। "আবদ্ধ" ইত্যাদি। (শ্রীভগবানের)
করুণারূপ সমুদ্ধ আবদ্ধ অর্থাৎ নিরুদ্ধ (ছিল);
(নিভাই) উহার মুহান অর্থাৎ জল-নির্গমের প্রবাদী
কাটিয়া (দিলেন)। (তথন) প্রেম-রূপ অমুতের
বক্তা ঘরে ঘরে বেড়াইতে লাগিল অর্থাৎ সমস্ত
দেশ প্লাবিত করিয়া ফেলিপ।

অথ সম্ভ্রোগরদস্য স্বয়ংদৌত্যং* তন্তাবযুক্তঃ শ্রীগৌরচক্রঃ।

কামোদ।১

দেখ দেখং গৌরচন্দ্র বর-রক্ষী।
কামিনি-কাম মনহিঁ মন সঞ্চক
তৈছন ললিত ত্রিভঙ্গী॥ গ্রন্থ॥
শ্মিত-যুত বয়ন কমল অতি স্থন্দর
শোভা বরণি না হোয়।
কত কত চাঁদ মলিন ভেল রুপণ হৈরি
কোটি মদন পুন রোয়॥

• 'শ্বয়ংদোত্য'—'শ্বয়ং দৃত' বা 'শ্বয়ং দৃতী' শব্দের উত্তর ভাবার্থে 'ঝ' প্রতায় বারা 'শ্বয়ংদোত্য' শব্দটি সিদ্ধ ইইয়াছে। প্রীরূপ গোঝামী "উচ্ছল-নাল-মণি" গ্রাছে লিথিয়াছেন,—"অত্যৌৎস্থক্য-ক্রটদ্রীড়া বা চ রাগাতিমোহিতা। শ্বয়মেবাভির্ভ্তে দা শ্বয়ংদ্তী ততঃ শ্বতা॥" অর্থাৎ যে নায়িকা অত্যন্ত ঔৎস্ক্রা হেড়ু বিগতলক্ষা ও শ্বয়্রাগে বিমোহিতা ইইয়া নিজে নায়কের নিকট মনের ভাব ইলিতে প্রাকাশ করে, তাহাকে 'শ্বয়ংদৃতী' বলা হয়।

ڧ

চামরি-চা্মর লাধে স্থক্ঞিত
ক্ঞিত কেশক বন্ধ।
পস্থ হিঁপন্থ চলত অতি মন্থর
মদগজ-দমনকঃ ছন্দ॥
আন উপদেশে কহত করি চাতুরি
মধুর মধুর পরিহাস।
নিজ অভিযোগ করত পুরুব মত
ভণ রাধামোহন দাস ॥৩॥৬১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৯৩ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখ দেখ' স্থলে 'দেখ' ক, চ, প-র-সা।
৩। 'রূপ' ক, চ, প-র-সা। 'রূপ' পাঠে
ছন্দংপতন অনিবার্থা। ৪। 'গমনক' ক, চ;
দেশনকি'প-র-সা। ৫। 'বোলত' ক, খ, ঘ, চ।
টীকা

> ত। "দেখ দেখ" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর ক্ষেত্ত "দেখ দেখ" ইত্যাদি পংক্তিত্রের অর্থ লিথিয়া-ছেন — "কামিস্তাঃ শ্রীরাধারাঃ কামস্ত কামক্রীড়াদিকারণক্ষ প্রেমস্তস্তা মনস্তেব সঞ্চরণাৎ তদ্ধাবাক্ষেস্ত অস্ত মনসি স্ক্তরাং সঞ্চরণাৎ তদ্ধাপং লিতিভাবিশিষ্টভলিযুক্তং পশ্ত পশ্ত। তথাহি—

বিশ্বাসভিদিরদানাং ক্রবিলাসমনোহর।।

স্থকুমারা ভবেদ্যত্ত ললিভং তত্নীরিতম্॥'
পক্ষে শ্রীনব্দীপকামিনীনাং সর্ব্বাসাং মনসি মনসি
প্রতিমনসি কামসঞ্চারকং ললিভং স্থক্দরং বিশিষ্টং
ভলি যক্ত তং পশ্রা।" অর্থাৎ (এক অর্থে)
শ্রীগৌরাদ্ধকে দেখ; (ভাঁহার) চিত্তে কামিনীর
অর্থাৎ শ্রীরাধার কাম, কি না—কাম-ক্রীড়ার মূলীভূত
প্রেম সঞ্চরণ করিতেছে; (ভজ্জান্ত) ভাঁহারও
সেইরূপ স্থললিভ অলভলী হইরাছে। (শ্রীগৌরাল
শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার ভোবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার ভোবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার ভোবে বিভাবিভ বলিরা, ভাঁহার পক্ষে

দর্শনে নবন্ধীপ-নাগরীদিগের সকলের মনেই কাম--ভাব সঞ্চারিত হইতেছে।

৪—৭। "শ্বিভ্যুত" ইত্যাদি। "হাশ্বযুক্ত বদন-কমল" বাক্য দারা পদকর্ত্তা ব্রাইতেছেন যে, শ্রীগৌরাঙ্গের মুথ-পদ্ম সাধারণ পদ্মের স্থাদ্দ রক্ষনীতে মুদিত ও মান-কান্তি না হইয়া দিবারাত্র সমভাবে বিক্ষিত থাকে; স্থভরাং শ্রীগৌরাঙ্গের মুথপদ্মরূপ অসাধারণ পদ্ম-দর্শনে চন্দ্র লক্ষ্যা কিংবা ভয় হেতু মলিন হইতেছে; (অভুত নবীন কাম-দর্শনে) কোটি কোটি কাম রোদন করিতেছে।

১২—১৫। "আন উপদেশে" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর "আন উপদেশে" ইত্যাদি পংক্তিগুলির
অর্থ লিথিয়াছেন — "অশুবাপদেশেন চাতুর্যোগ শক্ষোঅর্থ বোগ্ভজ্যাদিন। পরিহাসং বিতনোতি। অতঃ
পূর্ব্ববিতারোচিত-বাচিকাজিক-চাকুষানদ-জনিতাভিযোগং করোতি।" অর্থাৎ প্রীগোরাক অশু ছলে
কৌশল করিয়া, মধুর পরিহাস ব্যক্ত করিভেছেন;
(অতএব) রাধানোহন বলিতেছেন যে, প্রীগোরাক
পূর্ব্ববং সর্থাং শ্রীকৃষ্ণাবভারের স্থার নিক্ক অভিযোগ
কি না — বাক্য, অলভন্ধী, নয়নভন্ধী ইত্যাদি দ্বারা
প্রপ্রেজিত বাক্ত করিতেছেন।

বেলোর । ১

অতি অমুরাগং ভরল মন উৎস্ক
টুটল ধৈরজ লাজ ।

তমু অমুলেপন সম্পক পরিজন

তেজল যত কিছু সাজ ॥

দেখ রাই চলত অতিং মনদ ।

নিজ অভিযোগ করত অতি নিশ্চয়
বৃঝিয়ে কাজকং বন্ধ ॥

মুথ জিতে শর্দ-স্থাকর তমু-ক্চিকবলিত-কাঞ্চন-দণ্ড ।

নয়ন তিখন শর ফুলশ্র-মদহর
ভাঞ্জ মদন-ধ্যু-খণ্ড ॥

• ঐছন ভাতি ভাবিনি ভালে ভেটল মনমথ-মনমথ পাশে। অফুভব লাগি গুপতহিঁ° সথি চনু কহু রাধামোহন দাসে ॥৪॥৬২•॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১০>৪ সংথ্যক পদ।
২। 'অফুরাগে' প-র-সা। ৩। 'প্ডি'চ।
৪। 'বুঝিয়া' ক, প-র-সা; 'বুঝিয়ে'ঝ। ৫।
'কাজকি'প-র-সা। ৬। 'জিডি' প-র-সা। ৭।
'গোপতহি'প-র-সা।

টীকা

e—१। "দেখ" ইত্যাদি। (কোনও স্থী অপর স্থীকে সম্বোধন করিয়া বলিতেছেন) দেখ, রাধা অতিশয় ধীরগমনে চলিতেছে; (সে) নিজে অভিযোগ অর্থাৎ বাক্য ও অঙ্গভঙ্গী ধারা কৌশলে প্রাণয়েন্দিত প্রকাশ করিতেছে; (অভএব) অতি নিশ্চিতভাবে (ভদ্ধারা তাহার স্বয়ংদৌত্যরূপ) কার্য্যের অত্মবন্ধ বুঝিতে পারিতেছি।

৮—১১। "মুখ" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার) মুখ—
জিত হইয়াছে শরতের স্থধাকর যৎকর্ত্ক অর্থাৎ
শারদচন্দ্রবিজয়ী; (তাঁহার) দেহ-কাস্থি—কবলিত
হইয়াছে কাঞ্চনদশু যৎকর্ত্ক অর্থাৎ স্থা-যাষ্টর
শোভাহারিণী; (তাঁহার) নয়ন অর্থাৎ নয়নের
কটাক্ষ পূষ্পাশরের গর্ম-হারক তীক্ষ শরস্বরূপ;
(তাঁহার) ক্র কন্দর্শের (ত্রিজ্বনবিজয়ী) ধয়ুর
ত্রকাংশ কিংবা কন্দর্শের (গর্মের) থগুনকারী। "ফুলশর-মদহর" বিশেবণের হারা পদকর্তা
ব্রাইতেছেন যে, কন্দর্শ পূষ্ণাময় শর হারা ত্রিভ্বন
জয় করিয়া, মনে মনে যে বিজয়-গর্ম অমুন্তব করিতেন, শ্রীরাধার নীলোৎপালবৎ নয়নের স্থতীক্ষ
অপাল-দৃষ্টি হারা দেই গর্ম নিয়াক্রত হইয়াছে।

शानभी । ১ মুরলী - মিলিত অধর নব পল্লব গায়ত কত কত রাগ। কুলবতি হোই মন্দির ছোড়ি আয়লু সহইং না পারি বিরাগ॥ মাধব তোহে কি শিখায়ব গান। গৌরি আলাপি শ্যাম নট° সঞ্চক্ তবঙ তুহুঁ বিদগধ জান ॥ ঞু ॥ মুরলি ছোড়ি অছু মধুর আলাপবি তেসর জন জনি জানা। কণ্ঠহি কণ্ঠ মেলি অব সম্বিধ্যে যতি খণে গোড স্কঠান ১০॥ নিরজন>> জানি হৃদয়ে অবধার্বি>২ ঐছন গুণবতি-ভাস্ত। গুণিজন-লাজ যৈতে নাহি হোয়ত কহতহি^{১৪} গোবিন্দ দাস ॥৫॥৬২১॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৯।২৩৭ সংখ্যক ও পার পুথির ২০০ সংখ্যক পদ। ২। 'মুক্লনী' চ। ৩। 'গাওত' থ, পার-সা। ৪। 'কহই' থ। । 'নঠ' পার সা। ৬। 'জব' পার-সা। ৭। 'তেসর' ইত্যাদি গুলে 'সো ('তে' ২০৭ পদ, পার-সা।) সব নাহিক জান' পার-সা। 'তে সব জন নাহি আন' ক; 'তে সব জন নীক জান' চ। ৮। 'সমুবরে' চ; 'সমুবহ' পার-সা। ৯। 'হতি খণে' হলে 'তেখনে' পার-সা; 'যত খনে' পার। ১০। 'হঠাম' ক, খ, চ, পার। ১১। 'নিক জান' পার-সা। ১২। 'অবধারির' পার-সা। ১৩। 'ভাস' (পারত' পার ভাষ' ক, খ, ছ, চ, পার-সা।

টাকা

>--৪। "মুরলী" ইত্যাদি। (এরাধা মিট ঋ ইন্দিতপূর্ণ বাংক্যে জ্রিকককে কহিতেছেন) মুরলী- সংবৃক্ত (তোমার) নব পল্লবরূপ অধর কত কত বাগ (এক অর্থে—মলার মালবাদি রাগ, অন্ত অর্থে— অন্তরাগ) গাহিতেছে অর্থাৎ প্রকাশ করিতেছে; কুলবতী হইয়া, (আমি) মন্দির ছাড়িয়া আসি-য়াছি; (কেন না) বিরাগ (এক অর্থে—রাগ-রাগিণীর ব্যক্তিক্রম, অন্য অর্থে— উদাসীন্য) সহিতে পারি না।

েশ। "মাধব" ইত্যাদি। ছে মাধব।
তোমাকে কি গান শিথাইব । গৌরী (রাগিণী)
আলাপ করিয়া (তৎপরে) শ্রাম ও নট (রাগিণীর)
সঞ্চার অর্থাৎ বিস্তার করিবে; তবে জানিব, তুমি
অভিজ্ঞা বটে। (অপর অর্থে) ছে মাধব।
তোমাকে রদ-রীতি কি শিথাইব । হে নট অর্থাৎ
নটবর শ্রাম! (তুমি) গৌরী মর্থাৎ গৌরাগী
(আমার সহিত্ত) (রদ)-আলাপ করিয়া সঞ্চার
অর্থাৎ আনন্দের বিস্তার করিবে; তবে তোমাকে
রিদক বিদায় জানিব।

৮—১১। "মুরলি" ইত্যাদি। মুরলী পরিত্যাপ করিয়া এইরপ স্থমধুর আলাপ (এক অর্থে—রাগানাপ, অন্ত অর্থে—রাগানাপ) করিবে, যেন তৃতীয় ব্যক্তি জানিতে না পারে! (সেইরূপ করিলে) কঠে কঠ মিলাইয়া দেখিব, যতক্ষণে স্থানর হয়! (এক অর্থে—তোমার স্থরের সহিত আমার স্থর মিলাইয়া যতক্ষণ না স্থান্যরার ত্বা করিব। অত্য অর্থে—গলায় গলায় লাগিয়া দেখিব, যতক্ষণ পর্যাত্ত স্থােদিয় না হয়!)

১২—১৩। "নিরন্ধন" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর 'এছন গুণৰভিভাস' পাঠ গ্রহণ করিয়া, অর্থ দিধিরাছেন,—'এতাদৃশগুণবতীভাসঃ কান্তিরূপাঃ জন্মান্' অর্থাৎ এতাদৃশ গুণবতী আমাদিগের (গৌরবে বছবচন) কান্তিসমূহ বক্ষেধারণ করিবে। আমাদিগের বোধ হয়, পদকর্ত্তা 'বাক্য' ও 'কান্তি' উভর অর্থ প্রকাশ করার জন্মই শ্লিষ্ট 'ভাস' শব্দের প্রয়োগ করিয়াছেন।

গান্ধার ৷১

রাগ তালং হল্ হৃদয়ে ধয়ল তুল্
জানলু বচনক রীতে।
গ্রাম তিন স্বর বহুবিধ পরকার
জানসি কত কত নীতে॥
গুণবতি অতয়ে নিবেদিয়ে তোয়।
মধুর আলাপ শিখায়বি নিরজনে
নিজ জন জানিয়া মোয়॥ গ্রন্থা
মুরলি ছোড়ি হাম নিকটিছি বৈঠব
শীখবং স্থমধুর গান।
গোরি শ্রাম নট তব নহ তুরঘট
হোয়ব মিলন-সন্ধান॥
মুখহিঁ মুখহিঁ যব তুল্থ শিখায়বি
হৃদয়ে ধরব তবঙ হাম।
ভণ রাধামোহন বচন-রচন পুন

পাঠাস্তব

ভালে সে कानरत्र भोग ॥৬॥७२२॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'তান' প-র-সা। ১। 'জন জানিয়া' ফলে
'জনে জানিয়ে' প-র-সা। ৪। 'শিথব' ক, থ, প-র-সা, 'সীথব' ঘ। ৫। 'মুথহি' মুথহি ' ফুলে 'মুথহি' মুথ' ক, থ; 'শুথহি শুথহি' প-র-সা।
। 'তব' ক, থ পুথিতে নাই।

টাকা

১—৪। "হাগ" ইতাদি। (প্রীরাধার প্রতি
প্রীক্ষয়ের স্লিষ্ট প্রত্যান্তর) তুমি রাগ (এক অর্থে—
রাগ-রাগিণী, অস্ত অর্থে—অমুরাগ) ও তাল (এক
অর্থে—স্কীতের কাল-পরিমাণক্ষাপক রূপক প্রভৃতি
তাল, অস্ত অর্থে—তাল-ফল-বুগলস্বরূপ ক্তনের)
ক্ষ্যান্তর ধারণ করিয়াছ—(তোমার) কথার ভাবে
ক্যানিলাম, ভূমি (স্গীতের) তিন গ্রাম, বছবিধ
স্বর এবং কত প্রকার স্বর-রীতি (অক্ত অর্থে—মং-

ব্দৰ্ভক সম্ভোগের উপযোগী ও মুরলী-গীতির নিবারক বছবিধ বিলাস) জ্ঞাত আছে।

৫— १। "গুণবতি" ইত্যাদি। ছে সৃদ্ধীতকুশলে! (অপর অর্থে—হে বিলাস-নিপুণে!)
তাই তোমার নিকট নিবেদন করিতেছি; আমাকে
আপনার জন জানিয়া নির্জ্জনে সুমধুর আলাপ
(এক অর্থে—রাগাগাপ, অপর অর্থে—রসালাপ)
শিধাইবে!

৮—১>। "মুবলি" ইত্যাদি। আমি মুর্নী পরিত্যাগ করিরা, (তোমার) নিকটে বদিব;—
(তোমার নিকট) স্থমধুর গান শিক্ষা করিব;
গোরী, শ্রাম, নট (প্রভৃতি রাগিণী) তোমার পক্ষে
ছর্ঘট অর্থাৎ হংসাধ্য নহে। (অপর অর্থে) হে
গোরি! নট অর্থাৎ নটবর শ্রাম তোমার পক্ষে
ছপ্রাপ্য নহে। (এই প্রকারে) মিলন-সন্ধান
অর্থাৎ (এক অর্থে) বহু রাগ-রাগিণীর সংক্ষেলন-সংধান, (অপর অর্থে) সঙ্গম-দিদ্ধি ছইবে।

১২—১৫। "মুখহি'" ইত্যাদি। তুমি যথন
মুখে মুখে শিথাইবে, তথন (তোমার সঙ্গীত-উপদেশ)
হুদরে ধারণ করিব; (অক্ত অর্থে) তুমি যথন আমার
মুখে মুখ দিয়া (মুখচুম্বন) শিথাইবে, তথন (তাগার
প্রতিদানে) আমি তোমাকে বক্ষে ধারণ করিব।
রাধামোহন বলিভেছেন, শ্রাম বাক্য-রচন ভালক্রণে
ভানেন।

বরাড়ী।১

মনমথ-মকর ডরহিঁ ডর-কাতর

মঝু মানস-ঝয কাঁপেং।
তুয়া হিয়েও হার-তটিনিং-তট কুচ-ঘটং
উছলি পড়ল দেইও ঝাঁপেং॥
ফুন্দরি সম্বক্ষ কুটিল কটাধ।
কলসিক মীন্ধ বড়সি কিয়েও ডারসি
এ অভি কঠিনংও বিপাক ॥এ০১১॥

পুন দেই ঝাঁপান পড়ল যব ১০ আকুল
নাভি-সরোবর মাহ।
ভাহিঁ রোমাবলি-ভুজগি ১৫-সক্ষ ভয়ে
ত্রিবলি-বেণি অবগাহ॥
ভাহি ফিরত কত কতক্ত ১৫ মনোরথ ১৬
দৈবকি ১৭ গতি নাহি জান।
কিমিণি জালে পড়ত ভেল ১৮ সংশয়
গোবিন্দ দাস রস গান॥৭॥৬২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর-সাপুথির :৮২ সংখ্যক ও প-র
পুথির ২৪।০ সংথ্যক পদ। 'বরাড়ী' ছলে 'কামোদ'
প-র। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হিয়া' প-র-সা।
৪। 'তটনি' খ। ৫। 'ঘটে' খ, घ। ৬। 'তহি'
প-র-সা; 'তহি' প-র। ৭। 'ঝাঁপি' প-র-সা। ৮।
'মীনে' প-র। ৯। 'অব' প-র-সা, প-র। ১০।
'এ অতি কঠিন' হলে 'এ তুয়া কোন' প-র সা; 'ইহ
অতি কঠিন' প-র। ১১। ক, খও প-র পুথিতে
'ঙ্গ' নাই। ১২। 'ঝাঁপি' প-র-সা। ১৩। 'অব'
প-র। ১৪। 'ভূজফ' প-র-সা। ১৫। 'কত
কতত্ত্র' হলে 'কতত্ত্র্জত' ঘ; 'কত শতহি' প-র।
১৬। 'মনমথ' খ, ঘ। ১৭। 'ইন্বক' ক, চ, প-র-সা, প-র। ১৮। 'পড়ত ভেল' ছলে 'পড়ল
ভেল' ঘ, চ; 'পড়ল সব' প-র-সা; 'পড়ল ঘব'
প-র।

টীকা

১—৪। "মনমথ" ইত্যাদি। (শ্রীক্ক চাট্নবাক্যে শ্রীরাধাকে বলিতেছেন), আমার চিত্তরূপ মীন মন্মথের (বাহন-রূপ) মকরের ভরে ভরাজুর হইরা কাঁপিতেছিল; তোমার বক্ষের (মুক্তা)-হাররূপ ভরন্ধিনীর তীরে (তোমার) কুচরূপ কল্সী দেখিরা উন্নদিত হইরা (জীবন রক্ষার জন্তু) বাঁপ দিয়া (উহার মধ্যে) পড়িল।

শহক্ষরি" ইভাদি। হে ক্ষ্মরি!
 (সুমি) কুটিল কটাক সম্বরণ কর;—ক্লসীর

(মধ্য-ছিত) মীনের উপর (বঙ্কিম কটাক্ষরূপ) ৰড়শী নিক্ষেপ করিতেছ,—ইহা অতি দারুণ কর্মফল অর্থাৎ হরদৃষ্ট বটে ।

৮—১১। "পুন" ইতাদি। (কটাক্ষরপ বড়নীর ভয়ে) অন্থির হইয়া (আমার চিত্তরূপ মীন) পুনরার যথন (ভোমার) নাভি-রূপ সরোবরের মধ্যে পতিত হইল, (তথন) সেথানে (ভোমার) রোমাবলী-রূপ কাল-ভূজ্জীর সঙ্গ-ভয়ে অবিশী-রূপ (স্কীণ) জল-প্রণালীর মধ্যে নিম্ম হইল।

১২—১ং। "তাহি" ইত্যাদি। সেধানে বিচরণ করিতে করিতে (তাহার) কতই (মুধ)-বাসনা (হইতে লাগিল); (কিন্তু) দৈবের (বিচিত্র) গতি (কেহ) জানিতে পারে মা; (সেই জক্ত সেতোমার) কিন্ধণীরালে (এক অর্থে—কিন্ধিণী-সমূহে, অন্থ অর্থে—কিট্ড্রণ কিন্ধিণীরূপ মংক্ত ধরার 'জাল' নামক যন্ত্রে) পতিত হওয়া মাত্র (জীবন)-সংশন্ধ হইল। গোবিন্দণাস (এই) রহস্ত গান করিতেছেন।

প্রক্ষিপ্ত পদ।

শীরাগ।>

মদন-কিরাত-কুত্ম-শর দারুণং
বৃদ্দাবন-বন মাঝ।
ভেঞি আকুল হরি তোহারি শরণ করি
পরিহরি পৌরুষ লাজ॥
তুন্দরি তুয়া দিঠি অথির সন্ধান।
মনমথ মারিতে জোড়ে নয়ন-শর
হানল হামারি পরাণ॥ধ্রু॥
ছহঁ শরে জর জর জাবন অন্তর
কীয়ে করব নাহি জান।
নিজ বশ চাইদ রাই অবশ দেয়বি
জধর স্থধারস-পানশ্য॥

মণিময়-হার-ভরক্সিণি-ভীরহি
কুচ-কনকাচল-ছায়।
ঐছে তপত জনে ১০ গোপতে রাথবি তবংং
গোবিন্দ দাস যশ্য গায়॥

পঠান্তর

১। हेहा প-द-मा পूथित ১৮১।२७१ मःश्रांक छ भ-त्र भूथित २ 819 मःश्वाक भारा এই भाषि भाषकत-তক এন্থে অন্তন উদ্ভাদা হইগেও এ স্থলে ইহা প্রক্রিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়; কারণ, এই পদটি গণনা করিলে তৃতীয় শাধার ১ম পল্লবের পদসংখ্যা ১০টি श्रुल ১১টি इंदेश পড়ে। প্রাচীনতর খ, ঘ ও চ পুথিতে এই পদটি নাই; কিন্তু পদামৃতসমূদ্র ও পদ-রত্বাকর প্রন্থে এই পদটি অয়ংদৌত্য-পদাবলির অস্ত র্গত করা হইয়াছে এবং এই পদটি পদকলতক এতে व्यक्त पृष्टे इस ना-- वह क्र अधिकश्च हरेता व मूल মুদ্রিত হইল। ২। 'কুমুম-শর দারুণ' হলে 'কুমুম-শরে জর জর'ক। ৩। 'ডেহি' ক। ৪। 'শ্বরণ' প-র-সা। ৫। 'এ ধনি' প-র। ৬। 'মারুঙ' প-র-সা। ৭। 'ভুহু' প-র-সা। ৮। 'যশ চাই' স্থলে⁾ 'জন চাহি' প-র-সা। ৯। 'মোহে' **প-র**। ১ । 'नान' প-র। ১১। 'कन' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাথবি তব' খলে 'রাথ বর্ম' প-র-সা; 'রাখু বর' প-র। ১৩। 'গুণ' ক; 'রদ' (পাঠাম্বর — প-র-সা)।

টীকা

 (অভিন-লক্ষ্যতা হেতু) আমার হৃদরে বাণাবাত করিলে !

৮—১১। "গুছ" ইত্যাদি। (মন্মথের প্রপাণনর ও তোমার দৃষ্টি-শর) উভর শরে (আমার হৃদর ও প্রাণ জ্বজ্জরিত; কি করিব বুঝিতে পারি না; (আশ্রিত জনকে অকারণে বধ করিলে অধ্যাতি হ্ম বলিরা) এখন নিজের যশের দিকে চাহিয়া, (আমাকে বাঁচাইবার জন্ত) অধ্রামৃতের পান দান করিবে।

১২ — ১৫। "মণিময়" ইত্যাদি। (দাহ-পীড়িত জনের শৈত্য-সেবন সমূচিত বলিয়া) তোমার মণি-হাররূপ তর্মাণীর তীরে, তোমার কনক-গিরিরপ কুচযুগলের ছায়াতে এইরপে দাহার্ত জনকে শুপ্তভাবে
রাখিবে; তাহা ছইলে পদক্র গোবিন্দদাস তোমার
যশ গাহিবে।

তথা রাগ।১

কনক-লতাং কিয়ে বিকশলত পদুমিনি
কিয়ে মহি বিজুরি উজোর।
কুঞ্জ-কৃটিরে কিয়ে উয়লং হিমকর
হেরইতে আয়লুঁ ভোর॥
স্থান্দরি ভোহারি চরিত বিপরীতে।
কাজর-গরলহি ভরল নয়ন-শর
হানলি অস্তর চীতে॥ ধ্রাত॥
ভব অগোয়ানে কয়লি তুর্ত এছন
অব স্থপুরুষ বধ জান।
উচ কুচ-চুম্বকদ সরস পরশ দেই
উদ্ঘাট্ছ দিঠি-বাণ॥
আশা-পাশ হাসি দরশায়সি কর্বি পরাণ ।
বিহুট্লাং সময় পাল্টি নাহি আয়ত
গোবিক্ষাস পরমাণ । ৮৯৬২৪৪

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ২৪।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কনকলতার' প-র-সা; 'কলকলতারে' প-র। ৩। 'বিকসিল' চ। ৪। 'কিরে উরল' স্থলে 'উরল কিরে' প-র। ৫। 'তৈ গেল্' ক; 'তৈ গেল' প-র-সা। ৬। ক, ব, চ পুথিতে 'গ্রু' নাই। १। 'আসেরান' ক। ৮। 'পাথর' ক; 'কগ্রুক' থ, ব, চ। ৯। 'পাশে' প-র-সা। ১০। 'হাসি দরশার্সি' স্থলে 'হাস দরশার্ই' ঘ, চ, প-র-সা। ১১। 'কতি থলে' ইত্যাদি স্থলে 'কতি থলে বধবি পরাণ' থ, ঘ, চ; 'কতি থলে ধরবি পরাণ' ক। ১২। 'বিঘটন' ক, থ, চ, প-র-সা। ১০। 'রস গান' প-র।

টাকা

>--৪। "কনক-লতা" ইত্যাদি। **স্বৰ্ণ-**লতিকায় (ইহা) কি বিকশিত পদ্ম ? কিংবা মহীতলে দীপ্তিময় বিহাৎ ? কিংবা কুঞ্জ-গৃহে চক্স উদিত
হইয়াছে ? (আমি) মুগ্ধ হইয়া দেখিতে আসিলাম।

৫—१। "প্রন্ধরি" ইত্যাদি। হে অ্ন্দরি! তোমার চরিত্র বিপরীত! (তুমি) কজ্জলরপ বিষে পরিপূর্ণ (তোমার) নয়ন-(কটাক্ষ)রূপ শর (আমার) হৃদয় ও প্রাণে আবাত করিলে!

৮—১১। "তব" ইত্যাদি। তথন তুমি
অজ্ঞানে অর্থাৎ না ব্রিরা ঐকপ (কার্যা) করিলে,
(কিন্তু) এখন (উহার ফলে) স্পুরুষের বধ
ভানিতে পারিতেছ; (উহার ঐতিকার জক্ত্তা
তোমার উন্নত কুচ-রূপ চুম্বক পাধরের স্থেকর স্পর্শ
দান করিয়। (আমার বক্ষঃ-প্রবিষ্ট) দৃষ্টি-বাণ
উদ্ঘটন কর। (চুম্বক লৌহকে আকর্ষণ করিয়া
থাকে; স্থতরাং তান-রূপ চুম্বকের স্পার্শ বক্ষঃ-প্রবিষ্ট
দৃষ্টি-রূপ বাণ নির্গত করা শ্রীক্ষের জীবন-রক্ষার
একমাত্র সত্পার বটে। এ স্থলে রূপক্ষ্পক
কার্যালিক অলক্ষারের হারা শ্রীক্ষের সজ্যোগায়কুল
প্রিয়ালিকন-লাল্যা ব্যক্তিত ইইডেছে)।

১২—১৫। "আশা-পাশ" ইত্যাদি। (তুমি)
ঈবৎ হাক্ত করিয়া, (দৃষ্টি-শরে জর্জ্জরিত আমাকে)
আশা-রূপ ফাঁদ দেখাইতেছ; (কিন্তু কেবল
আশার জীবন-রক্ষা হয় না; তাই বল) কতক্ষণে
(আমার) জীবন রক্ষা করিবে ? বিঘটণ অর্থাৎ
বিনষ্ট সময় ফিরিয়া আসে না অর্থাৎ স্থায়ে এক-বার নষ্ট হইলে আর ফিরিয়া পাওয়া যায় না,—
গোবিন্দাস (ইহার) প্রমাণ অর্থাৎ গোবিন্দাস
ইহার সভ্যতা উত্তমক্রণে জানেন।

কেদার।১

গিরিবর-কুঞ্জে চললি ছুহুঁ নিরজনে উজ্জ্বল-সমরক লাগি। নিজ অভিযোগ-বচনক কৌশলে মনহিঁ মনোভব জাগি॥ সজনি আজু পর্ম রস ভেল। অভিনব রাগং ভুরক্স-মনোরথে তুহুঁক ঘটন পুন ভেল। ধ্ৰু। অওজগণ পুন ভেল রণ-বাদক কোকিলগণ সর-শৃক। ভেরি-ভূরি-কুল বাজাওত শিখিগণ বির পন গাওত ভূক ॥ ভাঙু কামান কটাথ তিথিন শর অদভুত পুলক কচুকা। অশ্রু শেল তেল ঘান পরশুকুল স্বর-ভেদ মদন-বন্ধুক॥ এছন সাজ মদন-রণ-পণ্ডিত यूवाव १० यूगल किट्नांत । ভণ রাধামোহন দরশন ক্রিয়ে উহ্১ লীলা হোয়ৰ মোর ॥৯॥৬২৫॥ পঠান্তর

)। देश भ-त्र-मा भूषित ১०৯७ मृश्युक शह।

২। 'অভিনব রাগ' স্থলে 'অতি অফুরাগ' ক।

০। 'অব' ক, খ। ৪। 'শিখিগণ' স্থলে 'স্থীগণ' ক, প-র-সা। ৫। 'বীরপন' ক, থ, প-র-সা।
৬। 'তিথন' ক, খ। ৭। 'কুফ্ক' ক, খ;
'কচ্ক' চ। ৮। 'শ্রেণী' ক; 'শ্রণী' প-র-সা।
১। 'পর মুকুল' ক; 'প্রশুগ কুল' ব, চ। ১০।
'জুঝব' চ; 'যুঝব' ক। ১১। 'ভুহ্' প-র-সা।

টীকা

১—१। "গিরিবর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও
শ্রীকৃষ্ণ) উভরে নির্জনে গোবর্দ্ধন) পর্বতের কুঞ্জে
স্থরত-বুদ্ধের জন্ত গমন করিলেন; (তাঁহাদিগের)
স্থলমে নিজ নিজ প্রাণয়েশিত-স্চক বাক্যের কৌশলে
মদন উদ্বীপিত হইল।

শেশ । "সঞ্জনি" ইত্যাদি। হে স্থি । আজ্ব অপুর্ব আনন্দ হইল । নব অমুরাগ ও (বেগাতিশ্যা হেতু) তুরক্ষরপ মনোরও হারা পুনরায়
(এীরাধাও শ্রীকৃষ্ণ) উভয়ের (মিলন) সজ্ভটন

হইল।

'৮—১১। "অগুল' ইত্যাদি। (নিক্ল-স্থিত)
পক্ষিণণ (স্বরত-বৃদ্ধের) রণ বাদক হইল অর্থাৎ
উংগবা কল নাদ ধারা শ্রীরাধাক্ষকের কাম-ভাব
মধিকতব উদ্দীপিত করিয়া স্বরত-বৃদ্ধের সাংগ্রাকারী
হইল; (সেইক্লপ) কোকিলগণ স্বর-শৃক্ষ স্বরূপ
হইল; মর্রগণ (তীত্র কেকা-নাদে) তৃরী-ভেনী
বাজাইল; ভৃত্পণণ (গুঞ্জন-শঙ্কে) উভয়ের বীরম্ব
গান করিতে লাগিল।

২২--: ৫। "ভাঙু" ইত্যাদি। (উভরের স্থরতযুদ্ধে) ক্র ধম্ম স্থরপ, কটাক্ষ তীক্ষ শরস্বরূপ, রোমাঞ্চ
অন্ত বর্মস্বরূপ, অঞা-(ধারা) শেল-অন্ত্র-স্বরূপ,
বর্ম (কিন্দুসমূহ) পরশু-স্বরূপ ও (রুসাভিশব্যে)
স্বর-ভেদ অর্থাৎ ভগ্ন কণ্ঠ-স্বর কন্দর্পের বন্দুক স্থরূপ
হইল।

১৬— . ৯। "এছন" ইত্যাদি। মদন-বুদ্ধে পারদলী কিলোর ও কিলোরী উভরে ঐরপ সাজে

যুদ্ধ করিবে; (সধী-স্থানীয়) রাধামোহন কহিতে-ছেন--- ঐ লীলা আমার দর্শন হটবে কি ?

ভণা বাগ ৷১

স্থি অনুমানে জানিয়ে কাজ। জয় জয় কিঞ্জিনি ছুহুঁ নৃপুর-মণি কক্ষণ রণ-রব॰ বাজ ॥ ধ্রা॥ নিবিড় আলিগন ভুজে ভুজে বন্ধন প্রতি অপ জনু ভট বীর। কীয়ে পরস্পর করু পরিরম্ভন कानिया नमत अधीत॥ কল্প বলয়া সঘন সম বোল ১ চুম্বন যুগ যুগ থোর। বুঝলুঁ মদন পরাভব পায়লং জীতল যুগল-কিশোৰ ॥ সৌরভে মাতি ভ্রমরকুল ধায়ত• ছোড়ল কুন্তম-বিলাস। নিজ অভিযোগ হোয়ত পুন ঐছন কহ রাধামোহন দাস ১১০॥৬২৬॥ এতদগীতং সম্ভোগ-রাব্রোপযুক্তম্। ইতি প্রথম-পল্লবঃ।

পাঠাস্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৭ সংখ্যক পদ।

২। 'ফানিরে' প-স ফ্লে 'বুঝল' ক, খ, ঘ, চ,
প-র-সা। ৩। 'রণ-রব' ফ্লে 'রব রব' খ। ৪।
'বুঝল' ক, চ, প র-সা। ৫। 'পাওল' ক; 'মানল'

◄, ঘ। ৩। 'ধারল' প-র-সা।

টীকা

্—>৫। "স্থি" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর তাঁহার এই স্বরচিত পদের ব্যাথ্যা করিতে যাইরা লিথিরাছেন—"ততো নিকুশ্ব বাজে পূর্বাগীতোক 'স্থি অন্ন্যানে জানিরে কাল' ইত্যাদিনা শুলারত যুদ্ধ কপেণ কৌশলং জনান্তিকং বর্ণয়তি সর্ব্বালানি সেনাগণানি। পরস্পরং যুদ্ধনৈপুণ্যাদিকং ছুই্বা আলিজনং কুর্বস্তাবিব তৌ। স্থগমত্বাৎ রহস্তত্বা-চ্চাতে যামর্থের কুতঃ।" অর্থাৎ নিকুজ্পের বাহিরে থাকিয়া কোনও সধী অলর স্থীর নিকট জীরাধা-ক্ষণ্ডের রভি-রণের বর্ণনা করিতে যাইয়া জীরাধা-ক্ষণ্ডের সমস্ত অল্পগুলিকে সৈন্তগণকলে বলিত করিতেছেন। উহারা যেন পরস্পরের যুদ্ধনৈপুণ্য দেবিয়া আননেক পরস্পরকে আলিজন করিয়া রাহয়াছে। স্থবোধ্য ও গোপনীয় ব্রিয়া অন্তান্ত বাক্যের ব্যাথ্যা করা হইল না।

অত্র রাধামাধব বৈঠলি ইভ্যাদি পদং গেয়ম্। অথ স্বয়ংদোত্যং দিবায়াং যথা। তত্মচিত-দিবাভিসার:। ভত্নচিত-দ্রীগোরচন্দ্রঃ। गांत्रक १३ লাখবান হেম চম্পক জিনি গোৱা তমু-লাবণি অবনি উজোর। চন্দ্ৰ-চরচিত মালতি-মণ্ডিত হেরইতে আঁখি ভেল ভোর॥ মাঝ দিনহিঁ আজু গৌর কিশোর। বসনহি ঝাঁপি নিজ আপদং মস্তক যায়ত হুরধুনি-ওর॰॥ ঞ ॥ বাম নয়নে ঘন চাহত দশ দিশ বাম পদ আগু সঞ্চার। বাম ভুজহি কাহে বসন আগোরইং গজ-গতি চলু অনিবার ॥ গদ গদ শবদে করত হরিকীর্ত্তন व्ययूगानि गुथ-मिन हारम । রাধামোহন দাস না বুঝয়ে ও রস निकरणाय काविया कारन्य ॥১॥५२१॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১০৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'আপাদ' ব, চ, প-র-সা। ৩। 'রোর' ব, চ;
'জোর' ক। 'রোর' পাঠের 'য়'কারের বিন্দৃটি
লিপিকর-প্রমাদে পরিত্যক্ত হইয়া 'রোর' এবং পরে
'বোর'ই 'জোর' পাঠে পরিণত হইয়াছে। ৪।
'নরন' ব, চ। ৫। 'আগোরহি' চ, প-র-সা।
৬। 'বৃঝিরে' ব; 'বৃঝিয়ে' চ় ৭। 'য়ো' চ;
'য়ো' পর-সা।

টাকা

ধ—৭। "মাঝ" ইত্যাদি। আজ মধ্যাক্ষেই শ্রীগৌরাঙ্গ বদন দারা নিজের চরণ হইতে মস্তক পর্যান্ত আবৃত করিয়া গঙ্গার তীরে যাইতেছেন। (দিবাভিদারিকা শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিত হইয়া শ্রীগৌরাঙ্গ শ্রীরাধার অভিসারাভিনয় প্রদর্শিত করিতেছেন)।

বরাড়ী ।>

দেব-আরাধন-ছলেই চলু গোরীই।
সক্ষহি সম-বয় নবিন কিশোরী॥
চন্দন কুকুম আর ফুল-মাল।
লেহল বহু উপহার রসাল॥
চলু বর-নাগরি সঙ্গব মাহ।
সচকিত নয়নে দীগা দশ চাহ॥
ঐছন সময়ে নিবিড় বন মাঝ।
মীললাই একলে বিদেগধ-রাজ॥
হেরি স্থাদনি অতি হর্ষিত ভেলি।
কহু ক্বিশেখর তুহুঁ জন কেলি,॥২॥৬২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৯ সংখ্যক পদ। ২। 'আরাধন ছলে' খলে 'আরাধনে' ক, ধ, প্রুলা। ৩। 'গৌরি' চ। ৪। 'দিগ' ক,

প-র-সা। ৫। 'সময়' প-র-সা। ৬। 'মিলল' ক,প-র-সা।

धाननी ।>

কাননে কুস্থম তোড়িসি কাছেং গোরি।
কুস্থমহিঁ নির্মিত সব তকুং তোরি ॥
আনন হেম-সরোক্তং ভাস।
সোরভে শ্রাম-ভ্রমর মিলু পাশ ॥
নর্মযুগল নিলং উত্তপল জোর।
সহলে শোহারলং ভ্রাবণক ওর ॥
অপরুণং তিল-ফুল স্থলনিত নাসা।
প্রিমলে জিতলং অমর-তক্ত-বাস ॥
বান্ধুলি-মিলিত অধর ঘাহাঁ হাসং।
মুকুলিত কুন্দ-কুমুদ্ধং পরকাশ ॥
সব তকু ফুটল চম্পক-গোরংই।
পাণিক তল থল-কমল উজোরংই॥
গোবিন্দ্রদাস অত্যে অনুমান।
পুজহ গশুপতি নিজ তকু দান ॥০॥৬২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮০ সংখ্যক ও প-র পুথির ২৪।২ সংখ্যক পদ। ২। 'ভোড়দি কাহে' ফলে 'কাহে ভোড়দি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমহ' প-র-সা, 'কুস্থমত' প-র। ৪। 'নিরমিত সব তমু' হলে 'সব তমু নিরমিত' ক, প-র-সা, প-র। ৫। 'নীল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'সহজে শোহায়ল' হলে 'সহজ শোহায়ল' ব; 'সহজে শোহায়ল' চ; 'সহজে সোহায়ল্' প-র-সা। ৭। 'অপরূপ' ক, চ। ৮। 'অপরূপ ভিল-সূল' ইত্যাদি হলে 'স্লালত কিংশুক কোরক নাগ' পর-সা। প্রাচীন কবিগণ শুক-চঞুর সহিত নাদিকাকে উপমিতু করিয়াছেন; কিংশুকের সহিত শুক-মুখের উপমাত বিরল নত্নে; ব্ধা,—"কিং

কিংশুকৈ: শুক্মুপচ্ছবিভিন্ন দঝং, কিং ক্লিকারকুষ্টমন্ কতং মনোইজ:।"—ঋতুসংহার। স্থতরাং
কিংশুক-কোরকের সহিত নাসিকার উপমা অভিনব
কুইলেও অসমীচীন নহে। ৯। 'জীতল' ঘ;
'জিনল'প-র-সা। ১০। 'বাশ্বুলি-মিলিত' ইত্যাদি
স্থলে 'বাশ্বলি অধর মিলিত' ইত্যাদি ঘ; 'বাশ্বলি
অধর মিলত ষত হাস'প-র-সা; 'বাশ্বলি বন্ধু অধরে
মধু হাস' প-র। ১১। 'মুকুলিত কুন্দ' ইত্যাদি
স্থলে 'দশনহি কুন্দ কুসুম পরকাশ' ক; 'দশনহি
কুন্দ কুমুদ পরকাশ' ক, প-র। ১২। 'সব তন্ত্ ইত্যাদি স্থলে 'সব তন্ত্ ফুটল' ইত্যাদি চ; 'সব তন্ত্ স্কুটল চম্পক্দল গোর' ঘ; 'সব তন্ত্ ফুট চম্পক্ সম
গোরা' ক; 'সব তন্ত্ ফুটল চম্পক্ গোরি' প-র-সা।
১৩। 'উল্লোরি'প-র-সা।

টীকা

১-->৪। "কাননে" ইত্যাদি। (প্রীকুষ্ণকে দেখিয়া শ্রীরাধা ভাব-দকোপন জন্ম ছল করিয়া ফুল তুলিতে প্রবৃত্ত হইলে, শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে রসিকতা করিয়া বলিতেছেন) হে গৌরাঙ্গি! তুমি কি জন্ম কাননে কুস্থম চয়ন করিতেছ ? ভোমার সকল অঙ্গই কুমুম ধারা নির্মিত বটে! (তোমার) বদন স্বর্ণ-পদ্মের কান্তিযুক্ত; (উহার) সৌরভে শ্রাম ভ্রমর (এক অর্থে—কৃষ্ণবর্ণ ভ্রমর; অন্য অর্থে শ্রীকৃষ্ণ রূপ অমর) পার্খে আসিয়া মিলিত হইয়াছে ! (তোমার) নয়নবয় নীল উৎপল-যুগলম্বরূপ; (উহা) খাভাবিক সৌন্দর্যো । নীলোৎপল-কর্ণভূষণের ন্যায়) ভোমার কর্ণের প্রাস্ত শোভিত করিল। (ভোমার) হুগঠিত নাদা অলৌকিক তিল-ফুল স্বরূপ; (উহার) সৌরভে পারিজাত-তক্ষর স্থান্ধকে পরাজিত করিল। (শীরাধার নিশাদ-বায়ু পারিঞ্চাত পুষ্প হইতেও ষ্পাধক শ্বরভি, -- এতজ্বারা ইহাই ব্যঞ্জিত হইতেছে।) (তোমার) বাছুলি-পুশ-সংযুক্ত (আরক্তিম) অধর বেখানে হাদিতেছে, (সেখানেই) মুকুলিত কুন্দ ও কুমুদ পুষ্প প্ৰাফুটিত হইরা উঠিতেছে.! (ভোমার) সকল অঞ্ প্রকৃটিত চম্পকের ন্যার স্থাের; কর-

তল স্থল-পদ্মের স্থায় উজ্জ্বল। অত এব (স্থী স্থানীয়) গোবিদ্দাদ অস্থান স্থারা স্থির করিতে ছেন—,পুষ্পাময়ী তোমার অস্থ পুষ্প আহরণ নিপ্রায়া জন!) তুমি (পুষ্পাময়) নিজ দেহ দান করিয় পশুপতিকে (এক অর্থে—শিবকে, অসু অর্থে— ব্রজের গো-রক্ষক ক্লুফকে) পুজা কর।

ভূপানী ।১

পতি অতি তুরমতি ক্লবতি নারী।
স্বামি-বরত পুনং ছোড়িং না পারি॥
তেঁঃ রুপ যৌবন একু নহ উনং।
বিদেশধ নাহ না হোয় বিনি পূণ্"॥
এ হরি সভয়ে দেখায়বিং পস্থ।
পূজব পশুপতি গোরি একস্তুদ ॥ধ্রু॥
সহজে বধু-জন গতি মতি-হানং।
ঘর সঞ্জে বাহির পন্থ না চানং।
আমুসরিং মুরলি আয়লুঁ এহিংং ঠাম॥
আয়লুঁ দূর পুরব নিজ সাধেং।
একলি বোলিং করহ জনি বাধেং।
তুকুঁ যৈছে গোরিং আরাধলি কানং।।
গোবিন্দ দাস তাহেংদ প্রমাণ॥৪॥৬০০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০।২০৯ সংখ্যক ও
প-র পৃথির ২০৷২ সংখ্যক পদ। 'বড়ারি' প-র।
২। 'হাম' প-র-সা। ৩। 'লেই' প-র-সা। ৪।
'তে' ক, ৬, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'একু সহ
উন' স্থলে 'এক নহে উন' ক, ৬, চ, প-র-সা।
৬। 'হোর বিনি পূণ' স্থলে 'হোরে বিপুন' ক;
'হোরে বিনি পুন' প-র, প-র-সা ১৯০; 'হোরে
পুন' প-র-সা ২৩৯; 'হোরে নিপুন' च; 'হোরে

নিপুন' চ। ৭। 'দেখায়দি' প-র-সা। ৮। 'একান্ড' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৯। 'গতি-মতি-হীন' স্থলে 'মতি অতি হীন' প-র-সা, প-র। ১০। 'পছ না চীন' ছলে 'পছ না চিন' ক, খ, প-র-সা। 'পথ নাচি চিহ্ল' প-র। ১১। 'আঞ্চমরি' প-র-সা। ১২। 'তুয়া' প-র। ১৩। 'নিজ সাধে' স্থলে 'মন সাধে' প-র-সা; 'নিজ সাধ' প-র। ১৪। 'বলি' ক; 'জানি' প-র। ১৫। 'বাদ' প-র। ১৬। 'গৌর' ঘ। ১৭। 'ভোন' প-র-সা। ১৮। 'তোহে' খ। 'ডাহে আছে' প-র-সা।

টীকা

১—২। "পতি" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা শ্রীক্তফের রিদিকতার উন্তরে ইঙ্গিতপূর্ণ বাক্যে কহিতেছেন)—
আমার স্বামী অভিশন্ধ অল্লবৃদ্ধি; আমি কুলবতী
নারী,—(ভাই, পাতিব্রত্য ত্যাগ করিতে পারি না ।
(ব্যপ্তনাগম্য অর্থ) আমার পতি অর্থাৎ পালন-কর্ত্তা
(প্রিয়তম নঙে) নিভান্ত অস্বদৃদ্ধি; আমি কুলাঙ্গনা;
(স্থতরাং) পতিকুলের ও পিতৃকুলের ভয়ে আমাকে
(বাহ্নিক) পাতিব্রত্য প্রকাশ করিতে হইতেছে।

৩—৪। "তেঁ রূপ যৌবন" ইত্যাদি। ভাহাতে আবার (আমার) রূপ কিংব' যৌবন একটিও কম নছে! (কিন্তু ভাহা হইলে কি হইবে ?) রূদিক আমী বিনা পুণ্যে হয় না। (ব্যঞ্জনা-গম্য অর্থ) আমার হার স্থলারী ও যুবতি নারিকা অরুদিক আমীতে সম্ভৱ পাকিতে পারে না; স্থভরাং রূপ-যৌবনসম্পন্ন স্থর্নিক নারক পাইলে যে ভাহার প্রতি অসুরক্ত হইবে, তাহাতে সম্লেহ কি আছে ?

৫—৬। "এ হরি" ইত্যাদি। হে হরি ! অতএব তুমি আমাকে পথ দেখাইয়া দিবে; আমি
একান্তে অর্থাৎ নির্জ্জনে পশুপতি মহাদেব ও গৌরী
পার্ক্তীকে (আমীর স্থব্জি ও রূপগুণ বৃদ্ধির অন্ত)
অর্চনা করিব। (ব্যশ্লনা-গমা অর্থ) হে আমার
ক্রাধানির সহিত চিত্তের অপহারক! তাই
ভূমি আমাকে (অভিসার-বোগ্য ক্রের) পথ দেখা-

ইয়া দিবে; গৌরাঙ্গী আমি (বজের) পশুপালক তোমাকে নির্জ্জনে ভন্ধনা করিব।

৭—. •। "সহজে" ইত্যাদি। বধুদ্ধনেরা স্থভাবতঃ গতি-বৃদ্ধি-হীন হইয়া থাকে; (তাহারা) ঘর হইতে বাহিরে (যাভায়াত করার) পথ চিনে না; (তাহাতে আবার) বনে বনে (ঘুরিয়া) অঞ্জলাকের দেখা পাইলাম না; (কেবল) ভোমার বংশীধ্বনির অনুসরণ করিয়া এই স্থানে আসিলাম। (ব্যঞ্জনাগম্য অর্থ) এই বনভূমিতে লোকের গভায়াত নাই; ভোমার বংশী নীরব হইলে উহার শব্দ শুনিয়া যদি কাহারও এখানে আগার আশহা থাকিত, তাহাও আর থাকিবে না; আমি ভোমার বংশীরবে মোহিত ও আরু ই হইয়া ভোমার নিকট আসিয়াছি; স্বভয়াং ভূমি আমার সম্বন্ধে যাহা ইচ্ছা, ভাছাই করিতে পার।

১১—১২। "আয়লুঁ" ইত্যাদি। (পুর্ব্বোক্ত বাক্য দাবা মনের গৃঢ় ভাব যদি প্রকাশ না পাইয়া থাকে, এই আশকার অন্থরাগ ও উৎকণ্ঠার আভিশয়ে বিগতলজ্জা শ্রীরাধা অধিকতর স্পাই ইক্সিত করিয়া বলিয়তছেন)—নিজের মনোবাসনা পূর্ণ করিব বলিয়া অনেক দরে আসিয়াছি; আমি একাকিনী বলিয়া দেখিও যেন, (আমার ইচ্ছায়) বাধা না জয়াও! (ব্যঞ্জনা-গম্য অর্থ—সেবার অন্ত্রস্বাগতা অন্থরাগবতী নায়িকাকে নির্জ্জনে পাইয়া বে তাহার বাসনা পূর্ণ না করে, তাহার তার অরসিক ও অভ্যুদ্ধি পুরুষ নায়কার প্রণয়ভালন হইতে পারে না।)

১৩—১৪। "তৃত্" ইত্যাদি। (স্থীস্থানীর গোবিন্দদাস এই স্বাংনোত্যের অবসানে শ্রীরাধাক্ষ্ণারের গুড় সন্তোগ-লীলা ইন্দিতে বর্ণনা করিতে ঘাইয়া শ্রীরাধাকে রসিকতা সহকারে বলিতেছেন)—
হে গৌরি! তুমি যেরপে শ্রীক্ষণের সেবা করিলে, সে বিষয়ে গোবিন্দদাসই প্রমাণ অর্থাৎ সান্দী বটে! পদকর্ত্তার এই উক্তির তাৎপর্যা বোধ হর এই বে, বে স্থান নারক-নারিকা অনিষ্মিতভাবে সভোগ-

কেলিতে প্রবৃদ্ধ হয়, সে হলে উহাতে পূজা বা পরিচর্ব্যার ভাব অপেকা প্রভিদ্দিতা বা কলহের ভাবই
সমধিক দৃষ্ট হইয়া থাকে; স্থতবাং উহাকে সেবা না
বলিয়া ভাহার বিপরীতই বলা সঙ্গত। তুলনা
কক্ষন—"কলহরপং স্থরতমাচক্ষতে" ইত্যাদি—
বাৎস্থায়ন-কাম-স্বত্য।

"দোর্জ্যাং সংঘমিত: পরোধরভরেণাপীড়িত: পাণিজৈ-রাবিদ্ধো দশনৈ: ক্ষতাধরপুট: শ্রোণীতটেনাহত:। হত্তেনানমিত: কচেহধরস্থাপানেন সম্মোহিত: কান্ত: কামপি তৃপ্তিমাপ তদহো কামশুবামা গতি:॥"

—গীতগোবিন্দ, ১২শ দর্গ।

অথ বজা - রোধনম্।

बढ़ाड़ी।ऽ

ন কুরু কদর্থনমত্র স্বব্যাংই।
মামবলোক্য সতীমশরণ্যাং॥
চঞ্চল মুঞ্চ পটাঞ্চলভাগং।
করবান্তধুনা ভাক্ষর-যাগং॥ গ্রু॰॥
ন রচয় গোকুল-বীর বিলম্বং।
বিদধে বিধুমুখ বিনতি-কদন্বং॥
রহসি বিভেমি বিলোল-দৃগন্তং।
বীক্ষ্য সনাতন দেব ভবস্তং॥গ॥৬৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শরণাং' ক, ধ, ঘ। ৩। ক, চণ্ড প-র-সা পুথিতে 'ঞ' চিহ্ন নাই। ৪। 'বিবিদ্ধে' প-র-সা।

টাকা

১-৩। "নে"তি। অপরণ্যাং (অসহায়াং)
সভীং (পতিত্রতাং) মাং অত্ত (অস্মিন্) সরণ্যাং
(বর্জনি) অবলোক্য (দৃষ্ট্রা) কদর্থনং (কুৎসনং
লাখনামিতি ভাবঃ) ন কুক্ল। একাকিস্তাঃ কুলাখনারাঃ দুরাধ্বসমনং বস্তুপি অভিসারাভাশভাং জন-

রতি তথাপ্যসহায়ার। মম গরিষ্ঠপ্ররোজনাফ্রোধাৎ প্রথমনং নাজ্বা শঙ্কনীয়মিত্যবঃ।

৩—৪। "চঞ্চলে"ভি। ছে চঞ্চল! প্রীকৃষণ!
মম পটাঞ্চল-ভাগং (পট্টবসন প্রান্তঃ) মুঞ্চ (ত্যজ্ঞ)।
অহং অধুনা (ইদানীং) ভাস্কর-যাগং (স্ব্যপুজনং)
করবালি। স্ব্যপুজনার্থং স্ব্যমন্দিরং পমিব্যামীতি
ভাবঃ।

ৰ— ৬। "নে"তি। হে গোকুলবীর ! (প্রবীরছাৎ গোকুলৈক-রক্ষক !) বিলম্বং (মম স্থ্যপুজারাং
কালহানিং) ন রচর (জনর)। হে বিধুমুধ (চক্রবদন) অংং ভূভ্যং বিনতিকদমং (প্রাণামসমূহং)
বিদ্ধে।

৭—৮। "রহসী"তি। হে সনাতন দেব! ভবতং রহসি (নিভ্তে) বিলোলদৃগত্তং (চঞ্চলাপান্ধং) বীক্ষ্য (দৃষ্ট্রা) বিভেমি (ভীতাম্মি) নির্বিক্রিক্স ভগবতঃ কিমপি কারণং হিছা বিকার-ভাবঃ ন ভভাবহ ইত্যর্থঃ।

অহ্বাদ

>--- । অসহায়া পতিব্রতা আমাকে এ**ধা**নে পথে দেখিয়া কুৎসা করিও না।

৩—৪। হে চঞ্চশা আমার পট্টবসনপ্রান্ত পরিত্যাগ কর; আমি এখন স্থ্য-পূকা করিব।

 ৫—৬। হে গোকুলবীর ! আমার কালহানি করিও না; হে চক্রবদন ! ভোমাকে আমি শত শঙ প্রণাম করিতেছি।

৭-৮। হে সনাতন দেব। তোমাকে নির্জ্জনে বিলোল-কটাক-যুক্ত দেবিয়া আমার ভর পাইতেছে।

ভাৎপর্য্য

প্রথম তুই পংক্তির ভাবার্থ এই বে, বদিও একা কিনী:কোন যুবভিকে দুর পথে পমন করিতে দেখিলে, ভাহার চরিত্র সম্বন্ধে মনে আশহা ক্ষরিতে পারে, কিন্তবিশেব প্রয়োজনে সহায়হীনা সভী নারীও প্রথমন করিয়া থাকেন; স্কৃতরাং কেবল একাকী পর্য প্রথমন করা হইতেই অস্চারিতের অনুমান সম্বত নহে। ৭।৮ পংক্তির ভাবার্থ এই বে, বিনি সনাতন দেবতা অর্থাৎ নির্বিকারাত্মক ভগবান, তিনি অপজ্ঞানের মঙ্গলার্থে কোন সময়ে স্বেচ্ছার বিকার-ভাব অবলম্বন করিলেও তাঁহার পক্ষে জন-শৃত্ত স্থলা নিপ্রাক্তনে বিলোল কটাক্ষ প্রভৃতি অন্থভাব হারা বিকার-ভাব প্রকাশ করা অতি আশ্চর্যাজনক বটে,—স্থতরাং না জানি, অকক্ষাৎ জগতের কি এক বিভ্রাট উপস্থিত হইল, ইহা মনে করিয়া দর্শকের মনে ভয়ের সঞ্চার হওয়া স্বাভাবিক। 'ন কুক কদর্থনং' ইত্যাদি বাক্যগুলির সরল অর্থ ছাড়া স্থীজনবোধ্য অপর গৃঢ় বাজার্থ আছে; সেই ব্যঙ্গার্থের ইঙ্গিতে শ্রীরাধা শ্রীক্ষণ্ডকে স্বেচ্ছামুক্তপ কার্য্য করিতেই প্রোৎসাহিত করিতেছেন।

সৌরাষ্ট্রী ;>

পুলকমুপৈতি ভয়াশ্মম গাত্রং।
হসসি তথাপি মদাদতিমাত্রং ॥
বারয় তূর্ণমিমং সুস্থি কৃষ্ণং।
অনুচিত-কর্মান নির্ম্মিত-তৃষ্ণং ॥ শ্রু॰ ॥
জানে ভবতীমেব বিপক্ষাং।
মাপনীতা যদনকক্ষাংগ॥
অন্ত সনাতনমতিমুখহেতুং।
ন পরিছারিষ্যে বিধি-কৃত-সেতুং ॥৬॥৬৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর সা পুথির ১১ • ১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'জুণমিয়ং' ঘ। ৩। ক, চ ও প-র-সা পুথিতে
'ঐ' নাই। ৪। 'বদবনকক্ষাং' ও; 'বছকুলকক্ষাং'
ক, চ, প-র-সা।

बिका

১-২। "পুলক"মিতি। "রহিদ বিভেনী"ত্যাদি
শীরাধাবাক্যং শ্রুদা শ্বরমানং শীক্ষকং প্রতি শীরাধা
পুনরাহ 'পুলক্ষ্বৈণতী'ত্যাদি। ভরাৎ (অনিষ্টাশক্ষা) মন পাত্রং পুলকং (রোমাক্ষং) উপৈতি

(প্রাপ্রোতি) (রাগাতিরেকাৎ জাতরোমানীতাশি ব্যঞ্জাতে)। তথাশি দ্বং মদাৎ (রূপ্যোবনরোর্ম্বাৎ) অতিমাত্রং হদদি।

৩—৪। "বাররে" তি। হে স্থি ! বং অফ্রচিতকর্মণি (পরান্ধনাধর্যপুরণে অধর্ম কার্য্যে)
নির্মিত্ত্ কং (সঞ্জাত স্পৃহং) ইমং পুরোবর্ত্তিনং ক্রম্মং
তুর্ণং (শীঘং) বারয় বধারং কিম্পি বিস্পৃশং
নাচরতীতি ভাবং।

৫ – ৬। 'জানে' ইতি। স্বীং কিমপুত্তর-মকুর্বতীং প্রমুদিতাঞ্চ দৃষ্ট্বা শ্রীরাধা তাং গর্হস্তী বদতি 'জানে' ইত্যাদি। ভবতীমেব (ছামেব) মম বিপক্ষাং (বৈরিণীং) জানে (অবগচ্ছামি) বং (যক্ষাং , ছং মাং বনকক্ষাং (বিপিনপ্রদেশং) উপ-নীতা (প্রাপিতা) অসীতি শেষঃ।

৭—৮। "অভে"তি। অদ্য সনাতনং (চির-স্তনং) অতিস্থাহেতুং (অত্যস্তস্থাকারণং) বিধি-ক্বভসেতুং (বিধাতৃক্বতনিয়মং প্রাণা ত্যমেহিপি সতীত্বং রক্ষণীয়মিতি সনাতনধর্মবিধানং ইতি ভাবঃ) ন পরিহরিষ্যে (ন ত্যক্ষ্যামি) ক্ষণিক স্থালবলোভে-নেতি শেষঃ।

অহুবাদ

১—২। হে কৃষ্ণ ! আমার গাতে ভরে রোমোদগম হইতেছে,—তথাপি ভূমি গর্ক হেতু অতিশর
হাস্ত করিতেছ।

৩--- ৪। হে সথি । তুমি অফুচিত কার্য্যে স্বাততৃষ্ণ এই কৃষ্ণকে সম্বর নিবারণ কর।

৫—৬। তোমাকেই আমার শব্দ বলিয়া জানি-তেছি; বেহেতু তুমিই আমাকে এই বলভূমিতে আনিয়ছ।

৭—৮। অন্য আমি প্রভৃত স্থধের নিদান বিধাতৃক্বত সনাতন নিয়ম পরিত্যাগ করিব না।

তাৎপর্য্য

৭৮ পংক্তির সরল ভাবার্থ এই যে, দ্বী জাতির সতীত্ব রক্ষা বিধাতার ক্বত সনাতন নিরম বটে, ক্ষণিক স্থালাভের প্রাত্যাশায় অশেষ হৃথের নিদান সতীত্বধর্ম পরিত্যাগ করা নিতাস্ত মৃঢ্তার কার্য। পূর্বপদের স্থায় এই পদের "পূলকমূপৈতি" ইত্যাদি
বাক্যেরও গূঢ় ব্যঙ্গার্থ আছে; ঐ ব্যঙ্গার্থের ইন্সিতে
শ্রীরাধা শ্রীক্ষফকে যথেচছ কার্য্যে প্রোৎসাহিত
করিতেছেন।

थानशै ।>

সুন্দরি কাহে কংসি কেন বাণি।
মোহে পরশবি অব নিজজনং জানি॥
সব ছোড়ি আয়লু তোহারি লাগিয়া।
পুরহ আশ অধর-স্থা দিয়া॥
এত কহি চুম্বয়ে চিবুক্ত ধরিয়া।
ঠমকিং কাঁপয়ে মুখ পটাঞ্চল দিয়া॥
করে ধরি গিরিধর আয়লং নিকুঞ্জে।
রচিত কুস্থম-শেজ মধুকর গুঞ্জে॥
বৈঠল ছুহুঁ জন পুরল মন আশ।
নির্থয়ে ছুহুঁ রূপ জগলাথ দাসং॥৭॥৬৩৩॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১১∙২ সংখ্যক পদ। ২। 'নিরজন' প-র-সা। ৩। 'চিকুর' ঘ। । 'চমকি' প-র-সা। ৫। 'আংওল' খ,ঘ। ৬। বিজ্নাথ দাদ'ক,চ,প-র-সা।

সারক।

অপর ব দিনহি কুঞ্জ-মণি-মণ্ড পে
শিতগাং পবন বহ মন্দ। ব বিজ-কুল-নাদ স্থবাদন বৈছন।
মনমধ্য-যক্তক ছন্দ॥
জয়া রাধামাধ্য মেলি।
তুত্ঁক প্রেম-লবং কো করু জন্মুভ্রব
বব্হু স্থাজ-রন্স-কেলি। প্রা

তহিঁ পুন অভিশয় নাগরি আগরি সত্তে সে নিমিলিত-আঁখি। আনন্দ-সিন্ধু-নিবেশহিঁ মাহিত দেয়ই প্রতিঅঙ্গ সাখি॥ তহিঁ অতি স্থানিত্র আনন্দ-নির্ঝর পুলক ভরল সব অঙ্গ। চীত-পুতলি জমু কাঁপয়ে ঘন ঘন অদভুত পুন সর-ভঙ্গ॥ অন্ধিন্দ দেহ-দণ্ড পরি শোভিত মুকুতা সম স্বেদ-বিনদু। বিগলিত অঙ্গ রাগ মণি-ভূষণ কঞ্ক অরুণ নিবি-বন্ধ॥ যাকর পরিমলে মাতল থাবর তাহে কিয়ে জন্তম লেখি১১। রাধামোহন-পহু-চিতে নিতি জাগই জমু উহ পাথর-রেখি>২॥৮॥৬৩৪॥ ইভানস্তরং সম্ভোগ-পদং যথাসস্তবং গেয়ম্। ইত্যাদি স্বঃং-দৌত্যম্। ইতি দ্বিতীয়-পল্লব:।

পাঠাম্ভর

১। 'অপকব' প-স ফ্লে 'অপকপ' ঘ, 'অপরূপ' ক, থ, চ। ২। 'নীতল' ক। ৩। 'তৈছন'
ক, ঘ, চ। ৪। 'জয় জয়' ক, চ। ৫। 'এেম
নব' ক, ঘ, চ। ৬। 'নাগরি আগরি' ছলে 'নাগর
আগরি' ক, ঘ; 'নাগর আগর' চ। १। 'নিরে
সহি' ক, ঘ। ৮। 'তহি অতি স্থাতল' ছলে
'তহি অতি মিণিত' ধ। ৯। 'অনধিন' প-স ফ্লে
'জনধি' ঘ, চ, 'অনধী' ধ। .০। 'আধ' ক, ধ;
'আর' ঘ, চ। ১১। 'বেথ' ধ। ১২। 'রেথ'।

টীকা

১--৪। "অপক্ষ" ইত্যাদি। দিবাভাগে অপূর্ক কুঞ্জের মণিগুহে শীতল প্রন মক্ষ মন্দ বহিতেছে; পক্ষিগণের শব্দ যেন মন্মথের যন্ত্রের স্থ্বাভের ভার।

শেলনের জয় হউক; যথন (উভয়ের) স্থরত রসকেলি (নির্বাহিত হয়), তথন উভয়ের প্রেমানন্দের
কণামাত্রও কে অন্থতর করিতে পারে
?

৮—১১। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে আবার (উভ্রের মধ্যে) নারিকা অতিশয় রসে পরিপূর্ণা; তাই তিনি নিমীলিতনয়না; (বেন) তিনি আনন্দ-ক্লপ সমুদ্রের রসাস্বাদনে বিমোহিত হইয়াছেন— (তাঁহার) প্রত্যেক অঙ্গ ইহা সাক্ষ্য দিতেছে!

১২—১৫। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে অতি
ক্ষীতল আনন্দ-জল অর্থাৎ সাহিক-ভাব-জনিত
ঘর্মজল ঝরিতেছে; সকল অঙ্গ পুলকে পরিপূর্ণ
ইইয়াছে; (বোধ হইতেছে) যেন চিত্র-লিধিত
প্রতিমূর্তি; সকল অঙ্গ ঘন ঘন কম্পিত হইতেছে
এবং অন্তুত শ্বর-ভঙ্গ প্রোকাশ পাইতেছে)।

১৬ —১৯। "অনধিন" ইত্যাদি। (রদাতি-শব্যে) অনারত দেহ-যষ্টির উপরে মুক্তার স্থায় খেদ-কণা শোভিত হইরাছে; অঙ্গ-রাগ, মণি-আভরণ, কাঁচুলী ও কটি-বদন-গ্রন্থি খালিত হইরাছে।

২০—২০। "যাকর" ইত্যাদি। যেই সজোগের পরিমলে অর্থাৎ সজোগ-বিমদ্দ-জনিত সৌরভে (গিরি, তক্ষ প্রভৃতি) দ্বিতিশীল পদার্থ পর্যান্ত (জানন্দে) উন্মত্ত হইয়াছে, তাহাতে পশু-পক্ষী প্রভৃতি গতিশীল প্রাণীদিগকে কি লিখিব ? অর্থাৎ গতিশীল প্রাণীদিগকে কথা কি বলিব ? পদক্তা রাধামোহনের প্রকৃত্তীক্ষকের চিত্তে উহা প্রভরে (অভিত) রেধার ভার নিত্য জাগরিত রহিয়াছে।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
তছচিত-জ্রীগোরচন্দ্রঃ।
ধাননা।
ভাব ভবে গরগর চিত্রং।
খেণে উঠে থেণে বৈদে না পায় সম্বিত্তণ।

জাতি রসে নাহি বান্ধে থেছ।
সোঙরি সোঙরি কান্দে পুরুব স্নেহণ ॥
নাচে পন্থ গোরা নট-রাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সংকীর্ত্তন মাঝ ॥ এক ॥
নিজ পর কিছুই না জানে।
দীন হান উত্তম অধম নাহি মানে ॥
শ্রিয়-গদাধর-কর্ম ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ডগমগ আনন্দ-হিলোলে ।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পভিত্তর>>
কোলে॥

গোরা-রসে সব রসময় । না দরবে ২০ বলরাম পাধাণ জনর ॥১॥৬৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১২ ও প-র পুথির ২১।৬১ সংখ্যক পদ। এই পদটি পদকল্লভক্র ভূতীয় শাধার ১১শ পলবে ৯০৯ সংখ্যক পদরাপে পুনরুদ্ধৃত হই'য়াছে। ২। 'চীত' ঘ, চ। ৩। পায় সন্থিত' স্থলে 'পান সন্থিত' ক, চ; 'পায় সন্থীত' হ। ৪। 'हर्ति' क, थ, च, ह (७०८ मःश्रोक भन)। ८। 'श्रूरम्र' क, ४, ठ, १-ब-मा; 'मिरनर' १-व। ७। १-ब-मा ছাড়া অন্তান্ত পুথিতে 'ঞ' নাই। १। 'নিজ পর' ইভ্যাদি পংক্তিষয় ক, ধ, ঘ, চ পুণির ৬৩৫ সংখ্যক পদে ও প-র-সা পুথিতে নাই। ১০৯ সংখ্যক পদে 'দীনহীন উত্তৰ অধম' ইত্যাদি স্থলে ক প্ৰভৃতি পুথিতে 'উত্তম অধম' ইত্যাদি পাঠ আছে। ৮। 'করে' চ। ১। 'আনন্দ-হিলোলে' স্থলে 'প্রেম-हिलाल क, थ, घ, ठ পूबि, ३०३ मश्थाक अह। > । 'লোলিয়া লোলিয়া' স্থলে 'ঢ়লিয়া ঢ়লিয়া' খ ৯০৯ পদ; 'চলিয়া ঢলিয়া' প-র। ১১। 'ভকতের' क. ब, घ, ह পूबि (> > সংখ্যক সংখ্যক পদ), প-র। >২। 'গোরা' ইত্যাদি ছলে 'এ রুদে জগত স্থিত° ॥ সময়' ক, ধ, ব, চ পূধি (১০৯ সংখ্যক পদ), 'ও ASIATIG 89CIETY CALESTEA

63.733 Date 8: 12.93.

রুসে অংগত রসময় প-র। ১০। 'বিদরে' ঘ্চ; 'দরপে' প-র-সা।

এনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা

कारमार ।

শঞ্জন' -গঞ্জন
গতি অতি ললিত স্ফুঠান।
চলত শলত পুন পুন উঠি গ্রজত
চাহনি বঙ্ক নয়ান॥
গোর গোর বলি ঘন দেই করতালি
কঞ্জ-নয়নে বহে লোর।
প্রেমেতং অবশ হৈয়া পতিতেবে নির্বিথয়া
আইস আইস আইস বলি দেই কোর॥
চহুকার ঘন ঘন মালসাট পুন পুন
কত কত ভাব বিথার।
কদৰ্ম-কেশ্ব জমু পুলকে পুরল তনু

ভাইয়ার ভাবে যেন মাণ্ডোয়ার ।

আগম-নিগম-পর বেদ-বিধি-অগোচর

তাহা কৈল পতিতেরে দান।

ক্রে আত্মারাম দাসে না পাইলুঁ কুপা-লেশে

রহি গেলু পাষাণ সমান ॥২॥৬৩৬॥

পাঠান্তর

১। 'অংখনগঞ্জন' ক। ২। 'প্রেমেডে' ক, চ। ৩। 'পাইয়া' ক, চ'।

তথা সম্ভোগস্থ স্বয়ংদোত্যং প্রকারান্তরং যথা।

बानमी ।>

ধরি নাপিতানী-বেশ মহলেতে পরবেশ বিখানে বসিয়া আছে বাই।
হাতে দেই দরপণী ধোলে নধরঞ্জনী
বোলে বৈস দেই কামাই॥

বসিলা যে রসবতী নারী। খুলিল কনক বাটী আনল বিমল ঘটী ঢালিল স্থবাসিত বারি॥ ধ্রু॰॥ करत नथ-त्रक्षनी চাঁছয়ে নখের কণি শোভিত করল যেন চাঁদে। নাপিতানী একে শ্যামা সুনীর অধিক ঝামাণ বুলাইছে মনের আনন্দে॥ ঘসিয়া ঘসিয়া পায় আলতা লাগায় ভায় নির্থি নির্থি অবিরাম। রচয়ে বিচিত্র করি চরণ হৃদয়ে ধরি তলে লেথে আপনার নাম। নাপিতানী বলে ধনি দেখহ চরণখানিদ ভাল মন্দ করহ বিচার। দেখি স্থবদনী কৰে কি নাম লেখিলা ওছে পরিচয় দেহ আপনার॥ নাপিভানী কহে ধনি শ্যাম নাম ধরি আমি বসতি এ' তোমার নগরে। বিঙ্গ চণ্ডীদাসে কয় এহ নাপিতানী নয় কামাইলা>> যাহ নিজ ঘরে ॥৩॥৬৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৪ সংখ্যক পদ।

২। 'দিয়া' ক, ঝ, য়, ঢ়; 'দেয়' দৌ: পুথি। ৩।
'দিয়া' ক, ঝ, য়, চ। ৪। 'আনিল বিমল ঘটা'
য়লে 'আনিয়া' ইত্যাদি ক, ঝ, য়, ঢ়; 'আনিল
কনক ঘটা' দৌ: পুথি। ৫। ক, ঝ পুথিতে 'য়'
নাই। ৬। 'ঘেন চাঁদে' য়লে 'নথচালে' দৌ: পুথি।
অতঃপর দৌ: পুথিতে নিয়লিখিত অতিরিক্ত পাঠ
সৃষ্ট হয়; য়ঝা,—

'অলসে উলস পার বুম লাগে আথো গার হাত দেয় নাপিতানীর কাছে॥'

খোলে নখরঞ্জনী ৭। 'নাশিতানী' ইত্যাদি খলে 'নাশিতানী দ দেই কামাই॥ একে ভাষা ছনীর পুডলী ৰাষা' ক, খ, খ, চ।

41

'নাপিতানী' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্থে দৌঃ পুৰির পাঠ; বথা,---ননির সমান রামা 'নাপি চানী বলে খ্রামা ৰোণাবে মনের আকুতে। আলতা লাগাএ ভার অসিতে ঘসিতে পায় বচএ যে মনোহর রীতে॥ চরণ উপরে ধরি বচএ বিচিত্র করি তলে লিখে নাম আপনার।' ৮। 'নাপিতানী বলে ধনি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র-সা পুথিতে নাই। ১। 'দেখি স্থবদনী কহে' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্ত্তে দৌঃ পুথির পাঠ: যথা.---'ভুনি নাপিতানী-বাণী দেখিএ চরণথানি হেটে দেখে খ্রামের নাম। চাহে নাপিতানী পানে বঝিয়া আপন মনে বলে কহ আপনার নাম॥ জগত মোহিবার তরে ভাষা নাম কছে তারে ফিরি আমি নগরে নগরে। নাপিতানী নহে চণ্ডীদাসে কছে কামাইলে যায় সাপনার বরে॥ ১०। '(स' क, ४, १५ त मा। ১১। 'कामहित्न'

विका

৮—১১। "করে" ইত্যাদি। (নাপিতানী) করে নধরঞ্জনী অর্থাং নরুন্ (ধরিয়া) নথের কোণা চাঁছিতেছে; (উহাকে) চক্রের স্থায় শোভাযুক্ত করিল। নাপিতানী একে যুবতী, (তাহাতে আবার) মনের উল্লাসে নবনীত অপেক্ষা অধিক (কোমল-ভাবে) ঝামা ঘর্ষণ করিতেছে। (এ ফ্লেগ্রামা' শব্দের 'শ্রাম-বর্ণা' অর্থ স্থসন্থত নহে। দৌঃ পুথির পাঠে 'শ্রামা' নাপিতানীর নাম বলিয়া উক্ত হইছাছে; কিন্তু সৃদ্ধিত পাঠে সেইরূপ অর্থও সংলগ্ম হর না; স্থতরাং অগত্যা 'শ্রামা' শব্দের অর্থ 'যুবতী' করা হইয়াছে। তুলনা করুন—"তহী শ্রামা শিধ্রি দশনা প্রক্রিবাধেরাকী"—বেশ্রুত্ত)

क्रिनो ।)

নাপিতানী কছে শুন গোং সই । অনাথী জনের[ঃ] বেতন কই**ং** ॥ কহ তুমি যাই রাইয়ের কাছে। বেওন লাগি সে বসিয়া আছে ! যদি কছে তবে নিকটে যাই। ষে ধন দেন তা সাক্ষাতে পাই॥ শুনি সখী কহে বাইয়ের কাছে। নাপিতানী বসি আছুয়ে নাছে। রাই কংে ভবে আনহ তায়। কতেক বেতন আমারে চায়। স্থী যাই তবে ডাকয়ে গাইস। আসিয়া রাইয়ের নিকটে বৈস 🛭 আসি নাপিতানী কহয়ে ভায়। বেতন কেন না দেহ আমায়॥ বাই করে কিবা হইবে তোর। সে কহে বেতনেশ নাহিক ওর॥ হাসিয়া কহরে স্থন্দরী রাই। তেন নাপিতানী দেখিয়ে নাই॥ এমতে ধন ১০ থে করাছি কত। সে কহে ভুবনে আছুয়ে যত। এক ধন আছে ভোমার ঠাঞি। সে ধন পাইলে ঘরকে যাই॥ হাদয়ে কনক-কলস আছে। মণিময় হার তাহার কাছে । ভাহার পরশ-রতন দেই। দরিন্ত-জনারে কিনিয়া **লে**হ ॥ श्रामिया करांत्र श्रुन्मश्री भाषी। ভালে^{১১} নাপিভানী পরাণ-চোরী^{১২} ॥ পরশ-রতন পাইবা বনে। এখন ১০ চলছ নিজ ভৰনে ॥

চণ্ডীদাসে কহে না কর লাজ। নাপিতানী নহে রসিক-রাজ ॥৪॥৬৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৫ সংখ্যক পদ।

২। 'লো' দৌ: পুথি। ৩। 'সোই' ए। ৪।
'লোকের' ক, থ, প-র-সা। ৫। 'কোই' ए। ৬।
'রাইক' ক। १। 'আমার' ক, থ; 'আমার' প-র-সা। ৮। 'বেতন' ক, থ, প-র-সা। ৯। 'দেথি
বে' ক; 'দেথিএ' প-র-সা। ১০। 'ধনে' ক।
১১। 'ভাল' ক, প-র-সা। ১২। 'পরাণচ্রি'
প-র-সা। ১৩। 'এখনে' ক; 'এখনি' ए। দৌ:
পুথিতে সম্পূর্ণ পদটির নিম্নলিখিত রূপান্তর দৃষ্ট
হয়, বংগা,—

'নাপিতানী বলে শুন লো সই। অনাথিনি লোকের সাক্ষাতে পাই। मृতी यारे करह त्राहेरबत्र कारछ। বেতন লাগিয়া নাপিতানী আইছে॥ ক্হিল বোলই আনহ তাএ। কতেক বেতন নাপিতানী চা**এ**॥ ক্ষেৰলি (?) বলিয়া ডাকএ আইস। রাই বলে অই ছলিচাএ বৈস। বসিল ছখিনী নাপিতানী শ্রামা। ক্ছএ বেডন দেছএ বামা॥ কতেক বেতন হইবে তোর। আমার বেতনের নাহিক ওর॥ रांत्रियां करहे श्रुक्तवी वाहे। এমন ছখিনী দেখিএ নাই॥ এত ধন ভূমি করিয়াছ কত। ভূবন ভরিয়া আছএ য়ঙ । এক ধন আছে তোমার ঠাই। লে ধন পাইলে খরেতে যাই ॥ मना कति एक मित्रदा धन। ুচাহিলে না দেএ ফুপীন জন।

5.0

কুচ্যুগ-গিরি মোর মনছিত।
ইহা দিয়া মোরে করছ হিত ॥
আর বে বেতন না হএ মোর।
পরশ-রতন পাইএ যে তোর ॥
হাসিয়া বোলএ রসবতি গোরি।
ভালে সে নাপিতানি পরাণচুরি॥
চণ্ডীদাসে কহে না কর লাজ।
নাপিতানী কহে (?) রসিকরাজ ॥'
টীকা

১৫-১৬। "রাই কছে" ইত্যাদি। রাই কহিলেন—'তোর (বেতন) কত হইবে ?' সেই (নাপিতানী) কহিল—'(আমার) বেতনে সীমানাই!'

১৯—২০। "এমতে ধন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা বলিলেন)—এই প্রকারে অর্থাৎ সামাস্ত কার্য্যের প্রতিদানে অসীম ধন লইশ্বা, কত ধন সঞ্চিত্ত করিয়াছ ? সেই নাপিতানী কহিল, ভুবনে যত আছে অর্থাৎ ভুবনে যত ধন আছে, সকলই আমি সঞ্চিত্ত করিয়াছি। (কপট নাপিতানীর পরিহাস-উক্তি সতা বলিয়া প্রমাণিত করার উদ্দেশ্তেই পদ-কর্ম্বা। কৌশতে এই বাক্য সন্নিবেশিত করিয়াছেন)।

২৫—২৬। "তাহার" ইত্যাদি। তাহার অর্থাৎ সেই কুচরূপ স্থবর্ণ-কলসের স্পর্শ-রত্ধ (এক অর্থে—পরশ পাধর, অন্ত অর্থে উৎক্কট্ট স্পর্শ) আমাকে দান কর; ('লাতো লাতো তু যৎ শ্রেষ্ঠা তন্ত্রত্বাহি ক্থাতে।') দরিদ্র জনকে (স্পর্শ-রত্ব-দান-রূপ অপরিশোধ্য মূল্য দারা) ক্রম্ম করিয়া লও।

২৯—৩০। "পরশ-রতন" ইত্যাদি। (ত্রীরাধা ছন্ম-বেশিনী নাপিতানীর কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর উদ্ধর দিতে যাইয়া বলিতেছেন)—বনে ম্পর্শ-রক্ম পাইবে, এখন নিজ-গৃহে যাও। 'বনে ম্পর্শ-রক্ম পাইবে' এই প্লিপ্ট বাক্যের একটি অর্থ এই বে, পরশ পাথর গৃহে থাকে না; উহা ক্লাচিং কোন সৌভাগ্যবান্ ব্যক্তি বনেই প্রাপ্ত হইয়া থাকে; স্থতরাং পরশ পাথর কামনা করিলে তাহার

অক্ত বনে বাইয়া অমুসন্ধান করিও। অপর গৃঢ় অর্থ এই যে, শ্রেষ্ঠ ম্পার্শ অর্থাৎ আণিজন বনে (সঙ্কেত-কুঞ্জে) পাইবে। উভয় অর্থেই অস্থানে বুণা ৰাজ্ঞায় কালহরণ না করিয়া, ম্পার্শ-রত্ন লাভের উদ্দেশ্যে গৃহে যাইয়া বন গমনের উত্থোগ क्त्राहे धकास कर्तवा—हेश् वृक्षा वाहेरलहा

তথা রাগ ।১

এক দিন মনে রভস-কাজ। মাল্যানীং হইলা রসিক-রাজ॥ ফুল-মালা গাঁথি ঝুলাই হাতে । क नित्र क नित्र⁸ कुक्त शर्थ ॥ তুরিতে আইলা ভাতুর বাড়ী। রাই কহে কত লইবে কড়ি॥ भानानी लहेशा निस्ट विन । মালা মূল করে ঈষত হাসি॥ মাল্যানী কহয়ে সাজাই আগে। পাছে দিবা কড়ি যতেক লাগে॥ এত কহি মালা পরায় গলে। वर्षन ठूथन कत्रायः इतन ॥ वृक्षित्रा नागती धतिला करत । এত টাটপনা আসিয়া ঘরে॥ নাগর কহয়ে নহি যে পর। চণ্ডীদাস কহে কি কর ভর ॥१॥৬৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৬ সংখ্যক পদ। रा 'बानग्रामि' প-त्र-ना। ७। 'बूनारत्र' कः; 'ब्र्नारेबा' प, ह। ४। '८क निर्द क निर्द' স্থলে 'কে নিবি কে নিবি' প-র-সা। ৫। 'नहेब' एरन 'इहेब' প-ब-मा। **७।** स्पृन' प। १। 'नावादेवा' ५; 'नावादेदव' क, प, ह।

৮। 'পরায়ে' क, খ, घ, চ। २। 'করেন' क। > । 'निश् रा' ऋरण 'निश्कि' क, थ, घ, छ।

वाना धाननी ।>

গোকুল ন**গ**রে ইন্দ্র-পূজা করে দেখি আইল যত নারী। নগর ভিতরে মহা কলরবং নাগর হইলাও পদারী॥ মেলিলা তখন (मिकान-मिकान⁸ দেখিয়া গাহকীগণ। কহয়ে পদারে বহু দ্রব্য আছে যে চাহে নিতে যে ধন"॥ মণিময় মাল মুকুতা প্রবাল পোভিক মাণিক যভ'। বহু দিন মনে১১ আনিল ১২ যভনে তোমাদের অভিমত্ত ।। খন্তিকা পুতিয়া মুকুতা ঝুলাঞা>ঃ কহে গাহকিনী আগে । শুনি গাহকিনা অাসিয়া> অপনি (पाकान निकटि नार्ग ॥ স্থ্র বাণী বলে সে দোকাৰী কিসের লইবে ছড়া। মুকুতা-মাল

কড়ি যে লাগিবে বাঢ়াস্ণ॥ শুনি নারীগণ त्वांगटग्र वहन গাহকী নহিয়ে ১ মোরা। (मशाह्र जनाम কিবা ভাগ্যে মেনেং এমন ধন যে তোরা॥ যুবতী রসাল নিল এক মাল

লইবা ভাল>

मिल এक मश्री-गलर^७। পরিমাণ হৈল^{২৪} আনন্দ বাঢ়িল^{২৫}

কভেক লইবে বলে।

আর এক জনে সাধ করি ২৬ মনে লইল সোণার স্থূট। लाई हिलार वांग्र বেতন্ধ না দেয় পসারী ধরিল কুচ। ফিরাফিরি২৯ করে কুচ নাহি ছাড়ে°• करह भूला (पर (भांत्रः)। সঘন^{৩২} বদন করয়ে চুম্বন এমতি^{৩৩} কাজ সে ভোর ॥ কাড়াকাড়ি ঘন না মানে বচন ১৪ অরাজক হৈল পারা। যাহার বন° কাটে সেই জন র**ক্ষক হইব**ত কারা ॥ রঞ্জকীণ সঙ্গতি চণ্ডীদাস গীতি त्रित जानम वर्षे। (मोकान-माकान धर देश्ल ममाधान मक्ल रान (य नुर्हे ।७॥५९०॥ পাঠান্তর

১। ইहा প-त-मा পুचित्र ১১১৭ मःथाक श्रम। २। 'महा कनत्रव' श्राम 'कनत्रव कात्र' (मोः श्रीध। ৩। 'নাগর হইলা' স্থলে 'আনন্দে বদিলা' দৌ: थि। १। 'मार्कान-मार्कान' ऋल 'मार्कान দোকান' দৌ: পুৰি। ৫। 'মেলিয়া' ক, খ; 'मिनिना' भ-त-मा, त्मोः भूषि। ७। 'भमात्री' ক। 'কহরে প**সারে' স্থলে 'আমার দোকানে**' त्मोः श्रुवि। १। 'मिया' च, ठ। ৮। 'त्व हारह' ইভ্যাদি স্থলে 'বে নিতে চাহ বে ধন' ক ; 'বেবা চাহ ख्वा धन' मो: श्रवि। २। 'शृष्ठिकांव' मो: পুৰি। ১ । 'পোতিক' ইত্যাদি স্থলে 'আর বেবা हां है वर्ज 'तो: श्रुथि। >>। 'वह मिन मतन' ऋत्न 'वहपूत हत्न' (मो: পूबि। >२। 'खाইनाहि' (मो: পুৰি। ১৩। 'তোমাদের অভিমত' স্থলে 'তোমা সভার বেই মত' দৌ: পুথি। ১৪ 'খন্তিকা প্তিয়া' ইত্যাদি খলে 'এডুকা' ইত্যাদি প-র-সা; 'ৰস্তিকা পুভিন্না মতি' ইত্যাদি দৌঃ পুৰি। ১৫। 'কহে গাহকিনী আগে' হলে 'কহয়ে গাহকী আগে' क, ब, व, ठ; 'कहरे গ্রাহকি আগে' मोः পুথি। ১৬। 'আইসে' দৌ: পূথি। ১৭। 'মুকুতা-মান' ইত্যাদি স্থলে 'মুকুতার মালা লইবা ভোমরা' দৌঃ পুথি। ১৮। 'বাড়া' ক, চ, প-র-সা, পুৰি। ১৯। 'নহি যে' দৌ: পুৰি। ২০। 'ভाগ্য' क। २०। 'বেনে' मोः পूषि। २२। '(मथिष्ट' क, ह; '(मर्थ्य्ट' थ, घ, भ-त-मा; 'দেখিয়াছ' দৌ: পুথি। ২৩। 'দিল এক' ইত্যাদি ऋल 'मिल य मथीत शक्त' भी: भूथि। २८। 'रेट्टन' (मो: পूचि। २०। 'वाष्ट्रिंग' च, প-त्र-मा; 'বাড়িলে' দৌ: পুথি। ২৬। 'সাধ করি' ছলে 'धात कवि' प्ली: शूलि। २१। 'मरे हिन' ऋत्म 'লইয়া' বৌঃ পুথি। ২৮। 'মূল্য' দৌঃ পুথি। ২৯। 'ফেরাফিরি' ক। ৩ । 'কুচ' ইত্যাদি श्रुट्स 'कूट्ड धन्नि (वांटम' त्नी: भूबि। ७১। 'क्ट्ड मृना' इंड्रांनि ऋल '(वंडन द्वार द्या द्यात' द्वी: পুথি। ৩২। 'সঘনে' প-র-সা: 'ঘন যে' দৌঃ পুথি। ৩০। 'এমনি' দৌ: পুথি। ৩৪। 'কাডি' ইত্যাদি স্থলে 'কাঢ়াকাঢ়ি' ইত্যাদি ক. খ: 'ডাকা-ডাকি করে বচন না সরে' দৌঃ পুথি। ৩৫। 'যে वन' कः 'व वन' थ। ७७। 'वक्क रहेव' श्रत 'त्रक्षक हहेरव' क; 'त्रका रव कत्रिव' ली: शृथि। ৩৭। 'বাগুলি' দৌঃ পুথি। ৩৮। 'দোকানি (माकान' (मो: श्रवि।

টীকা

২১—২৪। "শুনি" ইত্যাদি। (ছন্মবেশী পসারীর বাক্য) শুনিয়া নারীগণ বলিল—'আমরা
গ্রাহকী নহি'; (তাহাতে অসন্তই হইয়া পসারী
পরিহাস করিয়া বলিল)—না জানি কোন্ ভাগ্যে
ভোমরা জন্মের মধ্যে এরূপ ধন দেখিতে
পাইয়াছ! (তাই অনর্থক গোল্যোগ করিভেছ!)
মুবতীরা অভাবতঃ অল্কার-প্রিয়, তাহাতে
এইরূপ পরিহাস-বাক্য কে সন্থ করিতে পারে!

ন্তরাং ছন্মবেশী পদারীর কৌশল সফল হইল সভাকার জয় এবং 'যুবতী রদাল নিল এক মাল দিল এক মতে স্থী-গলে।" ইত্যাদি।

৩১—৩২। "লই" ইত্যাদি। 'লই চলি যার'
ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য এই বে, হুঁচ-গৃহিত্তী ছল্লবেশী প্রীক্ষণকে চিনিতে পারিয়া, তাঁহার সহিত
রসের ঝগড়া বাঁধাইবার জক্ত বিশ্বতির ছল করিয়া
হুঁচের মূল্য না দিয়াই চলিয়া যাইতেছিল। অথবা
এরূপ অর্থপ্ত হুইতে পারে যে, যেরূপ সচরাচর
ঘটয়া থাকে, হুঁচগৃহিত্তী আনন্দবিহরেল হুইয়া
বিশ্বতিবশতঃ কিংবা হুঁচটি স্থীকে দেখাইয়া
পছল করাইবার জক্তই মূল্য না দিয়া চলিয়া
ঘাইতেছিল। 'ফিরাফিরি করে' ইত্যাদি পরবর্তী
বাক্যগুলি দেখিলে প্রথমোক্ত অর্থই স্মীচীন বলিয়া
বোধ হয়।

সিপুড়া :>

(मग्रांत्रिनी२ (तर्म भश्त श्रांतर्म⁹ রাধিকাণ দেখিবার ভরে। স্থ্রক্ত' চন্দ্র কপালে লেপন कु छन कार्याण भरत ॥ নাগর সাজিও বাম করে ধরে । পিন্ধিয়া বিভূতি দাজিল মূরতি রুদ্রাক্ষ জগয়ে করে ॥এ॥>• करह अग्र (मवी ব্ৰঙ্গপুর সেবি গোকুল-রক্ষক নিভি। গোপ গোয়ালিনী স্বভগ-দাইনী১১ পুত্ৰ দেবী>২ ভগবতী>৩॥ আশীর্বাদ শুনি গোপের রমণী' व्यारेगांभ्य (प्रग्नामिनो काष्ट्र । জিজ্ঞাসা করয়ে **যত মূনে লা**য়ে>• বলে গোপ ভাল আছে ।।

भे क इर्रिक क्यू মনে ভয় না ভাবিবে। ভোমাদের পতি হুন্দর হুম্ভি১৯ সভাকার ভাল হবেং ॥ সঙ্গেতে কুটিলা আসিয়া জটিলা পড়য়ে চবণ ধরি। আমার বধুর পতির মঞ্চল বর দেহ কুপা করিং ॥ শুনি দেগাসিনী হর্ষিত বাণী জটিলা সমুখে কয়। বর ধে লাইবে ভালই হইবে নি**কটে আনিতে হ**য়ং**২**॥ জটিলা<৽ যাইয়া আনিল ধরিয়াং আপন বধুর হাতে। বসিলা হরিষে দেয়াসিনী পাশে ঘুচাঞা বদন মাথেং ॥ দেখিং৬ দেয়াসিনী বোলে শুভবাণী भव *ञ्लक*न-यूक्तर । গন্ধৰ্ব-পাবনী **क शपानिमनो २**५ রাধা নাম ভামুস্থতা॥ ধরি ধনী-হাতে মনের আকুতেং নিরখে বদন তার। দেখিতে দেখিতে আনন্দিত চিতে मनन क्रिल क्रांत्र ।। माकिंটि थूलिয়া॰> ফুলটি তুলিয়াণ্ वाद्यन नागतीत्र पूरल। मक्रिक भाइरवः আনন্দে থাকিবে কলন্ধ নহিবে কুলে॥ करह भीत्रि भीत्रिश শুনিয়া স্থলবীশ এ কথা কহবি মোয়খ। বেপাটি ঘূচয়ে** আমার হৃদয়ে ভবে সে জানিয়ে ভোয়॥

একটি শপতি রাখহ যুবভি দেখিতে বাসিয়ে ভয় । প্রাণ-পতি ⁸⁾ সনে বাদ্ধ্যাছ পরাণেঃ ইহাই দেবতা কয়80॥ হাসিয়া নাগরী চাহে ফিরি ফিরি (मग्रामिनो घत्र (काथा। আমার⁸⁸ ঘর হয়ে যে নগর কহিব বিরল । কথা।। সক্ষেত বুঝিয়া85 ন্য়ান ফিরাইয়া৽৽ ভাক করে এক দিঠে8৮। নির্থি বদন চিহ্নিল তখন শ্যাম নাগর টাটে।। **शै**त्रि शैत्रि® क्ति বসন সম্বরি मन्दिर इलिला लाखा **हशीलं**टन क्य হুবুদ্ধি যে হয় **(वक्छ ना करत्र कार्क्ज** ॥७॥७८১॥ পাঠান্তর

>। हेहा श-त-मा शूबित >>>৮ मःश्वाक श्वाः । 'मित्रानिते' कः 'मित्रामिति' थ। ०। 'मित्रानिते' हेल्वामिति' कः 'मित्रामिति-दिन्न महत्व करत्र श्रव्याक्ष हेला 'श्रिष्ठ मित्रामिति-दिन्न महत्व करत्र श्रव्याः श्र्वि। ८। 'त्राक्षां ये । श्रिष्ठ । श्रिष्ठ । श्रिष्ठ वाम करत्र' । 'त्राक्षां ये । श्रिष्ठ । १ । 'मिष्ठित्र वाम करत्र' । 'म्राक्षां हेल्वां श्र्वि। ৮। 'श्रिष्ठ । त्रिष्ठ वाम मृत्रिष्ठ वाम श्र्वि। ५। 'श्रिष्ठ । भ्राक्षिण मृत्रिष्ठ वाम मृत्रिष्ठ वाम स्त्रिष्ठ (मोः श्र्वि। २०। कः मृत्रिष्ठ (मोः श्र्वि। २०। कः मृत्रिष्ठ (मोः श्र्वि। २०। कः म्राक्षां । भ्रवि। २०। 'म्राक्षण मृत्रिष्ठ । 'म्राक्षण मृत्रिष्ठ । 'म्राक्षण मृत्रिष्ठ । भ्रवि। १ । 'म्राक्षण मृत्रिष्ठ । भ्रवि। भ्रवि। १ । 'म्राक्षण मृत्रिष्ठ । भ्रवि। भ्रवे। भ्रवि। भ्रवि। भ्रवे। भ

'ৰয় জয় গোকুলয়ক্ষক দেবতী। গোপগোপিনি শুজদাইনি পূজ পূজ ভগবতী॥' ১৪। 'গোপিনী' দৌ: পুথি। ১৫। 'বিদিলা'
দৌ: পুথি। ১৬। 'হরে' ধ, ঘ। ১৭। 'বলে গোপ'
ইত্যাদি স্থলে 'গোপেরা কেমন আছে' দৌ: পুথি।
১৮। 'হরে' ঘ, চ। ১৯। 'সুন্দর মতি'
ক, ঘ, চ; 'সুন্দরহ মতি' প-র-সা; 'সুন্দর মেতি'
দৌ: পুথি। ২০। 'সভাকার' ইত্যাদি স্থলে
'সভার ভাল যে হবে' দৌ: পুথি। ২১। 'সক্লেডে
কুটিলা' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি দৌ: পুথিতে নাই।
২২। 'শুনি দেয়াসিনী' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির
পরিবর্ত্তে দৌ: পুথির পাঠ যথা,—

'আমার বধ্র বোলহ সুধীর দেবতা কি দব কয়। বর যে লইবে ভাল যে হইবে নিকটে আদিতে হয়॥"

২০। 'আপনে' দৌ: পুথি। ২৪। 'ধরিল' প-র-সা। ২৫। 'বসিলা হরিষে' ইত্যাদি পংক্তিছরের পরিবর্ত্তে দৌ: পুথির পাঠ যথা,—

'আমিয়া বসিলা দেয়াসিনি দেখিলা বসন ঘুচিয়া মাথে॥"

২৬। 'আনন্দে' দৌঃ পুথি। ২৭। 'স্ব সুলক্ষণযুতা' স্থলে 'সুলক্ষণ দেখি মাৰ্থা' দৌ: পুথি। ২৮। 'জগতানন্দিনী' ঘ, চ, প-র-সা; 'জগত-তারিণী' দৌ: পুথি। কোন লিপিকর 'জগদানন্দিনী' শব্দের 'গ' অক্ষরট ভূলে 'স' লিথায় 'জসদা-নন্দিনী' ও উহাই কোন পণ্ডিতশ্বস্তু লিপিকর-কর্ত্তক সংশোধিত (?) হইয়া বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থ ও তদমুবারী অধিকাংশ চণ্ডীদাদের মুদ্রিত পদাবলীতে হাল্ডজনক 'যশোদাননিদনী' পাঠের করিয়াছে। কোন কোন টীকাকার বিশোদার আনন্দিনী অর্থাৎ আনন্দদায়িনী' এইরূপ অর্থ করিয়া 'যশোদানন্দিনী' পাঠের অর্থ-সঙ্গতি রক্ষা করার চেষ্টা कत्रिवाद्यतः किंद यिनि सगर्छत्र चाननामात्रिनी, ভাঁহাকে বশোদার আনন্দদারিনী বলিয়া বর্ণিভ করার কোনই সার্থকতা দেখা বার না; ছতরাং 'यानानिस्त्री' शार्क खमम्लक विनदारे वित्तवनार्य।

২৯ ৷ 'মনের আকুতে' হলে 'মনেরানন্দেতে' 'ধরি ধনী হাতে' ইত্যাদি ছলে 'মনের অক্টেরত (?) দিয়াসিনি কৌভুকে' पो: श्रुथि। ७०। 'सनन' हेल्डानि ऋत्न 'सनन কেবল বিকার' দৌ: পুথি। ৩১। 'ধরিয়া' দৌ: পুৰি। ৩২। 'পাড়িয়া' দৌ: পুৰি। ৩৩। 'নাগরী' क, थ, त्मीः পूथि। ७८। 'नकन' প-त-म। ७৫। 'मकनि পाইবে' ऋलে 'कू भन हहेरव' स्नीः श्रवि। ७५। 'कामिनो' (मो: পूथि। ७१। 'करह' हेजामि স্থলে বিলে মধুর বাণী দৌঃ পুথি। ৩৮। 'এ কথা' ইত্যাদি স্থলে 'এমতি হইবে মোয়' দৌ: পুথি। ৩৯। 'আমার হৃদয়ে' ইত্যাদি স্থলে 'আমার হৃদ্র বেখাটি ঘুচিবে' দৌ: পুথি। ৪০। 'দেখিতে ৰাসিয়ে ভয়' স্থলে 'কহিতে বাসিয়ে ভয়' ক, দৌ: পুথি; 'দেখিতে বাসহ ভন্ন' থ, ব, চ, প-র-সা। ৪১। 'পরপতি' ক, দৌ: পুথি। শ্রীরাধা 'পর-পতির' সহিত প্রণয়-বন্ধন করিয়াছেন, এইরূপ কথা বলিয়া তাঁহাকে অপ্রতিভ করা চতুর-শিরোমণি শ্রীক্বঞ্চের পক্ষে সম্ভবপর বোধ হয় না; স্থতরাং 'প্রাণপতি সনে' ইত্যাদি লেষপূর্ণ পাঠই সমীচীন। ৪২। 'বান্ধিগছ পরাণে স্থলে 'বেঁধেছ পরাণে' ক ; 'বান্ধিয়াছ মনে' **খ,** ঘ, চ, প-র-সা। ৪৩। 'ইহাই দেবতা কয়' श्रम 'श्रद्भार कहिवि स्मात्र' हो: श्र्थ। 'व्यामात्मत्र' त्नोः পूषि। 82 । 'वित्रल' (मोः পুথি। ৪৬। 'করিয়া' প-র-সা; 'বানিয়া' দৌঃ পুথি। ৪৭। 'ফিরিয়া' ক। ৪৮। 'ডাক করে' ইত্যাদি স্থলে ভাকে হেরে এক দিঠে' দৌ: পুথি। ৪৯। 'ধির ধির' দৌ: পুথি। ৫০। 'বেকড' ইত্যাদি স্থলে 'বেকত করয়ে কাজে' ক; 'বেকত ना करत्र लारकत्र मारब' हो। श्री ।

টাকা

১৮—৫)। "একটি শপতি" ইত্যাদি। ছে ব্বতি! তুমি আমার একটি শপথ (অর্থাৎ সত্য কথা বলিবার জন্ত দিব্য) পালন কর; তুমি প্রাণ-পতির সহিত প্রাণ বাধিরাছ, অর্থাৎ প্রেম-বন্ধনে বাঁধা পড়িয়াছ,—ইহাই আমার দেবতা কহিতেছেন।
('প্রাণ-পতি' শক্টি প্লিষ্ট, ইহার সরল আর্থ—প্রাণনাথ বা আমী; কিন্ত ইহার গৃঢ় অর্থ জনবেশার"
অর্থাৎ যিনি কেবল পালনকর্তা বলিয়া পতি
নহেন, কিন্ত প্রিয়তম বলিয়া জীবন ও মৃত্যুর
মালিক। 'আর্য্যা সপ্তশতী' প্রভৃতি কোন কোন
ব্যঞ্জনা-প্রধান কাব্যে পরকীয়া-নায়িকার বর্ণনপ্রসক্তে 'পতি' শক্টি পরকীয়ার প্রেমসম্বন্ধহীন আমী ও প্রিয়' শক্টি প্রেমাম্পদকে বুরাইতে
প্রায় সর্ব্বদা প্রযুক্ত হইয়াছে।)

সিম্মুড়া ।১

देशा विविक्तीर নাগর আপনি কৌতুক করিব॰ মনে। हुश (य ह**म्म**न আমলকী বৰ্ত্তৰণ যতন করিয়া আনে 🛭 কেশর যাবক কম্বনী দ্রাবকণ व्यानिल (त्रशांत्र क्ष्ण्रं। সোন্ধা স্থকুমুম কপুর চন্দন আনিল মুথা শিকড় ॥ থালিতে করিয়া আনিল ভরিয়াণ উপরে বসন । দিয়া। মিছামিছি ১ করি ফিরে বাড়া বাড়ী ভাতুর তুয়ার দিয়া>২ 🛭 ফুকরি শক্তরে চুবক্ত লইবে১৪ আইল দাসী>৬ যে তবে। আসি দেহু বলে মোদের ১৭ মহলে व्यत्नक निष्ड (य) वर्ष ॥ আইলা লইয়াং থালিতে ধরিয়াং ষেখানে নাগরী বসি। কর্ব রচন চুয়া স্থচন্দন বেণ্যানী মনেতে পুসি ॥

লইনে কতেক চন্দন চুবক জানিতে চাহিয়ে আমি। বেতন সে দিবং मकृति लहे्वः যতেক **আনহং** ভূমি ॥ **पिटा (यरक मार्थ** আমলকী হাতে ঘসিতে লাগিল কেশ। শ্রম যে হইল খসিতে খসিতে নাগরী পাইল ক্লেশ । स्मर्थुतर वांगी कटह (म (वंगानीय) চুয়া মাখিবার তরে। চুল যে ছাড়িয়াং হাত নামাইয়া माथायु॰ कारयु॰> शटत ॥ হইলা আগরিণ্ পরশে নাগরী পড়িয়া বেণ্যানী কোরে। অতি সুখ হৈলত निम्म (य व्यादेन সব শ্রম গেল দুরে ॥ (वगानी वरन (भल (म (वरल য**িতে চাহিয়ে ঘরে**। উঠিলা নাগরী বগন সম্বরি কহে কি লাগিবে মোরেওঃ বট আনিবারে কহিল স্থীরে শুনিয়াও নাগর-রাজে। আর ধন নিব৽৽ ক্ৰেনা লইৰ ना कहि (लामांत्र॰ लाट्य ॥ কি আছে শন ক্ৰ না কেনে শুনিতে চাহিয়ে স্থামি। নভুবাণ্ণ যাইবে থাকিলে পাইবে থির হৈয়া কহ ভূমি⁸। হিয়ার ভিতরে৽> ৰেণ্যানী কংয়ে বড় ধন আছে সেহ। কুপা যে করিয়া বাস উব্বরিয়া त्म थन चार्यादव तरह 🛭

বুঝিল চাতুরী তখন নাগরী হাসিয়া•২ আপন মনে। হইল এমন গন্ধের বেতন कीवन योवन होत्न॥ বুঝিলাম কানঃ কর সমাধান আর না বলিহ মোরে। এতেক গুণে মারহ প্রাণে কেবা শিখাইল ভোৱে। আশ যে করি পরের নারী मद्रदश्ड व्यापन मत्न। কোণা বা হৈয়াছে কেবা বা পাইয়াছে ना दिवश्या दकान श्राद्यक्ष ॥ চণ্ডীদাসে কয় ৰত ঠাঞি হয় যাহাতে যাহাতে বনে। কিবা বা মানে যৌ গল-ধনে সৌপয়ে প্র প্রাবে প্রাবেণ্ড ।৮১৬৪২॥

পাঠান্তর

১। इंश् १-त-मा পूर्वित ১৯:२ मःशाक शन। २। 'टेहला विविक्ती' ऋत्म 'इहेमा वार्शित' त्मीः পুৰি। ৩। 'করিবার' দৌ: পুৰি। ৪। 'উবর্তন' দৌ: পুথি। ৫। 'শৌরব' দৌ: পুথি। ৬। 'বেণার क्फ़' ऋल '(वानाक क्फ़' हो: शूथि। १। 'मथ्या' প-র-সা। ৮। 'সোদ্ধা' ইত্যাদি পংক্তিবর স্থলে— 'সোদ্ধা যে শুনি ক্লফের বাথানি আনিল মেথির ফল।' দৌঃ পুথি। »। 'छानिया' श-ब-ता। >•। 'हित (हीत ?) (व' (मो: श्रवि । >> । 'मिहामिছ्।' (मो: श्रवि । ১২। 'ভাতুর ছ্যার দিয়া' খলে 'ভাতুর ছ্যারে तित्रा' क, थ, घ, छ। अ। 'हूबा द्य' लोः श्र्वि। 'नहेरक्ष' क। २०। 'छाकिका' स्नोः श्रुवि। ১७। 'मबी' लो: श्रुवि। २१। 'कामाब' (मो: श्रृदि। २৮। 'कांत्र (पर' च्रान '(पर जानि') तोः शुचि। ১৯। 'निष्क (व' व्यान 'न**रे**ष्ड'

न-त-ना, त्नोः श्र्षि। २०। 'नहेन्ना' त्नोः श्र्षि। २०। 'हिना स्रहमन' स्राः श्र्षि। २२। 'हृना स्रहमन' स्राः श्र्षि। २०। 'नहेत्व' त्नोः श्र्षि। २०। 'नहेत्व' त्नोः श्र्षि। २०। 'नहेत्व' त्नोः श्र्षि। २०। 'हित्व' त्नोः श्र्षि। २७। 'तां स्रहन 'ति त्व' स्रहन 'विन त्व त्न' क; 'वांनिक निन' तोः श्र्षि। २०। 'त्र स्त्र अ, च, ह; 'मस्त्र न' न-त-ना। २৮। खडः भत्र त्नोः श्र्षित् कं हृना मांचितात उत्व' शर्किनित श्र्र्ष निम्ननिविक खिठितिक शर्किकिन मृष्टे स्त्र, यथां—

যদি মোরে বল আমলকি বসিয়া
ধানিক মাথিএ চুলে॥
ডাকিলা আপনি বসিলা বাজানি'

হ ৷ 'বাড়িয়া' দৌং পুৰি। ৩ · ৷ 'মাথায়'
ক ৷ ৩১ ৷ 'হৃদ্দেয়' প-র-সা ; 'কুচের' দৌং
পুৰি ৷ ৩২ ৷ 'পাগলি' দৌং পুৰি ; 'পাগনি' প্রঃ
পুৰি ৷ ৩৩ ৷ 'অতি' ইন্ডাদি স্থলে 'স্থৰ যে
পাইল' দৌং, প্রঃ পুৰি ৷ ৩৪ ৷ 'বরে' দৌং পুৰি ৷
৩৫ ৷ 'হাসিলা' দৌং পুৰি ৷ ৩৬ ৷ 'কংহ' ইন্ডাদির
স্থলে দৌং পুৰির পাঠ বথা,—

'ঘসিতে জানিএ আমি ভালে।

'ইহা বে লাগএ আর যে চাহিএ' ৩৭। 'তোমারে' ব, দৌ: পুথি । ৩৮। 'কি আছে' হলে 'বে থাকে' দৌ: পুথি । ৩৯। 'নহিলে' প-র-না। ৪০। 'কহ না' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির হলে দৌ: পুথি ও প্রঃ পুথির পাঠ বথা,—

'কহ না কেনে কি আছে মনে
শুনিতে চাহিরে তারে।
হিয়ার বদনে রাধ্যাছ কে ধনে
দে ধন কে কে মোরে ॥'

৪১। 'বেণ্যানী কহরে' ইত্যাদি পংকি চারিটি দো: পুধি ও প্র: পুথিতে নাই। ৪২। 'হাসিলা' দো: ও প্র: পুথি। ৪৩। 'গজের বেতন' ইত্যাদি হলে 'আমলকি বেতন চাহে বেবা ধন' দো:

ও প্র: পূথি। ৪৪। 'কারণ' প-র-সা। 'কর সমাধান' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির স্থলে—

কের সমাধান বুঝিয়া জেন বেকত হএ পাছে বরে।

রেতেক ধনে চাহে জে পরাবে

ধন্দ জে লাগত মোরে ॥'—দৌ: পুথি। ৪৫। 'মারহ' থ ; 'মরত্র' দৌ: পুথি। ৪৬। 'কোধা' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির পরিবর্ত্তে—

'কে কোথা পাইছে কেবা দেখিয়াছে হইয়াছে কোন বা স্থানে।'—দৌ: পুথি। ৪৭। 'সোঁপে' ক, চ। ৪৮। 'চণ্ডীদাসে কর' ইড্যাদি কলিটির স্থাল—

'চগুলিসে কএ কত ঠাঞি হয়ে

ভাহার ভেষন মোনে।
বৌবন ছার কে করে বিচার

সপএ আপন প্রাণে॥'—দৌঃ পুথি।

টীকা

৫৭—৩০। "কর সমাধান" ইত্যাদি। ছে
কৃষ্ণ ! (তোমার চাতুরী) বুবিদ্বাভি; (এ৭ন)
কান্ত, কর; আমাকে আর (এরপ কথা) বলিও
না; তুমি এই সকল ওলে (নামিকাগণকে তোমার
অমুরাগিণী করিয়া) প্রাণে মার; (এইরপ মোহিনী
বিদ্যা) তোমাকে কে শিকা দিল ?

৬১—৬৪। "পরের নারী" ইত্যাদি। (কামুক পুরুষ) পরের রমণীর আশা করিরা (আশা-পূর্ণ না হওরার) নিজের মনে (ভাবিরা) মরে; (এই-রূপ ছ্রাকাজ্জার সকলতা) কোথার হইরাছে? কোন্ ব্যক্তি পাইরাছে? কোন স্থানেই (এরুপ) দেখি নাই!

৬৫—৬৮। "চণ্ডীদানে" ইডাদি। (শ্রীরাধার পূর্ব্বোক্ত বাক্যের উজরে) চণ্ডীদান বলিডেছেন— (হইবে না কেন ?) বাহার সহিত বাহার বিল হর, (এরপ) কত স্থানে হইতেছে; বৌবন-ধন বারা কিংবা সম্মান বারা কি প্রারোজন ? সে (প্রেমাম্পাদের) ক্রায়ের উদ্দেশ্যে (নিজের) ক্রায়য়কে অর্পণ করে। দৌঃ পুথির 'বৌবন ছার' ইত্যাদি পাঠের অর্বও প্রায় এইরূপ; তবে উহার অবয় আরও সুস্পাই।

ৰব্নাড়ী।১

বাদিয়ার বেশ ধরি বেড়ায় সেং বাড়ী বাড়ী আইলেন ভাগুর মহলে। খুলি হাঁড়ির চাকুনি⁸ বাহির করে সাপিনীৎ লইয়া এক করিলেন গলে ॥ विष्टती विन (पटे कन्ना শুনিয়া যতেক বালা দেখিতে আইলা খেলা খেলাইছে মাল্ম পুরন্দর॥ প্রা माभिनीदत्र (मग्न थावे माभिनोत्र वार्ट (काभे **म छ कत्रि উঠে ধরি ফণা** ››। নাগিনী>২ ফিরিয়া চায় অঙ্গুলী মুড়িয়া যায় ছোয়ে ৰাই > বাদিয়ার দাপনা। খেলা দেখি গোপীগণ বড আনন্দিত মন কহে ভূমি থাক কোন স্থানে। থাকি বনের ভিতরে, নাগ-দমন বোলে ১৪ মোরে মোর নাম জানে সব জনে '। বস্ত্র>৬ মাগিবার ভরে, আইলু ১৭ ভোমাদের>৮ ঘরে বন্ত্র ১৯ দেহ আনিয়া আপনি। ছিডা বস্ত্রং নাহি লব ভাল একখানি পাব্ই দেখি দেহ^{২২} শ্রীঅঞ্চের খানি^{২৩}॥ বটের ভিখারি হও বছমূল্য নিতে ১৪ চাও न**िरम (मा**ज्जिर नर वरहेर । বনে থাক সাপ ধর তেনা পরিধান কর महारे (वड़ांख नहीं डाटें। বাছা^{২৭} কহে ধীরে ধীরে, তোমার বস্ত্র^{২৮} নিব শিরে মনে মোর হবে বড় হুখ। ভোমার সম্ম করিতে অভিনাষ হয় চিতে ভুমি যদি না বাসহ ছুখং ॥

চুপ কর্যা থাক বাছা। যা পাও তা লও সাধ্যা ও জরুমে জরুমে যাহ ও ঘরেও ।

চুরি দারি নাছি করি ভিখত মাগি পেট ভরি
আমি ভয় করিব কাহারে ॥
তোমা লৈয়া করি ক্রীড়া, তুমি কেন মান ও প্রীড়াও স্থী কর এ ছবিয়া জনে ।

বিজ চণ্ডাদাসে কয়ত বাদিয়া যে এই নয়ত বুঝিয়া দেখহত আপন মনে ॥১॥৬৪৩॥

পাঠান্তর

)। ইছাপ-র-সাপুপির ১১२० সংখ্যক পদ। २। '(क' (मो: পूणि। ७। 'आहेमा व' (मो: প-র-সা। ৪। 'খুলি হাঁড়ির ঢাকুনি' স্থলে 'খুলি হাঁড়ি ঢাকুনি' ক; 'থোলে হাঁড়ি व्याप्रनि' त्नोः पूथि। । । 'त्म मापिनी' क, थ, ह। 'नहेम्रा' हेन्त्रामि ऋत्न 'जूनिमा नहेन अक গলে'ক, প-র-দা। ৭। 'দেই কর' ছলে 'দেহ वत्र' (मो: পুषि। ৮। 'মোনে' (मो: পুषि। 'शाना' (मो: श्रुवि। >०। 'সাপিনীর বাঢ়ে কোপ' ছলে 'সাপিনী বাঢ়ায় কোপ' ক: 'সাপিনীর ৰাড়ে কোপ' চ; 'নাগিনি হয় বড় काश' (मो: शूचि। >>। 'मख' हेजानि **एटन** 'উঠে দও ধরিয়া যে ফণা' দৌঃ পুৰি; চণ্ডীদাসের মুদ্রিত সংশ্বরণসমূহে লিপিকরপ্রমাদ হেতু 'দঙ্ স্থলে 'দম্ভ' পাঠ স্বষ্ট হইয়াছে। (সাঃ পঃ পত্রিকার ২০শ ভাগের ১১২ পৃঠার পাঠ-বিচার জ্ঞষ্টব্য) ১২। 'मालिन' त्नोः পूथि। ১৩। 'ह्हारम याहे' चटन 'ছো: দের' দৌ: পুথি। ১৪। 'বোলে মোরে' श्राम '(वारम' क, थ। >८। 'नर्स करन' रही: পুषि। ১৬। 'वजन' क, ब, च, ठ, প-ब्र-मा। ১१। 'আইলাম' প-র-সা; 'আসিলাম' দৌ: পুৰি। ১৮। '(छाद्र' (हो: পুचि। ১৯। 'वच्च' भ-द्र-मा। ২০। 'বল্ক' প-র-সা। ২১। 'ভাল' ইন্ড্যাদি दरन 'डान स्ट्रेरन नहेश जार' हो। श्री। হং। 'দের' ক। ২৩। 'দেখি দেহ' ইত্যাদি

হল 'দেহ ডোমার অঙ্গের এক থানি' দোঃ প্রি।

হ৪। 'নিডে' ছলে 'বল্ল' দোঃ প্রি। ২৫।
'শোভিডে' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ২৬। 'নহিলে'

ইত্যাদি ছলে 'নহিলে শোভিত চার বটে'

ক; 'নহিলে শোভিতে চার বটে' থ, ঘ, চ,
প-র-সা। দোঃ পুথির পাঠ ব্যতীত কোন পাঠেই
অর্থবোধ হয় না; হত্রাং ঐ পুথি অধিক প্রাচীন না

হইলেও অগত্যা সেই পুথির পাঠই মূলে গৃহীত

হইল। ২৭। 'বাদিরা' প-র-সা। ২৮। 'বল্প'
প-র-সা। ২৯। 'বাদ্ধা কহে' ইত্যাদি কলিটির
পরিবর্জে দোঃ পুথির পাঠ ইথা;—

'তোমার বস্ত্র শিরে করি আনন্দিত হবো বড়ি বহুত বাদিএ মনে স্থুখ।

আপনার হাতে ধরি বস্তু বাহ্নো শিরোপরি মনে কিছু না ভাবিহ গুধ॥'

৩০। 'স্থ্যা' দোঁঃ পুথি। ৩১। 'যাও' ক,
দোঁঃ পুথি। ৩২। 'ভরমে' ইত্যাদি স্থলে 'ভরমেতে যাহ নিজ ঘরে' প-র-সা। ৩০। 'ভিক্ষা'
ক, দোঁঃ পুথি; 'ভিক' প-র-সা। ৩৪। 'পাও'
প-র-সা। ৩৫। 'তুমি কেন' ইত্যাদি স্থলে
'মনে কেন দেও পীড়া' দোঁঃ পুথি। ৩৬। 'কংহ'
দোঃ পুথি। ৩৭। 'নহে' দোঃ পুথি। ৩৮।
'ব্ৰিয়া দেখহ' স্থলে 'বুঝি কাজ কর' দোঃ পুথি।

টাকা

১৪—১৫। "থাকি" ইত্যাদি। (বাদিয়ার বেশধারী প্রীকৃষ্ণ স্থাদিগের প্রশ্নের উত্তরে প্লেষপূর্ণ ভাষার কহিতেছেন) আমি বনের ভিতর থাকি; (এক অর্থে—নাণ ধরিতে বনে বনে বিচরণ করি; অপর অর্থে—বন-প্রির বলিয়া বনে অর্থাৎ বৃন্ধাবনে বাস করি) আমাকে লোকে নাগ-দমন বলে; (এক অর্থে—'নাগ-দমন' বলিয়া ভাকে; অপর অর্থে কালিয়-নাগেয় দমনকারী বলিয়া বোষণা করে); আমার নাম সকলেই জানে; (এক অর্থে—আমি সকলের বাড়ীভেই সাপ ধেণাইতে বাই বলিয়া

আমাকে সকলেই চিনে, অপর অর্থে—আমি জগদীখর বলিয়া, আমার 'হরি', 'কৃষ্ণ' প্রভৃতি নাম সকলেরই স্বিদিত আছে।)

২০—২১। "বটের ভিথারি" ইত্যাদি।
(বাদিয়ার বেশধারী ক্রফ স্থীর নিজ পরিধের
বল্পধানা প্রার্থনা করায়, উহা তাহার নিতান্ত
ধৃষ্টতা বিদয়া স্থী তাহাকে তিরস্কার করিয়া বলিতেছেন) তুমি কড়ার ভিথারী বটে; (কিন্তু) বহুমূল্য বস্ত লইতে চাহিতেছ; (তাহা) না হইলে
কি কড়িতে (কর্ত্তায় ৭মী) শোভা পাইত না অর্থাৎ
কড়ি তোমার পক্ষে মানাইত না ? 'নহিলে
শোভিতে চায় বটে' পাঠ গ্রহণ কর্মিলে কোন সদর্থ
হয় না; তবে 'চায়' শক্ষটির হুলে 'চায়া', 'চাইয়া'
পাঠ কর্মনা করিলে, উহার অর্থ এইক্সপ হইত যে—
ভাহা না হইলে তুমি কড়ি চাহিয়া শোভা পাইতা
অর্থাৎ কড়ি চাহিলে তোমার শোভা পাইত।

২৮—২৯। "চুপ কর্যা" ইত্যাদি। (বাদিয়ার ধৃষ্টভাপূর্ণ বাক্যের উত্তরে সধী তিরস্কার করিয়া বলিতেছেন) বাদিয়া! চুপ করিয়া থাক; (ছেঁড়া বস্ত্র পু্তৃতি) যাহা পাও, তাহাই ঝোসামুদী করিয়া শগু (এবং) মানে মানে গৃহে যাও।

৩০—৩১। "চুরি দারি" ইত্যাদি। (বাদিরা স্থীর ভিরন্ধারের উদ্ভবে বলিভেছে) আমি চুরি-দারি করি না; ভিক্ষা মাগিরা উদর পূর্ণ করি; (শুবে) আমি কাহাকে ভর করিব? অর্থাৎ কি জন্ত উচিত কথা বলিতে কাল্ড হইব?

ভাটিয়ারি।১

গোকুল নগরে প্রতি ম্বরে ম্বরেই বেড়াই চিকিছা করি। বে রোগ যাহার দেখি এক বারু ভাল যে করিতে পারি॥ শিরে শির-শল পিরিভির জ্বরণ হৈয়া থাকে যে রোগীর । আঁখি নাহি মেলেদ বচন না চলে তাহারে পিয়াই নীরু ॥ এ কথা শুনিয়া বাহির হইয়া কহে এক সখী ধাই। রোগী আছে জ্বরে আমাদের ঘরে দেখ একবার যাই॥ এই বাডী হৈতে আসিছি তুরিতে কহে হেথা থাক বসি। সাজ সাজিতে চলিলা নিভূতে মনের হরিষে ভাসি ।। আপন বসন ঘুচাঞা তখন লেপয়ে ১ কেশর মাটী। ভকলবি^{১২} ছান্দে বসন পিন্ধে সজে চলয়ে ১৩ হাটি॥ मरनाश्त्र यूनि कारक। শিক্ড-নিক্র ভাহার ভিতর যতন করিয়া বান্ধে ॥ ধ্রু ॥ शूहादेश लाटक हिक्डिक-माटकः বসিলা রোগীর ই কাছে। যুচাঞা বসন নিরুপে বদন রোগ যে ইহার আছে। বাম হাথে ধরি অঙ্গুলি মুড়ি ১৬ स्मर्थ थांकृ किवा वय । পিরিভি-বিষে জার্যাছে ইহারে ১৭ পরাণ রছে না রয় । হাসিয়া>> নাগরী উঠে अत्र मृष् खान (य कहिन। वर्षे। ৰল কি খাইলে इहेव भवत्न (वशिथि (कमरन ছुटि ।

ওবধ হয় । মনে করি ভয়

এখনি খাওয়াইয়া যাইভামং ।
ভাল যে হইভ জর যে যাইভ
যদি সে সময় পাইভাম ॥
ভখন নাগরী বুঝিলা চাভূরী
টীট নাগর-রাজ ।
বাশুলী নিকটে চণ্ডীদাস রটে
এমনং কাহার কাজ ॥১০॥৬৪০॥

পাঠান্তর

া ইছা প-র-সা পুথির ১২২১ সংখ্যক পদ।

২। 'ফিরি' দৌ: পুথি। ৩। 'বেড়ারে'
খ, ঘ, 'বেড়ার' চ। ৪। 'চিকিৎসা' ক, ঘ, দৌ:
পুথি। ৫। 'যে রোগ' ইত্যাদি স্থলে 'জার জে
কথার বেদনা সারএ' দৌ: পুথি। ৩। 'শিরে'
ইত্যাদি স্থলে 'সির:গুল জর পিরিতি রসের' দৌ:
পুথি। ৭। 'যে রোগীর' স্থলে 'যেবা নর' দৌ:
পুথি। ৮। 'বচন' ইত্যাদি স্থলে 'আঁথি নাছি
মেলে অন্তর যে জলে' দৌ: পুথি। ১। অতঃপর
দৌ: পুথিতে নিয়লিথিত অতিরিক্ত কলিগুলি দৃষ্ট
হয়; য়থা,—

'কেবল একান্ত ধ্যন্তরি। এমন মহৌষধি নাহি জানে বিধি পিয়াইলে জায় জরি ॥ এক জনে তথা শুনিলে এ কথা কহিলে রাইর কাছে। ঔষধি পাও ভাগ জে হও বট দিহ তাহে পাছে ॥ পরের মুখে ভনিয়া স্থাৰ रविष्ठ देशन मन। ভূমি জে আইয়া আনহ ধাইয়া দেখিব কেমন খন॥ >। 'এ কথা শুনিরা' ইত্যাদি আটটি পংক্ষির পরিবর্জে দৌ: পৃথিতে নিম্নলিথিত পংক্তিগুলি ষ্ট হয়; বথা,—

বাহির হইয়া বোলএ চাহিয়া
কেমনে গেলা রে ভাই ।
আমাদের ঘরে কুগি আছে করে
দেখ একবার জাই ॥
ভানিয়া নাগরে ভাসিলা সাগরে
আপনার মনে খুসি ।
এই বাড়ি হৈতে অগিএ তুরিতে
এইখানে রহ বসি ॥
সাক্ষ জে সাজিতে চলিলা তুরিতে

চণ্ডীদাসে কছে ধাতুজ্ঞান হএ
তবে সে চিকিৎসা জানে॥'
দৌ: পুথিতে 'আগন বসন' ইত্যাদি অবশিষ্ট অংশ
খতন্ত্ৰ পদক্ষণে লিখিত হইয়াছে; কিন্তু রচনা দর্শনে
উহা 'গোকুল নগরে' ইত্যাদি পদের শেষাংশ বলিয়াই
প্রতীত হয়। ১১। 'লেপিলা' দৌ: পুথি। ১২।
'তকল্লকি' ক; 'তগল্গান্তি' দৌ: পুথি। ১০।
'চলিলা' দৌ: পুথি। ১৪। 'চিকিছক-সাজ্ঞে'
ছলে 'চিকিছ্বার কাজে' ক। ১৫। 'নাগরির' দৌ:

পুথি। ১৬। 'অঙ্গুলি মৃড়ি' স্থলে 'অঙ্গুলিতে জুড়ি'

প-র-সা। ১৭। 'পিরিভি-বিষে' ইত্যাদি স্থলে

'পিরিতি বিবেরে জারিছে ইহাঙ্কে' প-র-দা। ১৮। 'পরাণ' ইড্যাদি স্থলে 'পরাণ রহে কি না রহ'ক;

পিরাণ রয় কি নারয় প-র-সা। ১৯। 'গুনিয়;'

लोः পृथि। २०। 'डेठि' क, थ; 'त्रह्' भ-त्र-मा।

२>। 'योजाम' क, ४। २२। 'निहरन' (मी:

বেজার হইবে মনে।

विका

शृथि ।

১৭--২০। "আপন বসন" ইত্যাদি। তথন
নিজের বসন পুলিরা (অকে) কুঁকুম-সংবৃক্ত গেরি
মাটা লেপন করে; আড়ম্বরপুর্ন ভলীতে বসন
পরিধান করে (এবং) হাটিরা (আহ্বান-কারিণীর)
সলে চলে। ('ভক্রবি' শক্ষটি আরবী 'ভকর্কু

শব্দ হইতে গৃহীত ; উহা মুসলমানী বাদালার অভাপি ব্যবদ্বত হইয়া থাকে)।

তথা হাগ ৷১

রসিক নাগর সাজি বাজিকর সঙ্গেত স্থবল সখা। मिष् मुड़ा देनका চোলক বাজাইয়া ভামুপুরে দিলা দেখা ॥ ধুলা মাখি গায় জুপুপ' ঝুলায় নটপটি পাগ শিরে। ম্ববল স্থার কান্ধে দিয়া ভার नामाहेला शीरत शीरत ॥ কুহক লাগাইয়া ঝুলি যে থুলিয়া মুকুতা কাহির করে। উগারে বদনে वस्यूमा धरन त्रार्थं भव थरत थरत ॥ পেটে গুয়া দিয়া বাঁশেতে চড়িয়া ষুরয়ে কভেক পাকে। দড়া বান্ধি তায়ু हाँ हैं हैं। हैं। हैं। वास স্থতা উগাইয়ে নাকে॥ দেখিতে যতনে সব গোপীগণে সঙ্গে রসবতী রাই। আমার মহলে আইস আইস বলে সভাই দেখিতে চাই ॥ শুনি বাজিকর চলে ভার ঘর लहेश जकल जारकः। निद्रत श्रेष पिश्रा পড়ে উলটিয়া রাইয়ের আজিনা মাঝে• 🛭 কভেক কুছক দেখার কৌতুক ধনী হাসি মন বিচিত্ৰ বসন

বাজিকর-শিরে কেলে।

আর ধন চায় বসন না লয় कर्ट श्वननी-भारम । হেম-ঘট আছে হিয়ার মাঝেদ দিয়া পূর অভিলাদে ॥ বুঝিলা চাতুরী শুনিয়া নাগরী চমকিত হৈলা মনে। না দেখিয়ে আর হেন বাজিকর কত টীটপনা জানে। যমুনার কূলে স্থবতরু-মুদে সকল সাধিবা তথা। চলিলা ভুরিতে এ উদ্ধব সাথে वृक्षिया मह्ह ७-कथा ॥>>॥७४८॥ ইতি তৃতীয়-পল্লব:। এভানি গীভানি সর্ব্বকালোচি হানি। পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১২২ সংথ্যক পদ। ২। 'ঝুলুপ'থ। ৩।'দড়ী'ক। ৪।'হাটি হাট' ঘ। ৫। 'সাজৰ'থ। ৬। 'মাঝ'থ। ৭।'হাটি হাটি'খ। ৮। 'মাঝারে'ক।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং। দিনান্তে জ্রীক্রফে চ সঙ্কেতঃ। এবং স্বয়ংদোত্যং যথা।

ইনন্দন্যাব 12

মঝু মুখ বিমল-কমল-বর-পরিমলেং
কানেলুঁ তুহুঁ অতি তোর।
বামিক নিরড়ে কতহুঁ কর কলরব
না জানি কৈছে দিলা তোর॥
তুরে রহুং খ্যাম শ্রমর-বর-রার।
বামিক সেবন করইতে ঐছন
কানি করহ অস্তরার॥ এদ ॥

এতহঁ তিয়াসে হোত ধব আকুল
কী ফল মন্দিরে গুঞ্জা।
তাহিঁ চলহ যাহাঁ কুস্থম বিধারল
মঞ্জুল মাধবি-কুঞ্জা।
এতহাঁ সঙ্কেত কয়ল যব কামিনি
কামু চললাও সোই ঠাম।
গোপ-গোঙার ভ্রমর বলি খোজত
গোবিন্দ দাস রস গান্ও । ১॥৬৪৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৪|১১২৩ সংখ্যক পদ। 'ইমন কল্যাণ' স্থলে 'কল্যাণী' খ, প-র-সা। ২। 'মুথ-বিমল' ইত্যাদি স্থলে 'মুথ-কমল-বিমল-রস-পরিমলে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'নিথি' প-র-সা। ৪। 'দিন' খ, চ, প-র-সা। ৫। 'রহ'ক। ৬। 'হোরত' প-র-সা। ৭। 'কি' ক। ৮। 'ভংশে' খ। ৯। 'কুলে' খ। ১০। 'চলত' প-র-সা। ১১। 'রস গান' স্থলে 'পরমাণ' খ।

টীকা।

১—१। "মঝু" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর
লিথিরাছেন,—'অথ শ্রীমতী বাটীনিকটে শ্রমরংধনিনা
ক্রতসক্রেতং শ্রীকৃষ্ণং প্রতি মঝু মুথ-বিমল-ক্মল-বরপরিমল ইত্যাদিকং সক্রেতমাহ'। অর্থাৎ একদা
শ্রীকৃষ্ণ শ্রীরাধার বাটীর নিকটে বাইরা শ্রমরের স্তার
গঞ্জন-শন্ধ করিয়া সক্রেত জানাইলে শ্রীরাধা 'মঝু
মুখ' ইত্যাদি বাক্যে ঐ সক্রেতের প্রত্যুদ্ধরে সক্রেত
করিয়াছিলেন। 'মঝু মুখ' ইত্যাদি পংক্তিশুলির
ব্যাধ্যা করিতে জব-পংক্তিশুলির ব্যাধ্যা আগে ক্রা
ক্রেবিধাজনক। শ্রীরাধা ক্ষয়-শ্রমরছলে শ্রীকৃষ্ণকে
সবোধন করিয়া বুলিতেছেন,—'হে শ্রাম শ্রমর-রাল!
ভূমি দূরে থাক; স্বামীর সেবা করিবার কালে এইরূপ প্রতিবন্ধকতা করিও না। আমি জানিয়াছি বে,
আমার মুখরপ বিমল ক্মল-বরের সৌরত্তে ভূমি
নিভাত্ত মোহিত; (ভাই বিলয়া) স্থানীর নিকটে

কত কলধ্বনি করিতেছ ? না জানি তোমার দিল অর্থাৎ প্রাণের বাসনা কিন্ধপ! (শ্রীকৃষ্ণ সঙ্কেত-ত্তচক ক্রমর-গুঞ্জন করার সময়ে শ্রীরাধার পতি ফাগরিত থাকার, শ্রীকৃষ্ণকে কৌশলে সতর্ক করার উদ্দেশ্তে শ্রীরাধা এই সঙ্কেত করিতেছেন)।

৮—১১। "এতছঁ" ইত্যাদি। যদি এতই ছুফার অর্থাৎ মধুপানের পিপাসার অস্থির হইয়া থাক, (তাহা হইলে) মন্দিরে গুঞ্জন করিয়া ফল কি ? সেই স্থলে যাও—যেথানে স্থলর মাধবীলভার ক্রিরাছে! (এই বাক্যের ধ্বনি এই বে, তুমি নির্জ্জন মাধবীকুঞ্জে অভিদারে গমন কর, আমিও সম্বরেই স্থ্যোগ্যতে তথার যাইতেছি!)

১২-->৫। "এতহ" ইত্যাদি। নাম্বিকা (শ্রীরাধা) বর্থন এই সঙ্কেত করিলেন, তথন শ্রীক্রম্ভ সেই স্থলে অর্থাৎ মাধবী-কুঞ্জে চলিলেন: (খ্রীরাধার এই সঙ্কেত-বাক্যের তাৎপর্য্য ব্রিতে না পারিয়া, প্রকৃত পক্ষেই একটি ভ্রমর জীরাধার মুখ-কমলের পরিমল **দারা আকুট হইয়া গৃহে আসিয়া গুঞ্জন করিতেছে.** মনে করিয়া ভ্রমর তাড়াইবার জ্ঞা) মূর্খ গোপ ভ্রমর (কোথায় গেল) বলিয়া খুঁজিতে লাগিল। গোবিন্দ-দাস এই রস গান করিছেছেন। ('বেই গোপ. সেই গোঙার. এইরূপ কর্মধারর সমাস দারা 'গোপ-গোঙার' শব্দটি নিষ্ণান্ন হইয়াছে। 'গোঙার' শব্দের ব্যুৎপত্তিগত অর্থ 'গ্রামবাসী'; 'নাগরিক' বা 'নাগর' লোকের ভুলনার 'গ্রাম্য' বা 'গোঙার' লোক প্রায়শঃ निर्द्शिष इय बिनमा '(शिक्षात' भटकत 'मूर्थ' व्यर्थ আসিয়াছে। আধুনিক বাশালায় 'গোঙার' হইতে আত 'গোঁৰার' শক্টি 'এক এঁরে' অর্থেই ব্যবহৃত रुव।) গোবিन्सनारमत्र **এই পদটি "উদ্ধ**বসন্দেশ" কাবোর নিম্নলিখিত সোকের মর্মাত্বাদ; যথা,—

"নবজ্বাভোক্ত-পরিমলোগান্ত সেবাস্থ্যক্ষে পড়াঃ ক্ষণ্ডন্তনর কুক্তবে কিন্তরানন্তরানন্ত্র। ভূকাভিত্যং বদি কলকত ব্যপ্রচিত্তভাগের গুলৈঃ পাঞ্চ্ছবিদ্বিবরিশ্বৈতি পুরাণকুঞ্দ ।" "পাণ্ডুচ্ছবিমিতি অস্তাং চক্সিকাবহুলারাং রক্সতাং তম্ম জনৈর্জ্লিকাত্ম। অবির্শৈনিবিট্ড্রিতি গুল্প-বেশ্তম্। স্কুরভিদাৎ শুক্সারোপ্যোগিত্বং চ।"

—বিখনাপ চক্র বর্ত্তি-ক্বত আনন্দচন্ত্রিকা টীকা।

কেদার ৷১

গুরুজন পরিজন সব নি দং গেলে ।
তৈখনে সবহুঁ সখীগণ মেলা ॥
চাল্দনি রজনি হেরি ভেল ভীত।
বেশ বনাওল তাহিঁ উচিত ॥
গোপতে চলল ধনি কোই না জান।
হেরই দশ দিশ চকিত-নয়ান॥
চিমকর-কিরণহি ভেল বিধার।
মেলি চললি কোই লখই না পার॥
কালিন্দি-কুলে যাহাঁ মাধ্বি-কুঞ্জ।
কুন্থম বিধারণ অলিকুঞ্জ গুঞ্জ॥
তাহিঁ মিললি ধনি মাধ্ব পাশ।
বৈঠল ছহুঁ জন পুরল আশা।২॥৬৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১১২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'নিদ্দ' ঘ, চ। ৩। 'গেলি' খ ; 'গেলী' ঘ। ৪। 'মেলি' খ ; 'মেলী' ঘ।

টাকা

৩—৪। "চান্দনি" ইত্যাদি। (সধীগণ)
জ্যোৎসাময়ী রজনী দেখিয়া,(জ্যোৎসা রাজে কিরুপে
অভিদার করিবে, সেই চিস্তায়) আশন্ধিত হইল
(এবং মনে সহুপায় স্থির করিয়া) জ্যোৎসার উপযুক্ত
(শুদ্র) বেশ প্রস্তুত করিল।

৭—৮। "হিমকর" ইত্যাদি। চক্রের জ্যোৎছা (দশ দিকে) বিস্তারিত হইল; (শ্রীরাধা ও সধীগণ) সেই জ্যোৎসার সহিত মিশিরা চলিলেন,—কেহই (তাঁহাদিগকে) লক্ষ্য করিতে পারিল না। ভুলনা কর্মন,—

"মল্লিকাচিতধশ্বিল্লাশ্চাক্রচন্দনচর্চ্চিতা:। অবিভাব্যা: স্থুং যাস্তি চন্দ্রিকাসভিদারিকা:॥"

--- সাহিত্যদর্পণ, ১০ম পরিচেছদ।

তথা রাগ।১

দেখ রাধানাধব-মেলি।
মুক্তি মদন-রস-কেলি॥
ও নব জলধর-অজ।
ইহু থির-বিজুরি-তরজ॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহু কাঞ্চন দশবান॥
ও মত্ত মধুকর-রাজ।
ইহু নব পছুমিনি সাজ॥।
ও নব তরুণ-তমাল।
ত মুখ চান্দ উজোর।
ইহু দিঠি লুবধ চকোরং॥
অরুণ নিয়ড়ে পুণ্ণ চন্দ।
গোবিন্দ দাস রহুঁণ ধন্ধ।।।১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ০৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ও মুখ' ইত্যাদি লোকটি ক, খ, ঘ, চ পুথিতে নাই। ৩। 'পূন' ক, খ, ঘ, চ; 'পূন্ন' প-র-সা। ৪। 'পৃহ' প-র-সা।

নিকা

>-- २। "দেশ" ইতাদি। (হে স্থি!) শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণের সন্মিলন দর্শন কর; (উহা) মূর্ত্তিমান্ কাম-কেলিম্বরূপ।

e->। "ও বর" ইত্যাদি। উনি (অর্থাৎ প্রীকৃষ্ণ) উৎকৃষ্ট সরকতের শোভা-বিশিষ্ট; ইনি (অর্থাৎ শ্রীরাধা) দশবান অর্থাৎ উপর্যুগরি দশ বার দাহ ধারা বিশুদ্ধ স্থবর্ণস্বরূপ।

১৩--১৪। "অরুণ" ইত্যাদি। (পূর্ব্ব পূর্ব্ব প্রেরিকর বর্ণিত নব-জ্বলধরের নিকট বিদ্যুৎ-ছটার, মরকত-মণির নিকট নির্মাণ স্থানের, মধুকরের নিকট পদ্মিনীর, তরুণ তমালের নিকট স্থা-বৃথি-লতার ও চন্দ্রের নিকট স্থা-লূক চকোরের অবস্থান অসম্ভব নহে, কিন্তু) অরুণের নিকটে পূর্ণচক্ত অর্থাৎ শ্রীরাধার স্থ্যক্রপ সিন্দুর্বিন্দুর নিকটে শ্রীক্তম্ভের চক্তর্মপ খেত-চন্দন-বিন্দুর অবস্থান দেখিয়া গোবিন্দ্র-দাস ভার হইয়া রহিলেন।

মলার।১

ভূলে ভূলে রে দোহাঁর রূপে নয়ন ভূলে।
কনক-লতিকা রাই তমালের কোলে॥
বাজই বনে বনে শুমই দুর্ছা।
দোহাঁর কাকে শোভে দোহাঁর বাছ॥
দীপ স্মীপে যেন ইন্দ্রনীল-মণি।
জলদে জড়ায়ল যেন সৌদামিনী॥
ক্ষিতে ক্ষিল নহে কুন্দন হেম।
ভূলনা দিবারে নাহি দোহাঁকার প্রেম॥
বদনে বদন দিতে মদন জাগে।
আলিজন দিয়া শ্রাম কিবা ধন মাগে॥
চান্দ উপরে চান্দ পিয়ে রস-স্থধা।
গোবিন্দ দাস কহেনা ভাজিল কুষা॥৪॥৬৪৯॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১২৫ সংখ্যক পদ। ২। 'তমাল' ক, ঘ। ৩-৪। 'ত্হাঁর' ক। ৫। 'কুক্লন' প-র-সা। ৬। 'দিবারে নাহি' ছলে 'দিবার নাহি' ক, চ; 'দিবারে নাই' খ, ঘ। ৭। 'ত্হাঁকার' ক; 'দোহাঁর' খ, ঘ; 'রাধাকাল্লর' প-র-সা।

টীকা

৭—৮। "ক্ষিতে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধাক্ষের প্রেমের সহিত জুলনা দিবার গলু)
বিশুদ্ধ অর্থ কৃষ্ ক্রিতে (যাইয়া) কৃষ্ ক্রার
বোগ্য হইল না; উভয়ের প্রেমের জুলনা দিবার
(উপযুক্ত বস্তু) নাই।

শীরাগ।

আজি বড় শোভা রে মধুর রুন্দাবনে।
রাই কান্সু বসিলা রতন সিংহাসনে॥
হেম-নিরমিত বেদা মাণিকের গাঁথনা।
তার মাঝে রাই কান্সু চৌদিগে গোপিনা॥
একেক তরুর মূলে একেক অবলা।
মেঘে বেঢ়ল যেন বিজুরীক মালা॥
নব গোরোচনা গোরী কান্সু ইন্দীবর।
বিনোদিনা বিজুরা বিনোদ জলধর॥
কাঁচ বেড়া কাঞ্চনে কাঞ্চন বেড়া কাঁচে।
রাই কান্সু ছুণুঁ তন্মু একই হইয়াছে ॥
রস-ভরে ছুলুঁ জন হইলা বিভোর।
দাস অনস্থে কহে না পাইলুঁ ওর॥৫॥৬৫০॥

পাঠান্তর

১-২। 'বেঢ়া' ঘ। ৩। 'একই হইয়াছে' স্বলে 'এক হৈয়া আছে' ক।

ভৰা রাগ ৷১

কন্দর্প তাল।

রাই-অল-ছটার ওদিত ভেল দশ দিশ
শ্রাম ভেল গৌর-আকার।
গৌর ভেল সখীগণ গৌর নিকুঞ্জ বন
রাই রূপে চৌদিগে পাধার।

গোর ভেল শুক সারী গৌর ভ্রমর ভ্রমরী গৌর পাখা ডাকে ডালে ডালে। গোর কোকিলগণ গৌর ভেল রুন্দাবন গৌর তরু গৌর ফল-ফুলে॥ গৌর যমুনা-জল গৌর ভেল জলচর গোর সারস চক্রবাক। গৌর আকাশ দেখি গৌর চান্দ তার সাধী গৌর ভারা বেড়ি লাখে লাখ। গৌর অবনা হৈল গোরময় সব ভেল রাই রূপে চৌদিগ ঝাঁপিত। নরোত্তম দাস কয় অপরপ রূপ নয় ছহু তমু একই মিলিত ॥৬॥৬৫১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সাপুথির ১১২**৬ সংখ্যক পদ।** ২। 'ছটায়ে'চ। ৩। 'রোপিড'প-র-সা। টীকা

্ ১—২। "রাই-অঙ্গ' ইত্যাদি। পদকর্ত্তা নরোন্তম দাস "রাই-অঞ্জ-ছটার" ইত্যাদি বাক্যের ইঞ্জিত দারা বুঝাইয়াছেন বে, শ্রীরাধার ভাব-কান্তি-সম্বিত হইরা শ্রীক্ষণ অতঃপর বে শ্রীগোরাশ-রূপে প্রাছর্ভ হইবেন, এখানে তাহারই পূর্বাভাদ স্থাচিত হইয়াছে। তুলনা কর্মন,—

"রাধা-ভাব-ছ্যাতি-স্থবলিতং নৌমি ক্বঞ্চস্বরূপম্।" —-শ্রীরূপগোস্বামীর কড়চা।

क्रम शहनी।>

মলয়জ-মিলিত যমুনা-জল শীতলং বংশীবট নিরমাণ। নিকটহি নীপ কদম্ব-ভক্ন কুত্রমিঙ কোকিলা শুমরাণ করু গান॥ তার তলে তিরিভঙ্গ তরুণ-তমাল-তমুণ
বামে রুসবতি রাই।

একে নব জলধর কোণ্ডনে রুজন মিশাই॥

ফুছঁ তমু এক মন নিবিড় আলিঞ্গন

ফুছঁ জন ১১ একই পরাণ।
বিস্থ রামানন্দ ভণে ভুলনা না হয়ে২২ মনে১৩
রূপের নিছনি পাঁচ-বাণ॥৭॥৬৫২॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুলির ৩২০।১১২৭ সংখ্যক ও প-র পুলির ৪২।৪৫ সংখ্যক পদ। 'করুণ হছিনী' শস্ক-বন্ধ প-র পুলিতে নাই। ২। 'মুণীতল' খ, ছ, চ, প-র; 'কুলতট' প-র-সা। ৩। 'কোকিলা ভ্রমর' ছলে 'কোকিলা ভ্রমর' প-র। ৪। 'তার' ইত্যাদি হলে 'তরুতলে ত্রিভলিম' প-র-সা। ৫। 'বেন' প-র-সা। ৬। 'রসবতী' ক। ৭। 'বামে' প-র-সা। ৮। 'কাঞ্চনে রজন' হলে 'কাঞ্চন বরণে' প-র-সা। ৯-১০। 'দোহ' প-র-সা। ১১। 'ভ্রমু' প-র। ১২। 'না হরে' হলে 'নহিল' প-র। ১০। 'বেনে' প-র-সা(১১২৭ পদ্)। 'ভূপনা' ইত্যাদি হলে 'হেনলর মোর মনে' প-র-সা(৩২৩ পদ্)।

টাকা

৯—১২। "ছছ" ইত্যাদি। ছইটি দেহ,
(কিন্তু)মন অর্থাৎ ইচ্ছা এক; গাঢ় আলিদনে
(আবদ্ধ) উভয়ের একই হাদয়; বহু রামানন্দ
কহিতেছেন—উভয়ের তুলনা মনে (উদিত) হয়
না; (ভ্ৰন-মোহন) পঞ্চ-বাণ অর্থাৎ কন্দর্প
(উভয়ের) রূপের নিকট তুচ্ছ।

বিহাগড়া।১

রাই-কামু-পিরিতির বালাই লৈয়া মরি। ক্ষণে করে আলিক্ষন ক্ষণে মুখ-চুম্বন ক্ষণে রাখে হিয়ার উপরি॥ <u>আউলায়্যা২ চাঁচর কেশ</u> করে বহুবিধ বেশ সিন্দুর চন্দন দেই ভালে। মুখচাঁদে দেখি ঘাম আকুল হইয়া শ্যাম মোছায়ই বসন-অঞ্লে॥ দাসীগণ-করে° হৈতে চামর লইয়া হাতে আপনে করয়ে মৃত্রু বায়। দেখি রাই-মুখ-শশী হুধা ঝরে রাশি রাশি হেরি নাগর অনিমিখে চায়॥ ঐছন আরতি দেখি রাইয়ের সজল আঁখি বাহু পদারিয়া করে কোরে। তুহুঁ হিয়ায় তুহুঁ রাখি ত্ত চুম্বে মুখ-শশী হুহুঁ-প্রেমে হুহু ভেল ভোরে। শুতল কুম্ম-শেজে নিকুঞ্জ-মন্দির মাঝে দোহেঁ দোহা বান্ধি ভুজ-পাশে। আর যত স্থাগণ সভে করে নিরীক্ষণ দূরে রক্ত্ নরোক্তম দাসে ॥৮॥৬৫৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প র-সা পুথির ১১২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'আ বৃদ্ধা' ক; 'আ বৃদ্ধা' খ, চ, প-র-সা; 'আ বাঞা' ঘ। ৩। 'কর' ক, খ, প-র-সা।

স্থিনী।১

অধবে অধব ছছ ধরি।
শুভিয়াছে কিশোর কিশোরী॥
ভূজে ভূজে দোঁছে দোঁছা বাদ্ধি।
পবন পশিতে নাহি সাদ্ধি।
চিকুরে চিকুরে এক করি।
শুভিয়াছে ভাহারি উপরি॥

রাই-কুচ হিয়ার মাঝারে।
পশিয়াছে শ্রাম-কলেবরে॥
হিয়ার মাঝারে বৈল পশি।
নীল-ছেমগিরি' মাঝে শশী॥
বলয়া কিন্ধিণী ভাহেও লাগে।
ছুহুঁ তমু এক অমুরাগেও॥
চরণে চরণে একাকারেও।
কেবা ভাহা ছাড়াবারে পাবেও॥
এক তমু ধরি যদি টানে।
ছুহুঁওও তমু চলেও ভার সনেওও॥
শ্রীরূপমঞ্জরী দেখি হাসেও।
শ্রীরূপমঞ্জরী তার পাশে॥
অপরূপ ছুহুঁক বিলাদে।
এ যতুনন্দন রুসে ভাসে॥ ১॥৬৫৪॥

পাঠান্তর

)। हेहां भ-द्र-मा भूषित 8•२।**১**১२**৯ मः**श्राक ও প-র পুথির ৩৯।৪২ সংখ্যক 'কিশোরা' প-র, প-র-সা। ৩। 'সন্ধি' ক। অতঃপর প-র পুঝিতে 'রাই-কুচ' ইত্যাদি শ্লোক. তৎপরে 'বলয়া কিঙ্কিণী' ইত্যাদি শ্লোক ও তৎপরে 'চরণে চরণে' ইত্যাদি শ্লোক দৃষ্ট হয়। श्वांत मावादा' ইত্যাদি স্থলে 'বসন ভ্ষণ পড়ে খদি' প-র-দা। ৫। 'নীল-হেমগিরি' স্থলে হেম নীলগিরি' প-র-সা (১১২৯ সং পদ)। ৬। 'বলয়া' ইত্যাদি ছলে 'কুছুম চনদন ছত্'' প-র। १। 'ছব্' ইত্যাদি হলে 'ছটি তহু একু' ইভ্যাদি প-র। ৮। 'এক করি' প-র। ৯। 'পারে' **হলে '**পারি' প-র। 'কেবা' ইত্যাদি স্থলে 'রুণ কেছ নারে লখিবারে' প-র-সা। ১০। 'ছুটী' र्ग-त्र-मा; 'ब्यांत्र' श-त्र । ১১। 'ब्यांहेरम' श-त्र । ১২। অভঃপর প-র পৃথিতে নিম্নলিখিত শ্লোক पृष्ठे रमः, यथा,--'व्यव टेक्ट्स् कहवि बाहेति। हेश करि रात्न नरहती ॥' '১०। 'खेक्नश्रक्ती' रेखानि

পংক্তি চারিটির পরিবর্দ্তে প-র পুথিতে নিম্নণিথিত পংক্তি ছইটি দৃষ্ট হয়; যথা,—'ব্রীক্রপমঞ্চরী বৃদি পাশে। এ ষত্নন্দন রুদে ভাগে॥'

गिका

৯—১০। *হিয়ার* ইত্যাদি। (প্রীরাধার জন গাঢ় আলিকন হেতু প্রীক্তফের) হৃদয়ের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া রহিল; (তাহাতে বোধ হইল, বেন) নীলকাস্ত-মণি ও স্ক্বর্ণের পর্বতের মধ্যদেশে (প্রীরাধার জন-রূপ) চক্ত-মগুল (বিরাজিত রহিয়াছে!)

क्षांत्र १३

দেখ না তুখানি অঙ্গ জড়া।
নিকুঞ্জের মাঝেং তমালের গাছেও
কনক-লতায় বেড়া ॥ গ্রুছ ॥
আধ কপালেও চন্দনেরও চাঁদ
আধ কপালেও ভাতু।
আধ নয়ানেও কাজরেরও রেখা
আধ নয়ানে ইন্দ্রধসু ॥১০॥৬৫৫॥
ইতি চতুর্থ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৩০ সংখ্যক পদ। 'কেদার বিহাগড়া' ক, চ, প-র-সা। ২। 'মাঝ' প-র-সা। ৩। 'গাছ' প-র-সা। ৪। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'চন্দন' ক। । ৬। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। १। 'নরানে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৮। 'কাজর' ক, প-র-সা।

টীকা

পদকলত রূর শেষে "অস্বাদ-প্রকরণে" বৈঞ্চব-দাস পল্লব-সমূহের বর্ণনীয় বিষয়ের সংক্ষেপে উল্লেখ করিতে বাইয়া লিখিয়াছেন,—

> "একাদশ পদ তৃতীরে চতুর্বে সে দশ। অরংদৃতী সম্পন্ন সম্ভোগাধ্যান রস॥"

"সম্পন্ন" শন্ধটির সহিত আকার ও অর্থ-গত কিঞ্চিৎ সাদৃষ্ঠ হেতুই বোধ হর, লিপিকরগণ প্রান্ন সর্ব্বেই "সম্পন্ন-সম্ভোগ" শন্ধ-ব্যের পরিবর্তে ভ্রমবশতঃ "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" লিখিরাছেন; উদ্ধৃত গ্রোকেও সকলগুলি প্থিতেই "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" পাঠ দেখা যায়। অধিতীয় বৈক্ষব রস-শাস্ত্রকার শ্রীরূপ গোস্বামী তাঁহার স্থপ্রসিদ্ধ "উচ্ছল-নীল-নশি" গ্রান্থ্র "সম্ভোগ" প্রকরণে লিখিরাছেন.—

"দর্শনালিক্সাদীনামাকুক্ল্যারিবেবরা। যুনোক্রাসমারোহন্ ভাব: সভোগ ঈর্ব্যতে॥ মনীবিভিররং মুখ্যো গৌণশ্চেতি বিধোদিত:।

তত্ত্ব মুধ্য:।

মুখ্যো জাগ্রদবস্থায়াং সভ্যোগঃ স চতুর্বিধঃ। তান্ পূর্ব্বরাগতো মানাৎ প্রবাসন্বয়ত: ক্রমাৎ। জাতান্ সংক্ষিপ্ত-সংকীর্ণ-সম্পন্নজিমতো বিহ: ॥° অর্থাৎ নায়ক-নায়িকার সন্মিলনাত্মক সজোগ मुका अ त्रीन-एक्टन चिविध । जाश्चनवस्थात्र त्य मुका সম্ভোগ হয়, তাহা আবার চতুর্বিধ; উহা যথাক্রমে পূর্ব্বগোর, মান, অদূর প্রবাদ ও হুদূর প্রবাদের পরে मञ्चि इहेमा थाटक এवः উहामिशटक यथाक्रटम गःकिश, मःकीर्ग, मन्ना ও चिक्रमान् किःवा ममृद्धि-মানু সম্ভোগ বলা হয় ৷ স্বয়ং-দৌত্যের যে লক্ষণ তম শাখার ২ পৃঠার পাদ-টাকায় উদ্ধৃত হইয়াছে, ভাহার আলোচনা করিলে বুঝা ঘাইবে যে, নামক-নায়িকা পরম্পারের অদর্শনে অতিশব্ধ উৎক্ষিত না হইলে স্বাভাবিক লজ্জাসকোচ পরিত্যাগ করিয়া স্বয়ং-দৌত্যে প্রবৃত্ত হয় না। স্করাং প্রয়ং-দৌত্যের স্থলে বে অদুর-প্রবাদ-ক্ষনিত বিরহ বর্তমান রহিয়াছে, ইহা অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে; মুতরাং স্বরং দৌত্যের অত্তে সভাটত নায়ক-নায়িকার স**ভো**গকে রস-শান্ত্রাপুসারে 'সম্পন্ন সংস্থাগ' বলিয়া গণ্য করাই नशोहीन स्टेशारह।

অথ রসালস।

তত্রচিত-শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাষ ৷১

শুভিয়াছে গোরাচাঁদ শয়ন-মন্দিরে।
বিচিত্র পালক্ষ শেজ অতি মনোহরে॥
আলগে সবশ-তমু গোরা নটরার।
কি কহব অন্স-শোভা কহনে না যায়॥
মেঘের বিজুরী কিবা ছানিয়া যতনে।
কত রস দিয়া বিধি কৈল নিরমাণে॥
অতি মনোহর শেক্স বিচিত্র বালিশে।
বাস্থদেব ঘোষে দেখে মনের হরিষে॥১॥৬৫৬

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩১ সংখ্যক পদ।
২। 'শুতিয়াছে গোরাটাদ' হলে 'শুতিয়া আছেন গোর' ব, চ। ৩। 'পালক' প-র-সা। ৪। 'আবেশে' ক, চ; 'অলসে' ঘ। ৫। 'কি কহব অক-শোভা' হলে 'কি কব অকের শোভা' প-র-সা। ৬। 'কয়' প-র-সা।

ट्छत्रवी ।>

অকরণ পুন বাল অরণ
উদিত মুদিত কুমুদ-বদন
চমকি চুন্বি চঞ্চরি পদ্ধমিনিকং সদন সাজে।
কি জানি সজনি রজনি ভোরণ
যুখ্
গ্ ঘন ঘোষে ঘোরণ
গঙ্গ যামিনি জিত-দামিনি
কামিনি-কুল লাজে ॥
কুছকত হত-শোক কোক

শুক-শারিক-পিরুদ •কাকলি নিধুবন ভরু ওয়াজে । . গলিত, ললিত বসন সাজ মণিযুত বেণি-ফণি বিরাজ উচ-কোরক-রুচ-চোরক>ং কুচ-জোরক>০ মাঝে॥ তড়িত-ফডিত ক্লদ ভাতি তুহে^{১৪} স্থাং শুভি১৫ রহল মাভি জিনি ভাদর রস-বাদর পরমাদর শেজে। বরজ-কুলজ জলজ-নয়নি১৬ घूमल विमल-कमल-वय्नि কৃত-নালিশ ভুজ বালিশ আলিস নাহিণ ভেজে। টুটল কিয়ে খুণ ধমুগুণ কিয়ে রতি-রণে ভেল তুণ শুন্দ সমর মাঝা> পডল লাজ রতি-পতি ভয়ং ভারে। বিপতি পড়ল যুবতি-বৃন্দ গুরুগণ-গতি কহই২১ মন্দ क्रगतानम मन्नमः - वित्रम রসবভি রসরাজে॥ ২॥৬৫৭॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১১৩২ সংখ্যক ও প-র পৃথির ৩৯।৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'পদমিনিক' প-র-সা। ৩। 'থোর' ক, খ, খ, প-র-সা; 'ঘোর' চ। ৪। 'ঘুঘু' ক, চ, প-র সা। ৫। 'ঘোরে ঘোর' ফলে 'ঘোষরে ঘোর' ক; 'ঘোষে থোর' চ; 'গতছ ঘোর' প-র-সা। ৬। 'গতে।' প-র-সা। ৭। 'কুছরত' ক, খ; 'ফুফরত' প-র।৮। 'পিক' ফ, খ, প-র-সা। ৯। 'ভরি' প-র-সা, প-র। ১০। 'ভ্ৰাকে' খ, য, চ, প-র-সা। ১২। 'উচ-কোরক' ইত্যাদি স্থলে 'উচ
চোরক কুচ জোরক' প-র। ১৩। 'কুচ কোরক'
পর। ১৪। 'দোহে' ক, ধ, দ, চ, প-র-সা।
১৫। 'স্থেও শুডি' স্থলে 'স্থেও' ক; 'শুভি স্থরে'
প-র-সা। ১৬। 'বরজ-কুলজ' ইত্যাদি পংজি
চারিটি থ ও প-র-সা প্থিতে নাই। ১৭। 'নাহি
জো' প-র-মা। ১৮। 'কিয়ে রভি-রণে' ইত্যাদি
স্থলে 'রভিরণে পুন ভই তুণ শুন' প-র। ১৯।
'মাঝে' ধ। ২০। 'ভয়ে' থ, চ। ২১। 'শুক্র-গণ' ইত্যাদি স্থলে 'শুক্রজনগণ কহব' প-র।
২২। 'হরস' প-র।

টীকা

১—৪। "অককণ" ইত্যাদি। নিষ্ঠুর নবীন অর্থাৎ প্রভাতকালীন স্থা উদিত (হইয়াছে); কুমুদের মুদ্রিত অর্থাৎ সন্ধুচিত বদন (প্রেম-জ্ঞাপন জক্ষ) চমকিতভাবে চুম্বন করিয়া, (মধু-লুক) ভ্রমর পদ্মিনীর আলয়ে অর্থাৎ পদ্ম বনে বিরাক্ষ করিতেছে। 'চমকি' শব্দের ধ্বনি ন্থারা পদ্মিনীর নিকট যাওয়ার জন্য প্রমরের চঞ্চলতা ব্যক্তিত হইতেছে। অর্থবা মুদ্রিত হওয়ার কালে কুমুদ যদি ভ্রমরকে আটকাইয়া ফেলে, সেই আশক্ষায় ভ্রমর তাড়াতাড়ি প্রস্থান করিতেছে,—ইহাও বুঝা যাইতে পারে।

৫—৮। "কি জানি" ইত্যাদি। হে স্থি!
রন্ধনী ভার (হইরাছে) জানিয়া কি যুত্ব-পক্ষী
ঘন ঘন গন্তীর ধ্বনি করিতেছে ? যামিনী গত
হইয়াছে; জিত-দামিনী অর্থাৎ অজ-কান্তি ছারা
বিছ্যজ্জিমিনী (অভিসারিকা) রম্নীগণ (লক্ষিত
হওয়ার আশক্ষায়) লজ্জিত হইতেছে।

৯—১২। "কুহকত" ইত্যাদি। (চক্রবাকমিথুন বিধাতৃক্বত নির্মাল্পারে রক্তনীতে পরস্পার

হইতে বিযুক্ত থাকিয়া স্র্রোদেরে পুনরায় সন্মিলিত

হয় বলিয়া) বিগতশোক অর্থাৎ শোক-অবগানে
প্রাক্তল চক্রবাক ভাকিতেছে; এখন সকল লোকই
ভাগিৰে; শুক, শারিকা ও কোকিলের কলধনি

বারা নিধুবন আওয়াজ অর্থাৎ নিনাদে পরিপূর্ণ হইতেছে।

১৩—১৬। "গলিত" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীরুঞ্জের) স্থন্ধর বদন অঙ্গ হইতে এই হইরা (শ্ব্যার) শোভা পাইতেছে; (শ্রীরাধার) মণিমুক্ত বেণীরূপ ফণী উন্নত (কমলের) কোরকের কান্তি-অপহরণ-কারী কুচ-মুগলের মধ্যস্থলে বিরাজিত হইতেছে। 'মণিমুত' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এই যে, শ্রীরাধার মণিগ্রাধিত উন্মুক্ত কুষ্ণ-বেণা উহার অনহরের মধ্যে পতিত হও্রায় বোধ হই-তেছে যেন, মণিধারী একটি কুঞ্জ-সর্প কমল-কোরকমধ্যে শোভা পাইতেছে। পদ্মবন সর্পের প্রির বাস-স্থল বলিয়া প্রাসিদ্ধ বটে। তুলনা কর্ণন,—

"উর পর সামরি বেণী।

ক্ষল-কোষ-পর কারি নগেনী॥

—বিদ্যাপতি।

১৭—২০। 'বরজ' ইত্যাদি। বজ-কুলজাতা জলজ-নয়না অর্থাৎ নীলোৎপল-নেত্রা পদ্মম্বী (প্রীরাধা)
বুমাইলাছেন; (তাঁহার) ক্ত-নালিশ (কৃত
হইয়াছে নালিশ ধংকর্ত্ক) অর্থাৎ অভিযোগকারী
ভূজ বালিশ ও আলম্ভ অর্থাৎ রতি-বিমর্দ-জনিত
অবসাদ পরিত্যাগ করিতেছে না। ('কৃত-নালিশ'
শব্দের বারা ইহা ব্যক্তিত হইতেছে যে, প্রীরাধার ভূজ
বালিশের উপর প্রসারিত হইয়া, অবসাদ হেতু
আলিজনের অসামর্থ্য প্রকাশ করিয়া প্রীক্রফের
নির্দির সম্ভোগের প্রতি দোবারোপ করিতেছে।)

২১—২৪। "টুটল" ইত্যাদি। ঘূণ (কীট)
কি (কলপের) ধহন্ত পিকে ছিন্ন করিয়াছে ? কিংবা
রতি-বৃদ্ধে (কলপের) তৃণ শৃত্ত হইয়াছে ? (প্ররতরূপ)
বৃদ্ধের মধ্যে রতি-পতি অর্থাৎ কলপ কিংবা স্থরতের
অধিষ্ঠাতৃ-দেবতা (নিরম্ভ হওয়ার) লজ্জার পড়িল
এবং (পরাজিত হওয়ার) ভরে পলায়ন করিল।

২৫---২৮। "বিপতি" ইত্যাদি। (অভি-সারিক।) বুবতী-সমূহ বিপদে পতিত হইল অর্থাৎ বাইবে, কি থাকিবে, ছির করিভে না পারিয়া শাঁদরে পড়িল; (তাহারা) গুরু-জনের গমনাগমন সম্বন্ধে চুপে চুপে বলাবলি করিতে লাগিল কিংবা গুরুজনের মন্দ চরিত্র সম্বন্ধে বলাবলি করিতে লাগিল। জগদানন্দ (বলিতেছেন) রসবতী শ্রীরাধা ও রসরাজ দ্বীক্ষণ সরস-বিরস অর্থাৎ সানন্দের অবস্থায় নিরানন্দ হইলেন।

সারীশুকোক্তি যথা।

বিভাগ ৷১

রাই জাগ রাই জাগ শারী শুকং বলে।
কত নিদ্রা যাও কালামাণিকের কোলে॥
রজনী প্রভাত হৈলত বলিয়ে তোমারে।
অরুণ-কিরণ দেখিও প্রাণ কাঁপে ডরে॥
শারী বোলে শুন শুক গগনে উড়ি ডাক।
নব-জলধর আনি অরুণেরেও ঢাক।
শুক বলে শুন শারি আমরা পশু পাখীও।
জাগাইলো না জাগে রাই ধরমা কর সাধী॥
বংশীবদনে বলেও চাঁদ গেল নিজ ঠাঞি।
অরুণ-কিরণ হবে উঠি ঘরে যাই॥৩॥৬৫৮॥

পাঠাম্বর

>। हेबा श्व-मा श्रीवित >>०० मः श्वाक श्रम।
२। '७क भाती' क, था ०। 'हहेतन' च।
८। 'दिति' क, था ६। 'ताहे काइए' श्व-त्र-मा।
७। 'श्व-भाषी' ऋत्म '(शाबा-भाषी' श्व-त्र-मा।
१। 'धर्षा' श्व-त्र-मा। ৮। 'वःभीतम्हन वर्तन' ऋत्म 'विकाशक करह' क, थ, च, ह।

বদীয় বৈষ্ণৰ কৰিদিগের সন্থলিত বিদ্যাপতির পদাবলির ভাষা যে কারণেই হউক, অল্লাধিক পরি-মাণে বলীকৃত হইয়া থাকিলেও প্রায় কোন স্থলেই এরপ থাঁটি বালালার রূপান্তরিত দেখা বার না। বিদ্যাপতি যে খাঁটি বালালার পদ রচনা করিবাছেন, ভাহারও কোন প্রমাণ নাই; সেরপ করিলে অস্তঃ বলদেশে ভাঁহার সেই বালালা পদগুলি অধিক পরিমাণে পাওরা বাইবার কথা ছিল; কিন্তু এরূপ পদ ছই চারিটির অধিক পাওরা বার নাই। স্থতরাং প-র-না প্থির প্রমাণ অন্থনারে এই খাঁটি বালালা পদটি বংশীবদনের রচিত বলিয়া গ্রহণ করাই সঙ্গত বিবেচনা হয়। পদ-রস-সার পুথির সকলয়িতা নিমানন্দ দাস এই পদটির ভাষা-দর্শনে গুধু অন্থমানের উপর নির্ভর করিয়া, ইহা বিদ্যাপতির রচনা নহে বলিয়া স্থির করিয়াছেন, এরূপ বোধ হয় না; কেন না, আমরা পদ-রস-সার পুথিতে বিদ্যাপতির ভণিতা-যুক্ত নিয়লিখিত নুতন খাঁটি বালালা পদটিও পাই-য়াছি; যথা,—

শিক্ ধিক্ নিঠুব কালিয়া
শুনবি বচন মোর।
দেহের গঠন মনের মরম
এবে সে জানিলাম জোর॥
সে রাধা বিহনে শরনে সপনে
বদনে না ছিল আন।
যাহার চরিত্র পদাবলি করি
বাঁশীতে করিছ গান॥"—ইত্যাদি
প-র-সা, ১০১০ সংখ্যক পদ।

স্তরাং পদকলতকর ক, ও প্রভৃতি পৃথিগুলির "বিদ্যাপতি কংহ" হলে নিমানল দাস বে "বংশীবদনে বলে" পাঠ গ্রহণ করিলাছেন, উহার মূল অবশ্রই কোন প্রাচীন হন্তলিখিত পৃথি ছিল, এরপ অনুমান করাই সক্ষত বোধ হয়।

তথা রাগ ।১

প্রাণনাথ কি আজু হইল।
কেমনে যাইব ঘরে নিশিং পোহাইল॥
মূগমদ চন্দন বেশ গেল দুর।
নরানের কাজর গেল সিঁথার সিন্দুর॥
বতনে পরাহ মোরে নিজ অভরণ।
সজে লৈয়া চল মোরে বহিম-লোচন॥

তোমার পীত-বাস স্থামারে দাও পরি।
উভ করি বান্ধ চূড়া আউলায়্যা কবরী ॥
তোমার গলের বনমালা দাও মোর গলে।
মোব প্রিয় সথা কৈয় স্থাইলে গোকুলে ॥
বস্থ রামানন্দ ভণে এমন পিরিতি।
ব্যান্ত-ইরিণে যেন তোমার বসতি ॥৪॥৮৫৯॥

পঠিস্থির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৩৪ সংখ্যক পদ।
২। 'রজনি' ঘ। ৩। 'দেহ' ক, থ, প-র-সা।
৪। 'এলাঞা' ক; 'এল্যায়া' থ; 'এল্যাইয়া'
য়, চ; 'আউলাই' প-র-সা। ৫। 'গলার' ক,
প-র-সা। ৬। 'দেশু' ক, থ, প-র-সা। १। 'কইয়' ক; 'বৈল' প-র-সা। ৮। 'সোধাইলো'
য়, চ। ৯। 'য়েন রাই' ক, খ, চ, প-র-সা।
টীকা

>•। "মোর" ইত্যাদি। গোকুলে কেছ (এটিকে ?) জিজ্ঞাদা করিলে, বলিও—(এটি) আমার প্রিয় দগা।

''বস্থ' ইত্যাদি। বস্থ রামানন্দ বলেন—এরপ প্রেম (হে খ্রীরাধে!) ব্যান্ন ও হরিদ বেরপ এক স্থলে বসতি ক্রে—(গুরু জনের সৃহিত) তোমার বসতিও সেইরপ! 'ব্যান্ন-হরিবে' শব্দটি ক্রিয়া-বিশেষণ; ইহা 'অহি-নকুল' ইত্যাদি শব্দের ভার শ্বন্দ্রমাস শ্বারা নিম্পন্ন হইরাছে।

তথা রাশ ৷১

নিজ নিজ মন্দির

ছহুঁ ছুহাঁ বদন
 নেহারি।

অন্তরে উয়ল

মোধন গলয়ে ঘন বারি॥

মাধন হামারি বিদায় পায়ে ভোরঃ।
ভোহারি প্রেম সঞ্জে

অব দরশন নাহি নোয়ং॥ এছ॥

নেহারিতে তুত্ তুহাঁ কাতর নয়নে উপলল প্রেম-তরক। মুক়ছি পড়ু মাধব মুক্তছল রাই কবে হবে তাকর° সজ ॥ ললিতা স্থমুখি স্মুখি করি ফুকরভ রাইক কোরে আগোর। কামু করি ফুকরত সহচরি কাস চরকভ লোচন -লোর॥ কভি গেও> অরুণ-কিরণ-ভয় দাঞ্

কতি গেও>> লোকক ভাত। অবভূ>২ নাহি সম্বল মাধব ছোব

উদ্ভট মুগধ চরীত্ত্য মুলা ১৬০॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৫।১৫৩৪ সংগ্যক পদ। ২। 'মন্দিরে' চ. প-র-সা। ৩। 'গ্রুট इहैं। बहन' ऋल 'इहें मूथठाना' क; '(हाटहें দোহার বদন' খ। ৪। 'তোর' ক। ৫। 'মোর' क। ७। 'लारह लाहाँ' थ, च, ठ; 'इह लाहा' প-র-সা। ৭। 'সোরস' প-র-সা। ৮। 'ফুক-ब्रहे' श-ब-मा। ३। '(गांहरन' श-ब-मा। > -->>। 'গিও'প-র-সা। ১২। 'এতহ' ক, ধ, ঘ, চ। ১৩। 'চরিত' ক, ধ, চ, প-র-সা।

টাকা

৫-- १। "মাধৰ" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা কহি-

লেন) হে মাধব। তোমার চরণে আমার বিদার (চাহিতেছি); তোমার প্রেম হইতেই অর্থাৎ ভোষার প্রেমের আকর্ষণেই (আমি) পুনরার (ভোষার চরণের নিকট) চলিয়া আসিব; এখন (ভোমার চরণের) দর্শন আমার ভাগ্যে নাই। ১২—১৫। "ললিতা" ইত্যাদি। (এীরাধা ও ঐক্ব উভরে সুচ্ছিত হইলেও) ললিত। প্রীরাধাকে ক্রোডে জড়াইরা ধরিরা 'অন্দরি। স্থার ৷' বলিবা ভাকিতে লাগিলেন ; (সেইরপ)

শ্রীক্তকের সঙ্গে সমাগতা দৃতী 'কামু ! কামু !' বলিয়া ডাকিতে লাগিলেন; তাঁহাদিগের নয়নের অঞ্জ-জন ধারা বহিয়া যাইতে লাগিল।

তথা রাগ ।১

কভছাঁ যভনে দুহুঁ निक निक मिन्तरत বিমন্থি করত পয়ান। তুহুঁক নয়ন গল প্রেম-বিচ্ছেদ-জল দারুণ দৈব বিহান॥ দেখ রাধামাধ্ব-প্রেম। ঐছন ঘটনং কভিচ্চ নাহি॰ হেরিযে रियइन लाथवान (इस ॥ अवः ॥ পদ আধ চলত খলত পুন ফারতং কাতরে নেহারই মুখ। একই পরাণ দেহ পুন ভিন ভিন অত্যে সে মানয়ে**৬ দুখ**। তিল এক বিব্নহ কলপ করি মানই

পাঠান্তর

যতনহ সো রস-ভঙ্গ ॥৬॥৬৬১॥

এছে গান গুণ

গায়ই চুহুঁ পরসঞ্।

ভণ রাধামোহন

>। हेहा भ-त-मा भूबित >>०७ मःशुक भन। २। 'विष्টन' श-ब-मा। ७। 'ना' क. थ, श-ब-मा। ৪। ক, খ, খ, চ পুথিতে 'এব' নাই। ৫। 'পিরড' क, थ; 'कित्रज' প-त्र-श। ७। 'मानिद्य' थ।

টীকা

১২-->৫। "ভিল" ইত্যাদি। এক ভিলের পরিমাণ বিরহকে কল্প অর্থাৎ সুগ-পরিমিত বলিয়া মনে করিতেছেন: উভরে (উভরের) প্রদক্ষ অর্থাৎ কাহিনী কীর্ত্তন করিতেছেন; রাধামোহন কছেন-**এরপ ७१-को**র্জনে (স্থীদিগের) বড়েই সেই রুসের ভদ হইল !

বিভাব ।১

নিজ নিজ মন্দিরে করল পরান।
শারন করলং পুন কোই না জান॥
জাকপট প্রেমকং বন্ধ।
তুরজান-সকল-নেখনং করু আন্ধ॥
প্রাভার-উচিভি° করণ করু রাই।
তেজাল বিপরিভি° বসন তামু লাই°॥৭॥৬৬২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুর্বির ১১৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'করণ' ক। ৩। 'প্রেমকি' প-র-সা। ৪। 'ত্র-জন-' ইভ্যাদি ক, চ; 'ত্র-জন-নয়ন-সকল' প-র-সা। ৫। 'প্রোতর-উদিত' ক; 'প্রাত-উচিত' ধ। ৬। 'বিপরীত' ক, ধ। १। 'নাই' ক, চ।

ক পুথি ও তদম্বায়ী বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থে 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পরবর্তী পদটি এই পদের শেষাংশ-রূপে লিখিত হইয়াছে; উহা সঙ্গত বলিয়া বোধ হয় না; কারণ, পদ ছইটির বর্ণনীয় বিষয়ের মধ্যে পার্থক্য আছে; বিশেষতঃ 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পংক্তিগুলৈকে শ্বতন্ত্র পদ গণ্য না করিলে এই প্রবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যা হইতে একটি পদ কম পড়ে।

টীকা

৩—৪। "অকপট" ইত্যাদি। অক্তরিম প্রেমের বন্ধন (এই প্রকার) বে, (উহা) ছজ্জন-সমূহের নয়ন আৰু করিয়া রাথে অধাৎ অহ্বরাগের আজিশব্যে নারক ও নারিকা প্রেমার হইয়া ছ্র্জ্জনগণ বে তাহা-দিগের গতিবিধি লক্ষ্য করিতেছে, তাহা অধুমারও প্রাক্ত করে না। (বস্তুতঃ নারক ও নারিকা প্রেমার হইলেও, তাহাতে বথন তাহাদিগের অন্ধ্রনার হলৈও, তাহাতে বথন তাহাদিগের অন্ধ্রনার করে না এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চক্ষ্ স্ত্রের তাহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জয়ে না এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চক্ষ্ স্ত্রেও তাহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জয়াইতে পারে না, তথ্য প্রেমিক-মুগলকে অক্ষ না বলিয়া

ছৰ্জনগণকে প্ৰেমের শক্তি ৰারা আন্ধ ৰলিরা বর্ণিত করিরা পদকর্ত্তা ঐকান্তিক প্রেমের আচিন্তনীর মহিমাই ব্যক্ত করিয়াছেন)।

৫—৬। "প্রতির-" ইত্যাদি। (তথন) শ্রীরাধা প্রাতঃকালের উচিত কার্য্য সম্পন্ন করিলেন (এবং) অঙ্গে (নিজের) বস্ত্র ধারণ করিয়া, (রক্ষনীভে শন্তোগ-অত্তে শ্রীক্বফের সহিত পরিধের ব**ন্তে**র পরি-বর্ত্তন হওয়ায়) বিপরীত অর্থাৎ পরিবর্দ্ধিত (পীত-বর্ণ) বন্ধ পরিভ্যাগ করিলেন। 'বসন ভন্ন লাই' বাক্যের ধ্বনি ধারা পদ-কর্ত্তা ইহাও বুঝাইতেছেন যে, ঐ পীত বসন শ্রীরাধার অঙ্গকান্তির সহিত মিশিরা যাওয়ার এতকণ শ্রীরাধার অঙ্গে ঐ বসনের অভিছ বুঝা যায় নাই; এখন তিনি নিজের প্রিয় স্থনীল বসন ধারণ করায় বসনের অন্তিত্ব পরিক্ষট হইল। ঐ বাক্য শারা ইহাও ব্যঞ্জিত হইতেছে যে, প্রীরাধা পাত বদনের পরিত্যাগ ছারা নারীজাতির প্রধান ভূষণ লজ্জাকে রক্ষা করিয়া ও স্থনীল-বসনের ধারণ থারা অপুর্ব ক্লফ-প্রীতির পারচয় দিয়া, তাঁহার ভাষ উত্মা নাগ্নিকার উপযুক্ত প্রভাত-কুতাই সম্পন্ন করিলেন।

धाननी ।>

নিজ মন্দিরে ধনি বৈঠলি স্থি মেলিং।
কহতহি পিয়া-গুণ রক্তনিক কেলি॥
ভাবে অবশ ধনি পুলকিত অক্ত।
গদ-গদ কহে কত বচন-বিভক্ত॥
নয়নে বহয়ে জল কাঁপয়েণ শরীর।
ঘামে ভিগল সব অরুণিম চীর॥
কত কত ভাবণ বিথারল রাই।
কহিতে না পারে ধনি প্রেম অবগাই॥
ধৈরক্ত ধরি ধনি কহয়ে বিলাস।
প্রেম-অনুক্রপ কহই কানু দাস॥॥৮॥৬৬৩॥

इंडि शक्तम-शहरः।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১০৮ সংখ্যক পদ।
'ধাননী' স্বলে 'ধ্থা' প-র-সা। ২। 'নিজ মন্দিরে
ধ'ন' ইত্যাদি পংক্ষিটিতে ছইটি মাত্রার আধিক্য লক্ষিত হয়; 'নিজ' শব্দটি পরিত্যাগ করিলে সহজেই এই মাত্রাধিক্য নিবারিত হইতে পারে; কিন্তু সকলগুলি পুথিতেই 'নিজ মন্দিরে' ইত্যাদি পাঠ ধাকার আমরা অগত্যা ধ্থাদৃষ্ট পাঠই গ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাছি। ৩। 'কাঁপে' চ। ৪। 'ভাবে'

টীকা

৫— । "নম্বনে" ইত্যাদি। (ঐরাধার)
নম্বনে (সাত্মিক-ভারের বিকাশ হেতু) জনধারা
বহিতেছে, শরার কম্পিত হইতেছে (এবং) ঘর্মন
জবে গোহিতাভ বসন সিক্ত হইল। (ঐরাধার
নীলাভ বসন ঘর্মনজলাত্র হইয়া অক্সের সহিত মিশিয়া
যাওয়ায় টাহার তপ্ত-কাঞ্চন-বর্ণের প্রভাবে
লোহিতাভ প্রতীত হইতেছে—বুঝিতে হইবে)।

অথ রদোদগারঃ।

তত্ত্ব চিত-পূর্ববাপর-কীর্ত্তনান্মুগারেন শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।

বিভাব।১

মহাভূজ বাচত চৈত্ত রায়।
কৈ জানে কত কত ভাব শত শত
সোণার বরণ গোরা-গায় ॥ ধ্রু ॥
প্রেনে চর চর অঙ্গ নিরমল
পুলক-অঙ্কুর-শোভা ।
ভার কি কহব অপেব অনুভব বিরুদ্ধি জগ-মন-লোভা ॥

শুনিয়া দিজ-গুণ নাম-কীর্ত্তন বিভার নটন-বিভাল ।

নদিয়া-পুর-লোক পাসরিল তুখ শোক
ভাসল ক প্রেম-ভরক ১ ॥

রভন বিতরণ প্রেম-রস বরিখণ ১ ব
অথল ভুবন সিঞ্চিত ১০ ।

হৈতন্যদাস গানে ১ অতুল প্রেম-দানে ১৫
মুঞ্জি সে ১৬ হইলুঁ বঞ্চিত ॥১॥৬৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৯ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'মহাপ্রভূ' প্-র-সা। ৩। 'গোরা-গাম্ব' স্থলে 'গাম্ব' প্-র। ৪। 'অস্কুর' হুলে 'অক্সের' প-র। অমুভব' স্থলে 'অশেষামূভাব' প-র-সা; 'বিশেষ অনুভব'প-র।৬। 'গুনি'ক । ৭। 'সংকীর্দ্তন' প-র। ৮। 'বিভোর' ইত্যাদি স্থলে 'সুটত বিভোর অঙ্গে' প্-র। ১। 'নদিয়া-পুর-লোক' হলে 'নদিয়ার সব লোক' প-র। ১০। 'ডুবন' প-র। ১১। 'ভাসন' ইত্যাদি স্থলে 'ভাগল প্রেম-তরক্ষে' প-র। ১২। 'রতন' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ যথা,— 'করুণা নির্থনে অমিয়া বরিধনে'। ১৩। 'সঞ্চিড' প-র-সা। ১৪। 'বাস্থদেব **ঘোব' প**-র। ১৫। 'অতুল' ইত্যাদি স্থানে 'আওল প্রেমদানে' ক; 'আতুল' ইত্যাদি চ; 'তুলনা নাহিক আনে' প-র। ১৬। 'মুঞি সে' স্থলে 'মুঞি মাত্র' প-র।

তথা স্বাগ ।১

অবতার ভাল গৌরাঙ্গ অবতার কৈলাং ভাল।
জগাই মাধাই নাচে বড় ঠাকুরাল।
টাদ নাচে স্কুজ নাচে আর নাচে ভারা।
পাতালের বাস্থকি নাচে বলেও গোরা গোরাও।
নাচয়ে ভক্তগণ হইয়া বিভোরা।
নাচে অকিঞ্ন যত প্রেমে মাডোরারা।

জড় অন্ধ আঙুর উদ্ধারে পতিত। বাস্থ ঘোষে কছে মুঞি হইলুঁ বঞ্চিত॥২॥৬৬৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১১৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'কৈল' ক। ৩। 'বলি' ক; 'বোলে' চ। ৪। 'গোরা গোরা' হলে 'গোরা' থ। ৫। 'অড্র' ঘ,চ; 'অডুরাদি' প-র-সা।

धाननी ।>

कइ कइ शुन्मति त्रक्रनि-विलाम । কৈছনে নাহ পুরল তুয়া আশং॥ কত্তু যভনে বিভি করি অমুমান। নাগর নাগরি করুত নির্মাণ ॥ অখিল ভূবন মাহা ভুছাঁ বর-নারি। আজুক রজনি কিয়ে কয়ল মুবারি⁸। পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পার । লাখ বদন বিহি না দিল হামার ॥ আপনক গজ-মোভি-হার উতারি"। যভনে পরায়ল ১০ ককে ভামারি॥ করে ধরি পিয়া বৈসায়ল নিজ কোরণ। স্থান্ধি চন্দন অজে লেপল মোর। ফুয়ল কবরি বান্ধয়ে অসুপাম। ভাহে বেডি^{১৩} দেয়ল^{১৪} চম্পক-দাম॥ মধুর মধুর দিঠে হেরই কান। **जानम-करन** পরিপুরল নয়ান ॥ ভণয়ে বিশ্বাপতি ভাব-তরঙ্গ । এবে কছি শুন সুধি সোপরসঙ্গ ॥৩॥৬৬৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৪5 সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৪৪ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হুলে 'বৈভাব' শ-র। ২। 'কৈছনে' ইত্যাদি পংক্তির হুলে 'কৈছে পুরণি ভূছা নাহক আন' ধ, ব, প-র-সা। 'পিরাক পিরিতি হাম কহই না পার' ইত্যাদি উত্তর দর্শনে 'কৈছনে নাহ পুরল' ইত্যাদি প্রশ্নই সসক্ত হয়; স্তরাং ক, চ ও প-র পুথির পাঠই শুদ্ধ বলিয়া গুহীত হইহাছে। ৩। 'কয়ল' ক, খ, খ, চ। ৪। 'আজুক' ইত্যাদি স্থলে 'মুপুক্ধ নাহ তোহে মিলল মুরারি' ক, (পাঠান্তর—চ)। 'কতত্ যতনে' ইত্যাদি পংক্তিচতুষ্ট্য পার পুথিতে নাই। ক পুথিতে অতঃপর 'শ্রীরাধিকার উক্তি যথা' লিধিয়া 'পিয়াক পিরিতি' ইত্যাদি বাকি অংশটিকে একটি স্বতন্ত্র পদ-রূপে স্লিবেশিত করা হইয়াছে; কিন্তু পদামুত-সমুদ্রের টীকায় রাধামোহদ ঠাকুর লিথিয়াছেন,— "পুনস্তদ্রদকথনাবহিখামবলম্য 'অথিল জুবন মাহা তৃত্ব বর নারি' ইত্যাদি চরণত্তমেশ পুনঃ পৃচ্ছতি ততঃ শ্রীমতী 'পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পারি' ইত্যাদি-না প্রত্যুত্তরং করোতি।" ইহা বারা ও ক পূথি ছাড়া অন্তান্ত পুথির প্রমাণাত্মদারে 'পিয়াক পিরিতি' ইত্যাদি পংক্তিগুলি এই পদটিরই শেষাংশ বলিয়া काना याहेरजस्ह। 💶 'कहिरज' क, थ। 💆 'পারি' প-র। ৭। 'বয়ন' প-র-সা, প-র। ৮। 'र्हामात्रि' १-त्र; 'व्यामात्र' ४, ६। २। 'व्याशनक' ইত্যাদি ফুলে পার-দা ও পার পুথির পাঠ যথা,—'আপন মালতী মালা হিয়াদে উতারি।' ১ । 'পড़া ७व' क, थ, প-র। ১১। 'देवनात्रन' ইত্যাদি ছলে 'মোর বসায়ল কোর' প-র-সা। ১২। 'লেপই' প-র-সা। ১৩। 'বেড়ি' ক। ১৪। 'বেঢ়ি দেয়ল' হুলে 'বেড়ায়ল' প-র-দা, প-র। ১৫। 'আনন্দললে' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা ও প-র পুথির পাঠ ষৰা,—'দেখিতে দেখিতে মানে 'ভাব-তরঙ্গ' স্থলে 'ইছ স্পন সমান'। ১৬। त्रम मक्त' भ-त्र । २१। 'এবে कहि' हेखानि च्रान প-স ও পার পূথির পাঠ বখা,—'ভূলল ধনি কহইতে নিশি রঙ্গ'।

গান্ধার ৷১

চিক্লণি করে ধরি কেশ-বেশ করি मिँथारय ए^डे मिन्द्र । নাস-বেশ করি বসন পরাহই° পায়ে ধরি পরায়ে নুপুর॥ সই° পিয়া-গুণ কহনে না যায়°। দরিদ্রঙ হেম যেন িলেক না ছোডইণ রভদে রজনি গোঙায়॥ ধ্রু : সে মোর প্রমঞ্জল আঁচিরে মোছই দেই বসনক বায়?। চিবুক করে ধরি সঘনে নির্থই > • মুখ ভরিণ্ণ তান্থল খাওয়ায়॥ রুন্দাবন ভরি রসের বাদর **দিন রজনী** १० नाहि जान। কুপণ ধন সম তিলেক না ছোড়ই কবি শেখর ১৪ পরমাণ ৷ ৪॥ ৬৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১ ং সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৪৬ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' স্থলে 'শীগান্ধার' প-র। ২। 'সিঁথায়ে দেই' স্থলে 'সিথারে দেই' প-র। ৪। 'পেরাইয়' প-র-সা। ৪। 'দোই' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'কহনে না ষায়' স্থলে 'ক্লেনে যায়' খ। 'সই পিয়া-গুণ' ইন্ড্যাদি ধ্রব-ক্লিটি প-র পুথিতে নাই। ৬। 'দারিজ' খ, চ, প-র-সা। ৭। 'হাড়ই' ক; 'তেজই' প-র-সা। ৮। 'দোকি, খ, ঘ, চ। ৯। অভংগর প-র পুথিতে 'চিবুক করে ধরি' ইন্ড্যাদি পংক্তি হয়টির পরিবর্জে পাঠ বথা,—

'মৃণাল চম্পক । দান সম তত্ত্ব
হিরা বিহু শেজে না শোরার ।

চিবুক করে ধরি মুধ নির্বিতে

বে কিছু ক্তরে মধুর।

নিরস বয়ান হৈরি দিব্য দেই বন্ধু মুধ ভরি ধাওয়ায়ে তাদুল॥'

ইহার পরে কিছু স্থান ভণিতার অস্ত ফাঁকে রাধা হইরাছে। ১০। 'চিবুক' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ ষথা,—

'অধর নিরস হেরি দিব্য দেই বেরি বেরি'

>>। 'মুথ ভরি' ফলে 'মুথে ভূলি' প-র-সা।

>>। 'বাদর' ফলে 'বাদর করি' প-র-সা। ১৩।

'দিন রজনী' ফলে 'দীন রজনি' ছ। ১৪। 'কবিশেখর' ফলে 'রার শেখর' প-র-সা।

কৌ রাগিণী।১

না পুছ না পুছ সখি পিয়াক পিরিতং।
পরাণ নিছনি দিলে না হয় উচিতং॥
হিয়ার উপর হৈতে শেজে না ছোয়ায় ।
বুকে বুকে মুখে মুখে রজনি গোদ্ধায় ॥
নিঁদের আলসে যদি পাশ মোড়া দিয়ে ।
কি ভেল কি ভেল বলি চমকি উঠয়ে ॥
হিয়ায় হিয়ায় এক বয়ানে বয়ানে ।
নাসিকা নাসিকায় এক নয়ানে নয়ানে ।
ভাকুল হইয়া পিয়া উঠয়ে ভরাস ॥
এমতি বঞ্চিয়ে নিশি দোহেঁ ও এক মেলি।
ভ্তানদাস কহে এছে নিতি নিতি কেলি॥৫॥৬৬৮

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরীড' ক, খ, চ; 'পিরিডি' প-র-সা।
৩। 'উচিডি' প-র-সা। ৪। 'শোরার' ক;
'ছুয়ার' খ। ৫। 'আলিসে' খ, চ; 'অলসে'
প-র-সা। ৬-৭। 'হৈল' প-র-সা। ৮। 'বরার'
ক, চ, প-র-সা। ৯। 'নাসিকা' প-র-সা।
১০। 'নরার' ক, চ, প-র-সা। ১১। 'ডেজি

দীঘ নিশাস' ছলে 'তেজিরে দীরঘ নিশাস' ক। 'ইথে যদি' ইত্যাদি পংক্তিমর প-র-সা পুথিতে নাই। ১২। 'ছহেঁ' ক; 'ছহু' প-র-সা।

টাকা

৩—৪। "ছিয়ার" ইত্যাদি। (আমাকে)
বুকের উপর হইতে (নামাইয়া) শ্ব্যায় স্পর্শ করায়
না; (আমার) বুকে (নিজের) বুক,- (আমার)
মুখে (নিজের) মুখ (রাখিয়া) রজনী যাপন করে।
(নিজেত হইলে সেই সময়টুকু ছাড়াছাড়ি হইবে বলিয়া
জাগিয়া রজনী যাপন করে, ইহাই এই বাক্যের
তাৎপর্যা বটে)। তুলনা করুন,---

"কোরে আগোরি রাথই হিন্না পর
পালকে পাশ না পাই।
ও স্থথ-সাগরে মদন- রস-ভরে
জাগিয়া রজনি গোঙাই॥"
— নরোভম দাস; ৬৬৯ সংখ্যক পদ।
"উর বিহু শেজ পরশ নাহি পাই।
চীবহি বিহু তামুল নাহি খাই।"
— কবিরজন; ৬৮০ সংখ্যক পদ।

शवनी ।>

मक्नि वज़ हे विष्णध कान। কহিল নহে সে প্রেম-আর্তিঃ ক্ষিল হেম দশবান ॥ গ্ৰু॥ সমূখে রাখিয়াং মুখ আঁচরে মোগ্ই অলকা ভিলকা বনাই । বদন হেরি হেরি মদন-রসভরে व्यथदा व्यथत लोगोरेण ॥ কোরে আগোরি রাখই হিয়া পর পালকে পাল না পাই । ও হুখ-সাগরে মদন-রসভরে^{১২} আগিয়া র**জ**নি গোঙাই n

কেবল রসময় মধুর মুরতি
পিরিতিময় প্রতি অকা।
নরোত্তম দাস কহ>
গে জানে ও রসরক্ষ> ॥ ৬ ॥ ৬৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৪৪ সংখ্যক ও প-র প্রথির ১ গ৪৮ সংখ্যক পদ। 'ধানণা' ছলে 'সুহ্ই' প-র। ২। 'স্ই গো' 'বিনদিয়া' প্রা ৪। 'কাহিনী' প্র-সা। ে। 'রাখি' প-র। ৬। 'মোছারই' খ। ৭। 'বনায়ে' প-র-দা; 'বনায়' প-র। ৮। 'লাগায়ে' প-द-मा; 'मागाव' भ-ता । । 'बारगावहे' भ-त-সা: 'আগরিয়া' প-র। ১০। 'পলকে' প-র-সা। ১১। 'পালকে' ইত্যাদি স্থলে 'শর্ম পাশ নাহি পায়' প-র। ১২। 'ও স্থ-সাগরে' ইত্যাদি স্থলে 'মদন-রুসভারে ও অ্থ-সাগরে' প-র-সা; 'নবীন প্রেমভরে ও রদ-সাগরে' প-র। ১৩। 'পোছাই' প-র-সা: 'পোহার' প-র। ১৪। 'নরোত্তম' ইত্যাদি প্তলে 'কছই নরোন্তম' প-র; 'নরোন্তম' প-র-গ।। ১৫। 'সে জানে' ইত্যাদি স্থলে 'সেই সে বুঝয়ে ইছ রক' প-র।

বিশ্বড়া ।১

এমন পিরিতি কভু দেখি নাহি শুনিং।
নিমিথে মানয়ে যুগ কোরে দ্র মানি ॥
সমুখে রাখিয়া করে বসনের বা॰।
মুখ ফিরাইলে॰ তার ভরে কাঁপে গা॰॥
একতকু হৈয়া মোরা রজনী গোডাই।
সংখের সাগরে ভূবি অবধি না পাই॥
রজনী প্রভাত হৈলে কাতর হিয়ায়।
দেহ ছাড়ি যেন মোর প্রাণ চলি যায়॥
সে কথা কহিতে সই॰ বিদরে পরাণ।
চতীদাস করে ধনি সব প্রমাণ॥৭॥৬৭০॥

পাঠাস্তর

১। ইছা পার-দা পুথির ১১৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখি' ইত্যাদি স্থান 'নাহি দেখি শুনি' খ,
প-র-দা। ৩। 'বাও' প-র-দা। ৪। 'ফিরাইতে'
খ। ৫। 'গাও' প-র-দা। ৬: 'সোই' খ, চ।

কোরাগিণা ৷১

আমি ষাই ষাই বলিং বলে তিন বোলং।
কত না চুম্বন দেই কত দেই কোল ॥
পদ-আধ যায় পিয়া চাহে পালটিয়া।
বয়ান নিরখে কত কাতর হইয়া ॥
করে কর ধরি পিয়া শপুপি দেই 'মোরে ।
পুন দরশন লাগি কত চাটু বোলে'॥
নিগ্ঢ় পিরিতি পিয়ার আরতি বল্ট।
চণ্ডীদাস কহে হিয়ার মাঝারে এক লাভ॥৬৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৪৬ সংখ্যক ও
প-র পুথির ১৩।৪৫ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী'
ফলে 'পঠমঞ্জরী' প-র। ২। 'পিরা' প-র-সা।
৩। 'আমি ঘাই' ইত্যাদি স্থলে 'ঘাই ঘাই বলি
পিরা বলে তিন বোল' প-র। ৪। 'পদ-আধ'
ইত্যাদি পংক্তিরর প-র পুথিতে 'পুন দরশন লাগি'
ইত্যাদি পংক্তির পরে সরিবেশি ৩ ইইয়াছে। ৫।
'করে কর' ইত্যাদি স্থলে 'করে ধরি পিরা
সপতি দেই' প-র। ৬। 'মোর' থ, ঘ। ৭।
'কত চাটু বোলে' স্থলে 'পুন দেই কোরে' প-র।
৮। 'বছক' থ, ঘ। 'নিগুঢ়' ইত্যাদি স্থলে
'নিশুছি পিরা মোরে আমৃতি করে বহু' প-র।
১। 'চণ্ডীদাস কহে' ইত্যাদি স্থলে 'চণ্ডীদাস কহে
পিরার পিরিতি হিয়ার রহু' প-র।

পিয়া-গুণ যে কহিলুঁ সেই ভাল আর কব না।*
গুণ কহিলে কি জানি হয় তেএিঃ কহিরে না॥
ইতাদি সম্পন্ন-সম্ভোগস্থ রসোদগারঃ।
এতদগীতং সর্ব্ব-কালোচিতং।
পুনশ্চ প্রকারান্তরেণ যথা।
গুণ রসোদগারানুরাগঃ।

শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

বিভাষ ৷১

পরশ-মণির সনে কি দিব তুলনা ৱেং পরণ ভোয়াইলে হয় সোণা। নাচিয়া গাইয়া রে আমার গৌরাঞ্চের গুণে রতন হইল কত জনা। भहीत नमन वनमानी । এ তিন ভুবনে যার তুলনা দিবার নাই গোরা মোর পরাণ-পুতলী ॥ধ্রা॥ अ ठाँम कलको ८३७ গৌরাগ্র-চাঁদের ছাঁদে এমন করিতে নারে আলো। অকলক পূৰ্ব-চাঁদি উদয় निष्ण-পুরে মনের আন্ধার দূরে গেলো॥ এ১ গুণে হ্বরভি হ্বর-ভরু সম নহে রে মাগিলে দে পায় কোন । ভুবন ভরি জনে জনে না মাগিতে>২ অখিল যাচিচা দেওল ১০ প্ৰেম-ধন।

•'পিয়া-শুণ' ইত্যাদি পংক্তিমন প-র-সা পুথিতে নাই; এই পদটির অবশিষ্ট অংশ কোন পুথিতেই উদ্ভ হয় নাই; স্থতরাং আমরা এ স্থলে উহা সরি-বেশিত করিতে পারিলাম না।

† ক, ধ প্রভৃতি সকল পুথিতেই 'সম্পন্ন' ছবে 'সম্পূর্ব' অন্তন্ধ পাঠ আছে। ৩৫৫ সংখ্যক পদে? টীকা জ্বব্য । গোরাচাঁদের ভূলনা গোরাচাঁদে গোসাঞি রে বিচার করিয়া দেখ সভে।

পরমানদ্দের মনে এ বড় আকুভি রে গৌরাজের দয়া হবে কবে> ॥ ৯॥৬৭২॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১১৪৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ২২।২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কি দিব' ইত্যাদি স্থলে 'তুলনা কি দিয়ে রে' প-র-সা। ৩। 'ঠেকিলে' প-র। ৪। 'পরশ-মনির সন্নে' ইত্যাদি কলিটির পূর্ব্বে প-র পুথিতে নিম্নলিথিত অতিরিক্ত কলি দৃষ্ট হয়; ষথা—

'কেমনে পাসরিব গৌরাক্ষচান্দের লীলা।
আমার গৌরাক্স-গুণে পশু পাথী আদি কান্দে
গলিয়া গলিয়া পড়ে শিলা॥'

 (শচীর নন্দন' ইত্যাদি ধুয়ার কলিটি প-র পুৰিতে নাই। ৬। 'ও চাঁদ কলফী রে' স্থলে 'চান্দ কলন্ধিত ভেল' পর। 'গৌরান্ধ টাদের ছান্দে' ইত্যাদি পংক্তি-চতুষ্টম প র পুথিতে "বাচিয়া দেওণ প্রেমধন" পংক্তির পরে সল্লিবেশিত হইয়াছে। १। 'আর' ক: 'আল' চ। ৮। 'কলানিধি' প-র। ৯। 'গেল' ক, খ, চ, প-র সা, প-র। ১০। 'দে' প-র। 'সে গুণে স্থরভি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'পরশ-মণির সনে' ইত্যাদি কলিটির পরে সন্নিবেশিত হুইয়াছে। ১১। 'कांमा' भन्तः। ১२। 'না মা;গতে' স্থৰে 'অবাচিত্ত' প-র। ১০। 'বাচিয়া দেওল' স্থলে 'আপনে দিলেন' প-র। ১৪। 'গোরাটাদের তুলনং' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ यथाः--

'গোরাক-চান্দের ভাই জুগনা দিবার নাই ক্ষরে ভাবিরা সব দেখ। নরনানক্ষের মনে অধিক আনন্দ রে গোরা-খাণ বিচারিয়া লেখ।' **টীকা**

১—৪। "পরশ-মণির" ইত্যাদি। পদ-কর্ম্বা
বিলিডেছেন,—ম্পর্শ-মণির সহিত শ্রীগোরাঙ্গের কি
ছুলনা দিব ? ম্পর্শ মণি (অন্ত কোন ধাতু পদার্থে)
ম্পর্শ করাইলে (উহা) স্বর্ণ হয়; (কিন্তু) আমার
শ্রীগোরাজের (অন্ত) শক্তির প্রজাবে নাচিরা
গাহিয়া কত (শত) ন্যক্তি রয় হইল । (প্রথমে ত
পরশ-পাথর পাওয়াই ছর্মট ; তার পরে উহা ধাতু
দ্রব্য ম্পর্শ করান আবশ্রুক; তাহা হইলে ই ধাতু
দ্রব্য ম্বর্ণ পরিণত হয়, কিন্তু শ্রীগোরাজের নামের
বাতাদেই মামুষ রয় হইয়া যায়; মৃতরাং এ স্থলে
পরশ-পাথর অপেক্ষা শ্রীগোরাজের উৎকর্ম বর্ণিত
হওয়ার "বাতিরেক" অনুকার হইয়াছে।

৮—১১। "গৌরালটাদের" ইত্যাদি। প্রীগৌরালরূপ চল্লের শোভার (আকাশের) সেই চল্ল কল্লবুক্ত (ইইয়াছে); উহা এরপ আলো করিতে
পারে না; (কেন না, প্রীগৌরাঙ্গের আবির্ভাবে)
নববীপ নগরে কল্ল-বিহান পূর্ণচল্ল-মুদিত হল্লয়ছে;
(উহার প্রভাবে) দর্শকের মনের অন্ধলার বিদ্রিত
হল। (আকাশের চল্ল কল্ল-বুক্ত এবং প্রাসবুদ্ধির অধীন; উহা মেব ইত্যাদির প্রতিবন্ধকতা না
থাকিলে বাহ্ন অন্ধকারমাত্র দূর করিতে পারে; কিল্ল অকল্ল পূর্ণচল্ল-অন্ধপ শ্রীগৌরাঙ্গ তাঁহার আবির্ভাব
ধারা দর্শকের মানসিক অন্ধকার পর্যন্ত বিদ্রিত
করিরাছেন; স্কুতরাং এ স্বলেও "ব্যতিরেক"
অল্লার বুরিতে হইবে।)

১২—১৫। "এ গুণে" ইত্যাদি। এই গুণের তুণনার স্থাদ্ধ স্থানতক পারিঞ্চাত (খ্রীগোরাক্ষের) তুল্য নহে; কোন (পুণ্যবান) ব্যক্তি (স্থার্গ বাইলা সেই করতক পারিঞ্চাতের নিকট) শুধু প্রার্থনা করিলেই (ধন ইত্যাদি) প্রাপ্ত হন; (কিন্তু) প্রার্থনা না করিলেও (অপূর্ব্ধ দরা-গুণ হেতু) সমস্ত জগৎ ভরিরা (উত্তম-অধম না কাছিলা) সকল ব্যক্তিকে (নিজে) বাজ্ঞা করিবা

থেমরূপ অমূল্য রত্ন বিভবণ করিয়াছেন। (এ স্থলেও "বাভিয়েক" অংকার হইয়াছে।)

১৬—১৭। "গোরাটাদের" ইত্যাদি। জীগোরা-ক্ষের তুলনা কেবল জীগোরাক্ষ -- এই বাক্য থারা শ্রীগোরাক্ষের থিতায় তুলনা-গুল নাই, ইহা প্রতি-পাদিত হওয়ায় "অন্যয়" অলকার হংয়াছে।

"উপ্মানোপমেগ্রমেকস্থৈব জনর্গঃ॥"

— সাহিত্যদর্পণ, ১০ম পরিছেদ।

ভাদে সংগ্রাক্তিঃ। বরাঞ্চাত

চলিতে না পার ব্যসের ভরে।
আলসং নয়ানং অলপং করেও।
অন ঘন তুমি বাহিরে যাও।
আন ছলে কত কথা বুঝাওং॥
না জানিয়ে কিবা অন্তরেশ হুগে।
আঁচরে কাঞ্চন ঝলকং মুখে॥
মরমে পিরিতি বেকত অক্ষেং।
তিলেক সোয়াথ না দেয় অনক্ষেং।
ভাবে বেয়াকুলংও ওর না পাও॥
কপোলে পুলক বেকত দেখি।
প্রেম কলেবর ততহিঁংং সাখী॥
ভ্যানদাস রসংও ভাবিয়াংং গায়।
রসের বেভার লুকাংশ না যায়॥১০॥৬৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৪৮ সংখ্যক ও প-র
পুথির ১৩/১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'পারে' ক, খ।
৩। 'আসসে' প-র-সা, প-র। ৪। 'নরন'
চ। ৫। 'অনস' ক। ৬। 'ঝোরে' প-র-সা,
প-র। ৭। 'আন ছলে কত কথা বুঝাও' ইত্যাদি
ছয়টি পংক্ষি দ, চ প্থিতে নাই। ৮। 'আরর'

ক, প-র-সা। ১। 'ঝলকে' ক, খ, প-র-সা।

১০। 'অস' ক, খ, প-র-সা। ১১। 'অনক' ক,
খ, প-র-সা। ১২। 'কালার' ক, খ, প-র-সা।

১০। 'বদন' ক। ১৪। 'ভাবে বেয়াক্ল' ছলে
'ভাবের আকৃল' প-র। ১৫। 'ভাহার' প-র-সা;
'সদত' প-র। ১৬। 'রস' শক্টি ঘ, চ পুথিতে
নাই। ১৭। 'রস ভাবিয়া' ছলে 'অমুভবিয়া'
প-র। ১৮। 'বুঝা' খ; 'ছাপা' প-র।

টাকা

৫—৬। "না জানিয়ে" ইতাদি। জানি না (তোমার) অন্তরে কি স্থা (রহিছাছে!) অঞ্চলে অর্ণ (বাঁধা আছে), (অর্ণ-ধারীর) মুথে (উহার) দালি (দেখা যায়!); অর্থাৎ কেহ যদি আঁচলের গাঁঠিতে অর্ণ লুকাইয়া রাথে, তাহা হলৈও উহার মুখেব প্রফুল্লভাই সেই গুপুধনের কথা ব্যক্ত করিয়া দেয়; এ হলেও তোমার মুখের প্রফুল্লভাই তোমার অন্তরের গুপু প্রেম প্রকাশ করিয়া দিতেছে! তুলনা করুন,—

"আঁচরে কাঞ্চন ঝলকে দেখি।
প্রেম কলেবর দিয়াছে সাধী॥"
— বিজ্ঞাপতি; প-ক-ত— ২২৬ সংখ্যক পদ।
"এ তুরা হাস মরম পরকাশই
প্রতি-অঞ্চ-ভলিম সাধী।
গাঁঠিক হেম বদন মাহা ঝলকই
এত দিনে পেধলু আঁাধি॥"
— গেবিন্দাস; প-ক-ত; ২২৭ সংখ্যক পদ।

यहरे ।>

সুন্দরি বুঝিলুঁ ^২ ডোমার ভাব। প্রেম-রতন গোপ**তে°** পাইয়া ভাঁড়িলে কি হবে লাভ ॥ ধা ॥

আনের কথা আন ছলে কহ বেকত পিরিতি-রঙ্গ। অঙ্গ চল চল* রসের বিলাদে রঞ্চিত প্রেম-তরক⁹ ॥ চলিতে না পারু ভাবের ভরে বচন হইলা হারা: । নিকুঞ্জ-বনে কান্তুর সনে রঙ্গেভ ১২ হৈয়াছ ১২ ভোরা ॥ পুছিলে না কহ মনের মরম১৩ এবে ভেল বিপরীত। কি হ্বার বলিবে বলরাম কতে ভাবেতে মঞ্জিল চীত^{১৪} ॥১১॥৬৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১১৪৯ সংখ্যক ও
পর পুথির ১০১৫ সংখ্যক পদ। 'হৃহই' ফলে
'ঐারাগ'প-র। ২। 'বৃঝিল'ক। ৩। 'গুপত'
প-র: ৪। ক, খ, ছ, চ পুথিতে 'ফ্র' নাই।
৫। 'ভক্লে' প-র। ৬। 'চলচল' ফলে 'চরচর'
প-র। ৭। 'প্রেম-ভরল' ফলে 'রস-ভরকে' প-র।
৮। 'ভরেতে' ক, প-র। ৯। 'পারে' প-র।
৮। 'বচন হইলা হারা' শ্বলে 'চরণ হইল হারা'
ক, প-র-সা। ১১। 'রলেতে' ক, প-র।
১২। 'ইংয়াছে' ক, প-র। ১৩। 'পুছিলে'
ইড্যাদি ফ্রে পুছিলে মনের মরম না কহ' প-র-সা,
প-র। ১৪। 'চিড'ক, প-র-সা, প-র।

विज्ञान ।>

কি পুছহং সথি প্রেমের° কথা। কহিতে না কানি কহিরে এখা° ॥ পিয়ার পিরিতি কি না জান° তুমি। এত দিনে তাহে ঠেকিলুঁ আমি॥ যত যত শ্যাম বঁধুর গুণ।
সোঙরি পাজরে বিদ্দল ঘুণ॥
দিবদ রক্দনি কিভুনা জানি।
মনে পড়ে চাঁদ-বদন খানি॥
চণ্ডাদাদ কছে রদের দারে।
পিথাব পিরিতি অনক্ষ পাথার॥১২॥৬৭৫॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫ • সংখ্যক পদ।
২। 'পুছ' ক, প-র-সা। ৩। 'ভাবের'
প-র-সা। ৪। 'কহিয়ে এথা' ফ্লে 'কি হয়ে
এথা' ঝ, চ; 'কি হয় কথা' প-র-সা। ৫।
'কি না' ফ্লে 'কি' প-র-সা। ৬। 'চণ্ডীদাস
কহে' ইত্যাদি পংক্তিরয় ক, ঝ, ঘ ও চ পুথিতে
নাই।

সিকুড়া।১

সইং নিরবধি কত পড়ে মনে। শ্রাম নন্ধু বিশ্ব না রচে মোর⁸ **ভমু** সোয়াপ্ত নাহিক বাহি দিনে এখা ধরিয়া আমাব করে বৈসায়**° আপন কোরে** পুন দেই সিথায়ে সিন্দুর। তামুল মাতা এল তোলে খাও খাও কত বোলে কত গুণ কহিব বন্ধুর। ্বেচ্য়া শালতা ফুল ঝাড়িয়া বান্ধয়ে চুল বসন পরাই > আমা দেখে। দেখিয়া আমার মুধ না জান কি পায় হুখ त्रत्मत्र व्याप्तर्भ करत् तूरक ॥ কাপে পত্ত ধরহরি হিয়ার উপরে ধর্ম মুখে মুগ দিয়া খন কালে। বিহি পোহাইলে১১ রাতি মোরেণ্ড ছাড়ি যাবাণ্ড কভি ধরণী^{১৪} থীর^{১৫} নাহি বান্ধে ॥১৩॥৬৭৬॥

ं अ नाव

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৫১ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৪৭ সংখ্যক পদ। 'দিকুড়া' ছলে 'হুছই' প-র। ২। 'সোই' ঘ,চ। ৩। 'গ্রাম বন্ধু হ'ল 'বেল 'সে শ্রাম বন্ধু হা' প-র। ৪। 'আমার' প-র। ৫। 'নাহি' প-র-সা। ৬। 'বেসার' প-র-সা। । 'বেড়ি হা' ক, প-র-সা। ১০। 'পরার' ধ, ঘ; 'পরাঞা' প-র। ১১। 'পোহারল' প-র-সা। ১২৷ 'আমা' প-র-সা। ১৩। 'বাবে' প-র। ১৪। 'এড বলি' প-র। ১৫। 'গ্রের' ক, প-র।

তথা ব্লাগ ।১

মরম কহিলুঁ মো পুনং ঠেকিলু সে জনার° পিরিতি-ফান্দে। ন্নাতি দিন চিতে ভাবিতে ভাবিতে তারে সে পরাণ কান্দে⁸ । বুকে বুকে মুগে চৌখে লাগিয়া থাকে তমু মোরে সতত হারায় ও বুক চিরিয়া হিয়ার মাঝারে আমারে রাখিতে চায় 🖁 হার নহোঁ পিয়া গলায় পরয়ে চন্দন নহোঁ । মাখে গায় ১১। অনেক যতনে রতন পাইয়া পুইতে সোয়ান্ত না পায়> । কপূর ভাস্থল আপনি সাজিয়া>৩ भात भूथ छति (मग्र। হাসিয়া হাসিয়া চিবুক ধরিয়া मूर्थ मूथ (महे³ (नग्र ॥

সাজাঞা কাচাঞা বসন পরাঞা বসন পরাঞা ব্যাবন্দ লইয়া কোরে ৷
দীপ লৈয়া হাতে মুখ নির্থিতে দিভিল নয়ান লোরে ৷
চরণে ধরিয়া যাবক রচইং আউলায়াং বান্ধয়ে কেশ।
বলরাম চিতে ভাবিতে ভাবিতে দাজর হইল শেষ ॥১৪॥৬৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫২ সংখ্যক ও প-র পুৰির ১০/৫২ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' হুলে 'সুহই' ২। 'পুন' হুলে 'পুনি' থ, প-র-সা। া'সে জনার' স্থলে 'সে স্থাম' প-র-সা। ৪। এ স্থলে পূর পুথিতে 'শু' চিহ্ন আছে। 'মরম কহিলু' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'আমারে রাথিতে চায়' পংক্তির পরে সলিবেশিত হইয়াছে। ৫। 'চৌথে लाजिया थारक' ऋरम (हार्थ लाजि बारक' क ; (होर्थ লাগিয়া থাকি' খ; 'চৌথে লাগিয়া রহি' প-র-সা। 'বুকে বুকে' ইত্যাদি পংক্তির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ ষ্ণা,—'ৰুকে বুকে মূথে চথ্যে লাগিয়া থাকিয়ে গো'। ৬। 'ভমু' ইত্যাদি স্থলে 'ভমু পিয়া সদাই হারায়' প-র। ৭। 'এ' ধ, প-র-গা। ৮। 'আমারে রাখিতে চায়' হুলে 'সদাই রাখিতে চায়' ক; 'আমারে থুইতে চার' প-র। ৯-১০। 'নহে' क; 'ন হঙ' প-র-সা; 'নাহি' প-র। ১১। 'মাঝে' क। ১२। 'थूरेरज' रेज्यानि ऋल 'थूरेरज जिल्हि না পান্ন' ক; 'থুইতে অক্ত নাহি পান্ন' প-র-সা। 'অনেক বতনে' ইত্যাদি পংক্তিবন্ধের পরিবর্কে প-র পুথির পাঠ ব্যা,—

'অতি অভিগাৰে মতি বেরাকুল
থুইতে থল না পার।'

:০। 'সাঞাইরা' ক, ধঃ 'চিবাইরা' পার-সা।
'কপুর ভাষ্ণ' ইড়্যাফি পংক্তি-চ্ছুইর পার পুরিতে

নাই। ১৪। 'দিরা' ক, প-র-সা। ১৫। 'সাজাঞা কাচাঞা' হলে 'সাজাইয়া কাচাঞা' চ;
'সাজায়া কাছায়া' প-র-সা। ১৬। 'পরায়া' প-র-সা। ১৭। 'আবেশে' ইত্যাদি হলে 'আদরে বসার কোরে' প-র। ১৮। 'মুথ নির্থিতে' হলে 'মুথানি দেথিতে' প-র। ১৯। 'নীরে' প-র-সা, প-র। ২০। 'রচরে' প-র-সা। ২১। 'আলাঞা' ক; 'আউলায়া' ঝ; 'এল্যাঞা' ঝ; 'এল্যাফা' ব; 'এল্যাইয়া' চ; 'আলুই' প-র-সা; 'থসাঞা' প-র। 'চরণে ধরিয়া' ইত্যাদি পংক্তিম্বরের পরিবর্ত্তে প-র পৃথির পাঠ যথা,—

'মুথানি মোছাঞা পরায়ে গিন্দুর থসাঞা বান্ধয়ে কেশ।'

টাকা

৯—>২। "হার" ইত্যাদি। (আমি) হার
নহি, (তথাপি) প্রিরতম (আমাকে যেন) গলায়
পরিধান করে; (অর্থাৎ আমার ভূজ-লতাদ্বর
তাঁহার কঠে সংলগ্ন করাইয়া রাথে); আমি চল্লন
নহি, (তথাপি) সে আমাকে (যেন) গায় মাথে;
(অর্থাৎ স্থান্ট আলিঙ্গনে আমার অজ্যের সহিত অঙ্গ
মিশাইয়া রহে); (যেন দরিজ্ঞ) বহু চেইায় রক্প
গাইয়া উহাকে কোন স্থানে রাধিয়া শান্তি পাইতেছে
না। ভূলনা কর্মন,—

"সই কি না সে বন্ধুর প্রেম।
আমাথি পালটিতে নহে পরতীত
থেন দরিদ্রের হেম।"
— আমানদাস; প-ক-ত; ৩৭৮ সংখ্যক পদ।

এরাপ ।১

সইং কি না সে বন্ধুর° প্রেম। আঁখি পালটিতে নছে পরতীতঃ বেন দ্রিজের° ছেম॥ ঞু•॥

হিয়ায় হিয়ায় লাগিব লাগিয়াণ চন্দন না মাথেদ অজে। গায়ের ছায়া বায়ের দোসর সদাই ফিরু**য়ে সক্ষে**ণ্ড ॥ তিলে কত বেরিণ মুখানি হেরয়ে ১২ অাঁচরে মোছায়ে ও ঘাম। কোরে থাকিতে কভ্রু দুর হেন মানয়ে ১৫ তেঞি সদাই লয়ে নাগ্ৰ্ণ ॥ জাগিতে ঘুমাইতে ১৭ সান নাহি চিত্তে রসের পসার দ কাছে। জ্ঞানদাস কহে এমন পিরিভি সার কি জগতে আছে ॥১৫।৬৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫০ সংখ্যক ও প র পুৰির ১৩।৫৯ সংখ্যক পদ। 'শ্ৰীরাগ' ছলে 'ভুড়ী' প-র। ২। 'দোই' च, চ। ৩। 'শাহুর' প-র-সা। ৪। 'নহে পরতীত' স্থলে 'নহে পরতীতে' क; 'নহে পরতিত' ব, চ; 'নাহি প-র। ६। 'मांतिएप्रदे' क, थ, প-র। ७। क, ধ, ঘ, চ ও প-র প্থিতে 'ঞ' নাই। প-র পৃথিতে 'ভিলে কত বেরি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি এই পদের প্রথমে সন্ধিবেশিত হইয়াছে। ১। 'লাগিব লাগিয়া' স্থলে 'লাগিয়া বলিয়া' প-র। ৮। 'চন্দন না মাণে' স্থানে 'চল্দন মাথয়ে' প-র-সা, 'চল্দন না পরে' প-র। ৯। 'বায়ের দোসর' স্থলে 'রাইয়ের দোসর' ক, ४; 'রাষের দোসর' च। ১০। 'সদাই' ইত্যাদি খলে 'त्रांष्ठि मिन थांटक मत्म' भ-त्र-मा, भ-त्र। ১১। **>>। 'मूर्थानि एइत्रद्ध' ऋल** 'বার' প-র-দা। 'মুখ নেহাররে' ক; 'মুখ নিরথরে' প-র-সা; 'মূখে निष्ठविद्या' भ-द्र। ১৩। 'यूष्ट्रे' भ-द्र; 'स्मिष्ट्द्र' क। ১৪। 'থাকিতে কভ' খলে 'থাকি কভ' প-র-সা; 'থাকিডে' চ। ১৫। 'দুরঁ হেন মানয়ে' ছলে 'ছুৱে ছেন মানৱে' ক ; 'ছুৱ ছেন মানে' চ, প-র-সা ; 'দুরে হেন বাসরে' প-র। ১৬। 'সদাই' ইত্যাদি স্থলে 'সদাই লই নাম' ক; 'সদাই লইরে নাম' থ, ঘ; 'সদা লর নাম' গ-র-সা; 'সদাই করি নাম' প-র। ১৭। 'ঘুমাত্যে' প-র। ১৮। 'পসরা' ক।

টাকা

৪—१। "হিয়ায়" ইত্যাদি। (আলিজন-কালে) বক্ষে বক্ষে সংলগ্ন ছইবে বলিয়া, (প্রিয়তম) আজে চন্দন মাথেল। (অর্পাৎ বক্ষে চন্দন মাথিলে আলিজন-কালে চন্দন মধ্যে পাকায় বক্ষের সহিত্
বক্ষ সংলগ্ন হইবে না মনে করিয়া বক্ষে চন্দনাম্বলেপন ধারণ করে না)। সে (আমার) গায়ের ছায়াও (গায়ের) বাতাসের সহচর অর্থাৎ সাথী হইয়া সর্বাদা আমার সঙ্গে ভ্রমণ করে। তুলনা কর্মন,—

"ছারার ছারার লাগিব লাগিয়া ফিরেরে কতেক পাকে। আমার অঞ্চের বাতাস যে দিগে সে মুথে সে দিন গাকে।" —রার্শেধর; প-ক-ত; ৬৭৯ সংথ্যক পদ।

ভথা রাগ।১

সই^২ পিরিতি পিয়া সে^০ জানে। যে দেখি যে শুনি চিতে অমুমানি निष्ठनि पिरय भवार्ग ॥ ध्रा আগিলা গাটে মো° যদি সিনাড शिक्ति चारि (म माग्र¹। পরশ লাগিয়া মোর অকের' জল বাহু পদারিয়া রয় ॥ नागिरवंश नागियाः বসনে বসন अक्ट तकरक⁵² (प्रा মোর নামের আধ-১৩ আখর পাইলে হরিব হইয়া লেয়>ঃ॥

ছারার ছারার লাগিব লাগিরা

ফাররে কতেক পাকে।

আমার ভালের বাতাস যে দিগে

সে মুখে সে দিন থাকে ।

মনের আকুতি বেকভ করিতে

কত না সম্মান জানে।

পারের সেবক রায় শেশবর

কিছু বুঝে অমুমানে । ১ ৮ ৮ ৮৯ ॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৫৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৬১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'মুহই' প-র। 🔌। 'সোট' ঘ, চ। 😕। 'পিরিডি পিরা দে' হুলে 'পিয়া সে পিরিভি' প-র-সা, প-র। ৪। 'মু' প-র-সা। ৫। 'আবের' প-র। ৬ 'ঘাটেতে' প-র। ৭। 'পিছিলা' ইত্যাদি স্থে 'পিছে ঘাটে পিয়ানায়' প-র। ৮। 'অক' প-র। ১। 'বাহু' ইত্যাদি স্থলে 'পাথারে সাতার বায়' প-র-সা ; 'বাহু পদারিয়া ধায়' প-র। ১০। 'লাগিব' প-র-সা, প-র। ১১। 'বলিয়া' প-র। ১২। 'একই द्रक्राक' ऋरग 'এक द्रक्राकरद्र' भ-द्र । २०। 'मारमद व्याध कृतन 'नाम व्याधा अन्त्र । १८। '(नव्र' अन्त्र-मा, প-র। :৫। 'লাগিব লাগিয়া' স্থলে 'লাশিবে লাগিয়।' ক, চ; 'লাগিবার লাগি' প-র। ১৬। 'আমার' ছলে 'এ মোর' প-র। ১৭। 'যে দিগে' স্থলে 'লাগিরা' প-র। ১৮। 'লে মুখে' ইত্যাদি ऋरल 'रम मिर्ल रम मिन थारक' थ, भ-त्र-मा; 'रम দিন সে হুথে থাকে' প র। ১৯। 'কত না' স্থলে 'কতেক' প-র। ২•। 'পারের সেবক' ইত্যাদি পংক্তিৰর প-র পুথিতে নাই; উহার জম্ভ একটু कांत्रना थानि ताथा हरेबाटह ।

টাকা

>>--> । "ছারার" ইত্যাদি। (আষার) ছারা ও (ভাগার) ছারা সংলগ্ন কইবে বলিরা, (সে) কড প্রকার চেষ্টার ভুরে; (অর্থাৎ আষার আল-ম্পূর্ণ ত দুরের কথা, আমার ছারার সহিত তাহার ছারা মিশ্রিত হইলেও সে আনন্দে অধীর হয় এবং দেই জন্ম ছারার সহিত ছারা মিশাইতে নানা কৌশল অবলম্বন করে); আমার অলসংলগ্ন বায় ধে দিক্ হইতে প্রবাহিত হয়, সে সেই দিবস সেই বায়ুর দিকে মুখ করিয়া থাকে; (অগাৎ আমার আলসংলগ্ন বায়ুর ম্পূর্শেও সে কিয়ৎ পরিমাণে আমার আলিগনের অথ অফ্ডব করে বলিয়া সেই বায়ুকে সাদরে আলিজন করে)। তুলনা কর্ণন,—

"আলিক্ষ্যাস্ত গুণবৃতি ময়া তে তুষারাদ্রিবা ।: পূর্বং স্পৃষ্টং যদি কিল ভবেদক্ষমেভিস্তবেতি।"

— মেঘদত।

39116F01

"বস্কু মন্থতে নন্থ তে তত্মসঞ্চত-প্রন-চলিতমপি রেণুং " — গীতগোবিন্দ :

ভিরোধা ধানশী।১

কি পুছসি রে স্থি কামুক নেহং।
এক জিউ বিহি সে গঢ়ক ভিন দেহে।
কহিল যে কাহিনি পুছে কত বেরি।
না জানি কি পায়ই মঝু মুথ হেরি॥
বিন মঝু দরশ পরশে নাহি জীব।
মো বিমু পিয়াসে পানি নাহি পীব॥
উর বিমু শেজ পরশ নাহি পাই ।
চীবহি । বিমু তামুল নাহি খাই॥
মূমক ২ আলসে যদি পালটিয়ে ২ পাশ।
মান ভয়ে মাধব ২ উঠয়ে তরাস॥
আন সত্তেহ কাহিনি না সহে পরাণ।
আন সভাবণে হরয়ে ২ গেয়ান॥
কছে কবিরঞ্জন শুন বর-নারি।
তোহারি পরশ-রসে ২ পুবধ মুরারি॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৫ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩:৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'লেহ' ক. চ, প-র-সা; 'নেহা' প-র। ৩। 'গড়ল'প র-সা। 8। '(त्रक्ष' भ-द्र: १। 'क्दिल' क, ह। ७। 'যে কাহিনি' স্থলে 'কাহিনি রে' পর। ৭। 'পুছমে' প্-র-সা: 'পুছুই' প্-র। ৮। 'না জানি' ইত্যাদি ত্তলে 'না জানি কত হুথ পান্ন' প-র-সা; 'কত সুধ পাওই' প-র। ৯। 'বিনি মঝু' ইত্যাদি স্থলে 'मञ् वित्न मत्राम अत्राम' क, थ, छ; 'स्म वित्न मत्राम् भारत्भे च ; 'विनि भयु मत्रमान भाराम' भ-त । ১০: 'উর বিহু' ইত্যাদি স্থলে 'উরহি বিহু সধি শেজ না পাই' প-র। 'উর বিহু' ইত্যাদি পংক্তি-ৰ্য পার পুণিতে 'মানভয়ে মাধ্ব উঠয়ে তরাস' পংক্তির পরে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ১১। 'চিবহি' क, अन्त्र-मा; 'हौत्रहिं' ह। ১२। 'यूरमत्र' क, খ,চ, প-র-সা; 'ঘুমে' য। ১৩। 'পাণটি হঙ' ১৪। 'নাগর' প-র-সা। ১৫। প-র-সা। ১৬। 'আন' ইভ্যাদি স্থলে 'আন मुखार्रिमा इतरम् का २१। 'श्रम-तरम् ऋत्व 'প্রেমধনে' প-র।

विक1

১১—১২। "আন" ইত্যাদি। (আমার) অন্তের সহিত কথোপকথন (তাঁহার) প্রাণে সহু হয় না; (আমি) অক্তকে সন্তাহণ করিলে (তাঁহার) জ্ঞান বিশুপ্ত হয়। শ্রীরাধা ও শ্রীক্ষের পরস্পরের নিকট হল্লভিতা হেতু অন্ত কার্য্যে ব্যয়িত তিলমাত্র সময়ও তাঁহারা অসহনীয় জ্ঞান করেন,—ইহাই 'আন সঞ্জে' ইত্যাদি শ্লোকের ভাবার্থ বটে; অক্তথা নায়ক-শিরোমণি শ্রীক্ষ্যের কার্য্যে অধম-নায়কোচিত সন্দেহ-ভনিত কর্ষার বর্ণনা রসাভাসের পরিপোষক হইয়া পড়ে শ্রীক্ষপ গোস্থামী উজ্জ্লনীলমণি গ্রেছে এক্ষের সহিত ব্রজ-স্কুন্রীদিগের প্রেম-লীলার শ্রেণতা প্রমাণিত করিতে বাইয়া ভরত মুনির নিয়-লিখিত বাব্য উচ্ত করিয়াছেন; ব্রথা,—

"বহু বার্যতে হত: খলু

যত্ত প্রচন্ত্রকামুক্তক।

যাচ মিণো হল্ল ভিতা

মামন্মণ্ড প্রমার্ভি:।"

সুহই ৷১

ञ्चला कि जानि शुप धरतः। রসিক-মুকুট-মণি নাগর হইয়া গো এত না আদর কেনে করে॥ধ্র॥ মোর অঙ্গ-সন্ধ আশেও লালসা পাইয়াও বৈংসং রসে পহুঁ বোলে জিলুঁ জিলুঁ। গণিয়া রাখিহ মনে নিজ অথুগত জনে এ তমু তোমারে দিলুঁ দিলুঁ॥ আউলাঞা কবরী-ভার১২ বেশ করে বারে বার ২ বসন পরায় কু তুহলে ১৩। বসাঞাগ আপন উরে নূপুর পরায় খোরে চরণ পরশে কর-তলে 🕯 ॥ কালিয়া-কস্তুরী খানি বঁধুয়া বলয়ে ধনি ও রাঙ্গা চরণ-তলে>৬ মাখি। সখীর সমাজে ভোর ঘোষণা রহুক মোর নিগৃড় মরম তার>৭ সাখী॥ বিদগধ শ্যাম-রায় বসনে করুয়ে বায় আপনে যোগায় গুয়া-পাণ। **टगाविन्ममारमत** वागी अन त्राधा वित्नामिनिभ् তেএিঃ তুমি ভামের পরাণ ॥১৮॥৬৮১॥ পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৬ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০৫৮ সংখ্যক পদ। 'স্থাই' হলে 'বিভাষ' প-র। ২। 'অবলা' ইভ্যাদি হলে 'সই অবলা কি গুণ জানি ধরে' প-র। ৩। 'রসে' থ, প-র। ৪। 'হইমা' প-র-সা। ৫। 'লালসা' ইভ্যাদি হলে 'জানক্সাগরে ভাসে' প-র। ৬। 'রসে পহাঁ বোলে'

ছলে 'বঁধুয়া বলে' ক, প-য়-সা; 'হরিবে বোলয়ে' প-য়। ৭। 'বৃঝি' প-য়। ৮। 'নিজ' ইত্যাদি ছলে 'সধীর মাঝারে তোরে' ছ।৯। 'গণিয়া' ইত্যাদি ছলে 'গণিয়া রাখিবে মনে' ক; 'গণিয়া লইবা মোরে' ছ; 'গণিয়া রাখির মনে' চ; 'গণিয়া লইবা মোরে' ছ; 'ভাবিয়া লইছ্ মনে' প-য়। ১০। 'এ তফ্ তোমারে' ছলে 'বয়ুরে আপনা' প-য়। ১১। 'আউলাঞা' ইত্যাদি ছলে 'আবাঞা কুল্বলভার' প-য়। ১২। 'বয় বায়' প-য়। ১৩। 'কড বাঝ' প-য়। ১৪। 'বয়াইয়৷' প-য়-সা। ১৫। 'কয়-তলে' ছলে 'শতবার' প-য়। ১৬। 'চয়নতলে' ছলে 'ভরনে ভাল' থ, ছ। ১৭। 'চয়ম তাঝ' ছলে 'বেশমের এই' প-য়। ১৮। 'বিনদিনি' ছ; 'ঠাকুরাণি' প-য়।

টীকা

১২---১৫। "বঁধুরা" ইত্যাদি। বন্ধু বলেন—
ফুলরি কালো কস্তরীধানা (ধ্বনিগমা অর্থে—
আমার ক্লফ্ট অঙ্গধানা) (ভোমার) ঐ আরক্তিম
চরণের ভলে বর্ষণ করিতে চাহি ! ভোমার স্থীবর্গের মধ্যে (ভোমার সেবক বলিয়া) আমার
খ্যাতি থাকুক; (আমার) পভীর মনোবাদনাই
আমার উক্তির প্রামাণ।

थानगै ।३

রাতি দিনেং চৌথে চৌথে বসিয়া সদাই দেখে ঘন ঘন মুখখানি মাজে।

উলটি পালটি চায় সোয়ান্ত নাহিক পারুং
কত বাং আরতি হিয়ার মাঝে ॥

সই ও ছখ লাগিয়া আছে মনে ।

যারে বিদগধ-রায় বলিয়া অগতেং গার

মোর আগে কিছুই না ভানে ॥ এল।

জালিয়া উজ্জ্বল বাতি জ্বাগিয়া পোহায় সরাতি
নি দ নাহি যায় পিয়া ছুদে ।

ঘন ঘন করে কোলে খেণে করে উভরোলে ও

তিলে শতবার মুখ চুদে ॥

খেণে বুকে খেণে পিঠে খেণে রাখে দিঠে দিঠে
হিয়া হৈতে শেজে না ছোয়ায় ১০ ।

দরিদ্রের ১৭ ধন ছেন রাখিতে ১০ না পায় স্থান ১৪

তালে অলে সদাই ফিরায় ॥

ধরিয়া ছুখানি হাতে কখন ধরয়ে ১৭ মাথে
থেণে ধরে ১৬ হিয়ার উপরে ।

খেণে পুল্কিত হয় খেণে আঁখি মুদি রয়

বলরাম কি কহিতে পারে ॥১৯॥৬৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' ऋলে 'কামোদ করুণ' প-র। ২। 'রাত্যে দিনে' थ-त्र। ७। '(हारबा (हारबा' ह ; 'हरबा हरबा' প-র। ৪। 'সোয়াগু' ইত্যাদি স্থলে 'তভো স্বাস্ত নাহি পায়' প-র। ে। 'না' প-র-সা। ৬। 'मह' ইত্যাদি স্থলে 'সোই ও মুখ লাগিয়াছে মনে' চ; 'সই অপরূপ লাগিয়াছে মনে' প-র। ৭। 'জগত' প-র-সা। ৮। 'জাগিয়া পোহার' স্থলে 'बांगि পোराहेल' क, ब, च, छ। ৯। 'निंम' हेजानि স্থলৈ 'ভাত না খায় নিন্দ না যায় ঘুমে' প-র। ১০। 'থেণে' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণধন কত বলে' প-व। ১১। '(भावाब' क। ५२। 'लांतिरक्षव' ष, চ। ১৩। 'बुইডে' প-র। ১৪। 'बान' প-র। >e। 'क्थन धत्रात्र' ऋ ा 'क्हे कत्र अन्त । ३७। 'ब्रांस' भ-द्र।

पूड़ी।३

নয়ানে নয়ানে থাকে রাভি দিনেং দেহিতে দেখিতে থাকেও চিবুক ধরিয়া মুখানি তুলিয়া (मिश्रा (मिश्रा कात्मा সই কি ছার পরাণ ধরি। কি তার আর্ড কিবা সে পিরিভি জীতে কি পাসরিতে পারি॥এ॰॥ নিখাস ছাড়িতে গুণে পরমাদে কাতর হইয়া পুছে। বালাই লইয়া মো মরোঁ বলিয়া আপনা দিয়া কতদ নিছে॥ না জানি কি স্থাৰ দাড়াঞা সমুৰে যোড় হাতে কিবা মাগে। ধে করয়ে চিতে কে যাবে প্রতীতে বলরাম চিতে>> জাগে ॥২০॥৬৮৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১১৫৪ ও প-র পূথির ১৩,৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রাত্যে দিনে' প-র। ৩। 'দেখিতে' ইত্যাদি স্থলে 'জাখি পালটিতে সাধে' প-র। ৪। ক, থ, ঘ, চ পূথিতে 'শ্রু' নাই। ৫। 'পরমাদ' ঘ, চ, প-র। ৬। 'মো মর' ক; 'মু মরোঁ' ঘ। ৭। 'বালাহ' ইত্যাদি স্থলে 'ডোমার বালাই লঞা মরি ঘাই' প-র। ৮। 'জাপনা' ইত্যাদি স্থলে 'বলিয়া আপনা' প-র। ৮। 'দাঙাইয়া' থ, 'দাঙাঞা' প-র; 'দাঙাইয়া' প-র-সা। ১০। 'বে করয়ে' ইত্যাদি স্থলে 'তথল যে করে চিত, কে ঘাইবে পরতিত' প-র। ১০। 'বলরাম দাসের চিত্তে' প-র।

বিভাব ৷১

কিবা সে কহিব বিশ্ব পিরিভি
ভূপনা দিব যে° কিসে।
সমূখে রাখিয়া মুখ নিরখন্নে
পরাণ অধিক বাসে ॥

পান সাজাইয়া আপনার• হাতে মোর মুখ ভবি ' দেয়। মোর মুখেদ দিয়া আদর করিয়া মুখে মুখ দিয়া । নেয়। মরোঁ মরোঁ ১ সই ১ বঁধুর বালাই লৈয়া। না জানি কেমনে আছুয়ে এখনে১২ মোরে কাছে না দেখিয়া ॥ধ্রু১৩॥ বদন মাজই করতলে ঘন বসন করয়ে ১৪ দুর। मकलि (माँ भिन् পরশিতে অঙ্গ ধৈরঞ্জ পাওল> চুর>৬॥ নানা স্থপ দিয়া মরম বান্ধল বচন ঠেলিতে শ নারি। করে অনুমতি যখন১৮ যেমতি১৯ তখনং তেমতি করি॥ কথাটি কহিছে ভোর সঞ্জে স্থি সোয়ান্ত ন পাঙ্ং হিয়া। মরি যাই হেন্^{২২} বলরাম কহে পিরিভিং বালাই লৈয়া ॥২১॥৬৮৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১১৫৯ সংথাক ও
প-র পূথির ১৩৫৬ সংথ্যক পদ। ২। 'কিবা'
ইত্যাদি স্থলে 'কি জানি কহিতে' প-র। ৩। 'বা'
প-র। ৪। 'নির্ধিয়া' ক। ৫। এ স্থলে ঘ,
চ পূথিতে 'রু' চিহ্ন আছে। ৬। 'আপন' থ, ঘ,
চ। গা 'মূখ ভরি' স্থলে 'মূথে তুলি' প-র।
৮। 'হাথে' থ, প-র। ৯। 'মূথে মুথ দিয়া'
স্থলে 'নিজ মুথ তুলি' প-র। ১০। 'মরো মরো'
ক; 'মোরু মোরু' থ। ১১। 'সই' শব্দ প-র
পূথিতে নাই। ১২। 'আছরে এথনে' স্থলে
'আছরে বন্ধুরা' ঘ; 'আছরে তথন' চ; 'আছে
এউক্লেণ প-র-সা। ১৩। 'না জানি' ইত্যাদি স্থলে
'না জানি কি করিছে শেরাণ বন্ধুরা' প-র। ক;

ধ, প-র-সা ও প-র পৃথিতে 'শু' নাই; ছ, চ পুথিতে পুনরায় 'শু' চিক্ত আছে। ১৪। 'করই' প-র-সা। ১৫। 'হইল' প-র। ১৬। 'বুর' প-র-সা। ১৭। 'পেলিতে' প-র। ১৮। 'ঘথনে' ক, ধ। ১৯। 'ঘেমন' প-র। ২০। 'তথনে' ক, ধ; 'তথনি' প-র। ২১। 'মির' ইত্যাদি স্থলে 'মরিয়া যাই' প-র। ২০। 'পিরিতির' ধ, প-র-সা, প-র।

টীকা

২০—> >। "তোর" ইত্যাদি। হে স্থি! তোর সঙ্গে (ছই একটি) কথা বলিতে ঘাইরাও প্রাণে শান্তি পাইতেছি না; অর্থাৎ আমার প্রাণ সর্বাণ প্রিয়তমের চিন্তার এক্রপ বিভোর হইয়া আছে যে, উগকে ক্ষণকালের জ্বন্ত বলপূর্ব্বক অন্ত কোন প্রীতিকর কর্ত্তব্য কার্য্যে নিয়োজিত করিলেও যেন সে অন্তর হইয়া পড়ে! পদ-কর্ত্তা বলরাম বলিতেছেন,—(শ্রীরাধার) এই প্রকার (অপূর্ব্ব) প্রেমের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'তোর স্থেমর বালাই কর্মা মরিতে ইচ্ছা হয়! 'তোর ক্রেমর বাল ও সর্ব্ব-কর্ম-পরিভাগে স্থাচত ইয়াছে, প্রেমক ও ভক্তের তাহাই পরম বাঞ্চনীয়,— পদক্তা বলরাম ইছাই ইলিতে ব্র্থাইয়াছেন। তুলনা কর্মন,—

"দর্বধর্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ । অহং স্বাং দর্বপাপেভ্যো মোক্ষরিয়ামি মা শুচঃ॥" —গীতায় শ্রীভগবহাক্য।

সিম্বুড়া ।১

নিজ পরসক্ষ স্থপনে না করে
আনে না পাতরে কাণ।
দিঠে দিঠে রহে নিমিখ না বহেং
নিরখে মঝু বরান ॥

পিরিতি কিরিতি⁸ কি না॰ সে বন্ধুর কহিতে কহিব কী°। কত উঠে চিতে সে সব চরিতে পরাণ নিছনি দী⁹ ॥ পুলকে আকুল খেণে খেণে তমুদ তিলেক না ছাড়ে সঙ্গ। রুসের আলাপ হাসির মিশালে অমিয়া সিনায় অঙ্গ॥ এভ করি মোরে কোরে আগোরয়ে त्रश्रद्धाः दिश्य विद्रश्य । ধনি ধনি সেহ জ্ঞানদাস কহে যাহে এ পিরিভি-লেশ ॥২২॥৬৮৫॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৬ সংখাক পদ।

২। 'রহে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'কি না সে' ফ্লে
'সই কি না সে' ক, খ; 'সোই কি না সে' ঘ. চ; 'কিবা সে' প-র-সা। ৪। 'পিরিতিকি রীতি' ক, খ। ৫। 'কি' ক, খ, ঘ, প-র-সা। ৬। 'সে' ক, খ। ৭। 'দি' ক, খ, ঘ, প-র-সা। ৮। 'তবু' প-র-সা। ৯। 'আগোরম' ক।

টা কা

> — ৪। "নিজ" ইত্যাদি। (প্রিয়তম) সংপ্রথ নিজের সম্বন্ধে কোন কথা বলেন না; অল্তের কথায়ও কাণ দেন না; তিনি (সর্বাদা) আমার পানে তাকাইরা থাকেন; (তাঁহার) (নেত্রে) পলক চলে না; (ভাধু) আমার মূধ নিরীক্ষণ করেন।

ভাটিয়ারি ৷>

কত নাস-বেশং করি পরায় পাটের শাড়ী সাধে সাধে সমূপে হাটায়। দেখিয়া হাটন মোর হইয়া আনন্দে ভোর দ্বাই বাহু প্রসান্ধিয়া ধায় ॥

সই তেঞি⁶ সে হিয়ার মাঝে জাগে। কত কুলবতা যাবে হেরিয়া ঝুরিয়া মরে সেহা যোড হাথে মোর আগে ॥ এ। অভিরদে গরগরি কাঁপে পত থরহরি আরতি করিয়া কোলে করে। নিবিড'**• আলিন্সনে** ঘন ঘন চুম্বনে ডুবাইল রসের সাগরে॥ চন্দন মাখায় ১ গায় দেয় ২ বসনের বায় নিজ করে তামুল খাওয়ায়। বিনি কাজে কত পুছে কত না মুখানি মোছে হেন বাসে দেখিতে হারায়॥ তুমি মোর ধন প্রাণ্ণ তোমা বিনে নাহি আন কহে পিয়া গদগদ ভাষে। যতেক পিরিতি তার জগতে কি আছে আর कि विलिद्य वनतीय प्राटम ॥२०॥७৮७॥

পাঠান্তর

্ । হহাপ-র-সাপুথির ১১৬১ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০০৫০ সংখ্যক পদ। 'ভাটিগ্রারি' ছলে 'হুহই' প-র। ২। 'কত নাস-বেশ' হুলে 'কত না বেশ' ঘ; 'নাসবেশ' ক, ধ, প-র-সা। ০। 'পরায়ে' থ, প-র-সা। ৪। 'যায়' প-র। ০। 'তেই' প-র-সা; 'বছু' প-র। ৩। 'হেরিয়া' ইত্যাদি হুলে 'ধেয়ানে ভাবিয়া মোরে' প-র। १। 'দেই' ক, থ, ঘ, চ। ৮। 'হাতে' ক, ধ, প-র-সা। ১০। 'ঘন মন' প-র। ১১। 'ঘালায়' প-র-সা; 'মাধাইয়া' প-র। ১২। 'দেই' প-র। ১৩। 'বা সে' ঘ। ১৪। 'থাণধন' ক; 'জাতিপ্রাণ' প-র। ১৫। 'কি বিসিংশ' হুলে 'গুণ গার' প-র।

बाननी ।> শিশুকাল হৈতে ৰন্ধুর সহিতে পরাণে পরাণে নেছা ।। না জানি কি লাগিণ কো বিহি গটলঃ ভিন ভিন করি দেহাং॥ সই কিবা সে পিরিতি ভার। আলস করিয়া নারি পাসরিতে कि मिया (अधिव धाव । अ। আমার অক্সের বরণ লাগিয়া পীত বাস পরে শ্যাম। প্রাণের অধিক করের মুরলী লইতে আমার নাম॥ আমার অক্সের বরণ সৌরভ ষধন যে দিগে পায়।

তখন^{১১} সে দিগে ধায়॥
লাখ^{১২} কামিনী^{১৩} ভাবে রাতি দিনি^{১৪}
যে পদ সেবিতে চায়^{১৫}।
জ্ঞানদাস কহে^{১৬} আহীর-নাগরী^{১৭}
পিরিতে বান্ধিলা^{১৮} তায়^{১৯}॥২৪॥৬৮ ৭॥

বাউল হইয়া>•

পাঠান্তর

বাহু পসারিয়া

১। ইক প-র-সা পুথির ১:৬২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৪।০ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হলে 'ফুছই সিদ্ধুড়া' প-র। ২। 'কোহা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কি লাগি' হলে 'কি বেনে' প-র। ৪। 'কোবিহি গঢ়গ' হলে 'বিধাতা কেমনে' প-র। 'না জানি' ইত্যাদি হলে 'না জানি কো বিহি, কি লাগি গঢ়গ' প-র-সা। ৫। 'করি দেহা' হলে 'কৈল দেহা' প-র-সা, প-র। ৬। 'নারে' ক, চ। ৭। 'পাশ দিতে' ক, চ। ৮। 'ফুধিব' ক। ৯। 'প্রাণের' ইত্যাদি হলে 'পরাণ প্রতলি, অধিক মুরলী' প-র। প-র পুথিতে 'পরাণ প্রতলি, অধিক মুরলী' প-র। প-র পুথিতে 'পরাণ প্রতলি, ত্যাদি পংক্রির পুর্ক্ষ

সন্ধিবেশিত হইরাছে। ১০। 'বাউল হইরা' হুলে 'বাউর হইরা' প-র সা; 'বাছ প্সারিরা' ইত্যাদি হুলে 'বাউর হইরা, বাছ প্সারিরা' প-র-সা। ১১। 'লাক যে' প-র-সা। ১২। 'লাক যে' প-র-সা। ১৩। 'লিকা' প-র। ১৪। 'দিনে' থ। 'ভাবে রাতি দিনে' বাক্যাটি প-র পুথিতে নাই। ১৫। 'বে পদ' ইত্যাদি হুলে 'ভাবিরা না পার বাবে' প-র-সা, প-র। ১৬। 'জ্ঞানদাস কহে' হুলে 'কহে চণ্ডীদাসে' পর; 'কবিশেশরে কহে' সা-প, ২০১ সংখ্যক পুথি। এভব্তির এই পুথিতে সামাক্ত সামাক্ত অনেক পাঠ-ভেদ আছে, ভাহা এ হুলে বাছ্ল্য-ভয়ে উদ্ধৃত হইল না। ১৭। 'আহীর' হুলে 'আভির' প-র। ১৮। 'বাদ্ধল' ক, চ; 'বাদ্ধিন' প-র-সা। ১৯। 'ভারে' প-র।

সিশ্বড়া।>

পিয়ার কথা কি পুছসি রে স্থি পরাণ নিছনিও দিয়ে। গইড়ের° কুটাগাছি শিরে ঠেকাইয়া আলাই বালাই তার নিয়েণ ॥ধ্রণ। মুখানি মোছাঞা হাত দিয়া দিয়া मोश निग्ना निग्ना गाउँ । কতেক যতনে পাইয়া রতনে থুইতে ঠাঞি না' পায়॥ কভ না আদরে उटमत वाषट्य निमशन देकल त्मादत । নিমিখ ভেজিলে **जिरम ना एमिएम** ভাসয়ে নয়ান-লোরে ৷ গে হেন নাগর রুসের সাগর গুপের নাহিক সামা। पान (गावि**टम**) কহল আনন্দে> ভূমি সে জান মহিমা ? ।২৫॥৬৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পথির ১১৬০ সংখ্যক পদ।

২। 'পিয়ার' ইত্যাদি স্থলে ক, খ, ঘ, চ পথির
পাঠ যথা—'এমন পিয়ার কথা কি পুছ্সি রে সথি।'

৩। 'নিছিয়া' খ, ঘ। ৪। 'গড়্যের' ক; 'গড়্যার'
প-র-সা। ৫। 'আলাই' ইত্যাদি পাঠ সকলগুলি
পথিতে দৃষ্ট হউলেও উহা ছলোভক্ত-দোহ-ছুট বলিয়া
সম্ভবতঃ 'আলাই বালাই নিয়ে' শুদ্ধ পাঠ হইবে।
৬। 'মুছাইয়া' প-র-সা। ৭। 'লেয়া লৈয়া' প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ৯। 'গোবিন্দা প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ৯। 'গোবিন্দা পে-র-সা।
৮। 'আনন্দ' প-র-সা। ১১। গোবিন্দামের এই
পদ্টির প্রথম ছুইটি শ্লোকের সহিত বিভাগতির
'এমন পিয়ার কথা কি পুছ্সি রে স্থি' ইত্যাদি
পদের প্রথম ছুইটি শ্লোক অভিন্ন; বিভাপতির উক্ত
পদ্টি পদকল্পক্ষর চতুর্থ শাধার সপ্রবিংশ প্রবে
উদ্ধুত হইয়াছে।

ভথা রাগ ৷১

যবে দেখা দেখি হয় ২ হেন তার মনে লয় প নয়ানে নয়ানে মোরে পিয়ে। পিরিতি আরতি দেখি হেন মনে লয় সথি আমি তারে চাহিলে সে জিয়ে॥ আহা মরি মরি মুঞি কি কবং আরতি। কি দিয়া শোধিবং শ্রাম বঁধুর পিরিতি ॥ধ্রা॥ রসিয়া শাগর বে নিভূই ভ্যারে সে বিনা কাজে কত আইসে যায়। জ্ঞানদাস তবে কয় তোমার চিতে থবা লয় ভাহা বা কহিবা ভূমি কায়॥২১৮৮৮৯॥

পঠিস্থির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হরে' ক, খ, চ। ৩। 'লরে' ক, খ, চ। ৪। 'করব' ক। ৫। 'হুধিব' ক, ঘ, চ। ৬। 'রসিক'ক। ৭। 'চরিড'ক।

পান্ধার।১

কামুর পিরিভি কাহারে কহিব তুমি সে বেদনা সই। সে রস -ধাধদে ধস-ধস হিয়া তেঞি সে তোমারে কই॥ ও নব নাগর রদের সাগর আগর° সকল গুণে। সে সব চরিতি আদর পিরিভিগ युतिया भित्रव (भ**्नः**॥ পিরিতি-বোলে কত না ছলে স কি না দে আকুতি সাধে। মধুর ভাষিয়া' মান নাশিয়া হাসিয়া মরম বাঁধে ১ ॥ করিয়া ভরিয়া ত **८म भारत^{३२} कारलर**ङ वहरून वहन हिया। বিধু বিড়ম্বিয়া মধুর চুন্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচ'য়া শ ফাঁড়িয়া সে রস লুটিয়া ভুলিয়া' মধুপ জমু। खत्राम क कि कि কমল-কোরক গুণেত ঘূণিভ্রু । মুখের ১৯ মাধুরী ও দিঠি-চাতুরী লহরী কত বাং আর। এ সুখ্য শুনিতে युत्रि ना महरप्रश्र দাস গোবিন্দ ছার ॥২৭॥৬৯০॥

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৬৫ ও ১৪১৯ সংখ্যক পদ। এই পদটি তৃতীর শাথার একাদশ পরবে ৯:৮ সংখ্যক পদরপে পুনরার উদ্ভ হইরাছে; উহাতে পাঠের কিঞ্জিৎ ব্যতিক্রম দৃষ্ট হর। ২। 'সে রস' হলে 'রসের' ক, খ, ঘ, চ (৯৩৮ সংখ্যক পদ); 'সে সজ' প-র-সা (১৪১৯ সংখ্যক পদ)।

৩। 'আগোর' ক (১৯০ সংখ্যক পদ)। ৪। 'সে সব' ইত্যাদি পংক্তি হৃদে 'সে রস পিরিতি আদর আরিডি' ক, চ (৯৩৮ সংখ্যক পদ); 'সে স্ব পিরিতি আদর আরভি' ধ, ঘ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। e। 'বুৰিরে' প-র-সা (১১৯৫ সংখ্যক পদ)। 🖜। 'মরিরে' ক, চ (৬৯০ সংখ্যক পদ)। ৭। "মনে" ক (৬৯০ সংখ্যক পদ), প-র-সা (১১৬१ मः शाक भन)। ৮। '(वान' क, ब, च, ह (२०४ मः थाक भन)। २। 'इन' क, ह, (२०४ সংখ্যক পদ)। ১০। 'ভাখিয়া' ক (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১১। 'পিরিভি-বোলে' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ৬৯০ সংখ্যক পদে কোন পুথিতেই নাই; কিন্ত ৯৩, সংথাক পদে সকল পুথিতেই দৃষ্ট হয়। ১২। 'মোর' ক। ১৩। 'ভাবিয়া' ক, চ (৬৯٠ সংখ্যক পদ)। ১৪। 'কাঁচুলী' ক (১০৮ সংখ্যক পদ)। ১৫। 'জুলিয়া' ব, চ; 'অলিমা' ক (১৮৮ সংখ্যক পদ)। ১৬। 'ভরম' ধ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১৭। 'হৈল' ক (৯০৮ সংখ্যক পদ)। ১৮। 'শুণেত ঘূণিত' স্থলে 'গুণিতে ঘূণিত'ক, ধ; 'গুণেতে ঘূর্ণিভ' প-র-সা। ১৯। 'রসের' প-র-সা (১৩৮ সংখ্যক পদ)। ২০। 'কত বা' ফলে 'বছরে' क, ब, व, ठ (৯ % मः शंक शव) 'वश्या' श-य-मा () ४) नःशक् १ । । २ । 'এ सूथ' व्हान '(ज म्रन' भ-न्न-मा (১৪১৯ সংখ্যক भन)। २२। 'सूनि ना बद्राब 'ऋरन 'अूद्रिला बद्राब' প-ब्र-मा ; (১১७৫ সংখ্যক পদ); 'ঝুরিয়া মরুক' ক, খ, ঘ, চ; (৯৩৮ সংখ্যক পদ); প-র-সা (১৪১৯ সংখ্যক পদ)।

টাকা

৯—১২। "পিরিভি"- ইত্যাদি। সেই প্রিরতম প্রেমপূর্ণ বাক্যে কত প্রকার কৌশলে (তাঁহার) কোন্ অভিলাব না নিদ্ধ করেন? (তিনি) মধুর সম্ভাবণ করিরা, (আনার) নান বিদ্রিত করিরা, হাভের নোহিনী শক্তি বারা কিংবা অবলীলাক্রমে (আমার) প্রাণকে (প্রেমের বন্ধনে) আবদ্ধ করেন।

১৩---১৬। ্^শলে যোগে^দ ইন্ড্যাদি। সেই

প্রিরতম আমাকে ক্রোড়ে বসাইয়া, নিজের ক্রোড় পূর্ণ করিয়া অর্থাৎ আমাকে নিজের বাছ-পাশে पृष्कत्भ अष्ठां रेशा धवित्रा, आमात मूर्ध निरस्त मूर অর্পণ করিয়া, চক্তকে অফুকরণ করিয়া মধুর চুছন দিয়া, (ঐ সকল কার্য ছারা) আমার প্রাণ (ভুলাইয়া) লইয়াছেন। (সংস্কৃতে 'বিড়ম্ব' ধাতুর প্রসিদ্ধ অর্থ 'অমুকরণ করা'; যথা,—'পুগুরীকাত-পত্ৰত্তং বিক্সৎকাশচামর:। ঋতুবিভ্রমামাস ন পুনঃ প্রাপ তচ্ছিরুম্।"—র্বুবংশ ৪।১৭; "বিড়ম্ব্যুমানা नवकन्मदेनदर्श्व विवाह-ध्याकन (नाहन-भी:।"--- त्रच्वःम, ১০২৯; হৃতরাং 'মধুর চুম্বিয়া' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এইরূপ হইতে পারে যে, চকোর ষেমন চক্রের অ্ধা পান করে, সেইরূপ আমার অধর-স্থা পান করিয়া। অথবা যদি 'বিভৃশ্বিয়া' শব্দের আধুনিক 'ক্লেশ দিয়া' অর্থ ধরা যায়, তাখা হইলে উক্ত বাক্যের তাৎপर्या এই क्रभ इहेरव रय, 'ठक्क हेशव निकंडे कि ছার! এইরূপ আমার বদনের প্রশংসা হারা চজ্রকে ফ্রিষ্ট করিয়া, মধুর চুম্বন দিয়া' ইত্যাদি। প্রথমোক্ত অর্থই পদ-কর্তার অভিপ্রেত বলিয়া বোধ হয়।)

১৭—২০। "কাঁচুরা" ইত্যাদি। সেই প্রিরতম (সভোগোৎকর্চার আতিশব্য হেতু) আমার কাঁচুলি ছিল্ল করিয়া, (কমল-কোরকবৎ অন্যুগলের) রদ (এক অর্থে—মধু; অপর অর্থে—মুখ) লুঠুন অর্থাৎ বলপুর্বাক আত্মদাৎ করিয়া মধু-পান-লুক প্রমরের স্থান (অপর অর্থে—মভপের স্থান্ন) মত ইইয়া (আমার জন-মুগলকে) কমল-কোরক মনে করিয়া বাহা আচরণ করিলেন, (তাহা কি বলিব ?) তাঁহার গুণে আমার কেই খুণ-বিদ্ধ অর্থাৎ খুণ-বিদ্ধ বাঁশ ইত্যাদির স্থান অর্জনিত ইইলাছে। ('খুণিত' শশ ভম্নর পক্ষে অপ্রথমান্তা বলিয়া এ হলে লক্ষণা ঘারা উহার অর্থ 'ক্সক্রিত' বুবিতে ইইবে। 'অত্যত্ত ক্সক্রিত' বুবাইনার উল্লেক্টেই 'খুণিত' শক্ষের প্রোরাণ করার, এথানে উক্ত বাধ্যার্থ-ক্লপ বন্ধ ঘারা 'ক্র্-বিদ্ধু ক্ণোদির ভার ব্রীবার তত্ত্ব, প্রীক্ষকের প্রে

ভক্তরিত হইরাছে'— এই উপনা অণকার ব্যঞ্জিত

হইরা, উত্তম-কাব্যন্থের প্রধান্তক হইরাছে। ইহা

লক্ষণা-মূলক 'অত্যন্ত-তিরস্কৃত-বাচ্য' ব্যক্ষ্যের স্থলর
উদাহরণ। 'ঘূর্ণিত' পাঠ গ্রহণ করিলে, কিংবা
'ঘূর্ণিত' শক্টিকেই 'ঘূর্ণিত' শক্ষের অপভ্রংশজাত
করনা করিলে, উহার 'ঘূর্ণিত' অর্থাৎ 'অন্থির' অর্থ
করিলেও করা ঘাইতে পারে; কিন্তু তাহাতে অর্থের
কোন গুরুত্ব পাকে না। তুলনা করুন,—

"যত রূপ তত বেশ ভাবিতে পাঁজর শেষ"

—ক্ষানদাশ; প-ক-ত; ২৯২ সংখ্যক পদ।

धानभी ।>

হাসিয়া হাসিয়া মুখ নিরখয়েং মধুর কথাটি কয়। ছায়ার সহিতে ছায়া মিশাইতে পথের নিকটে রয় 🛭 আলো সই সে জন মানুষ নয়। ভাহার সঙ্গে যে৽ পিরিতি করয়ে কি জানি কি ভার হয় ॥ ধ্রু⁸ ॥ সহজে রসের আকর পে৬ যে ভাবের অঙ্কুর তায়। বাতাসে বসন উড়িতে আপন व्यक्त ८ठेकारेश यात्र ॥ চমক চলনি **७** गीम-स्माननि রমণী-মানস-চোর। ञ्जानमात्र कटह সে পিয়া-পিরিতি মরমে পশিল তোর ॥২৮॥৬৯১॥ পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১১৬৮ সংখ্যক পদ।

২। নির্থিরা প-র-সা। ৩। সেকে সে প-র-সা।

३। ক, ছ ও প-র সা পুথিতে 'এব' নাই। ৫।
'আকার' চ, প-র-সা। ৬। 'সেই' খ। ৭। 'ঠমক'

३। ৮। 'সো' ক, খ, চ।

পঠনপ্রবা ।১

একলা যাইতে যমুনাহ-ঘাটে।
পদ-চিক্ত মোর দেখিয়াও বাটে॥
প্রতি পদ-চিক্ত চুদ্বয়ে কান।
তা দেখি আকুল বিকল প্রাণ॥
লোকেও দেখিলে কি বলিবেও মোরে।
নাসা পরশিয়া রহিলুঁ দূরে॥
হাসি হাসি পিয়া মিললও পাশ।
তা দেখি কাঁপয়ে গোবিন্দ দাস॥২৯॥৬৯২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৭ সংখ্যক ও প-র
পুথির ১৪।২ সংখ্যক পদ। 'পঠনশ্বরী' ফ্লে
'ধানত্রী' প-র। ২। 'যমুনার' ক। ৩। 'দেখিল'
প-র। ৪। 'লোক' ক; 'লোকেতে' প-র। ৫।
'বিলব' প-র। ৬। 'মিলিল' প-র-সা।

ভথা রাপ ৷১

দৈনান দোপরং সময়ে জানি।
তপ্তঃ পথে পিয়া ঢালয়ে পানি॥
কি কহিব সখি পিয়ার কথা।
কহিতে হৃদয়ে লাগয়ে বেথা॥ এদে॥
তামুল ভথিয়া দাঁড়াই পথে।
কেন বেলে পিয়া পাতয়ে হাথে ॥
লাজে হাম যদি মন্দিরে ষাই।
পদ-চিহ্ন ভলে লুঠয়ে তাই॥
আমার অজের সৌরভ পাইলে।
ঘুরি ঘুরি জমু ভ্রমরা বুলে॥
গোবিন্দদাসের জীবন হেন।
পিরিতি বিষম মানহ কেন॥৩০॥৬৯০॥

১। ইহাপ-র-নাপুথির ১১৬৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোপোর' খ। ৩। 'স্বর' খ,চ। ৪।

পাঠান্তর

'ভপক্ত' ক, খ, च, চ। ৫। প-র-সা প্থিতে 'এ' নাই। ৬। 'ভরিয়া' চ; 'ভধি যদি' প-র-সা। ৭। 'দাড়াইয়ে' च; 'দাড়াইয়া' চ। ৮। 'হেন' ইত্যাদি ছলে 'অল্থিতে আসি' প-র-সা। ১। 'হাতে' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'লুট্য়ে' ক; 'লুটাই' প-র-সা।

গুণ কহিলে কি জানি হয়।
ক্ষিতে কহিতে অথির তনু
ধৈরজ নাহিক রয়॥ ইত্যাদি*
পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
অথ স্বপ্রদোদগারঃ।

बीरगोत्रहसः।

বিভাব ৷১

করিব কি মুঞি করিব কি।
গোপতং গৌরাপের প্রেমে ঠেকিয়াছি ॥ এ৯ ॥
দীঘল দীঘল চাঁচর কেশ রসাল ছটি আঁথি।
রূপে গুণে প্রেমেণ তকু মাখা যেন দেখি ॥
আচন্দ্রতে আসিয়া ধরলণ মোর বুকণ।
স্থপনে দেখিলুঁ হাম গোরাচাঁদের মুখ ॥
বাপের কুলেরদ মুই কুলের ঝিয়ারী।
খণ্ডর-কুলের মুঞি কুলের বৌহারী ॥
পতিব্রতা মুঞি সেণ আছিলুঁ পতির্বণ কোল।
সকল ভাসিয়াণ গেল গোরা-প্রেম-জলেণ ॥
কহরে নয়নানন্দ বুঝিলাম ইহাণ।
কোন পর কারে এখন নিবারিবা হিয়া॥৩১॥৬৯৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৯ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০।১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'গুপত' প-র-সা 'গোপত' ইত্যাদি পংক্তির হুলে প-র পুৰির পা যথা—'গোরাঙ্গচান্দের ভাবে পড়িয়াছি ॥' ৩। ব থ, ঘ, চপুথিতে 'এই' নাই। ৪। 'দিবল দিবল य, ह ; 'मोधन मोबन' इंछामि भः खिष्य भ-त श्थिए नाहे। ৫। '(श्रम' घा ७। 'स्तिन' **৭। 'আচম্বিতে' ইত্যাদি পংক্তিম্ব প-র পৃথি**ছে ভণিতার পুর্বে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ৮। 'কুলে প-র। ৯। 'বোহারি' চ; 'বছয়ারি' প-র। ১০ 'যে' প-র-সা। ১১। 'পতি' প-র-সা। 'ভাঙ্গিরা' ক, থ, প-র-সা। ১৩। 'গোরা-প্রেম জলে' স্থলে 'গো প্রেমজলে' ব; 'নরনের জলে প-র। ১৪। 'কহ নয়নানন্দ' ইত্যাদি ভণিতা পংক্তিদর প-র পুথিতে নাই; উহার অভ এক ফাঁক আছে।

> বিভাষ ৷১ নব্ঘন-কির্ণ-বর্ণ ন্ব নাগর মন্দিরে আওল মোর। লোল নয়ন-কোণে মদন জাগায়লং মৃত্ব মৃত্ব হাসি বিভোর ॥ সজনি কি কহব রঙ্গনি-আনন্দ। স্বপন-বিলোকন কিয়ে ভেল দর্শন मञ्जू मत्न नांगन धन्न ॥ धन्ः॥ উর পর কমল- পাণি অবলম্বনে দূরে করল আনোআন। নিবিহক বন্ধ-৮ বিমোচন নাগর कि कत्रण किছूरे ना जान ॥ তৈখনে মদন কুন্থম-শর> হানল জর-জর জীবন মোর। গোবিন্দ দাস কহ গৌরি-জারাধ্য বিকল কি বাইবে ভোরণ ।৩২।১৯৫।

 ^{&#}x27;ঋণ কহিলে কি লানি হয়' ইত্যানি পদটির
বাকি অংশ কোন প্রথিতেই উদ্ভ হয় নাই; য়ৢভয়াং
ভাহা এ ছলে য়ুয়িভ কয়া গেল য়া।

পঠিক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১.৭০ সংখ্যক ও প-র পুথির .৩,৪১ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' স্থলে 'করুণা' প-র। ২। 'জাগাওল' ক; 'লাজাওল' প-র। ৩। 'সপন বিলোকনে' ঘ,চ, প-র। ৪। ঘ,চ পুথিতে 'ঞ্চ' নাই। ৫। 'পাণি' প-র। ৬। 'ক্যল' প-র। ৭। 'অবলছন' প-র। ৮। 'নিবি নিবন্ধ' প-র। ৯। 'শ্রে' প-র। ১০। 'ভোমার' ঘ। টীকা

৫—१। "স্ক্রি" ইত্যাদি। হে স্থি! বজ্নীর আনক্ষিক কৃথিব ? (তবে) উহা অপ্র-দর্শন কিংবা (সাক্ষাৎ) দর্শন হইল—(সে বিষয়ে) আমার মনে গাঁধা লাগিল!

দ—১১। "উর" ইত্যাদি। (কিন্ধ দেই সন্দেহ অধিক ক্ষণ রহিল না;) নাগর (আমার) বক্ষের উপর (তাঁহার) পদ্ম-হস্ত অর্পন করিয়া অত্তাব অর্থাৎ ইহা অপ্ত-দর্শন, কি স্পরীরে মিলন—দেই সন্দেহ বিদ্যাত করিলেন; নাগর কটির বসন গ্রন্থির বিমোচন (এবং অক্তান্ত কার্য্য) কি করিলেন, (আমি) কিছুই টের পাইলাম না অর্থাৎ রুসাভিশ্যে আমি অচেতন হইয়া পাড়লাম। (ইহা ঘারা ইরোণার প্রগল্ভা-নায়িকা-ভাব ব্যক্ত হইতেছে; যথা—শন্ধ্যানা গাঢ়ভাক্ষণ্যা সমস্তরভকোবিদা। ভাবোক্ষতা দরব্রীড়া প্রগল্ভাক্রান্থনায়কা।" ইতি সাহিত্য-দর্শণ)।

ভথা রাগ।১

পরাণ-বন্ধুকেং স্থপনে দেখিলুঁ
বিদয়া শিয়র পাশে।
নাসার বেশর পরশ করিয়া
স্বৈত মধুর হাসে॥
পিয়ল ংবরণ বসন খানিতে
মুখানি আমার মোছে ।
শিথান হইতে মাগাটি বাহুতে গ্রাধিয়া শুক্তল কাছে ॥

মুখে মুগ দিয়া সমান হইয়া বধ্যা করল কোবেই। চরণ পসারি১১ চরণ উপরে পরাণ পাইলু বোলে। অঙ্গ-পরিমল ওগন্ধি চন্দ্ৰ কুষ্কুম কন্তুরী পাবা : পরশ করিতে রস উপজিল জাগিয়াং হইলুঁ হারাঞ॥ চকিতে> বাঁট্ল কপোত পাণীরে১৪ বাজিলে যেমন ১৬ হয়। চণ্ডীদাস্ণ ক্রে এমতি হইলে আর কিচ্চ পরান রয়ত ॥৩৩॥৬৯৬॥

পাঠাশ্বর

্৷ ইহা প-র-সা পুণির ১ ৫৮ সংখ্যক ও প-র পুলিব ১১।৪ সংখ্যক পদ। ২। বিশ্বরে প-র-সা। ০। 'নিউর' পর-সা। ৪। 'ঈষ্ঠ মধুর' ছলে 'ঈষদ ঈষদ' প-র-সা; 'ইসত ইসত' প-র। ৫। 'পিজন' প-র-সা। চণ্ডাদাদের মুদ্রিত **সংস্করণ-**গুলিতে অশুদ্ধ 'পিঞ্চল' পাঠই গৃহাত হইয়াছে। শ্ৰীক্ষাফের বসন পিঙ্গল-বৰ্ণ নছে; উহা পীত-বৰ্ণ। সংস্কৃত পীত শব্দের অপভংশ হ তে 'পিয়ল' শব্দটি উৎপল্ল হটয়াছে। ৬। 'মুছে' প-র-সা। ৭। 'শিথান' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পৃথির পাঠ ষ্ণা---'বালিস উপরে মাথাটি পুইয়া'। ৮। 'রাথিয়া' ইত্যাদি স্থলে 'ভুতল আমার কাছে' প-র-দা। ১। 'সমুধ' প্-র-সা। ১০। 'বন্ধুয়া' ইত্যাদি স্থলে 'আমারে नहें ल (कांटन' प-त्र-मा। >)। '6त्रम प्रमाति' ছলে 'পদারি চরণ' ক, ধ, প-র সং। 😜 । 'জাগিতে' প্-র-সা। ১৩। এ স্থলে প-র-সা পুথিতে 'ঞ্চ' 'পক্ষেরে' চিক্ত আছে। ১৪: 'চক্ষেতে' প-র। ১৬। 'দেমত' প-র। ১৭। 'ষ্তুনাথ' পর। পদরত্বাকর গ্রন্থের সঙ্করিভা ক্মলাকান্ত এই প্রেসিদ্ধ পদটি বছনাথ দাসের রচিত ৰ্লিয়া বিশেষ-ক্লপে জানিয়া শুনিয়াই ভণিতার তাঁহার

নাম দিয়াছেন কিংবা অসত্ত লিপিকর কর্তৃক ভূলে যত্নাপের নাম লিখিত হইয়াছে, তাহা বুঝা যায় না।
আমরা প্রাচানতর পুলিগুলির প্রমাণ রুসারে ইছা
চণ্ডীদাদের রচিত বলিয়াই বিবেচনা করি। ১৮।
'আর কি' স্বলে 'তবে কি' প-র। ১৯। 'কপোত
পাখীরে' ইত্যাদি গংক্তি চারিটির পরিবর্তে প-র-সা
প্রিতে নিম্লিখিত পাঠ দৃষ্ট ১য়; যথা,——

> "চণ্ডীদাসে বোলে শুন বিনোদিনি ভোৱে কি ব্যিব আর । মূজি অভাগিনী জনম-ছথিনী পুন কি দেখিব আর ।"

धानभी ।ऽ

বন্ধুর সঙ্গেতে আজু যাই**তে নারিলু**ঁ গো পাপ নন দুনী হেল বাধা। **চুখে**তেং হাপন ঘবে শুভিয়া রহিলুঁ গো িহি পূবাইল মন-সাধা॥ সজনি সেও স্থথ কি কহিব অনেক। পিয়া তাসি যেন মোরে নিকুঞ্জ-কানন ঘরে স্ব**প**নে হইল⁶ পরতেক॥ বুকে বুকে মুখে মুখে নিবিড় **মদন-** হ**ং** কত না আরতি সে না কথা। ননদী-জনিত তুখ জাগরণে যত ছিল घूमाहेल राम मव (वर्षा ॥ কত না যতন করি বেশ বনাইলঙ গো এ রাস-বিলাস কৈল কত। এক মুখে ভোহে হাম তাহা কি কহিব গো রভস কোতুক যত ধত॥ হেন কালে নিঁদ টুটি জাগিয়া বসিলুঁ দ গো श्रुपन नातिलूँ वृत्रिवादत्र। সেই ছইতে প্রাণ মোব আনছান করে গো বিন্দু পরবোধে বারে বারে ॥৩৪॥৬৯৭॥ ইত্যাদি স্বপ্ন-রসোদগার:।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ছ্থিতে' ঘ, চ। ৩। 'গো' ক। ৪।
'হইফু'ক। ৫। 'গেল সব বেথা' ছুলে 'গেলি
সব বেথা' থ, প-র-সা। ৬। 'বনাইলু' থ।
৭। সকলগুলি পুথিতেই 'রাস-বিলাস' পাঠ
আছে।৮।'বসিলাম' প-র-সা। ৯। 'আনচান'ক।

পুন*চ দিনাতে প্রকারান্তরং যথা সখ্যাক্তিঃ।

তথা রাগ।১

হেদে লো ভোমাবে ভাল না দেখিয়ে আজি। কালা-মাণিকের বাভাসে এং বুঝি मिक्किल (भाकूल-व्राक्ति॥ क्ष॰॥ ভাবে ভরল সকল অঙ্গ মুখে ত না সরে । আবেশে অবশ অধির চরণ **४३८१ ना या**ग्र शा তর তর রাঙ্গা¢ নয়ন-যুগল সঘনে নিশ্বাগ ছাড়োও। পীন পয়োধর বসনে ঝাঁপিয়া অঞ্চ সদা কেনে মোড়োদ। পুছিলে মনের মরম না কহ মাথা ভুলি নাহি চাও। যতুনাথ কছে এ দোষ বড়ই সজের সঙ্গী ভাঁড়াও ১٠ ॥ ৩৫ ॥৬৯৮॥

পাঠাস্তর

 ১। ই৹াপ-র-সাপৃথির ১১৭২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'সে'ক। ৩। ক,খ,চ পৃথিতে 'ঞ্চ' নাই।
 ৪। 'মুখে ত না সরে' স্থলে 'মুখে না নিশ্বরে' প-র-সা। ৫। 'রাতা' প-র-সা। ৩। 'ছাড়া'ক। ৭। 'বসনে ঝাঁপিয়া' ছলে 'ঝাপিয়া ঝাপহ' প-র-সা। ৮। 'মোড়' ক। ৯। 'পহিলে' প-র-সা। ১০। 'ভাড়াও' ক, ঝ, ঘ, প-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

শুন শুন আবে সথি আজুক রক্ষ।
রজনি গোঙায়লুং স্থপুরুখ সক্ষ॥
মদন-মনোহর স্থান্দর বেশ।
মন্দিরে মোর কয়ল পরবেশ॥
পাণি পাণি গহি বসাওল পাশ।
শশি কুমুদিনি জমু উপজল হাস॥
কাঁচুলি ফাঁড়িং কুচ-কুস্ত বিদার।
নিবি-বন্ধ ফুগইতে টুটল হার।
করে কর জোরি আলিক্ষন দেল।
হৃদ্যক দারিদ তৈথনে গেল॥৩৬॥৬১৯॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাগুথির ১১৭৩ সংখ্যক পদ। ২। 'গোভায়ণ' ক, প-র-সা। ৩। 'ফারি' ₹,চ।

ভণা রাগ।১

যব কাতু আওল মন্দির মাঝে।
আঁচরে বদন ঝাঁপায়লুং লাজে॥
করে কর বারি ফুয়ল চিরু মোর।
পিয়া বড় চিঠ কর রাখল আগোর ॥
কি কহব রে গখি কাতুক নেহা ।।
ও হথে মুগধ মুগধ মঝু দেহা ॥
ছল।
প্রেম পরশ-রস করল অপার।
কত পরথাপল পিরিতি-প্সার॥
চূপনে চূয়ল অধ্রক দাগ।
কি কহব সে সব সময় সোহাগ।

নিবিড়-মালিগনে বিগলিত স্বেদ। লুবধ মনোভব নহ° পরিচেছদ': উপজল• আরতি কহন না যায়। জ্ঞানদাস কহ সাম কে>• পায়॥৩৭॥৭০০॥

পাঠাস্তর

১। ইঠা প-র-সা পুথির ১১৭৪ সংখ্যক পদ।

হ: 'ঝাপাড়লু' ক, খ; 'ঝাপায়ল' প-র-সা। ৩।
'চীর' ক। ৪: 'ঢাট' খ, চ, প-র-সা; 'টীট' ক।

৫। 'লেহা' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'চুম্বল' ক,
প-র-সা। ৭। 'নহো' প-র সা। ৮। 'পরিছেদ'
খ। ১। 'উপজিল' ক, চ, প-র সা। ১০। 'সীম
কো' চ; সিমক' প-র-সা।

वैद्रोध ।)

কণাই খেরি লোচন তিরপিত ভেল।
গুণ শুনি শ্রবণ সফল ৈ গেল॥
মনক মনোরথ মনমথ দেল।
চ দন-চাঁদেও চীত হবি নেলও॥
এ স্থি এ স্থি আজুক রজ।
শুধই স্থায় সিঁচিতেও ভেল অজ্ঞ॥
আরতি গুরুয়া পিরিতি নহ থোরও।
লাধ মুখে কহিতে না পাইয়েও ওর॥
পরশে অবন তনু বেশ নির্মাস্পার্থ।
ঘামল সব তনু উপজল কম্পা॥
সরস সম্ভাষণ হাস গাবপাটা।
গোধুল অধ্রে অধ্রে লেইও বাঁটি॥
করে কত ভাতি কয়ল কত রজ।
ভ্রান চহে তুর্ত-তনু আধ-আব অক্স॥

1100119071

১। হকাগ-র-বাপুথির ১১৭৫ সংখ্যক প্রদা ২। কুপ'ক, খ, ৮, প-র-সা। 'কুপ' পাঠে

পাঠান্তর

ছন্দোভল ঘটে; স্তরাং ঘ পুথির 'রুপ' পাঠই সমীচীন। ছন্দের অস্বোধে দীর্ঘ অরের পরিবর্জে লঘু অরের পরেবর্জে লঘু অরের পরেবর্জে লঘু অরের প্রোগ পদাবলি-দাহিত্যে অনেক দেখা যায়। বা 'চন্দনে চাক্ষে' ঘ; 'চন্দন চন্দ' চ। ৪। 'চৌত হরি নেল' স্থলে 'চিত রহি গেল' ক, চ, প-র-সা। বা 'স্থায়ে সিচত' ঘ; 'স্থায়ে সিচত' ঘ; 'স্থায় সচিত' প-র-সা। ৬। 'ঘোর' প-র-সা। ৭। 'পারিয়ে' ক, চ; 'পায়ল' প-র-সা। ৮। 'নিরুবল্প' ক। ৯। 'স্ভায়ে' ঘ; 'সভায় নহে' প-র-সা। ১০। 'লই' ক, চ।

বধা রাগ ৷১

পহিলহি পিরিতি নাহি পরকাশ।
দোতি শুভারল উনহিক পাশ ॥
ননদিনি নিঁদহি আপন ঘরে ভোর।
তৈথনে লেই গেও রসবতি চোর॥
কি কহব রে সথি কেলি-বিলাস।
মদনমণিমন্দিরে করলু নিবাস॥
পহিলহি নিবিড় আলিঙ্গন দেল।
ছহুঁ তমু পুলকিত দিগুণ ছৈ গেল॥
প্রেম করল কত বিদগধ-রাজ।
দেশনে দশনে ছহুঁ ঘন ঘন বাজ॥
ছহুঁ তমু লাগল ভালহি ভাল।
চন্দনে লাগল সিন্দুর-জাল॥
বেশ বসন ছহুঁ আনহি ভেল।
ভ্তানদাস কহু পুন কিয়ে কেলং॥

1150911601

পাঠাশুর

১। এই পদটি ব পুথি ছাড়া মঞ্চান্ত পুৰিতে
নাই; অক্সান্ত পুথিতে 'সক্তনি কি কহব রাইক সোহাঙ্গি' ইত্যাদি ৭১৬ সংখ্যক পদের পরে প্রক:-রাস্তর রগোলগাবের গৌরচন্দ্র স্বরূপ যে—'আরে মোর গৌর কিশোর। ইত্যাদি' লিখিত হইরাছে, উহাকেই একটি পদ গণনা করিয়া ষষ্ঠ পল্লবের পদ-সংখ্যা পুরণ করিয়াছেন। স্ব পুথির উদ্ধৃত এই পদটি পদকলতক্ষ-গ্রন্থের অন্ত কোনও স্থলে দৃষ্ট হয় না; কিন্তু 'আবে মোর গৌরকিলোর' পদটি ংয় শাধার ১৬শ পল্লবের প্রথমে সকল পুথিতেই উদ্ধৃত হইয়াছে; উহা ছাড়িয়া দিলে ১৬শ পল্লবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যার পূরণ হয় না; এরপ অবস্থায় পূর্বোক্ত 'আরে মোর' ইত্যাদি পংক্ষিটিকে একটি স্বতন্ত্র পদ ধরিয়া ষষ্ঠ পল্লবের পদসংখ্যা পুরণ না করিয়া 'পহিলহি পিরিতি' ইত্যাদি অভিনৰ পদ বারা ষষ্ঠ পলবের সংখ্যা পুরণ করাই সঙ্গত ও বৈষ্ণবদানের অভিপ্রেত বলিয়া বোধ হয়। 'আরে মোর গৌর কিশোর' ইত্যাদি পদটি ৬ গ্র পল্লবে সম্পূর্ণ উদ্ধৃত না হইয়া, ১৬শ পল্লবে উহা সম্পূৰ্ণ উদ্ভ হওয়াও আমাদিগের উক্ত অন্নমানের পোষকতা করিতেছে। ২। ঘপুথিতে 'কেন' হলে 'ভেল' পঠি আছে; উহাতে হীন-মিশন দোষ ঘটে বলিয়া অস্ত একখানা প্রাচান হস্তাল্থিত পুথির 'কেল' পাঠই সমাচীন বলিয়া গ্ৰহণ করা হইয়াছে।

টীকা

৩—৪। "ননদিনি" ইত্যাদি। ননদী নিজের

বরে নিজায় ভোর ছিল, দেই সময়ে রদিকা (দূতী)

চোর অর্থাৎ প্রাক্তর-কামৃক শ্রীক্লফকে (আমার

শ্যায়) কইয়া গেল।

৯—: •। "প্রেম" ইত্যাদি। রসিক-শিরোমণি
(শ্রীক্বফ) কত (প্রকারে) প্রেম-কেলি করিলেন!
(দংশনের প্রতিদ্দিতার) উভরের দক্তে দক্তে খন
ঘন বাজিতে লাগিল অর্থাৎ এক জনের দক্তের সহিত
অক্ত জনের দক্তের সংঘর্ষণে শক্ষ উৎপন্ন হইতে
লাগিল। তুলনা করুন,—

"তামরিতরোংপি জিহ্বরাকা দশনান্ বট্টরেৎ তালু জিহ্বাং চেতি জিহ্বাবৃত্তম্।"

"এতেন বলাবদনগ্ৰদ্ণগ্ৰহণং দানং চ ব্যাথ্যাভষ্।" — বাৎস্তায়ন-ক্ষত কামস্ত্ৰ।

রসোদগারামুরাগঃ। প্রকারান্তরং। ভত্র গৌরচন্দ্রঃ।

यहरे ।)

কহ না উপায় সপি কহ না উপায়।
নিরবধি হৃদেয়ে জাগয়ে গোরা রায় ॥
পাসরা না যায় গোরাচাঁদের পিরিভি।
কি করিব বিধি সে করিল কুলবজী॥
কিবা সে মধুর বাণী অমিয়ার ধারা।
কিবা সে মোহন করপ সভী-মন-চোরা ॥
যতু কহে কি কহিব গোরা-গুণ যত।
বিকাইলুঁ গোরা-প্রেমে এ জনমের মত॥

18011081

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১১৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কহিব' খ: ৩। 'মধুর' প-র সা। ৪। 'বিকাইলাম' প-র-সা।

সখ্যুক্তিঃ।

शंबनी ।>

ঘন রসময় তমু অন্তর গহীন ।
নিমগণ কডছ রমণি-মন-মীন ॥
শ্রাবণে মকর গিমেণ কম্মু বিরাজ ।
হিয় মাহা লখিমি মিলিত মণি-রাজণ ॥
এ সখি শ্যাম-সিক্ষু করি চোরণ ।
কৈছে ধয়লি কুচ-কনয়-কটোরণ ॥
য়ৢ মুখ চাঁদ স্থাময় হাস ।
গরলহি ভরল নয়ন-পরকাশ ॥
অধর পঙার দলন মণিমোতি ।
রোচন-তিলক মৈনাকক জোতি ॥

স্থবতরু-কৃষ্ম-স্থান্ধ নিবাস্ট্য।
চূড়া জলদ পিঞ্চ ধমু-ভাস ॥
গতি গজরাজ চরণ অরবিন্দ।
নখমণি-নীছনিট্গ দাস গোবিন্দ ॥৪১॥৭০৪॥

পাঠান্তব

১! ইহাপর-সাপুথির ১১ 19 সংখ্যক ও প-র
পূথির ১ 19 সংখ্যক পদ। 'ধানশী' ছলে 'সুহই'
প-র। ২। 'গহিন' ঘ! ৩। 'শ্রবন' ক, খ,
চ প-র-সা, প-র। ৪: 'গীম' ক, খ, চ, প-রসা; 'গিম' প-র। ৫। 'ফ্লিরাফ্র' ক। শ্রবনে
ম গর' ইত্যাদি কলিটির পরিবর্ত্তে সা-প ১৮৪ সংখ্যক
পূথির পঠি বথা,—

শিকর হিলোপন শ্রবণক সীম।

হিয় মাহা লখিমি ক স্বর সীম॥'

৬। প-র ও সা-প ২০১ সংখ্যক পুথিতে 'এ
সখি' ইত্যাদি পংক্তি হর এই পদের প্রথমে স্লিবেলিও

ইইয়াছে । १। 'ধ্রল' খ। ১। 'কুচ-কন্মকট্যের' স্থলে 'কুচ কয়ল কঠোর' প-র-সা। ১।
'গরলছ' ব, চ। ১০। 'পৌঙার' খ; 'পোয়ার'
সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ১১। 'বিলাস' প-র।

২২। 'নিছনি' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র।

টাকা

১—১৪। সধী রসিকতা করিরা শ্রীরাধাকে বলিতেছেন—"ঘন-রসমর তন্ন" ইত্যাদি। বোধ-সৌকর্ব্যার্থে আগে "এ স্থি" ইত্যাদি ধ্ব কলিটির ব্যাধ্যা করা বাইতেছে,—হে স্থি। তুমি শ্রামান্ত্রিক (এক অর্থে শ্রামানরূপ সিন্ধুকে; অপর অর্থে শ্রামানরূপ সিন্ধুকে; অপর অর্থে শ্রামানতা, ছবিগান্ততা প্রভৃতি শুণ হেতু সিন্ধু তুল্য শ্রীকৃষ্ণকে) চুরি করিরা কি প্রকারে (ভোমার) ক্চ-রূপ ঘর্ণ-কটোরার ধারণ করিলে? (শ্রীরাধা বে অন্থান্ত ব্রমানাদিগের প্রভাব হইতে শ্রীকৃষ্ণকে সম্পূর্ণ বিচ্ছির করিগা, তাঁহাকে নিজের হৃদর-সংলগ্ন করিরা রাথিরাছেন,—উহাই অভিশরোক্তি-অলঙ্গারের সাহাধ্যে সধী সোণার কটোরার সম্প্রকে ভরিরা

রাথা বলিয়া বণিত করায়—এ ছলে অতিশয়োক্তি-মূণক বিষম অলঙ্কার ২ইয়াছে। তুলনা কক্ষন,—

"বিপুলেন সাগরশয়তা কৃক্ষিণা ভ্ৰনানি বতা পপিরে যুগক্ষে। মদবিভ্ৰমাসকলয়া পপে পুন: স পুরস্টিরকতমটেরকয়া দৃশা॥"

— মাৰ, সাহিত্যদৰ্পণ-ধৃত।

ক্ৰিপ্তৰিতে মালা-ক্লপক অলকারের সাহাষ্যে সধী ঐীক্বফের সমুদ্রস্বরূপতা প্রমাণিত क्तिर्ভर्ष्टन । "चन-त्रमम्भ" हेल्यामि । 🖺 क्रस्थित स्मृह খন-রদময় (ফ্রম্ঞ-পক্ষে —খনাভূত রদের হারা গঠিত অর্থাৎ আনন্দময়-বিগ্রহ ; সমুদ্র-পক্ষে —মেঘ-জাত জলের ঘারা পরিপূর্ণ); (তাঁহার) অন্তর (ক্লুঞ-পক্ষে—-হৃদয়; সমুদ্র-পক্ষে -- গর্ভ) গহান (ক্রফ্ক-পক্ষে---গভার অর্থাৎ ছবি গাফ; সমুদ্র-পক্ষে—গভার অর্থাৎ অগাধ); (উহাতে) কতই নারী-ছদয়-রূপ মৎস্ত নিমগ্ন হইয়া রহিয়াছে। (কোমল, স্লিগ্ন ও বুক ফাটেত মুধ ফোটে না' প্ৰবাদ হেতু ৰাক্য-শুক্ত বলিয়া নারীর চিত্ত-বৃত্তিগুলির সম্বন্ধে মৎশু-কলনা সমীচীন হইয়াছে)। ''শ্রবণে মকর" ইত্যাদি। (ममूर्फ (रमन, मिहेक्र) औक्रस्थत कर्ण व्यर्शर কর্ণের কুণ্ডলে মকর, গ্রাবার শব্দ অর্থাৎ শব্দের ন্তার বেধাতার ও হাদয়ে লক্ষার সহিত সংযুক্ত মণিশ্রেট (কৌস্তভ) বিরাশ করিতেছে। "বছু" ইত্যাদি। (বাঁহার) মুধ চন্দ্র ও হাজ কুধানর অর্থাৎ অনুত-অব্বপ (তাদাআয়ে "শষ্ট্" প্রভাষ) এবং (বাঁহার) নম্বনের প্রকাশ অর্থাৎ দীপ্তি গরল ধারা পরিপূর্ব। "অধর" ইত্যাদি। (বাঁহার) অধর প্রবাল, দম্ভ মুক্তা-মাণ এবং গোরোচনা-তিলক (সমুদ্রগর্ভ-স্থিত) মৈনাকের কাঞ্ডিবশিষ্ট। "স্থরতরু" ইত্যাদি। (বাঁহার) বাস-স্থণ (ঐ-অন্সের সৌরভে) পারিকাত কুল্মের অপন্ধিশিঙ; (বাঁহার) চূড়ারূপে এছিভ কেশ-রাজি জলধর ও (উহার) ময়ুর-পুছে (ইজ-) ৰন্থকের কান্তিযুক্ত। "গতি" ইত্যাদি। (বাহার) ঐরাবত-পতি-ভুল্য, চরণ ক্ষণশ্বরূপ,---

গোবিন্দদান সেই শ্রীক্তকের নথ-মণির নিছনি হইতেতিন। (লন্ধী, মণিশ্রেষ্ঠ কৌন্তভ, চন্দ্র, অমৃত, বিব, ঐরাবত ও পারিজাত তরু সমৃত্র-মন্থনে উত্ত ও বৈনাক পর্বত ইল্রের ভরে সমৃত্রের গর্ভে বিলীন বলিয়া পৌরাণিক আধ্যায়িকা আছে।)

ঙ্গা রাগ।১

কৃটিল কটাখ-বিশিখ ঘন বরিখনে

ত্র করুং বিবিধ তরঙ্গ।

নিজ তমু ঔষধি সরস পরশ-দধিলেশে পাকিত ককুও অক্স॥

মুন্দরিঃ পীতাম্বরি তুত্ঁ ভেলিং।

একলিও হিলোলিং শ্যাম-রস-সায়রুদ্দরকুঁ সার হরি লেলিং॥ ধ্রং॥

হর-অবগাহং অন্তর মাহা মন্তরং

মদন-কমঠ অবগাহিংই।

উচ-কুচ-মন্দর হার-ভুজগ-বর

মেলি মথন নিরবাহিংও॥

অধর মুধা পিয়-প্রেম লছমি হিয়্যুঞ্চ

বাহিরে নখ পদ চন্দ।
প্রতি-তমু ভাবং রতন পরিপুরলংও

গোবিন্দদাস রত্ত ধন্দ॥৪২॥৭০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৭৮ ও প-র পুথির ১৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ছর করু' খলে 'দুরে করি' ক, প-র-সা; 'ছর কর' খ, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, খ, খ, চ, প-র-সা; 'এ খনি' প-র; সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুথির 'অন্দরি' অথবা প-র পুথির 'এ খনি' পাঠই সমীচীন; 'অন্দরি খনি' পাঠে ছন্দোভদ্দ ঘটে। ৫। 'ভেলি' (সা-প ২০১, ১৮৪ সংখ্যক পুথি) ছলে 'ভেল' ক, খ, খ,

ह, श्राप्त-मा, भन्त्र। ७। 'এकनि' (मा-भ २०) সংখ্যক পুথি) স্থলে 'এক' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। १। 'হিলোলি' (সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি) ন্তল 'হিলোলে' ক. থ ইত্যাদি পুথি। ৮। 'নায়রে' क : 'সাগরে' थ । । 'लिनि' (সা-প २०১।১৮৪ সংখ্যক পুথি) স্থলে 'লেল' ক, খ ইত্যাদি পুথি। ১০। 'ছর অবগাহি' প-র। ১১। 'মহামন্তর' ধ; 'মাহা মন্থন' সা প ১৮৪ সংখ্যক পুলি। ১২। 'অবগাহ' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১৩। 'নিরবাহ' ক, ধ ইত্যাদি পূথি। ১৪। 'লখিমি হিয়' সা-প ২ • ১ সংখ্যক পুথি: 'লখিমা হয়' পর। ১৫। 'প্রতিতমু ভাব' স্থলে 'প্রীতি অমুভাব' ক: 'প্রতি **অঙ্গ ভাব'** প-র, সা-প ২•১৷১৮৪ সংখ্যক পুথি। ১৬। 'পরিপুরিত' প-র, সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি; 'মৰি পুরল' দা-প ২০১ সংখ্যক পুৰি। টীকা

>--> १ श्रीकारण (मन ও अञ्चर्राण পরস্পর বিবাদ হেতু সমুদ্র-মন্থনে অক্ততকার্য্য হইলে, শ্রীকৃষ্ণ কৈটভী অর্থাৎ মোহিনীর ক্লপ ধারণ করিয়া श्रकोन्एन (महे कार्यात्र निर्काह करत्रन। এ श्रूरन শীরাধা বিপরীত সম্ভোগান্তে ভ্রম ও ব্যস্তভাবশত: 💐 রুষ্টের পীত বাদ পরিধান করিয়া স্থীদিগের নিকট উপস্থিত হুইলে কোনও স্থী রসিক্তা ক্রিয়া পীতাম্বরধারিণী শ্রীরাধাকে পুরাণোক্ত মোহিনীরূপে প্রতিপাদিত করিয়া তৎকর্ত্তক ক্লফ্র-রস্-সাগরের মন্থ্র-লীলা বৰিত করিয়াছেন। বোধ-সৌকর্য্যের জন্ত আগে 'স্বন্ধরি' ইত্যাদি প্রব-কলিটির ব্যাথ্যা করা ^{যাইতেছে। হে ফুক্সরি}! ভূমি পীতাম্বরী (এক অর্থে—পীতবসন-ধারিণী ; অন্ত অর্থে—শ্রীকৃষ্ণ মিশিনী) হইরাছ! (ভাই) ভূমি একাকিনী হইলেও শ্রাম-রস-সাগর (এক অর্থে--শ্রীকৃষ্ণের প্রেমরূপ শাগর; অম্ব অর্থে—শ্রামল-জলপূর্ণ সমুদ্র) আন্দোলিত ক্রিয়া (উহার) সকল সার পদার্থ হরণ ক্রিয়া ^{লইশ্বাছ।} (শ্রীরাধা কি প্রকারে সমুদ্র-মন্থন করিলেন, উহি দেখাইবার কম বলিতেছেন—"কুটিল"

ইতাদি। এক্রিয় পূর্ব অবভারে সেতু বন্ধনকালে তীক্ষ বাণ-বর্ধণে সাগরের তরঙ্গ নিবারিত ও সাগরকে নিশল করিয়াছিলেন) ভূমিও ঘন ঘন কুটিল কটাক্ষ-রূপ বাণ বর্ষণ হারা (খ্রাম-রদ-দাগরের) নানা প্রকার তরক্ষ অর্থাৎ চাঞ্চল্য বিদ্রিত করিয়াছ এবং তোমার নিজ দেহরূপ মহৌষ্ধির রুস্যক্ত স্পর্শ-রূপ দধি-বিষ্ণু ধারা (উহাব) দেহ স্থগিত করিয়াছ। (হথ্যকে স্তম্ভিত করার পক্ষে দ্ধিবিন্দুই মহৌষ্ধি বটে; শ্রীকৃষ্ণ ক্ষীরোদগর্ভে বাদ-কালে নিশ্চিতই দ্ধিবিন্দু-রূপ তাঁহার অঞ্জ-স্পর্শের মাহাত্মো ক্ষীরোদ-সাগরের জল স্তম্ভিত করিখাছিলেন ; শ্রীগাধাও তাঁহাৰ অঙ্গ স্পৰ্শ হুখের আহি শ্বা ছারা শ্রাম-রুদ-সাগরের নিশ্চলতা সম্পাদন করার তাঁহার ক্লফক্লপতা থম'ণিও হইতেছে)। 'গুর-অবগাহ" ইত্যাদি। (খ্রাম-রদ সাগরের) তুরবগাঙ (ক্লয়-পক্ষে---ছর্কোধ্য; সাগর-পক্ষে-- ছুর্গম) অন্তরের মধ্যে (ক্লম্বঃ-भटक - क्वरबंद भट्धा; माशद भटक -- शट्ड ब्राह्म) স্থির-গতি অর্থাৎ অবিচলিত মদন রূপ কৃর্মা অবগাহন করিয়াছে; (উহা 'ভোমার কুচ-রূপ মন্দর পর্বত ও হার-রূপ সর্প-রাজ অনপ্রের স্হিত মিলিত হুইয়া মন্ত্র-কার্য্য নির্বাহ করিয়তে: "অধর" ইত্যাদি। তোমার অধর (সমুদ্র-মন্তনোজ্বত) এধা ; প্রিয়তমের প্রেমই ভোমার জার-ছিত (সমুদ্র মন্থনোজুত) লক্ষী; (হৃদরের) বাহিরে (প্রিয়তমের প্রাদন্ত) নথ-চিক্ট (সমুদ-মন্ধনোডুত) চক্ত; তোমার প্রতিঅঙ্গ (সমুদ-মন্থনোডুত রন্ধ-রাজিম্বরূপ) পুলক, কম্প প্রভৃতি ভাব-রূপ রত্বাবলি পরিপূর্ণ করিয়াছে; (प्रश्नी-श्वानीय) (शांविन्ममाप्त (এই অপুর্বে नौगा-पर्नात) खक इदेश द्रहित्नन ।

রাধানোহন ঠাকুর এই পদটির এই সংক্ষিপ্ত ব্যাথ্যা লিখিরাছেন,—"কুটিল কটাথ ইত্যাদিনা জ্বন্ধ-রসোদ্বাটনার্থং পৃজ্জতি। পূর্বং বন্ধব্যত্যরং শ্বরন্ত্তী হে পীতাদ্ধি ইত্যাক্তঃ। পক্ষে নারান্ধ-ক্ষপাসি। কুটিল কটাথ ইত্যক্ত নিবিড় শ্রবর্থেণ তর্জন্তীকরণং প্রাণাত্তরলিধিতকর্তেদক্ততেন সাম্যন্। তথা নিজ তমু ইত্যান্তপি পুরাণান্তরমতং। অস্তর মাহা অস্তরমধ্যে মছরঃ অভিস্থিতঃ মন্দরৈরচাল্যঃ মদন এব কমঠঃ।"

বিভাৰ ৷ ১

যো গিরি-গোচর বিপিনহিং সঞ্চর ক্লা-কটি কর অবগাহ।
চন্দ্রক চারু শটাঃ-গরিমাণ্ডত
অরুণ-কুটিল দিঠি চাহ॥
সুদ্রর ভালে ভুকুঁ হরিণি-নয়ানি ।
সো চঞ্চল হরি হিয়া-পিঞ্জর ভরি
কৈছনে ধয়লি সেয়ানি ॥ এ ১ ৩॥
কত বর-দন্তি ১ করহি কর বারত ১ ২
দশনহি গণ্ড ১ বিদারি।
বল কয়ে ১ অরুহর নথর-শিথর ১ সত্তে ১ ৬
মোতিম বনহি বিধারি॥
অধর-স্থা দেই পুনহি জিয়ায়ই ১ ৭
পুন নিরমদ করি তেজ।
গোবিন্দদাস ভণ ভাক শয়ন ২৮ পুন
অহনিশি কিশলয় শেক্ত ॥৪০॥৭০ ৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১১৭৯ ও প-র পুথির ১০০৯ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' স্থলে 'ইরাগ' পর।
২। 'বিপিনছ' প-র-সা। ৩। 'সঞ্চর' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ৪। 'কর্রু' ক। ৫। 'শটা'
(স:-প ১৮০ সংখ্যক পুথি) স্থলে 'শঠা' ক, খ প্রভৃতি
পুথি। ৬। 'বিঠে' প-র-সা। ৭। 'হরিণ নয়ানী'
সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'হরিণ নয়ানি' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'হরিণ নয়ানি' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'বরিণ নয়ানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ৮। 'পঞ্লর' প-র-সা, প-র। ৯।
'সয়ানী' সা-প ১৮০ সংখ্যক পুথি; 'বরানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পুথি। ১০। ক, খ, চ পুথিতে 'ঞ' চিক্
নাই। ১১। 'দন্তী' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১২।

'বারই' সা-প ১৮ গ্রং ১ সং পুথি। ১৩। 'ধ্রু' প-র-সা। ১৪। 'বল করে' ফ্লে 'বল করে' প-র; 'বল কএ' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১৫। 'নিকর' ক; 'সিথর' প-র। ১৬। 'ধরি' সা-প ১৮ গ্রং ১৭। 'জিয়ারত' প-র-মা। ১৮। 'স্থন' সা-প্রত সং পুথি।

টীকা

১-- १। "যো গিরি-গোচর-" ইত্যাদি। (স্থী পুনরায় প্রীরাধাকে রসিকতার সহিত বলিতেছেন) ক্লশ-কটি-নিশিষ্ট যে (প্রাণী) পর্বত, গোচারণ-ভূমি ও কাননে (শিকার আমুসন্ধান করিয়া সঞ্জ करत. - ह ज क हांक (कुछ-शत्क - ह क क बांता हांक : সিংহ পক্ষে—চক্তকের স্থাধ চাক ; চক্তক --ময়ুরপুচ্ছের চন্দ্রাকৃতি চিহ্ন) শটা দারা (কৃষ্ণ-পক্ষে--কৃষ্ণিং কেশ ছারা, সিংহ পক্ষে--কেসর ছারা) শোভিট (ষে) আর্ত্তিম বক্র দৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করে,—য স্থলরি ! ভূমি (অপুর্বা) হরিণ-নয়ন: (এক মধে মুগ-নয়না; অন্ত অর্থে হরিণী ; বটে; (নভুবা) স্থ্রতভুৱা ভূমি সেই চঞ্চ হরিকে (এক স্বর্থে-ক্বফাকে; অপর অর্থে—সিংহকে) কি প্রকারে क्षप्र-शिक्षदत व्यावद कतिका दाशित ? ध श्रम 'रा গিরি-গোচর' ইত্যাদি বিশেষণ বাক্যের অর্থ ঘার শ্রীকৃষ্ণ ও সিংহ উভয়েরই প্রতীতি হওয়ায় পর্থ-सिय এवर अव-कनिएड 'श्रिनि-मन्नानि' **७** 'स्ति'-শ্লিষ্ট শব্দব্যের প্রয়োগ ছারা শব্দ-শ্লেষ ও সেই উভয়বিধ শ্লেষ অলম্বারের মারা অমুপ্রাণিত বিষণ व्यवकात चित्राह्म । 🤾

৮—>> । "কত বরদক্তি" ইত্যাদি। কড বরদক্তী : ক্রফ পক্ষে—হদ্দানা নারিকা ; সিংহ-পক্ষে—শ্রেষ্ঠ গজ্ঞ) কর দারা (কুফ-পক্ষে—হল্ত দারা ; সিংহ-পক্ষে শুপু দারা) হল্ত নিবারিত করিলেও (সেই নিবারণ ভূচ্ছ করিয়া) দল্ভ দারা (বরদ্ধীর) গপু বিদারণ করিয়াছে এবং বলপূর্ণক তীক্ষ নথাগ্র হইতে মুক্তা-রাজি বন-ভূমিতে বিকীপ করিয়াছে। (কৃষ্ণ-পক্ষে শ্রদশনা নারিকার ছিল-

মাণার মুক্তারাজি এবং সিংছ-পক্ষে গজের বিদারিত কুম্ব হইতে পতিত মুক্তারাজি বুর্নিতে হইবে)।

১২---১৫। "অধ্য-মুধা" ইতাদি। হরি—শ্রীক্লফ ও সিংহ—ভোমার নিকট পরাক্ষিত হইয়া নিমীলিত-নেত্র ও অচেতন হইয়াছিল; কিন্তু (তোমার অপূর্ব মহিমা) ভূমি সেই মৃত-প্রায় হরিকে অধরামৃত-দানে পুনবার সঞ্জীবিত করিয়া, (তাহাকে প্রতিহিংদা-প্রবণ দেখিয়া, তাহার উপযুক্ত শান্তি স্বৰূপ) তাহাকে পুনরায় (সম্পূর্ণ) নিস্তেজ করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছ! (স্থা-স্থানীয়) গোবিন্দদাস বলিতেছেন—(সেই জ্বন্তই) সেই হরির এখন দিবারাত্র **शहर-मर्गा इर्डेभारह! (श्रीइन्छ पिरांश्राज स्नीउन** প্রৰ-শন্ত্র শ্রান হট্রা বিরহ-জ্বনিত অঙ্গ-ভাপের শাস্তি করেন এবং রণ-ক্লিষ্ট সিংহ স্থকোমল পল্লব-**मग्रत्न मग्रान रहेग्रा त्रण-क्रांखि निवांश्य करत्र--** डे छग्र पर्वरे वाश्विष्ठ हहेरछहि ।।

নিছোক্তিঃ।

কৌ রাগিণা।১

বেপুক ফুকেং বুকেও মদনানল कूल-रेक्षन माश काति। দরশা পাণি ছুহু পরশে সোহাগলা **टाम-जम (कार्राभ वार्रि ॥** সঙ্গনী কামু সে ছৈল সোণার । মকু মন-কাঞ্চন আপন প্রেম-মণি Cकांति शिकायम शत ॥ थ ॥ নব অমুরাগ-রক্তে পুন রঞ্জল मूल ना कानहें (≉ारे। গুরুজন-নয়ন-চৌর পয়ে ছাপিয়েদ প্ৰাণ লাখ সম পোই !

যো রস-আগরি বিদগধ নাগরি হেরতভূঁ তাকর সাধ। গোবিন্দদাস কহই খানে হেরিলে> জানি হোয়ে>> পরমাদ ॥৪৪॥৭০৭॥ পাঠাম্বর

১। ইছাপ র-সা পুথিব ১১৮০ ও প-ব পুথির ১৩।০ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিনী' স্থলে 'ধানত্রী' প-র। ২। 'কৃকে' (ব পুণি) খলে অক্সাত পুণিতে 'ফুকে' গাঁঠ **আছে। ৩**। 'বৃকে' . ঘ পথি) স্থ**লে** 'বৃকে' চ; 'বৃক' ক, থ, প-র-সা, প-র; 'বৃকে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ৪। 'দরশ পাণি' ইত্যাদি স্থলে দিরশন পাণি'ইত্যাদি চ ; 'শরশ গাণি' ইত্যাদি প-র সা। ে। 'সোধাগন' च; 'সোহাগছ' সা-প ১৮৪ নং পুথি। ৬। 'ক্সোরল' ক, খ, ঘ; 'ক্সোবন' প-র-সা। १। 'সঞ্জনি' ইত্যাদি পংক্তিজন্ম প-র পুথিতে সর্বাত্যে সন্নিবেশিত চইয়াছে। ৮। 'গুরু-জন-নয়ন' ইত্যাদি স্থলে 'গুরুজন-নয়ন চোর ভয়ে ছাপিন্নে' প-র; 'শুরুজন চৌর নয়ন ভয়ে ছাপিন্নে' সা-প ২০১ সং পৃথি; 'গুরুজন চৌর নয়ন পয়ে চাপিয়ে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১। 'প্রাণ লাখ' द्राण 'প्रागनाभ' क, ४, ६, १-त-मा। ১०। 'कहरे' ইত্যাদি স্থলে 'কছত আন হেরণে' সা-প ২০১ সং পুথি; 'কহ আন জন হেরিলে' প-র। ১১। 'লোরে' (সা-প ১৮৪।২০১ সং পুৰি) স্থলে 'হোয়ত'। টাকা

১—⁹। "বেণুক ফৃকে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা শ্রীক্ষাকে প্রেম-লীলাকে ধৃর্ত প্রপ্কারের মণিহার-গঠনরূপে বর্ণিত করিতেছেন) বেণুর ক্লেঞ্চ-পক্ষে — বংশীর ; অর্থকার-পক্ষে — বাঁশের চোলের) ফুৎকারে श्वनत्त्र कून-वेद्यत्नत्र (এक अर्थ---कूनक्रभ ज्ञानानि কাঠের; অপর অর্থে—পর্ণকারের কুলগাছের কাঠের) মধ্যে মদনানল প্রজালত कतिन ; मृष्टि । ६ च উ छ दित्र न्मार्न काता त्माकान-বুক (এক অর্থে—আদরবুক্ত ; অভ অর্থে—বর্ণ

গালাইবার উপাদান 'সোহাগা' নামক পদার্থ দারা সংযুক্ত) করিল; (সন্তোগ-ক্লান্তি-জনিত) দর্শক্তল সংযোগ-বারি অর্থাৎ পাইনের জ্বল (হটল)। হে স্থি! সেই শ্রীকৃষ্ণ ধূর্ম অর্থকার; সে আমার মন-রূপ স্থাকে (অপ্রত ক্রিয়া) নিজের প্রেম-রূপ মণির স্থিত সংযুক্ত ক্রিয়া আমাকে হার প্রিধান ক্রাইল।

৮—১১। 'নব' ইত্যাদি। (উছাকে) আবাব সে অফ্রাগ-রূপ বং দিয়া রঞ্জিত কবিল; (ঐ রঞ্জিত জিনিষ্ট দেখিয়া) কেগ (প্রকৃত) মূল্য বুঝিতে পারে না; (আমি আমার সেই রূপাস্তবিত) স্থান্যটিকে শুক্জনের নরন-রূপ চোবের নিক্ট (দ্রিজ্বের) শক্ষ মুধ্রি ভার গোপন করিণা লুকাইয়া রাখিতেছি।

১২-১৫। "যো" ই গ্রাদি। রদিকা যে নামিকা রস-পরিপূর্ণা, (প্রীক্লফকে) দেখিতে যেন তাহারই বাহা হয়; (ভূক্ত ভোগী) গোবিন্দদাস কহিতে ছেন—(তাঁহাকে) অত্যে দেখিলে প্রমান হইবে, ইহা বেশ স্থানিতেছি!

শ্রীগান্ধার ৷১

কাজর ভমরং তিমির রুসু তমু-রুচি
নিবসই কুঞ্জ-কুটীর।
বাঁশি-নিশাসে মধুর বিষণ উগরই
গতি অতি কুটিল স্থান ॥
সজনী কামু সে বরজ-ভুজজ।
সো মঝু হৃদয়-চন্দন-রুহে লাগল
ভাগল ধরম-বিহঙ্গ॥ এল॥
লোচন-কোণে পড়ত যব নাগরি
রহই না পারই ধীরদ।
কুন্ধিত অরুণ অধরে ধরি পীবইণ
কুলবতি-বরত-সমীর॥

এক অপরূপ নয়ন-বিষ তাকর
মেট্রে দশনক দংশে।
ও বিষ-ঔষধ বিষ অবধারল>>
গোবিন্দদাস প্রশংসে॥ ৪৫॥৭০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮১ ও প-র
পুথির ১০৭০ সংখ্যক পদ। 'শ্রীগান্ধার' হলে
'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'শ্রমর' থ, ছ, চ;
প-র। ৩। 'নিমানে' প-র-সা, প-র। ৪।
'রস' প-র। ৫। 'সজ্জনি' ক, চ, প-র-সা,
প-ব। ৬। 'ভাঙ্গল' ছ। ৭। 'পড়ল' সা-প
২০১ সং পুথি। ৮। 'গ্রির' পর; 'থির' ক,
থ, প-র সা। ১। 'পিবই' ক, পর-সা, প-র।
১০। 'মিটই' প-র-সা; 'মিটরে' প-ব। ১১। 'ও
বিষ'ইভাদি (প-র-সা প্থি) হলে 'বিষ ঔষধ
বিষ বিষ অবধারল' থ, ছ, চ। বিষ ঔষধ এক ছহঁ
অবধারন' পাঠান্তর -- চ; 'বিষ ঔষধ বিষ অবধারল'
ক, প-র।

টাকা

এ— १। "সজনী" ইত্যাদি। হে স্থি! সেই

ক্রিক্ষ্ণ ব্রজের ভূজ্প (এক অর্থে— সর্প; অপর
অর্থে— লম্পট); সে আমার হৃদয়-ক্রপ চন্দনবৃক্ষে
লগ্ন হইল; (তাহাতে) ধর্ম-ক্রপ বিহল প্লায়ন
ক্রিল। (সাজ-ক্রপক অল্কার)।

১২ -১৫। "এক অপরূপ" ইত্যাদি। (কিন্তু)
একটি আশ্চর্যা --তাহার দৃষ্টি-জানিত বিধ তাহার
দক্ষের দংশনে বিনষ্ট হয়; ঐ দৃষ্টি)-বিষের ঔষধ
(দন্তাঘাতজ্বনিত) বিধ (বিধাতা) বিধান করিয়াছেন;
গোবিন্দদাস (বিধাতার এই বিধান তথা জীরাধার
বৈদধ্যের) প্রশংসা করিতেছেন!

थाननी ।>

পহিলহি কূলং ভূল সম উয়ল°

যাকর বেপুক ফুকে।

ধরম-করম-মতি ভরম সরিখা ভেল

নারি গারি সম দূখে॥

সজনী কিয়ে হাম করব উপায়।

হেরইতে সো কামু আপনি আপন তুনু

কাহে করত অন্তরায ॥ গ্রু॥

নয়নহি নিক্ট নিক্ল নাহি হেরইণ

হানল ফুলশর বাণ।

যতদ পরমাদ কহত না পারিয়েশ

গোবিক্লদাস পরমাণ গ্রু৪৬॥৭০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পৃথির ১১৮২ ও প-র পৃথির ১৩।৭১ দংখ্যক পদ। ১। 'কুল' ক, চ, প-র-দা, প-র। ৩। 'উয়ল' ক, চ, প-র-দা, পর। ৪। 'দরিখ' (প-র পুথি) স্থলে 'দরিক' দা-প ১৮০ দং পুথি; 'দদৃশ' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-দা। ৫। 'কি' ক, চ। ৬। 'আপনা' ক, চ। ৭। 'নয়নহি' ইড্যাদি স্থলে 'নয়নহি নিন্দ উ নয়নে না হেরই' ক। ৮। 'কড' প-র। ১। 'পারহ' প-র-দা, প-র। ১০। 'ভালে জান' দা-প ১৮০ দং পৃথি।

টাকা

১—৪। "পহিলহি" ইত্যাদি। বাঁহার বংশীর ক্লাবে প্রথমেই কুল তুলার স্থায় উড়িয়া গেল,—
ধর্ম-কর্ম ভ্রমের স্থায় ও ছংখ হেতু 'নারী' শক্ষটি
গালির তুল্য প্রতাত) হইল। (সংস্কৃত 'সদৃক্ষ' শক্ষ
হইতে জাত 'সরিখ' শক্ষের অর্থ—সদৃশ, তুল্য)।

শেশ বিজনী'' ইত্যাদি। হে স্থি। আমি
কি উপার করিব
শেষ কৈ ক্ষা নিকের প্রতিবন্ধকতা করে
শৃ
ত্বনা ক্ষন,

—

শ্বিক বিজন

শ্বিক

"দরশনে লোর নয়নবুগ ঝাঁপি। করইতে কোর **ছহ' ভূক কাঁ**পি॥ ত্ব কর এ সধি সো পরসঙ্গ।

নামহিঁ যাক অবশ করু অঙ্গ।।

চেতন না রহ চ্ছন বেরি।

কো জানে কৈছে রভস-রস-কেলি।।'' ইত্যাদি

গোবিন্দদাস; প-ক-ত, ১৫৭ পৃষ্ঠা।

৮—১১। ''নয়নহি'' ইত্যাদি। নয়নকে
(ক্বন্ধ-রূপ দেখার জন্ত) নিন্দা করি,—(সেই

অভিমানে আমার নয়ন) নিদ্রাকেও দেখে না
অর্থাৎ নিদ্রাকে পরিত্যাগ করিলছে; (পুলা-শর
কন্দর্পকে নিন্দা করি—সেই আজোশে) পূলাশরগারী (পুলা রূপ) বাগ আয়াত করিতেছে;

যত প্রমাদ (ঘটিয়াছে) বলিতে পারি না;—
(স্থীস্থানীয়) গোবিন্দদাস (উহার) প্রমাণ।

११३ ।)

হৃদয়-মন্দিরে মোর কামু ঘুমাওল
প্রেম-প্রাহরি রহু জাগি।
গুরুগন-গৌরব চৌব-স ুনাই ভেল
দূরহি ছুরে রহু ভাগি॥
সজনী এত দিনে ভাঙ্গল ধন্দেই।
কামু অনুরাগ-ুজ্পে গরাশল
কুল-দাছরি মতি মন্দা॥ গুলা।
ভাবে ভরল মনুহ পরিজন বাঁচিতেই
গৃহ-পতি শপতিকা ঠানই॥
নামনক নার পার নাহি বাদ্ধইইই
না জানিয়ে কিয়ে ভেল আখি।
যত প্রমাদ কহুই নাহি পারিয়ে
গোবিন্দদাস এক সাখী॥৪৭॥৭১০॥

পাঠান্তর

১। ইহা ৺-র-সা পুথির ১১৮০ ও প-র পুথির ১৩৬৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সমমূশ' খ। ৩। 'ৰন্দ' ক; 'দন্দ' চ, প-র-সা। ৪। 'করিতে' ক, ধ, ছ, চ, প-র-সা। ৫। 'হয়ে' ক, ধ, ছ, চ।

। '-হ্ন' প-র। ৭। 'পরিজন বাচিতে' ঘ;
'গুলুকন বাঢ়িতে' প-র-সা। ৮। 'শপতিক' হলে
আমাদিগের দৃষ্ট সকল পুথিতেই 'সপতিক' পাঠ
আছে। ৯। 'ঠান' (সা-প ১৮৩ সং পুথি) হলে
'ঠাম' অক্তান্ত সমস্ত পুথি। ১০। 'নয়নক নীর'
ইত্যাদি (প-র পুথি) হলে 'নিন্দ্রউ নিন্দ নয়নে
নাহি হেরিয়ে' অন্তান্ত পুথি।

টীকা

৮—> >। "আপনক" ইত্যাদি। নিজের আচরণ নিজেই বুঝিতে পারি না;—এক করিতে আর হইরা পড়ে; মন ভাবে পরিপূর্ণ; পরিজনদিগকে বঞ্চনা করিতে গৃহস্বামী শপথের স্থান (হইরাছেন); অর্থাৎ পরিজনদিগকে ভূলাইবার জন্ত গৃহস্বামীর দিব্য করি,—-ভাঁহার সহিত অন্ত সংশ্রব নাই!

বিভাব ৷১

রজনী-কাহিনী কহিতে রমণী **পুলকে পু**রল দেহা?। কনক-বরণী কি হৈল না জানি সোঙরি সে সব লেহা ।। অক্সের বসন খসয়ে সন্বন नश्रात्न छत्रदश्र दलात । বিষাদে বিকল বিছুরি প্রকল চরণ না চলেও থোর ॥ क्षप्र-मन्प्रिद পিরিভি-পালক রসের বালিস ভায়। আরতি ভোষণি তাহাতে অমনি শুভল রসিক রার॥

পিয়ার পিরিতি কছরে যুবতি
ধরিয়া সধীর করে।
শেখর সম্বরে কছরে রাধারে
দেখিবে নাগর-বরে॥ ৪৮॥৭১১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দেহ' ক। ৩। 'লেহ' ক; 'নেহা' ছ। ৪। 'ভরল' খ, প-র-সা। ৫। 'বিছরি' ছ। ৬। 'নাচণে' স্থলে 'নাচরে' খ।

यहरे ।)

কহিতে কামুরং বিলাস-কথা। ছল-ছল ভেল নয়ান° রাতা 🛚 গদ-গদ কণ্ঠ8 না সরে বাণী। विवत्र एंडल कि रेश्ल कानि॥ **পুলকে পূ**রল সকল দেই। স্তবধ হইলে না চলে সেহ ॥ ঝর-ঝর বাহি॰ পড়ায়ে ছাম। খেণে থর-থর কম্পামান মুরছি পড়ল সখীর গায়। হেরি সহচরী চমক পায় ॥ কোরে করিয়া রহল ভাই। খেণেকে চেতন পাওল রাই । नथी कट विभर्तील म (मधि। কহিতে এমন কোথা না লখি । আমরা পুছিয়ে তথের কথা। ইহাতে ভোহার কি ভেল বেপা। রাই কছে মোর জীবন কামু। সে কথা ' কহিতে অবশ তমু। শেখর কংয়ে রহিয়া ভাই। **এमन (श्राटिया वांनार्ट वार्ट ॥८०॥१) २॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বছুর' প-র-সা। ৩। 'নয়ন' ক, ৬, চ,
প-র-সা। ৪। 'কঠে' ক, প-র-সা। ৫। 'বারি'

ঢ়; 'বহি' প-র-সা। ७। 'কম্পিডমান' ক,
প-র-সা। ৭। 'স্থিড' প-র-সা। ৮। 'ক্হিডে' ক,
ধ, ঢ়, চ। ৯। 'ক্হিডে' ক, ধ, ব, চ। ১০। 'গুপ'
ক, ধ, দ, চ।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

রসোদগারাসুরাগঃ।

হছই ৷১

পিয়ার পিরিভে জাগি স্বুমায়লুঁ না জানি বিহান নিশি। অঙ্গের[ঃ] সৌরভ কাসুর সঙ্গেরণ ননদী পাওল আসি ॥ ননদী বলে গা ভোল বড়্য়ার ঝি। সে হেন অক্সের এমন বিতথাৎ **लाएक ना बिलाएव कि ॥ ध्या**॥ কেন তোর তমু হেন বিবরণ মলিন চাঁদের কলা। মন্ত করিবরে মথিয়া পুইয়াছে শিরীষ-কুত্ম-মালা 🛚 কে দিলে যে হের রজের দ্পুর क् पिर्ट धमन रात्र। ভড়িভ কিনিয়া 'বরণ বসন গুপতে আনিলি কার॥ নাছি পরকাশ আপাদমন্তক **क्लिक इन्हर्म हुन्ना**। र्श्वेष अश्वत **্রক ধরাই**য়া **८क' पिटमें डायून श्र**मा।

নাসার বেশর ভালে সে তিলক
কে দিলে এমন ছাম্মে:
শঞ্জন-নয়ানে অঞ্জন রঞ্জিত
জ্ঞান পড়িল ধাম্মে ॥৫০॥৭১৩॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১১৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরীতি' খ। ৩। 'অলের' প-র-সা।
৪। 'অল' প-র-সা। ৫। 'বিততা' প-র-সা।
৬। 'থুঞা রে' ক; 'গুরাছে' খ, প-র-সা।
৭। 'হেরো' ব, চ। ৮। 'অলের' খ। ৯। 'জান'
ইত্যাদি স্থলে 'জানদাস পড়ে খাল্পে' প-র-সা।

ভণা রাপ ৷১

ননদিং গো রহিতে নারিলুঁ খরে। ना एक नि एक नि এমন দেবভা यूवजो प्रिशा जूला॥ अ ॥ নিশির স্বপনে টাদ-উপরাগ ছেরিয়ে মন্দিরে বসি। হেনই সময়ে দে বনদেবতা মোরে গরাসল আসি। গরাস-ভরাদে আকুল হইয়া মুরছি পড়িলুঁ ভূমে। কভ না ডাকিলু তোর নাম ধরি শুনি না শুনিলি কাণে॥ এ মোর বিতথা সে বনদেবতা শুনি চমকয়ে° চিতে। ननहीं हमकि **এ বোল শু**নিয়া ভ্রমিয়া বুলয়ে ভিতে । গোকুল-পতির মভি ভুলাইলা ঈবত আঁখির ঠারে। मननी भूमारेए জ্ঞানদাস কৰে किया नित्रभाग जीएन ॥৫১॥१১८॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৭ সংখ্যক পদ।

২। 'ননদিনি' প-র-সা। ৩। 'চমকই' থ।

৪। অতঃপর ক, অ ও চ পুথিতে নিম্নলিপিত
অতিরিক্ত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হয়; যপা,—

'যুথতি দেখিয়া ফিন্মে হেরিয়া

এমতি তাহারি রিতে॥

যে জন হেরমে সে বনদেবতা

রহমে তাগারি চিতে।'

প্রাচীনতম প পুথিতে পংক্তিগুলি নাই এবং উহার
সহিত পুর্ববিত্তী উক্তির সামঞ্জ্যন্ত নাই;—ম্তর্তাং

উহা প্রক্রিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়।

দিনান্তরম্ম বার্তা।

মলাব ৷১

এ ঘোর রজনীং মেঘের ঘটাও কেমনে আইল বাটে। বন্ধুয়া তিতিছে আঙ্গিনার কোণে⁸ দেখিয়া পরাণ ফাটে॥ সই কি আর বলিব তোরে। कान भूगा करन সে হেন বন্ধুয়া আসিয়া মিলল মোরে ॥ গ্রহ ॥ ননদী দারুণ্ ঘরে গুরুজন विलाख वाहित रेहलूँ। আহাণ মরি মরি সঙ্কেত করিয়া কত না যন্ত্ৰণা>> দিলুঁ॥ আরতি দেখিয়া^{১২} বন্ধুর পিরিভি त्मात मान^{००} (इन^{००} करत्र। মাথায় করিয়া কলক্ষের ডালি> वानल १७ एखाई चरत ॥

আপনার তুখ স্থ করি মানে
আমার তুখের তুখী।
চণ্ডীদাস কচে ১৭ বন্ধুর ১৮ পিরিভি
শুনিয়া ১৯ জগত সুখী ॥৫২॥৭১৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৮৮ ও প-র পুণির ১ গ ০৮ সংখ্যক পদ। 'মল্লার' স্থলে 'বিভাষ' প র। ২। 'যমিনী' প-র। ৩। 'ঘটা' (প-রপুণি) ऋ(ल 'इं ि निया' क, थ, ठ, भ-द्र-मा; 'वं निया' ঘ। 'পিয়া' শক্টি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'কোণে' (প-র পুথি) হলে 'মাঝে' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। (। 'তিতিছে' (প-র পুণি) স্থলে 'ভিজিছে' क, थ, व, ठ, भ-तःम। ७। 'बरनक' क, थ, व, চ, প-র-সা। ৭। 'আসিয়া মিলল' স্থলে 'আনি মিলাওন' পূর। ৮। 'ঘরে' ইত্যাদি পংক্রির স্থলে-- 'নহি স্বতন্তর গুরুজনা ডর' প-র। ১। 'হৈয়' ক৷ ১০। 'হাহা' প-র৷ ১১। 'কত না যন্ত্রণা স্থলে 'এতেক যাতনা' প-র। ১>। 'দেখিতে' সা-প २०১ मर পুथि। ১০। भिन' थ, প-র। ১৪। 'स्वरा' প-র। ১৫। 'ডালা' প-র সা। ১৬। 'আছেনী' मा-भ २०) मर भूषि। ११। 'कब्र' भ-द। ১৮। 'কাহুর' প-র। ১৯। 'গুনিতে' দা-গ ২০১ সং পুথি।

দিনান্তরে স্থাক্তিঃ। ক্ষ্টা

সজনী কি কহিব রাইক সোহাগিং।

যাকর দেহলি বদরি-কোরে হরিং
রজনি পোহায়ল জাগি ॥ গ্রু ॥

কোকিলং সম হরি সক্ষেত রবইতে
ঘার খসাইতে রাধা।

কল্প ঝাকিতেং গুরুজন জাগল
পড়ি গেও দারুণ বাধা॥

ননদিনি বলে ধনি কোণ বাহিরায়ত দ ভীত-পুতলি সম দেহা। লোরে মিটায়ল শীন পয়োধর-মুগমদ-কুকুম-রেহা॥ বিঘটি মনোরথ আন চলল, হরি তাহিঁ ' তুহুঁ সক্ষেত রাখি। কুসুম-হার অরু মুকুলিত সরসিক্সংং

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৫৬।১১৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সজনী' ইত্যাদি মণে 'ধনি ধনি গাইক দোহাগি প-র-মা। ত। 'ধরি' ক, চ। 'যাকব দেহলি' ইত্যাদি পংক্তি স্থলে 'যাক্র দেহ নির্বধি কোরে ধরি চ। ৪। 'কোকিন' (ক পুপি) স্বে 'চাতক' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'ছনকিতে' थ। ७। 'ननमी পूहरम्' भ-त-मा। १। 'रक' ক. খ. প-র-সা! ৮। 'বাহিরাওড' ক, চ। ৯। 'মেটায়ল' অ, চ; 'পথাডল' প-র-সা ১৫৬ भः भन । ১ · । 'ठननि' **च**; 'ठनऊ' भ-त्र-मा। ১১। 'তাহে' क; 'তাহি' घ; 'এ' প-র-দা। ১২। 'কুমুম-ছার' ইত্যাদি (প-র সাপ্রথি) খলে 'হার কুমুমিত স্রসিঞ্জ মুকুলিত'ক: 'মুকুলিত হার কুমুন দব দরদিজ' থ, চ। 'কুমুম-হার' ইত্যাদি পংক্তিটি ঘ পুথিতে লিপিকর-প্রমাণে পরিত্যক্ত ब्हेग्राट्ड ।

ট কা

১—১১। "সজনী" ইত্যাদি। ছে স্থি!

বীরাধার সৌভাগ্য কি বলিব ? ত্রীকৃষ্ণ বাঁহার
বহির্বাটী-স্থিত বদরী-বৃক্ষের ক্রোড়ে (সমস্ত) রজনী
জাপিয়া পোহাইলেন! গোবিন্দদাস এই পদে
উজ্জলনীলমণি-শ্বত নিম্নলিখিত প্রাসিদ্ধ লোকের
তাৎপর্যান্ত্রাদ করিরাছেন; বধা,—

"সঙ্গেতীকৃত-কোকিলাদি-নিনদং কংস্থিয় কুর্মতো
ঘারোন্ত্রোচন লোল-শুষ্ধ-বদ্ধ-বদ্ধ-কাণ্ং মৃতঃ শৃথ্তঃ।

কেয়ং কেয়মিতি প্রগণ্ড-জরতী বাক্যেন দুনামুনো রাগ-প্রাপ্তল-কোল-কোল-বিটপি-ক্রোড়ে গতা শর্করী॥" শ্ৰীমহিখনাথ চক্ৰবৰ্তী ওঁছোৱ স্বপ্ৰসিদ্ধ "আমানদ-চন্দ্রিকা" টীকায় এই পদের সমার্থক উদ্ধৃত স্লোকের রস ভাবের বিশ্লেষণ করিয়া লিখিগছেন—"ভত্ত সম্ভেতীক্ততিত বারোনোচনেত্যাত্যাং ব্যোরপ্যোং-ক ঠোনোলি দ্ৰন্ত প্রচল্প কামুক ছঞ্চ। প্রথমেন বিশেষণেন শ্রীরাধায়া: হর্ষোদয়: বিতীয়েন শ্ৰীক্ষক্ত । পুনশ্চ কেয়হ কেয়মি তানেন হৰ্ষপ্ৰশ্ম-শক্ষো-দ্ধৌ দ্যোবেৰ তত•চ মিণো হলভিতা বছৰাৰ্যতেতি ভাভাঞি বিষাদৌৎকণ্ঠাচাপল্যাক্সতিবৰ্দ্ধিভানি। মৃত-রিতি ক্তিপয়ক্ষণানস্তবং পুনর্পি কোকিলাদি-নিনদ-খারোমোচন জরতীয়াক্যানি এথা তথা ভাববর্দ্ধ-কানি জেয়ানি।" অর্থাৎ শ্রীক্লফের সঙ্কেত-স্তক কোকিল-নাদ ও শ্রীরাধার গ্রাজেদ্যাটন, —উভয় কাৰ্য্য ছাৱা উভয়ের উৎকণ্ঠা-জনিত রন্ধনি-জাগরণ ও প্রচন্ধ অভিসার ব্যঞ্জিত হইতেছে। তাগতে আবার প্রথম কার্য্য দারা প্রধানত: শ্রীরাধার ও বিভীয় কার্য্য দারা ঐক্তের হর্ষাদয়,- তৎপরে কে বাহির হয় ?' 'কে বাহির হয়?' ইত্যাদি কুটিশার বাক্যশ্রবণে উভয়েরই হর্ষ-প্রশম ও শঙ্কার উদয় হেতু (প্রেমোৎ-কর্ষের সারভূত) পরম্পর-এর্লভ্তা ও বছবিদ্বতা,— এবং উহার ধারা উভয়ের বিষাদ, উৎকণ্ঠা ও চিত্ত-প্ৰাৰণ্য ব্যক্ষিত ২হতেছে। মোকের) "মূহুঃ" ইত্যাদি বাক্যের **বা**রা **স্**চিত শ্রীক্ষের এইরূপ সঙ্কেত-শব্দ ও শ্রীরাধার দারোদ্যা-টনের বারংবার বিফল প্রয়াদ বারা পুর্বোক্ত রুগ-ভাবের পৌনঃপুত্ত ও অমুরক্ত প্রেমিকযুগলের তাদৃশ বঞ্জিয়াপন বাঞ্জিত হইতেছে।

১২—১৫। "বিষ্টি" ইত্যাদি। মনোরথ ব্যর্গ ছইল; হরি তথার পূজাহার ও মুচ্লিত পদ্ম— ছুইটি সঙ্কেত-চিচ্ছ রাখিয়া অক্তত্ত চলিলেন; গোবিন্দ-দাস (ইহার) একমাত্র সাক্ষী রহিলেন। (পূজা-হারের পরিত্যাগ শারা উহার সম্ভাপ-জনকতা হেড়ু উহার পরিবর্জে গ্রীরাধাকে বক্ষে ধারণের বাসনা ও মুকুলিত পদ্ম দারা রঞ্জনীতে পরবর্তী রাত্তে পুন: অভিসারের বাসনা ব্যক্তিত হইতেছে। এথানে স্ক্র ইন্সিত দারা বক্তব্য প্রকাশিত হওরায় "স্ক্র" নামক অল্ডার ঘটিরাছে।)

> পুনশ্চ প্রকারান্তরেণ যথা। দিনান্তরে পরস্পরং সধ্যক্তিঃ।

> > त्रटमामभातः।

তন্ত্রি চ-শ্রীগোরচন্দ্র:। ^শআবে মোর গৌর কিশোর" ইত্যাদি পদং গেয়ম্ *।

সিকুড়া ।১

আবহুঁ রভস-রসং কয়লহিও ধাধস
কামর দৃক্রও বেলি।
উলটল কবরি সম্বরি নাহিও অম্বর
কহুও কেবা গারি বা দেলি॥
সধি হে কোনা এতহুঁ তুখ দেল।
বিকচ কমল ফুল লোচন ছল-ছলদ্
অব কাহে মৃদিত ডলে ॥ এছ॥
তালুল অধ্যেও মধুরও বিশ্ব-ফল১২
কির দংশন কিবা দেল।
কুচ-ছিরিকল পরও বিহগ কিয়ে বৈঠল১৪
তাহে অরুণ-রেখ ভেল॥

কাঞ্চর কপোল লোল অমিয়া-ফল
সিন্দুর স্থানার ব্যানে।
জ্ঞানদান কহ চলহ চলহ স্থিণ
রাইক মিলাহণ্ড সিনানে ॥৫৪॥৭১৭॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১১৯১ ও প-র পৃথির ১০১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রডস' প-র-সা। ৩। 'ক্ষরক' ক, ৬, ড়, চ। ৪। 'হ্ছর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'ক্ষরি নহ' প-র-সা। ৩। 'ক্ষরি নহ' প-র-সা। ৬। 'ক্ডর' ক, প-র-সা। ৭। 'ক্ডর' প-র। ৯। 'ক্ডর' ক, প-র-সা, প-র। ৯। 'মেদিত' ঝ, ড়; 'মুদিত' ক, প-র-সা, প-র। ১০। 'অধর' প-র। ১১। 'মধু' প-র। ১২। 'বিষফ্লে' ক, ঝ, প-র-সা, প-র। ১৪। 'কিরে বৈঠল' ছলে 'বৈঠল কিবা' প-র। ১৪। 'কিরে বৈঠল' ছলে 'বেঠল কিবা' প-র। ১৫। 'স্ম্মুর স্ক্রের' ছলে 'হন্মুর স্ক্রের' ড়, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক। ১৭। 'স্বিণ শক্ষ প-র পৃথিতে নাই। ১৮। 'স্বিণার' চ; সিনাহ' প-র-সা।

টী কা

>--৪। "অবহঁ" ইত্যাদি। উত্তাপ-দর্ধ দ্বিপ্রহর বেলা,—এ সমরেও সম্ভোগ-লীলা বিশ্বর জন্মাইল; (এরাধার) কবরী আলু-আলু,—বর অসংরৃত; (স্বি !) বল, কেহ বৃধি (এরাধাকে) গালি দিরাছে ?

>২—>৫। "কাজর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার)
বদনে গণ্ডে কাজল ও উচ্ছাল দিশুর,—(বেন)
চঞ্চল অর্থাৎ বারু-চালিত (দিশুরিরা) আন্ত-ফল;
জ্ঞানদাদ কহিতেছেন—দথি। চল,—(বিলম্ব করিও
না) শ্রীরাধাকে সানে লইরা যাও। ("লোল
অমিরা ফল" বাক্যের ছারা পদকর্তা বুঝাইতেছেন
বে, (ভৃতীর কলির বর্ণিত) ভাস্ত্ল-রজিত অধর-জ্লপ
বিষ্কৃল শুক-পক্ষী দংশন করার ও কুচরুপ বিষ্কৃলে
পক্ষী বুনিরা (বৃদ্ধু ছারা আচ্চুটুরা) উচ্চুকে

^{• &}quot;আবে মোর গৌর কিশোর" ইত্যাদি গৌরচন্দ্রপদটি অতঃপর ভৃতার শাধার বোড়শ পরবের প্রথম
ত , ১০৯২ সংখ্যক প্রক্রপে উভ্ত হুইরাছে। এ
হলে ইহাকে গণনা করিলে ৬ পরবের প্রসংখ্যা
বাড়িরা বার।

লোহিত-রেধাযুক্ত করার, সিন্দু' এরা আম মনে করিরা প্রারাধার গণ্ডেরও সেইরূপ লাঞ্চনা করার আশকা হইতেছে; অতএব কাজল ও সিন্দুরের চিহ্ন বিদ্রিত করার জক্ত সম্বর স্নান বিধেয়। (প্রীরাধার নয়নের কাজল ও ললাটের সিন্দুর তাঁহার নেও ও ললাটের চুম্বন দারা প্রীক্তকের অধরোঠে সংলগ্ন হইয়া পরে গও চুম্বন্দারা প্রীরাধার গণ্ডে সংক্রমিত হইয়াছে —"কাজর কপোল"ইভ্যাদি বাক্যের ইংই ব্যক্ষ্যার্থ।)

शननी ।>

সধি রাই কলাবতি কানেই।

কি ত্ত্ঁ মনোভব মন্থ ব্ৰাওল

কিয়ে ত্ত্ঁ আপন ফ্জানেই। প্ৰাদ্ধ

ত্তাঁ দিঠি-অঞ্চল বচন সমাপনা

চৌদিশে কত আছে আনে।

ত্তাঁ জন ব্ৰাল কেহো নাহি সম্বালই

ক্ৰম ত্তাঁ যে সিয়ানেই।

ভুজে ভুজে বান্ধি উরহি দরশায়ল

রমণী সম্বাল কাজে।

আনন-সরক্ত্ত করে প্রশায়ল

সময় ব্ৰায়ল সাবোইই।

ভ্যানদান ক্ত তক্তি উন নহ

তৈত্তে কয়ল নিরবাত এ৫৫॥৭১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথি র ১১৯২ ও প-র পুথির
১৩/২৬ সংখ্যক পদ। ২। কোন' ক। ৩।
'কি ছহ' ফলে 'এ ছহ' ক, ধ, ঘ, ঢ; 'এভহ'
প-র-সা। ৪। 'হুজান' ক। ৫। 'চঞ্চল' ক, থ।
। 'বচনে' প-র। ৭। 'চৌদেগে' প-র।
৮। 'কেহ' ক। ৯। 'হুঝল' প-র। ১০।
'নিনানে' ক, ধ, প-র-স, প-র। জ্ঞানদাসের

পদাবলীর মুদ্রিত 'সিনানে' পাঠ এ স্থলে অর্থ-শৃক্ত। ১১। 'সাঁজে' থ, প-র-সা। ১২। 'আন সম্বায়ল নাহ' স্থলে 'আলস ব্রায়ল' ব।

টাকা

২— । "স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি! শ্রীরাধা কলা-নিপুণা; শ্রীকৃষ্ণও (সেইরূপ কলা-নিপুণ); এই ছই জনকে কি মনোভব অর্থাৎ কন্দর্প মন বারাই ব্যাইল? কিংবা এই ছই জন আপনা হটতেই প্রবিজ্ঞ ? (কন্দর্প সংক্রময় এবং উভ্যের চিন্তেই বিশ্বমান বলিয়া, উাহার প্রেরণা উভ্যের চিন্তেই বিশ্বমান বলিয়া, উাহার প্রেরণা উভ্যের চিন্তেই বিশ্বমান বলিয়া, তাহার প্রেরণা উভ্যের চিন্তেই স্বতঃ অস্তুত হইবে—এই মুক্তি অসুসারেই হউক, কিংবা শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ স্থচ্ছুর বিশ্বাই হউক, তাহাদিগের উভ্যের মনোভাব উভ্যের অজ্ঞাভ নাই—ইহাই 'স্থি" ইত্যাদি শ্বনক্লির তাংপ্রা)।

8— १। "হন্ত্" ইত্যাদি। উভয়ের নম্বন-প্রান্ত বাক্য সমাধা করিল এবাং নম্বনের কটাক্ষ বাক্যের কার্য্য দিল্প করিল; (কেন না) চতুদ্দিকে অন্ত কত (ব্যক্তি) রহিয়াছে। (ছুই জনের নম্বন-ইক্ষিত) ছুই জনে বুঝিলেন—(অন্ত) কেহ বুঝিল না; — ছুই জনেই ঐক্সপ চতুর।

৮—১১। "ভূজে" ইত্যাদি। (শ্রীক্ষণ)
বক্ষ: খলে (একটি) ভূজ ধারা (অপর) ভূজকে
বন্ধন করিয়া (শ্রীরাধাকে ইশারায়) দেখাইলেন;
নারিকা (শ্রীরাধা) কার্য্য অর্থাৎ শ্রীক্রফের সেই
কার্য্যের উদ্দেশ্য বৃঝিলেন। (শ্রীক্রফ আলিক্ষনের
বাসনা প্রকাশ করিতেছেন—বৃঝিতে পারিলেন)।
তৎপরে শ্রীক্রফ কর ধারা (নিজের) মুখ-পদ্মকে
(অরমাত্র) স্পৃষ্ট করিলেন; (তদ্বারা) সদ্যা-কাল
ব্রাইলেন। (সন্ধ্যা-কালে স্থ্যি দিক্চক্রনালের
নিকটবর্ত্তী হওয়ার তাঁহার কর পদ্মকে অরমাত্র স্পর্শ করিয়া থাকে; স্মৃতরাং শ্রীক্রফ কর ধারা মুখ-পদ্মকে
অর স্পর্শ করার ইন্ধিতে সন্ধ্যা-কাল ব্রান হইল।
এই ইন্ধিতের তাৎপর্য্য অধিকতর গুঢ় বলিয়া, অর্থপ্রতীতি নাও হইতে পারে আশ্রমা করিয়া পদকর্জা 'সময় বুঝারল সাংঝ' বাক্টের প্রয়োগ করিয়া-ছেন)।

ং২---ব। "কং-কমলে" ইত্যাদি। (শ্রীকৃষ্ণ সম্প্রোগোৎকণ্ঠা হেতু সন্ধ্যা-কালে অভিসাবের জন্ম প্রীরাধাকে হাঙ্গত করিলেও, শ্রীরাধাকৈ ইঙ্গিতের প্রত্যুক্তরে) নিজের কর-ছিত দীলা-কমলে (লজ্জা প্রকাশের ছল করিয়া) নিজের মুখ-কমল লুং ইলেন; (এবং ভঙ্গারা) নাথকে অত্যু ব্রাইলেন অর্থাৎ সন্ধ্যা অভিসাবের উপযুক্ত সময় নহে,---যথন পদ্ম নিমালিত হইবে, সেই রজনী অভিসাবের উপযুক্ত কাল—ইচা ব্রাইলেন। (এই পদের ওয় ও ১র্থ কলিতে "পুক্ষ" নামক অলঙ্কার হইয়াছে)। তুলনা কঞ্লন,—

"সক্ষেত্ত-কাল-মনসং বিটং জ্ঞাত্বা বিদয়য়। ১ সংস্লেত্রার্পি ভাকৃতং লালা-পৃদাং নিমীলি ১ম্॥" - - সাহিত্য দুর্পণ, ১০ম পরিছেদ।

বরাড়ী।১

ছলে দ্বশারল উরজক ওর।
আপনি নেহারি হেরল মোহে থোর॥
বিহসি দশন আধ দরশন দেল।
ভুক্তে ভুজং বান্ধি অলপ চলি গেল॥
কি কহব রে স্থি নারি স্কোন।
হরখে বর্ষে কত মন্মথ-বাণ॥
হরি কত দূরসেঁ পালটি নেহারি।
তোড়ল কানড় কুস্থম উঘারি॥
বসনক ওর ঝাঁপল তবং গোরি।
লীলা-কমলে মুখ রোপলি থোরিও॥
বৈদগধি বিবিধ পসারল যেহ।
কোনং মুগধ তাহে ধরুও নিজ্ঞা দেহ॥
ধনি ধনি তাক যাক ইহু নারিং।
ভ্যানদাস কহু ধনি জনা চারি॥ ৫৬॥৭১৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প্-র-সা পুথির ১১৯০ ও প্-র পুথির ১০)২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ভূজে' ক, খ, প্-র-সা। ৩। 'নাঁপল তব' স্থলে 'উঝায়ল' প্-র। ৪। 'ঘোর' প-র-সা। ৫। 'কোন' (সা-প ২০১ সং পুথি) স্থলে কান্ত্' ক, খ, ঘ, চ, প-র; 'কান' প-র-সা। ভ। 'ধর' প-র। १। 'ধনি ধনি' ইত্যাদি পংক্তি স্থলে 'ধন্ত সে জনা ফাহার বর নারা।' প-র।

টাকা

১১—১২। "বৈদগধি" ইত্যাদি। (জীরাধা) নানাবিধ যে বৈদয়ী বিস্তার করিলেন, (রুসজ্জের ত কথাই নাই) কোন্ মুগ্ধ মুখাৎ অর্থাক তাহাতে নিখের শ্রীর ধারণ করিতে পারে ?

১৩০-১৪। "ধনি ধনি" ইত্যানি। ইনি বাহার নারী, তাঁহার ধন্ত ধন্ত অধাৎ শত ধন্ত!
জ্ঞানদাদ কহিতেছেন—(কেবল তিনি ধন্ত নহেন;)
জনা চারি লোক ধন্ত! (অর্থাৎ এই নাগ্নিকাশিরোমণির পিতা, মাতা, স্থামী ও প্রণদ-ভাজন—
চারি জনকেই ধক্ত বলিতে ইইবে)।

युष्ट् । ३

সধিং—বড় অপরপ ভোলত।
রাই—যমুনা সিনানে গেলি ॥
কামুণ দরখন ভেল ।
কি তুহুঁ ইপিত কেলং ॥
বুঝিয়া সে সব রীত।
সভে গেল আন ভীতং ॥
যব হোতং নিরজনে।
পৈঠলিদ নিকুঞ্জ-বনে ॥
কি তুহুঁ কয়লি নেহ।
ক্যান কি বুঝিব ধেহং ॥ ৫৭॥৭২০॥

পাঠান্তর

১। হহা প-র কুশি পুৰির ১১৯৪ ও প-র পুথির ১৩।২৯ সংখ্যক পদা ২। 'দেখি' ছ। ১। 'কেলি' প-র। ৪। 'কাফুক' থ। ৫। 'কি ছহ' ইত্যাদি (প-র পুথি) স্থলে 'কিয়ে ইঙ্গিত ছহুঁ কেল' থ, ছ; 'কিয়ে ইঙ্গিত কেল' ক, চ, প-র-মা। ৬। 'সতে গেল' হত্যাদি স্থলে 'মতে ভেল আন-দিত' প-র। ৭। 'হৈতে' প-র। ৮। 'পেসলি' প-র। ৯। 'জ্ঞান' ইত্যাদি স্থলে 'জ্ঞানদাস কি বুঝিব গেহ' ক, প-র মা; 'জ্ঞান কি বুঝাব থেহ' খ, ছ, চ; 'জ্ঞানদাস তব গেহ' প-র।

বড়ারী।১

নাহি উঠল তিরেই রাই কমল-মুখি
সমুথে হেরলত বর-কান।
গুরু-জন সঞ্চেল লাজেও ধনি নত-মুখি
কৈছনে হেরব বয়ান॥
সথি হেত অপরুপত চাতুরি গোরি।
সব জন তেজি আগুসরি ফুকরই
আড়ে বদনদ তহিঁত ফেরি॥ গ্রুছ॥
তঁহিইত পুন মোতি-হার টুটি পেললইই
কাম দরশইত ধনি কেল।
সব জন এক এক চুনি সঞ্চরইই
আম দরশইত ধনি কেল।
নয়ন-চকোর কামু-মুখ শশি-বরইও
কয়ল অমিয়াইত রস পান।
স্কুঁ দোহা দরশনে রসকুঁ পসারল
বিভাপতি ভালে জান॥৫৮॥৭২১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৫ ও প-র পুথির ১৩০ > সংথাক পদ। 'বরাড়ী' হুলে 'সিকুড়া' প-র। ২। 'ভীরে' ক। 'ভীরে' পাঠে ছন্দো-ডদ ক্ষনিবার্য। ৩। 'দেবরে' প-র। ৪। 'লাক' ঘ। ৫। 'এ স্থি'প-র। ৬ 'অপ্রপ' ক, চ, প-র-সা। १। 'আদ' প-র। ৮। 'বদনে' ক, প-র সা। । । 'তহি' ছ; 'তাহি' চ। ১•। 'তহি' ছ; 'তাহি' চ। ১১। 'ফেলল' ক, প-র-সা; 'ডারল' প-র। ১২। 'সব জন' ইতাদি ছলে 'সব জন ক্ষণ্ট বদনে তহিঁ স্থাক' প-র। ১৩। 'দরশন' চ। ১৪। 'শশধ্রে' প-র। ১৫। 'অসুত'ক।

जुशामी ।>

কি কহব রাইক চরিত অপার।

ঐছনং কভিছ না হেরিয়ে আর॥
গুরুজন সনে আজুং চলইতে বাট।
অস্তরে উপজল কামুক নার॥
পুলকে পুরল তমু ঝর ঝব ঘাম।
অবশ হইয়া কহে কামু কামু নাম॥
ননদি কহয়ে তহি কামু কাহা হেরি।
ভামু ভামু করিয়া কহয়ে পুন বেরি॥
অভিশয় তাপে কমুতে বহে ঘাম।
তাহে পুন পুন দে কহলুঁ ভারু নাম॥
গুরুজন শুনি তব নিশবদ তেল।
ভ্রানদাস চাতুরি উপদেশ কেল॥৫৯ঃ৭ং২॥

পাঠা গ্র

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১১৯৬ ধংধ্যক পদ। ১। ক্রিছে'ক, চা ৩। 'আজি' ক। ৪। কির্দু'ণ।

অথ র**দোদ**গারঃ প্রকারা**ন্তরং যথা।** শ্রীমহাপ্রভুঃ।

বিভাষ 1১

আজুক প্রেমক নাহিক ওর। স্থপন্ধি শুভেলুঁং গৌরক কোর॥ পত্ত-মুখ হেরইতে পড়লহি ভোর।

চরকি চরকি বহে লোচনে লোর।

উচ-কুচ কাজরে হার উজোর।
ভীগল তিলক বসন রুচি গোর।

মীটল অন্ধ-বেশ রহু° থোরঃ।
বাসুদেব ঘোষ কহে প্রেমণ আগোর॥

115019:01

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৯৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতল' ক, খ, চ, প-র সা। ৩। 'বছ' ক, খ, ঘ, প-র-সা। ৪। 'ঘোর' প-র-সা। ৫। 'প্রেমে' প-র-সা।

थाननी ।>

কি কহব রে সখি রজনিক বাত ।
শুতিয়া আছিলুঁ হাম গুরুজন সাথ ॥
আধ রজনি যব পূরল চন্দা ।
শুমলয় পবন বহয়ে অতি মন্দা ॥
গৌরক প্রেম ভরল মঝু দেহা ।
আকুল শিবন না বাদ্ধই থেহা ॥
গৌর গৌর করি উঠলুঁ রোই ।
ভাগল গুরুজন কহে পুন কোই ॥
গৌর নাম সভে শুনল কাণে।
গুরুজন তবহাঁ করল চিতে আনে ॥
গৌর চৌর করি উঠায়লুঁ ভাষ।
বাস্তাৰে ঘোষ কহে ঐতে বিলাস ॥৬১॥৭২৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'চন্দ'প-র-সা। ৩। 'মন্দ'প-র-সা। ৪। 'গুনল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'উঠনু' খ, মু, 'উঠন' প-র-সা। एषा जान ।>

পালকে শয়নং ঘুমে অচেতন मोचन वश्रु याम । मोभ करत्र **म**हे **লুবধ° মা**ধব আওল হামারি পাশ ॥ স্থি হে কানু সে ঐছন টাঠা। অধিক লালসে হরষে পরশে বিষম তাকর দীঠ ॥ প্রদা জাগইবে ডবে লহু লহু করে বসন কয়ল দূর। কনক-**গা**গরিঙ বেক্ত নেহারি নিজ মনোরথ পূর্ব ॥ ঝটিতে জাগলু দীপের ছটায় ভর্মে কহলুঁ চোর। আন্ধারে পশিলুঁ ডরে চোর পাশে (म भारत कवल कित्र ॥ বান্ধি ভুজপাশে হাসিয়া রভদে বিলসে স্বধিক স্থা। চম্পতি-পতি বেক্ত কহয়ে

পাঠাস্তর

टारत्र निलंज मूथ ॥५२॥१२०॥

১। ইহা প-র সা পুথির ১১৯৯ ও প-র পুথির ১৩০০ সংখ্যক প্র। 'তথা রাগ' ছলে 'বিভার' খ; 'স্ক্ই' প-র : ২। 'পালক শরন' দ; 'পালক শরনে' পর। ৩। 'মুগ্ধ' প-র-সা। ৪। 'টাট' ক; 'চিঠ' চ; 'টাট' প-র-সা, প-র। ৫। 'কাগইব' প-র । ৬। 'কনরা পুতরি' প-র । ৭। 'নিক' ইত্যাদি ছলে 'নরানে ভরুগ প্র' প-র । ৮। 'ডরে' ইত্যাদি পংক্তি-ছরে ছলে প-র পুথির পাঠ ব্ধা,---

'চোরের ডরে পাস আদ্ধিরারে প্রস্মৃতাকর কোর॥' ৯। 'হাসিয়া' ইত্যাদি ভণিতার কলি খলে প্রস্থির ভণিতা-হীন পাঠ, যথা—

'হাসির রভসে বান্ধি ভূজপাশে

চোরের নিলজ মুধ।

নিজ মনোরপ

ভা কহিব কত

विनाम व्यक्षिक सूथ ॥'

পঠমঞ্জরী।১

এ সখি রক্ষিণি কি কহব তোয়।
আজুক বৈ কৈ তুক কহনে না হোয়। ধ্রত ॥
একলি আছিলুঁ ঘরে হিন-পরিধান।
অলথিতে আয়ল কমল-নয়ান॥
এ দিগে ঝাঁপিতে তকু উদিগে উদাস।
ধরণি পশিয়ে যদি পাঙ পরকাশ।
করে কুচ ঝাঁপিতে ঝাঁপন না যায়।
মলয়-শিখর জমু হিমে না লুকায়।
ধিক যাউ জাঁবন যোবন লাজ।
আজু মোর অঙ্গ দেখল যুবরাজ॥
ভণয়ে বিভাপতি রসবতি রাই।
চতুরক আগে কিয়ে চতুরাই।৬৩॥৭২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১ং ০০ সংখ্যক পদ। ২। 'আহার এক' ঘ, প-র-সা। ৩। থ পুথি ছাড়া আন্তান্ত পুথিতে 'এল' চিক্ত নাই। ৪। 'ও দিগে'ক, প-র-সা। ৫। 'আবাও' প-র-সা।

৩—৪। "একলি" ইত্যাদি। ক্ষুদ্ৰ-বন্ধ-পরিহিতা আমি ঘরে একাকিনী ছিলাম; (এমন সময়ে)
পল্ললোচন প্রীকৃষ্ণ অলক্ষিত ভাবে আসিলেন।
হীন (ক্ষুদ্ৰ) পরিধান (পরিহিত-বন্ধ্র) বাহার—
এইরূপ বছরীহি সমাস হারা ''হীন-পরিধান" শক্ষটি
সিদ্ধ হইরাছে। কিংবা (আমি) ঘরে একাকিনী
ছিলাম,—(আমার) পরিধান হীন অর্থাৎ ক্ষু

(বল্ল)-- এইরূপ সমাস্থীন অধ্যপ্ত করা বাইতে পারে।

ওখা রাগ ৷১

আর একং লাজ তোহেণ কি কহব মাই।
জল দেই পোই যদি তবহুঁ না যাই ।
নাহি উঠল হাম কালিন্দি-তার।
অঙ্গহি লাগল পাতল চার॥
তহিঁ পেকত ভেল সকল শরীর।
তহিঁ উপনীত সমুখে যত্নবার॥
বিপুল নিতম্ব অতি বেকত ভেল।
পালটিয়া তাপর কুস্তল দেল॥
উরজ উপর যব দেয়ল দাঠ।
ভর মোড়ি বৈঠলুঁ হরি করি পীঠ॥
হাগি মুখ মোড়ই চাঠি মাধাই।
তব্যু তমু ঝাঁপিতে ঝাঁপন না যাই॥
বিভাপতি কহে তুতুঁ অগেয়ানি।
পুন কাহে পাল্টি না পৈঠলি পানি॥

1158117291

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০ সংখ্যক পদ।
২। 'আর এক' খলে 'আছুক' ক, প-র-সা।
৩। 'তোহে' শক্ষ ক, প-র-সা পুথিতে নাই।
৪। 'দিরা' থ, ঘ। ৫। 'ধোই যদি' ইত্যাদি
খলে 'ধুইলে ধোরে নাহি জাই' প-র-সা। ৬।
'তাহি' ক; 'তহি' ঘ। ৭। 'তাহি' ক; 'তহি'
ঘ। ৮। 'টাট' ক।

টাকা

৯—১০। 'উরজ্ব' ইত্যাদি। (শ্রীহরি) বধন
(আমার) কুচের প্রতি দৃষ্টি অপিত করিলেন,
(তথন) আমি হরিকে পশ্চাতে করিয়া অর্থাৎ
হরির দিকে পাছ দিয়া আমার বক্ষঃস্থল ঘুরাইয়া
বদিলাম!

धाननी ।>

এ ধনি রঙ্গিণি কি কহব ভোয়। আজুক^২ কোতুক কহল° না হোয়॥ ধ্র•°॥ একলি শুভিয়া ছিলুঁ কুস্থম-শয়ান। দোসর মনমথ করে ফুলবাণ ॥ नृপুর রুণু-ঝুমুঙ আয়ল কান। কৌ ভূকে হাম মুদি রহল নয়ান ॥ আয়ল কামু বৈঠল মঝু পাশ। পাশ মোড়ি হাম লুকায়লুঁ হাস। कुखल-कुञ्चमनाम श्रीत (नन। বরিহা-মাল পুনহি মুঝে ' দেল। নাসা-মোভিম গীমক হার। যতনে উতাংল কত পরকার॥ কঞ্ক ফুগইতে>> পক্ত ভেল ভোর। জাগল মনমথ বান্ধলুঁ ১২ চোর॥ ভণয়ে বিছাপতি রসিক স্থলান। ভুহু রসবভি১৩ পন্ত সব রস

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০২ ও প-র পুথির ১৩৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'আর এক' ধ। ৩। 'কহল' (প-র পুথি) স্থলে 'কহনে' ক, ধ, দ, চ, প-র-সা। ৪। ক, দ, চ পুথিতে 'ঐ' চিল্থ নাই। ৫। 'করে ফুলবাণ' স্থলে 'কোরে পাঁচবাণ' প-র। ৬। 'কণুরুত্ব' (ম পুথি) স্থলে 'রুত্ব কুত্ব' ইত্যাদি স্থলে 'কোতুকে মুন্দি হাম রহল বরান' প-র। ৮। 'আরল' ইত্যাদি স্থলে 'আরলি বৈঠল কারু' প-র-সা। ৯। 'পাশ মোড়ি' স্থলে 'কৈত্ব করি' প-র (পাঠান্তর্ম)। ১০। 'তহি' প-র। ১১। 'পরসিতে' প-র। ১২। 'বারল' প-র-সা, প-র। ১০। 'রসিকা' প-র। ১৪। 'পছ্ সব রস ভাণ' (প-র-সা পুথি)

ছেলে পুন সব রস ভাপ'ক; পিছঁসরবস ভান'ধ, চ; পেছ রস বস ভান' ছ; পেছ সব রস জান' প-র।

७वा द्रांत्र ।>

শাশ ঘুমায়ত কোবে আগোরি ।
তহিঁ রতি-টাঠ পীঠ রহুঁ চোরি ॥
কিয়ে হাম আখরে কহলুঁ বুঝাই ।
আজুক চাতুরি রহব কি যাই ॥
না করহ আরতি এ অবুধ নাহ ।
অব নাহি হোত বতন-নিরবাহ ॥
পীঠ-আলিগনে কত সুখ পাব ।
পানিক পিয়াস দুধে কিয়ে যাব ॥
কত মুখ মোড়ি অধর-বস নেল ।
কত নিশবদ করি কুচে কর দেল ॥
সমুখে না যায় সঘনে নিশয়াস ।
কাহে কিরণ ভেল দশন-বিকাশ ॥
জাগল শাশ চলত তব কান ।
না পুরল আশ বিভাপতি ভাগ ॥৬৬॥৭২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১২০০ সংখ্যক পদ।
২। 'আগোর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'চোর'
ক, চ; 'মোর' প-র-সা। ৪। 'আবধ' প-র-সা।
৫। 'আলিঘনে' ক; 'আলিজন' খ, ঘ। ৬।
'নিলোরান' ক, খ, প-র-সা। ৭। 'কাছে
কিরণ' (য-পুণি) হলে 'হাস কিরণ' ক, চ, প-র-সা;
'হাসে কিরণ' ধ।

টাকা

৩—৪। "কিন্নে" ইত্যাদি। (আমি) কি জন্ত আখরে অর্থাৎ সক্ষেত্তে তাঁহাকে বুকাইরা কহিলাম ? (অর্থাৎ আমার পশ্চাতে অবস্থিত শ্রীক্ষেত্র অধরোঠে করাঙ্গুলি স্থাপনরূপ সক্ষেত্ত হারা তাঁহাকে নিঃশব্দে অবস্থান করার কন্ত ইলিত করিরা আমি কি কন্ত তাঁহাকে অবস্থানের অমুমতি দিলাম ?) আজিকার চাত্রী রক্ষা পাইবে, কি ঘুচিবে—বুরিতে পারি না!

৯—১০। "কত" ইত্যাদি। (আমি মনে মনে এরপ চিস্তা করিতেছি,—ইতিমধ্যে) শ্রীরুঞ্চ (আমার) মুথ বক্র করিয়া কত অধ্রামৃত পান করিতে লাগিলেন! শব্দ না করিয়া কত বক্ষে হস্তার্পণ করিতে লাগিলেন।

>৩—>৪। "কাগল" ইত্যাদি। (আনার দশন-ক্যোতি চক্ষে লাগান্ধ) খাণ্ডড়ী জাগিলেন; তথন কৃষ্ণ (নিরুপায় হইন্না) চলিয়া গেলেন; (লালা-দশক) বিদ্যাপতি বলিতেছেন,—(প্রীকৃষ্ণের তথা পদ-কর্ত্তার) বাদনা পূর্ণ হইল না।

বিভাষ।১

এ সখি এ সখি কি কহব হাম।
পিয়া মোর বিদগধ বিহি মোরে বাম॥
কত তুখে আয়ল পিয়া মঝু লাগি।
দারুণ শাশ রহল তহিঁ লাগি॥
ঘরে ঘোর আদ্ধিয়ার কি কহব সখি।
পাশে লাগল পিয়া কিছুই না দেখি॥

চিত মোর ধদ-ধদ কহিতে না পাই।
এ বড় মনের তথ রহুং চিরখাই॥
বিভাপতি কহ তুহুঁ অগেয়ানি।
পিয়া হিয়ত করি কাতে না কেরি
বয়ানি।ভ ॥৭৩০॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সা পুথির ১২০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রহ'ক,খ, প-র-সা। ৩। 'হিয়া'ক,খ। টীকা

৯—১০। 'বিদ্যাপতি' ইত্যাদি। বিদ্যাপতি কহিতেছেন— শ্রীরাধে! তুমি আন-হীনা; প্রিয়-তমকে বক্ষে (ধারণ) করিয়া কেন (খাওড়ীর দিকে) মুখ ফিরাইলে না ? (মধাৎ শ্রীক্ষের দিকে দল্মধ দিয়া, উাহাকে বাহপাশে গাঢ় আলিক্ষন করিয়া শয়ন করিয়া, কেবল মুখটি খাওড়ীর দিকে ফিরাইয়া রাখিলে খাওড়ীর অঙ্গে পূর্ববং শ্রীরাধার নিখাসম্পর্শ হওয়ায়, তাহার মনে কোন সন্দেহ হইতে পারিত না এইং ঐ ভাবে মুখ রাখায় খাওড়ীর অক্স-প্রত্যক্ষের গতি-বিধি লক্ষ্য করিয়া প্রয়োজন হইলে সভর্ক হওয়ও চলিত—কবির বাক্ষের ইহাই তাৎপর্যা বটে)।

আডানী ৷১

অলখিতে আয়ল অলখিতে গেল।
না পুরল মনরথ' বেকত না ভেল॥
শুরুজন জাগল ভেলও বিহান।
চরণ-লখনং হেরি আন বয়ান॥
হরি হরিং কি করব কুলবতি হোই।
অজনে কামু-চরণ-চিহু সোই॥
শুরুজন-ভয়ে তব লেপইতে চাই।
বিরিতি, বিশেষ লেপই নাহিং পাই॥
সংভ্রম ভেল মন ভ্রমে আনিবারি।
সোভর ভালল নয়নকদ বারি॥

যে পথে রাতি চলল রতি চোর।
সে পথে মনরথ গেলহি মোর॥
দেহ রহল জমু সূধ পসারি।
কহ কবিশেখর প্রেম বিচারি॥৬৮॥৭৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুলির ১২০৫ সংথ্যক পদ। 'আড়ানী' হলে 'আড়ানা' ক, ধ, প-র-সা। ২। 'মনমধ' প-র-সা। ৩। 'ভৈগেল' প-র-সা। ৪। 'চরণ-লধন' (ঘ পুথি) হলে 'চরণ নধর' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৫। 'হেরি হেরি' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৬। 'শিরিতি' ক, চ, প-র সা। ৭। 'না' ক, থ। ৮। 'নয়নিক' ক, চ। ৯। 'য়ধ' ক প-র-সা।

निक1

ড-- 8। "শুক্জন" ইত্যাদি। প্রভাত হইল;
শুক্জন জাগিল; (অজনে) শ্রীক্ষেত্র চরণ-লক্ষণ
অর্থাং ক্রফ্চ-চরণের ধ্বজ-বজ্ঞাকুশ ইত্যাদি চিহ্ন (সিক্ত মৃত্তিকায় মৃদ্রিত) দেখিয়া (আমার) বদন
অক্সরপ অর্থাৎ চিক্তায় বিমলিন হইল।

শ্বের হরি" ইত্যাদি। হরি-ছরি!
কুলবতী হইয়া (আমি) কি (উপার) করিব!
আদিনার ঐক্তফের সেই (প্রসিদ্ধ ধ্বজ-বজাঙ্গ্রচিক্তব্রুক্ত) পদ-চিক্ত (রিংলাছে)। (ঐক্তফের
চরণ বাতীত অন্ত কাহারও চরণে ধ্বজ-বজাঙ্গ্র্ণ
ইত্যাদি চিক্তনা থাকার, তাদৃশ চরণ-চিক্ত দর্শনে গুরুজনেরা রঞ্জনীতে আমার গৃহে ঐক্তফের আগমন
এবং ওক্থারা আমাকে নি:সন্দেহে অসতী বলিয়া
বৃষিতে পারিবেন)।

৭ — ৮। "গুরুজন" ইত্যাদি। তথন (আমি)
গুরুজনের ভরে সেই চরণ-চিহ্ন (গোমর-জ্বাদি দারা
অঙ্গন-লেপনের ছল করিয়া) লেপিতে চাহিলাম;
কিন্ত বিশেষ বিরীতি অর্থাৎ অনভ্যাস বলিয়া
লেপিতেও পারিলাম না। (ধ পুথির পত্র-পার্ধে ছর্বোধ্য

'বিরিতি' শব্দের অর্থ—'লেপনক্ত রীতং নান্তি' লিখিত আছে)।

৯—১০। "সংশ্রম" ইত্যাদি। (আমার)
ভয় হইল; মন অনবরত ঘুরিতে লাগিল অর্থাৎ
কোন উপায় উদ্ভাবন করিতে পারিল না; (কিন্তু
সোভাগ্য-ক্রমে) আমার নয়নের জল-ধারা সেই
ভয় দূর করিল অর্থাৎ আমি অনভ্যাদ হেছু লেপন
ছারা শ্রীক্রফের পদ-চিক্ল বিলুপ্ত করিতে না পারিলেও
আমার অশ্রুজল অবিরলধারে পতিত হইয়া শ্রীক্রফের
চরণ-চিক্লপ্তলি ধুইয়া ফেলিল।

১:—১৪। "যে পথে" ইত্যাদি। রজনীতে রতি-চোর অর্থাৎ প্রচ্ছন্নকামুক প্রীকৃষ্ণ যেই পথে গেলেন, সেই পথে (তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে) প্রীরাধার (সমস্ত) মনোরথও গমন করিল; (কেবল) তাঁহার দেহ যেন সামান্ত চৈত্তন্ত-মাত্র প্রকাশিত করিয়া রহিল; (অর্থাৎ প্রীরাধার সামান্ত চেতনা-শক্তি থাকিলেও অন্তমনস্কতা হেতু তাঁহার কোন বিষয়েরই বিশেষ অন্তভূতি রহিল না)—কবিশেখর (প্রীরাধার) প্রেম বিচার করিয়া (এই কথা) কহিতেছেন।

দিনান্তরে।

थानमी ।>

সধিং—সে সব কহিতে লাজ।
যে করে রসিক-রাজ॥
আজিনা আওল সেহ।
হাগ চললুঁ গেহ॥
ও ধরু আঁচর ওর।
ফুরল কবরি মোর॥
টীঠ নাগর চোর।
পাওল হেম-কটোর॥
ধরিতে ধরল তার।
তোড়ল নধের ঘার॥

চকোর ও চপল চাঁদ। পড়ল প্রেমের ফাঁদ॥ কবি বিভাপতি ভাগ। পুরল দুহুঁক কাম॥৬৯॥৭৩২॥

পঠিক্তির

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সখি হে' খ, খ। ৩। 'চকোরে' ক, খ,
প-র-সা। ৪। 'দোহক' খ, খ।

টীকা

৭—৮। "তীঠ" ইত্যাদি। চোর অর্থাৎ পর-ধনের অপহারক ধৃষ্ট নাগর (অঞ্চল অপসারিত করার) অর্থের কটোরা প্রাপ্ত হইল। (ন্তন-ছরের উল্লেখ না করিয়া উহা অর্ণ-কটোরারপে বর্ণিত করার অতিশ্রোক্তি অলকার হইয়াছে)।

১১—১২। "চকোর" ইত্যাদি। চকোর অর্থাৎ প্রীক্ষণ্ড চঞ্চল চাঁদ অর্থাৎ প্রীরাধার ইতন্ততঃ সঞ্চালিত বদন —উভরে প্রেথমের ফাঁদে পতিত হইল। (অর্থাৎ চক্র যদিও প্রেথমে চকোরের নিকট হইতে নিজের স্থধা-ভাণ্ডারটিকে রক্ষা করার জন্ত কিংবা চকোরকে বঞ্চিত করিয়া কৌতুক দেখার জন্ত ইতন্ততঃ সঞ্চলন ধারা চকোর হইতে আয়্ম-রক্ষা করিতেছিল, কিন্তু শেষে উভয়ের অন্তর্কা করিতেছিল, কিন্তু শেষে উভয়ের অন্তর্কা করিতে বাধ্য হইল।)

তথা রাগ।>

যাইতে যমুনা-সিনানে।
সক্ষহিং ফাল সমানে।
অলখিতে আওল কান।
হাম তব বন্ধ বয়ানা।
ননদিনি আগে আগে যায়।
ভিহিঁ কিছু কহিতে না পায়।

ও বর বিদগধ নাহ।
ইথে বে করল নিরবাছ। এছ।
পুন পিছে পিছে গেও সেহ।
উলটি হেরিতেং শ্যাম-দেহ।
অলখিতে চুম্বন কেল।
ভাবে অবশ তমু ভেল।
বিহি দিল কণ্টক হাথেং।
চললিভূঁ অধমক সাথে।
জ্যানং কহে সছে কি পরাণ।।৭০০।।

পাঠান্তর

)। हेरा প-র-সা পুথির ১২०९ সংখ্যক পদ। २। 'অঙ্গহি' প-র-সা। ৩। 'নয়ান' প-র-সা। ৪। 'হেরিয়ে' ক। ৫। 'হাভে' ক। ৬। 'আনদাস' ক, প-র-সা।

मिना खदत।

ভূপালী ।> -

একসরিং যাইতে যামুন তীর।
অলখিতে আয়ল শ্যাম-শরীর॥
অসম্বরে ছিল মোর অক উদাস।
কত বেরি ছেরি হেরি মৃছ হাস॥
এ সখি এ সখি অপরুপ কাজে।
দীঠহি দীঠ পড়ল রহি লাজে॥
আগে আগে অমুসরি ফিরি ফিরি চায়।
বিহুসি বয়নে খণে বয়ন লাগায়॥
আন ছলে কত যে করয়ে পরিহাস।
হেন বুঝি কত কুলজা-কুল নাশ॥
ভানইতে মধুর মুরলি-রব খোর।
খসয়ে কাখের কুল্ক নীবি-নিচোল॥
কি দেখিলুঁ কি শুনিলুঁ কহনে না যায়।
ভ্যানদাস কহে পিরিতি যাহায়॥৭১॥৭৩৪॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০৮ সংখ্যক পদ।
২। 'এক সরী' ক, প-র-সা; 'এক সরে' ধ।
৩। 'যমুনা' ক, চ; 'যমুনাক' প-র-সা।
৪। 'অছরে' ক, চ, প-র-সা। মুদ্রিত পদাবলীর
'অছরে' পাঠে অর্থ-সক্তি হয় না। ৫। 'মুহ্'
(চপুথি) হলে 'মৃহ্ মৃহ্' ক, ধ, প-র-সা; 'ও
মৃহ্'ব। ৬। 'তহি' প-র-সা।

তথা রাগ।১

বরুণক দেশ রয়নিং চলি গেল।
অরুণাও অতি স্থরপতিঃ-দিগ ভেল॥
ঐছে সময়ে নিজ কেলি-নিবাসে।
বেশ কয়ল পিয়া বহু প্রতিআশেণ॥
আধাও আধ তাহে না পুরল আশ।
হৈরি বিঘিনি কত ছাড়য়ে নিশাস॥
নাহক গীতহি অতিশয় খেদ।
ভ্রানদাস কহু বিহিক সম্ভেদ ॥ ৭২॥৭৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১২০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'রজনি' ক, থ। ৩। সকলগুলি পুর্বিতেই
'অরুণা' পাঠ আছে। মুদ্রিত পদাবলির 'অরুণ' গাঠে ছন্দোভঙ্গ অনিবার্যা। ৪। 'শুভপতি' প-র-সা।
৫। 'প্রীতি আশে' ক; 'প্রিতি আসে' চ।
७। 'আধ'ক। ৭। 'না কহ'ব।

টাকা

>--২। "বরুণক" ইত্যাদি। রজনী বরুণের দেশে অর্থাৎ বরুণাধিষ্ঠিত পশ্চিম দিকে চলিয়া গেল; স্কুরপতি-দিক্ অর্থাৎ ইক্রাধিষ্ঠিত পূর্ব্ব দিক্ অত্যন্ত অক্লণ-বর্ণ হইল।

ভথা রাপ ৷>

বন্ধুর রসের কথা কি কছব ভোর।
মনের উল্লাস যত কহিল না হোর ॥
এক ছুই গণনাতে অস্ত নাছি পাই।
কপে গুণে রসে প্রেমে আরতি বাঢ়াই ।
দণ্ডে প্রহরে দিনে মাসেকে বরিখে।
যুগ মহাস্তরে কত কলপে না দেখে॥
দেখিলে মানরে যেন কভু দেখি নাই।
পদ্ম শচ্ম আদি কত মহানিধি পাই॥
ভ্রানদাস বলে ভাল মনে মনে থাক।
এড়াইতে নারিলা ঠেকিলা বিষম

পাক ॥৭৩॥৭৩৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথিব ১২১০ সংখ্যক পদ। ২। 'বাড়াই' ঘ, চ। ৩। 'মাদেকে বরিখে' হুলে 'মাদেক বরিখে' ক, প-র-সা; 'মাদেখে বরিখে' ধ; 'নাদেক বরিখে' চ।

দিনান্তরে।

धाननी ।>

একলি মন্দিরে শুন্তলি স্ক্রুবিং
কোরহি শ্যামর-চন্দ।
তবহুঁ তাকর॰ পরশ না ভেল
এ বড়ি মরমে ধন্দ॥
সম্ভনি পাওলুঁ পিরিতিক ওর।
শ্যাম স্থনাগর রসের সাগর৽
কঠিন হৃদয় তোর॥ গ্রুণ॥
কপ্তরী চন্দন অলে বিলেপন
দেখিয়ে শ্রধিক জোর।
বিবিধ কুস্থমে বাদ্ধল কররী
শিধিল না ভেল তোরণ॥

অমল কমল- বদন-মাধুরীদ না ভেল মধুপ সাথ। পুছইতে ধনি ধরণী হেরসিন হাসি না কহসি বাত॥ কিবা রতি-পতি বসতি বিষয়ে দেখিয়া দেয়লিণ ভল্প। জ্ঞানদাস কহে এ দোষ কাগার

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০১১ ও প-র পুথির ১০০১ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতলি স্থানর' স্থলে 'শুতিরা আছিলা' ও, অ। ৩। 'ভাকর' (প-র-সা পুথি) ছলে 'ভাহার' ক, ও, অ, চ, প-র। ৪। 'রনের সাগর' (প-র পুথি) ছলে 'শেশব কিবা' ক, ও, অ, চ, প-র-সা। 'শুম স্থানার' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ও পুথিতে নাই। ৫। ক, ২, অ, চ পুথিতে 'শু' নাই। ৬। 'লোর' (প-র-সা পুথি) ছলে 'উলোর' ক, ও; 'মোর' অ, চ; 'কজরা চল্দন' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে নাই। ৭। 'তোড়' প-র-সা। ৮। 'অমল' ইত্যাদি ছলে 'জমল বদনকমল-মাধুরী' ক, ২, অ, চ, প-র-সা। ৯। 'ধরসি' ও। ১০। 'দেওলি' ক। ১১। 'দেবে দে' (প-র পুথি) ছলে 'দেবে' ক, ২, অ, চ, প-র-সা।

টাকা

৫—१। "সন্ধান" ইত্যাদি। হে স্থি! তোমার প্রেমের সামা পাইলাম অর্থাৎ তোমার প্রেমের দোড় কত দ্র, ব্রিতে পারিলাম! নারক-শ্রেও ঐক্ত রুপের সমুদ্র; (কিছ্ক) তোমার হালম কঠিন! (অর্থাৎ তুমি অপ্রেমিকা ও কঠিন-হালয়া বলিয়াই ঐক্তরক সজ্যোগ-রদে বঞ্চিত করিয়াছ)। "খ্যাম স্থনাগর শৈশব কিবা" পাঠের অর্থ—"প্রনাগর শ্রাম কি শিশু অর্থাৎ রুসানভিজ্ঞ ? না—ভোমার হালয় কঠিন ?" এই অর্থ করিলে 'স্ক্রিল পাঞ্চি পিরিত্তিক ওর'

বাক্যের বিশেষ সার্থকতা থাকে না এবং 'গ্রাম' শব্দের 'স্থনাগর' বিশেষণটিও সম্বত হর না; স্থতরাং প-র পুথির পাঠই সমীচীন বোধ হয়।

युश्हे ।)

সজনি ও কথা কহিলং নয়। শ্রাম স্থনাগর গুণের সাগর পড়িলু কোরে ঘুমায় ॥ গ্রু ॥ কত পরকারে চেত্রন করায়ুণ চেতন না ভেল মোর। অভিমান করি পাশ মোড়িঃ ফেরিৎ সুখে ত চলন ভোর। উঠিলুঁ জাগিয়া দেখি নাহি পিয়া सपरा वाजिन भाग । আহামরি মরি মদন-বাণেতে জর জর ভৈ গেল। সে সৰ সোঙ্গি চিত বেয়াকুল কেমনে আছয়ে পিয়া। জ্ঞানদাস কহে এ কথা ১১ শুনিতে বিদরয়ে মোর হিয়া ॥৭৫॥৭৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুৰির ১২১২ ও প-র পুৰির ১৩।০৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কথন' প-র। ৩। 'কররে' ক; 'করারে' প-র। ৪। 'মোড়া' ক, চ; 'মুড়ি' প-র। ৫। 'ফরি' ক, ঘ, চ; 'রহি' প-র। ৬। 'হুথেতে' ক, খ, চ। ৭। 'বাজরে' ক, খ, প-র-সা। ৮। 'হোই' প-র। ৯। 'চিত বেয়াকুল' ছলে 'বিভবে আকুল' ঘ। ১০। 'কেমনে আছরে' ছলে 'বেজন করিছে' প-র। ১১। 'কথা' হলে 'সব' প-র।

मिनोन्डरत् । उथा ज्ञान ।>

এক দিন বাইতে ননদিনী সনে।
খ্যাম বন্ধুর কথা পড়ি গেল মনে॥
ভাবে ভরল মন চলিতে না পারি।
অবশ হইল তমু কাঁপেং থরহরি॥
কি কহিব সখি সে হইল বড় দায়।
ঠেকিলুঁ বিপাকে আর না দেখি উপায়॥
ননদী বোলয়েহে লোঁ কি না তোর হৈল।
কহে চণ্ডীদাস উহার কপালে যে

ছিল ॥৭৬॥৭৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২১৩ সংখ্যক পদ। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হেঁলো' ক; 'হেন' প-র-সা।

> मिनांखरत । धननो ।>

একলি আছিলুঁ হাম গাঁথইতে হার।
সগরি খসল কুচ-চার হামার ॥
তৈখনে হাসি হাসি আওল কান্ত।
কুচ কিয়ে ঝাঁপব নিবিহক বন্ধ ।
হাসি বহুবল্লভ আলিজন দেল।
ধৈরজ লাজ রসাতল গেল ॥
করে কি বুঝায়ব দুরহি দীপ।
লাজে না যাওত এ কঠিন জীব ॥
বিদ্যাপতি কহে মরমক কাজ।
জিবন গোঁপলি যাহে তাহে কিয়ে

পাঠান্তর

नाम ॥११॥१८०॥

)। ইহা প-র-সা পুধির ১২১৪ সংখ্যক পদ। । 'নিবিহক বন্ধ' ফুলে 'কিলে নীবিবন্ধ' কঃ । 'क्लार्टिंग का हा 'वृक्षां छव' का €। 'या छल' का ७। 'क्लोवन' का १। 'मालिर्टिंग अन्द्र-मा।

ननिङ ।>

আজুক শয়নে ননদিনী সনে শুভিয়া আছিলুঁ সই।

ষে ছিল করমে^২ বন্ধুর ভরমে মরম ভোহারে কই**॰**॥

নিন্দের আলসে বন্ধুর ধাধসে তাহারে করিলুঁ কোরে।

ননদী উঠিয়া রুধিয়া বলিছে বন্ধুয়া পায়লিং কারে॥

এত টাঠপনা জানে কোন জন।
বুঝিলুঁ তোহারি রীতি।
কুলবতি হৈয়া পর-পতি লৈয়া

এমতি করহ নিতি।

যে শুনি প্রাবণে পরের বদনে নয়নে দেখিলুঁ তাই।

দাদা ঘরে আইলে করিব গোচরে পেণেক বিরাক্ত রাই ॥

নিঠুর বচনে কাঁপিছে পরাণে* মরিয়া রহিলুঁলালে।

ফিরাইয়া জাঁথি গরবাথাকি^৮ সদনে আমারে ভাজে^৯॥

এক হাতে সখি কচালিয়ে গাঁথি নয়ানে দেখিয়ে আর ।

চণ্ডীদাসে কয় কিবা কুল-ভয় কান্তুর পিরিতি ধার ॥ ৭৮॥৭৪১॥

পাঠান্তর

)। ইহা প-র-সা পৃথির ১২১৫ সংখ্যক পদ।
 १। 'মরমে' ক, খ। ৩। 'ভাহারে কই' ক;
 'कहিরে ভোই' প-র-সা। ৪। 'পাইলি' ক, খ।

। 'এলে' ক। ৬। 'বিয়াল' (প-র-সা পুথি)
 য়লে 'বিরাল' ঘ, চ। ৭। 'পরাণ' ক, ধ।
 ৮। 'গরবধাকি' ঘ। ৯। 'বজে' ক। ১০।
 'কচালিয়া' ক, ধ।

ভণা রাগ।১

আর এক দিন সৃষ্টি শুভিয়া আছিলুঁ।
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধু নাম শুনি সেই উঠিল রুষিয়া।
কহে তোর বন্ধু কোথা গেল পলাইয়া॥
সভী কুলগভী-কুলে জালি দিলি আগি।
আছিল আমার ভালে তোর বধ ভাগিই॥
শুনিয়া বচন তার অথির পরাণি।
কাঁপয়ে শরীর দেখি আঁখির ভাজনি॥
কেমভেই এড়াব স্থি সে পাপিনীরই হাথে।
বনের হরিণী থাকে কিরাতের সাথে॥
বিজ্ঞ চন্ডীদাসে বলে পিরিভি এমভি।
যার যত জালা তার ভত্ই

পিরিতি ॥৭৯॥৭৪২ ॥

ইতি সম্ভোগ-স্বপ্ন-রসোদগারঃ। ইতি ষষ্ঠ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বধ ভাগী' ক; 'বধের ভাগি' প-র-সা। ৩। 'কেমনে' ক। ৪। 'ভাপিনীর' ক।

অথাভিদারামুরাগঃ।

শ্রীগৌরচন্দ্র।

কাৰোদ।>

গৌরাজ-চরিত কিছু কহনে না যায়। পুরব সোঙরিং পহু মৃতু মৃতু ধার॥ নিরজনে কছে চল স্থরধুনী-তীরে।
পশুপতি পূজিব বিপদ যাবে দুরে॥
ঐছন° বচন সভে রচন করিয়া।
আগোর° চন্দন ফুল হস্তেত করিয়া॥
নিজ জন সজে চলে গোরা বিজ-মণি।
কহে বিশ্বস্তর গোরার যাইয়ে

নিছনি 13॥৭৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'ন্মঙরি' চ। ৩। 'ঐছে' ক, প-র-সা।
৪। সকল পৃথিতেই 'অগৌর' পাঠ আছে; ইহা 'অগুরু' শক্তের পরিবর্তে ব্যবহৃত হইয়াছে।

কামোদ।>

সবহুঁ বধুজন চলু বুন্দাবন

গৌরি আরাধন লাগি।

ঐছন মুগধ বচন রচন করিং

গুরুজন অমুমতি মাগি ॥

হরি হরি কাহাঁ। শিখলি পরকার।

গুরুজনে বাঁচি মিছই বচনামৃতে

দিনহি করলিং অভিসার ॥ ধ্রুং ॥

বেশ বনায়ত ননদি শুনায়ত

চতুর সথি সঞ্জে বাত।
গৌরিং আরাধি মনোরথ পুরব

পশুপতি-নন্দন হাধ্য ॥

বাসিত কুন্ম কপ্রিত্য তাত্মল

ভরি লেই ২২ চন্দন কটোর।

গোবিন্দদাস পন্থ দরশায়ত

যাহাঁ নাহি কণ্টক-আচোর ২০ ॥ ২॥ ৭৪৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪৫•।১২৩০ ও প-র পুৰির ১৫।৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'রচন করি' ব্লে 'ধনি শুক্কবনে' প-র। ৩। 'তৈধনে' প-র।
৪। 'কাহে'ক। ৫। 'চললি' প-র। ৬। 'বনারতি'
প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ৭। 'শুনারতি' প-র-সা
১২৩০ সং পদ। ৮। 'আফু গৌরি' প-র-সা ১২৩০
সং পদ। ৯। 'মনমধ' প-র-সা ১২৩০ সং পদ।
১০। 'সাধ'ক, প-র-সা। ১১। 'কর্প্র' প-র-সা।
১২। 'কেটক আঁচোর' ধ; 'কন্টক চোর' প-র-সা;
'কঠ আচোর' প-র।

তথা রাগ।১

গৌরি আরাধন ছল করি স্থন্দরি

মীললিং নাগর সজে।
আগুসরি নাহ রাই-কর ধরি তহিঁ
আনল কৌ ভুক-রঙ্গে॥
কুণ্ডক তারে কুঞ্জ অতি শীতল
বহতহি মলয়-সমীর।
কোকিল কুহরত কপোত ফুকারত
চৌদিশে শিধিকুল ফীরং॥
রাধা-মাধব কেলি-বিলাস।
দোহেঁ দোহাঁ বদন নেহারি ঘন চুম্বয়ে
কতন্ত্রঁ হাস পরিহাস॥ গ্রুণ॥
চন্দন কুম্ম-হারণ সব স্থিগণ
দেয়ত কামুক অজে।
গ্রুহন সময়ে কবন্ত্র্ রাধামোহন

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মিললি' চ। ৩। 'কির' ক, প-র-সা। ৪। 'ছঁহে ছঁহা' ক; 'ছছ দোহার' প-র-সা। ৫। 'কুছুম্হার' ক। ৰভারী ।১

রাই কামু নিকুঞ্জ-মন্দিরে।
বিসিয়াছে বেদীর উপরে ॥
হেমমণি-খচিত তাহাতে।
বিবিধ কুম্ম চারি ভিতে ॥
সখীগণ চৌদিগে বেড়িয়া।
বিসিয়াছে তুহুঁ মুখ চাঞা ॥
কুণ্ডের পুরুবে সেই কুঞ্জ।
যাহা বেঢ়ি মধুকর গুঞ্জ॥
মলর-পবন বহে তায়।
তরু পর শারী শুক গায়॥
রাই কামু সে শোভা দেখয়ে ।
এ যতুনন্দন নিরখয়ে ॥৪॥৭৪৬॥
সত্র সম্ভোগ-পদং যথাসভবং গেয়ম্।
ইতি সপ্তম-পর্বঃ।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুণির ১২৩৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রচিত' ক । ৩ ৷ 'বেড়ি' অ, চ । ৪ ৷ 'দেখর' প-র-সা। ৫ ৷ 'নিরখর' প-র সা।

অথ আক্ষেপান্তুরাগঃ। শ্রীগোরচন্দ্র:।

यहरे ।>

গোরা-অনুরাগে মোর পরাণ কাতরে।
নিরবধি ছল ছল আঁখি-জল করে ।
গোরা গোরা করি মোর কি হৈল বিয়াধি।
নিরবধি পড়ে মনে গোরা গুণনিধি ।
কি করিব কোথা যাব গোরা-অনুরাগে।
অনুখণ গোরা-প্রেম ছিয়ার মাবে জাগে ।
গৌরাজ-পিরিতি খানি বড়ই বিষম।
বাস্থ কহে নাহি রহে কুলের ধরম ॥>॥৭৪৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৩৬ সংধ্যক পদ। ২। 'ঝুরে' প-র-সা। ৩। 'অফুক্ষণ' ক।

शमनी ।>

রূপ লাগি আঁখি ঝুরে গুণে মন ভোর। প্রতি অঙ্গ লাগি কান্দে প্রতি অঙ্গ মোর ! হিয়ার পরশ লাগি হিয়া মোর কান্দে। পরাণ পিরিতি লাগিং থির নাহি বান্ধে॥ সোই কি আর বলিবও। যে পুনি॰ করিয়াছি মনে॰ সেই সে৬ করিব।এ॥ দেখিতে যে স্থুখ উঠে কি বলিব ত। । দরশ পরশৃণ লাগি আউলাইছে গাণ্য ১২ হাসিতে খসিয়া পড়ে কত মধুধার। লত্ত লত্ত হাসে পত্ত পিরিতির১৩ সার১৪॥ গুরু গরবিত মাঝে রহি সখী সঙ্গে । পুলকে পূরয়ে ততু খ্যাম-পরসজে। পুলক ঢাকিতে করি কত পরকার। নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার ৮ ঘরের যতেক সভে ১ করে কাণাকাণি। জ্ঞান কহে লাজ ঘরে ভেজাইলাম

পাঠান্তর

व्याश्वि ॥२॥१८৮॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৭।১২৩৮ ও প-র পুথির ১৪।৩৭ সংখ্যক পদ। 'ধানন্দা' হুলে 'ত্রীরাগ' প-র। ২। 'পরাণ পিরিতি লাগি' হুলে 'পরাণ-পুতলী মোর' প-র-সা। ৩। 'সোই' ইত্যাদি পংজির হুলে 'কি আর বলিব আমি কি আর বিলব' প-র-সা। 'সোই' ইত্যাদি প্রব-কলিটি প-র পুথিতে লাই। ৪। 'পুনি' হুলে 'পণ' ক; 'পোণ' প-র-সা। ৫। 'মনে' হুলে 'আমি' প-র-সা। ৬। 'সেই সে' হুলে 'সে পোণ' প-র-সা।

'দেখিতে' স্থলে 'কছিছে' প-র-সা, প-র। ৮। 'উঠে' স্থলে 'বাড়ে' প-র সা। ৯। 'কি বলিব তার' তা' স্থলে 'কি কহিব কার' প-র-সা; 'কি বলিব তার' প-র। ১০। 'দরশ পরশ' স্থলে 'সে অঙ্গ পরশ' প-র-সা; 'সে রস পরশ' প-র। ১১। 'আউ-লাইছে গা' স্থলে 'আউলাইছে গার' প-র-সা; 'দগধে হিরার' প-র। ১২। অতঃপর প-র-সাও প-র পুথিতে নিম্নিধিত অতিরিক্ত পংক্তিছর দৃষ্ট হয়; যধা.—

'দেখিতে না দেখে আঁথি শ্রাম বিহু আন। ভরমে আনের কথা নাহি শুনে কাণ॥' প-র পুথিতে 'নাহি শুনে কাণ' হলে 'না কহে বয়ান' পাঠ আছে।

জভঃপর প-র পুথিতে নিম্নিথিত ছুইটি কলি হারা পদটি সম্পূর্ণ করা হইয়াছে, যথা,—

'শুনিতে না শুনে কাণ আন প্রস্থা।
সোঙরি সন্তনে মোর প্লকিত অজ ।
জ্ঞানদাস কহে মুঞি কারে কি বলিব।
, বন্ধর লাগিয়া আমি সাগরে পশিব॥'
১৩। 'পিরিতির' স্থলে 'অমিয়ার' প-র-সা। ১৪।
অতঃপর প-র-সা পুনিতে নিম্নলিখিত কলি ধার।
পদটি সম্পূর্ণ করা হইয়াছে, য্থা,—

'यञ्नाथ দাস করে শুন গো সঞ্জনি।
পিরিতি লাগিয়া দিব যৌবন নিছনি॥'
'শুক গ্রুবিত' ইত্যাদি অবশিষ্ট পংক্তিশুলি প-র-সা
প্রিতে ১২৩৮ সংখ্যক স্বতন্ত্র পদরূপে লিখিত ছইয়াছে। ১৫। 'মাঝে' স্থলে 'সজে' প-র-সা। ১৬।
'স্থী সজে' স্থলে 'নানা রজে' প-র-সা। ১৭। 'ঘরের
য়তেক সভে' স্থলে 'ঘরে পরে সব লোক' প্রাঃ হস্তলিখিত পুথি; 'দেখিয়া ঘরের লোক' প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

সই এবে বলি কি আর কুল-ধরমে। দীঘল নয়ানেরং বাণ হানিলে মরমে॥ সই এবে বলি না রহে পরাণ।

জাগিতে খুমিতে দেখি বাঁশিয়ার বরান॥

সই এবে বলি ভার কি সন্ধান।
ভাকিয়া মার্যাছে বাণ যেখানে পরাণ॥

সই এবে বলি কি রূপ দেখিলুঁ।

দেখিয়া মোহন রূপ আপনাং নিছিলুঁ॥

সই এবে বলি কি রূপ সাজনি ।

যাচিয়া যৌবন দিব শ্যাম-রূপের নিছনি॥

সই এবে বলি মনে ভাই জাগে।

গোবিন্দদাস কহে নব অমুরাগে॥ ৩৪৭৪৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ঞাথির' প-র-সা। ৩। 'বসিয়া' ক; 'বাসিয়ার' ড়; 'বাসিয়ার' চ। ৪। 'মারিয়াছে' ঝ, ড়, চ।
৫। 'আপেনে' ক। ৬। 'সই এবে বলি' ইত্যাদি
কলিট ড় পুথিতে নাই। ৭। 'তাহাই' ক, চ।

সখ্যক্তিঃ।

ধানশী ৷১

স্থানির ধরবিং বচন হামার।
কানুক প্রেম-রভন পুন ও গোপবি
বেক্ড করবি কুলাচার॥
বৈরক্ত লাজ করণঃ ভুয়া সমূচিত
শূনবি গুরুজন-ভাষ।
আপনকং মান আপে পুন রাখবি
বৈচ্ছে নহত উপহাস॥
ভুয়া সম কো পুন আছরে ত্রিভুবন
কুলাললবভিং গুণবস্ত।
গ্রহন সূহু কুল হেরইতে উজোর
ধন-জনা গৌরব-জন্ত।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৪০ ও প-র পূথির ১৪।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'গুনবি' প-র-সা। ৩। ধন' প-র-সা। ৪। 'করবি' প-র। ৫। 'আপক' ক। ৬। 'কুল শীল লাল' প-র; 'কুলশীল' ক, চ, প-র-সা। १। 'ধন' পর। ৮। 'ভাব অস্তরে' স্থলে 'ভাবাস্তর' প-র। ৯। 'হোয়ত' ক। ১০। 'হোয়ব অস্তর' প-র। ১১। 'আনতহি' স্থলে 'আনহি' প-র-সা। ১২। 'চীত' স্থলে 'চীতে' প-র। ১০। 'বিপরীত' স্থলে 'বিপরীতে' প-র।

টাক

৮—১১। "তুরা" ইত্যাদি। ত্রিভ্বনে তোমার সদৃশ কুলশীলবতী ও গুণবতী আর কে আছে? (তোমার ক্লার) এই প্রকার উভয় কুল অর্থাং আমি-কুল ও পিতৃ-কুল দেখিতে (কাহার) উজ্জ্বল ? (এবং কাহার এরপ)ধন, জ্বন ও গৌরবের সীমা অর্থাৎ পরাকাঠা ?

১২—১৫। "ভাব" ইত্যাদি। যথন (ভোমার)
ফ্রন্মে অন্থরাগ অন্থরিত হইবে, (তথন) অন্থ বিষয়ে
চিত্ত অর্পণ করিবে। গোবিক্ষদাস কহিতেছেন—
প্রেম ঐক্সণ নহে, অন্থরাগের গতি বিপরীত অর্থাৎ
উহাকে বাধা দিতে চাহিলে উহা আরও প্রবল হইরা
উঠে।

शननी ।>

সখি হে ফিরিয়াং আপন ঘরে যাও। জিরজে মরিয়া॰ বে আপনা খাইয়াছে। তাহেং ভূমি কি আর বুকাওণ ॥ঞা ॥ নয়ন-পুতলী করি লইলুঁ দ মোহন রূপ
হিয়ার মাঝারে করি প্রাণ।
পিরিভি-আগুনি স্থালি সকলি পোড়াইয়াছি
জাতি কুল শীল অভিমান দ
না জানিয়া>• মৃড় লোকে, কি জানি কি বলে মোকে
না করিয়ে>• প্রাবণ গোচরে।
প্রোত-বিধার জলে এ তমু ভাসাইয়াছি
ক করিবে কুলের কুকুরে ॥
খাইতে শুইতে বৈতে
ত আন নাহি লয়
৽ বিনে আন

মুরারি গুপতে

কহে পিরিভি এয়ভি

ইলে
ভার গুণ
ভাব গ্রাণ
ভাব গ্রাণ
ভাব গ্রাণ

পাঠান্তর

১। ইছা প র-সা পুথির ১২৪১ ও প-র পুথির ১৪।২২ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হলে 'ভাটিয়ারী' ক, থ, ব, চ। ২। 'ফেরিয়া' প-র। ৩। 'মরিল' প-র-সা। ৪। 'থাইল সে' প-র-সা। ৫। 'ভারে' প-র। ৬। 'হুধাও' প-র-সা। ৭। প-র-সাছাড়া অস্তান্ত পুথিতে 'শু' নাই। ৮। 'লইল' ক; 'লইয়াছি' প-র। ৯। 'পোড়াঞাছি' ক, প-র। ১০। 'করিবে' থ। ১২। 'ভাসাঞাছি' ক, প-র-সা, প-র। ১০। 'নিডে' প-র-সা; 'পথে' প-র; 'রৈডে' শব্দ থ ও ব পুথিতে নাই। ১৪। 'নাহি লয়' হলে 'মাছিক' প-র। ১৫। 'মনে' প-র। ১৬। 'গুপড' ক; 'গোপডে' থ। ১৭। 'পিরিভি এমডি' হলে 'এমন পিরিভি' প-র-সা। ১৮। 'য়ল' প-র-সা। ১৯। 'ভিনলেক' হলে 'এজলতে' প-র-সা।

शंबनी ।>

কামু-অমুরাগে ঘরে রহিতে না পারি। কেমনে দেখিব তারে কহু না বিচারি। গুরুজন-নয়ন-পাপগণ বারি।
কোনে মিলিব সধী নিশি উজিয়ারিং॥
কামুর পিরিতি হাম ছাড়িতে নারিব।
রহিতে না পারি ঘরে কেমনে যাইবং॥
শুনি কহে সধী শুন মো সভার বোলং।
সবহুঁ ঘুমায়ব নহ উতরোল॥
বৈছনং যামিনি কোমুদিং ঘোর।
তৈছনং বেশ বনায়বং তোর॥
এতহুঁ কহই১০ করু বেশ বনান।
ধনি অমুরাগিণি জ্ঞানদাস ভাণ॥৮॥৭৫২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিশি উজিয়ারি' স্থলে 'কহ না বিচারি'
প-র-সা। ৩। 'মিলিব' প-র-সা। ৪। 'শুনি'
ইত্যাদি স্থলে 'শুনি কহে সব সধী শুন মোর
বোল' ক, ঘ, চ; 'শুনি কহে সধীগণ শুন' ইন্ড্যাদি
প-র-সা। ৫। 'বৈছনে' ক। ৬। 'কামিনি'
ক, ধ, চ। ৭। 'তৈছনে' ক। ৮। 'বনারত'
ক। ৯। 'এতহি' ক, ধ। ১০। 'এতহ কহই'
স্থলে 'কহি সধীগণ' প-র-সা।

रुधा ब्राम ।>

কুন্দ-কুণ্ডমে জন্ত কবরিক ভার
হৃদয়ে বিরাজিত মোতিম-হার ॥
চন্দন-চরচিত রুচির কপুর ।
আক্ষতি অল অনল ভরিপুর ॥
চান্দনি রঞ্জনি উজোরলি গোরি ।
হরি-অভিসার-রত্তস-রসে ভোরি ॥ ধা ॥
ধবল বিভূষণ অস্বর বনই ।
ধবলিম কৌমুদি মিলি তমু চলাই ॥
কেরইতে পারজন-লোচন ভূদ ।
রক্ষপুত্লি কিয়ে বস মহা বুর ॥

পূরতি মনরথ গতি অনিবার। শুরুকুল-কণ্টক কি করয়ে পার॥ স্থরত-শিঙ্গার-কিরিতি সম ভাস। মিললি নিকুঞ্জে কহ গোবিন্দদাস॥৭॥৭৫৩॥

পাঠান্তর

>। এই পদটি ৩০৫ সংখ্যক পদরূপে ২ন্ন শাধার পল্লবে পুর্বের উদ্ধৃত হইরাছে; স্থতরাং পাঠাস্তর ও টাকা উক্ত পদে দইবা।

कारमान ।>

আদরে আগুসরি রাই হাদয়ে ধরি জানু উপরে পুন রাখি। নিজ কর-কমলে চরণ-যুগ মোছই হেরই২ তির থির আঁখি॥ পিরিতি মুরতি অধিদেবা । যাকর দরশনে সব ছখ মীটল সোই আপনে করু সেবা॥ **হিমকর** - শীতল · নীরহিণ গ্রাতলণ কর-তলেদ মাজই মুখ। मञ्ज निमिन्ति न মৃত্ব মৃত্ব বীজই পুছই পদ্ধকি ছখ ॥ অঙ্গুলে চিবুক ধরি বদনে তামুল পুরি মধুর সন্তাবই কান। গোবিন্দ দাস ভণ নিভি নব নৌভুন>• वाहेकः व्यभिया-भिनान ॥৮॥१०८॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'হেরইভে' প-র-সা। ৩। 'পিরিভি' ইত্যাদি
ছলে 'সন্ধনি পিরিভি' ইত্যাদি প-র-সা। ৪। 'ছরে পেও' প-র-সা। ৫। 'হিম সম' প-র-সা। ৬। 'নির গহি' প-র-সা। ৭। 'ভিতল' চ। ৮। 'নিজ করে' প-র-সা। ৯। 'পুছই' ক; 'পুছত' প-র-সা। > । 'নিতি নব নৌতুন' স্থলে 'নাহ রসিক পণ' প-র-সা। >>। 'রাই করু' প-র-সা।

উভয়োত্তরামুরাগো যথা।

ভোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম শুন বিনোদ-রায়।
তোমা বিনে মোর চিতে কিছুই না ভায় ॥
শয়নে স্থপনে আমি ভোমার রূপ দেখি।
ভরমে ভোমার রূপ ধরণীতে লেখি॥
গুরুক্তন মাঝে যদি থাকিয়ে বসিয়া।
প্রসক্তন নাম শুনি দরবয়েই হিয়া॥
পুলকে পূর্য়ে অক আঁখে করে জল।
ভাহা নিবারিতেই আমি হইয়ে বিকল॥
নিশি দিশি বন্ধু ভোমায় গাশরিতে নারি।
চণ্ডীদাসে কহে হিয়ার রাথ শ্বির করি॥৯৯৭৫৫॥
পাঠাক্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১২৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'দরপদ্ধে' থ। ৩। 'নেহারিতে' ক।

তিয়োগা ধানশী ৷>

স্বন্দরি আমারে কহিছ কি।

তোমার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে
বিভার হইয়াছি॥

থির নহে মন সদা উচাটন
সোরাথ নাহিক পাই।

গগনে ভূবনে দশ দিগ-গণে
ভোমারে দেখিতে পাই॥
ভোমার লাগিয়। বেঁড়াই শুমিয়া
গিরি নদী বনে বনে।
খাইতে শুইতে আন নাহি চিতে
সদাই জাগরে মনে॥

শুন বিনোদিনি প্রেমের কাহিনী পরাণ বৈরাছে বান্ধা। একই পরাণ দেহ ভিন ভিন জ্ঞান কহে গেল ধান্ধা^২ ॥১০॥৭৫৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ধানদা' ঘ, প-র-সা।

শীরাগ ।১

ষেমত পিরিতি ভোমাতে আমাতে ভালে দে জানহ তুমি। ভাহ্মর ভাওই লোক-চরচাতে এমতি থাকিব আমি॥ আসিবা যাইবা দুরেতে থাকিবা না চাবে আমার পানে। বড়ই বিষম গুরু তুরজন (मिथिटन मत्ररत्र প্রাণে॥ তুমি যদি বল পরাণ-বন্ধু ভবে কুলে বা আমার কি। ইঞ্চিত্ত পাইলে সব সমাধিয়াণ क्रा ७माश्रम पि॥ সে ছখ চাহিতে এ হুখ বড়ই কহি কেহো নাহি দেশী। গোপভ পিরিভি রাখিতে যুগভি कटर त्रममग्री मांजो ॥>>॥१৫१॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৭ সংখ্যক পদ।
 ই। 'ভারই' ক, প-র-সা। ৩। 'সমারিরা' থ।
 ৪। 'এ ছথ চাহিতে' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে—
'এ ছথ কহিতে সে ছথ বড়ই
কলম্ব রহিবে শেষে।
গোপত পিরিতি রাথহ সুবৃতি
কহরে গোচন দানে।'—ক, চ পুথি।

'সে ছব চাহিতে এ ছব বড় বে
কহি কোথা নাহি দেশে।
গোপত পিঞিতি রাবহ যুবতি
কহে বসময় দাসে ।'----প-র-না পুৰি।

ऋहिनो । ३

দোঁহে কহি দোঁহ অমুরাগ।

ছহুঁ প্রেম ছই হৃদেং জাগ ॥

দোঁহে দোঁহা করু পরিহার।
ছহুঁ আলিক্সই কত বার॥
ছহুঁ বিষাধরে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ বিগাধরে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ বিগাধরে ছহুঁ পরশংস॥
ছহুঁ হেরি দোঁহার বয়ান।
ছহুঁ জন সজল-নয়ান॥
ছহুঁ কহু মধুরিম ভাষ।
নির্থয়ে যজুনাথ দাস "১২॥৭৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরে' প-র-সা। ৩। 'কহ' ব; 'কহ' প-র-সা।

ভূপালী।১

নব অমুরাগিণি নব অমুরাগং।
মীলল ছুহুঁ তমু॰ গলে গলে লাগং॥
তহিঁ এক রক্ষিণি পরম রসাল।
ছুহুঁ গলে দেওল এক ফুলমাল॥
টুটব ভয়ে ছুহুঁ পড়ু একং বন্ধ।
দৈবে ঘটায়ল প্রেম-আনন্দ॥
স্থি-মুখ হেরইতে উলসিত ভেল।
দোহে মেলি মালাং সেই স্থি গলে দেল॥
বাহু প্সারিয়া দোঁহে দোঁহা ধরু।
দোঁহে অধরামুতে দোঁহ মুখ ভরু॥
ছুবে গেও মউর-শিশ্ও পিতবাসং।
ছুহুঁ গুণ গাওত গোবিন্দ্দাল ॥২০॥৭৫৯॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৯ সংখ্যক পদ।
২। 'অহরাগী' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'জন'
থা ৪। 'লাগি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'পজু,
এক' হলে 'পড়ি গেও' প-র-সা। ৬। 'মেলি
মালা' হলে 'গলমাল' প-র-সা। ৭। 'গীতবাস' ক।

CI RINF)

পেখলুঁ রে সখি যুগল কিশোর।
কালিদি-তীর নিকুঞ্জক ওর ॥ধ্রুং॥
নব নব° রূণ নিরুপম লাবণি
মরকত-কাঞ্চন-কাঁতি।
নারি পুরুখ তুত্ঁ লথই না পারিয়ে
অছু পরিরম্ভণভাতি॥
ঘন ঘন চুম্বনে লুবধ বদন তুত্ত্বণ
বিগলিত স্বেদ-উদ-বিন্দুদ।
হেরি হেরি মরম ভরম পরিপুরল ওবা বিধুমণি ওবা ইন্দু ২॥
সিন্দুর অরুণ চন্দন ওবিধু-মগুল
সঘনে উদিত অব১৪ নেলি।
গোবিন্দদাস কছই নব অপরুপ ১৭
রাধা-মাধ্ব-কেলি॥১৪॥৭৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫০ ও প-র পুথির ৪২।২৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' হলে 'বড়ারি' প-র। ২। প-র পুথি ছাড়া অস্তান্ত পুথিতে 'গ্রু' নাই। ৩। 'নব নব' হলে 'সমবর' প-র। ৪। 'বৌহে' ক; 'দোহ' হ, প-র-সা। ৫। 'পারই' প-র-সা, প-র। ৬। 'ঐছে' প-র। ৭। 'ছবি' প-র। ৮। 'বেদ-উদ-বিদ্দু' হলে 'বেত অরবিন্ধ' প-র-সা; 'বেদ অরবিন্ধ' প-র। ৯। 'হেরি হেরি মর্ম' হলে 'হেরইতে মর্মে' প-র-সা, প-র। ১০। 'পরিপুরিত' প-র-সা। ১১। 'বিধু থিন' প-র।

১২ 'কো' ইত্যাদি পংক্তি হলে 'কোরছি মণি করু ইন্দু' ধ, ঘ। ১৩। 'বদন' ক। ১৪। 'আধ' ক, ধ, ঘ, চ। ১৫। 'নব অপরূপ' হলে 'অপরূপ নব' ক, ধা, 'ইছ অপরূপ' প-র-সা; 'সব অপরূপ' প-র।

টীকা

৭—১০। "বন ঘন" ইত্যাদি। বারবার চুবনে উভরের বদন লুক্ক হইল; বেদজল-কণা বিগণিত হইল; (সেই শোভা) দেখিয়া দেখিয়া (স্থীদিগের) চিত্ত কে চক্রকান্ত-মণি ও কে ইল্, (ইহা ভাবিয়া) প্রান্তিতে পরিপূর্ণ হইল। (চক্রকাশ্ব-মণি চক্র-কিরণম্পর্শে জল-বিন্দু-রাজি উন্দীর্ণ করে; এ স্থলে প্রীরাধা ও প্রীকৃষ্ণ —উভয়ের বদন ম্বেদ-বিন্দু-পরিপূর্ণ হওয়ায় উভয়ের মধ্যে কে চক্র ও কে চক্রকান্ত-মণি, তৎসম্বন্ধে স্থীদিগের চিত্তে প্রান্তি উত্তে হইল। এ স্থলে 'সন্দেহ' নামক অলহার হইয়াছে।)

বিহগড়া ৷১ বিগলিত কুন্তল মণিময় কুণ্ডল রুণুঝুমু অভরণ বাজ। ঘামহিঁ অলকা তিলক বহি যাওত ঘন দোলত মণিরাজ ॥ (पथ (पथ छ्हाँ जन-(किन। হুছঁ ছুছঁ অধর-স্থারস পিবি পিবি তুহুঁ কিয়ে উনমত ভেলি ॥ ঞ্ৰ ॥ গীমহি ভুজযুগ উপর° শশোধর° কনক-ধরাধর মাঝ। অপরুপ প্রনে স্থন জমু পোলভ গগন সহিত বিজয়া**ল** ॥ **एक हत्रन-कमन मनि-नृशूद्र** मनवार मनन शृत । मनमथ-८कांटि मथन करू औहन ख्वांनराम हिटल कृत ॥১०॥१७১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৫১ সংখ্যক পদ।
২। প-র-সা পুথি ছাড়া জন্তান্ত পুথিতে 'এ' নাই।
৩। 'উর পর' ক, খ। ৪। 'শশধর' ক, খ,
প-র-সা। 'শশধর' পাঠে ছলোডক ঘটে। ৫।
'তহু' খ, ঘ,।

টাকা

৮ - ১১। "গীমহি" ইত্যাদি। (উভরের)
গ্রীবার (উভরের) ভূজ-যুগদ, ততুপরি (উভরের
বদনরূপ) শশ্বর (শোভা পাইতেছে) এবং
(শ্রীরাধার কুচ্যুগ-রূপ) স্থবর্ণ-গিরির মাঝে গগন
সহ চক্ত অর্থাৎ মুক্তাহার সহ হারের মধ্য-মণি
অপুর্ব্ধ (নিখাস)-প্রনে স্থনে ত্লিতেছে। ভূলনা
কক্তন,—

"নীল মুকুতা- হার বেকডা
শোভিত দেখিলুঁ ভাল।
বেন তারাগণ উদিত গগন
চান্দে বেটিয়া জাল॥"
—প-ক-ড, ১৯৮ সংখ্যক পদ।
'নীল মুকুতা' ইত্যাদি শ্লোকের ব্যাথ্যা ১৯৮ সংখ্যক পদের টীকার ডাইবা।

ष्ट्रभागो । ১

ছত্ঁ বসে ভোর হেরি পাঁচবাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সন্ধান॥
দেখ পুন চেতন ছত্ঁ অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুম্ব॥
বিপুল পুলক বর স্থেদ-সাঁচার ।
চির-থির মর্মে নীর অনিবার॥
কাঁপই থরহরি গদ-গদ ভাষ।
ছত্ঁ ছহাঁ পরশনে কতত্ঁ উলাস ।
ভান-আন-সন্ধ-রঙ্গে ভরু অক্ব।
কো করু অমুভব প্রেম-তরক্ব॥

নিভি নিভি ঐছন হোয়ত বিলাস। কব° হেরব রাধামোহন দাস° ॥১৬॥৭৬২॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৫২ ও প-র
পৃথির ২৫। ২৪ ও ৪২। ৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'নিরে'
ক, খ, য়, চ, প-র; 'কিয়ে' প-র-সা। ৩। 'ফ্র্ছ'
চ, প-র-সা। ৪। 'সচার' য়; 'সঞ্চার' ক, চ,
প-র-সা, প-র। ৫। 'উল্লাস' ক, খ, য়, প-র-সা।
'ফ্র্ছ' ফ্রাঁ' ইত্যাদি চারিটি পংক্তি প-র পৃথিতে
লিপিকর-ভ্রমে পরিত্যক্ত হইয়াছে। ৬। 'কব্ছ'
খ, প-র-সা। ৭।'ইহ নরোক্তম দাস' প-র।

টীকা

> — २। "ছহঁ" ইত্যাদি। পঞ্চবাণ অর্থাৎ কল্প উভয়কে সম্ভোগ-রসে মন্ত দেখিয়া (সেই অবস্থার উপযোগী) কেলিকলা লইয়া সংবোজিত করিতেছেন। (টীকাকার রাধামোহন ঠাকুর লিখি-রাছেন — এ স্থলে 'পাঁচবাণ' শব্দের অর্থ 'অপ্রাক্কত মদনী' বুঝিতে হইবে)।

রত্যন্তে মৃচ্ছ।

বিহাগড়া 1>
রাজ-স্থপ-শয়ন-নিবেশহিং স্থন্দরি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কৌতুক
অনুগত-নিধুবন-কেলি॥
অদভুত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রামজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বয় শোভন
অলখিত সহজহি হাসং।
অনধিন বাহ্-বল্লি অরু সব অলং
তে উহ রহত উদাস॥

বিগলিত অক্স-রাগ অরু অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত কেশ। রাধামোহন চিতে নিতি নিতি ভাবই ঐছন প্রোম-আবেশ ॥১৭॥৭৬৩॥ ইতি অফীম-পল্লবঃ।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫০ সংখ্যক পদ।
২। 'লয়নে নিবেশহি'ক। ৩। 'অলথিত সহজহি
হাস' প-স স্থলে 'অলথিত সহজই হাস' য়; 'হেরইতে
সহসহিঁ' য়, চ; 'হেরইতে ফহচরি হাস' য়, থ,
প∴র-সা। ৪। 'অনথিন' ইত্যাদি স্থলে 'অনথীন
বাহ্বল্লরী অরু সব অল' ফ, ধ, প-র-সা।

निक1

১—৪। "রতি"-ইত্যাদি। স্বরত-কেলিতে স্বধন্তন শ্বার শরনে শ্রীরাধা হাই-চিন্তা হইলেন (এবং) স্বরত-লীলার প্রবৃত্ত হইরা অভান্ত (আমু-সন্দিক) কেলি-কৌতুক বিস্মৃত হইলেন। (ম্বরত-প্রসন্দে নোহ দারা শ্রীরাধার 'মধ্যা' নারিকার স্বভাব স্চিত হইতেছে)।

৮-->। "নিষিণিত" ইত্যাদি। (ত্রীরাধার)
নরন (রসাবেশে) মুদ্রিত, স্থলর বদন অধিকতর
শোভিত; স্বাভাবিক হান্ত অদুশ্র হইল; (তাঁহার)
বাহু-লভা ও সর্বাদ্র অবশ,—স্করাং (আর্ত করার
অক্ষমতা হেতু) উন্মুক্ত রহিল।

রাধামোহন ঠাকুর তাঁহার স্বক্ত এই পদের ব্যাখ্যা-স্থলে লিখিয়াছেন বে, তিনি এই পদে উচ্ছল-নীলমণি-শ্বত নিম্নলিখিত প্লোকের মর্লাস্থবাদ করিয়া-ছেন; বথা,—

শ্বনজননিবিড়াং নিমীলিড়াকীং
লথচিকুরামনধীনবাহ্বলীম্।
মুবিভ্যনসমন্তানাভাবাং
ন্বভিশরনে নিশি রাধিকাং শ্বরামি ॥"
"কিং ধ্যারসীতি স্ববদেন পৃষ্টা ক্লফ আহ প্রমেতি।
অন্ত প্রমঞ্জনানাং নৈবিড়াং চিকুরাণাং লথমং বাহ-

বল্যা দৌর্জন্যঞ্চ স্থরতান্তং ব্যনক্তি! ন স্থতোহন্যস্য বিষয়াশ্রমেদ্দীপনাদের্ভাবা ভাবনা বস্তা ইতি রভিন্তিধবিশেষাস্থভবো মৃদ্ধিয়ামপি বর্তমানজন্যা মৃধ্নাধ্যাজদানীমবগত ইতি জেরম্। আন মৃদিত-মনস্মিত্যস্যাপষ্টার্থমং বক্তঃ প্রেমবন্তান্থপাপবশাং সোচ্ব্যম্। স চ চিরাম্বিষয়ককামারিসম্ভর্থমনাং সা স্থাতেন মধান্য মৃদিত্মনাং ক্ষতা ইত্যতং ক্ষতার্থো-হ্মীতি স্বাভিপ্রাম্বোন্সারময় ইতি।' বিশ্বনাধ চক্রবর্তিক্রত 'আনন্দচক্রিক।' টাকা।

অথ প্রেম-বৈচিত্ত্যং শ্রীরাধায়া যথা। তত্ত্বচিত-শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

গান্ধার।>

व्यत व्यत रंगाता रकरन काँएन। নিজ সংচরগণ পুছই কারণং হেরই গোরামুখ-চাঁদে॥ अ ॥ অরুণিত লোচন প্রেম-ভরে ভেল চুন बात कात कारत ८ ध्रम-वाति । গাঁ**থল**° মোভিফল° रिषड्न मिथिन-খসয়েও উপরি উপরি। নিশাসই পুন পুন সোম্ভরি রুন্দাবন আপনার অঞ্চ নিরখিয়া। রাই রাইণ করি ছুই হাত বুকে ধরি ধরণি পড়ল মুরছিয়া ॥ ধরিয়া করল কোর তহিঁ প্রিয় গদাধর करुरत्र व्यवत् पूर्व नित्रा। পুন্ত অট্ট আটু হাসে অগ-জনত মন ভোবে বাহুঘোষে মরয়ে ঝুরিয়া ॥১॥৭৬৪॥ পাঠান্তর

)। देश প-त-ना পृथित ১২৫৪ मःशास भना २। 'পृष्टे कातन' वृश्या 'ना वृश्यित कातन' প-त-ना। ৩। 'গাঁথিল' ক, চ; 'গথিত' প-র-দা। ৪।
'মুকুডাকল' প-র-দা। ৫। 'খদতহি' প-র-দা।
৬। 'নিশাদই' ইত্যাদি স্থলে 'নিখাদই পুন' ধ।
৭। 'রাই রাই' স্থলে 'গোবি গোবি' প-র-দা। ৮।
'ধরণি পড়ল' স্থলে 'ধরণীতে পড়ে' প-র-দা। ৯।
'বিদিরা' ক। ১০। 'গৌর' প-র-দা।

(क्षांत्र १३

শ্যামকং কোরে যতনে ধনি শৃতলং মদন-আলসে তুক্ত ভোর। ভুবে ভুজে বন্ধন নিবিড় আলিজন জযু• কাঞ্চন মণি জোড়• ॥ কোরছি শ্রাম চমকি ধনি বোলতা কবে মোহে মীলব কান। হুদয়ক ভাপ ভবহিঁ দমঝু মীটব অমিয়া করবং সিনান॥ সো মুখ-মাধুরি বঙ্ক নেহারই>> সোভারি সোভারি ২ মন ঝুর। সো তমু সরস্ত পরশ যব পাওব্রু তবহিঁমনোরথ পূর॥ এড কহি সুন্দরি দীঘ নিশাসই মুরছিভ> হরল গেয়ান। আকুল রাই শ্যাম প্রবোধই **८गाविन्ममाम भद्रमान ॥२॥१७८॥** পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫৫ ও প-র পুথির ৩২া২ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'কামোদ' প-র। ২। 'শ্রাম' খ; 'শ্রামর' প-র। ৩। 'গুডলি' প-র-সা, প-র। ৪। 'মদন-আলনে ছছ্' স্থলে 'মদন মদালসে' প-র-সা; 'মদনালসে ভয়্ম' প-র। ৫। 'বেন' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৬। 'বোর' প-র। १। 'বোরত' ঘ; 'পুছ্ই' প-র। ৮। 'কুবছ্' ক, খ, ঘ, চ। ৯। 'মঝু' মীটব' হুলে 'দূর যায়ব' প-র-সা; 'মিটি বায়ব' প-র।

১০। 'অমিয়া করব' হুলে 'করবহি অমিয়া' প-র।

১১। 'সো মুখ' ইত্যাদি হুলে 'আর কিরে সো
মুখ মাধুরি হেরব' পর। ১২। 'সোডরি সোডরি'
হুলে 'গুণ সোডরিতে'প-র। ১০। 'দরশ' প-র।

১৪। 'হোয়ব' প-র-সা, প-র। ১৫। 'মুরছই'
প-র। ১৬। 'আকুল' ইত্যাদি হুলে 'বৃতনহি
শ্রাম রাই পরবোধই' প-র (পাঠান্তর)।

বিহাপড়া ৷১

রোদতি রাধা শ্রাম করি কোর।
হরি হরি কাহাঁ গেও প্রাণনাথ মোর॥
জানলুঁ রে সপি প্রেম অগেয়ান।
নাগর কোরে নাগরি নাহি জান॥
মুরছলি নাগর মুরছলি রাইং।
বিরহে বেয়াকুল॰ কুল না পাই॥
দারুণ বিরহে না হেরই তায়।
সহচরি চিত্র-পুতলি৽ সম চায়৽॥
থৈছন হেরইতে রাইক রীত।
গোবিন্দদাস-চীত্র সচ্কিত ৯০॥৭৬৬॥
পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫৬ ও ১৫৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'মুরছলি' ইত্যাদি পংক্তিবর থ ও

খ পুথিতে নাই। ৩। 'ব্যাকুল দোহ' প-র-সা।
৪। 'চীতপুতলি' খ, প-র-সা। ৫। 'সম চার'
খলে 'সমুঝার' প-র-সা। ৬। 'গোবিন্দদাস পছ
চিত' প-র-সা।

ख्या जात ।>

রসবতি বৈঠি রসিকবর পাশ। রোইং কছই ধনি বিরহ-তৃতাশ॥ আর কি মিলব মোহেণ রসময় শ্রাম। বিরহ-জলধি কত পউরব হাম॥ নিকটিই নাহ না হেরই রাই।
সহচরি কত পরবোধই তাই ॥
কানু চমকি তব রাই করু কোর।
গোবিক্দাস হেরি ভেল ভোর ॥৪॥৭৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'রাই' ক, খ। ৩। 'মোরে'খ। ৪। 'পরবোধৰ' ক।

थानशि ।>

কত পরকারে তহিঁং পরিচয় দেল।
হেরইতে মুখ-শশি তুখ তুর° গেল॥
সহচরিগণ সব চমকিত ভেল।
সজল-নয়ানে আলিঙ্গন কেল॥
আঁচরে মোছায়তঃ নয়নক লোর।
যতনহি দৃঢ় করি তুত্ত করু কোর॥
কোই সঞ্চি দেওত চামরক বায়।
গোবিন্দদাস তুত্তকঁ গুণ গায়খ॥৫॥৭৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫৮ সংখ্যক পদ।
২। 'তাহি' ক, প-র-সা। ৩। 'দুরে' ক, খ,
প-র-সা। ৪। 'মোছারই' ঘ। ৫। 'ছ্হুঁ' ক,
খ, প-র-সা; 'তবহু' ঘ। ৬। 'গুণ গার' হলে
'প্রেমকি জয়' প-র-সা।

অত্র সম্ভোগোচিতপদং যথাসপ্তবং গেয়স্।
জয় জয় রাধা কৃষ্ণের প্রেম অদভুত।
নিজুই নৌজুন প্রেম অসুরাগযুত ॥ ইত্যাদি।
ধানী ।>
শ্যামর-চন্দ গোরি যব বৈঠল
নিধুবনে স্থিগণ স্কা।
চাতুরি রক্তস কলা ক্ত কৌশল
কিয়ে কিয়েং মদন-তর্ক ॥

সজনী কো পয়েও ঐছন জান।
পিয় পিয় পিপিয়-নাদ শুনি আকুল
মুরছিং আনতং ভই আন ॥ধ্রু॥
চর চর লোরে নয়ন বহি যাওত
কত কত করুণা-কোটি।
দত্তে তৃণক্ত কহি প্রিয় দরশন দেহ
না হেরিয়া হিয়া যাউ কোটিং॥
বহুত বিনতিং করে স্থির করেশ ধরে
কোরহি শ্রাম না জান্দ।
বিপরিত অচল সচল দেখি ঐছন
বল্লভদাস রস গান॥॥॥৭৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৯ ও প-র পুথির ৬৬।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ভেল' প-র। ৩। 'কো পরে' খুলে 'কো পারে' প-র-সা। ৪। 'মুরছিড' ক, চ। ৫। 'আন' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'ফাটি' ক, প-র-সা, প-র। ৭। 'মন্ডি' প-র-সা। ৮। 'চরণে' প-র-সা। ৯। 'মান' ক, চ, প-র-সা।

শ্রীরাগ ৷১

সঞ্জনী প্রেমক কো কহং বিশেষ।
কামুক কোরে কলাবতি কাতর
কহত কামু পরদেশ ॥ ধ্রু ॥
চাঁদক হেরি হুরজ করি ভাগরে
দিনহি রজনি করি মান।
বিলপই ভাপে তাপায়ত অস্তর
বিরহ গিয়ক° করি ভান ॥
কব আওব হরি হরি সঞ্জে পূছই
হসই রোয়ই খেণে ভোরি।
সো গুণ গাই॰ খাস খেণে কাঢ়ই॰
খণহি খণহিও তন্তু মোড়ি ॥

বিধুম্খি-বদন কামু যব পোঁছল।

নিজ পরিচয় কত ভাতি।

অনুভবি মদন কাস্ত কিয়ে কামিনিদ
বল্লভদাস স্থাপ মাতি ॥৭॥৭৭০॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১২৬০ ও প-র পুথির ৩৬।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রেমক কো কহ' ফলে 'প্রেমক কহবি' ঘ, প-র-সা। ৩। 'বিরহ পিয়ক' ফলে 'প্রিরক বিরহ' ক; 'বিরহক পিয়' প-র। ৫। 'বাচ্ই' ক; 'কাড্ই' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'খণহি খণহি' ফলে 'ফণহি ডয়' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৭। 'মোছল' প-র-সা; 'মোছত' প-র। ৮। 'ভাবিনি' প-র-সা।

विद्यक्षा ।>

নাগরং সচে রচে যব বিলসই কুঞ্জে শুভলি ভুজ-পাশে। কাসু কানু করি রোরই স্থন্দরি দারুণ বিরহ-হতাশে॥ এ সৰি আরতি কহনে না যাই। আঁচলক হেম আঁচলে রছ যৈছন ৰ্থোজি ফিরত আন ঠাঞি"। এ। কাহাঁ গেও সো মঝু রসিক স্থনাগর মোহে ভেজল ক্ষি লাগি। কাতর হোই মহা-তলে লুঠই मनन-नर्दन तर काशि। রাইক বিরুদ্ধে কান্যু ভেল সচকিত বয়ালে বাণি নাহি ফুর। প্রিয় সহচরি লেই করে কর বাদ্ধই (भविन्ममान तक पुत्र ॥৮॥१९১॥ পাঠান্তর

)। देशं शं-त्र-मा शूचित्र ১२७১ मरश्रकः श्रमः।

২। 'কাফুক' প-র-সা। ৩। 'আঁচণক ছেম' ইত্যাদি ফুলে---

ে হেম আঁচিলে রছ হৈছন থোজি ফিরত আনহি ঠাঞি ॥ গুলাক, চ পু**ৰি।** ৪। 'বেদনে' ক, থ, চ, প-র। ৫। 'চম্কি**ড'** ক, চ, প-র।

७षा यात्र । ১

বহুখণে পরিচয় ভেল।
বিরহ-বেদন হুরে গেল॥
দোঁহে হুকুঁ কোরে আগোরি।
সহচরি হেরি বিভোরি॥
অদভুত প্রেম-চরাত্র।
হেরইতে চমকিত চাত্ত্রণ॥
কোরহি দেখিতে না পায়।
ঐছন না শুনি কোথায়॥
পুন দোঁহে নিবিড় বিল,দ।
হুরে গেও বিবহ-হুতাশ॥
গোবিন্দ দাসক দাস।
ইহ গুণ আনদেদ ভাষ॥৯॥৭৭২॥
ইত্যাদি শ্রীরাধিকায়াঃ প্রেমবৈচিত্তাম।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৬২ **সংখ্যক পদ।** ২। 'চরিড' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। **'চিড'** ক,খ,প-র-সা।

আর কিয়ে কনক-কাষণ-ভত্ম স্থানর দরশ পরশ মঝুং হোয়। উর° পর পাণি হানি খিভি শুভ্ল• আকুল-কঠে ঘন রোয়॥ সঞ্জনি না বুঝিয়ে প্রেম-তরক।
রাইক কোরে চমকি হরি বোলত
কবে হবে তাকর সক্ষ । প্রু ॥
আর কিয়ে শ্রাবণে শুনব হাম তাকর
সো প্রেয় মধুরিম ভাষা।
নয়নহি বয়ন-চান্দ কিয়ে হেরব
কৌমুদি হাস-বিকাস॥
রাইক কোরে কামু ঐছে বলপই
ত্রজ-বনিভাগণ হাস।
প্রেমক রীত বুঝই সংশ্য ভেল
কহতহি গোবিন্দদাস ॥১০॥৭৭৩॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-লা পুথির ১২৬৩ ও প-র পুথির
৬৬।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'হব' প-র। ৩। 'উরু'
দ, চ, প-র-লা। ৪। 'লুইই' প-র। ৫। 'সজনি
লা বুৰিয়ে' স্থলে 'সথি হে কো কছ' প-র। প-র
পুথিতে 'সথি হে' ইত্যাদি কলি দারা পদটি আরম্ভ
করা হইরাছে। ৬। 'চমকি হরি বোলত' স্থলে
'বৈঠি হরি কহতহি' প-র। ৭। 'বোল' প-র-লা,
প-র। ৮। 'লো' ইত্যাদি স্থলে 'আর তাহে মধুরিম
হাস' প-র। ৯। 'কবে' প-র। ১০। 'ঐছে'
স্থলে 'বব' প-র-লা, প-র। ১১। 'প্রেমক' ইত্যাদি
স্থলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা—'না বুঝল বাত ধন্দ
বোহে লাগল'।

তথা রাপ ৷>

ধনি-কোরে বিনদং নাগরবর ভুললা ।
রোয়ত নীর বয়ন বহি গেলা ॥
কোরে আকুল ভই মুরছিত ভেল।
সহচরিগণ কর বয়নহি দেল ॥
খাস-হীন হেরি সবছ বিভোর।
রোয়ত ধনি তব খাস করি কোর ॥

এক সৰি যুগতি করল অনুপাম।

শ্রাবণে কহই তব রাধা নাম।
বহুখণে শ্রাবণে পৈঠল সোই বোল।
রাই রাই করি উঠল তনু মোড়।
বোই রোই স্থবদনি পরিচয় দেল।
কোরে কয়ল সব তুখ তুরেণ গেল।
বৈঠল নাহ রাই বাম পাশ।
বেরি চমকিত রাধাবল্লভ দাস॥১১১৭৭৪।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'নাগর' থ, প-র-সা। ৪। 'ভূদিলা' ক। ৫। 'দূরে' ক।

পুনশ্চ দিনাস্তরে।

বিহপড়া ৷১

রাধা মাধব বিলসই কুঞ্জক মাঝ।
তমু তমু সরস পরশ-রদ পীবই
কমলিনি মধুকর-রাজ ॥ ধ্রু ॥
সচকিতেই নাগর কাঁপই থর থর
শিথিল হোয়লই সব অজ ।
গদ গদ কহয়ে রাই ভেল অদরশ
কবে হোয়ব তছু সজ ॥
সো ধনি-চাঁদ-বয়ন কিয়ে হেরব
শুনব অমিয়াময় বোল।
ইহ মঝু হাদয়ঃ তাপ কিয়ে মেটবই
সোই করব কিয়ে কোল ॥
ঐছন কভছাঁ বিলাপইই মাধব
সহচরি দুরহি হাস।
অপরুপ প্রেমে বিবাদিত অস্তর
কহতহি সাধবিই দার ॥১২॥৭৭৫॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির >২৬৫ সংখ্যক পদ।
২। 'সচকিত' ক। ৩। 'করল' ক। ৪। 'হৃদ্ধে'
ক। ৫। 'মিটৰ' ক। ৬। 'বিলপরে' ক;
'বিলপই' প-র-সা। ৭। 'মাধ্ব' ক, প-র-সা।

মঙ্গল ।১

পরশিতে রাই-তমু আপনে ভুলল কামু মুরছি পড়ল ধনি-কোর। ধনি ভেল গদগদ শ্যামকেং হেরইতে তরকি তরকি বহে লোর। খ্যাম মুরছিত হেরি চ**কিতে ল**লিতা ফেরি রাধা-মন্ত্র শ্রান্ত-মূলে দেল। অন্ন মোড়াইয়া কান্ত্ৰ নিরখই রাই-ভত্র হেরি সধী সচকিত ওভল। চিত্ৰ-পুতলি যেন বেঢ়ল স্থিগণ नित्रथरे भाग-मूथ-हन्छ । কি ভেল কি ভেল বলি ধাওল বিশাখা আলি नव करन लांगल धन्य ॥ ভামর-স্থন্দর-বদন-স্থধাকর স্মৃথি নেহারই সাধে। উপকল উল্লাস কহই মাধ্বিঃ দাস विषयस मास्य ब्राट्स ॥১०॥११७॥ ইভ্যাদি শ্রীকৃষ্ণত্য প্রেম-বৈচিন্ত্যম্। ইতি নবম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ভাষ ক্রে' ক; 'ভাষক' ব, চ; 'নাগর' প-র-সা। ৩। 'চমকিড' ক, প-র-সা। ৪। 'মাধ্বী' ক; 'মাধুরী' ব।

অথ অমুরাগঃ।

সদাসুভূতমপি ষঃ কুর্যান্নবনবং প্রিরম্। রাগোভবন্নবনবঃ সোহসুরাগ ইতীর্যাতে ॥ অসুরাগো ভবেজ্রিধা রূপাদাক্ষেপতঃ ক্রেমাৎ। অভিসারাসুরাগশ্চ জ্ঞান্নত্তে রসিকৈজনৈঃ॥

আদৌ রূপামুরাগো যথা।

তত্র শ্রীমহাপ্রভুঃ।

यहरे ।>

নিরবধি মোর মনে গোরা-রূপ লাগিরাছে
কহ সখী কি করি উপায়ং।
না দেখিলে গোরা-মুখ বিদরিয়া যায় বুক
পরাণঃ বাহির হৈতে চায়॥
কহ সখি কি বুদ্ধি করিব।
গৃহপতি গুরুজন ভয় নাহিং মোর মন
গোরা লাগি পরাণ তেজিব॥
সব স্থখ তেয়াগিলুঁ কুলে তিলাঞ্জলি দিলুঁ
গোরা বিন্মু আন নাহি ভার।
নিঝরে ঝরয়েং আঁখি শুন হে মরমিং স্থি
বাস্থঘোষ কি বলিবে তায়॥১॥৭৭৭৪

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১২৬৭ ও প-র পৃথির
১৪।০১ সংখ্যক পদ। 'ফুহই' হলে 'ভুড়ী' প-র।
২। 'কহ' ইত্যাদি হলে 'কি করিব কি হবে উপার'
প-র। ০। 'ক্রপ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'পরাণি' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'ভয় নাহি' হলে
'নাহি লয়ে' প-র। ৬। 'নিঝরে ঝরয়ে' হলে
'নিঝুরে ঝুরয়ে' প-র-সা। ৭। 'মরম' খ, প-র-সা, প-র।

তথা রাগ।১

থার বিজুরি জমু দব-জলধর-তমু পীভ বসন বনিং তায়। **हु** जिथि जन বেডিয়া মালভামাল সৌরভে মধুকর ধায়॥ श्रीम-क्रथ जागरम मत्राम । যতনে ভুলিতে নারি পাসরিব মনে করি খুচাইল কুলের ধরমে। ধা। কিবা সেই মুখ-শশী উগারে অমিয়া-রাশি আঁখি মোর মজিল তাহায়। গুরুজন-ভয়ে যদি ধৈরজ ধরিতে চাহি দ্বিগুণ আগুন উপজায়॥ রস-ত্বধানিধি কভ এ তিন ভুবনে যত শ্যাম আগে নিছিয়া পেলিয়ে^৩। এ দাস অনম্ভে কয় হেন রূপ রসময় मा प्रिथिटल পরাণ ना कोएग्न ॥२॥११৮॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৪ সংথ্যক পদ। ২। 'বেনে'প-র-সা। ৩।'কেলিয়ে'থ,খ,চ।

তুড়ী ।১

হৈরি মুখচন্দ্র-ফ্ধারস লংরীকিরণহি ভুবন উলোর।
ভিরপিতং চাহি চকোরিণি-কামিনিলোচন নিশি দিশি ভোর ॥
সজনি অব হাম না বুঝিও বিধান।
ভাতশয় আনন্দে বিঘিন ঘটাওল
হেরইভে ঝরয়েও নয়ান ॥ এও ॥
লাক্ষণ দৈব কয়ল ছকুঁ লোচন
ভাতে পলক নিরমাই।
ভাতে অভি হরিষে এ ছকুঁ দিঠি পুরল
হৈছে হেরব মুখ চাই॥

তাহে শুরু ছুরুজন-লোচন কণ্টক
সন্ধট কভন্থ বিধার।
কুলবভি-বাদ বিবাদ করত কভ
ধৈরক লাজ বিচার ॥
সবহুঁ উপেধি ষাই বন পৈঠব
কামু গীমে করি হার।
নিরজনে রাতি দিবল হুখে হেরবং
এহি দঢ়ায়লুঁ সার ॥
কি করব আন ধরম-করম মতং
জাবনহীন ক্রমু দেহ।
গোবিন্দদাস ভণ মনমধ মোহন
মিলনে কিয়ে করু কেহ ॥৩॥৭৭৯॥
পাঠাম্বর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১২৬৯ ও প-র পূথির ১৪।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'তির্থিত' প-র। ৩। 'হাম না বুঝি' হুলে 'নাহি বুঝিরে' প-র। ৪। 'ঝুররে' প-র-সা। ৫। 'বঞ্চব' প-র। ৬। 'তন' প-র। 'কি করব' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ক, ব, চ ও প-র-সা পূথিতে নাই।

ভাটিয়ারি ৷১

যো মুখ দেখিতে হিয়া বিদরশ্রে কে ভাথে পরাণ ধরে। ভালে সে কামিনী पियम बक्षनी क्षतिया क्षतिया मत्त्र ॥ সই সে কালা॰ কদস্বতলে। ও রূপ দেখিয়া কুলে ভিলাঞ্চল मिनू वभूनात करन ॥ अ ॥ বঞ্চিম নয়ানে ভজিম চাহনি ভিলে পাসরিতে নারি। এভ দিনে স্থি निष्ठात्रः जानिन् মজিল কুলের নারী 🕽

চাঁচর চুলে সে ফুলের কাঁচনি ও
সাজনি ময়ুর-পাথে।
কলরাম বলে কোন বা দারুণী
কুলের ধরম রাখে॥৪॥৭৮০॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১২৭০ ও প-র পুৰির ৩০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'তার' প-র। ৩। 'সে কালা' ছলে 'কি জানি' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪। 'নিশ্চর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কাছনি' প-র-সা, প-র।

वैद्यात्र ।>

অঙ্গ না ধরে রসের ভরে হেলিয়া পড়িছে বায়। অঙ্গ মোড়া দিয়া ত্রিভঙ্গ হইয়া কিরিয়া ফিরিয়া চার ॥ (रुतिया मितिन् রসিয়া নাগর কি শেল বাজিলং মোরে। लार्ग উठाउँन গুরু পরিজন তারে সে॰ পরাণ ঝুরে॥ ত্র্যাখির ঠারে বুক বিদারে ও বড় বিষম বাণ। পাপিনী যুবভি কুলবভী সভী রাধুক কুলের মান । হিরা জরজর পরাণ কাঁকরণ षांक्रण भूतनी-चटत्र । কুটিল হরিণী লোটায় ধরণী कांन्त्रिया मत्रदय घटत ॥ मधुब्र (शिटन পরাণ দোলে তাহে পরমাদ হাস। বলরাম কছে এবে সে নিচয়েণ

शंकिन् घरतव मान ॥८॥१४)॥

পঠিন্তির

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৭১ ও প-র পুথির ০)০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'রহল' প-র। ০। 'তারে সে' বংল 'তরে সে' চ। ৪। 'কাপর' ক, খ; 'ফাফর' প-র-সা। ৫। 'বাশীর' প-র। ৬। 'কুটিল' ক, খ, প-র-সা। ।। 'নিশ্চর' প-র।

यश्हे ।)

ছই ভুক কামের কামান।
নঠ কৈল কুল-অভিমান ॥
কত ছাঁদে নয়ান চুলায়।
মন সনে পরাণ দোলায় ॥
সে মোহন নাগর কিশোর।
মরমে পশিয়া রৈল মোর ॥ প্রু ॥
কত ন! নাগরপনা জানে।
নিরখয়ে আধ নয়ানে ॥
আধ মুচ্কি কথা কয়।
ক না কৈল মনোহর বেল।
সেই সে মজাইল সব দেশ ॥
ভিরি-বধে ভার নাহি ভয়।
বলরামের মনে হেন লয় ॥৬॥৭৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৭২ ও প-র পুথির ৩০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'অবলা-পরাণে কি ডা' ফ্লে 'অবলার প্রাণে কড' প-র।

शवनी पूछी ।>

উবত হাসিতে কত² অমিয়া উপলে। ধরম করম হরে আধ আধ বোলে। রূপ দেখি কি না সে করিলুঁ⁶। বল করি জাতি প্রোণ পর-হাতে দিলু[°] ॥ এন নানা ফুলে চাঁচর চুলে চূড়ার কাঁচনি।
কত না ভঙ্গিমা ছুটি নয়ান-নাচনি।
কিসের লোকের ভয় কিবা গুরু-লাজে।
মধুর মুরতি সে লাগিলং হিয়ার মাঝে।
ফাগু বিন্দু বিন্দু মাঝে চন্দনের চাঁদ।
কতে বলরাম ওই পিরিতের ফাঁদা। ৭৮ ৭৮ ৩।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ৩৬৮, ১২৭০ ও প-র পুৰির ৩৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'হাসিতে কত' ছলে 'ঞাঝির ঠারে' প-র-সা। ৩। 'রপ দেখি' ইত্যাদি ছলে 'রূপ দেখি সথি মুক্তি অকাজ করিলু' প-র। ৪। 'কিসের' ইত্যাদি ছলে 'কিসের ভর কিবা শুরুজন লাজে' ক; 'কিবা সে লোকের ভর শুরুজনা লাজে' প-র-সা। ৫। 'সে লাগিল' ছলে 'থানি জালে' প-র। ৬। 'ফাঞ্ড' ইত্যাদি ছলে 'চৌদিকে ফাঞ্ডর বিন্দু' প-রসা, প-র। ৭। 'ইহা' ক।

ब्रोग 15

কিবা রাতি কিবা দিন কিছুই না জানি।
জাগিতে অপনে দেখি কালা রূপংখানি ॥
আপনার নাম মোর নাহি পড়ে মনে।
পরাণ ছরিলে রাজা নয়ন-নাচনে ॥
কি খেণে দেখিলামণ সই নাগর-শেখর।
আঁথি করে মন কাঁলে পরাণণ ফাঁফের॥
সহকে মুরতি খানি বড়ই মধুর।
মরমে পশিয়া সে ধরম কৈলে চূর॥
আার তাহে কত কত ধরে বৈদগধি।
কুলেতে যত্তন করে কোন বা মুগধী॥
দেখিতে সে চাঁদমুখ জগ-মন ছরে।
আাধ মুচকি হাসেণ কত অ্থা খরে॥

কাল কপালে শোভে চন্দনের চাঁদে। বলরাম বলে ভেঞি সদাই পরাণ

कॅरिन मानानम्हा

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৪ ও প-র পুথির ৩।৪ • সংখ্যক পদ। ২। 'বর্ব' প-র। ৩। 'বি থেণে দেখিলাম' হলে 'কি ক্লপ দেখিলু' ক, খ, প র। ৪। 'নরান' ক, খ। ৫। 'হাসি' ক, খ্ ব,চ,প-র-সা।

कुड़ो ।>

রূপ দেখিলে এমন হবে জানিব কেমনে।
এত কি সহিতে পারে অবলা পরাণে॥
বিশুণ দহয়ে তথু মুরলীর স্বরে।
কুলিন সাপিনী যেন গরল উগারে॥
আর তাহে তাপ দিল পাপ ননদিনী।
ব্যাধের মন্দিরে যেন কম্পিত হরিণী॥
নিরবধি প্রাণ মোর শ্যাম-অফুরাগী।
যে মোরে ছাড়িতে বোলে হবে বধের জাগী।
জ্ঞান কহে যেই কহ সেই সে করিব।
শ্যাম বন্ধুর লাগি পরাণ হারাইব॥৯।৭৮১॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৬ ও ১২৭৫ সংখ্যব পদ। ২। 'দহরে তক্স' স্থলে 'দগথে প্রাণ' প-র সা। ৩। 'কুলিনী' প-র-সা। ৪। 'আর তাথে ইত্যাদি স্থলে 'তাহে হথ দেই মনে' প-র-সা। ৫ 'বঞ্চরে' প-র-সা। ৬। 'নিরব্ধি' ইত্যাদি পথি চারিটি ক, ধ, দ, চ পুথিতে নাই; প-র-সা পুটি হইতে উদ্ধৃত হইরাছে।

ब्रोबर्क्न ।>

মলু মলু ভাষ-অনুরাগে।
মনোহর মধুর মূরভি নব কৈলোগ
সদাই হিয়ার মাবে ভাগে। এ এ

ল্লীতে পাসরিতে নারি বল নাং কি বৃদ্ধি করি কি শেল রহল° মোর বুকে। টানিলে ना वाहित्राग्र বাহির হৈয়া নাহি যায় व्यख्दत क्रमारा थिएक थिएक ॥ চরণে চরণ পুঞা⁸ व्यथरत मूत्रली रेलग्रा দাঁড়াইয়া॰ তেরছ॰ নয়ানে। অঙ্গুলি লোলাইয়া শুাম কি জানি কি দেখাইল সে কথা পড়ায়ে সদা মনে !! কিছু না মোর সহে গায় কেবা পরতীত যায় ভিলে প্রাণ তিন ঠাঞি ধরি। বস্থু রামানন্দের বাণী দিবানিশি নাহি জানি গোপতে গুমরি মরি মরি ॥১০॥৭৮৬॥

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৭৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সে' ক, খ। ৩। 'পশিল' খ। ৪। 'পৃইরা'
ব, চ। ৫। 'দশুট্রা' খ। ৬। 'ডেড্ছ' প-রসা। ৭। 'লোলাহে' ক; 'লোট্ট্রা' খ। ৮।
'কহিল গো' প-র-সা।

পাঠান্তব

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

थाननी ।>

গৌরাক্ত-লাবণ্য রূপে কি কহিব এক মুখে আর ভাহে ফুলেরং কাঁচনি। চাঁদ-মুখেরত হাসি জীব না গো ছেন বাসি আর ভাহে ভাভিয়া চাহনি ॥ विशिष्टि भारत क्रिश कार्यम । क्मन (कमन करत मन সব লাগে উচাটন भवान-भूखिल (भाव कारक ॥ अ ॥ বিধিয়ে বলিব কি করিলে কুলের ঝি পার তাহে নহি স্বতম্ভরি। পেল কুল লাগ ভয় পরাণ রহিবার নয় मत्मन्न व्यनत्मं शृक्ष मनि ॥

কহিব কাহার আগে কহিলে পিরিভি ভাজে

চিত মোর ধৈরজ না বান্ধে।

নয়নানন্দের বাণী শুন শুন বিনোদিনি

ঠেকিলা গৌরাক্ত-প্রেম-ফান্দো।১১॥৭৮৭॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কুলের' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'ও চাদ-মুখের'
প-র-সা। ৪। 'বাহিরাবার' প-র-সা। ৫। 'মনের
অনলে' ছলে 'প্রেম অনলে' প-র-সা। ৬। 'ঠাকুরাণি' ধ।

ভণা রাগ ৷১

কান্তি কলেবর তপত-কাঞ্চন-উ**ন্নত ভাঙ**ুর**ং ভঙ্গী**। করিবর-কর জিনি বাছর স্থবলনি বিহি সে গঢ়ল বছরজী ॥ গোরা রূপ জগ-মনহার।। আপন বৈদগধি বিধাতা প্রকাশিত• विधित्त कूमवित नाती ॥ अम ॥ আপদ-মস্তক পূর্ণ পুলকিড প্ৰেমে ছল ছল আঁখি। আপন গুণ শুনি আপহিঁ বোয়ত হেরি কান্দয়ে পশু পাখী। চান্দ-চন্দ্ৰিকা কুমুদ-মলিকা জিনিয়া মধুর মৃত্হাস। মধুর বচনে অমিয়া সিঞ্চনে निष्ट्**नि (गाविन्मनाम ॥)२॥**१৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৮ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ফলে 'ভূড়ী' প-র-সা। ২। 'ভাঙর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'প্রকাশিণ' ধ। ৪। 'আপনি' প-র-সা।

পঠবঞ্জী ।১

মরি মরিং না লোও শ্যাম-রূপের বালাই লৈরা। কোন বিধি নিরমিল কভ হুধা দিয়া॥ এ ॥ শরদ-বিধুবর ফুল পুদ্ধ ञुक्तज्ञानन मश्रुत्न । রত্ব মণিময় রবি সমোদিত গণ্ডে নৃত্যতি কুগুলে॥ চারু-চন্দ্রিমণ চুড়া চিক্কণ চঞ্চরীগণ আরুতে। চমকিত হিয়া মোর ও রূপ দেখিতে ॥ ভিমির পুঞ্জর• मक्न कलध्य हेलनीलः मत्नात्रत्म । বন্ধুরাধর রঙ্গ সিন্দুর নিন্দি বিশ্বক বিশ্ৰমে । (कांडनांकन বিমল চঞ্চলদ বিষম -বাণ-সংহাদরে। শ্রাম রূপ নিরখিতে হৃদর বিদরে॥ নিব্দি করিকর› প্রবল ভুজবর কশ্বপাঞ্চদ শোভনে। নখর তীখণ রুচি বিলক্ষণ গোপি-চিত্ত-প্রলোভনে হেম-বিরচিড) ২ মুদ্রিকাযুত পাণিশাথ মনোহরে। ও রূপ দেখিতে প্রাণ কি জানি কি করে। বিপুল বক্ষ 🗃 বৎস-লাঞ্ছন তার>৩-হার বিলম্বিতে। উরগ বিক্রেম> কুশিম মধ্যম পীত অধর শোভিতে। চরণ-পল্লব শরণ বছভ মঞ্-মঞ্চির রঞ্জিতে। मधुत्रामारमत हिए त्रह व्यवित्रा । 17614591

পাঠাত্তর

>। देश श-त्र-मा श्रीव अ: १२ % श-त श्रीव शास्त्र मार्थ मार्थ श्रीव शास्त्र श्रीव श्र

वर्रे ।>

কুন্দারে কুন্দিলে গো वमन-ठान्म दर्गन কে না কুন্দিলে চুই আঁখি। দেখিতে দেখিতে মোর পরাণ যেমন করে সেই সে পরাণ তার সাধী॥ রভন কাডিয়া অভি৽ যতন করিয়া গো কে না গঢ়িয়া। দিল কাণে। মনের সহিতে মোর এ পাঁচ পরাণি গো যোগী হবে• উহারি ধেরানে । হুধা খানি খানি গো অমিয়া মধুর বোল হাতের উপর নাহি⁹ পা**র**। এমতি করিয়া বদি বিধাতা গঢ়িত গো ভালিয়া ভালিয়া উহা খাঙ । মদন-কাব্দ ও না চুড়ার টালনি পোণ উহা না শিধিয়া আইল কোথা। এ বুক ভরিয়া মুঞি • উহা না দেখিলুঁ গো **এ विक महाम (मात्र (वर्षा)) ॥**

নাসিকার আগে দোলে ২ এ গজ-মুকুতা গো সোণার মড়িত^{১৩} তার পাশে। বিজুরী জড়িত ১০ যেন চাঁদের কণিকা ১৫গো মেখের আড়ালে থাকি ২ হাসে॥ করভের কর জিনি বাছর বলনিংগ গো হিঙ্গুল-মণ্ডিত ভার আগে। বোবন-বনের পাখী পিয়াসে মরয়ে১৮ গো উহারি পরশ-রস মাগে॥ নাটুয়া-ঠমকে যায় রহিয়া রহিয়া চায় চলে যেন গজরাজ>>মাতা। শ্রীনিবাস দাস কয় লখিলে লখিল ন্য রূপসিন্ধু গঢ়ল বিধাতা ॥১৪॥৭৯০॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮০ ও প-র পুথির ২০০২ সংখ্যক পদ। 'স্কৃছই' স্থলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'কচিয়া' ক; 'কড়িয়া' ল; 'কাটিয়া' চ, প-র। ৩। 'কেবা' ক। ৪। 'পরাইয়া' প-র-সা। ৫। 'পরাণ' ক, থ, চ। ৬। 'ইহল' প-র। ৭। 'লাগি' ক, থ। ৮। 'ফাল্ময়া' ক; 'ফাল্মুয়া' চ। ৯। 'সালনি' প-র। ১০। 'মদন-কাল্ম' ইত্যাদি স্থলে 'মর্ব-পুচ্ছের ছাল্মে' ইত্যাদি থ; 'মউরপুচ্ছের চাল্মে' ইত্যাদি ল। ১১। 'এ বড়ি' ইত্যাদি স্থলে 'মরমে রহিয়া গেল বেখা' প-র। ১২। 'শোভে' প-র। ১৩। 'মচলি' ক; 'মুড়িড' প-র-সা। ১৪। 'সহিড' প-র; 'ডড়িড' খ। ১৫। 'কলঙ্ক' ক। ১৬। 'কিবা' প-র। ১৭। 'বাছর বলনি' স্থলে বিহু স্বলনি' প-র। ১৮। 'মরিল' প-র-সা। ১১। 'সক্লপতি' প-র।

ভাটনারি।>
আদে আজে সবি মুক্তা খেচনিং
বিজুরী চমকেও তার।

হি হিও কি অবলা সহজে চপলা
মধন সুরহা পার॥

मद्रा मद्रा महे ७ क्रिश निष्क्रा लिया। কি জানি কি খেণে কো বিহি গঢ়ল कि ज़भ माधुजी निग्ना ॥ अ ॥ চুলু চুলু ছটি নয়ন-নাচনি চাহনি मनन-वाटन। তেরছ বন্ধানে বিষম সন্ধানে यत्राम यत्राम श्राप्त ॥ চন্দন-ভিলক আধ ঝাঁপিয়া বিনোদ চুড়াটী বাঙ্গে। হিয়ার ভিতরেখ त्वाष्ट्राया त्वाष्ट्रायाः কাতরে পরাণ কান্দে॥ আধ চরণে আধ> চলনি আধাণ মধুর হাস। এই সে লাগিয়া ভালে সে ঝুরিয়া मदत वलताम लाम ॥১৫।१৯১॥ পাঠাম্বর

ৃ। ইহাপ-র-সাপুলির ১২৮১ সংখ্যক পদ।

২। 'বেচনি'ক। ৩। 'দমকে'ক, খ, প-রসা। ৪। 'ছি ছি' স্থলে 'এবে' প-র-সা। ৫।
'মরোঁ মরোঁ' স্থলে 'মরো মরো' ক; 'মরঙ মরঙ'
প-র-সা। ৬। 'মাঝারে' প-র-সা। ৭। 'লোটায়া
লোটায়া' স্থলে 'লোটাঞা লোটাঞা' ক, খ;
'লোটায়া' প-র-সা। ৮। 'আধ্রা' প-র-সা। ১।
'আধ্রা' প-র-সা। ১০। 'আধ্রা' প-র-সা।

রামকেলি (১

আলো সই করিব কি।
পরাণ পরবশ জীবারে জি॥
কি দিয়া নিরমিল কেমন বিধি।
রূপের নাহি সীমাং গুণের নিধি॥
লখিল নহে রূপ লখিল নয়।
বে জলে পড়ে দিঠি সে অলে রয়॥

দেখিতে দেখিতে মনে এমনিং লয়।
সকল অক্সেং যদি নয়ান হয় ॥
যখন শ্যামবন্ধু বাঁশীটি পূরে।
বনের পশু কান্দে বিরিখি ঝুরে॥
যখন তরুতলেং বাঁশীটি বাজে।
পরাণ বেমনং করে না কহি লাজে॥
নয়ান-কোণে ভারদ আছে কি ধন।
যার লাগিং জাতি কুল করিলুঁ পণ॥

リンショクるミル

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮২ ও প-র পুথির ১৪।৩২ সংখ্যক পদ। 'রামকেণি' স্থলে 'বিভাব' প-র। ২। 'রূপের নাহি সীমা' স্থলে 'শ্রামরূপে সীমা' প-র। ৩। 'লখিলে' ক। ৪। 'মনে এমনি' স্থলে 'মোর হেন মনে' প-র। ৫। 'অল' প-র। ৬। 'বখন তরুতলে' স্থলে 'কদম্বতলাতে' প-র। ৭। 'পরাণ বেমন' স্থলে 'পরানের কোণে' প-র। ৯। 'বার লাগি' স্থলে 'বাতে' প-র।

সিমুড়া ।১

কি ৰা সে মোহন-বেশ ভুলাইলে সবং দেশ না রহে সভীর সভীপনা। ভরমে দেখিলে ভারে জনম ভরিয়া গো व्वित्रा मन्द्रा क्ष क्ना ॥ नरे सम कि कतिनुं किटन वा त्म वाहाहे नुं क কি শেল হানিল জানি॰ বুকে। ৰাতি কুল শীলে সইণ বন্ধর পড়িল গো कानाक्रभ दम्भ दहोत्य दहोत्यम ॥ কিবা সে বল্লান-বাণ হিয়ায় হানিল গো भनन क्षित्रा दिन वृदक। কোন বা পামরী নারী ব্দাপনা রাধ্যে গো আঞ্চন খালিয়া দি ভারণ মুখে।

থাইতে সোয়ান্ত নাই নিন্দ দুরে গেল গে হিয়া ডহ ডহ>> সন কুরে। উড়ু উড়ু>২ আনছান ধক ধক করে প্রাণ কি হৈল রহিতে নারি>০ ঘরে॥ রসের মূরতি সে দেখিলে না রহে দে বাতাসে পাষাণ হয় পানী। বলরাম দাসে বোলে সে অল পরশ হৈলে প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি॥১৭॥৭৯৩॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮৩ ও প-র পুথির
১৪।৩৩ সংখ্যক পদ। 'নিশ্বড়া' ছলে 'তুড়ী' প-র।
२। 'তুলাইলে দব' ছলে 'নেথিডে মুবছে' প-র।
৩। 'মজরে' ক, খ; 'না মরে' প-র। ৪। 'সই'
ইত্যাদি ছলে 'দই জি করিলুঁ মেনে' প-র। ৫। 'দেন'
ক, খ, ঘ, চ, প-র। १। 'আজি' প-র। ৮। 'কোলারপ' ইত্যাদি ছলে 'কিনা রূপ দেখিলাম
চৌবে' প-র-সা। ১। 'রাখিবে' প-র। ১০।
'জালিয়া দি তার' ছলে 'দেয়াব তার' প-র। ১১।
'দহ দহ' ক; 'চহ চহ' থ। ১২। 'উড়ু উড়'
ছলে উড়ু পুড়ু' প-র-সা। ১৩। 'নারোঁ প-র।

धाननी ।>

রূপে ভরল দিঠি সোঙর পরশ মিঠি
পুলক না ভেফাই অল ।

মধুর মুরলী-রবে শ্রুডি পরিপুরিভ
না শুনে আন পরসল ॥

সঞ্জনি অব কি করবি উপদেশ ।

কামু-অমুরাগে মোর ভমু মন মাভল
না শুণে ধরম লব-লেশণ ॥ গ্রুছ ॥

٠.

নাসিকা হো সে অক্সেক সৌরভে উনমত
বদনে না লয়ে আন নাম।
নব নব গুণগণে বাক্ষল মকু মনে
ধরম রহব কোন ঠাম॥
গৃহপতি-ভরজনে গুরুজন-গরজনে
অন্তরে উপজয়ে হাস।
তহিঁ এক মনোরথ জনি হয়ে অনর্থ প্রত্

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৪৮ ও প-র পৃথির ১৯৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মধুর' (প-র, সা-প ২০১ সংখ্যক পৃথি) স্থলে 'মোহন' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'আপন' ক; 'আর' সা-প ২০১ সংখ্যক পৃথি। ৪! 'সহে' ক, খ, ঘ, চ; 'গুনে' প-র। ৫ 'ভয়-লেশ' ক, প-র-সা। ৬। 'নাসিকা হো সে অক্লের' স্থলে 'নাসিকা সে অক্লের' ক; 'নাসিকা যে সে অক্লের' ক, খ, খ, হ, প-র। ৮। 'ভহি' এক' স্থলে 'ভাহে এভ' প-র। ৯। 'বিদি' ক, খ, খ, চ, প-র। ১০। 'অক্রেভ' ক, খ, য়, চ, প-র-সা।

ভুড়ী।১

কানড়-কুন্থম জিনি কালিয়া বরণ খানি
তিলেক নয়নে যদি লাগে।
তেজিয়া সকল কাজ জাতি কুল শীল লাজং
মরিবে কালিয়া-অমুরাগে॥
সই আমার বচন যদি রাখ।
ফিরিয়া নয়ন-কোণে না চাইহ তার পানে
কালিয়া বরণ যার দেখ॥ ধ্রুঃ॥
আরতি পিরিতি মনে যে করে কালিয়া সনে
কখন ডাহার নহে ভাল।
কালিয়া রজস্থ কালা মনেতে গাঁথিয়া মালা
জাগিয়া জিলিয়াণ প্রাণ গেল॥

নিশিদিশি অনুখণ প্রাণ করে উচাটন
বিরহ-সনলে জলে তমু।

ছাড়িলে ছাড়ন নয় পরিণামে কিবা হর
কি মোহিনী জানে কালা কামু॥

দারুণ মুরগী-স্বর না মানে জাপন পর

মরম ভেদিয়া যার থাকে।

বিজ চণ্ডাদাসে কয় তমু মন ভার নর

বোগিনী হইবে সেই পাকে ॥১৯॥৭৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুশির ১২৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'তেজিয়া' ইত্যাদি স্থলে সা-প ২০১ পুশির
পাঠ যথা,—'ছাড়িএ সকল কাজ ডেজি কুলভর
লাজ'। ৩। 'ভূষণ' সা-প ২০১ পুশি। ৪। 'জালিয়া
জপিয়া' স্থলে 'জালিয়া জালিয়া' ক, খ। ৫। 'মিশি
দিশি' স্থলে 'নিশি দিন' ক, খ। ৬। 'জানে' সা-প
২০১ পুশি। ৭। 'সোই' ড়; 'এই' সা-প ২০১
পুশি।

श्रीबाब 15

কি রূপ দেখিলুঁ সই কদন্তের তলে।
লখিতে নারিলুঁ রূপ নয়নের জলে।
কি বৃদ্ধি করিব সেই কি বৃদ্ধি করিব।
নিতি নব অমুরাগে পরাণ হারাব।
কিবা নিশি কিবা দিশি কালা পড়ে মনে।
দেখিলে এমন হবেং জানিব কেমনে।
গৃহকাজে নাহি মন কর° নাহি সরে।
শ্যামনাম শুনিতে পুলকে জল ভরে।
ভাছেও সে মোহন বাঁণী রাধা রাধা বালে।
পরাণ কেমন করে মলুঁ লোক-লাজে।

পাঠান্তর

। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।

12-11261

२। 'हर' थे। ७। 'कोब्र' क। ४। 'छोहार्ट्छ' क।

ভাটিয়ারি ৷১

আগে পাছে চলে মোর কত প্রিয় সহরৌ ষমুনার জলে আজু যাই। **ঘোন্ন**ট কাডিতে^২ রূপ নয়ানে লাগিয়া গেল সরম রহিল সেই ঠাঞি n আজু দেখিলুঁ° রূপ কদম্বের তলে। হিয়ার মাঝারে মোর না জানি কি জানি হৈল নিরবধি ধিক ধিক জালে ॥ এ ॥ কেন বাচঞ্চল চিত নিবা**রিতে** নারি গো মন মোর থির নাহি বান্ধে। চেত্ৰ পাইলে প্ৰাণ কান্দে॥ शिद्ध शिद्ध भा श्राम বাডাই কত ছল করি তাহে গুরুজনেরে ডরাই।

পঠিস্তির

পিরিভি-অনল না নিভাই 1২১॥৭৯৭॥

বংশীবদনে কছে

শুন অমুরাগিণি

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১২৮০ সংখ্যক পদ।
 ২। 'কাঢ়িতে' ক, থ। ৩। 'দেখিল' ক, प;
 'দেখিলাম' থ। ৪। 'ছইয়া' ক।

एवा वान ।>

নব অনুরাগ-ভরে রহিতে না পারি ঘরে
চলে ধনী সখী একসঙ্গে ।
চলিতে না চলে পা ধরণে না বায় গা
কুঞ্জে মিললণ হেন রজে ॥
দেখিয়া বিনোদ হরি আনিলেন আগুসরি
বসিলেন রসের আবেশে ।
ধনী অনুরাগিণী কহরে সরস বাণী
শুনি নাগর প্রেম-জনে ভাসে ॥

স্থবদনী কহে কথা বেমন অস্তবে বেখা
ছলছল অরুণ নরানে।
গর্বব হর্ষ রসাবেশ দৈশ্য গ্লানি মোহ লেশ
গদগদ মলিন বরানে॥
আর কত ভাব ভাহে শ্লাম-মন মোহেণ যাহে
ঈষদ বিভ্নম ভাহে মাখা।
প্রেমদাস কহে ধনি সরস বিরস জানিণ
রাখিতে না যায় পুন রাখা॥২২॥৭১৮॥

ইত্যাদি রূপামুরাগঃ। ইতি দশম পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।
'তথা রাগ' হলে 'ভূপালী' প-র-সা। ২। 'এক
সঙ্গ'ক, থ, ঘ, চ। ৩। 'মিলন' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'রঙ্গ'ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'মোহ'
ঘ, চ, প-র-সা। ৬। 'বালী' খ।

অথ আক্ষেপামুরাগঃ।

স এব নানাবিধো ষণা।

কৃষ্ণঞ্চ মুরলীঞৈবং আত্মানক সধীন প্রতি।
দূত্যাং ধাতরি কন্দর্পে তথা গুরুগণাদিযু ॥

তত্র শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আক্ষেপো যথা।

তত্রাদে শ্রীমহাপ্রস্তু:। বস্ট ।>

দেখি গোরা নীলাচল-নাথ।
নিজ পারিবদগণ সাথ ॥
বিভার হইলা গোপী-ভাবে।
কহে পত্ত করিয়া আক্ষেপে ॥
আমি ভোমা না দেখিলে মরি।
উলটি নাং চাহ ভূমি কিরিও॥

করিলা পিরিভিময় কাঁদ।
হাতে দিলা আকাশের চাঁদ॥
এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ।
কহে গোরা করিয়া আবেশ॥
ছলছল অরুণ নয়ান।
রসরস বিরস বয়ান॥
অপরূপ গৌরাজ-বিলাস।
কহে কিছু নরহরি দাস ॥১॥৭৯৯॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'উলটি না' ফলে 'উলটিরা' ক। ৩। 'কেরি' ক,খ,ব,চ।

थाननी ।>

কুঞ্চ হি ভেটল নাগর শ্যাম।
ধনি অনুরাগিণি সহলই বাম ॥
গদগদ কহে কথা নাগর পাশ।
ভূতুঁ কাহে মাধব ভেলি উদাস॥
পহিলহি যত ভূতুঁ আরতি কেলং।
সো অব ছুরহি দূবে রহি গেলং॥
হাম ভূয়া দরশন লাগি বিভোরং।
ভূতুঁ কাহে বচন না শুনসিং মোর॥
ভূয়া লাগি কুল শিলং ভেলিলুঁ হাম।
না জানি কি অবহুঁ আহুরে পরিণাম॥
জ্ঞানদাস কহ নহেও চুলুরাই।
ধনি অভি সরল কহরে পুন ভাই ঃ২৮৮০০॥

পাঠান্তর 🥕 🤔

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'কেলি' ক। ৩। 'গেলি' ক। ৪। 'লাগি বিজ্ঞার' ছলে 'লাগিরা বিজ্ঞোর' ক; 'লাগিরা জোর' চ। ৫। 'শুন্সি' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'শীৰ' ক, খ, পার-লা। १। 'নছে' ছলে 'নাহ' ক, ঘ, চ।

শীৰাপ 1১

বন্ধু সকলি আমার দোষ। নাজানিয়া যদি করাছিং পিরিভি কাহারে করিব রোষ । স্থার সমুদ্র সমুখে দেখিয়া খাইলুঁ॰ আপন ফুখে। কে জানে খাইলে গরল হইবে পাইব এতেক দুখে॥ মো যদি জানিতাঙ অলপ ইন্সিভে তবে কি এমন করি। জাতি কুল শীল মঞ্জিল সকলঃ ব্যরিয়া ব্রিয়া মরি। **অ**নেক আশার ভরসা মক্রক দেখিতে করিয়ে সাধ। প্রথম পিরিভি ভাহার নাহিক ত্রিভাগ আধের আধ ॥ যাহার লাগিয়া যে জন মরয়ে সেহ যদি করে আনে। চণ্ডীদাসে কছে এমনি পিরিডি করয়ে স্থজন সনে ॥৩।৮০১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯১ সংখ্যক পদ।
২। 'ক্রেছি' ক; 'করিরাছি' ঘ। ৩। 'থাইল'
ঘ; 'আইলু' ক। ৪। 'মজিল সকল' ছলে 'সকল
মজিল' থ, ঘ; 'মজিল স্কলি' চ। ৫। 'অভাগের'
চ। ৬। 'কর্রে' থ, ঘ, প-র-সা। ৭। 'এমন' চ।

গান্ধার ৷১

অহে খ্যাম তু বড়িং স্থজন জানিং। কি গুণে বাঢ়াইলা° কি দোষে ছাড়াইলা' নৌতুন• পিরিতিখানি॥ ভোমার পিরিতি আদর আরভি আর কি এমন হবে। মোর মনে ছিল এ হুখ সম্পদ জনম অবধি যাবে॥ **क्लिंग म्याधान** ভাল হৈল কান বুঝিলাম অলপ কাজে। পাছু না গণিলাম মুঞি অভাগিনী **जु**वनः जित्रं ना**रक** ॥ ছিল শুভ দিন যখন আমার তখন বাসিতা ভাল। না পাই দেখিতে এখন এ>> সাধে কান্দিতে জনম গেল। বন্ধুর পিরিতি কহয়ে শেখর কহিতে পরাণ ফাটে। করাত যেমন>২ শ**খ**-বণিকের আসিতে যাইতে কাটে॥৪॥৮•২॥ পাঠান্তর ১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২৯২ ও প-র পুথির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯২ ও প-র পুথির ১৪।১২৭ সংখাক পদ। 'গান্ধার' হুলে 'দিল্ডা' প-র। ২। 'ডু বড়ি' হুলে 'ডুহু 'দে' থ। 'অংহ' ইত্যাদি পংজি হুলে প-র পুথির পাঠ বখা,—'অংহ শ্রাম তুমি বড় হুজন তা জানি'। ৩। 'সড়িলে' প-র। ৪। 'হাড়িলা' ক খ, য়, চ। ৫। 'নেবান' হুজেইলা' হুলে 'গুলে তালিলে' গ-র। ৬। 'নবীন' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৮। 'বুঝিলাম জলপ' হুলে 'বুঝিলু ডোমার' প-র। ৯। 'না স্থিলাম' হুলে 'নাহি স্থি' প-র। ১০। 'জ্পত' প-র। ১১। 'জ্তি' প-র। ১২। 'জ্লাত বেন্দ্র' হুলে 'ব্যেন্দ্র ধ্রণ' প-র-সা।

बाननी ।>

বন্ধু কানাই ক**ছিলে** বাসিবা ছুখ⁹। কুলের ধরম রাখে আর যত কুলবতী সে জনি হেরতের তুরা মুখ ॥ এ ॥ তিমির-কাজরু ভেল সহজে বরণ কাল অন্তর বাহিরে সমতুল। মরুক ভোমার বোলে ্কলসী বান্ধিয়া গলে সে ধনি মজাকু জাতি কুল a পরিচয় নাহি ছিল যথন তোমার সনে আন ছলে দেখিয়া বেড়াও। বারে বারে ডাকি আমি শুনিয়া না শুন ভূমি আঁখি তুলি সরসে না চাও॥ যখন পিরিতি কৈলা আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনে বনাইতা সোর বেশ। ऋषग्रः উপরে ধর আঁখি-আড় নাহি কর এবে তোমা দেখিতে সন্দেশ॥ একে হাম পরাধিনী তাহে কুল-কামিনা ঘরে > হৈতে আজিনা বিদেশ। যথা তথা থাকি আমি তোমা বহি নাহি জানি नकलि कश्निं १२नविर्णय ॥ বড় বৃক্ষ-ছায়া> দেখি ভরদা> করিলুঁ মনে ফুল ফলে ১ একই না গন্ধ। সাধিলা আপন কাজ আমারে সে দিলা লাজ জ্ঞানদাস পড়ি রহু ধন্দ 🛮 🕻 । ১৮০০।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯০ ও প-র পুথির ১৪।১২৯ সংখ্যক পদ। 'ধানদা' হতে 'ককণা' প-র। ২। 'বদ্ধ কানাই' হতে 'বদ্ধ হে' ও; 'অহে বদ্ধ' প-র। ৩। 'মনে হুখ' প-র। ৪। 'রাখি' ক, প-র-সা। ৫। 'কানি' ক, ও, চ, প-র-সা। ৬। 'পুঞ' ক, প-র-সা। ৭। 'কক্ষ' প-র। ৮। 'সর্বেশ' ক, খা ৯। 'বনাডো' প-র। ১০। 'ছিরার' প-র। ১১। 'ঘর' ক, থ, প-র-সা। ১২। 'কহিল' ক; 'জানহ' প-র। ১৩। 'বড় রক্ষ-ছারা' হলে 'রভনের রক্ষ' প-র। ১৪। 'ভরোসা' থ। ১৫। 'ফল' প-র।

সিম্বুড়া ।১

অহে কানাইং বুঝিলুঁ তোমার চিত। আগে আহারণ দিয়া মারুয়ে বান্ধিয়া এমতি তোমার রীত । গ্রন্থ যখন আমাকে সদয় আছিল৷ পিরিতি করিলা বড়। এখন কি লাগি হইলা বিরাগী নিদয় হইলা দড ।। वृक्षिनुं भद्राम যে ছিল করমে (महे (म इक्ट काय । নহিলে কে জানে খলের বচনে পরাণ সোঁপিলুঁ তায়। ভোমার পিরিভি দেখিতে শুনিতে যে দুখ উঠিছে চিতে। সে নারা মরুক যে করে ভরসা ভোমার পিরিতি-রীতে ॥ দেখিতে শুনিতে মানুষ-আকার আছি নাও আছিয়ে ঘরে। হিয়ার ভিতরে বেমত পুড়িছে সে তুখ কহিব কারে। পুরুবে জানিতাম হইবে এমডি পাইব এতেক লাব্দে। छानमात्र कट्ट देशब्रक भव्रह আপন সুখের কাজে ১৬৯৮০৪১ পাঠাত্তর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১২৯৪ ও প-র পুৰির ১৪।১৩- সংখ্যক প্র । ২। 'আহে কানাই' খনে 'অহে নাথ' প-র। ৩। 'আধার' প-র। ৪। 'মারহ'থ। ৫। 'দঢ়'ক, খ। ৬। 'আছি না' হলে 'আছিলে' প-র-সা। १। 'আছি না' ইত্যাদি ছলে 'আছিরে আভির হরে' প-র। ৮। 'সে হুখ' হলে 'তাহা বা' প-র। ৯। 'জানিতু' প-র।

यहरे ।>

কি মোহিনা জান বন্ধু কি মোহিনী জানং।

অবলার প্রাণ নিতে নাহি তোমা হেন ॥

রাতি কৈলুঁ দিবস দিবস কৈলুঁ রাতি।

ব্ঝিকে নারিলুঁ বিশ্বু তোমার পিরিতি॥

ঘর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ ঘর।

পর কৈলুঁ আপন আপন কৈলুঁ পর॥

কোন বিধি সিরজিলে সোতের শেহলিত।

এমন বেথিত নাই ডাকে রাধা বলি॥

বন্ধু তুমি যদি মোরে নিদারুণ শুও।

মারিব তোমার আগে দাঁড়াইয়া রও॰॥

বাশুলী-আদেশে ঘিজ চণ্ডীদাসে কয়ণ।

পরের লাগিয়া কি আপনা পর হয় ॥৭॥৮০৫॥

পঠিস্কির

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৯৫ ও প-র পূথির ১৭।১৭ সংখ্যক পদ। 'স্ফ্রই' হলে 'সিদ্ধুড়া' প-র। ২। 'কি মোহিনী' ইত্যাদি হলে প-র পূথির পাঠ বথা— 'বদ্ধ কি জানি মোহিনী জান'। ০। 'কোন বিধি' ইত্যাদি কলিটি প-র পূথি ব্যতীত অভ্যাভ পূথিতে নাই। ৪। 'চাও' খ, ঘ। ৫। 'বাক্তনী-আদেশে' ইত্যাদি হলে প-র পূথির পাঠ বথা,—

'চণ্ডীদাস কৰে হিয়া গুনিতে বুড়ার। এমন পিরিভি আর না দেখি কোথায়॥' শীরাগ ৷১

সে কালং গেল বৈয়া বন্ধ (म काल (गल देवग्रा^७।8 আঁখি ঠানাঠারি মুচকি হাসি কত না করিতা রৈয়াণ 🛭 বেশের লাগিয়া দেশের ফুল না রহিত কিছু বনে। নাগরীর সনেদ নাগর হইলা আর যে চিনিবা কেনে॥ কুলি ৮ বেড়াইয়া ১১ নাম লইয়া>২ ফিরিভা বংশী বাইয়া। শুনিতেহ্য কত মুখের কথা লোক পাঠাইভা ধাইয়া>খা হাতে করিয়া> মাথায় করিলুঁ ১৬ कनटकत्रभ छाना । শেখর কছে পরের বেদন নাহি জানেফ কালা মদাদেওডা পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রির ১২৯৬ ও প-র প্রির ১৪।১৩১ সংখ্যক পদ। 'গ্রীরাগ' হলে 'গ্রীগান্ধার' প-র। ২। 'দিন' প-র। ৩-৪। 'বৈহা' ঘ, চ; 'বঞা' প-র। হ। 'বৈহা' ঘ, চ। ৬। 'বে' প-র-সা। ৭। ক, খ, ঘ, চ প্রিতে 'কিছু' শব্দ নাই। ৮। 'নাগরীর সনে' হলে 'নগরে আসিয়া' প-র। ৯। 'বে' শব্দ ক, খ, ঘ, চ, প-র প্রতিভে নাই। ১০। 'কুলে' ধ; 'পথে' প-র। ১১। 'বেড়াঞা' ক। ১২। 'কুলি' ইত্যাদি হলে 'পথে বেড়াইরা মোর নাম লৈরা' প-র। ১৩। 'ওনিতে' ক, খ, ঘ, চ, প-র। ১৪। 'কত' ইত্যাদি হলে 'আমার বাটে বেড়াইতে থাঞা' প-র। ১৫। 'ক্রি ছুলি' প-র। ১৬। 'লইলুঁ' প-র। ১৭। 'আপনি কলক' প-র। ১৮। 'নাহি জানে কালা' হলে

'ডুৰি নাহি জান কালা' প-র।

ঞ্জীকুষ্ণস্থোক্তিঃ। ধাৰণী।>

স্থানির কাহে করসি তুরুঁ খেদ।

ত্রা বিনা রাতি দিবস হাম না জানিয়ে

কোনে কয়ল তোহেও ভেদ।

ত্রা মুখচাঁদ হেরি মঝু মানস

অহনিশি তহিঁ রহি গেলা।
নয়ন -কমল পর ভাঙ মদন-ধমু

তাহেও উমতি মতি ভেল।

কোটি রমণি তুয়া পদেও নিরমজিয়ে

তুরুঁ মঝু জীবন রাই।

তোহারি নাম গুণ অবিরত জপি হামধ্য
সদয়-হৃদয় তুয়া চাই।

এত কহি মাধব ছল-ছল লোচন

হৃদয় উপরে ধনি রাখি।

চরণ পরশি কহে হাম তুয়া অমুগত

প্রেমদাস তহিও সাখী।
১৯৮০ ৭।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৭ ও প-র পুথির
১৪।১৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোন' ক, প-র।
৩। 'তুর্ছ' ক। ৪। 'অহনিশি' ইত্যাদি হুলে
'কৈরৰ বিক্চনা ভেল' প-র। ৫। 'বরান'থ।
৬। 'দেখি' প-র। ৭। 'পারে' ক, চ; 'পার'
প-র-সা। ৮। 'কপি হান' হুলে 'অপতহি'
প-র।৯। 'তাহি' ক, খ, প-র-সা; 'তাহে' প-র।

পুনঃ শ্রীমভ্যুক্তিঃ। গদ্ধা

কি বলিব জার বন্ধু কি বলিব জার। নরানের লাজে না ছাড়ি লোকাচারং। গোকুলে গোয়ালাকুলে কেবা কিনা বোলে। ডমু মোর কুরে প্রাণ ডোমা না দেখিলে। একে মরি মনছথে আবে গুরুর গঞ্চনা ।

ডাকিয়া সোধায় হেন নাহি কোন জনা ॥

ডরে ডরাইয়া সে বঞ্চিব কত কাল ।

ভূয়া প্রেম-রতন গাঁথিব কঠমাল ॥

নিশি দিশি অবিরত পোড়ে মোর হিয়া ।

বিবলে বসিয়া কান্দি তোমা সম্ভরিয়া ॥

ভোমা দেখিবারে বন্ধু আসি নানা ছলে ।
লোকভয় লাগিয়া সে ডরে প্রাণ হালে ॥

না দেখিলে মরি যারে ভারে কিবা ভয় ।

যত্নাথ দাসে বলে দড়াইলে হয় ॥১০॥৮০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৮ ও প-র পুথির ১৪।১৩০ সংখ্যক পদ। ২ । 'নয়ানের' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'লাজে ছটি নয়ান না ছাড়ে লোকাচার'। ৩। 'আর' ক; 'তাহে' থ। ৪। 'অকর গঞ্জনা' খলে 'গুকুগঞ্জনা' থ, প-র-সা। । 'বিরয়া' প-র। । 'নাম লৈয়া' ক। ৮। 'তোমা দেগিবারে' ছলে 'তোমারে দেখিতে' প-র। ৯। 'লোকভর' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'লোকভরে মিলিতে না পারিয়ে বিরলে'।

यहरे ।>

পরাণ কান্দে বন্ধু তোমা না দেখিয়া।
অন্তরে দগণে প্রাণ বিদর্য়ে হিয়া॥
বারেক দেখিতে নাহি পাই সব দিনেই।
কেমনে বা রবে প্রাণ দরশন বিনে॥
এ ছুখ কাহারে কব কে আছে এমন।
ছুমি সে পরাণ-বন্ধু জান মোর মন॥ প্রতঃ
ইউকট করে প্রাণ রহিতে না পারি।
ধেণে খেণে জীরে প্রাণ খেণে খেণে মরি॥

কুল গেল শীল গেল না রহিল জান্তি। জ্ঞানদাস কছে এই বিষম পিরিতি॥

॥১১॥৮০৯॥

পাঠান্তর

১। ইথা প ব-সা পুথির ১২৯৯ ও প-র পুথির
১৪।১৯৪ সংখ্যক পদ। 'ফুহুই' ছলে 'ব্রীরাগ'
প-র-সা; 'সিকুড়া' প-র। ২। 'বারেক' ইত্যাদি
পংক্তির ছলে 'বারেক দেখা না হইল সকল দিনে'
ধ; 'বারেক দেখা নাই সকল দিনে' ঘ, চ; 'বারেধ
দেখাহ নাই সকলন্ত দিনে' প-র-সা। ৩। প-র পুথি
ব্য গ্রীত অস্তান্ত পুথিতে 'ধ্রু' নাই।

তুড়ী।১

তোমারে বুঝাই বন্ধু তোমারে বুঝাই।
ভাকিয়া সোধায় মোরে হেন জন নাই।
অনুখন গৃহে মোরে গঞ্জয়ে সকলে।
, নিশ্চয়ে ভানিহ মুঞি ভিখিমুং গরলে।
এ চার পরাণে আর কিবা আছে হুখ।
মোর আগে দাঁড়াপ চোমার দেখি চাঁদমুখ।
খাইভে সোয়ান্ত মাই নাহি টুটেড ভুক।
কে মোর বেণিত আছে কারে কব হুখ।
চণ্ডাদাসে কহে রাই ইছা না যুয়ায়।
পরের বোলে কেবা প্রাণ চাড়িবারে চায়।

পঠিস্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১০০ ও প-র পুৰির ১৪|১০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভক্ষিমু'ক; 'ভূমিব' প-র। ৩। 'ছুটে' প-র।

व्यानावत्री ।>

নিজ পতির বচনং যেমন পোলের যা। ভার আংগে দাঁড়াইভেঃ ভয়ে কাঁপেং গা॥ তাহে আর° ননদিনী করে অপমান।
তোমার পিরিতি লাগি রাথিয়াছি প্রাণ॥
মোর দিব্য লাগে বন্ধু মোর দিব্য লাগে ।
চাঁদমুখ দেখি মরিং দাড়াও মোর আগে॥
এ তোমার ভুবনং নাহন রূপ খানি।
ভাবিতে ভাবিতে মোর দগধে পরানি॥
ভক-ভয় লোক-লাজ নাহি পড়ে মনে।
কতে পরকারে চিত করি নিবারণ।
তমু সে ভোমার প্রেম নহে বিসর্বংও॥
কহে বলরাম দাস কেমনে যাবে ছাড়া॥

পাঠান্তর

りついかろろれ

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০০১ ও প-র পুথির ১৪।১৩৬ সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আদোয়ারি' প-র-সাঃ 'সিক্মড়া' প-র । ২। 'কুবচন' প-র । ত। 'ষেন' প-র। ৪। 'माखाईर७' थ। ८। 'হালে' প-র। ৬। 'তাহে আর' স্থলে 'তাতে কত'প-র। ৭। 'রহিয়াছে' প-র। ৮। 'মোর **षिवा' हेळाषि भःकित श्रःल वक् भात्र पिया गार्थ।** প-র। ৯। 'মরোঁ' প-র। ১•। 'জীবন' প-র। 3>। '(इन' १-व-मा, १-व। २२। 'बाटका' थ। ১০। 'তমু' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,---'বে বল সে বল মোরে ভূমি প্রাণধন'। ১৪। অতঃ-পর প-র পুথিতে নিম্নিথিত অতিরিক্ত কলিটি দৃষ্ট হয়; যথা,—'মোরে দেখি আন নারী করে ঠারাঠারি। এ বড় দারুণ শেল পাসরিতে নারি॥' ১৫। 'ভোমার পিরিডি' ইত্যাদি ভণিতার কণির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ ষ্ণা,—'বলরাম দানে কহে ভাঙ্গল বিবাদ। সকল নিছিয়া লৈল তুরা পরিবাদ ॥'

नोकांत्र १५

বিষের অধিক বিষ পাপ ননদিনী।
দারণ শাশুড়ী মোর জ্বস্ত আগুনি।
শাণানং ক্রের ধার স্থানী ত্রজন।
পাঁজরে পাঁজরে কুলবধ্র গঞ্জন।
বন্ধু ভোমায় কি বলিব আন।
যে বলু সে বলু লোকে তুমি সে পরাণ। গ্রুণ।
ভোমার কলঙ্ক বন্ধু গায় সব লোকে।
লাজে মুখ নাহি ভোলোঁ। সভীর সমূপে।
এ বড় দারণ শেল সহিতে না পারি।
মোরে দেখি আন নারী করে ঠারাঠারি।
বলরাম দাস কহে ভালিল বিশাদ।
সকল নিছিয়া নিলুঁ ভোমার পরিবাদ॥১৪॥৮১২।

পঠিষ্টের

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩•২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'সানন' ধ; 'সানান' ष; 'সানান' চ। ৩।
 প-র-সা পুথি ব্যতীত অঞাক্ত পথিতে 'ঋ' নাই।
 ৪। 'তোলো' ক; 'তোল' প-র-সা।

ष्ट्रहो ।>

কান্দিতে না পাই বন্ধু কান্দিতে না পাই।
নিচরেং মরিব তোমার চাঁদমুখ চাই ॥
শাশুড়ী ননদার কথা সহিতেও পারি।
তোমার নিঠুরপনা সোভরিয়া মরি॥
চোরের রমনী যেন ফুকরিতে নারে।
এমতি রহিয়ে পাড়াপড়সীর ভরে॥
ভাহে আর ভূমি সে হইলা নিদারুণ।
ভ্যানদাস কহে ভবে না রহে জীবন॥

পাঠান্তর

1176112301

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩০৩ সংখ্যক পর।

২। 'নিশ্চয়' ক; 'নিশ্চয়ে' ধ, প-র-সা। ৬। 'না' ক, প-র-সা।

সিকুড়া ।১

ব্যানি চাঁদ হাতে দিলা যখনং পিরিতি কৈলা আপনি করিতা মোর বেশ। আঁখির আড় নাহি কর হিয়ার উপরে ধর এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ॥ একে হাম পরাধিনী ভাহে কুল-কামিনী घरतः देश्टल व्यक्तिमा विस्मा। না যায় তমু ত আন এত পরগাদে প্রাণ আর কত কতিব বিশেষ॥ ननमी विषय कैं। है। বিষমাখা দেয় খোঁটাৎ তাহে তুমি এত নিদারুণ। কবি চণ্ডীদাসে কয় কিবা ভূমি কর ভয় বস্থু তোর নহে অকরণ ॥১৬।৮১৪॥ পাঠাস্তর

>। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩∙৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বধনে' ক। ৩। 'মোরে' ঘ। ৪। 'ঘর' ▼, প-র-সা। ৫। 'খোটা' च; 'ঘোঁটা' প-র-সা।

यहरे ।)

হেদে হে বিনোদরায়।
ভাল হৈল ঘুচাইলেং পিরিভের দায়॥
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাগ ভরি কলঙ্ক রহিল এই চিন ॥
না জানি অন্তরে মোর হৈল কিনাণ বেথা।
একে মরি মনহুধে আর নানাণ কথা॥
ঘারে না মরিয়ে বন্ধু মরি মিছা দার।
চণ্ডাদাস করে কাহার কথারেং কিণ ধার॥
॥১৭॥৮১৫॥

পঠিত্র

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ঘুচাইলা' ক। ৩। 'কিবা' প-র-সা। ৪। 'ভাহে' প-র-সা। ৫। 'কথার' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'কিবা' ক, প-র-সা।

ভাটিরারি।১

তুমি ত নাগর রসের সাগর যেমত ভ্রমর-রীত। সামি ভ চুথিনী कूल-कलक्रिमी হইলুঁ করিয়া প্রীভ ॥ গুরুজন ঘরে গপ্তয়ে আমারে ভোমারে কাহব কভ। বিষম বেদনা কহিলে কি যায় পরাণে সহিছে যত। পিরিতি বন্ধু হে অনেক সাধের কি জানি বিচেছদ হয়। বিচ্ছেদ হইলে পরাণে মরিব ্ৰমতি মনে সে লয়। পিরিতি বিষম চণ্ডাদাস কৰে শুনহং বড়ুয়ার বন্ধ। পিরিতি বিছেদ হইলে বিপদ এমত না হউ কেন্তু ॥১৮॥৮১৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৬ সংখ্যক পদ। ২। 'শুন হে' থ, প-র-সা। ৩। 'বিষদ' ক; 'বিচেহ্ন' চ, প-র-সা।

कुड़ो ।>

ত্বখিনীর বেণিত বন্ধু শুন তুখের কথা। কাহারে মরম কব কে জানিবে বেণা॥ কান্দিতে না পাই পাপ ননদীর ভাপে। আঁখির লোর দেখি কহে কান্দে বন্ধুর ভাবে॥

বসনে মৃছিয়ে ধারা ঢাকি বদি গায়।
আন ছলে ধরি গুরুজনেরে দেখায়॥
কালা নাম লৈতে না দেয় দারুণ শাশুড়া।
কাল হার কাড়ি লয় কাল পাটের শাড়া॥
ছথের উপরে বন্ধু অধিক আর ত্বখ।
দেখিতে না পাই বন্ধু তোমার চাঁদমুখ॥
দেখা দিয়া যাইতে বন্ধু কিবা ধন লাগে।
না যায় নিলজ প্রাণ দাঁড়াই ভোমার আগে॥
বলরাম দাস বলে হউক খেয়াতি।
জিতে পাসবিতে নারি ভোমার পিরিতি॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০∙৭ সংথ্যক পদ। ২। 'হের'খ। ৩। 'ননদিনীর'খ। ৪। 'মুছিরা' ড়,খ,চ,প-র-সা। ৫। 'রাখি' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কাঢ়ি'খ।

थाननी ।>

আপন শপতি করি হাত দিয়া মাথে।
স্থ্ধুইং শরীর মোর প্রাণ তোমার হাতেও ॥
বন্ধু ছে তোমারে বুঝাই।
সভাই বলে আমি ভোমারণ তেঞি জীতে
চাই । ধ্রু ॥

নিরবধি ভোমা লাগি দগধে পরাণ।
তিলেক দাঁড়াও কাছে জুড়াকু নয়ান।
কি লাগি দারুণ চিত কাঁদে দিন রাতি।
কৰে বলরাম বড় বিষম পিরিতি। ২০।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৮ ও প-র পুথির ১৭১৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'হুখই' খ, প-র-সা, পর। ৩। 'সাথে' খ। ৪। 'রে' প-র-সা। ৫। 'আমি তোমার' ফুলে 'শ্রামের রাধা' প-র। ৬। 'দগধ' প-র-সা। ৭। 'পথে' প-র।

তথা রাগ ৷১

ভোমার লাগিয়া বন্ধু যত তুখ পাই। তাহা কি কহিতে পারি তোমার যে ঠাঞি। একে প্রেম-জালা তাছে গুরুর গঞ্চন। নিরবধি প্রাণ মোর করে উচাটন। পতি তুরমতি তাহেং সদা দের গালি। ভাবিতে ভাবিতে তমু ক্ষীণ অতি কালী। এ সব হুখেতে° আমি হুখ নাহি গণি। তোম। না দেখিতে পাই বিদরে পরাণি॥ শুনিয়া নাগর কহে করি নিজ কোরে⁸। বুক' ভাসিয়া গেল নয়ানের লোরে ॥ গদগদ কহে নাগর কাতর-বয়ানে। পরাণ নিছিলুঁ রাই ভোমার চরণে n ভুয়া গুণে বিকাইয়াছি কিনিয়াছ মোরে। অধীন জনেরে কেন কছ পুনবারে । যে কহ ভাহাই করি নাহি কিছু ভর। যত্ন কৰে এই ভাল আর কিছু নয়॥

পাঠান্তর

15716721

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' খ। ৩। 'ছুখেড' খ। ৪। 'নিছ কোরে' স্থান 'জোড় করে' প-র-সা। ৫। 'বুক' ক, ম, চ, প-র-সা। 'বুক' পাঠে ছুম্মোভক ঘটে। ৬। 'পুন্র্কারে' ক।

1122112391

ইভি সাক্ষাৎ অসুরাগঃ।
অত্যান্তরে সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনান্তরে।
মুরলীং প্রতি আক্ষেপো যথা।
ভত্ত শ্রীগৌরচন্তঃ।
হুহিন।

রামানক্ষ স্বরূপের সনে ।
বসি গোরা ভাবে মনে মনে ॥
চমকি কছরে আলি আলি ।
ক্ষণেং রহিয়া বাঁশীরে দেয় গালি ॥
পুন কহে স্বরূপের পাশে ।
বাঁশী মোর জাতিকুল নাশে ॥
ধ্বনি কাণে পশিয়া রহিল ।
বধির সমান মোরে কৈল ॥
নরহরি মনে মনে হাসে ।
দেখি এই গৌরাক্ষ-বিলাসে ॥২২॥৮২০॥

>। हेहां প-द्र-नां পूषित ১৩১० नःश्वेक शहा २। 'करन करन' का

পাঠান্তর

জীরাধারাঃ মুরলীং প্রতি আক্ষেপ:।
ভবা রাব।>

ষুরলি রে মিনতি করিয়ে বারে বার।
ভাগের অধরে বৈরাণ রাধা রাধা নাম লৈরাণ
তৃমি মেনে না বাজিও আর ॥
খলের বদনে থাক নাম ধরি সদা ভাক
শুক্তজনা করে অপবশ।
শুল হয় বেই জনা সে কি ছাড়ে খলপনা
ভূমি কেনে হও ভার বশ॥

তোমার মধুর স্বরে রহিতে নারিলামণ বরে
নিকরে করেরে হু নয়ান।
পহিলে বাজিলা যবে কুল শীল গিয়াছে ভবে
অবশেষে আছে মোর প্রাণ॥
বে বাজিলা সেই ভাল ইথেই সকলি গেল
ভোরে আমি কহিলু নিশ্চয় ।
এ দাস উদ্ধবে ভবে যে বংশীর সান শুনে
বে জন ভেজই কুল-ভয় ॥২০॥৮২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১১ সংখ্যক পদ।
২। 'করবে' ক। ৩। 'রঞা' ঘ। ৪। 'লঞা'
ঘ। ৫। 'মেন' খ, ঘ, চ; 'বেন' প-র-সা। ৬। 'নারিলু' প-র-সা। ৭। 'গেল' ক। ৮। 'থ্যব-শেব' থ। ৯। 'স্ক্ল' ক, প-র-সা।

बर्रे ।>

শুন তোরে কি বলিব বাঁশী।
সভীকুল সকলি বিনাশি॥
গোবিন্দ-অধর-স্থারস।
পিয়া পিয়া মাতালি সাহস॥
অগত মোহদি মৃত্ত্বরে।
রমসি শবদেশ যারে তারে॥
অথবা কি ভূমি অভি দোষী।
বাঁশিনী-বাঁশের জাতেও বাঁশী॥
দারুতে গঢ়ল ভূয়া দেহ।
কেবল দারুময়াও সেহ॥
এ যতুনন্দন দাস ভণে।
কি করুণা স্ক্ঠিন জনে॥২৪॥৮২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩১২ সংখ্যক পদ।
 ১। 'রমসি খবদে' কলে 'বসসি ববদে' ব। ●।

'ৰাতে' ক; 'ৰাতি' খ। ৪। 'দাকণমন্ত্ৰী' ক, প-র-সা; 'দাকণমই' ঘ; 'দাকণমন্ত্ৰি' চ।

স্তিত্তে ধনুষশ্চ বংশবরতো বন্দে তয়োরস্তিমং । বিদ্ধো যেন জনস্তন্মং বিরহয়নান্তশিচরং তামাতি। বিদ্ধানাং হৃদি মার-পত্তি-বিষটমধ্বনিষ্ঠিন ত্যা ক্রুবে বংশি ন জীবনং ন চ মৃতির্ঘোরাবিরাসীদ্দশা ॥

R2CHH2SH

পঠিক্তির

>। 'বিদধ-মাধব' নাটক হইতে উদ্ধৃত এই লোকটি প-ন-সা পুথিতে নাই। অভাক্ত পুথিতেও ইহা অভত্র পদক্রপে গণিত হয় নাই। কিন্তু ইহাকে গণনা না করিলে নিদিষ্ট পদসংখ্যার পূরণ হয় না বিশ্বা ইহা অভত্র পদ-ক্রপে গণিত হইল।

নিক1

শ্বতিবিতি"। হে বংশি। বংশবরতঃ শ্রেষ্ঠ-বংশাৎ তব ধমুষন্ট স্তিক্রংপজিঃ। 'বংশবরতঃ' ইতাত্র শ্লেষমহিয়া শ্রেষ্ঠ-কুলাদিতি ধ্বনিঃ। তেন চ শ্রেষ্ঠকুলোডুতেন ন কদাপি পরাপকারঃ কার্যা ইতি বাজ্যতে। তয়োর্বংশীধমুবোরহিমা শেবাক্তং ধমুনরিতি শেবঃ বন্দে। যেন বিদ্ধো জনঃ তমুং বির-হ্যন্ তাজন্ সন্ চিরকাগং নাস্তভামাতি। জয়া হৃদরে বিদ্ধানাং নোহশ্বাকং ন জীবনং ন চ মৃতিঃ। কিছ বোরা দাকণা দশা আবিবাসীৎ জাতা। কৈবিদ্ধানাং—ধ্বানেষ্ভিঃ ধ্বানাং শ্রম এব ইববো বাণাতৈঃ। কীদুলৈঃ—মারপত্রিভাঃ কন্দর্পবাবেভ্যো-হৃশি বিষ্ট্রমঃ।

অমুবাদ

হে বংশি! ভোষার ও ধলুর উভরেরই উৎক্লষ্ট বংশে কম। ভোষাদিগের উভরের মধ্যে
ধলুকেই বন্দনা করি; বেহেডু উহার ধারা বিদ্ধ ব্যক্তি দেহ পরিভাগে করার অধিক কাল ক্লেশ ভোগ করে না। কন্দর্শের শর হইভেও দারুণ ভোষার শর-রূপ বাণসমূহ ধারা ক্রম্যে বিদ্ধ ব্যক্তিগণের না শীৰ্ষ, বা বৃত্যু-এক বিষয় দশা ঘটিয়া থাকে।

ভাৎপৰ্বা

কৰি 'উৎকৃষ্ট বংশে জন্ম' এই মিট বাক্যের ধানি ৰারা বুঝাইতেছেন বে, সৰংশ-জাত ব্যক্তির পক্ষে পরের অপকার করা কথনই সঙ্গত নহে; স্থতরাং সৰংশ-জাত বংশার পক্ষে মৃত্যু অপেক্ষাও স্থারণ স্থণীর্ঘ বাতনা প্রধান করা বার-পর-নাই গহিত বটে।

ৰাড়াৰা ৷১

ছিন্দ্র-জ্ঞালে পূর্ণাং তুমি শুনহ মুরলী।

সতি লঘু স্থকঠিন স্বাস্থর তোহারি ।
নীরস তোহার ভন্ম গ্রন্থি তাহে হয়।
কৃষ্ণ-করে থাক তুমি কোন শুভোদয় ।
কৃষ্ণের অধরে তুমি রহণ অনুক্ষণ।
তাহাতে পাইলা তার নিবিড় চুম্বন ।
বতুনাথ দাসে বোলে শুনহ মুরলি ।
নারী-প্রাণ লওয়া হেন কোপায় পাইলি ।
॥২৬॥৮২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১০১০ সংখ্যক পদ।

২। 'পূৰ্ণ' ক্,থ, প-র-সা। ৩। 'ফুকঠিনা' খ, চ।

৪। 'কোন শুভোদয়' খলে 'কেমন মভদয়' ক;
'কোন মভোদয়' খ; 'কোন মডো নয়' ঘ; 'কোন
প্লোদয়' চ। ৫। 'য়হি' প-র-সা। ৬। 'আরো'

ক; 'জুমি' প-র-সা। ৭। 'য়হনাখ' ইভাাদি
ভণিতার কলি প-র-সা ব্যতীত অফাফ্র পুৰিতে নাই।
এই পদটি নিয়লিখিত বিদশ্বমাধবীর প্লোকের মন্দ্রায়্রবাদ, বথা—'সখি মুরলি বিশালচ্ছিক্রমানের পূর্ণা,
লল্পতি কঠিনা খং গ্রহিলা নীরসাসি। ভদপি ভলসি
শব্দতুশ্বনানন্দগালেং, হরিকরপরিরস্তং কেন প্রোদ্ধাদ্বেন।'

वाना शननी ।>

শ্রামের মুরলী क्रमग्रर भूत्रलि করিলি সকলিও নাশ। না শুনি আর্ডি মোহরু মিনভি করহ বাজিতে আশ। শুন শুন রে ধরমনাশা। ও মুখ বাহ্মিব দেব আরাধিয়া ঘূচাব তোমার আশা ॥ ধ্রু ॥ আমরা অবলা সহজে অখলা দেখিয়া তোহার লোভ: সকলি৽ খাইয়া অলপে অলপে জীবনে করহ ক্ষোভ II সভর হইলুঁ এখনে আমরা ভেজহ এ সব আশ। না ছাড়ে করণ যাহার যেমন करक् मरनांक्त्र मांग ॥२९॥५२८॥

পাঠান্তর হা প-র-দা পুথির ১৩১:

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩১৪ সংখ্যক পদ।
১। 'জদর' হুলে 'জদরে' ঘ। ৩। 'সকল' ক,

૫, প-র-সা। ৪। 'মোহোর' ক, চ; 'মোরহ' প-র-সা। ৫। 'ডোমার' প-র-সা। ৬। 'সকল' ক, ૫, ૫, চ। ৭। 'কারণ' ক।

यहरे ।)

গুরুজনারং স্থালায় প্রাণ করয়ে বিকলিও।
বিগুণ আগুন দেওও শ্যামের মুরলী ॥
উভ হাতে ভোমায় মিনতি করি আমি।
মোর নাম লৈয়া আর না বাজিহ ভূমি॥
ভোর স্বরে গেল মোর জাতি কুল ধন।
কত না সহিব পাপ-লোকের গঞ্চন ॥
ভোরে কহি বাঁশিয়া নাশিয়া সতীকুল।
ভোর স্বরে মুঞ্জি অতি হৈয়াছি আকুল॥

আমার মিনতিং শতং না বাক্সিছ আর।
জ্ঞানদাস করে উহার ওইং সে বেভার॥
॥২৮॥৮২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১০১৫ সংখ্যক পদ।
২। 'গুরুজন' ক। ৩। 'ব্যাকুলি' প-র-সা।
৪। 'দিয়া' ক; 'দাও' অ; 'তাহে' প-র-সা। ৫। 'সপতি' প-র-সা। ৬। 'সও' (সক্ত ?) চ; ডোরে' প-র-সা। ৭। 'অই' প-র-সা।

> ততে। মুরলী-চরিত্রং দখীং প্রতি কথয়তি।

শীরাপ ।১ সঞ্জনি লো সই। খানিক বৈদহ শ্যামের বাঁশীর কথা কইং । ঞ। শ্যামের বাঁশীটী তুপয়াণ ডাকাতি मत्रवम इति देलनः। পরাণ পুড়নিং হিয়া দগদগি কেন বা এমতি কৈল। খাইতে শুইচে আন নাহি চিত্তে বধির করিলে বাঁশী। সব পরিহরি করিলে বাউরী मानदा रयमन नागी ॥ কুলের করম रेथत्रक थत्रम नत्रम मत्रम गराँनि। এই সে কারণে চণ্ডীদাস কহে काञ्च-भनवतन वींनी ॥२२॥৮२१॥

পঠি**ত্ত**র

া ইহা প-র-সা পুথির ১০১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'থানিক' ইত্যাদি হলে প-র-সা পুথির পাঠ
হথা,—'থানিক বৈসহ থানিক স্থানের
বাশীর কথাটি কই॥'

। 'ছপরে' ক; 'ছফরে' প-র-সা। ৪। 'নিল'
 । ৫। 'বোড়নি' ক। ৬। 'কাছর' ক, খ, প-র-সা।

টাকা

স-> । "নব" ইজ্যাদি। (বানী) সকল কাৰ্য্য

ছাড়াইরা উন্মন্তা কৰিল; (উছা) বেন (আমাকে)

দাসী ৰলিরা মনে করে অর্থাৎ আমার বারা দাসীবৎ

ইচ্ছামত কার্য্য করার। তুলনা করুন; বধা,—

"বিষম বানীর কথা কহিলে না হর।

ডাক দিরা কুলবতী বাহির করর॥

কেশে ধরি লৈরা বার স্থামের নিকটে।

পিরাসে হরিণী বেন পড়রে সম্বটে॥"

—চণ্ডীদাস; প-ক-ত, ৮০০ সংখ্যক পদ।

थाननी ।>

কালা-গরণের জালা আর তাহে অবলা
তাহে মুঞিং কুলের বৌহারীণ।
অন্তরে মরম-বেথা কাহারে কহিব কথা
ব্যোপতে গুমরিং মরি মরি ॥
স্থি হে বংশী দংশিলেণ মোর কাণে।
ডাকিয়া চেতন হরে পরাণ না রহে ধড়ে
ভদ্ম মন্ত্র কিছুই না মানে ॥ গ্রন্থ ॥
কালারণ লাগিয়া হামণ হব বনবাসী।
কালা নিলেশ জাতি কুল প্রাণ নিলেশ
বাঁশী ॥
ভবল বাঁশের বাঁশী নামে বেডাজাল।

ভরল বাঁলের বাঁলী নামে বেড়াজাল।
সভারি > স্থলভ বাঁলী রাধার হৈল কাল।
অন্তরে অসার বাঁলী বাহিরে সরল > ।
পিবরে অধর-স্থা উগারে গরল।
বে ঝাড়ের ভরল বাঁলী ঝাড়ের লাগ
পান্ত > ।
ভালে মূলে উপাড়িয়া সাগরে ভাসাভ > ।

বিজ চণ্ডীদাসে কৰে বংশী কি করিবে। সকলের মূল কালা তারে না পারিবে।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-লা পুথির ১০১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর' খ। ০। 'বৌহরী' ঘ। ৪। 'শুপড়ে'
ক; 'অন্তরে' প-র-লা। ৫। 'শুমরে' প-র-লা। ৮।
'লামি' প-র-লা। ১-১-। 'নিল' ক, প-র-লা।
১১। 'লবার' ক। ১২। 'রলাল' প-র-লা। ১৬।
'বে ঝাড়ের' ইড্যাদি স্থলে 'বেনা দেশে বাসির ঘর
দেশে কাঙ্ড' ঘ। 'বে ঝাড়ের বাশি তুমি
ভাহার লাগ পাঙ্ড' প-র-লা।

তুড়ী।১

त्रहिर्द कि । चरत्र মুরলীর স্বরে গোকুল-যুবতীগণে। আকুল হইয়া বাহির হইবে না চাবে কুলের পানে কি॰ রজ-লীলা মিলায় শিলা শুনিতে সে ধ্বনিং কাণে। যমুনা-প্ৰন **থকিভ-গমন**• ভূবন মোহিত গানে । व्यानम्य छेपग्र ত্থ-ত্থাসর **एक मित्रा व्यक्टत्रण ठाटन।** मत्रदम् काना कोरत कि व्यवनाः हानरप्रभे भवन-बार्ण ॥ কুলবতী-কুল क्टब नित्रभून निरविध नाहिक मारन। চণ্ডীদাস তথে রাখিহ>২ সরুষে कि त्यांविमी काला कात्म १७० १४४३।

পাঠান্তর

ইছা প-র-সা পুথির ১২৯, ১০১৮ ও প-র পৃথির বাত সংখ্যক পদ। ২। 'রহিবে কি' ছলে 'রহিব কে' প-র-সা। ৩। 'কিবা' প-র-সা। ৪। মিশার যে' প-র-সা। ৫। 'মে ধ্বনি' ছলে 'হৃন্দর' প-র-সা, প-র। ৬। 'থিকিত গগন' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা। १। 'হৃধু' ক; 'হৃধ' চ, প-র-সা। ৮। 'অস্তরে' ক, প-র-সা। ১। 'মরমে যে' প-র-সা; 'মরমের' প-র। ১০। 'কি অবলা' ছলে 'কিয়ে বালা' ক। ১১। 'হানিল' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাধির' ক; 'রাধিও' প-র-সা।

युश्हें ।)

বিষম বাঁশীর কথা কহিলে না হয়ং।
ডাক দিয়া কুলবতা বাহির করয়॥
কেশে ধরি লৈয়া যায় শ্রামের নিকটে।
পিয়াসে হরিণী যেন পড়য়ে সক্ষটে।
সভা ভুলে নিজ পতি মুনি ভুলে মন।
শুনি পুলকিত হয় তরু-লভাগণ॥
কি হবে অবলা জাতি সহজে সরলা।
কহে চণ্ডীদাস সব নাটের গুরু কালা॥
॥৩২॥৮০০॥

পঠিস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'কছিলে না হয়' ছলে 'কহন না য়য়' ক;
'কহন না হয়' চ; 'কহনে না য়য়' প-র-সা। বোধ

য়য়' কহিল না হয়' ৩জ পাঠ হইবে। ৩। 'হয়িণ'
ক,খ,য়,চ। ৪। 'য়ৌন' ক,খ,ঢ়,প-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

কি কহিব রে স্থি ইহ দুখ-ওর। বাঁশি-নিশাস-গরলে তন্ম ভোর॥ হঠ সঞ্জে পৈঠয়ে শ্রাবণক মাঝ।
তৈখনে বিগলিত তকু মন লাজ ॥
বিপুল পুলক পরিপুরয়েই দেই।
নয়নে না হেরি হেরুয়ে জনি কেই॥
গুরুজন সমুখহি ভাব-তরক্ষ।
যতনহি বসনে ঝাঁপি সব অক্ষ॥
লহু লহু চরণে চলিয়েই গৃহ মাঝ।
দৈবে সে বিহি আজু রাখল লাজ॥
তকু মন বিবশং খস্যে নিবি-বন্ধং।
কি কহব বিস্তাপতি রহু ধন্ধ॥৩৩॥৮০১॥

পাঠান্তব

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩২০ সংখ্যক পদ।

২। 'পরিপুরল' ক। ৩। 'চলয়ে' খ। ৪।
'বিবশ' স্থলে 'বিরস' প-র-সা। ৫। 'নীবিবন্ধ'
ক,খ।

় নিজং প্রতি আক্ষেপো যথা। শ্রীগোরচক্তঃ॥

ত্থী। বির্লোচনিকর ভাব কহনে না যায়।
বির্লোচনিকের ভাব কহনে না যায়।
বির্লোচনিয়া পক্ত করে হায় হায়॥
প্রিয় পারিষদগণ পুছুয়ে তাহারে।
কহে মুঞি কাঁপ দিব সমুদ্র মাঝারে ॥
করিলুঁ দারুণ প্রেম আপনা আপনি।
ছু কুলে কলক হৈল না যায় পরাণি॥
এত কহি গোরাচাক ছাড়য়ে নিখাস।
মরম বুঝিয়া কহে নরহরিদাস॥৩৪॥৮৩২॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২১ সংখ্যক পদ।
২। 'সমুজ মাঝারে' ফলে 'য়মুনার নীরে' ক;
'য়য়না মাঝারে' চ, প-র-সা।

পাহিড়া ৷১

ধিক্ রক্ত নারীর যৌগনে।
পিরিতি করয়ে শঠ সনে ॥
যার লাগি প্রাণ সদা ঝুরে।
ফিরিয়া না চাকে সেহং মোরে॥
কি করিব তারে দোষ দিয়া।
না দেখিয়ে ললাট চিরিয়া॥
আপনা ভাপনিং বাঢ়াইলুঁ।
তুই কুলে কলক্ষ রাখিলুঁ।
তুই কুলে কলক্ষ রাখিলুঁ।
সকলিং করিলুঁ ভাম ভঙ্গ॥
ছিয়ে ছিয়ে পাপ পরাণ।
অবস্তুঁ নাহিক বাহিরাণ॥
এ পাপ পিরিতি নাহি আশা।
শুন করে নরহরিদাস॥৩৫॥৮৩৩॥

পাঠাস্তর

১। ইংগাপ-র-সাপুথির ১০২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সেই'ক, ঘ, চ। ৩। 'আপুনি' থ, চ; 'আমাপনা' প-র-মা। ৪। 'স্ক্ল'ক, থ, ঘ, চ।

গান্ধার।১

ধিক রহুঁ জীবনে যেং পরাধিনা জীয়ে।
তাহার অধিক ধিক্ পরবশ হয়ে॥
এ পাপ কপালে বিহিঃ এমতি লিখিল।
স্থার সাগরং মোরে গরল হইল॥
অমিয়া বলিয়া যদি ভুব দিলুঁ তায়।
গরল ভরিয়া কেনে উঠিল হিয়ায়॥
শীতল বলিয়া যদি পাষাণ কৈলাম। কোলে।
এ দেহ-অনল-তাপে পাষাণ সে গলে॥
ছায়া দেখি বসি যাই। তরুলতা বনে।
ভুলিয়া উঠয়ে তরুলভাপাতা সনে।

যমুনার জলে যদি দিয়ে হাম ঝাঁপ।
পরাণ জুড়াবে কি অধিক উঠে তাপ।
অতএ দে এ ছার পরাণ যাবে কিসে।
নিচয়ে ভথিমু মুঞি এ গরল বিষে।
চণ্ডীদাস কহে দৈব-গতি নাহি জান।
দারুণ পরিতি সেই বধ্যে পরাণ।
।৩৬॥৮৩৪।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২৩ সংখ্যক পদ।
২। 'যে' শব্দ থ, ব ও চ পুথিতে নাই। ৩।
'পাপ কণালে' স্থলে 'পাপ পরাণে' ক; 'পাপক
প্রাণে' থ। ৪। 'বিধি' ক, চ। ৫। 'সাগরে'
ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কৈলাঙ' প-র-সা। १।
'বসি যাই' স্থলে 'যাই যদি' ক। ৮। 'সনে'
প-র-সা। ৯। 'ধর্ষে' ক, চ; 'বধ্ই' প-র-সা।

ভথা রাপ।১

যত নিবারিয়ে পায় নিবার না যায় রে।
আন পথে যাইতে সে কামু-পথে ধায়রে।
এ ছার রসনা মাের হইল কি বাম রে।
যার নাম নাহি লই লয় তার নাম রে॥
এ ছার নাসিকা মুঞি যত করিং বন্ধ।
তভু ত দারুণ নাসা পায় শ্রাম-গন্ধ॥
সে না কথা না শুনিব করি অমুমান।
পরসঙ্গ শুনিতে আপনি যায় কাণ॥
ধিক্ রহুঁ এ ছার ইন্দ্রিয় মাের সব।
সদা সে কালিয়া কামু হয় অমুভব॥
কহে চণ্ডীদাস রাই ভাল ভাবে আছে।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠাস্তর

1100411001

১। ইছাপ-র-সাপুণির ১৩২৪ সংখ্যক প^{দ।} ২। 'তাম'ক; 'পদ'প-র-সা। ৩। 'ৰাই' ^{ক।} ৪। 'হইল কি বাম রে' ছলে 'হৈল কি বাম রে' ক; 'হইল কিবা মোরে' ঘ। ধ। 'ষত করি' ছলে 'কত করু' ক, থ, চ, প-র-সা।

হ্যারাপ ।১

কুলের বৌহারাং রাজার ঝিয়ারী স্বামী-সোহাগিনা নারী। পিরিতি লাগিয়া এ ভিন খোয়ালুঁ **इहेलूँ कूल-थाँ** शांती ॥ সই কি ছার পরাণ কাজেও। স্বপনে শে জন⁸ নাহি দরশন জগত ভরিল লাজে॥ ধ্রু॥ ধরম করম সব তেয়াগিলুঁ যাহার পিরিতি সাধে। জাতি কুল শীল সকল গ মজিল সে জনার পরিবাদে॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়াজার-জর না রুচে আহার পানি। ক্তে বলরাম এ তিন• আখর কেবল ছুখের খনি ॥ ৩৮॥৮৩৬॥ পাঠান্তর

া ইহাপ-র-সাপুথির ১৩:৫ ও প-র পুথির

>৪।৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কুলের বৌহারী' স্থলে
'কুলের বৌহয়ারি' চ; 'রাফার বছয়ারি' প-র।

৩। 'সই' ইত্যাদি স্থলে 'সই ছার পরাণে কি
কাজে' প-র। ৪। 'সে জান' স্থলে 'বা সনে' প-র।

৫। 'সকলি' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৬। 'এ
তিন' স্থলে 'পিরিভি' প-র।

ঙ্খা রাগ।) কোন বিধি সির্জিল কুলবতী নারী। সদা প্রাধিনী খবে রুহে একেখুরাই॥ ধিক্ রহুঁ হেন জন হৈয়া প্রেম করে।
বুধা সে জাবন রাখে তখনিও না মরে ॥
বড় ডাকেও কথাটি কহিছে যে না পারে।
পর-পুরুষেতেও রতি ঘটে কেন তারে।
এ ছার জাবনে মুই ঘুচাইলুঁ আশ।
চণ্ডীদাস কহে কেন ভাবহ উদাস॥৩৯॥৮৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'একাম্বরী' ধ, প-র-সা। ৩। 'এম্বনি' ধ। ৪। 'ডাকি' থ। ৫। 'পুরুষেত' ক, পার-সা; 'পুরুষের' থ।

ঙ্বা রাগ।১

আন্ধার ঘরের কোণে থাকি একেশ্বরী।
কোন বিহিং সিরজিল ছার কুলনারীও॥
কথার দোসর নাই খারে কহোঁ। ছুখ।
দেখিতে না পাও চাঁদ স্থক্তের মুখ॥
কহ স্থি কি হবে উপায়।
না জানি কি গুণ কৈলে বিদগধ রায়॥
ছারের আন্ধিনা দেখিবারে লাগে সাধ।।
ততু ত না গুণে মনে এত প্রমাদ॥
তার কা দেখিয়াও কৈলুঁ মরণ সমাধি।।
রাতি দিনে কান্দে প্রাণ বিষমণ বেয়াধি॥
আন কথা কহোঁ। যদি গুকুর সমূখে।
ভারমে তথনি মোর শ্রাম আইসে মুখে॥
ভাবেণ বিভার ততু গদ-গদ বাণী।
ধরিতে ধরণে বা যায়ণ হুটি চৌধেরণ
পানি ।

সে রূপে মজিল চিত গাধরিল^{১৬} নয়। বলরামদাস বলে না জানি কি হয় ॥৪•॥৮৩৮॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২৭ ও প-র পুথির ১৪।৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বিধি' ক। ৩। 'কুলের বছয়ারি' প-র। ৪। 'যারে কটো' স্থলে 'বারে কছো' ক, ব, চ ; 'কারে কব' প-র। ৫। 'সই'প-র। ৬। 'ঘরের' ইত্যাদি স্কলে 'ঘরের আঙ্গিনা মোর দেখিবারে সাধ' প-র। ৭। 'লাগিয়া' থ। ৮। 'কৈলুমরণ সমাধি' স্থলে 'বৈল মরম ममाधि' প-त्र। २। 'कि टेडन' প-त्र। २०। 'करहा' क, घ, ह। ১১। 'ভাবিতে' क, ह। ১>। 'ধরণ' ক, প-র-সা। ১০। 'নাযায়' স্থলে 'নচে' প-র। ১৪। 'ছটি চৌথের' স্থলে 'ছটি আঁথের' ক: 'ছচক্ষের' প-র। ১৫। অত:পর প-র পুথিতে নিয়ালিখিত অভিবিক্ত কলিটি দৃষ্ট হয়; যথা, -'ও চান্দমুখের হাসি আধ আধ বোলে। হিয়ার ভিতরে প্রাণ নিরবধি দোলে॥' >७। 'शांत्रदिल' क, श-त-मा; 'शांत्रवात' थ।

তথা রাপ।১

অমুখণ কোণে থাকি বসনে আপনা ঢাকি ছুয়ারের বাহির পরবাস। আপনা বলিয়া বলে হেন নাহি ক্ষিভিতলেং েন ছারের হেন অভিলাষ॥ স্থি হে° তুয়া পায়ে কি বলিব আর। সে হেন চুলছ জনে অবিরত যার মনে নিশ্চয়° মরণ্ড প্রতিকার ॥ প্রণ ॥ না বুঝে পামর মন বুঝাইলুঁ অমুক্ষণ পিরিতি হইল মোর কাল। শুনিতে মরমে বেগা ভাহে ননদিনী-কথা এ ঘর-বসতি বড় জাল॥ **শুভ ভত্ত মনে করি**দ নিশ্চয় করিতে নারিশ রাতি দিবস নাহি যায়। সব মোর রিপুগণ>• ধ্বে ধত গুরুজন

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ২৬১ ও ১৩২৮ ও প-র পুথির ১৪।৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আপনা' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ; ষ্থা,—'হেন নাই মোর ক্ষিতিতলে আপনা বলিয়া বলে'। ৩। 'সই' প-র। ৪। 'পায়' ক; 'ঠামে' প-র-সা। ৫। 'কেবল' প-র-সা, প-র। ৬। 'পরম' প-র। ৭। 'বুঝাইলুঁ' ইত্যাদি কলিটি প-র ব্যতীত অস্তান্ত পুথিতে নাই। ৮। 'ষত' ইত্যাদি স্থলে 'ষত ষত মনে করি' ক, চ; 'কি করিতে কি না করি' প-র-সা; 'কত কত মনে করি' প-র। ৯। 'নিশ্চম' ইত্যাদি স্থলে 'কছু দড়াইতে নারি' প-র-সা; 'চিত নিবারিতে নারি' প-র। ১০। 'করিব' ক, ঝ, প-র-সা, প-র। ১২। অতঃপর প-র পুথিতে নিয়্লিথিত অদ্ধ-কলি দৃষ্ট হ্য; যথা,—

'নরোজ্তম দাসে কয় শ্রাম সে তোমার ২র ইথো দঢ জানিছ নিশ্চয়।'

> অত্র "ধিক্ রহু পরাধিনী নারী" ইঙ্যাদি গেয়ম্।*

অথ সখীং প্রতি আক্রেপো যথা।

श्रीरगीवठमः।

সুহই।১

আরে মোর গোর কিশোর। পুরুব প্রেম-রদে ভোর॥ স্বরূপ দামোদর রামরায়। করে ধরি করে হায় হায়॥

রাতি দিবস নাহি যায়।

• 'ধিক্ রছ পরাধিনী নারী' ইত্যাদি পদটি
ত শুরুজন

সব মোর রিপুগণ'
কোন পুথিতেই উক্ত হর নাই; স্তরাং আমরা
কি কহিব'
কি হবে উপায়' ॥৪১॥৮৩৯॥ উহা এ হলে সরিবেশিত করিতে পারিলাম না।

কহে মৃত্ব গদগদ ভাষ।

হন বহে দীঘ নিশাস' ॥

মরম না বুঝে কেহো মোর।

কহে পক্ত হইয়া বিভোর ॥

কেনে বা এ প্রেম বাঢ়াইলুঁ।

জীয়ন্তে পরাণ খোয়াইলুঁ॥

নিকরে ঝরয়েও চুনয়ান⁸।

নরহরি মলিন বয়ান ॥ ৪২ ॥ ৮৪০ ॥

পাঠান্তর

১। ইঙা প-র-সা পুথির ১৩২৯ সংখ্যক পদ। ২। 'নিখাস' ঘ, চ। ৩। 'নিঝুরে ঝুরুরে' প-র-সা। ৪। 'নয়ান' ক, খ, চ, প-র সা।

তথা রাগ।১

কাহারে কহিব তুথ কে বুঝে সন্তর।
যাহারে মরমী কহিং সে বাসয়ে পর॥
আপনার বলিতে বুঝি নাহিক সংসারে।
এত দিনে বুঝিলুঁ সে ভাবিয়া অন্তরে॥
মনের মরম কহি জুড়াবার তরে।
বিশুণ আগুন সেই জালি দেয় মেনের দ এত দিনে বুঝিলাম মনেত ভাবিয়া।
এ তিন তুবনে নাই আপনা বলিয়া॥
এ দেশে না রব একা যাব দুরদেশে।
সেই সে যুগতি কহে বিজ চঙাদাসে॥
॥৪৩॥৮৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৩ সংখ্যক পদ। ২। 'বাসি' প-র-সা। ৩। 'আপনা' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'দেই' প-র-সা। ৫। 'মনেতে' ক, পর-সা। ৬। 'নাহি'ক, খ; 'নাঞি'চ।

মুছই (১

কি করিব কোথা যাব কি হবে উপায়।

যাবে না দেখিলে মরি ভারে না দেখায়।

যার লাগি সদা প্রাণ আনছান করে।

মোরে উপদেশ কর গাসরিতে ভারে।

এত দিন ধরি মুঞি হেন নাহি জানি।

যে মোর তুখের তখা তার তেন বাণী।

আন ছলে রহি কত কবে কাণাকাণি।

প্রেমদাস বলে তুমি বড় অভিমানা।

18846831

পাঠান্তর

১। হচাপ-র-সাপৃথির ১৩৩১ সংখাক পদ। ২। 'আমনচান' ক। ৩। 'করে' ক, খ, খ, প-র-সা।

> › পুনশ্চ সখীং প্রতি আক্ষেপো শ্থা।

সিকুড়া।>

ভোমরা মোরে ডাকিয়া সোধাও না
প্রাণ আনছান বাসি।
কোবা নাহি করে প্রেম আমি হৈলাম
দোষী॥ প্রশা
গোকুল নগরে কোবা কি না করে
তাহে কি নিষেধ বাধা।
সভী কুলবভা সে সব যুবভা
কাসু-কলিজনা রাধা॥
বাহির হইলেই লোকে চরচারই
বিষ মিশাইল ঘরে।
পিরিভি করিয়া জগভের বৈরী
আপনা বলিব কারে॥

বেথিত আছিলা তোমরা পরাণের জীবনে মরণে সঞ্চ দোষিণী হইলে অনেক দোষের কে ছাডে আপন অসং॥ नरमन नमन গোকুলের কান সভাই আপনা বলে। মো পুনি ইছিয়া নিছিয়া লইলু অনাদি জনম-ফলে॥ ডাকি না স্থাও রাধা বলি আর এখনি এখানে মৈলে। **हशोगांत्र** करह সকলি পাইবা বন্ধুয়া আপন হৈলে ॥৪৫॥৮৪৩॥

পাঠাম্বর

 ইহাপ-র-সাপুথির ১০০২ সংখ্যক পদ।
 হৈতে ক, ধ, ব, চ। ৩। 'চরচায়ে' থ, ব,
 চ, প-র-সা। ৪। 'সঙ্গ' ক, থ। ৫। 'গোকুল কান' ক, ধ, ব, চ। ৬। 'সো' ক, থ, প-র-সা।
 १। 'পুন' ক, থ।

তথা রাগ ৷>

দেখিলে কলক্ষিনার যুখ কলক ইইবে।

এ জনার মুখ আর দেখিতে না হবে॥

ফিরি ঘরে যাও নিজ ধরম লইরা।

এ দেশে না রব মুঞি যাব বারাইরা॥

কালা-মাণিকের মালা গাঁথি নিব গলে।

কামু-গুণ্যশ কাণে পরিব কুগুলে॥

কামু অমুরাগ - রাক্ষা বসন পরিয়া।

দেশে দেশে ভরমিব যোগিনী ইইরা॥

চণ্ডীদানে কহে কেনে ইইলে উদাস।

মরণের সাথী যেই দে কি ছাড়ে পাশ॥

#851P881

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'কলছীর' ক, চ। ৩। 'অফুরাগে রাঙ্গ' ঘ,চ।

धाननी ।>

স্থি হে ফিরিয়া স্থাপন ঘরে যাও। জিয়ত্তে মরিয়া যে আপনা খাইয়াছে তাহে তুমি কি আর বুঝাও॥ ধ্রু॥ নয়ন-পুতলী করি লইলুঁমোহন রূপ হিয়ার মাঝারে কবি প্রাণ। পিরিতি-সাগুনি জালি সকলি পোড়াইয়াছি জাতি কুল শীল অভিমান॥ না জানিয়া মৃঢ় লোকে, কি জানি কি বলে মোকে না করিয়ে শ্রবণগোচরে। স্রোত-বিথার *জলে* এ ওমু ভাগাইয়াছি কি করিবে কুলের কুকুরে।। খাইতে শুইতে রৈতে আন নাহি লয় চিতে বন্ধু বিনে আন নাহি ভায়। মুরারি গুপতে কহে পিরিভি এমতি হৈলে তার গুণ তিন লোকে গায়।।৪৭॥৮৪৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০৪ সংখ্যক পদ। এই পদটি ইতিপূর্বে ৭৫১ সংখ্যক পদরূপে উদ্ভ হইয়াছে; স্নত্যাং পাঠাস্তর উক্ত পদে এইব্য।

ভুড়ী।১

আর কত বোল সই আর কত বোল।
নিভান অনল আর পুন কেন আলে ।
যে অনলে পোড়ে হিয়া সে অনলে সেকি।
কস্তারী লেপিয়া অঙ্গে শ্রাম-নাম লেখি।।

শ্যাম-পরসক্ষ বিনে যদি প্রাণ রয়।
তমু ত' দারুণ লোকে এত কথা কয়।।
জ্ঞান কহে বিনদিনি নিবারহ চিতেও।
কালায় মাতল মন কি করে কথাতে ॥৪৮॥৮৪৬॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩০৫ ও প-র পুথির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'নিভাল্য' প-র। প্রকৃত পাঠ বোধ হয়, 'নিভাইল' হইবে। বাঙ্গালা-কৃদস্ত 'নিভাইল' শব্দের অর্থ 'নির্বাপিত'। 'নিভান' রূপটি অপেক্ষাকৃত আধুনিক। ৩। 'অনল' ইত্যাদি ছলে 'অনল কেন ফুক দিয়া আগ' প-র-সা; 'মনের আগুন পুন' ইত্যাদি প-র। ৪। 'পে অনণে' ফলে 'তাহে পুন' প-র। ৫। 'তমু কি' ধ, ঘ। ৬: 'জ্ঞান কহে' ইত্যাদি ভণিভার কলিটি প-র পুথি ব্যভীত অক্সাক্স পুথিতে নাই।

সিক্স্ড়া।১

কি মোর এ ঘর^২ হুয়াবের^৯ কাজ
লাজে কহিতে⁶ নারি।
তিলেক বিচেছদে লাগে পরমাদ
হিয়া বিদরিয়া⁶ মরি য়
আপন ইচছায় বাছিয়া লইলুঁ
ব্য মোর করমে ছিল।
এ কথা⁶ শুনিয়া যে জন বিমুখ
তারে তিলাঞ্জলি দিল।

কি আর বুঝাও কুলের ধরমণ

মন সভন্তর দার।

কুলবভী হৈয়া রসের পরাণ

জনিং কারোং পাছে হয় ॥ বিশ্ব স্থান ব্যাধন

এ ছটি নয়ানের ভারা।

পরাণ-অধিক নয়ান>>-পুডলী ভিলেকে বালিয়ে> হারা ॥

গঞ্জে গুরুজন

বলু ১০ কুবচন

সে মোর চন্দন চুয়া।

শ্যাম-অনুরাগে

অ**ন্স বে**ডিয়াছি

তাল ১৪ তুলসী দিয়া ॥৪৯ ॥৮৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর-সা পুথির ১৩৩৬ ও প-র পুথির ১৪। ১ সংখ্যক পদ। ২। বর'ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৩। 'হয়ারে' ক, ঋ, চ। ৪। 'লাজে কহিতে' স্থলে 'লাজ কহিতে' ক, প-র-সা; 'লাজ করিবারে' ঋ, দ, চ। ৫। 'হয়া বিদরিয়া' স্থলে 'র্রিয়া ঝুরিয়া' ঘ, চ। ৬। 'বোল' ঋ, চ, শ-র। ৭। 'কুলের ধরম' স্থলে 'ধরম বিচার' পর। ৮। 'অভয়র' ক, প-র-সা, প-র। ১। 'কারি' ক, ঋ, প-র-সা, প-র। ১০। 'কার' ক; 'কারু' ঘ। ১১। 'হয়ার' প-র। ১২। 'তিলেকে বাসিয়ে' স্থলে 'বলে কুবচন' ক, চ, প-র-য়া; 'বলুক বচন' থ। ১৪। 'তিল' ক, প-র-য়া; 'তিল' পাঠেছনোভঙ্গ ঘটে।

দূতীং প্রতি আক্রেপো যথা।

মলার ।১

দিবস রজনী গুণ গণি গণি
ক হৈল দারুণ বেথা।
খলের বচনে পাতিয়া শ্রাবণে
খাইলুঁ আপন মাধা ॥
শুন শুন দৃতি কি কছ মো প্রতিং
বচন না লাগে ভাল।
কি ছার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে
সোণার বরণ কালা:॥

সোণার গাগরি বিষক্ষল ভরিৎ কেবা আনি দিল হাগে।

করিলুঁ আহার

না করিঃ বিচার

এ বধ কাহা**রে লা**গে ॥

নীর লোভে মূগী

পিয়াসে ধাইতে

ব্যাধ শর দিল বুকে।

অলের সফরী

আহার করিতে

বড়শী লাগিল মুখে॥

নব ঘন৬ হেরি পিয়াদে চাতকীণ

চঞ্ছ পদারল আশে।

বারিক বারণ

করল প্রন

কুলিশ মিলল শেষে ॥

লাখ হেম পাইয়া

য়ুনে বান্ধিতে

পড়িল অগাধ জলে।

হেন অমুচিত

করে পাপ বিধি

विक हडीनाटम वटन ॥४०॥४८৮॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ১০০৭ ও প-র পুণির ১৪।১১২ সংখ্যক পদ। ২। 'শুন শুন' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির স্থলে প-র পুণির পাঠ; যথা,—

'সই কে বলে পিরিভি ভাল।' ৩। 'সোণার গাগরী' ইত্যাদি ফলে প-র পূথির পাঠ; যথা,—

'বিষের গাগরী থিরে মুথ পুরি।'
৪। 'না করি' স্থলে 'করহ' প-র। ৫। পিরাদে
ধাইতে' স্থলে 'আনন্দে ধাওই' প-র। ৬। 'নব ঘন'
স্থলে 'অলধর' প-র। ৭। 'চাতক' প-র। ৮।
অতঃপর পর পুথিতে নিমাল্ধিত অতিরিক্ত ক্লিটি
দুষ্ট হয়; য্থা,---

'থির লাড়ুকরি বিধ মাধাইয়া অবলা বালকে দিল। আছু পাইয়া খাইতে খাইতে নিক্ট মরণ ভেল॥' অথ বিধাতারং প্রতি আক্ষেপো যথা।

শ্রীগোরচনদঃ।

यहरे ।)

কনক-চম্পাক গোরাচানে ।
ভূমিতে পড়িয়া কেন কান্দে ।
ক্ষেণে উঠি কহে হরি হরি ।
কে করিল আমারে বাউরি ॥
আজানুলাপিত বাস্ত তুলি ।
বিধিরে পাড়য়ে সদা গালি ॥
বহে ধিক্ বিধির বিধানে ।
এমত যোটনা করে কেনে ॥
কোন ভাবে কহে গোরারায় ।
নরহরি সোধিয়া বেড়ায় ॥৫১॥৮৪৯॥

পঠিস্তের

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ভোমেতে' খ, ধ। ৩। 'ঘোটন' ক; 'ঘোটনা'থ।

ভেউট বিহাগ ৷১

ধাতা কাতা বিধাতার বিধানে দিলামং ছাই।
জনম হৈতে একা কৈলে দোসর দিলে নাই।
না দিলে রসিক মৃত্ মুক্তথের° সনে।
এমতি আছিল তোর এ পাপ বিধানে।
যার লাগি প্রাণ কান্দে তার নাই। দেখা।
এ পাপ করমে মোর এমতি লেখাভোখা।
ঘর-ছ্য়ারে গাগুন দিয়া যাব দূর দেশে।
আরতি পূরিবেং কহে কবি চণ্ডীদাসে।

পাঠান্তর

ne znocol

>। ইহা প-র-দা পুথির ১৩৩৯ সংখ্যক প^র। 'ডেউট বিহাপ' ফ্লে 'ডেউটা বিহাগড়া' প-র-দা। ২। 'দিয়াছি' ক; 'দিরে' চ, প-র-সা। ৩। 'পুরুষের' ক; 'মুকুথের' থ, ঘ, প র-সা। ৪। 'নাহি' ক, থ, প-র-সা। ৫। 'পিরিতি' ঘ।

টাকা

৩—৪। "না দিলে" ইত্যাদি। চে মৃচ্
(বিধাতা!) (তুমি) রসিক পুরুষের সঙ্গে (আমাকে)
দিলে না অর্থাৎ আমাকে রসজ্ঞ নায়কের সহিত
সন্মিলিত করিলে না; তোর পাপ-বিধানে এইরপ
ছিল গ

ভণা রাগ।>

বিধির বিধানে হাম আনল ভেজাই।

যদি সে পরাণ বন্ধুরং ভার লাগি পাই॥
গুরু তুরুজন যত বন্ধুর বেষ করে।

সন্ধ্যাকালে সন্ধ্যামুনিং তার বুকে পড়ে॥
আপন দোষ না দেখিয়া পরের দোষ গায়॥
আমার বন্ধুকে যে করিতে চাহেং পর।
দিবস তুপরে যেন পোড়ে তার ঘর॥
এতেক পুবতি আছে গোকুল নগরে।
কে না বন্ধুরেং দেশি বুক ফাটি মরে॥
বাশুলী আদেশে ঘিজ চণ্ডাদাসে ভণে।
ভোমার বন্ধু ভোমার আছে গালি পাড়িছ
কেনে॥৫০৮৫১॥

পাঠাম্বর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'বল্প' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সল্ক্যামনি' ख; 'সল্লামনি' প-র-সা। ৪। 'বুক্' প-র-সা। ৫। 'চার' ল, চ। ৬। 'বলুকে' খ। শীরাগ ।১

আপনা আপনি **দিবস রজনী**ভাবিয়েং কতক তুখ।

যদি পাখা পাই পাখী হৈয়া যাই
না দেখাই পাপ মুখ ॥

সই বিধি দিল মোরেও শোকে। পিরিতি করিয়া আশ না পুরল

কলক্ষ ঘূষিল লোকে ॥ ধ্রণ ॥
হাম অভাগিনা তাহে একাকিনী
নহিল দোসর জনা।

জভাগিয়া লোকে য**ত বোলে মোকে** ভাগা যেখনা যায় **শুনা।**

বিধি যদি শুনিত' মরণ হইত• ঘুতিত সকল দুখ।

চণ্ডীদাসে কয় এমতি **হইলে** পিরিতির কিবা^৭ স্থ**য** ॥৫৪॥৮৫২॥

্ পাঠা স্কর

১। তহাপ-র-সাপ্রথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভাবিয়া' প-র-সা। দ। 'মোকে' প-র-সা।

৪। 'দে' ঘ। ৫। 'হৈভ' প-র-সা। ৮। 'করভ'
প-র-সা। ৭। 'পিরিভির কিবা' স্থলে 'পিরিভি
কিসের' প-র-সা।

কন্দৰ্পং প্ৰতি আক্ষেপো যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:।

षूड़ो ।>

গৌর স্থন্দর মোর।

কি লাগি এক**লে** বসিয়া বিরলে নয়নে গলয়েং লোর ॥ **গ্রু**॥ হরি-অমুরাগে আকুল অন্তর গদগদ মুতু কহে। সকল অকাজ করে মনসিজ এত কি পরাণে সহে॥ অবলা-শরীর করে জরজর মনের মাঝারে পশি। কহিতে ঐছন পুরুব-বচন অবনত মুখ-শশী॥ প্রলাপের পারা .কিবা কহে গোরা মরম কেহো না জানে। পুরুব-চরিত সদা বিভাবিত

পাঠাম্বর

দাস নরহরি ভণে ॥৫৫॥৮৫৩॥

১। ইছাপ-র-দাপুথির ১০৹২ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়নে গলয়ে' স্থলে 'গলয়ে নয়নে' ক, ধ, চ,প-র-দা।

धाननी ।>

পর-মন্দকারী পঞ্চবাণ-ধারী তোরে বাং বলিব কি। তোর আকর্ষণে পিরিতের ফাঁদে আমি সে ঠেকিয়াছি॥ মরম বুঝিলুঁ এত দিনে তোর অনক ভোহারি নাম। অঙ্গ বা থাকিলে আর কি হইত কি জানি কি গুণগাম॥ মনের মাঝারে পশিয়া নারীর সরম করিলিঃ দুর। তার প্রতিফল হইবে ভোমার ক হিলুঁবচন গৃঢ়॥

কালার পিরিতি লাগি ভোর শরে কাতর হৈয়াছি আমি।

কহরে উদ্ধব যে জন অন্তরে তারে কি ছাড়িবে তুমি ॥৫৬॥৮৫৪।

পাঠাস্কর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'আর' ঘ, চ। ৩। 'মার কি হইড' ফুলে 'আর কি হইডা' ক; 'আব কিবা হৈড' প-র-সা। ৪। 'করিলা' ক।

ভিরোধা।১

কতরে মদন তমু দহসি হামারি।

হাম নহ শঙ্কর হঙ্ বরনারি ॥

নাহি জটা ইহ বেণি-বিভন্ম।

মালতি-মাল শিরে নহ গঙ্গ॥

মোতিম-বন্ধ মৌলি নহ ইন্দু।
ভালে নয়ন নহ সিন্দুর-বিন্দু॥

কঠে গরল নহ মুগমদ-সার।

নহ ফণি-রাজ উরে মণিহার॥

নীল পটাম্বর নহ বাঘছাল।

কেলি-কঙল ফুল্ম না হয়ে কপাল॥

বিঙাপতি কহ এ২েন স্কুল্ম।

অঙ্গে ভসম নহ মলয় প্র-পঙ্কা। ৫৭॥৮৫৫॥

পাঠাগুর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৬০৫, ১৩৪৪ ও প-র
পুথির ১৪।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কভিছ' ক, ধ,

য়, চ; 'কথিছ' প-র। ৩। 'ভূছ' क; 'রছ' চ।
৪। 'নহি' প-র-সা। ৫। 'শিরে' ঘ। ৬। 'অনল'
প-র-সা, প-র। १। 'মণিরাজ' ক; 'ফণিহার'
ঘ। ৮। 'কেলি-কঙল ফুল' স্থলে 'কেলিকমল ইহ'
ক; 'কেলিক কমল' চ। ১। 'না হুরে' স্থলে 'এ

_{নহৈ}'প-র-সা; 'না হোমে' প-র। ১০। 'কহ _{এ'হন'} হলে 'কৰি কছই'প-র-সা,প-র।

ভণা রাগ ৷১

মনমথ তোহে কি কহব অনেক।

দিঠি-অপরাধে পরাণ পরিপীড়সিং

এ তুয়া কোন বিবেক ॥ এছ ॥

ডাহিন নয়ন পিশুনগণ বারণ

পরিজন বামহি আধ ।

আধ নয়ন-কোণে যব হরি পেখলুঁণ

তাহে ভেল এত পরমাদ ॥

পুরুষ্ণ বাহির পথ করত গতাগত

কোন না হেরত কান।

ভোহারি কুন্থম-শর কপিত্ত না সঞ্চর

হামারি হৃদ্যে পাঁচবাণ ॥৫৮॥৮৫৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৪৫ ও প-র পুথির ১৪। বেশংখ্যক পদ। ২। 'পেয়ে পাঁড়িসি' ক, চ; 'পর পিড়িসি' প-র-সা। ৩। 'কৌন' প-র-সা। ৪। 'নয়নে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'য়ব ইরি পেথলু' ছলে 'হরি অবলোকনে' প-র। ৬। 'প্রত' প-র-সা। १। 'কোন না' ছলে 'কো নাহি' ক, খ, চ; 'কোনে না' ঘ। ৮। 'কভিছ' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা।

টাকা

১—৩। "মনমথ" ইত্যাদি। হে মন্মথ! ভোমাকে অধিক কি বলিব? (তুমি) নয়নের দোব হেতু প্রাণকে নিতান্ত পাঁড়া দিতেছ; ইহা ভোমার কি বিৰেচনা?

8— १। "ডাহিন" ইত্যাদি । (আমার)
দক্ষিণ নয়ন নিক্কদিগের এবং বাম-নয়নের অর্জ-ভাগ পরিজনদিগের বারণ-কারী অগাৎ দক্ষিণ নয়নে নিক্কুকদিগের ও বাম-নয়নের অর্জভাগে পরিজনদিগের দৃষ্টি বাঁচাইয়া, (অবশিষ্ট) বামনমনার্দ্ধের প্রাস্কভাগ ঘারা বখন ঐক্তিফকে দেখিলাম,
ভাহাতেই এত প্রমাদ হইল! (উভন্ন নমনে ভাল
করিয়া শ্রিক্ষকে দেখিলে না জানি কি প্রমাদ
হইত!)

দ্ৰ>>। শপুৰ" ইত্যাদি। (প্রীক্ষণ)
গোকুণে ও বাহিরের পথে যাতায়াত করেন;
শীক্ষণকে কোন বাক্তিনা দেখে ? তোমাব কুন্থমশার কোথায় না সঞ্চরণ করে ? (ভবে) আমার
ফুদয়েই পঞ্চবাণ (স্থায়ী) কেন ?

পুনশ্চ কলপরি তং স্থাং প্রক্তি কথয়তি।

ধানা :>

কুলের বৈরা হইল মুরলা
সকলি করিল নাশে।
মদন-কিরাতা মধুর যুবতা
ধরিতে আইল দেশে॥
সই জাব না এমন বাসি।
পিরিতি আঠা ননদা কাঁটাং
পড়দা হইল ফাঁদৌ॥ গ্রুছা

বৃন্দাবন মাঝে বেড়ায় সাজে ধরিতে যুবতা-জনা।

যমুনার কুলে গাছের তলে আসিয়া^ও করিল থানা॥ গাছের ডালে বসিয়া ভালে

ভাক করে এক দিঠে। জড়ান আঠা না যায় কাটা লাগিল পাখার পিঠে॥

ধড়ফড়ইতে⁸

পড়িয়া ভূমিতে

কিরাতে ধরিল পাখে। পাখে পাখা দিয়া বান্ধিল টানিয়া ঝুলিতে ভরিয়া রাখে। চণ্ডীদাসে কয় মহাজন হয়
কিনিয়া লয় যে পাখী।
ছাড়িয়া দেয় পাখা যে ধোয়ায়
তবে সে এড়ান দেখি ॥৫৯।৮৫৭॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১·৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'থোটা' প-র-সা। ৩। 'ব্সিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'ধড়ফড় হইতে' খ, ঘ।

তথা রাগ।১

আরে মনমথ নাহি ওয়া ধরম-বিচার। কো করু দোখ রোগ করুং কা সঞ্জে বড় তুহুঁ মুরুখ গোঙার॥ কলা গুণ-মাধুরি শুনইতে রূপ তেঞি দিঠি হেরল কান। সোই যোধ-পতি তাহে নাাহ পারলি হৃদয়ে হানলি পাঁচ বাৰ॥ কিয়ে গুণে রতি ভোহে পতি করি মানল নাম কে রাখল কাম⁸। নাশসি কাম কুলটা-পদ দেওসি অব তোহে চানলু ৫ হাম॥ দেবীপতি শিব জীব তুয়া রাখল ছিয়ে ছিয়ে এ বড়ি দুখে। সাধি যৈছে ধাওলি তা সঞ্জে বাদ তৈছে অনল দিল মুখে ॥ অব হাম শস্ত আরাধব তুয়া লাগি পুন তোহে করব বিনাশ। বিরহিণিগণ যেন কিয়ে ঘর কিয়ে বন যাহাঁ ভাহাঁ স্থা করু বাস॥

ধরণিক বাণি মান শ তুহুঁ স্বন্ধরি
শস্তু আরাধবি কায় শ ।
মনমপ-কোটি মথন করু যোজন
সোতুয়া চরণ ধেয়ায় শ ॥৬০॥৮৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপৃথির ১৩৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কর' প-র-সা। ৩। 'গুলে রতি' ছলে
'গুণবতী' ক। ৪। 'কান' ক। ৫। 'অব তোছে
চীনলুঁ' ছলে 'আর তোছে চিহুল' ক। ৬। 'দেকিপতি শীব' ঘ; 'দেবিপতি শিব' চ। ৭। 'ছবে' ক,
থ, প-র-সা। ৮। 'মুঝে' ক, থ, প-র-সা। ১।
'আরাধিব' খ, ঘ। ১০। 'মানি' ঘ, চ, প-র-সা।
১১। 'আরাধিব কার' ছলে 'পুজবি অব কার' ঘ।
১২। 'ধিয়ার' খ; 'ধোরার' ঘ।

গুরুগণাদীন্ প্রতি আক্ষেপো যথা। শ্রীগোরচন্দ্র।

बद्राड़ी ।>

গোরাচাঁদে দেখিয়া কি হৈলুঁ।
গোপত পিরিতি-ফাঁদে মুঞি সে ঠেকিলুঁ।
গরে গুরুজন-জালা সহিতে না পারি।
অবলা করিল বিহি তাহে কুলনারী॥
গোরা-রূপ মনে হৈলে হইয়ে পাগলী।
দেখিয়া শাশুড়ী মোর সদা পাড়েং গালি।
রহিতে নারিলুঁ ঘরে কি করি উপায়।
যতু কহে ছাড়িলেং না ছাড়ে

পাঠান্তর

গোরারায় ॥৬১॥৮৫১।

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৪৯ সংখ্যক ^{পর।} ২। 'দেই'খ, প[্]র-সা। ৩। 'ছাড়িতে' প্-র-সা। সিশ্বৃড়া ।১

ভাগারে বুঝাই সই পাই তার লাগি।
ননদী-বচনে ধেন বুকে উঠে আগি ॥
কাগারে না কহি কথা রহি হুথে ভাগি।
ননদী-বিশুণ বাদা এ পাড়াপড়সী ।
কাগারে কহিব তুগ যাব আমি কোথা।
কার সনে কব আরু কালা কামুর কথা॥
ধত দূরে যায় মন তত দূরে গাব।
পিরিতি পরাণ-ভাগা গ্র্যাণ গেলে পাব॥
ভাগারে কহিব তুথ বিনয় করিয়া।
চণ্ডীদাস কহে তবে ফুড়াইবে

হিয়া ॥৬২॥৮৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৫০ ও প-র পুথির ১৪/৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পোড়া পড়সী' ক, খ। ৩। 'আমি' প-র। ৪। 'পরাণ-ভাগী' স্থলে 'পরাণ দোসর' খ। ৫। 'কোথা' ব, চ, প-র-সা, প-র।

শ্ৰীক্ষাগ I>

ঘূচিবে কখনি পরের রমণীং এমতি করিবে³ ধাতা। প্রতি ঘরে **ঘরে** গোকুল নগরে মা শুনি পিরিতি কথাং॥ महे (य वन (म वन धरादा। শপতি করিয়া বলি দড়াইয়া° না রব এ পাপ হরে॥ গ্রু ।। গুরুর গঞ্জন্দ মেঘের গর্জন কত মা সহিবেশ প্রাণে। যাইব চলিয়া>> বর ভেয়াগিয়া> রহিব গহন বনে॥

বনে ষে ২ থাকিব শুনিতে না পাব

এ পাপ জনার ২০ কথা।

গপ্তনা ঘুচিবে হিয়া জুড়াইবে ২০

ঘুচিবে ২০ মনের বেথা॥

চণ্ডাদাস কয় শতপুরী হয় ২০

তবে সে এমন ২০ বটে।

যে সব কহিলে করিতে পারিলে ২০

তবে সে এ তাপ ২০ ছুটে॥ ৮০॥ ৮৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫১ ও প-র পুথির ১৪/৬৭ **সংখ্যক পদ। २। 'অধীন' প-র। ৩**। 'ক্থন'প-র। ৪।'এমতি ক্রিবে'**স্লে 'এমন** কর্ম্বে'প-র। ৫ ৷ 'না শুনি' ইত্যাদি খলে 'শুনি পিরিতের কথা' প-র। ৬। 'ধে বল সে ব**ল' ছলে** 'আরেযে না বোল' প-র। ৭। 'বলি দড়াইয়া' च्रत्न 'त्नाय हाड़ाहेव' श-त्र। ७। 'उर्व्हन' श-त्र। ৯। 'সহিব' ক, প-র-দা, পর। ১০। 'বর ভেয়াগিয়া' হুলে 'বর যে ছাড়িয়া' প-র। ১১। 'ষাইব চলিয়া' ফ্লে 'ষাব বাহিরাঞা' প-র। ১২। 'বনে যে' ছলে 'বনেকে' প-র-সা। ১৩। পাপ लाटकत' भ-त। ১৪। 'विश्वा क्ष्मिरेदन' स्टल 'भनान क्ष्मारव' श-द्र। ১৫। 'साइंटव' श-द्र। ১७। 'সতস্তরী হয়' গলে যদি পাঙল হয়' পার। ১৭। 'এমনি' খ; 'এমভি' প-র। ১৮। 'করিতে পারিলে' স্থলে 'দে সব হয়' প-র। ১৯। 'এ তাপ' স্থলে 'এ পাপ' क, খ, চ, প-র-সা; 'ভাপ ষে' প-র।

डवा द्रोग ।>

ছারং দেশে বসতি ছইল নাহিক দোসর জনা।
মরমের মরমী নৈলেও না জানে বেদনা॥
চিত্ত উচাটন সদা কত উঠে মনে।
মনদিনীরঃ বচনে পাজেরেও বিদ্যে ঘূণে॥

আলার উপরে জালা সহিতে না পারি।
বন্ধু হৈল বিমুখ ননদা হৈল বৈরা ॥
গুরুজন ক্রতন দদা শেলের ঘায়।
কলকে ভরিল দেশ কি করি উপায় ॥
বাঁশুলী-আদেশে দ্বিজা চণ্ডীনাদের গাত।
আপনা আপনি চিত করহ স্পিতে ॥৬৪॥৮৬২॥

পাঠান্তব

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১৩ এ২ সংখ্যক পদ।
২। 'এ ছার'ক, প-র সা। ৩। 'নহিলে' ক,
ঝ, প-র-সা; 'নইলে' ঘ। ৪। 'ননদীর' ক,
প-র-সা; 'ননদিনি' ঘ; 'ননদি' চ। ৫। 'পাজর'
প-র-সা। ৬। 'ছেন' প-র-সা। ৭। 'গুরুজনের'
প-র-সা। ৮। 'কবি' ক, থ, ঘ, চ। ৯।
'স্বীত' ঘ।

পঠমপ্ররী 12

নিখাস ছাড়িতে না দেয় ঘবের গৃহিণী।
বাহিরে বা গাসে ফাঁদ পাতেই ননদিনী॥
বিনিই ছলে ছলে সে সদাই ধরে চুরিই।
হেম মন করে জলে প্রবেশিয়া মরি॥
সতী-সাধে দাঁড়াই যদিং সহীগণ সক্ষে।
পুলকে পুরয়ে তমুই খাম-পরসঙ্গে॥
পুলক ঢাকিতে নানা করিং পরকার।
নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার॥
পাড়ারই লোক না জানে পিরিতি বলিই

তুমি যদি বল সমাধান দিয়ে? ঘরে? ।
চণ্ডীদাস বলে শুন আমার যুগতি।
অধিক জালা? তার যার? অধিক
পিরিতি ॥৬৫॥৮৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুলির ১০৫০ ও প-র পুল্র
১৪।২৮ সংথ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' স্থলে 'ফরুলা
শীরাপ' প-র। ২। 'পাড়ে' থ। ৩। 'বিনা'
প-র। ৪। 'ধরে চুরি' স্থলে 'ধরি চুলি' ক, চ,
প-র-সা। ৫। 'য়িদ' শক্ষ ক, থ, প-র-সাও প-র
পুলিতে নাই। ৬। 'অঙ্গ' প-র। ৭। 'নানা করি'
স্থলে 'করি কত' প-র। ৮। 'পোড়া' থ। ১।
'বলে' ক। ১০। 'সমাধান দিরে' স্থলে 'সোই
সমাধিয়ে' থ; 'সেই সমাধিয়ে' ঘ। ১১। 'তারে'
প-র। ২২। 'যাতনা' প-র। ১৩। 'তার যার'
স্থলে 'যার তার' ক, থ, ঘ, প-র-সা; 'ধার' প-র।

৩—৪। "বিনিশ ইত্যাদি। (আমার) ছল বিনা অর্থাৎ ছল-পূর্ব আচরণেও সে ছল পূর্বক সর্বাদাং আমার চুরি অর্থাৎ চৌর্য্য-প্রণয় বাহিও করে। (তাংগতে) এরূপ ইচ্ছা হয় য়ে, জলে প্রবেশ করিয়া প্রাণত্যাগ করি। 'সদাই ধরি চুলি' পাঠে 'ননদিনী ছল পূর্বকি সর্বাদাই চুলে ধরে' এই-রূপ অর্থ স্থাকত নহে।

১১—১২। "চণ্ডাদাস" ইত্যাদি। চণ্ডাদাস বলেন—(হে শ্রীরাধে!) আমার বুক্তি শ্রবণ কর; বাহার অধিক প্রেম, তাঁহারই অধিক বাতনা। (কবির সান্ধনার ভাৎপর্য্য এই বে, ত্রিভূবন-সার প্রেম বন্ধটি যথন একান্তই বাহ্ণনীয়, স্থতরাং উহার ক্রন্ত অনিবার্য্য আমুয়ুলিক বাতনা সহ না করিয়া উপায় কি ?) 'অধিক আলা বার তার অধিক পিরিতি' পাঠে সমীচীন অর্থ হয় না।

ভণা রাপ ৷১

গুরুজন-বচনে পাঁজর ধসি গেল। পাড়াপড়সীর জালায় প্রাণ সারা হৈল। কত না সহিব আর সহিতে না পারি। কহিতে কৃষ্টিতে চুখ কহিতেও নারি। এ দেশ ছাড়িয়া যাব রহিব কাননে। এ পাপ লোকের মুখ না দেখি

যেখানে ॥৬৬॥৮৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ।

তত্ৰ কুটিলায়াঃ দাক্ষাতুক্তিঃ।

এ কি পরমাদ আই। লোকের বদনে শুনি যেথ প্রবেশে তাহাই দেখিতে পাই ॥ ধ্রু॥ গোমার আমার বাপের কুলেতে কখনত কথাটি নাই। তবে কেন ভূমি কামু কামু করি সদাই জপহ রাই॥ কামু নাম শুনিঃ চমকি উঠহ পুলক তাহার সাথী। কালা-রূপ দেখি ছলছল আঁখি বেকত এ সবং দেখি॥ আমি ননদিনী সব রস জানি পাশার এ চৌপিঠ।

পাঠান্তর

তুমি সে বড়ই চাঠ ॥৬৭॥৮৬৫॥

বুঝিলুঁ কথায়

ক্তে শিবরামণ

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৫ ও প-র পুথির

১৪!৫৯ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' স্থলে 'শ্রীরাগ'
প-র। ২। 'শুনি বে' স্থলে 'শুনিরে' ও; 'শুনিয়া'
ক,চ, প-র-সা; 'শুনিভূঁ' প-র। ৩। 'বথন' থ।
৪। 'কান্থ নাম শুনি' স্থলে 'কান্থর নামে' প-র।
৫। 'বেকত এ সব' স্থলে 'এ বড় বেকত' প-র।
৬। 'পাশার এ' স্থলে 'পাসার রে' ক; 'পাশার জেন

এ' প-র-সা; 'পাদারের' প-র। ৭। 'ক্ছে শিবরাম' স্থলে 'শিবানন্দ বলে' প-র।

বরাড়ী।১

ননদিনি লো মিছাই লোকের কথা। যদি কান্যু সঙ্গে পিবিতি করি ভং শপতি ভোমার মাথা। ধ্রু॥ নিজ পতি বিনে আন নাহি জানি সেই সে আমার ভাল: কোন গুণে যাই রাখালে ভজিব তাহাতে বরণ কাল। মণি মৃকু হার• অভরণ নাহি সাজনি কনের ফুলে। চূড়ার উপরেণ ভ্রমরা গুপ্তরে তাহে কি রমণী ভুলে " त्र∮का देश्या यादव দেখিতে না পারে মায়ে বোলে ননীচোরা : ক্রে শিবরাম রাধার কলক্ষ মিছাই করিলি ভোৱা ॥৬৮॥৮৬৬॥

পাঠাস্থর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৬ ও প-র পুথির
১৪।৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'পিরিতি করি ত'
ফলে 'ভাব বাড়াই থাকি' প-র-সা। 'যদি' ইত্যাদি
ফলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'সে নন্দন-দন বদি
দেখ্যা থাকি'। ৩। 'বাহার' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা।
৪। 'মাণিকের' প-র। ৫। 'চুড়ার উপরে'
ফলে 'চুড়াটি বেড়িয়া' প-র। ৬: 'কচে শিবরাম'
ইত্যাদি পংক্তি ফুইটির ফ্লেপ-র পুথির পাঠ ষথা,—
'শিবরাম বলে বসি তক্ষমূলে
মিছা রব তোল তোরা।'

সিব্দুড়া।১

সই এত কি সহে পরাণে। र्थल ननित्नी কি বোল বলিয়া শুনিলা আপন কাণে ॥ ধ্রু ॥ পরের কথায় এত কথা কংহ্ ইহাতে করিব কীও। কামু-পরিবাদে ভুবন ভরিলঃ রুথাই পরাণে জী॥ কামুরে পাই ত এ সবুঙ কহিত তবে বা সে বোল ভালা। মিছা পরিবাদে বাদিনী হইয়াদ প্রাণ জরজর হৈল ॥ কে আছে বুঝিয়া শ্যামেরে কহিয়া এ ছবে করিবে পার। ধৈৰ্ঘ্য করি রহ **ह** छोमारम करश কে কোথা কি করে ১০ কার ॥৬৯॥৮৬৭॥* পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৭ ও প-র পুথির ১৪।৫৮ সংথ্যক পদ। ২। 'কয়' প-র। ৩। 'কি' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৪। 'ত্বন ভরিল' ছলে 'ভ্বন ভুলিল' ক, থ; 'জগত ভাসিল' প-র। ৫। 'কেমনে' প-র। ৬। 'এ সব' ছলে 'ভবে মে' প-র। ৭। 'তবে' ইত্যাদি ছলে 'তবে ভাল বাদে বোল' প-র-সা; 'সে বোল আমার ভাল' প-র। ৮। 'মিছা' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা—'মিছা বাদে পরিবাদিনী ইইয়া'। ৯। 'ব্যাঞা' ক, থ; 'ব্যাইয়া' য়, চ। ১০। 'কি করে' ছলে 'করিল' ক, থ, য়, চ, প-র-সা।

धाननी ।>

ভাদরে দেখিলুঁ নঠং চাঁদে।

সেই ছৈতে উঠে মোর কামু - পরিবাদে।
এতেক যুবতী আছে গোকুলে ।
কলক কেবল লেখা মোর সে কপালে ॥
স্বামী ছায়াতে মারে বাড়ি।
তার আগে কুকথা কয় দারুণ শাশুড়ী ॥
নন্দী দেখয়ে চৌখের বালি।
শ্যাম নাগর তোলাই দদাই পাড়ে গালি॥
এ ছঃখে সাঁজর হৈল কাল।
ভাবিয়া দেখিলুঁ এবে মরণ সে ভাল ॥
ভিজ চণ্ডীদাসে পুন কয় ২।
পরের বচনে কি আপন পর হয় ॥৭০॥৮৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৯ সংখ্যক পদ।

২। 'নট' ক। ৩। 'সদা' প-র-সা। ৪।
'উঠে' প-র। ৫। 'যুবতীগণ' ক, চ। ৬।
'আছে গোকুলে' ফুলে 'আছরে গোকুলে' ক, চ;
'গোকুল নগরে' প-র-সা। ৭। 'কেবল লেখা'
ফুলে 'লেখ্যাছে বিধি' প-র-সা। ৮। অভঃপর
প-র-সা পুথিতে নিম্লিখিত প্রাক্ষিপ্ত কলিটি দৃটি
হর; যথা,—

'কথনো বাহারে মুক্তি না দেখো সপনে। কলম্ব তোলয়ে লোক সে জনার সনে॥' ১। 'চৌথের বালি' স্থলে 'সদা নয়নের বালি' প-র-সা। ১০। 'তোলাইয়া' প-র-সা। ১১। 'ক ছংথে' স্থলে 'ক্ত ছথে ছথে মোর' প-র-সা। ১২। 'বিজ চণ্ডীদাসে' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা,—

> 'কাহারে কহিব সই মরমের কথা। বলরাম দাস বলে কি কৈল বিধাতা।'

ক, থ, ঘ, চ ও প-র-সা প্রিতে অতঃপর
'তাহারে বুঝাই সই' ইত্যাদি পংক্তি-চতৃষ্টয় লিখিত
হইলেও এই পদটি বর্তমান পলবের ৬২ সংখ্যক পদয়পে ইতিপ্রে উদ্ভ হওয়ায় এ য়লে সলিবেশিত ও
প্রিত হইল না।

তথা বাগ ৷১

ইহ গুরু-গঞ্জন বোল।
শুনইতে জিউ উতরোল।
কত সহ এই পাপ পরাণ।
বুঝি কিয়ে হয় সমাধান।
মিছা • ছলে তোলে পরিবাদ।
কি কার করিলুঁ অপরাধ।
ননদী-নয়ন-জালে বসি।
তাহে কাল এ গাড়াপড়সী।
জ্ঞানদাস কহে ধনি রাই।
পরিবাদে আর ভয় নাই ১৭১৮৮ ৮৯॥

পাঠা হয়

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'সহ অ' স্থ্যে 'সহযে' চ। ৩। 'বিনা' খ।

প্রেম প্রতি আক্রেপ যথা।

পঠযঞ্জরী।১

कि वूटक मोर्ज़ग (वथा। সে দেশে যাইব যে দেশে না শুনি পাপ পিরিতের্থ কথা ॥ গ্রা সই কে বলে পিরিতি ভাল। হাসিতে হাসিতে পিরিভি করিয়া कान्मिए क्रम्म (शल ॥ কুলবতী হৈয়া কুলে দাঁড়াইয়া ষে ধনি পিরিতি করে। ভূষের আনল যেনঃ সাজাইয়া এমভিং পুড়িয়া মরে ॥ राम विरनामिन এ ছুখে ছুখিনী প্রেমে ছল ছল আঁখি। **छोनाम कट्ड** যে গতি হইল भेत्रोप-**मः**भन्न (पचि ॥१२॥৮१०॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুণির ১৩৬১ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরিভির' ক, খ; 'পিরিভী' প-র-সা। ৩।
'কুলে দাঁড়াইয়া' ফলে 'কুলেডে দাঁড়াঞা' ক, চ;
'কুলে ডাড়াইয়া' ঘ। ৪। 'সে ফ্রন' প-র-সা।
৫। 'আপ্নি' প-র-সা।

श्रीत्रात्र ।>

পিরিক্টি-মুগতি কভু না হেরিব এ ছুটি নয়ান-কোণে। পিরিতি বশিয়া নাম শুনইতে मुनिया त्रश्वि कारन ॥ স্থি আর কি বলিব ভোরে। পিরিতি বলিয়া এ তিন্থ আখর এত হুখ দিল মোরে॥ ধ্রু। পিরিভি-আর্ডি কভুনা করিব শয়ন সপন[°] মনে। বসতি তেজিয়া পিরিতি-নগরে রহিব গছন বনে॥ পরশ লাগিয়া পিরিভি-প্রন তেজিব নিকুঞ্চবাস। ছাড়িলেং না ছাড়ে পিরিতি-বেয়াধি ভালে জানে চণ্ডাদাস ॥৭০॥৮৭১॥ পাঠান্তর

১। ইছা প র-সা পুথির ১০৬২ ও প-র পুথির ১৪। বহু সংখ্যক পদ। ২। 'এ তিন' ছলে 'দাকণ' প-র। ৩। 'শয়ন সপন' ছলে 'শয়ন ছপনে' ক, চ, প-র-সা; 'শয়নে ছপনে' খ। ৪। 'ছাড়িতে' প-র-সা। ৫। 'ভাল' ধ।

তথা রাপ।> সায়র° দেখিয়া পিরিতি হুখেরং নাহিতে নামিলামণ তায়। ফিরিয়া চাহিতে নাহিয়া উঠিয়া^e लांशिल पूर्यंत्र वांग्र ॥ প্রেম-সর্বোবর কেবা নির্মিল নিরমল ভার জল। ফিরে নিরস্তর তুধের মকর প্রাণ করে টলমল। প্রা গুরুজন-জালা জ্ঞলের শিহালাণ পড়দী-জীয়ল-মাছে। কাঁটায় সকণ কুল-পানিফল সলিল বেড়িয়া আছে। ममा लाटन भार কলক-পানায় हानिया श्राहेनूं १ यपि। অন্তরেণ বাহিরে কুটু কুটু ১২ করে इर्थ इथ फिल निधि॥ करह हशीमांत्र अन विस्तामिनिश् স্থ হ্ৰথ হুটি ভাই। স্থার লাগিয়া যে করে পিরিতি ছুখ যায় ভার ঠাঞি ॥৭৪॥৮৭২॥

> পাঠাম্ভর লা প্রভিত্ত

১। ইহা পার-সা পুথির ১০৬০ ও পার পুথির ১৪।১১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ফলে 'দিলুড়া' পার । ২। 'রসের' সানপ ২০১ পুথি। ৩। 'সাগর' ক, থ, ছ, চ, পার-সা। ৪। 'ড়বিলাম' সানপ ২০১ পুথি। ৩। 'উঠিতে' পার, সানপ, ২০১ পুথি। ৩। 'অথমর' পর-সা, পার; 'অকমল' সানপ ২০১ পুথি। ৭। 'সিহলা' ব, চ; 'সিহালা' পার; 'সেইলা' পার-সা; 'লেইলা' পার-সা; 'লেইলা' পার-সা; 'লেইলা' সানপ ২০১ পুথি। ৯। 'পানা তার' পার, সানপ ২০১ পুথি। ৯। 'পানা তার' পার, সানপ ২০১ পুথি। ১০। 'থাইল' ক;

'থাইলাম' পার। ১১। 'অস্তর' ক, পার-সা। ১২। 'কুটকুট' ক, পার-সা, সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'কংহ' ইড্যাদি স্থলে পার পুথির পার্চ মধা—'চণ্ডীদাদে বলে শুন গো স্থক্ষরি'।

হুছিনী।১ না কর চাতুরী শুন সহচরি সহজে দেহ উত্তর। কি জাতি মুরতি কামুর পিরিতি কোণাইং ভাহার ঘর॥ চলে কি বাহনে টিকে কোন স্থানে সৈত্যগণ কেবা সঞ্চে। পারাপার করে কোন অস্ত্র ধরে কেমনে প্রথেশে অঙ্গে॥ হব সাবধান পাইয়া সন্ধান না লব ভাষার বা। বচনে তেজিব নয়নে শ্রবণে সোডরি তাহার পা॥ দেখি নৈরাকার স্থী ক্রে সার স্থাপ কহিবে কে। অথুরাগ-ছুরা বৈসে মনোপরি জাতির বাহিরে সে। রক্ষক মদন মন ভার বাহন ভাবগণ তার সঙ্গা । স্থুজন পাইলে না দেয় ছাড়িয়া পিরিতি অদ্ভুত রঙ্গী ।। বাওলী-আদেশে ক্ৰে চণ্ডাদানে ছাড়িতে কি কর সাশ। পিরিভি-নগরে বস্তি করাছ পর্যাছ পিরিতি-বাস ॥৭৫॥৮৭৩॥ পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৩৬৪ সংখ্যক ^{পর।}

२। 'क्लाबाद्य' भ-त्र-मा। ०। 'भाताबाद्य' क

চ, প-র-সা। ৪। 'মান পরি' খ, च; 'মোনাপরি' প-র-সা। ৫। 'সঙ্গে' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'রজে' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ ৷১

পিরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর
ভূবনে আনিল কে।
মধুর বলিয়া চানিয়া খাইলুঁ
তিভায় তিভিল দে॥
সই এ কথা কহিল° নহে।

হিয়ার ভিতর বসতি করিয়া কখন কি জানি কহে॥ গ্রাম পিয়ার পিরিতি প্রথম আরতি ভাহার নাহিক শেষ⁸। পুন নিদারুণ শমন সমান

দয়ার নাহিক লেশ॥ কপট পিরিভি আরভি বাঢ়াঞা॰ মিরিভি সাধিশুঁ° কাজে।

লোকে চরচায়ে কুলের থাঁথার জগত ভরিল লাজে॥

হইতে হইতে অধিক হইল সহিতে সহিতে মলুঁ।

কহিতে কহিতে তমু জর **জর** পাগলী **হইয়া গেলুঁ**॥

এমতি পিরিতি ন কানি এ' রাতি পরিণামে কিবা হয়।

শিরিভি পরম হয় তুখনর ছ ভিজ চণ্ডীদানে কয় ॥৭৬॥৮৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুশির ১৩৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ছানিরা খাইসুঁ' হলে 'ছাকিরা খাইতে' সা-প ২০১ পুশি। ৩। 'কছন' প-র-সা। ৪। 'ভাহার' ইত্যাদি ছলে 'আনল অধিক শেষ' ব; 'পাওল অবধি শেষ' সা-প ২০১ পূথি। ৫। 'বাঢ়াইলুঁ' সা-প ২০১ পূথি। ৬। 'মিরিতি সাধিলু'(সা-প ২০১ পূথি। ৩। 'মিরিতি সাধিলু'(সা-প ২০১ পূথি) ছলে 'মরণ অধিক' ক, ৫, ছ, চ, প-র সা। 'মরণ অধিক' পাঠে ভাল অর্থ হর না। ৭। 'না জানি এ' ছলে 'না জানিয়া' সা-প ২০১ পূথির পাঠ যথা—'পিরিতি' ইত্যাদি ছলে সা-প ২০১ পূথির পাঠ যথা—'পিরিতি পরাণ হয় স্থাছ্থমান'।

তথা রাগ ৷>

পিরিতি পিরিতি কি রীভি মুর্বিড क्रमरत्र लागल (म। পিরিতি না ছাড়ে পরাণ ছাড়িলে পিরিতি গঢ়ল । কে॥ পিরিভি বলিয়া া ভিন আঁখর না জানি আছিল কোথা। পিরিতি-কণ্টক হিয়ায় ফুটল পরাণ-পুতলী ধর্মা। পিরিভি পিরিভি পিরিভি অন্ল দ্বিগুণ **দ্বলিয়া**° গেল। নিভাইল নহে বিষম অনল হিয়ায় রহিল⁸ শেল॥ শুন বিনোদিনি চ ভাদাস বাণী পিরিভি না কহে কথা। পিরিভি লাগিয়া পরাণ ছাড়িলে পিরিভি মিলয়ে তথা ॥৭৭॥৮৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-না পুথির ১০৬৬ সংখ্যক পদ। ১। 'গড়ল' থ, প-র-সা। ৩। 'আালিরা' চ, প-র-সা। ৪। 'রহল' च,চ। শ্রীরাপ ৷>

ভুবন ছানিয়া যতন করিয়া আনিলং প্রেমের বীজ। রোপণ করিতে গাছ যে ইইল সাধলত মরম নিজ। সই প্রেম-ভরু কেন হৈল। হাম অভাগিনী **मिवम ब्र**क्तनो সিঁচিতে জনম গেল। ধ্ৰা পিরিভি করিয়া স্থুখ যে পাইব ভনিলু স্থার মূখে। অমিয়া বলিয়া গরল কিনিয়া খাইলুঁ আপন হুখে। স্বাহু লাগিত অমিয়া হইত इहेल भ्रत्म करन । কামুর পিরিভি শেষে ধেন রীতি জানিলুঁ পুণ্যের বলে॥ যভ মনে ছিল সকলি পৃরিল व्यात ना ठाहिर (नश्र)। চণ্ডীদাস কৰে পরশন থিনে **क्रिया प्रकार क्रिया (प्रशाक्तिक प्रकार क्रिया)** পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আনিয়' ক, চ। ও। 'সাধিল' ও। ৪।
'নীয়' ঘ, চ। ৫। 'লেয়' প-র-সা। ৬। 'লেয়'
ক, ঀ, চ, প-র-সা।

সই কে বলে পিরিতি হীরা^২।
সোণায় জড়িয়া হিরায় করিতে
ছখ উপজিল ফিরা ॥ গ্রু ॥
পরশ-পাথ বড়ই শীতল
কহয়ে সকল লোকে।
মুই অভাগিনী লাগিল আগ্রনি
পাইলুঁ এতেক শোকে ॥
সব কুলবতা করয়ে পিরিতি
এমত না হয় কাবে।

এ পাড়াপড়দা ডাহিনী'-সদৃশী

এমত না খায় তারে ।

গৃহের গৃহিণী আর ননদিনা

বোলয়ে বচন যত।

কহিলে কি যায় কি করি উপায়
পরাণে সহিবে কত।
নান্ধুরের মাঠে গ্রামের হাটে
বাশুলা আছুয়ে যথা।

তাহার আদেশে কুহে চন্টাদাসে স্থুখ যে পাইবাং কোথা ॥৭৯॥৮৭৭॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরা' ঘ, চ। ৩। 'লাগুক' ক, থ। ৪। 'ছ্থে' ক, চ। ৫। 'ডাইন' প-র-সা। ৬। 'ঠানে' থ। ৭। 'পাইব' ক; 'পাইবে' প-র-সা।

তথা রাগ ।১

কামুর পিরিতি চন্দনের রীতি ঘসিতে সৌরভময়। ঘসিয়া আনিয়া হিমায় লইতে দহন বিশুণ হয়। ভণা রাগ।১

আপনা খাইলুঁ সোণা যে কিনিলুঁ
ভূষণে ভূষিবং দেহ।
সোণা যে নহিল পিতল ছইল
এমতি কামুর লেহু

সই মদন-সোণারে না চিনে সোনা। সোণা যে বলিয়া পিতল আনিয়া গড়ি দিল যে গহনা ॥ গ্রু॥ ঝলকেঃ দেখিতে প্ৰতি গঙ্গলিতে হাসয়ে সকল লোকে। কাজ নাহইল ধন সেং গেল শেল রহি গেল বুকে ॥ তেম্ভি এ গতি যেন মোর মতি ভাবিয়া দেখিলুঁ চিতে। পাথারে সাঁতারি খলের কথায় উঠিতে নারিশুঁ ভিতে॥ ভাগ্য নাহি জানে অভাগিয়া জনে ना श्रुत्रद्ध मर माध। খাইতে নাহি ঘরে সাধ বহু করে বিহি করে অমুবাদ॥ চণ্ডীদাসে কহে বাশুলী-কুপায়ে আর নিবেদিব কায়। ভড় ভ পিরিভি নাহি পায় যদি পরাণে মরিয়া যায় ॥৮০॥৮৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভূবিভ'ক। ৩। 'নেহ'ব। ৪। 'ঝলক' প-র-সা। ৫। 'যে'ক, চ, প-র-সা। ৬। 'না ইইল' ফুলে 'নহিল' প-র-সা।

তথা সাগ ৷১

কানুর পিরিতি মরমে বেগাধি

হইল এতেক দিনে।

মৈলে কি ছাড়িবে সজে না ধাইবেং

কিনা ক্রিবং বিধানে ॥

मरे कियरछ এमन काला। জাতি কুল শীল সকলি ডবিল ছাড়িলে না ছাড়ে কালা॥ ধ্ৰু॥ শ্য়নে স্বপনে না করিয়ে মনে ধরম গণিয়া থাকি। আসিয়া মদন (मग्न कनर्थन **অন্ত**রে কালণে উকি॥ সংবাৰর মাঝে भीन (य शाक्रय উঠে অগ্নি দেখিবারে। ধীবর কাল शारु नहें जान ভূরিতে ঝাঁপয়ে তারে॥ কামুর পিরিভি কালের বসতি যাহার হিয়ায় থাকে। জারে দেই জনে খলের খলনে কলঙ্ক ঘোষয়ে লোকে ॥ চ গ্রীদাস-মন वारानी-हत्रन আদেশে রজক'-নারি। কিছু না ভাগিবে সহি**তে** সহিবে[,] রহিবে একান্ত করি ॥৮১॥৮৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'না বাইবে' স্থলে 'নাছি বাইবে' প-র-সা।
৩। 'কিনা করিব' স্থলে 'না করিব কি' ক, খ।
৪। 'কদখন' খ। ৫। 'জলরে' খ, দ, প-র-সা।
৬। 'তাহে' প-র-সা। १। 'জারে সেই জানে' ছলে 'বারে সেই জানে' ক; 'জারে সেই জানে' চ,
প-র-সা। ৮। 'য়য়ৢক' ক; 'রয়ৄক' চ। ৯।
'সহিতে' ক, প-র-সা।

ভণা রাগ ৷১ কি হৈল করমে যাবত জনমে পিরিতি হইল কাল। অন্তরে গহিরে পশিয়া গহিল কেমতে হইবে ভাল। সই বল না উপায় মোরে। গঞ্জনা সহিত্তে নারি আর চিতে মরম কহিলুঁ তোরে 🛭 জ্বলিছে পরাণে ननमो-वहरन আপাদ মস্তক চুল। কলক্ষের ডালি মাথায় করিয়া ২। 'সরগা' ঘ। ৩। 'দেওল' ক। পাথারে ভাসাব কুল।। ভাগিগা যায় श्वहरत्र पात्र না^২ বোলে^৩ এ ছার লোকে। চণ্ডীদাস কৰে এমতি হইলে মরিবে তাহারা শোকে ।৮২।৮৮●॥ পাঠান্তর ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ। २। 'ब्ब' का ७। 'ब्बांग' क; 'ब्बांगएव' ह। थानगी।> পিরিতি গরল আমরা সরলং লাগিল অমিগ্রাময়। বিছুরিলুঁ পভি মহানন্দ রীতি কলঙ্ক সন্তাই কয়॥ महे रिषट वे रेडल ८इन मिछ। व्यस्तर कृतिम পরাণ পুড়িল এছন পিরিভি-রীভি ॥ ঞ ॥ মাটি খোদাইয়া খাল বানাইয়া উপরে দেয়ল° চাপ। আহার দিয়া মারয়ে বান্ধিয়া

এমন করমে পাপ ।

নৌকাতে চড়াঞা দ্বিয়াতে লৈয়া ष्ट्रां विशेष करन । ডুবু ডুবু করি ডুবিয়ানা মরি উঠিতে নারিয়ে কূলে॥ এমতি করিয়া পরাণে মারিয়া চলিল আপন ঘরে। চণ্ডীদাসে কয়. এমতি সে হয় তুমি সে ভাবহ তারে ॥৮০॥৮৮১॥ পাঠান্তর)। हेश প-ब-मा भूषित्र >०१२ मःश्वाक भग।

ভবা রাগ ৷> হুখের লাগিয়া পিরিভি করিলুঁ শ্রাম বন্ধুয়ার সলে।

পরিণামে এড তু**খ হবে বল্যা**ং কোন অভাগিনী আনে ৷ সই পিরিতি বিষম মানি।

এত হুখে এত তুখ হবে বল্যাণ স্বপনে নাহিক জানি॥ ধ্রু। সে হেন কালিয়া নিঠুর ছইল কি শেল লাগিল যেন। দরশন-আশে যে জন ক্ষিরয়ে

সে এত নিঠুর কেন। বল না বল না কি বুদ্ধি করিব ভাবনা বিষম হৈল।

হিয়া দগদঙ্গি পরাণ পোড়নি कि पिटन इटेटर जान । **ठ** छोमारम करह **७न विटनांति**म মনে না ভাবিহ আন। ভূমি সে শ্রামের मन्रवम धम

ভাগ সে ভোগার প্রাণ ॥৮৪॥৮৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১০৭৩ সংখ্যক পদ। a-01 'राव वना।' ऋत्म 'ति इहेत्व' श्वन्त्रा। ৪ ৷ 'বল না' ইত্যাদি স্থলে 'বল না কি বুজি করিব এখন' ক : 'বল না কি বুদ্ধি করিব সঞ্জনি' প-র-সা।

শীৱাগ ৷১

যতনে আনিয়া বিবিধ কুমুম গাঁথিলুঁ পিরিভি-মালা। শীতল নহিল পরিমল গেল জালাতে ফ্লিল গলা॥ मह माली (कन (इन रेड्न। বিষ মিশাইয়া মালায় করিয়া হিয়ার মাঝারেং দিল ॥ গ্রা উঠিল যে হিয়া कालाग्र कलिया আপাদ মন্তক চুল। না শুনি না দেখি কি কহিব° সখি আ গুন হইল ফুল। **5म्बन ला**गल ফুলের উপর সংযোগ হইল ভাল। পোডাইল হিয়া ছই এক হৈয়া পাঁজর ধসিয়া গেল। সকলি ধসিল ধসিতে ধসিতে निर्दा ल॰ देश्ल (पर। কহিলে না হয় চণ্ডাদাসে কয় ঐছন কামুর লেহে ॥৮৫॥৮৮৩॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৩৭৪ সংখ্যক পদ। २। 'स्यात माबादा' च्रान 'चामात गनात' श-त-मा। ৩। 'করিব' ক। ৪। 'নির্দ্ধল' ক, ধ, চ, भ-त-मा । (। 'तिह' प।

তথা বাগ ৷১

স্থের লাগিয়া রন্ধন করিলুঁ জালাতে জ্লালে দে। স্বাহুণ নহিল জাতি সে গেল ব্যপ্তন খাইবে কে ॥ সই ভোজন বিস্বাদঃ হৈল। কামুর পিরিভি হেন রসবভী স্বাদ পদ্ধ দুৱে গেল। ধ্রা। পিরিতি রসের নাগর দেখিয়া আরতি বাঢালুঁ তাতে। प्रिवम ब्रह्मनी তবে সে সজনি অনল উঠিল চিতে 🛚 অধিক উঠিল হ্যর্যেত ভার্যের্ড পিরিতে ডুবিল দেহ। একত্র করিয়া नित्म स्था पिया ঐছন কাসুর লেহণ। হিয়ায় শস্ম **ह** छोनाम क्य मकलि भवल (श्ला বিষ-গুণ আধা কিছ কিছ ত্থা চিরঞ্জীবী দেহ কৈল ॥৮৬॥৮৮৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-মাপুণির ১৩৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরিল'প-র-সা।**৩। 'বাদ'চ, প**-র-সা। ৪। 'বিস্বাহ' খ, ঘ। ৫। 'বাহ' ঘ, চ। ৬। 'সাগর' चा १। '(नरु'च। ৮। 'हिझादर'च। २। 'বিষঞ্জা' ক, ঘ; 'বিষশুনি' প-র-সা।

यह है।)

পাপ পরাণে কত সহিবেক জালা। শিশুকালে মরি গেলে হইত যেং ভালা ॥ এ ফালা অঞ্চাল সই ভবে পরিহরি। ছেদন করিয়া দেহ পিরিতের ভুরি।

তেমতি নহিল যার এমতি বেভার।
কলক্ষ-কলসী লৈয়া ভাসিব পাথার॥
চণ্ডাদাসে কহে ইহা বাশ্তলী-ক্রপায়।
পিরিতি লাগিয়া কেন ভাসিবে
দরিয়ায়॥৮৭॥৮৮৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৩৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'হইত বে' স্থলে 'তবে হৈত' ঘ; 'হইত সে' প-র-সা।

ভথা রাগ।১

ধরম করম গেল গুরু-গরবিত।
অবশ করিল কালা কামুর পিরিত ।
ঘরে পরে কি না বলে করিব হাম কিই।
কে না করয়ে প্রেম লামি কলকী ॥
বাহির হইতে নারি লোক চরচাতে।
কেন মন করে বিষ খাইয়া মরিতে ॥
একে নারী কুলবতী অবলা বলে লোকে।
কামু-পরিবাদ হৈল পুড়া। মরি শোকে ॥
খাইতে নারিয়ে কিছু রহিতে নারি ঘরে।
ভাবিতে ভাবিতে ব্যাধি সামাইলং অন্তরে॥
কারিল সে তমু মন ব্যাপিল শরীর।
চণ্ডীদাস বলে ভাল হইবে

ক্রন্থির ॥৮৮॥৮৮৬॥

পাঠাস্কর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কী' চ। ৩। 'পুড়ে' ক। ৪। 'হইল' প-র-সা। धाननी ।>

এ খর বান্ধিলুঁ হুখের লাগিয়া আনলে পুড়িয়া গেল। সিনান করিতে অমিয়া-সাগরেই সকলিও গরল ভেল। স্থি হে॰ কি মোর কর্মেণ লেখি। ও চাঁদ পেবিলু গ শীভল বলিয়া त्रविद्र किंद्र (पश्चि॥ अगा উচলে উঠিতে। নিচল ছাডিয়া পড়িলুঁ অগাধ জলে। मिक्रियोश होहिएक দারিন্তা বাচল১১ মাণিক হারালু হেলে। खनप (मिवन পিয়াস লাগিয়া বজর পাডিয়া গেল ১২। জ্ঞানদাস> কৰে কামুর পিরিভি১ মর্ণ-অধিক শেল> ছা৮৯।৮৮৭॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুলির ২০ব, ২৮১ ও ১০৭৮ এবং প-র পুলির ১৪।৮০ সংখ্যক পদ।২। 'হিলোলে' প-র। ৩। 'অধই' প-র। ৪। 'সধি হে' ছলে 'সই' প-র-সা, প-র। ৫। 'করম' প-র। ৬। 'ও টাদ' ছলে 'চান্দ যে' প-র-সা। ৭। 'সেবিতে' প-র। ৮। 'ভায়র' প-র-সা, প-র। ৯। 'উঠিলু' খ, চ, প-র। 'নিচল' ইত্যাদি ছলে—'উচল বলিয়া অচলে চড়িতে' প-র-সা। ১০। 'লছমি' প-র-সা; 'লখিমি' প-র। ১১। 'বেছল' ক, খ, চ, প-র-সা; প-র। ১২। 'বজর' ইত্যাদি ছলে 'বজর পড়িয়া গেল' ক, খ, ড়, চ, 'পাইলু' (পাঠান্তর— 'পীড়েলু') 'বজর তাপে' প-র-সা। ৩০। 'চঞীদানে' প-র। ১৪। 'কায়র পিরিতি' ছলে 'পিরিতি করিয়া' প-র-সা। ১৫। 'মরণ' ইত্যাদি ছলে 'পাছে কর জম্বতাপে' প-র-সা; 'ক্লমের রহিল লেল' প-র।

সিকুড়া।১

এ দেশে না রহিবং সই দুরদেশে যাব।
এ পাপ পিরিতের কথা শুনিতে না পাব॥
না দেখিব নয়নে পিরিতি করে যে।
এমতি বিষম বেথাণ জানিং দিবে সে॥
পিরিতি আঁখর তিন না দেখি নয়ানে।
যে কহে ভাহার আর না দেখি বয়ানে॥
পিরিতি বিষম দায়ে ঠেকিয়াছি আমি।
ভিজ চণ্ডীদাসে কহে ইহার গুরু

তুমি ॥৯০।৮৮৮॥

পাঠান্তর

)। हेहां প-त्र-मा পूषित ১৩१२ मःश्वाक भना १। 'त्रव' क, প-त्र-मा। ७। 'व्याषा' क, हः, 'क्षा' थ। १। 'व्यानि' क, প-त्र-मा।

ততঃ প্রকারান্তরং।

वाला धामनी ।> পিরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর সিরজিল কোন ধাতা। অবধি জানিজে সোধাই কাহাতে ঘুচাই মনের বেথা। পিরিভি-মুর্রভি পিরিভি-রতন যার চিতে উপজিল। সে ধনি কভেক जनाम जनाम ভাগ্য করিয়াছিল ॥ সই পিরিভি না জানে যারা। এ তিন ভুবনে जनाम जनाम কি হুখ জানয়ে তারা ॥ গ্রা । যে জন যা বিনে না রহে পরাণে त्म (य रेहन कूननानी। ভবে কেনে তারে कनकिनी वरन গোকুল-নগরে কেবা কি না করে

অবুধ মূড় সেণ লোকে।

চণ্ডীদাসে ভণে মরুক বেং জনে
পর-চরচায় থাকে ॥৯১॥৮৮৯॥

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৮০ সংখ্যক পদ। 'বালা ধাননী' স্থলে 'ধাননী' ক, থ, প-র-সা। ২। 'হুধাই' ক, থ, প-র-সা। ৩। 'মুচ সে' স্থলে 'মুচ্সি' ঘ; 'মুড্সি' চ।

শীরাপ ৷১

এই মোর মনে হয় রাতি দিনে ইহা বহি নাহি আর। পিরিভি বলিয়া এ তিন আঁখর এ তিন ভুবন-সার॥ বিহি একচিতে ভাবিতে ভাবিতে নিরমাণ কৈল পি?। রসের সায়র মন্তন করিতে তাতে উপজিল রি॥ অমিয়া হইল পুন যে মথিয়া তাহে ভিয়াইল° ডি। এ ভিন আঁখর সকল স্থাবের তুলনা দিব যে কিং ॥ পশিল যভনে যাহার মরমে এ তিন আঁখর সার। সরম ভরম ধরম করম কিবা জাতি কুল তার ॥ না জানি কি রীতি এ হেনং পিরিভি পরিণামে কিবা হয়। বড়ই বিষম পিরিভি-বন্ধন विक इछीमारम क्या ॥ २ ॥ ४ ० ॥

অবুধ গোকুলবাসী ॥

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ১০৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'পী' ঘ,চ। ৩। 'ভিঞাইণ' খ,চ। ৪। 'কী'চ। ৫। 'এ ছেন' হুলে 'এই না'ঘ। 'চণ্ডীদানে কহে' ইত্যাদি স্থলে 'কছে নরছরি শুন স্থনাম্বরি' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১। 'লুবের' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১০। 'মরম' প-র-না (পাঠান্তর)। ১১। 'রিসিক নছিলে' স্থলে 'মর্মে নহিল' প-র-সা (পাঠান্তর)।

ভথা রাগ।১

পিরিভি বলিয়া একটি কমল রদের সায়র মাঝে। প্রেম-পরিমল^৩ -লুবধ ভ্রমর ধায়ল আপন কাজে 🛭 কমল-মাধুরী ভ্ৰমর জানয়ে তেঞি সে তাহারিঃ বশ। রসিক জানয়ে রদের চাতৃবীৎ আনে কহে অপ্যশ। সই এ কথা বুঝিনে কে। যে জন কান্য্রে সে যদি না কহে ८कम्प्ति थित्रवि प्राः ॥ अः ॥ ধরম করম লোক চরচাতে এ কথা বুঝিতে নারে। এ তিন আঁখর যাহার মরুমে সেই সে বুঝিতে পারে চণ্ডাদাসে কৰে रधन ल खुन्मविष् পিরিতি রসের সার। পিরিতি-রসের>• রসিক নহিলে১১ কি ছার পরাণ ভার ॥৯৩॥৮৯১॥ পাঠান্তর

পাঠাস্তর ১। ইহা প-র-দা পুথির ২০৬, ৩৬১ ও ১৩৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'দাগর' প-র-দা (পাঠাস্তর)। ৩। 'পরিমলে' প-র-দা (পাঠাস্তর)। ৪। 'তাহার' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'মাধুরা' প-র-দা। ৬। 'লোকে' প-র-দা। ৭। 'ধরিবে' ক, খ, চ, প-র-দা। ৮।

তথা রাগ ৷১

স্থার পিরিতি আনন্দ যে রীতিং দেখিতে স্থন্দর হয়। মধুর পীযুদে মদন সহিতে भाशिदल (भ त्रमसूर ॥ সই কিবা কারিগর সে। করি **অনু**রাগে এমত সংযোগেঃ কেমতে গড়িল দে॥ ধ্রু॥ সাগর মাঝারে থাকয়েং অমিয়া কেমনে পাইবে সেহ মূদন মাদন পাইল কোন স্থান রসে নিরমিল দেহ ।। বিক্ষিলেক খুণে তিন তিন গুণে পাঁজর ধসিয়া গেল। **ধভন করিয়া** অবলা বধিতে আনিলেদ এমতি শেল। এমন অকাজ করে কোন রাজ বুঝিতে নারিলুঁ মোরা। তেজিলুঁ মরমে কুলের ধরমে এমতি হউক ভারা॥ মিছা গালি হয় **ह**शोबाटम क्य ना (पश्चि करनक लारक। আপনা আপনি বোলহ্য- কাহিনী व्यापन मरनद श्रुर्थ (1281152)।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৮৩ সংখ্যক পদ।
১। 'যে রাতি' স্থলে 'কিরিতি' খ, ঘ। ৩। 'সে
রসমর' স্থলে সরসমর' প-র-সা। ৪। 'সঞ্জোগ' ক।
৫। 'থাকিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৬ 'সে' ক, প-র-সা।
৭। 'দে' ক, প-র-সা। ৮। 'আনিল' ক। ১।
'এমন অকাঞ্জ' ইত্যাদি কলিটি প-র-সা প্থিতে
নাই। ১০। 'বলহ' ক, খ, প-র-সা।

তপা রাগ।১

সই পিরিতি আঁখর তিন। জনম অবধি ভাবি নিরবধি ना कानिएय द्वारिक निन ॥ अप ॥ পিরিভি পিরিভি স্ব জনা ক্ৰে পিরিতি কেমন রাত। পিরি৷ত-মুর্রতি রদের স্বরূপ কেবা করে পরতীত॥ পিরিতি-মন্তর জপে যেই গন নাহিক তাহার মূল। বন্ধুর পিরিতে আপনা বেচিলুঁ নিছি॰ দিলুঁ জাতি কুল। দে রূপ-সায়রে নয়ন ডুবিল⁸ সে গুণে বান্ধলং হিয়া। সে সব চরিতে ছুবিল যে চিতে* निवातिव कि वा मिया। খাইতে খাইছি শুইতে শুইছি আহিতে আহিয়েদ ঘরে। চণ্ডীদাস কছে ইঙ্গিত পাইলে অনল দিশ বর বারে শার্মি । ১৫ ৷৮৯৩ ৷ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩৮৪ পদ। ২। 'নিছিলু' প-র-সা। ৩। 'বিচি' প-র-সা। ৪। 'ড্বল'ধ। ৫। 'বাহিল'ক। ৬। 'বে চিতে' স্থলে 'সে মন'ধ। ৭। 'কি না'ক, ধ। ৮। 'আছি আপন' থ; 'আহিয়ে আপন' ঘ। ৯। 'দিয়ে' ক. থ, চ, প-র-সা। ১০। 'দর ছারে' স্থলে 'ছ্যারে' ক, চ, প-র-সা।

थहरे ।>

এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উঠে।
না জানি কামুর প্রেম তিলে জানিং টুটে॰।
গড়ন° ভাঙ্গিতে সই আছে কত খল॰।
ভাঙ্গিয়া গড়িতে॰ পারে সে বড় বিরলণ।
যথা তথা যাই আমি যত হুখ পাই।
চাঁদমুখের শম্বুর হাসি তিলেক জুড়াই।
সে হেন বন্ধুরে মোর যে জন ভাঙ্গায়।
হাম নারা অবলার বধ লাগে তায়।
চণ্ডাদাস কহে রাই ভাবিছ অনেক।
ভৌমার পারিতি বিনে নাণ জিয়ে
ভিলেক।১৬॥৮৯৪॥

পাঠা গ্র

১। ইং পি-র-সা পুথির ১৩০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'জান' প-র-সা। ৩। 'ছুটে' ঘ। ৪।
'গঢ়ন' থ, ঘ। ৫। 'জন' প-র-সা। ৬। 'গঢ়িতে' থ, ঘ। ৭। 'হুজন' প-র-সা। ৮। 'চাদ মুখে' ক, প-র-সা। ৯। 'সে' ক; 'সে না' ঘ, চ, প-র-সা।

ने ब्रोभ । ১

শ্যানের পিরিতি মুরতি^২ ছ**ইলে**তবে কি পরাণে² ফলে।
পরাণে পিরিতে² সমান করিলে
কে তারে জিয়স্ত বলে।

যদি হাম শ্রাম বন্ধু লাগি পাড় তবে সে এ ছখ টুটে। আন মত• শুনি মনের আগুনি यनएक यनएक উঠে॥ পিরিভি-রভন্দ পরাণ সমান क्षिन् कप्र-जूल। অধিক>> হইল পিরিভি-রভন>• পরাণ উঠিল চুলেম্ং ॥ জাতি কুল বলি षिन्^{*} जिलाञ्चल আর সতী-চরচাতে। তমু ধন জন>৩ জীবন যৌবন নিছিলুঁ কালা-পিরিতে 🛭 হিয়ায় রাখিব কারে না কহিব১৪ পরাণে পরাণে জভা। कि कानि कि (थर१) कि मिश्रा कि देकरल মরিলে " না বায় ছাড়া॥ **िटलटक २५** मदिएय यिन ना प्रिश्चिरय শয়নে স্বপনে ১ বর্ । কৰে চণ্ডীদাস मत्राम त्रव्वरः পিরিতি অমিয়া-সিকু ॥৯৭॥৮৯৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৮৬ ও প-র পুথির ১৪।৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরিভি' প-র; 'মিরিভি' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পরাণ' ক, চ, প-র-সা; 'গরণ' প-র। ৪। 'পরাণে শিরিভে' ছলে 'পরাণ পিরিভি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'হদি' ইত্যাদি পংক্তি ছলে প-র পুথিতে 'শ্রাম-ধনের' ইত্যাদি কলিটি ছারাই এই পদ আরম্ভ করা হই-রাছে। ৬। 'আনমত' ছলে 'অনুপার' প-র। ৭। 'রতন' প-র। ৮। 'পরশে' প-র। ৯। 'ফুলে' বিরশ' ইত্যাদি ছলে 'খুকিছ হাদরে তুলে' ক। ১০। 'ল্রশ' প-র। ১১। 'ফুলে' প-র।

> । 'মন ধন' প-র। ১৪। 'হিরার' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ ষথা—'হিরার হিরার লাগির থাকিব'। ১৫। 'পরাণ' প-র। ১৬। 'কি থেণে স্থলে 'কি থানে' ধ, ঘ, চ; 'কি ক্ষণে' ক। ১৭। 'অস্তরে' প-র। ১৮। 'তিলেক' ক, থ, ঘ, চ। ১৯। 'শরনে স্থপনে' স্থলে 'সপনে সে শ্রাম' প-র। ২০। 'হানিল' প-র।

ভপা রাগ।১ কান্যু-পরিবাদ মনে ছিল সাধ সফল করিল বিধি। কুজন-বচনে ছাড়িতে নারিব সে হেন গুণের নিধি # বন্ধুর পিরিতি শেলের ঘ পহিলে সহিলুँ र বুকে। বেথাটি বাঢ়িল দেখিতে দেখিতে এ হুখ কহিব কাকে॥ করে মিরন্তর হিয়া দগদগ यादत्र ना एन थिएन मति। কি শেল সম্ভাইন হিয়ার ভিতরে वल ना कि वृष्कि कति॥ অস্থ্য বেথা নয় বোধে সোধে রয় হিয়ার মাঝারে থুইয়া⁸। কোন কুলবভী কুল মজাইয়া কেমনে রৈয়াছে সইয়া ।। অবলা অখল रुपग्न **म**त्रल° কথায়ে ভুলিয়া গেলু। পরের কথায় পিরিভি করিয়া कनम कान्छिश मन् ॥ সকল ফুলে ভ্ৰমরা বুলে কি¹ ভার আপনা⁵ পর। চণ্ডীদাস কৰে কামুর পিরিভি

কেবল ছবের ঘর ১৯৮১৯৬।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৮৭ সংখ্যক পদ।
২। 'সহিলে' ক; 'সহিল' চ, প-র-সা। ৩।
'হিয়া' ইত্যাদি কলিট ক, থ, ঘ, চ ও প-র-সা
পুথিতে নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পূথি হইতে
উদ্ভ হইল। ৪। 'খুইঞা' ক, থ; 'গুইয়ে'
প-র-সা। ৫। 'শুইঞা' ক, থ; 'সহিয়া' ঘ;
'শেঞা' চ; 'সইয়ে' প-র-সা। ৬। 'অবলা'
ইত্যাদি কলিট ক, খ, ঘ, চ ও প-র-সা পুথিতে
নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পূথি হইতে উদ্ভ হইল।
१। 'কে' ঘ। ৮। 'আপন' চ, প-র-সা।

শীরাগ।১

না বোল না বোল সখি না বোল এমনে।
পরাণ বান্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ বান্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ ক্ল কূল শীল এ লোক-লাজ।
কি গুরু-পোরব গৃহের কাজ ॥
তেজিয়া সব লেগা পিরিভি কৈলুঁ।
যে ইহার বিরভি ভারে জিয়ন্তে মেলুঁ^২॥
যে চিতে দড়াঞাছি সেই সে হয়।
প্রেপিল বাণ যেন রাখিল নয়॥
ঠেকিলুঁ প্রেমফানে সকলি নাল।
ভালে সে জ্ঞানদাস না করে আলা॥

1221661

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুধির ১৩৮৮ সংখ্যক পদ।
২। 'বে' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'বেই হয়ে
বিরতি ভারে ভেজিয়া মৈপু' ক; 'বে হয়ে বিরতি
ভারে জিয়ত্তে মলু'। প-র-সা। ৩। 'দড়াইয়া'
४; 'য়ঢ়য়য়াছি' চ।

টাকা

e—৬। "ভেলিয়া" ইত্যাদি। অক্ত সকল মেহ পরিভ্যাগ করিয়া (শ্রীকৃষ্ণের সহিত) প্রেম করিলাম; বে (শ্রীক্বফ) ইহাতে বিরতি অর্থাৎ বিভূষ্ণ, জীবিতাবস্থার তাহার সহিত সম্মিলিত হই-লাম! (শ্রীরাধার উক্তির তাৎপর্য্য এই বে, এ ভাবে শ্রীক্রফের সহিত সম্মিলন অপেকা দেহ পরিত্যাগ করা শ্রেম ছিল)।

৭-৮। "বে" ইত্যাদি। চিত্তে বে (ভাব)
দৃঢ় করিয়াছি, তাহাই কার্য্যে প্রকাশ পাইবে;
বেমন (ধয় হইতে) নিক্ষিপ্ত বাণ রক্ষা করিবার
বোগ্য নহে! (শ্রীরাধার উক্তির তাৎপর্য্য এই বে,
বেমন মুক্ত শরকে ফিরাইয়া আনা বায় মা, তেমন
প্রেম-প্রবণ হাদয়কেও নিরক্ত করা অসম্ভব)।

১০। "ভালে" ইত্যাদি। ख्वानमान र प्यामा करत ना,—(ভাছা) ভালই (वटि)। (ध्वामा कतिलाई ध्वामात ध्वभित्रहाई-कान्य नाना इःव नाना नमस्त नक् कतिहरू कति उन्हरूत खानान ध्वामारक क्षमस्त (भाषन करतन ना)। जुनना कक्नन,—

"ন তথা স্থয়তাঙ্গ-সংলগা বনবণিনী।

া যথা স্থয়তি স্বাস্তমিশু-শীতা নিরাশতা॥"

— বোগবাশিষ্ঠ, ৪০ 18 ।

यहरें 12

কামু সে জাবন জাভি প্রাণ-ধন

এ ছটি আঁথির তারা।

পরাণ-অধিক হিয়ার পুতলী

নিমিথে নিমিখেং হারা॥

তোরা কুলবতী ভজ নিজ পতি

যার যেবা মনে লয়।
ভাবিয়া দেখিলুঁ শ্রামবন্ধু বিমু

আর কেহো মোর নয়॥

কি আর বুঝাও কুলের ধরমণ

মন স্বভন্তর নয়।

কুলবতী হৈয়। রুসের পরাণ জার কার° জনি° হয় ॥ যে মোর করমে। লিখন আছিল
বিহি ঘটায়ল মোরে।
তোমরা কুলনতা দেখিলে কুমতিদ
কুল লৈয়া থাক ঘরে ॥
তাক হুকজন বলু কুবচন
না যাব সে লোক-পাড়া।
তানদাস কয় কামুর পিরিতি
ভাতি কুল শীল ছাড়া॥১০০॥৮৯৮॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১, ১০৮৯ ও প-র পুথির ১৪।১০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বাসিরে' প-র-সা; 'নিমিখ' প-র। ৩। 'কুলের ধরম' হুলে 'ধরম বিচার' প-র-সা। ৪। 'আপনার' প-র-সা। ৬। 'আনি' ক। ৭। 'কপালে' প-র-সা। ৮। 'দেখিলে কুমভি' হুলে 'দেখিলে মুক্তি' ক; 'দেখিলে মুক্তি' প-র-সা; 'দেখিলে মুক্তি' চ, প-র। ৯। অতঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্লিখিত অতিরিক্ত কলিটি দুষ্ট হয়; য্থা,——

'কাছ বিনে প্রাণ নাহি জানে আন না শুনি আনের কথা। কাছ বিনে সধ ঘে সুথ বৈভব শুনিতে শ্রবণে বেধা॥'

অথ অমুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা। ভত্ত শ্রীগৌরচন্দ্র।

विज्ञात ।>

গোরা-রূপ লাগিল নয়নে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্থপনে ।
যে দিগে ফিরাই আঁথিং সেই দিগে দেখি।
পিছলিতে করি সাধ্ধ না পিছলে জাঁখি।

কি খেণে দেখিলাম গোরা কি না মোর হৈল। নিরবধি গোরা-রূপ মরমে⁵ লাগি**ল°॥** চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ। বাস্ক্রোবে বলে গোরা রমণী-মোহন॥

11207116991

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৯০, ১৩৯৮ ও প-র
পুথির ১৪:৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ফিরাই আঁথি'
স্থলে 'পড়য়ে দিঠি' প-র। ৩। 'করি সাধ' হলে
'করে মন' প-র-সা; 'করে সাধ' প-র। ৪। 'নয়নে'ক। ৫। 'পশিশ' প-র।

कुड़ी ।>

मूि यि वर्तां र পাসর্বো কানণ মনে সেনা লয় আন। তিল-আধ তার মুখ না হেরিলে" নিঝরে ঝরে নয়ান ॥ পরাণের সই শুন শুন শুন কামুর পিরিতি কাচ্চে। ভেল পরাধীন তমু মন ধন কি আর করিবে লাজে ॥ এ ॥ পরাণ উছলে মানের নামে সে ঐছন হয় অকাঞ্চে। যদি, শুনিতে না চাহোঁ কাসুর বচন कारण (अ यूत्रली वांटक । यिन, हिनाए ना हार्टों ' कानारेत्र' शाल **চর**ণে থির না বান্ধে। গোবিন্দ দাস কছে কামুর লাগিয়া **ভালে সে পরাণ কাল্ফে ॥>०२॥≥००॥**

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭ ও ১৩৯১ এবং
 প-র পুথির ১৪।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোলো'

হু, ৬; 'বলঙ' প-র-সা। ৩। 'পাসরোঁ কান' প-র-সা। ৩। 'গেল' ক, প-র-সা। ৪। ভলে 'পাসরো কান' ব; 'পাসরোঁ কাহু' চ, প-র-সা। ৪। 'না ছেরিলে' স্থলে 'নাহি দেখি' कः 'ना (मिथिय़ा' च। ৫। 'नियाद यादा' ऋला 'অব্বে কুরে' প-র-সা। 🖦 । 'বয়ান' থ। ৭। 'क्षोदन' क, घ, ह। ७। 'এছन' ইত্যাদি স্থল 'क्रेइन इस्त्र ८ए कांट्स'। ३->०। 'ठांट्रा' प, প-র-সা। ১১। 'কাছুর' ক, ধ, ঘ, চ; 'काङ्कारत्रद्र' भ-द्र।

টীকা

৯-->। "মানের" ইত্যাদি। (মান করা দূরে থাকুক), মানের নামেও আমার প্রাণ অভির হয়,—এইরূপ **আমার ত্রবস্থা হই**য়াছে !

वाननी ।>

শুনইতে অনুখণ यह नव खनगनर প্রবণ নয়ন জৈ গেলাং। দরশনে ভাকর এ হেন⁸ লোর ঝর नयन अवग नम (छला ॥ হরি হরি কি ভেল দারুণ কাঞ্চ। না জানিয়ে কো বিহি বিঘন বাঢ়াওল কাসু-সমাগম মাঝ ॥ গ্রু ॥ যা সত্ৰে কেলি-কলা-রস-লালসে लाथ मरनात्रथ (कल। তাকর পাণি-পরশে তমু পরবশ তবহি অচেডন ভেল 🛭 হিয়া ঘন-সার হার নাহি পহিরলুঁ यांक পরশ-রস-१ আশে। তাক বিছেদেদ জীউ নাহি নিকসয়ে কহতহিঁ > গোবিন্দদাসে॥১০৩॥৯০১॥ পাঠান্তর

)। ইছা প-র-সা পুর্বির ১৯৬ ও ১৩৯২ এবং ^{भ-त्र} भूषित्र ১৪।১১ मरश्रक भए। २। 'नव **७**०'

'ঐছে' প-র-সা। ৫। 'ভেল' ক, প-র-সা। ৬। 'হরি হরি' ইত্যাদি এক-কলিটির স্থলে সা-প ২০১ পুথির পাঠ, যথা---

'হবি হরি কো বিহি বিঘিন বাঢ়াওল কাহ্ন-সমাগম মাঝে। জীবন যৌবন ভেল পরাধিন কি আর করব লাজে॥**'** ৭। 'হ্রপ' ব, চ, প-র-সা, পর। ৮। 'বিচ্ছেদে' ক, চ, প-র-সা, প-র। ১। 'কি কহব' প-র-সা; 'কি করব' প-র।

টীকা

>-- s। "अन्दर्ण" देजानि। अर्तना वीहात অপূৰ্ব্ব গুণ-গ্ৰাম গুনিতে গুনিতে (আমার)কৰ্ব নয়ন হটল অৰ্থাৎ নয়নের কার্যা কর্ণই সম্পন্ন করিল,—(অর্থাৎ অমুরাগোৎপত্তির জন্ত দর্শনের আর অপেক্ষা রহিল না)—তাঁহার সাক্ষাৎ দর্শনে (প্রেমানন্দ চেডু) নয়নে এরপ অঞা বর্ষণ হইতে लार्गिन ((य), नम्रन कर्तित्र छोत्र (पृष्टि-मक्टि-होन) इहेल !

कारमाम ।>

শ্রবণ-রসায়ন नव नव खनगन नग्रनः -त्रमाग्रन व्यक्त । ক্দয় রসায়ন রভস**ু সম্ভাষ**ণ পরশ-রসায়ন সক। এ স্থি রসময় অস্তর যার। গুণগণ-সাগর শ্যাম স্থনাগর (क) थिन विष्कृत्रद्र शित्र ॥ ध्रम ॥ গৃহপতি-তরঞ্জন গুরুত্বন-গপ্তন কুলবভি-কুবচন ভাষ। সবহু পুন মেটই যত পরমাদ মধুর-মুরলি-আশোব্দাস 🛭

কিয়ে করব কুল দিনস-দীপ তুল
প্রেম-প্রনে ঘন ডোল ।
গোবিন্দ দাস যতন করি রাখত
লাক্সক জালে আগোর ॥১০৪॥৯০২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭, ১৩৯৩ ও প-র পুথির ১৪।১২ সংখ্যক পদ। ২। 'পরশ' প-র-সা। ৩। 'সরস' প-র। ৪। 'রভস' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ, ষথা—

'শুন স্থি রসময় খাম স্থনাগর
কোধনী বিছর অপাল।'

ে। 'আগর' ক, চা ৬। 'পুন মেটই' স্থলে
'পুন মেটব' ক; 'পুন মেটরে' চ; 'পছ মিটরে' প্ন-র-সা। ৭। 'দোল' প-র-সা, প-র।

কৌ রাগিণী ৷১

অরুণ-উদয়-কালে ব্ৰজ-শিশু আসি মিলে বিপিনেং পয়াণ প্রাণনাথং। এক দিঠি গুরুজনে আর দিঠি পণ পানে চাহিয়ে পরাণ করি হাপঃ সজনি না জানি কি হয়ে প্রেম লাগি। দাক্রণ পিরিভি পর-বোধ না মানই কত চিতে নিবারিব আগি ॥ ঞ ॥ একে কুল-কামিনি তাহে নব-যৌবনি আর তাহে পরের অধীন। রহিতে না পারি ঘরে পিরিভি বিষম-শরে ভাবিতে ভাবিতে ওমু ক্ষীণ। নিশি দিশি অবিরত জাগিতে সুমিতে কভ প্রাণনাথ সোত্ররি সদাই । ख्डानमां रवारल আকুল নয়ান>-জলে তিল আধ খির নাহি পাই ১০ ৫॥৯০ ৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৯৪ ও প-র পুথির ১৪।৩৫ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী' স্থলে 'কোড়া রাগ' প-র। ২। 'বিপিন' ক, ঋ; 'বিপিনছি' প-র-সা। ৩। 'প্রাণনাথে' প-র। ৪। 'ছাড' ক; 'হাখে' প-র। ৫। 'হয়' ক, ঋ, প-র-সা, প-র। ৬। 'দাকণ' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ যথা,—'দাকণ পিরিতি মোর পরবোধ নাহি মানে'। ৭। 'ঘুমাত্যে' প-র। ৮। 'প্রাণনাথ' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণনাথ স্তরিব কত' প-র। ৯। 'নমানের' ঘ, চ। ১০। 'তিল' ইত্যাদি স্থলে 'বিষাধিক অধিক পিরিত' প-র।

कुलानो । ১

শুন শুন বিনোদিনি রাই।
তোহে পুন কহিয়ে বুঝাই॥
কান্তক ভাব যব হোই।
হিয় মাহা রাখবি গোইং॥
কোই জন্তুং লখই না পার।
বেকত করবি কুলাচার॥
কান্তু উয়ব হিয় মাহা।
আন ছলে বিছুরবি তাহা॥
গুরু ছুরুজনং তুয়া পাপ।
দেখিলে দেওব বছ তাপ॥
থীর করবি সদা চাত।
ঐছন কুলবতি-রীত॥
পুন জনি ভাবহ আন।
ইছ কবিশেখর ভাগ॥১০৬॥৯০৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৯৫ সংখ্যক পদ।
২। প-র-সাএ হলে 'ইত্যাদি' শক্ষ হারা এই পদটি
সমাপ্ত করা হইয়াছে। ৩। 'ক্সন'ক। ৪। 'এক হক্ষন' হলে 'গুক্জন ক্সি'ক, ব।

টাকা

৯--:•। "অংক" ইত্যাদি। তোমার অংকজন চর্ক্সন ও পাপ-শ্বরূপ; ভাহারা দেখিলে অনেক ৰাতনা দিবে।

ৰরাড়ী।১

কানড়ং কুসুম করে পরশ না করি ডরে এ বড মনের মনবেথা । যেখানে সেখানে যাই সকল লোকের ঠাঞি কাণাকাণি শুনি এই কথা॥ मरे (लाटक वरल काला পরিবাদ। জলদ না হেরি গো কালার ভরমে হাম তেজিয়াছি কাজবের সাধ॥ গ্রন্থা যমুনা-সিনানে যাই আঁখি মেলি নাহি চাই ভরুয়া কদমতলা পানে। যথা তথা বসি থাকি বাঁশীটি শুনিয়ে যদিং पूर्णि शंख मिश्रा शांकि कारन ॥ চণ্ডীদাস ইথেৎ কৰে সদাই অন্তর দুহে পাসরিলে না যায় পাসরা। দেখিতে দেখিতে হরে ততুমন চুরি করে না চিনিয়ে কালা কিবা গোল। 115051100611

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৬৩ সংখ্যক পদ। 'ভনিয়ে ৰদি' ছলে 'ভনিয়া গো'থ। ৫। 'চণ্ডী-দান ইংখ' ছলে 'বড়ু চণ্ডীদানে' প-র। ৬। 'চেতন' प। १। 'िहिन (य' क, थ, श-द्र।

ভণা বাগ ৷১

জীবাবে নগে মুই জী াবে নহো নহো জাবারে নহেং গোর সাবং। যাগার সনে সইঃ পবিচয় নাহি মোবং তাহা সনে কচেও গাবিবাদ।। কেমন বানাই সেই ে েমন মুব্তি স্ইদ কেমন বাং তাহার্ফ বেভার। রাধার বন্ধয়া বলৈ সব ভোতে ডাতে তারেস সেই ধোর কুলের খাঁখার॥ कोशास कि । ज्य किया ८०० १ ८०० १ ७०० ८०० ८०० शतील करेल **(म कॉक**्रस) তাহার সনে যদিত বিভিন্ন গ্রাহ তবে সে কহিত হাল মোর্ডি।। 11:01/100:11

পাঠান্তব

২। ইহাপর পুথির ১ ৬১ সংখ্যক প্রা। २। 'नरभ' क। ७। 'कावाद' हे ग्रांकि शर्राख्य ছুহটির স্থলে পার প্রথিব গাঠ, যণা -- নজান আর नाहि कावरनव माधा । । 'याराव' ईस्तामि क्टल यांत्र मत्न कक्ट (सांत्र' भव। 💛। 'शी' প্র। ৬। ভাহা ইত্যাদি হলে দে জনার म्रास्य भन्ता १ (स. भना छ। '(भार প-র। ১। 'কেমন বা' ছবে 'কেমন' क, চ। ১০। 'কেমন বা তাহার' স্থলে 'না कानित्य (क्यन' भ-त्र । ३३ । ७१८० । १८४ वर्ष াবলে গোঁপ-র। ১১। পরাণ হলেদি হলে <mark>१। 'কানড়' ছলে 'কাল' ক, থ, চ, প-র। 'প্রাণ মো</mark>র বিশ্রিস যার'প্র। ৩০। তার সনে ে। 'মলব্যথা' क, ह; 'মোর বেথা' প-ব। ৪। যাল মোর' প-র। ১৪। 'গাকতে' প-র। ১৫। 'ভবে'হত্যাদি স্থয়ে 'এ কপা স্থিত তবে গায়' পর ।

সিক্ষ্ডা ।১

বে দিগে কামুর ঘর সে দিগে না বসি।
সজী-সাধে সে দিগের বাউৎ না পরশি॥
ভমুত দারুণ লোকে নানা কথা কয়।
ছখের উপর তুখ আছরে হৃদয় ॥
কাহারে কহিব তুখ কে মোর হিতাশী।
পরের কথায় প্রাণ পোড়ে দিবানিশি॥
শিবা কহে স্থবদনি বুকে না হানিবে।
কুবাদিনী গোকের কথায় কিবা হবে॥

110616061

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪।৬৫ সংখ্যক পদ।

হা 'বাগু'ক। ৩। 'আছ্রেছদম' স্থনে 'ততোথিক হয়' প-র। ৪। 'কাছারে কহিব' ইত্যাদি
পংক্তি চারিটিক, থ, ঘ, চ পুথিতে নাই,---পর
পুথি হুইতে উদ্ধৃত হুইল।

ভাদরে দেখিতু নট চাঁদে ইত্যাদি গেয়ম্।

युक्टे ।

যারে মুই না দেথোঁ নয়ানে।
কলঙ্ক ভোলায় তার সনে।
নগরে আছয়ে কত নারী।
কে না চাহে শ্রাম পানে ফিরি॥
কে না পিরিতি নাছি করে।
শুরুজন নাহি কার ঘরে।
মোর হৈল সব বিপরাত।
কাতে করিলে বেয়াপিত॥
যাহা নাহি দেখয়ে নয়নে।
তাহা যেন দেখিল এখনে॥
বলরাম কহে পাপ-লোকে।
মিছা কথা করে পরতেকে ॥১১০॥১০৮॥

অথ প্রেম-বিচার।

শ্রীগোরচন্দ্র ॥

ধানশী।১

ভাব-ভরে গরগর চিত।
থেণে উঠে থেণে শৈসে না পায় সহিত।
আত রসে নাহি থাকে থেহ।
সোঙরি সোঙরি কাঁদে পুরুব স্থনেই ॥
নাচে পত্ত গোরা নটরাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সকার্ত্তন মাঝ ॥
প্রানহীন উত্তম অধম নাহি মানে॥
প্রিয়-গদাধর-কর ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ডগমগ আনন্দ-হিলোলে।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পতিতের কোলে।
গোরা-রসে সব রসময়।
না দংবে বলরাম পাষাণ-হদয়॥১১১॥১০১॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১১১২ সংখ্যক পদ। এই পদটি ৬৩৫ সংখ্যক পদরপে পদকলতক এটে ইতিপুর্বে উদ্ধৃত হইয়াছে; স্বতরাং পাঠায়র উর্ব পদে এইবা।

পরস্পর সখ্যুক্তি প্রেম-বিচার।

यग्रे।)

সো কুলবতি অতি তুলহ গতাগতি
পতিং তুরমতি পুর-ধারণ।
পাপির পিরিতি এতত্ত নাহি সমুকরে।
দোসর মদন গোডার ॥

সজনী রাই সহজে পরতন্ত্র। কবহুঁ • দূর নহ গ্ৰুন বিৱহ-গৃহ ইথে কি আছুয়ে মণিমন্ত্র ॥ গ্রা॥ নয়ন ভরি ভিরপিত দরশনে নহত পরশ্বে না রহে গেয়ান। कोरन जत जत ভাহে বিষ্ণু তমু মন কহত কিয়ে সমাধান॥ মরম মাহা পৈঠত বিছুরত মরমে স্বপনে না হেরুয়ে গ্রান। তুল্ভেল সমতুল অমিলন মিলন গোবিন্দদাস ভালে জান ॥১১২॥৯১•॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুথির ২০০ দংখ্যক পদ।
২। 'পর' ক। ৩। 'থরধার' ক। ৪। 'সমুঝিরে' ক,
চ। ৫। 'সজনি' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কবছ'
না' ক। ৭। 'ডাছা' ক। ৮। 'মরম' গ-র-সা।
১। 'বাহা' প-র। ১০। 'হেরই' ক, চ; 'হেরিরে'
প-র-সা।

बब्राफ़ी ।>

ছত রসময়-ভত্থ গুণে নাহি ওর।
লাগল ছত্ত না ভাত্মই জোরণ ॥
কে নাহি কয়ল কভত্ত পরকার।
ছত্ত জন ভেদ করই নাহি পার॥
খোজলুঁ দকল মহীতল-গেহ।
খীর নীর সম না হেরলুঁ নেহ॥
যব কোই বেরি আনল-মুখ আনি।
খার দণ্ড দেই নিরস্ত পানি॥
তব্ত জীর উছলি পড়ু তাপে।
বিরহ-বিয়োগণ আগি দেই দেল।
বিরহ-বিরোগ ভবহি দুরে গেল॥

ভণর্ছ বিদ্যাপতি এতেনে স্করেহ> । রাধা মাধব ঐছন নেহ ॥১১৩॥১১১॥

পাঠা গুর

১। ইহা প-র পূ'ণর সন্সংগ সংখ্যক পদ।

'বরাড়ী' স্থলে 'ধানশী' প-র। ২। 'গুহু' প-র।

০। 'লাগণ' ইত্যাদি স্থলে 'গুহু দরশনে দুহু পূলকে
অগোর' প-র। ৪। 'যোধল' ক; 'লোধল' ব, চ।

৪। 'ফার' ক, ব। ৬। 'নিরস্গ' ব, ব, প-র।

৭। 'উমড়ি' ক। ৮। 'বিরোগে' ক, প-র।

৯। 'আগ' ক, চ। ১০। 'দিল' ব। ১১। 'গুছে'

ক, ব, ব, চ। ১২। 'স্বহি' প-র। ১০। 'এতেনে

স্থ্রেহ' স্থলে 'এ ভিন স্থ্রেহ' ক, প-র; 'এতিনে

স্থ্রেহ' চ।

টীক1

e--৬। "পোজলু" ইত্যাদি। পৃথিবীর সকল গৃহ অহুসন্ধান করিণাম; (কিন্তু) ছগ্ধ ও জলের (প্রশ্বের) ভার প্রণয় দেখিলাম না।

১০০-১৪। "গুণছ'" ইত্যাদি। বিশ্বাপতি বলিতেছেন — মুরেছ অর্থাৎ মুলেছ কি না উৎক্লই প্রণয় এই প্রকার। রাধা ও মাধবের প্রণয় এই প্রশ্বেষ বটে। (নগেক্স বাবুর সংস্করণে 'এতেনে স্থরেছ' স্থলে 'এছন মুনেছং' পাঠ মুদ্রি ১ হইয়াছে, কিন্তু এক্স পাঠ কোন পুর্বিতেই দৃষ্ট হইল না। 'র' ও 'ল'বের অভেদ হেছু 'মুলেছ'— 'মুরেছ' হইতে পারে। 'এতেনে' শক্ষাট ছিন্দী 'এত্না' শক্ষের ক্রণান্তর বলিয়াই বিবেচনা হয়)।

यरहें।

এমন পিরিতি কভু নাহি দেখি শুনি।
পরাণে পরাণে বাগা আপনা আপনি॥
সূত্র কোরে সূত্র কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিরা।
আধ তিল না দেখিলে বায় কি মরিয়া॥

জল বিদ্যু মীন যেন কবছাঁ না জিয়ে।

মাপুষে এমন প্রেম কোগা না শুনিয়ে॥
ভাগ কমল বলি দেখো হেন নয়।

ঠামেই কমল মরে ভামু স্থাথে রয়॥

চাতক জলদ কহি সে নাহে ভুলনা।

সময় নহিলে সে না দেয় এক কগা॥

কুইমে মধুগ কহি সেগো নাহে ভুলই।

না আইলে সমব আগনি না যায় ফলই॥

কি ছার চকোব চাল্ছ তুই সম নাহে।

ত্রিভুবনে হেন নাহি চণ্ডাদাসে কহে॥

॥১১৪॥৯১২॥

পঠিক্সর

>। 'বিনে' থ, ঘ। ২। 'হিমে' ক, থ। 'হিমে' পাঠে ছন্দোভঙ্গ ঘটে। ২। 'তুল' ক, থ। ৪। 'ফুল' ক, থ।

সওয়ারী।১

निष्ट्रहे भोडून পািরতি চুঃন ভিলে তিলে বাঢ়িং যায়। ঠাত্রি নাহ এয় তথাপি বাচয় পরিণামে নাহি থায়⁸ ॥ স্থি হে অদভূত হুকু প্রেম। এত দিন চাই অবধি না পাই ইথে কি ক্ষিল হেম॥ ধ্ৰু॥ উপমার গণ সৰ কৈল আন দেখিতে শুনিতে ধন্দ। এ কি অণরপ তাহার স্বরূপ স্বভাবে¹ করিলে **অন্ধ**। চণ্ডীদাস কৰে (मोर्ड मम रदा এখানে সে বিপরীত। এ তিন ভুবনে হেন কোন জনে শুনি না দরবে চীত্রু ॥১১৫॥৯১৩॥

পাঠান্তর

১। 'শোষারী' থ। ২। 'বাড়ি' ক, খ,চ। ৩। 'বাড়ম' থ। ৪। 'থার' চ। ৫। 'ঠাঞি' ক,চ। ৬। 'ধর' থ।৭। 'সভাবে' ক, ঘ,চ। ৮। 'ছহঁ সম হয়ে' ক; 'দোই।' থ; 'দৌহ'চ। ৯। 'চিত' ক, থ।

थ्रुहरू ।১

একে কুলবতা ধনা তাতে সে অবলা।
ঠেকিল বিষম প্রেমে কত সবে জালা॥
অকথন বেয়াধি কহন শাহি ষায়।
যে কবে কামুর নাম ধরে তার পায়।
পায়ে ধরি কাঁদে সে চিকুর গড়ি যায়।
সোণার পুতলা যেন ভূমিতে লোটার।
পুছুয়ে কানুর কণা ছল ছল আঁখি।
কোণায় দেখিলা শ্রাম কহ দেখি সধি॥
চণ্ডীদাস বলো কাঁদে কিসের লাগিয়া।
সে কালা আছিয়ে ভার হৃদ্মে জাগিয়া॥

পাঠান্তর

#>>649>8#

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩.১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ কহা' ক,চ; 'কহনে' খ; 'এ কহনে' প-র সা।

তথা রাপ ।১

সহজেই কুলবতী বালা।
সেগ কি সহই প্রেম-জালা।
তাহে গুরু-গঞ্জন বোল।
অহনিশি অস্তর ডোলা ।
তাহে নিতি প্রেম-তরকা।
কোরি কবত্ঁ নহ ভক্ষ।

ত্বজন সঙ্গ সঞ্চারি।
ব্যাধ-মন্দিরে জন্ম শারী ॥
সকল কহব কামু-ঠাম।
ইথে কি কহয়ে পরিণাম॥
ভ্যানদাস কহ তাম।
পরিণামে বড়ই সে দাম॥১১৭৭৯১॥

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুণিব ১৩৯৭ সংখ্যক পদ। ১। 'সহজ্বই' ঘ,চ। ৩। 'সে' ক।৪। 'রোল' ক,ধঃ' ঢোল' প-র-সা।

তত্তানুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:।

केंब्रोग 15

গোরা-রূপ লাগিল নয়নে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্থপনে॥
যে দিগে পড়য়ে দিঠি েই দিগে দেখি।
পিছলিতে করি সাধ না পিছে । সাঁথি॥
কি খেণে দেখিলাম গোরা কিনা মোর হৈল।
নিরবধি গোরা-রূপ মরমে লাগিল॥
চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ।
বাহুঘোষে বলে গোরা রমণী-মোহন॥

177719761

পাঠান্তর

)। এই পদটি ৮৯৯ সংখ্যক পদরূপে ইতি-পূর্বে উদ্ধৃত হইয়াছে; স্তরাং পাঠান্তর উক্ত পদে অষ্টব্য।

पू हो ।३

ছাড়িয়া[>] ঘনের আশ করিব সে বনবাস এই চিতে দটাইলুঁ সার। রা, ৩ দিবদেও হামণ হিয়ার উপবে পোব না করিব গাব জাঁথির প্রাদ্য মই তোমারেগ কলিয়েও সরম। জাঙি ভাসাইলুঁ বুলে তিলাঞ্জলি দিলুঁ युक्त विष्यु । भवभ- विषय । अस्य । শাশুড়া-এনদা-ডরে নিথাস না ছাড়ি ঘরে এই দ্বৰে হেন ধাধ করে। টান্দমুখ নির্বিয়া ভারের উপর **অ**স থ্ইয়া মনেৰ কুণাটি কৰ ভাৱে ৷ নয়ানে না দেখে আন আন নাহি শুনে কাণ या (पश्चि भव वा भि भ भवा । না জানি কি করিলে> বলবাম দাসে বলে সে>> নাগর গোকুলের চন্দ ।১১৯॥৯১৭॥

পণঠা হর

১। ইছা প-র-দা পুথির তেও ও প-র পৃথির ১ নাত্র সংখ্যাক পদ। ১ : 'ছাড়িব' ক, খ, প-র-দা; (পাঠাম্বর---ঘ, চ)। ৩। 'দিবদ' ক, চ। ৪। 'চিতে' ক, চ, প-র-দা। ৫। 'আর আঁথির' স্থলে 'নয়নের' প-র। ৬। 'কহিলু' (পাঠান্তর— ঘ, চ), প-র। ৭। 'গাহমু দে' ক। ৮। 'দেখি' খ, ঘ, প-র-দা। ৯। 'দেখে' ক, খ, প-র-দা। 'দেখ' প-র। ১০। 'ছইলে' খ; 'হৈলা' গ-র-দা। 'ও' ক, খ।

সি**ছু**ড়া।>

এ দেশে বসতি নাই যাব কোন দেশে।
যাব লাগি প্রাণ কান্দে তারে পাব কিনে॥
বোল না উপায় সই বোল না উপার।
জনম অবধি দুখ রহল হিরায়॥

প-র-দা।

ভিত° কৈল দেহ মোর ননদী-বচনে । কভ না সহিব জালা এ পাপ পরাণে ॥ বিষ খাইলে দেহ যাবে রব রবে দেশে। বাশুলী-আদেশে কহে বিজ চণ্ডীদাসে ॥

পাঠা হর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০০ ও প-র পুথির ১৪।৬০ সংখ্যক পদ। ২। বিসতি নাই' ছলে 'নহিল বাস' প-র। ৩। 'তিঁতা' ক। ৪। 'ননদীর বোলে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'এ পাপ পরালে' ছলে 'লাশুড়ীর বোলে' প-র। ৬। 'ক্ছে ছিল চঞ্জীদাসে' ছলে 'কবি ক্ছে চঞ্জীদাসে' প-র।

थाननी ।>

🗢 निग्रार (मशिन् দেখিয়া ভুলিলু ভুলিয়া পিরিভি কৈলু। পিরিভি-বিচ্ছেদে না রছে পরাণ ব্যবিষা ঝারিয়া মৈলু ।। সই পিরিতি দোসর ধাতা । विधित्र विधान সব করে আন ना रात्र ध्रम-कर्ण ॥ अम्॥ পিরিভি মিরিভি जुरन (डोना**रेन्** १ পিরিতি গুরুষা ভার। পিরিভি-বেয়াধি যার উপজয়ে (म दूरवा भा दूरवा आत । সভাই কহয়ে পিরিভি-কাহিনী কে বলে পিরিভি ভাল। কাত্মর পিরিভি ভাবিতে ভাবিতে পাঁজর ধসিরা গেল। পিরিভি-বেয়াধি জীবনৈ মরণে হইল বাহার অঞ্চ । ভানদাস কৰে কামুর পিরিভি निकृषे १ भी कृम तक ॥ १२ १॥ ३०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪•১ ও প-র পুথির
১৪:৪৯ সংখ্যক পদ। ধানশী তথে 'হুছ্ই' প-র-সা।
২। 'গুণিয়া' প-র। ৩। 'গুণিয়া' প-র। ৪।
'জীবন' প-র। ৫। 'মসু' থ। ৬। 'সই পিরিডি
দোসর থাতা' ইত্যাদি ফ্রাব-ক্লির পরিবর্ধে ক
পুথিতে নিম্নলিখিত কলি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'সই কে বলে পিরিভি ভাল।
শ্রাম বদ্ধু সনে

পাজর ধসিরা গেল।'
৭। 'ভৌলাইয়া' থ। ৮-৯। 'জানে' প-র-সা। ১০।
'সঙ্গ' প-র। ১১। 'নিভি' ক, খ, ম, চ; 'নিভাই'

সিদ্ধুড়া।১

মুথিঃ মৈলুঁ মৈলুঁ মরিয়া গেলুঁ

ঠেকিলুঁ পিরিতি-রসে।

এ বর-করণ বিহি নিদারণ

সকলি পরের বশে॥

কালিয়া কালিয়া বলিয়া

জনমে কি সুখ পাইলুঁ।

হিয়া দগণগি পারাণ পুড়নি

মনের আগুনে মৈলুঁ ॥১২২॥৯২০॥

ইড্যাদি গেয়ম্।

গাঠান্তর।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০২ সংখ্যক পর।

তথা রাগ।১

কিবা সে মোহন বেশ দেখিতে মুক্তছে দেশ না রহে সতীর সতীপনা। ভরমে দেখিলে যারে জনম ভরিরা সই কুরিয়া মরয়ে কত জনা॥ कि कतिन कि ना देश कितन वा तम वां एम वां एम वां एम कि (भन शिनशि (भन वृद्ध। জাতি-কুল-শীল-শিবে বজর পড়িল সই काशूरत प्रथियां किएन किएन নিন্দ গেল দুরে গো খাইতে সোয়ান্তি ৭ নাই হিয়া ডহ ডহ মন ঝুরে। ধক ধক করে প্রাণ উড়ু পুড়ু আনছান কি হৈল ইহিতে নারি ঘরে॥ রদের মুরতি দে (पश्चित ना॰ त्राष्ट्र (प বাভাদে পাধাণ হয় পানি। বলরাম দাসে বলে সে অক পরশ হলে প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি ॥১২৩॥৯২১॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প⊹র-সাপুথির ১৪∙০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' হলে 'ভূড়ী' ধ। ২। 'সোরাত্ত'ক। ৩। 'সে'ক,চ।

जूड़ी ।>

কি ঘর বাহির লোকে বলে একি রীভিং।
জীতে পাসরিলও নহে বন্ধুর পিরিভি॥
দেখিতে না দেখে আঁথি শ্রাম বিনে আন।
ভরমে আনের কথা না কহে বয়ান॥
শুনিভে শুনিয়ে হাম সেইও পরসঙ্গ।
সোজর সঘনে মোর পুলকিত অঙ্গ॥
হিয়ার আরভি গোও কহিতে নাহি দেশ।
মরমে ধরম কথা না করে প্রবেশ॥
গৃহকাল করিতে আউলায় সব দেহ।
ভ্যানদাস কহে বড় বিষম শ্রাম-লেহ॥

।ऽ२८।७२२।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পূথির ১৪।৩৬ সংখ্যক পদ। २। 'একি রীডি' বলে 'একিরিভি' ম, চ; 'ককি-

রিভি' প-র। ৩। 'পাসরিলে' ক। ৪। 'শ্রাম' প-র। ৫। 'গো' শস্ট ক, ধ, দ, চ পুথিতে নাই।

भेद्राभ ।>

মনেরং মরম-কথা শুন লো সঞ্জনি।
শ্রাম বন্ধু পড়ে মনে দিবস রক্জনা। এই।
চিতের আগুনি কত চিতে নিবারিব।
না যায় কঠিন প্রাণ কারে কি বলিব।
কোন বিধি সিরজিল কুলবতা বালা।
কোন নাহি করে প্রেম কার এত জ্বালা।
কিবা সে মোহন রূপণ মন মোর বাঁধে।
মুখেতে না সরেই বাণী সুটি জাঁখি কালেবং॥
ভ্যানদাস করে সখি এই সে করিব।
কাপুর পিরিতি গাগি যমুনা পশিবং॥

12619501

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২১৪, ১৪০৪ ও প-র পুৰির ১৪।৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মনের' শব্দ ক, চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৩। 'কিবা সে মোহন ক্লপ' হলে 'কিবা ক্লপে কিবা ওলে' প-র-সা। ৪। 'মুখেতে না সরে' হলে 'মুখে না নিঃসরে' প-র। ৫। অতঃপর প-র-সা পুথিতে এই অতিরিক্ত কলিটি দুই হর, যুখা,—

'খ্রে হৈতে বাংর বাংর হৈতে খর। দেখিবারে করি সাধ নহি সতত্তর ॥' ৬। 'কান্থর' ইত্যাদি স্থলে 'কান্থর লাগিয়া আমি অনলে পশিব।' প-র-সা।

निवात ।>

রাজার ঝিয়ারী কুলের বৌহারী
স্থামা-সোহাগিনী নারী।
পিরিতি লাগিয়া এ তিন খোরালুঁ
হইমু কুল-খাঁধারী॥

সই কি ছার পরাণ কাজে। নাহি দর্শন স্বপনে তা সনে অগত ভরিলং লাজে ॥ ধ্রু॥ সব তেয়াগিলুঁ ধরম করম যাহার পিরিতি-সাধে। সকলি নাশিলুঁ ভাতি কুল শীল সে জনার পিরিভি-বাদে ॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়া জর জর না ক্লচে আহার পানি। পিরিতি-সাঁথর কতে বলরাম কেবল ছুখের খনি ১১২৬:১২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ। ২। ভিরিয়াক। ৩। নিশিল প-র-সা।

তুড়া ।১

এক স্বালা স্বরং হৈল আর স্থালা কামু।
স্বালাতে স্থালল প্রাণণ সারা হৈল তমু ॥
কোথায় যাইব সই কি হবে উপায়।
গরল সমান লাগে বচন হিয়ায় ॥
কাহারে কহিব কেবা যাবে পরতীত।
মরণ-অধিক ভেলং কামুর পিরিত॥
স্বারিলেক তমু মন কি আছে ঔষধে।
স্বাত ভরিল কালা কামু-পরিবাদে॥
লোক-লাজেং ঠাঞি নাই অপ্যশ দেশে।
বাশুলী-আদেশে কর্ষে বিজ চণ্ডাদাসে॥

॥১২৭। ৯২৫॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১৪০৬ ওপ-র পুথির ১৪।৫০ সংথ্যক পদ। ২। বিরেপ ক, ঝ, ম, চ, প-র-সা। ৩। কেহ'ক, ঝ, ম, চ। ৪। কেন' ক, চ; হৈল'ঝ, প-র-সা। ৫। মাঝে'ক, থ। षुष्ठी ।>

কি হৈল কি হৈল মোরেং কামুর পিরিত।
আঁথি কুরেও পুলকিত প্রাণ কাঁদে নিতি।
শুইলে সোয়ান্ত নাই নিন্দ গেল দূরে।
কামু কামু করি প্রাণ নিরবধি কুরে।
নবীন পাউদেরও মান মরণ না জানে।
নব অমুরাণে চিত ধৈরজ না মানে।
এ না রস যে না জানে সে না আছে ভাল।
ফদয়ে পশিলং মোর কামু-প্রেম-শেল।
নিগৃঢ় পিরিতিখানি আরতির ঘর।
ইথে চণ্ডীদাস বড় হইল ফাঁফের।১২৮॥৯২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪•৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মোর' ক। ৩। 'ঝরে' ঘ। ৪। 'পাঙ্লের' ক। ৫। 'রহিল' ক, চ।

কক্ষণ বরাড়ী।১

বিষম হইল কালার প্রেম লাগে শেলিং।
ঝুরিয়া ঝুরিয়া কান্দে পরাণ-পুতলী ॥
গ্রহা যত পিরিতি করিয়াছে মোরে।
আঁখরে আঁখরে লেখা হিয়ার ভিতরে ॥
হাসিয়া পাঁজরকাটা কইয়াছে কথাখানি।
সোঙ্কিতে চিতে উঠে আগুনের খনি ॥
নিরবধি বুকে থুইয়া চায় চাঝে চোখে চোখে।
এ বড় দারুণ খেল ফুটি রৈল বুকে ॥
হিয়ায় ধরিয়া করে দেখিব মুখখানিং।
বলরাম বলে হিয়ায় দারুণ আগুনি ॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪০৮ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিবম' ইত্যাদি ছলে 'বড়ি বিষম হৈল কালার
প্রেম এ মর বসতি লাগে শেলি' ক, ম, ম, চ। ।

172212291

'হইরাছে' ধ; 'কর' প-র-সা। ৪। 'চাহিলে' ক, ৰ ব.চ। ৫। 'হিলাৰ ধরিলা' ইত্যাদি পার-সা ক, চ; 'হিলোলে' পার-সা। ৬। 'हम्स' क। পংক্তি হুইটির স্থলে ক, ধ, ঘ, চ প্ৰির পাঠ বথা.--'ছিলার ধরিয়া নয়ন ভবিয়া

करव मि (मिथिव मुग्रथानि । হিয়ার ভিতর অলে বলরাম দাসে বোলে দারুণ শেল আগুনি ॥'

একটি পদের ভণিতা ত্রিপদী-ছন্দে রচিত হইয়া অবশিষ্ট পদ পয়ার-ছন্দে রচিত হওয়া সম্ভবপর বোধ হর না ; স্থতরাং প-র-দা পুথির পাঠই সমীচীন বোধে मूल गृशै छ इहेगा

তথা রাপ।১

ন্যান-কোণের বাবে হিয়ায় হানিলে বে সেই হইল পিঠের পার। জালিয়া তিন কোণের খড়, দিলুঁ ও জ্বথের মুখে তবে আমার দুখের নাহি পার॥ রসের আবেশে অঙ্গ মোডা দিয়াই হাসিয়া কথাটি কয়। কত ভক্তিমায় ও ভুরু• নাচায় তাতে কি পরাণ রয় 🕽 বাঁশীর ফুকে বুকের ভিতরে ফুটিয়া আগুন ছলে। মধুর বচলে• হিয়ার হিলোলে পরাণ-পুতলী দোলে ॥ হিয়াজর জর পরাণ কাঁফর

দেখিয়া ও মুখ চান্দ । বলরাম-মনে আন নাহি লয়

সবে প্রাণ গোকুলচান্দ ॥১৩•।৯২৮।

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪০৯ সংখ্যক পদ। र। '(बाफ़ा विवा' ऋत्व '(बाफ़ाहेबा' श-व-मा। ७।

'দিঠি' প-র-সা। ও। 'চলনে' চ। ৫। 'হিলনে'

टा हो हरी छ

একে কুলবতী করি বিভ্রিলং বিধি। আর তাহে দিল চেন পিরিতি-বিয়াধি॥ কি হৈল কি হৈল সই কিবাসে করিল। গোপতে বাঢ়ায়া প্রেম আপনা খোয়ালঁ ।। জাগিতেঃ স্বপনে মনে নাহি জানে আন। (म नव नागत लागि कान्मर्य भवात । কত না সহিব আর হিয়াব পোডনি। কহিতে নাহিক ঠাঞি ছার পরাধিনী। যার লাগি বেবা জন জাতি প্রাণ তেজে। বলরাম বলে ভারে কি করিবে লাজে ॥

12021251

পাঠাস্তর

১ ট্রা প-র-সা পুথির ১৪১০ ও প-র পৃথির DS180 मःशाक अन् । २ । 'निव्रमिटन' थः 'সির্জিল' প-র। ৩। 'ধাইলু' প-র-সা। ৪। 'জাগিলে' ক: ৫। 'নাহিয়ে' ক। ৬। 'মুঞি' প-র। ৭। 'জাতি প্রাণ' ফলে 'পরাণ' ক, ধ, ব, চ, প-র-সা। ৮। 'আর'ক।

युष्ट् ।>

ি ভোহে কহিব বাণী শুন অমুরাগিণি সদাই ভাবহ কালা কামু। পুলকে শরীর ভরে নিরবধি আঁখি ঝরে मित्न मित्न कोन कर्र जगू। যদি তৃত্ত শুন মোর কথা। नमा **हर्दि नावशान** সে কালা কাসুর প্রেমে ভবে সে ঘূচিবে সব বেপা । । ।

থাকে তুহুঁ কুলবভী তাহে ছুরজন পতি
কানিলে পড়িবে পরমান ।

এ পাড়াপড়সী যত বিপক্ষ আছরে কত
কাতে ঘূষিবে পরিবাদ ॥

যব তাহে পড়ে মনে চিত দিবে আন কামে

যেন লোকে নহে উপহাস ।

যবিবে আমার কথা মনে না ভাবিহ বেথা

যতনে কহয়ে প্রেমদাস ॥১৩২॥৯৩০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪১১ সংথ্যক পদ। ২। 'কত' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সদা হবে' ছলে 'রবে সদা' ক, থ, প-র-সা।

थहरू ।>

তোমরা কি আর বুঝাও ধরম।
শারনে স্বাংন দেখোঁ কালিয়া-বরণ ।
কো আউলাইয়া বেশ বনাইতে
হাত নাহি সবে বান্ধি।
সে কালার জরমে কেশ কোলে করি
কালা কালা করি কান্দি ।
কালা সে কেশ কোলা সে বেশ
লোটন বান্ধিয়া রাখি।
যথন কালাকে পড়য়ে মনে
আউলাইয়া ভাহা দেখি ॥১০০॥৯০১॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৪১২ ও প-র পুৰির ১৪১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'দেৰো' ক, ধ; 'দেৰঙ' প-র-সা; 'দেখি' প-র। ৩। 'বেশ' ক, চ; 'বেশে' প-র। ৪। 'কেশ' ক, ধ; 'কেশে' প-র।

সিম্বডা ।১ কি ঘর-বস্তি ছাড়ে ছাড়ুক পতি কিবা বাংকরিবে বাপ মায়। এ রূপ° যৌবন জাতি জাবন ধন নিছনি ফেলিব⁸ শ্যাম-পায়॥ ক**হিলুঁনিদান** আর না রহে প্রাণ শ্যাম স্থনাগর বিনে। কুলের ধরম ভরম সরম ভাগিলং এতেক দিনে ॥ সমুখে রাখিয়া নয়ানে দেখিয়া लहेग्रा थाकिम् रहीत्य रहीत्थ । হার করিয়া গলায় গাঁপিয়া लहेशा थाकिम् तुरक ॥ চিতে উঠে যত বেশ করি ডত অঙ্গে অঙ্গে দিয়া হাথ। সাধ পুবাইৰ অনেক দিনের কোলে করি প্রাণনাথ # মুখানি মাজিব'ণ त्मिश्रा त्मिश्रा তামুল দিব চাঁদমুখে১ । বলরামের কথা বন্ধু লৈয়া যাব যথাস রাধা বলি কেহ নাহি ডাকে। 1508112051

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৩ ও প-র পু^{থির} ১৪।২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কিবা বা' ছলে '^{বি'} প-র। ৩। 'নব' প-র। ৪। 'পেলিব' প র-ম। । 'ভালিল' ক, চ। ৬। 'মুখানি' প-র। १। 'দেখিম্' ক; 'দেখিরে' প-র-সা। ৮। 'পরিমা' প-র। ৯। 'লইয়া থাকিম্' ছলে 'স্ব নির'বর্গ প-র। ১০। 'মুখান মালিব' ছলে 'মুব নির'বর্গ পর-সা। ১১। 'ভাছ্ন' ইত্যাদি হলে 'গুরা তু^{বি} দিব মুখে' প-র। ১২। 'ভাছ্ন' ইত্যাদি হলে 'গুরা তু^{বি}

ভথা রাগ।>

সই নাকহ ও সব কথা। যাহারে লাগিল কালার পিরিতি জনম হইতেং বেখা ॥ নয়ানে না হেরি কালিন্দীর জল বয়ানে না বলি কালা। ভভু ত সে কালা অন্তরে জাগয়ে° काला देश क्रश-भाला ॥ (यागिनी वरेव বন্ধব লাগিয়া কুণ্ডল পরিব কাণে। বিদায় হইয়া সভার আগে যাইব গহন বনে 🛭 গুরু প্রিজন বলে কুবচন না যাব সে লোক -পাড়া।

পাঠাস্তর

জাতি কুল শীল ছাড়া ॥১৩১॥৯৩৩॥

চণ্ডীদাসে কৰে

কামুর পিরিভি

120612081

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪১৪ ও প-র পুথির ১৪।১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'অবধি' প-র। ৩। 'নাছাড়ে' প-র। ৪। 'বিদিত' প-র। ৫। 'সে লোক' ফ্লে 'লোকের' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা।

সিছুড়া।১

কৰিলাম মনের কথা ছাড়িতে নারিব।
খাম নাগর বিনেং তিলেক না জীব॥
অনুখণ হিয়া মোর খাম-অনুরাগা।
ছাড়িতে কহিবে ধেনে হবেবধের ভাগী॥
খাম সজে রস-রজে অজ গেল পাগা।
মজিল আমার মন সোণায় সোহাগা॥
শিবরাম দাসে বলে ভাজিল চাতুরী।
মরমে লাগিল খাম-রূপের মাধুরী॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৫ ও প-র পুথির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনে আমমি' প-র। ৩। 'ছাড়িতে কহিবে' স্থেল 'ছাড়াইতে চাহে' প-র। ৪। 'শিবা সহচরী' প-র।

সিকুড়া ।>

কি মোর এ ঘর তুয়ারের কা**জ** লাজে কহিতে নারি। ইত্যাদি॥১৩৭৮৯৩৫॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ৮৪৭ সংখ্যক পদরপে ইতিপুর্বে উদ্ধৃত হইয়াছে বলিয়া এ হলে পুনরায় সম্পূর্ণ
শিখিত হইল না; এই পদের অবশিষ্ট অংশ ও
পাঠান্তর উক্ত পদে দ্রষ্টব্য।

অনুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা।

শ্রীগৌরচন্দ্র। ধাননী।>

নিরবধি মোর হেন লয় মনে
থেনে খেলে অনিমিবে।
নয়ন ভরিয়া গোরাজ-বদন
হৈরিয়ে মন হরিবে।
আই আই কিয়ে দের রূপ-মাধুরী
নিরমিল কোন বিধি।
নদীয়া-নাগরা সোহাগ-আগরি

পাইল রদের নিধি ।

অপরূপ রূপ
ইচ্ছা বেং হিয়ার লেপি ।

সোণার বরণ

বসন পরিয়া

कोवन योवन (मांशि।

চুলের চাঁপার° ফুল হেন করি
আউলায়্যা করিয়ে দেখা ।
লাজ ভয় ছাড়ি কোলেণ উড়ি পড়ি
ছ বাহু করিয়াণ পাখা ॥
পিরিভি-মুরভি চিত্র বনাইয়া
কহিয়েণ মনের কথা ।
বুকে বুকে হুবেধ মুধে মুধ ভরিণ
ছুচাই মনের বেধা ১১৩৮॥৯৩৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ইছো বে' ছলে 'ইছোর' ক; 'ইছারে' খ,
শ-র-সা। ৩। 'চাপা' ক, চ। ৪। 'লোকে' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'করিরে' ক, প-র-সা। ৬। 'কহি বে' ক; 'কহি এ' খ। ৭। 'বুকে' ইত্যাদি ছলে 'বুকে বুকে মুখে মুখে ছরি' প-র-সা।

রদোদগারান্তে অমুরাগঃ।

তথা রাপ 1>

স্থি হে^২ কি পুছসি অনুভব মোয়। **গোই পিরিভি অমু-**রাগ বাখানিয়ে° অমুখণ নৌতুন⁸ হোয় 🛮 ধ্রা জনম অবধি হৈতেং ও রূপ নেহারলুঁ নয়ন না তিরপিত ভেলা। লাখ লাখ যুগ হাম হিয়ে হিয়ে মুখে মুখে क्षप्र खू फ़न नाहि (शला ॥ বচন-অমিয়া-রস व्यपूर्यं भूनमूँ শ্ৰুতি-পথে পরশ না ভেলি। ক্ত মধু-বামিনি রভদে গোঙায়পুঁ मा त्वम् देकहन दक्ति ॥

কত বিদগধ জন রস জতুমোদই
অন্তুভন কান্ত্ৰণ না পেখিদ।
কহ কবিবল্লভ হৃদয় জুড়াইতে
মিলয়ে কোটিমেশ একিংশ।
॥১৩৯॥৯৩৭।

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৪১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সথি হে' ছলে 'সথি' ক, চ। ৩। 'বাধানি
এ' ধ; 'বাধানি' প-র-সা। ৪। 'নব নব' প-র-সা।
। 'হইতে' ধ, ঘ, প-র-সা। ৬। 'নেহারিয়'
ক, চ। ৭। 'অমুভব কাহ' ছলে 'অমুভব কাহ'
ক, ধ; 'অমুভব কাহে' প-র-সা। ৮। 'নেখ'
ধ। ১। 'মিলয়ে কোটেমে' ছলে 'লাথে না মিলয়ে'
প-র-সা। ১০; 'এক' ধ।

টাকা

>-- >। "সহি হে" ইত্যাদি। হে স্থি!

সামাকে (প্রেমের) অমূত্র কি জিজ্ঞাসা করিতেঃ!

সেই প্রেমকেই অমূরাগ বলিয়া ব্যাধ্যা করি—
(বাহা) অমূক্ষণ অথাৎ ক্ষণে ক্ষণে নৃত্র (রুণে
প্রতীত) হয়! তুলনা করুন;—

"সদায়ভূতমপি যঃ কুর্যান্নবনবং প্রিন্নম্। রাগো ভবন্নবনবঃ সোহস্থরাগ ইতীর্যাতে ॥"

২২—২০। "কত" ইত্যাদি। কত রসিক বাজি রস অর্থাৎ অস্থ্যাগকে প্রাশংসা করিরা থাকেন; (কিন্তু) অস্থ্যাগের (প্রাকৃত্ত) অস্থ্তব কাহাতেও দেখিতে পাই না। কবিবল্লভ করেন—জ্বদর কুড়াই-বার জন্তু (প্রাণের মান্ত্র) কোটির মধ্যে একটি পাওয়া বার।

শীগাদার।১

কাহারে কহিব কাসুর পিরিভি
তুমি সে বেদনী সই।
রসের ধাধসে ধনধস হিয়া
ভেঞি সে ভোমারে কই॥

রসের সাগর ও ন্ব-নাগর আগর সকল গুণে। দে সৰুং পিরিভি আদর আরতি यूतिशा मतिव (मटन ॥ কত না ছলে° সে পিরিভি-বোলে কি না সে আকুতি সাধে। মধুর ভাষিয়া মান নাশিয়া হাসিয়া মরম বাঁধে। করিয়া ভরিয়া সে মোরে কোলেতে वन्ता वन्न निश्रा। বিধু বিড়ন্দিয়া মধুর চুব্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচুয়া• ফাঁড়িয়া• সে রস লুটিয়া ভুলিয়াশ মধুপ জনু। ভর্মে কি কৈল কমল-কোরক গুণেতে ঘুণিত তমু। ও দিঠি-চাতুরী মুখের ২০ মাধুরী লহরী বহুয়ে আর। ঝুরিয়া মরুক এ হুখ্য শুনিয়া षात्र Cगाविन्स होत ॥> 8 ०॥ ৯ ७ ৮ ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বস' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'ছল' ক, খ,
চ। ৪। 'ভাথিয়া' ক। ৫। 'মোর' ক। ৩।
'কাচুলী' ক; 'কাচুয়া' খ, চ। ৭। 'ছটিয়া' খ।
৮। 'আলিমা' ক; 'ভুলিয়া' খ, চ। ৯। 'ইংল'
ক। ১০। 'রসের' প-র-সা। ১১। 'এ স্থ্

টাকা

১০-১৬। "সে মোরে" ইত্যাদি। সে আমারে ক্রোড়ে ধারণ ও (আমার বারা) ক্রোড় পূর্ণ করিয়া, '(আমার) মূধে মুধ অর্পণ করিয়া, (আমার মূধে)

মধুব ভাবে চুম্বন করিয়া ও (চক্ত এই মুখের নিকট কি ভাব !—এই বলিয়া) চক্তকে ভিরস্কার করিয়া, আমার স্বর ত্রণ করিল।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

তিরোপা। ১

স্থি হে মন্দ প্রেম-পরিণামা। वद्गरकर जीवन কয়ল পরাধীন নাহি উপকার এক ঠামা।ধ্রু॥ লগই নাহি পার**লু ঝ**াঁপল**ু কূপ**া ষাইতে পড়লছ ধাই। কছু না বিচারপুঁ তখনক লঘু গুরু অব পাছু• তরইতে চা**ই**° ॥ প্রেম সম মামুখ মধু সম বচন পহিল জানন নাহিণ ভেলা। পর হাতে সোঁপলুঁ আপন চতুরপন হৃদিসে গরব দূরে গেলা॥ ভানে শহাম আছিলুঁ এত দিন আন ञव तूवानु ञ्चवशादि । আপহি চাঁছলু ১২ আপন শুল্ঞ হাম माथ प्रयुत अव कारि॥ শুন বর যুবভি ভণয়ে বিছাপতি চিতে নাহি গুণবি> আনে। জীউ উপেখিয়ে প্রেমক কারণ জগ-জন কো নাহি জানে ॥১৪১॥৯৩৯॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১ ঃ ২০ সংখ্যক পদ।
২। 'বরাক' প-র-সা। ৩। 'বাঁপরে' ক। ৪।
'না' ক। ৫। 'আইডে' ক, চ। ৮। 'পাছে'
প-র-সা। ৭। 'জাই' প-র-সা। ৮। 'পহিল
জানন নাহি' ছলে 'পহিলহি জানস্কা' ক; 'পহি-

লি জানলুনা' च, চ। ৯। 'দিনে' ক, খ, च, চ।
১০। 'ভানে হাম' স্থলে 'ভালে হাম' চ। ১১।
'গুড' খ, প-রুসা। ১২। 'আপহি চাঁচলু' স্থলে
'আপে না চাহিল' প-রু-সা। ১৩। 'গুণবি' ক, থ,
ছ; 'ভাবিহ' প-রু-সা।

धाननी ।>

পিরিভিকি রীভ কোন অবগাহইং সহজই বৃক্ষিম সোই। যো রস ধাধসে धम धम व्यख्त পাঁজরু জর জর হোই॥ সজনি ভোহে কহি° কামুক নেহা। চীতে মঝু ডঠয়ে ষত যত নীতং ভাবিতে আকুল দেহা ॥ গ্ৰু॥ যোই ধনি জাবই পরবল হোই প্রেম-বিলাসক আন্দে। দূরে রহুঁ লালস দরশন তুলহ নিচয়ে মরণ অভিলাষে॥ কহত হিয়া ডোলত মরমক বোল का कर जनि भतिवास । গোবিন্দদাস বচনে হাম জুললু তে । ভেল এভ পরমাদে।

পাঠান্তর

1128412861

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২ ও ১৪২১ সংখ্যক পদ। ২। 'শ্বগাহক' ক, খ, খ, চ; 'শ্বগাহব' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পঞ্চর' খ, চ। ৪। 'ভোছে কহি' খলে 'ভাছে কি' ক, প-র-সা। ৫। 'নিভি নিভি' প-র-সা। ৬। 'জীবরে' ক, খ, খ, চ। ৭। 'পরিচর' সা-প ২০১ পুথি। ৮। 'কভিং' প-র-সা। ৯। 'ভোলরে' প-র-সা। ১০। 'ভাহে' ক, খ; 'ভেঞি' প-র-সা।

एड़ी ।>

একে কুলবভী চিত্রের আর্ডি বিধি-বিভৃষিত কাজে। পিরিভি-কণ্টক শ্রাম স্থনাগর-ফুটিল হিয়ার মাঝে। শুন শুন সই মর্ম্ম ভোরে কই পড়িলুঁ বিষম ফাঁদে। অমূল্য° রতন বেড়ি ফণিগণ **(मिश्रा शदांग कार्ल्म ॥ अ ॥** গুরু গরবিত বোলে অবিরভ এ বড়ি বিষম বাধা। এ কুল ও কুল ছু কুল চাহিতে সংশয় পড়ল রাধা॥ ঘাড়িলে ছাড়ান না যায় সে লোক পরাণ-অধিক বড়। জ্ঞানদাস কহে এমন সম্পদ কাহার ডবে বা এড় ॥১৪৩॥৯৪১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪২২ সংখ্যক পদ।
২। 'মর্ম তোরে' স্থলে 'মরম তোমারে' ক, খ, च;
'মরম তোরে' প-র-সা। ৩। 'অমুগ' ক, च, চ।
৪। 'ছাড়িলে' ইত্যাদি স্থলে 'ছাড়িলে ছাড়িল এ
লোক সে লোক' ক, খ, च, চ।

বিহগড়া।

কবর্তু রসিক সনে দরশ হোর জনিং
দরশনে হোর জনিও নেহ।
নেহ-বিছেদ° জনি কার্তুকৈ উপজয়ে
বিছেদে° ধরয়ে জনি দেহ॥
সজনি হুরে॰ কর ও প্রসঙ্গ।
পহিলহি উপজিতে প্রেমক॰ অমুর
দারুণ বিহি দিল ভক্ষ॥

ষবর্ছ দৈব দোষ উপজয়ে প্রেমহি
রসিক সনে জনিশ হোয়।
কামু সে গোপত স্বর্ছ শিখায়ল গোমায় ॥
হেন ঔষদ সথি কাই। নাহি পাইয়ে
জমু ১০ যৌবন জরি যায়।
অসমপ্রস রস সহিতে না পানিয়ে
ইহু কবি শেখর গায় ॥১৪৪॥৯৪২॥
পাঠাত্ত

)। 'मत्रम (हात्र' छ्रल 'मत्रमन रहरित्र' क।

२। 'क्यानि' क, थ। ०। 'क्यूर' क, छ। ८।
'लश्विष्ट्रिन' क, छ। ८। 'विष्ट्रिन' क, छ।

७। मृत्र' क, थ। १। 'स्थिन' क। ৮। 'क्यूर'

क, छ। २। 'स्थान्ट्र' क। ১०। 'स्थान्ट्रम्'
थ। ১১। 'झिन' च।

টাকা

> -- ৪। "কবছ" ইত্যাদি। কথনও খেন রসিক জনের সহিত সাক্ষাৎ হয় না; সাক্ষাৎ হইলেও খেন প্রণায় হয় না; প্রণায় (হইলেও) খেন বিচ্ছেদ খটে না; বিচ্ছেদ ঘটিলে খেন দেহ ধারণ করে না। ('একাবলী' অলহার)। তুলনা কর্মন,--

শুকুগৰতি কোই নম্ননে জনি হেরই
হেন্নত পুন জনি কান।
কামু ছেরি জনি শেলা
প্রেম করই জনি মান॥

—প্-ফ্-ড, ১৩৪ সংখ্যক পদ।

वर्रे ।>

একে নব পিরিভি আর্থি অভি^২ তুরগম
সোঙ্করি সোঙ্করি থিণ দেহা।
তাহে গুরু-গঞ্জন হাদয়-বিদারণ
জীবইতে ভেল সন্দেহা^ও ॥

সজনি চুরে কর ও পরথাব। প্রেম-নাম ফ্রাহাঁ শুনই না পায়ব সোই নগরে হাম যাব ॥ধ্রু॥ যাহে বিসু সপনে আন নাহি হেরিয়েণ অব গোহে বিহুরল সোই। হাম অতি দুখিনি সহজে একাকিনি হাপন বলিতে নাহি কোই॥ তুহুঁ কুল চাহিতে**°** আকুণ অন্তর পাঁতরে পড়ি রহুঁ কেম। জ্ঞানদাস কহে **धिक धिक कीवरन** যাকর পরবশ প্রেম 🛮 ১৪৫।৯৪৩।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র গুথির ১৪।১১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর্তি অতি' ফলে 'আর অতি' ক; 'আর্তি'
ধ, ঘ, চ। ৩। 'জীবইতে ভেল সন্দেহা' ফলে
'পরিজনক গেছা' প-র; 'পরিজন কণ্টক গেছা'
সা-প ২০১ পুথি। ৪। 'প্রস্তাব' প-র; 'পরতাব'
সা৯প ২০১ পুথি। ৫। 'জানিলুঁ' প-র। ৬।
'গুথিনা' ক; 'দোথিনি' চ। ৭। 'হেরইতে' প-র,
সা-প ২০১ পুথি। ৮। 'পাতরে' ক, ঘ; 'পছহি'
প-র।

षु हो ।>

ভালই সময় ছিল যখন শিশুমতি।
অন্তরে অনল জ্লেং পিরিতি-কিরিতিও॥
বাহিরে অনল নহে জল দিবও তায়।
খ্যাম-প্রেমে ধকধকিও কি বলিব কারও॥
প্রাণ্যামি তোমারে সে বলি।
হিয়ার ভিতরেখ খ্যাম পরাণ-পুতলী॥
ঘর হৈতে বাহির হইয়ে নিরস্তরও।
দেখিবারে সাধ করি নহি সভন্তর॥
মন ধকধক১০ করে দিবস রজনী১১।
লোক মাঝে না থাকিয়ে রহি একাকিনী॥

নিশাস ছাড়িতে মোর সং নাহি অবসর সং। কুফাপরসাদ করে পরমাদ বড় সং॥

1886||2861

পাঠাস্কর

১। ইছা প-র পুলির ১৪।১২১ সংখ্যক পদ। 'ভুড়ী' হলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ইবে' প-র। ৩। 'লিরিতিক রীডি' ক, ৩, প-র। ৪। 'দিরে' প-র। ২। 'দিরে' প-র। ৬। 'কি বলিব কার' হলে 'কি করি উপায়' প-র। ৭। 'মনের মরম কথা' প-র। ৮। 'মাঝারে' প-র। ৯। 'ঘর হৈতে' ইত্যাদি পংক্তিধ্বের হলে প-র পুথির পাঠ হথা,---

'দেখিবারে করি সাধ নহি সহস্কর।

হর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ হর॥'

১০। 'ধকণকি' ক; 'দকদকি' চ। ১১। 'মন'
ইত্যাদি পংক্তিম্বর প-র পুথিতে নাই। ২। 'মোরে'
প-র। ১০। 'অবসাদ' প-র। ১৪। 'কৃষ্ণ-প্রসাদ' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ, যথা,—

'শিবানল ক্ষে এই পিরিতি প্রমাদ।

পঠমঞ্জরী।

একে কাল হৈল মোরে নহলি যৌবন।
আর কাল হৈল মোর বাস বৃদ্দাবন ॥
আর কাল হৈল মোরে কদন্তের তল।
আর কাল হৈল মোরে বহন-ভূষণ।
আর কাল হৈল মোরে রতন-ভূষণ।
আর কাল হৈল মোরে গিরি গোবর্দ্ধন ॥
এত কাল সনে আমি থাকি একাকিনী।
এমন বেথিত নাহি শুনে যে কাহিনী ॥
বিক্ত চণ্ডীদাসে কহে না কহ এমন।
কারু কোন দোৰ নাই সবে এক জন ॥
১১৪৭॥১৪৫॥

পাঠান্তর

>। 'মোর' ক, ধ। ২। 'মোর' ক, খ। ৩। 'মোর' ক, ধ। ৪। 'মোর' ক, খ। ৫। 'শুনে বে' ছলে 'শুনরে' ক, ধ। ৬। 'সৰ' ক, ধ।

ট্যকা

"মোর" ও "মোরে" শব্দের প্রারোগে চতীদান ষে হল পার্থকা রক্ষা করিয়াছেন, অধিকাংশ লিপি कत छैहा लक्का ना कत्रोत्र छ छोनाटनत मकल मश्यद्यन-গুলিতেই বটতলার মুদ্রিত পুথির অমুকরণে 'মোরে' শব্দের স্থলে সর্বাত্র 'মোর' পাঠ গৃহীত হইয়াছে। 'মোর' শক্ষটি সম্বন্ধে ষ্ঠী বিভক্তির পদ; 'মোরে' मक्षि हर्वे विक्रित भार ; উहार वर्थ-'कामात পক্ষে'। বলা বাহুল্য যে, 'কদ্বের তল', 'ষ্মুনার ष्ट्रग 'अ 'गित्रि-शांवर्त्तन' - এই मकन भगार्थ শ্ৰীরাধার কোন স্বামিত্-সম্বন্ধ নাই: স্কুতরাং দেই দেই হলে 'মোর কদম্বের তল' ইত্যাদি-রূপ প্রয়োগ সমীচীন ও বৈশিষ্ট্যস্তক হট্য়াছে। 'নছলি বৌবন' অৰ্থাৎ 'নবীন যৌবন' বস্তুটতে শ্ৰীরাধার স্থামিত্ব-সম্বন্ধ থাকিলেও তাঁহার মনে বৌবনাভিমান নাই এবং তিনি উহাকে বাঞ্নীয়ও মনে করেন না; স্তরাং সেই স্থলেও 'মোর' অপেকা 'মোরে' প্রয়োগই স্থানত হইরাছে। শ্রীরাধার অন্ধৃত দুর্ভমান 'রভন-ভূষণ'গুলি সুথকর না হইলেও উহাদিগের স্থামিত অস্বীকার করার ও অক্তমনের গঞ্জনার ভয়ে উহা পরিত্যাগ করার উপার নাই বলিয়াই 'মোর রতন-ভূষণ' বলা হইরাছে।

ভাটিরারী।

একে দেখি অভি চিভের আরভি
পহিলে না ছিল এভ।
ংরে গুরুজন- গঞ্জনা না মানিং
নিভি নিবারিব কভঃ

জ্ঞানদাস করে

সই ঠেকিলুঁ বিষম ফাঁদে।

কামুর পিরিতি তিলেক বি ওতিং

হইলেণ পরাণ কাঁদে॥

সহকে মধুর শ্রু'মের মুর'ত

পিরিতি বুঝিনে কে।

কেমনে ধরিবং দে॥

চিত্রের বিচাব উচিত্র কহিতে

কগত ভবিয়া লাজ।

পঠা সর

রসিক গোপত কাল ॥১৪৮॥৯৪৮॥

ইহার অধিক

১। নানে'ক। ২। 'বিরিভি' ব,চ।৩। 'ডিলেক'ক চ ৪। 'বাদব ভাদের' থ, ব,চ। ৫০ 'ধবিবে'ক, থ। ৬। 'উদিভ'ক, থ।

यश्हे।

বর হেন নছে মোর ঘরের বদতি।
বিব হেন লাগে মোরে পাতর পিরিতি॥
বিরলে ননদা মোরে যতেক বুঝার।
কাপুর বিরিতি বিনে আন নাহি ভার॥
সথি মোর নব অপুরাণে।
পরবশ জাউ না উবরে> পুণ ভাগে॥
আধেং বৈয়া আঁথে নহেং সদা রহেং চিতে।
সে রস বিরস্প নহে ভাগিতে ঘূমিতে॥
এক কথা লাখ হেন মনে বাসি ধান্দি।
ভিলে কভবার দেখোঁ অপন-সমাধি॥
ভ্যাম্দাস বহে ভাগ ভাবে পাড়িয়াছ।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠান্তর ১। 'উরবে' বা ২-০। আবেগু দ, চ।

188416841

৪। 'রহে' ক, চ। ৫। 'কাগে' ব। ৬। 'নীহন' ক্যু 'নিয়ন' ব, চ। ৭। 'দেখি' ক্যু 'দেখো' ব।

তথা রাগ।

জীব নাজীব না সোই জীবার নহোঁ মুঞিং এ ছার পরাণ কার তরে। রাধার মনে আন নাই এত পরমাদে ১ই প্রাণ কাঁদে বিচেছদের ভরে ॥ বন্ধুরে বিদরে হিয়া একা নিশ্বদ হইয়া শুভিয়া রহিলু মুঞি দিনে। স্বপনে বন্ধুব সনে মনের কথাটি কই নন্দী দাঁডাঞা ভাষা শুনে। ঘুমের আলিসে চটি আঁখি মেলিভে নারি কালা-রূপ যাই। ভাহাঁ দেখি। আন বোল বলিতে বালা বন্ধুয়া বলিয়া ডাকিং প্রতি বোলে তারা করে সাখী ॥ काना गलाव॰ काँडि কালা বিলাসের হার কালা স্থতায় নিতি নিতি গাঁথি। রাগের বালাই ষাই লোচন বলয়ে অমু-वक्तत खरनत लागि दविष ॥১৫०!৯৪৮॥

পাঠান্তর

১। 'জীব না' ইত্যাদি পংক্তিবর হলে কওচ পুথির পাঠ বথা —'জীব না জীব না সই এ ছার পরাণ কার তরে।' ২। 'আন' ইত্যাদি হলে কওচ পুথির পাঠ বথা —'আন বোল বলিতে কার্যুবলিরা ডাকি'। ৩। 'গুণের' হ; 'গলের' চ।

ভখা রাপ।

পাসরিতে শরির হোয়ে প্রথমান।
কহিতে না নাগর বুকই অবধানং ।
কহনে না পারিয়ে সহনে না বার।
রচহা সঞ্জনি অব কি করি উপার।

কোন বিহি নিরমিল এই পুন লেই।
কাহে কুলবতি করি গড়ল মোর দেই ॥
কাম করে ধরিয়া সে করায় বাহার।
রাখয়ে মন্দিরে এ কুল-আচার ॥
রহই গা পারিয়ে চলই না পারি।
ঘন ফিরিদ বৈছে পিঞ্জর মাহা শারি॥
এতক্ত বিপদে কাহে জীবয়ে দেই।
ভণয়ে বিভাপতি বিষম এ নেই॥১৫১॥১৪৯॥

পাঠাম্বর

>। 'হয়' क। ২। 'কছিতে' ইত্যাদি পংক্তির
ছলে 'কছিতে না লয় অব বুঝাই অবধান' ক;
'কছিতে না লয়ব বুঝাই অবধান' চ। ৩। 'না
পারিয়ে' ছলে 'নারিয়ে' ঘ। ৪। 'বলহ' ক,খ।
৫। 'কয়য়ে' ক। ৬। 'কৄলাচার' ক। ৭।
'সহই' ক,চ। ৮। 'ফিয়ে' ক। ৯। 'বৈছন'
ক,খ।

ততঃ দখ্যক্তিঃ।

শুন শুন স্করি কর অবধান।
নাহ রসিকবর বিদগধ জান ॥
কাহে তুহুঁ হৃদয়ে করসি অমুতাপ।
অবহুঁ মিলব সোই স্পুরুধ আপ॥
উদভট প্রেম করসি অমুরাগ।
নিতি নিভি ঐছনং হিয় মাহা জাগ।
বিভাপতি কহ বান্ধহণ পেহ।
স্পুরুধ কবছ না তেজয়ে নেই॥

11)6 31126011

পাঠান্তর

১। 'অञ্বতাপ' ক, ধা ২। 'নৌতুন' ধ। ৩। 'বাছই' ক; 'বাছব' ধ। পুনশ্চ আক্ষেপানুরাগঃ।

সুহই।

আর শুফাছ স্থালা সই তোমার কামুর রাত।
হাসাইলে সব মোর গুরু গরবিত ॥
স্থার সামিলে পথে আসিয়েং চলিয়া।
বাহু পসারিয়া রহে পথ আগুলিয়া ॥
যতেক নিষেধি তায় বিগুণ উথলে।
লোকে বলে এমন কেনে সে বোল নহিলে।
পথে যাইতে লোকত সব কহে আমার কথা।
সদাই আমার নাম লয় যথা তথা ॥
রসাভাসে যে বোল বোলে শুফাঃ লাজে মরি।
পাপিয়া পাড়ার লোক করে ঠারাঠারি ॥
এত দিন ছিল মোর অবেকত কাজ।
এবে সে বেকত হৈল গোকুল সমাজ॥
বিরলে পাইয়া তাহা সোঙ্গর কহিয়।
যতুনাথ দাস কহে সময় বুঝাইয়॥১৫৩।৯৫১।

পাঠান্তর

১। 'গুনেছ'ক। ২। 'আসিতে' ক, ধ, চ। ৩। 'লোকে' ক, চ। ৪। 'গুনে' ক। টীকা

ধৈতিক শ্বতেক শ্বতাদি। (প্রীক্ষের
ধৃষ্ঠিতা) যত নিষেধ করি, তাহাতে (ক্ষান্ত না হইয়)
বিশুণ বর্দ্ধিত হয়। (তাহা দেখিয়া) লোকে বলে
যে, দেই কথা অর্থাৎ প্রীক্ষণ্ডের সহিত প্রীরাধার
শুপ্ত প্রাণরের কথা (প্রকৃত) না হইলে—এরণ
হইবে কেন ? (শুপ্তা প্রণম্ব না থাকিলে কোন
কুলাক্ষনা নীরবে পর-পুরুষের এইরূপ ধৃষ্টতা স্থ
করে না)।

षुड़ी ।ऽ

সই কেমনে দেখাব মুখ। গোপত পিরিতি বেকত কংগ্রে এ বড়ি মরুমে দুখ। শ্রু॥

করে কোন জনা এত টাঠপনা বুঝিলং তাখার মতি। সকলে হাসয়ে মোর অপ্যশে ইথে কি পাইবে সিধি ॥ সিনানে যাইতে আর এক দিন वाहरव ध्वल (भाव। নাগরী আছিল তথা ছুই চারি হাসিয়া⁸ হইল ভোর। অবশ হইলু পরশ পাইয়া ইহাতে করিব কি। শেখর কহে কি করিবে লোকে তোমার নিছনি দি ॥১৫৪॥৯৫২॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ১৪।৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'বুঝিকু' ক, চ। ৩। 'ইথে' ইত্যাদি হুলে
'ইথে পাবে কোন সিধি' প-র। ৪। 'দেথিয়া'
প-র। ৫। 'তোমার নিছনি' হুলে 'তোমারে
নিছিয়া' প-র।

সিকুড়া।>

না জানি তাহার এমত বেভার পিরিতি যাহার সনে। গোপত করিয়া কেনে না রাখিল (वक्छ क्रिन (क्र्स्न ॥ मरनद्र भद्रम क्रानिरव रक । মনের মরম সেই সে জানয়ে u द्राम मिलन (य ॥ धन ॥ চোরের মায়েং যেন পোয়ের লাগিয়া ফুকরি কাঁদিতে নারে। কুলবতী হৈয়া পিরিভি করিলে এমতি সঙ্কট তারে 🛭 ক্বে পরতীত**° কে আছে** বেপিত এ ছুখ कहित कादत्र।

হয় দুখভাগী পাইয়ে তার লাগি
তবে সে কহিয়ে তারে ॥
পরে কি জানয়ে পরের বেদন
সতর গাণন কাজে ।
চণ্ডাদাসে কহে বনের ভিতরে
ভাহে কি বোদন সাজে ॥

পাঠান্তর

১। ইং পি-র পুথির ১৪।৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'মা'ক, ঝ, চ, প-র। ৩। 'পরহিত' ক,
চ; 'পরতিত' ঘ। ৪। 'পাই' প-র। ৫। 'সম্বর'
চ। ৬। 'তাহে কি' স্থলে 'তাহা কি' ঝ; 'তবে
দে' প-র।

গ্রীরাপ ।১

সই কাহারে করিব রোষ। নাজানি না দেখি **पदल इहेन्** সে পুনি আপন দোষ॥ ধ্ৰ ॥ পেলাই থুং পা বাভাস বুঝিয়া বাঢ়াই বুঝিয়া থেহ। মানুষ বুঝিয়া কথা যে**° কহিয়ে** রসিক বুঝিয়া নেহ। মড়ক বুঝিয়া ধরিয়ে ডাল ছায়ায় বুঝিয়া মাথা। গাংক বুঝিয়া গুণ প্রকাশিয়ে° বেপিত বুঝিয়া বেপা॥ করিলুঁ পিরিতি অবিচারে সই (कम देक**नूँ** (श्न कारक । ধীর হ স্থান্দরি প্রেমদাস করে কহিলে পাইবা লাজে ॥১৫৬।৯৫৪॥ পাঠান্তর ১। ইহা প-র পুধির ১৪।৭২ সংখ্যক পদ।

२। 'लनारे थू' चरन 'स्नारेजू' ४; 'स्नारे थू'

চ, কেলাইড' প-র। ৩। 'সে' ক, খ, च, চ। ৪। 'ছার সে'খ। ৫। 'পরকাশি'ক। ৬। 'কাল' ক, চ, প-র। ৭। 'লাল' ক, চ, প-র।

টিকা

৪—१। "বাতাস" ইত্যাদি। (আমরা)
বাতাস ব্রিরা অর্থাৎ কোন্ দিক্ হইতে বার্
প্রবাহিত হইতেছে, তাহা ছির করিরা পুপু ফেলি;
(নতুবা নিজের পুপু নিজের গায়ে উড়িরা পড়িতে
পারে)। সেই প্রকার (পাদ-বিক্লেপ-স্থলের)
ছিরতা ব্রিয়া পা বাড়াই; (নতুবা পা থাদে পড়িয়া
ভর্ম হইতে পারে)। (সেইরূপ) মামুষ ব্রিয়া
অর্থাৎ স্কলন কি কুজন, তাহা ছির করিয়া কথা
বিলি; (নতুবা সেই কথার বিপদ্ ঘটতে পারে)।
(সেইরূপ) রসিক ব্রিয়া প্রণয় করি, (কেন না,
জারসিকের সঙ্গে প্রণয় করিলে সারা জীবন ক্লেশ
পাইতে হর)।

হু—>>। "মড়ক" ইত্যাদি। মড়ক অর্থাৎ
কীটাদি-জনিত জীবতা বুবিরা (গাছে চড়িতে
হইলে) ভাল অবলঘন করি; ছারা দেখিরা মাধা
রাধি; (খণের উপযুক্ত) গ্রাহক বুবিরা গুণ প্রকাশ
করি (নজুবা বেরার বনে সুক্তা ছড়ান হর); এবং
(ব্যধার) ব্যধী বুবিরা (তাঁহার নিকট) ব্যধা
প্রকাশ করি (নজুবা অরণ্যে রোবন করা হর)।

তথা নাগ।

বালার উপর জালা সই

কালার উপর জালা ।

কলকে বাই পথ না পাইং

বসন টানে কালা ॥

সরম কর্যা ভরম কর্যা

বসন দিলাম মাথে।

সকল স্থীর মাঝে কালা

ধরে আমার হাতে ॥

রস ক্রিতে জানে যদি

ভবে সে মনের স্থা
।

গোপত কথা নেকত করেং

এই সে বড় ছ্থ।
চলমল্যাকে চতুব গলি

হেটমুড়াকে জপু।
রস জানিলেণ রসিক বলি
নৈলে বলিণ ভেপু।
লোচন বলে আলো দিদি
ইংগ বল্লিণ কেনে।
কালার সমানণ রসিক নাই
এ তিন ভূবনে ১১৫৭॥১৫৫।
পাঠাক্সব

১। জালার ইত্যাদি হলে 'কি হৈল কি হৈল সই' ক, চ। ২। 'জলকে' ইত্যাদি হলে 'পথে যাইতে দেখা চইলে' ক, চ। ৩। 'সরম করা' ইত্যাদি হলে 'ভরম কৈরা সংম কৈরা' ক। ৪। 'রিস করিতে' ইত্যাদি হলে 'কালার সনে রসের কথার মনে পাইফু হুখ' ক, চ। ৫। 'হৈলে বলি' হলে 'না বুঝিলে' ক, চ। ৬। 'ইলা বল্লি' হলে 'না বুঝিলে' ক, চ। ৮। 'হলা বল্লি' হলে 'গালি দিলা' ক। ৯। 'কালার সমান' হলে 'কালা বই' ক।

টাকা

১০—১৪। "চলমল্যাকে" ইত্যানি। (মানরা) চলমল্যা অর্থাৎ ক্ষিপ্রকারী লোককে চতুর ও অবনত-মন্তক ব্যক্তিকে জগশীল বলিয়া থাকি; দেইরুণ (প্রেম)-রুগ জানিলে রুসিক বলিয়া থাকি; বি (প্রেম)-রুগ না জানে, তাহা হইলে তাহাকে তেপু অর্থাৎ শক্তকারী ব্যবহাত্ত্ব বিলয়া থাকি।

रबाड़ी ।ऽ

কেনে কৈপুঁ পিরিভিন্ন সাধ। পিরিভি-অঙ্কুর হৈতে বভ ছুখ পাইপুঁ চিডে শুনিলে পণিবে পরমান । এ । মুঞি যদি জানি ছুঁং এড তবে কেন হব রঙ না করিছুঁ হেন সব ৰাজ। কুলটা হইলুঁ কুলে ভূলিলুঁ পরের বোলে क्र १७ ७ दिया देवन माज । আনি চাঁৰ হাতে দিল যধন পিরিভি কৈল পুন ভাবে না পাই দেখিতে। কি করিতে কি না॰ করি কুরিয়া ঝুরিয়া মরি অবশেষে প্রাণ চাবে নিতে। যাহার হাদয়ে চিন পিরিভি আঁখর তিন কিবা ভার লাজ কুল ভয়। ষে করে পিরিভি-আশ কহে বিজ চণ্ডীদাস তার বুঝি এই দশা হয় ১১৫৮১৯:৬॥

পাঠাস্তর

১। ইছা পার পুথের ১৪। ৭৭ সংখ্যক পদ। ২-৩। কোনেতুকৈ, চ। ৪। বিংশাংশাং স্বা ক্রা, ঘ, চ।

পুনন্চ শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আফেপঃ।

थानने ।>

সৰি আর কি কহিতে ভবং। সব েয়াগিলু যাহার লাগিয়া (म ८क्टन वामध्य भव ॥ বে জন না জানে স্থান কুজন ভাহারে কৃথিব কি। অন্তর বাহির र्य क्रम कान्यत्र তাহারে পরাণ দি॥ কহিতে শুনিডে কামুর পিরিভি পরাণ কাটিয়া উঠে। করাত বেমন मध-व्शिक्त বাসিতে বাইতে বাটে।

1269[267]

পঠিক্র

১। ইহা পার পুথির ১৪ ৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর কি' ইত্যাদি ছলে 'কহিতে বাসিছে জর'
পার। ৩। 'বুরো' পার। ৪। 'অম্বর বাহির'
ছলে মনের বেদন' পার। ৫। 'আসিতে' ছলে
'আইতে' পার।

নিশ্বড়া।

স্বামি-তর্ম্বন গুহে গুরুত্বন या लागि ना मिन्रें कारन। এখন কি লাগি সে জন আমারে না চাহে নয়ান-কোণে। भड़े भविषे युवानू कारण। সাধিলে বাদ বিনি অপরাধে হুগত ভরিল লাজে। ধ্রু॥ সে সব পিৰ্বিছ আদর আরভি अवारे পড়িছে মনে। এমন কানিয়া 6প্রম-পরাভ । এখন যায় পরাণে 🛭 আগু অমুসরে সহজে অগলা না দানি কি হয় পাছে। সময় বুঝিতে छाननाम (गार्नर কে জন এমন আছে ॥১৬০॥৯৫৮॥ পাঠান্তর)। 'भवरव' क, हारा'क्र्स्' का

এবাগ।>

বাহার লাগিয়া কৈলুঁ কুলের লাঞ্চনা।
কত না সহিবে দেহে গুরুর গঞ্জনা।
বার লাগি ছাড়িলুঁ গৃহের যত স্থাং।
না জানি কি লাগি এবে সে জনা বিমুধ।
সঞ্জনি নিবেদলুঁ তারে।
কলম্ব রহল সব গোকুল নগরে। এই।

ভিলেকে সে ভেয়াগিলুঁ পতি খুর-ধার। শ্রবণে না শুনলুঁ গ্রহম-বিচার।

অবলা অখল-জাতি ভূলে পর বোলে।

অনেক সাধের দীপ নিভাইলং

माँ दो ४ ८ रदल ।

তুখের উপরে তুখ পরিজন-বোল। সতীর সমাজে দাঁড়াইতে হৈলুঁ তোর॥ জ্ঞানদাস করে ইথে কেমন উপায়। প্রোম-পরাভব তুখ সহনে° না যায়॥

॥५५४॥७१०॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পুথির ১৪।৮০ সংখ্যক পদ।

২। 'গৃহের বত স্থ' স্থলে 'সকল গৃহস্থ' প-র।

০। 'সন্ধনি নিবেদিলু' স্থলে 'আথো সই নিবেদিরে'
প-র। ৪। 'তনিলাম' প-র। ৫। 'নিতে' চ;
'নিভাল্য' প-র। ৬। 'সাঝ' চ; 'সাল্য' ক।

৭। 'হইলে' প-র।

यहरे ।)

ভালই আছিলুঁ আন-মনে।
প্রমাদ পড়িলং সেই খণে।
কেনে শুনাইলা তার গুণ।
উথলিল আগুনের খুন॥
নিশি দিশি যার গুণ গাই।
তারণ কেনে এতং নিঠুরাই॥
বার লাগি ভেরাগিলুঁ খর।
সে কেনে ভাবরে ভিন পর॥
যার লাগি কুলে দিলুঁ ছাই।
তারে কেনে দেখিতে না পাই॥
সতীর সমাজে হৈলুঁ মন্দ।
ভানদাস শুনি রহু খন্দ ॥১৬২॥৯৬০॥
পাঠাতঃর
১। ইহা পনা প্রির ১০৮১ সংখ্যক পদ।

२। 'পাড়িলে' প-র। ৩। 'দে' क, খ, च, চ। ৪। 'এডেক' ক, খ, च, চ।

Sain ı

বন্ধুর লাগিয়া সব ভেরাগিলুঁ লোকে অপয়শ কয়।

এ ধন আমার লয় **অন্য জন** ইহা কি পরাণে সয়॥

সই কত না রাখিব হিয়া।

আমার বন্ধুয়া আমান বাড়ী যায় আমারি আজিনা দিয়া॥

যে দিন দেখিব আপন নয়ানে আন জন সত্ৰেও কথা।

কেশ ছিঁজি পেলিং বেশ দূর করি ভালিব আপন মাথা ■

বন্ধুর হিয়া এমন করিলে

না জানি সে জন কে।

আমার পরাণ করিছে যেমন এমনি° হউক সে॥

জ্ঞানদাস কৰে শুনহ° স্থন্দরি মনে না ভাবিহ আন।

তুহঁ সে খ্যামের সরবস ধন খ্যাম সে ভোহারি প্রাণ 🖁

iceaioeci

পাঠান্তর

>। 'আমার'ক,চ,। ২। 'কেণি' ক,চ। ৩। 'এমন' ক,চ। ৪। 'গুন হে' ক।

थाननी ।

এ পথি হান সে কুলবতি রামা। অনেক বতন করি প্রোম হাণারপূঁ বেক্ত কয়ল ওই খ্যামা। প্রশা

বিহি কৈল কিবা বিভিগ আছিলু মালভি ভৈ গেল কেডকি ফুলেই। ভ্ৰমর নাছি আওড কণ্টক লাগি তুরে বহি ছত্মন কুরে ॥ যব ছুহু দরশন দৈবে মিলায়ল কোন না কহে কত বোল। অন্তবে বৈদগধি-মাণিক ছাপায়ল দ্ৰন্দ্ৰ প্ৰাপ্ত চোৰ। দখিণ নয়ন করি রঞ্চব কিয়ে৬ ছরি বাম নয়ন করি আধা। গোপত পিরিতি খানি ८कान देवे।यून मयु मत्न लागल थाना । কাঁদি গোঙায়ব কান্দিব রে কভ কাহারে করিব বিশোয়াস। धिक त्रष्ट्रभ की वरन জ্ঞানদাস কছ যো করে পর-পতিআশণ ॥ 126818651

পঠিক্তির

১। 'কিবারিভি' ছলে 'বিপরীভি' ক; 'বিপ-রিভ' চ। ২। 'ফুলে' ক, খ। ৩। 'দুরে' ক, খ। ৪। 'ঝুরে' ক, খ। ৫। 'বব ছহু' ছলে 'ববহু' খ। ৬। 'কি' খ। ৭। 'কাফু' ক, খ। ৮। 'ধারা' খ। ৯। 'রহ' ক, চ। ১•। 'প্রভিষাশ' ক।

ভিরোধা ধানশী।>

প্রেমক গুণং কছই সব কোই।
বা প্রেমে কুলবতি কুলটা হোই॥
হাম যদি জানিয়ে পিরিতি তুরস্ত।
তব কিয়ে বায়ব পাপক অস্ত॥
তব সব বিষসম লাগয়ে মোই।
হরি হরি পিরিতি কর্ইণ জনি কোই॥

বিভাপতি কহ শুন বরনারি।
পানি পিয়ে পিছে॰ জাতি বিচারি॥
॥১৬৫॥৯৬৩॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮৩ সংখ্যক পদ।
২। 'গুণ' ক, খ, চ, প-র। ৩। 'কহব' ক,
খ, ঘ, চ। ৪। 'বো' ইডাাদি ছলে 'বাহে কুলবভি
জন' প-র। ৫। 'বিষমর' ক, খ; 'বিষম' প-র।
৬। 'না করে' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'পাছে' ক।

সিক্সড়া ।১

পুরুখ-রতন হেরি মন ভেল ভোর।
তিল-আধা স্থ লাগি তুখ নাহি ওর ॥
বড় অভিলাবে ভজিলুঁ বর নাহ।
দৈবে বিমুখ ভেল কি কহব কাহ ॥
দরশন তুলহ তুলহ নব নেহ।
বিরহ-বিকল মন জিবন সম্দেহ ॥
অপরুপ রূপ মধুর রস-লালা।
সকল নাগরিগণ-ক্ষণক শিলা ॥
অস্তিত কাজ সহজে মরু ভেলা।
সোজরি সো ভুমু নব বোবন গেলা॥
মরমক দুখ কহিতে হয় লাজ।
দারুণ দৈব কয়ল কোন কাজ॥
রসিক-শিরোমণি নাগর কান।
রস স্ভিত কবিরঞ্জন ভাণ॥১৬৬১৯৬৪॥

পাঠাস্তব

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৯৬ ও প-র পুথির ১৪।৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'এক' প-র-সা, প-র। ৩। 'নাহি' ক। ৪। 'সকল' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা—'নাগরি নাগর ঋণ নিকবণ শিলা'। ৫। 'নব' শব্দ ক, খ পুথিতে নাই। ৬। 'ত্থ' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ৭। 'ইক্তি' ক; 'সদীত' চ; 'প্রসংস্কিত' প-র। छवा जात ।>

কভ গুরু-গঞ্চন ছ্রজন-বোল।
মনে কছুং না গণল ও° বসে ভোলা।
কুলজা-রাভ ছোড়লুঁ যত্ত লাগি।
সো অব বিছুংল হামা'র অভাগি॥
সোজর সোজর সগি কহবি মুবারি।
অপুরুষ পরিহরে কি ছুখং বিচারি ১৯৪॥
বো পুন সহচরি হোয় মতিমান।
করয়ে পিশুন-বচনে অংধান॥
নারি অবলা হাম কি বোলব মান।
ভুছুঁ রসনান্দ-গুণক নিধানা॥
মধুর বচন কহি কালুকে বুঝাই।
এই কর দোখ রোখ অবলাই॥
ভুছুঁ বর চহুর হাম কিয়ে জান।
ভুগুয়ে বিভাপতি ইহ রস গান॥

126912561

পাঠান্তর

১। ইহা প-র প্থির ১৪।৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'কিছ্' ক; 'কছ্' প-র। ৩। 'পিরা' প-র।
৪। 'ডোর' থ। ৫। 'কিছ্থ' হলে 'ছ্থ' ক;
'রূথ' থ, খ, চ। সাহিত্য-পরিষদের সংস্করণে 'দোথ'
পাঠ পুথীত হইরাছে; কিন্ত ঐ পাঠ কোন হত্তলিখিত পুথিতে ছুট হইল না। প্রপরিনার দোর
ক্ষমা করাই অপুক্ষের কর্ত্তব্য; স্মৃত্তব্যং 'মুপ্কথ
পরিহত্তে দোথ বিচারি' এইরপ বাক্য নারিকার
মুখে ডেমন সক্ষত বোধ হর না। ৬। 'রসনানন্দ'
ইত্যাকি হলে 'রস আনন স্ব অপ্থান' প-র। ৭।
'পিরাকে' প-র।

ीका

e— । "নোঙরি" ইত্যাদি। হে সণি । জুনি
শ্বরণ করিবা শ্রীকৃষ্ণকে কহিবে— জুগুক্তর কি ছঃও ভাবিবা (প্রণয়িনীকে) পরিভ্যাপ করে ? (প্রথাৎ ব্যক্তি প্রণাহিনীয় রূপ-ওপ না থাকার, ভাবার সহিভ স্থিতিৰ স্থ-জনক না হইরা ছ্যুথের কারণ হইরা থাকে, তথাপি শ্রেষ্ঠ নারকের এরপ ধর্ম নছে বে, সেই ছঃশ মনে করিরা পদান্রিতা নারিকাকে পরি-ভাগে করেন ়)

৭—৮। "বো" ইত্যাদি। কে সহচরি। বে বাজি বুজিমান্ হন, (তিনি) খলের বাজ্যে অবধান করেন অধাথ ঐ থাকা সভ্যা, কি মিপ্যা, ভাষা বিচার করিয়া দেখেন। (পুতরাং খল বাজি আঘার কোন গুণাম করিয়া খাকেলে, সেজ্যাও আঘি জবিচারে পরিভাগো নহি)।

৯--->

- শনাধি হত্যাদি। আমি অবলা নারী
আবি কি বলৈব

- থে নামার প্রাণেশ্বর

- ভূমি রদনাব
আনন্দ-জনক গুণের আকর। (অর্থাং ভূমি নিজ
শুণে আমার দক্ল অপ্রাধ মার্জনা করিবে)।

১১—১২। "মধুব" ইতাদি। (ছে সংখ!)
তুমি মধুব বাগ বাগর। একঞ্চকে বুঝাইনে বে, তুমি
(জ্ঞীরাধাব) দোব ও তোমার কোপের সঙ্গতিঅসঙ্গতিব বিচার করিয়া, (বদি কর্ত্তব্য হয়), এইরূপ (আচরণ) কর।

यानने ।>

গুরুত্বন পরিজন কেং নাহি গঞ্জে ८क॰ नाहि कद्राय विभान। আপন অপ্যণ ষণ করি মানলু श्रमा अंदिनु वान ॥ সৰি হে কামুকে কহবি সন্থান। এড দিন প্রেম গোণত করি রাধলু অব ভেল মুঝে পরমান । গ্রা ় 🖘 ণ লাগি প্রাণ তৃণহঁ করি মানপুঁ কি করব কুলবভি-ছাভি। কহ কবিশেশর অমুভাবে জানপু পিরিভিক বৈছন্দ ভাভি।

120012001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ১৪৮৬ সংখ্যক পদ।
২-০। 'কো'প-র। ৪। 'অব্যশ'থ, ঘ। ৫।
'ভাবই'থ, ঘ, চ।৬। 'অব'ইত্যাদি হলে 'অব্হ'
ডেল'থ, ঘ। ৭। 'তেখন' প-র। ৮। 'ঐছন'
প-র।

সুহই।১

কোতুকে ছত্ত কুল-কমল তেয়াগলুঁ যো পদ-পক্ত আশ। मीन जमू नागन পাছক মীন না গুণল মরণ-তরাস ॥ जबनी निक्त्रन-ऋषग्र मूताति। অব ঘর যাইতে ঠাম না পাইয়ে পরিজন দেওই গারি॥ গগনক চান্দ পাণিতলে বারলুঁ সাগরে নগর-বেভার। অমিয়া-ঘট বলি হাথ পদারলুঁ পায়লু গরলক ধার ॥১৬৯॥৯৬৭॥

वैद्यात ।>

र्श्य रहेटल भए-मरबगात भूतनार्थ डेकुल रहेन ।

পাঠান্তর

>। এই পদটি ক, ৰ ও চ পুৰিতে নাই; ৰ

সঞ্চনিং কাসুকে কহবি বুঝায়।
ব্যোপিয়া ওপেন-বিজঃ অঙ্কুরে সোড়লিও
বাচ্বও কোন উপায়ও ॥
তৈল-বিন্দু বৈছে পানি পসারলধ
তৈছন ভুয়া অমুরাগে।
সিকভা জল বৈছে খণহি শুখারল
থীছন ভোহারি সোহাগে ॥
কুল-কামিনি ছিলুঁ কুলটা ভৈ গেলুঁও
ভাকর বচন গোভাইওও।

আপন করে হাম মুড় মুড়ায়লুঁ ১১
কান্সসেই প্রেম বাঢ়াই ১২ ॥

চোর-রমণি জনু ১৯ মনে মনে রোয়ই
অথরে বদন ছাপাই ০ ।

দৌপক লোভে শনভ জনু ধায়ল ১৯
বো ফল ভুজইতে চাই ॥
ভণয়ে বিভাপতি ইহ কলিযুগ-রিভি
চিন্তা না কর কোই ।
আপন করম-দোষ আপহি ভুঞ্জই
বো জন পরবশ হোই ১১৭০॥৯৬৮॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪/৮৮ ও ৪০/৯১ দংখ্যক পদ। প-র পুথিতে নিয়লিথিত অভিরিক্ত কলিবারা এই পদটি আরম্ভ করা হইয়াছে; বথা,—

অগোর চন্দন তম্ অম্পেশন
কো কহে শীতল চন্দা।
পিশ্প বিনে সোপুন আনল বরিধারে
বিপদে চিনিয়ে ভাল মন্দা॥

২। 'গুন সজনি' প-র। ৩. 'রোনি' প-র। ৪।
'প্রেমের বাজ' ক, চ; 'প্রেমবাজ' থ, প-র। ৫।
'ভাললি' থ। ৬। 'বাচব' ক, প-র; 'বাড়ব'
ঘ। ৭। 'বাঢ়ব' ইত্যাদি হলে 'এ অতি কোন
বড়াই' প-র। ৮। 'তৈলবিন্দু' ইত্যাদি কলিটি
প-র পুথিতে নাই। ৯। 'কুলকামিনি' ইত্যাদি
হলে প-র পুথির পাঠ বথা—

'কুলবভি হোই কুলটা-পদ পাওপু'

১০। 'তাকর' ইত্যাদি স্থলে 'কাম্থ সঞ্জে কেহ
বাড়াই' প-র। ১১। 'আপন করে' ইত্যাদি
পংক্তিবর প-র পুথিতে নাই। ১২। 'কাম্থক'
ব, ব। ১৩। 'বড়াই' ব; 'বাড়াই' চ। ১৪।
'টোর-রমণি কম্ম' স্থলে 'টোরজন-প্রিরা বৈসে' প-র।
১৫। 'বাণাই' প-র। ১৬। 'ধাওই' প-র।
প-র পুথির ৪০।৯১ সংখ্যক পদে 'বীপক লোভে

ইত্যাদি পংক্তি ছয়টি নাই ; উহার হুলে নিয়লিখিত পংক্তিখালি দৃষ্ট হয় ; যথা,——

'এখন তখন করি দিবদ গোঙায়লুঁ

দিবদ দিবদ করি মাদ ।

মাদ মাদ করি বরিখ গোঙায়লুঁ

হোড়লুঁ কিবনক আগ ॥

বরিখ বরিখ করি জনম গোঙায়লুঁ

জরা জারত তমু পাশে ।

হিম গরল জমু হিম গিরি বরিখরে

কি করবি মাধবি-মাদে॥'

গাদার।১

মনে ছিল না টুট্ব নেহা।
হুজনক পিরিতি প্রাণকং রেহা।
তাহে ভেল অতি বিপরীত।
না জানিয়ে ঐছন দৈব-গঠাত ।
এ সাথ কহবি বন্ধুরে কর যোড়ে।
কী ফল ওপ্রেমক অকুর ধমাড়ি।
যদি কহ তুর্ত অগেয়ানা।
হাম সোঁপল হিয় নিজ করি জানি।
বিভাপতি কহে লাগল ধন্দা।
যাকর পিরিতি সো জন অকা॥

পঠিক্তির

1292112531

১। ইকা প-র প্থির ১৪৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পাবাণ সম' ক। ৩। 'দৈবগঠিত' ক, ए; 'দৈব করিত' প-র। ৪। 'কি ফল' ক, খ। ৫। 'অ'কুর' খ। ৩। 'ড্রি'ক।

वानने ।>

পৰিলে পিয়া মোর মুখে মুখে থেবলও ভিল এক না ছোড়ল অন্স। অপক্লপ প্রেম- পাশেও তমু গাঁথল অব ভেলল মোর সক্ষঃ সঙ্গিনি হাম ধ্রিয়ব কপি লাগি।

যা বিনে তিল এক রহই না পারিয়ে

সো ভেল পর-অসুরাগী ॥ গ্রু ॥

অঙ্গুলক আঙ্গুডি সো ভেল বাহুটি

হার ভেল অতি ভার।

মনমণ বাণহি সমস্তর জর জর

সহই না পারিয়ে আর ॥১৭২॥১৭০॥
পাঠান্কর

১। ইছাপ-র পুথির ১3।৯০ সংখ্যক পদ।
২। 'মুখ'ক, প-র। ৩। 'হেরি রহে'.প-র।
৪। 'আবশে'ক; 'ফাঁদে' চ। ৫। 'স্থি'ক,
খ,চ। ৬। 'অস্প্রি'প-র। ৭। 'অস্থ'প-র।

পুনশ্চ সখ্যাক্তিঃ তথা মিলনম্।

শঠমঞ্জন।
১

এ সথি কাহে করসি অনুযোগে।
কানুসে অবহি করবি প্রেম ভোগে।
কোনে লায়ব সথি তুহুঁক পিয়া।
হাম চললুঁ তহিঁ থির কর হিয়া।
কানু সমিপে যাই মিলল সবিং।
প্রেমক রাত কহল সব চ্থি ।
ভান তহিঁ কানু মিলল ধনি-পাশ।
বিভাপতি কহে অধিক উলাস ৪১৭৩৯৭১।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৯৫ সংথ্যক পদ।
২। 'কোলে' ক, খ। ৩। 'কোনে' ইত্যাদি
ছলে প-র পুথির পাঠ যথা—'কোন লওব ধনি
ভোহারি পিনা'! ৪। 'তাই' ক। ৫। 'কার্
সমিপে' ইত্যাদি ছলে ক, খ, ঘ, চ পৃথির পাঠ বর্ধা,—
'এত কহি কান্তু পালে মিনল সোই স্থী।'
'এত কহি হৈত্যাদি পাঠ ছলোভদ-হুই; বোধ হর,
'কহি কান্তু পালে' ইত্যাদি প্রকৃত পাঠ ছিল। ৬।

'ছ্ৰি' পাঠ সকল পুথিতেই দৃষ্ট হয়; স্থতরাং 'দৃৰি' বা 'দোৰি' পাঠ সমীচীন হইলেও প্রমাণাভাবে উহা গুহীত হইল না।

বিহগড়া।

নব অনুরাগে মিলল ছহ ঁ কুঞে।
আবেশে কহয়ে ধনি রস পরিপুঞ্জে।
বন্ধু হে কি বলিব ভোরে।
ভোমা বিনে দেখোঁ মুঞি সব লান্ধিয়ারে ॥ধা॥
পাইয়াছি ভোমারে বন্ধু না ছাড়িব আর।
যে বলুং সে বলুং মোরে লোকে ছ্রাচার॥
এক ভিল ভোমা বন্ধু না দেখিলে মরি।
ছাড়িয়া কেমনে যাব পরাধান নারী॥
হিয়ার মাঝাবে থোব বসনে ঝাঁপিয়া।
প্রেমদাস কহে রাই দড়ং কর হিয়া॥

115981129211

ইভি আক্ষেপামুরাগঃ সম্পূর্ণ:। ইভি একাদশপল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। 'দেৰো' ক, ঘ। ২-৩। 'বলু' চ। ৪। 'দঢ়' চ।

> ততঃ পুনশ্চ অভিসারামুরাগঃ রাত্রো যথা।

> > ত্রীগোরচন্দ্র:।

यहरे ।>

চল দেখি গিয়া গোরা অতি মনোহরে। অপরূপ রূপ গোরা নদীয়া নগরে॥ চল চল ক্ষিল কাঞ্চন জিনি অক। কে দেখি ধৈরজ ধরে নয়ান-ভরল॥ আজামুলবিত ভুজ কনকের স্তম্ভ।
অরুণ বসন কটি বিপুল নিতম্ব॥
মালতীর মালা গলে আপাদ দোলনি।
বাস্থ কহে চল দিব পরাণ নিছনি॥১॥৯৭৩॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুৰির ১৪২৩ সংখ্যক পদ।

ভণা বাগ ৷১

চলু নব নাগরি-মালা।
গোরা-রুপ হিয়ে উজিয়ালাং॥
গুরুজন-ভয় নাহি মান।
হেরইতে কয়ল পয়ান॥
অপরুপ স্বধুনি-তায়।
বহতহি মলয়-সমার॥
সকল ভকতগণ মাঝ।
নাচত গোরা বিজরাজ
হেরি সভে চমকিত ভেল।
নয়ন নিমিষ হরি গেলে ॥২॥৯৭৪॥
পাঠাধর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'উজিয়ারা' খ, প-র-সা। ৩। 'লেল' প-র-সা।

তত্র শ্রীমত্যা যথা।

शननी ।>

কানু-অনুরাগে হাদয় ভেল কাডর

রহই না পারই গেহে^ই। গুরু-তুরুঞ্জন-ভুর কছু নাছি মানরে

চির° নাহি সম্বরু দেছে।

দেখ দেখ নবং অমুরাগক রাভ ।

খন আজিয়ার ভুলগ-ভয় কত শভ তৃণ্**ত্না° মানয়ে ভীত ॥ এ**ই ॥ স্থিগণ সঞ্চ

তেঞ্চি চলু একসরিশ

হেরি সহচরিগণ যায়।

অদভুত প্রেম-

তরক্ষে তরঞ্চিত

তবছ সঙ্গ নহি পায়॥

চললি কলাবতি

অতিশয় রস-ভরে

পন্থ বিপথ নাহি মান।

জ্ঞানদাস কহ

এহ অপরুপ নহ

মনহি উজোরল কান ॥৩॥৯৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বেহ' ক, প-র-সা। ৩। 'চীর' ক, ধ,
প-র-সা। ৪। 'বেহ' ক, প-র-সা। ৫। 'নব'
শব্দ ক, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'অফ্রাগ রীত' ক, ধ। ৭। 'তৃণ্চ না' ফ্লে তৃণ্চ্'
ক, 'তৃণ্চ্' না' ধ; 'তৃণ্চ্' প-র সা। ৮। 'স্থিপ্রণ' ইত্যাদি ফ্লে ক পুথির পাঠ ষ্ণা,—'স্থীগণ
ভেজি চনু একশরী'।

(क्षांत्र १)

নব অথুরাগিণি রাধা।
কছু নাহি মানয়ে বাধা।
একলি কয়লি পয়ান।
পশ্ব বিপথ নাহি মান॥
তেজল মণিময় হার।
উচ কুচ মানয়ে ভার॥
কর সঞ্জে কন্ধণ মুদরি।
পশ্বহিঁ তেজলি সগরিং॥
মণিময় মঞ্জিরং পায়।
হরহিঁ ভেজি চলি যায়॥
যামিনি ঘন-আজিয়ার।
মনমথ হিয়েং উজিয়ার॥
বিভিনি বিথারিত বাট।
বেশাক আয়ুণে কাট॥

বিভাপতি মতি জান। ঐছে না হেরিয়ে আন ॥৪॥৯৭ং। পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'সারি' ধ। ত। 'মঞ্জীর' ক, খ। ৪। 'দ্রহিঁ'ক, ধ। ৫। 'হেরি'ক, প-র-সা।

তত্ত্র সঙ্গেতকুঞ্জে শ্রীকৃষ্ণোৎকণ্ঠা। স্থানী।>

রয়নিং ছোটি অভি ভারু রমণী।
কতি খনে আওব কুঞ্জর-গমনী॥
ভীমণ ভুজজমণ সরণাণ।
কত সকট তাঙেও কোমল-চরণাণ॥
বিহি পায়ে করেঁ। পরিহার।
অবিবিনেং সুন্দরি করু অভিসার॥ধ্রু॥
গগনে সঘন মহি পক্ষা।
বিঘিনি বিধারিত>ও উপজয়ে শক্ষা॥
দশ দিশ ঘন-আজিয়ার
১১।
চলইতে খলই লখই নাহি পার
১২॥
সব জন
১৭ পালটি ভুললি
১০।
আওত মানবি ভাল ত
১০ লোলি॥
বিভাপতি কবি কহই।
৫েশমহি কুলবতি
১০ পরাভব সহই॥৫॥
১৭৭।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪২৭ ও প-র প্রির ১৫।২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রাভি' প-র; 'বরাবহি' প-র-সা। ৩। 'রীম' ধ; 'ভিত' প-র। ৪। 'ফুললিম' ধ, ঘ। ৫। 'লবণা' ধ, চ। ৬। 'কভ' ইত্যাদি ফুলে 'বাটহি শক্ষট' প-র। ৭। 'বচনা' ধ। ৮। 'করি' ক, প-র-সা। ৯। 'আবিঘনে' ক, চ। ১০। 'বিধারভ' ক। ১১। 'আবিমান' ক, ধ, দ, চ, প-র। ১২। 'পার' ফুলে 'পারা' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ১০। 'সব জনে' ছলে
'সব জন' প-র-সা; 'সজনি' সা-প ২০১ গুথি। ১৪।
'সব জনি' ইত্যাদি পংক্তিছর প-র পুথিতে নাই।
১৪। 'জাওত মানবি ভানত' হলে 'আওত মানবি
ভাসত' প-র-সা; 'আওত য়ান বিতানত' সা-প
২০১ পুথি। ১৬। 'কুলব্তি' হলে 'কুলব্ধু' ধ, ঘ।

টাকা

১১--১২। "সৰ জনি" ইত্যাদি। এই পংক্তি ছুইটির অর্থ লইয়া বিশেষ গোলযোগ আছে; বিভা-পতির পদাবলীর সম্পাদকগণ নানা জনে নানার্রপ অর্থ করিয়াছেন; কিন্তু নিরপেক্ষ ভাবে বিচার করিলে সেই সকল অথের কোনটিই স্মীচীন বলিয়া বোধ হয় না। আমাদিগের বিখাস যে, মুদ্রিত পাঠে লিপিকর-প্রমাদ আছে। প্রাচান প্থির 'ণ' ও 'ন' অক্ষরের প্রভেদ অতি সামান্ত; অনভিজ্ঞ ণিপি-করের হাতে পড়িয়া সেই প্রভেদ লুপ্ত হওয়া ও 'ভাল ত' পাঠ 'ভানত' পাঠে পরিণত হওয়া কিছুই বিচিত্র নহে। 'ভাল ড' পাঠ স্বীকার করিলে এরূপ অর্থ হইবে বে,—'প্রীরাধা (ভয় হেতু) প্রত্যাবৃত্ত হইয়া (সঙ্কেত-কুঞ্জে আমার সোৎকণ্ঠ-ভাবে অবস্থান ইত্যাদি) সকল বিষয় পাছে ভূলিয়া গেল! (এরূপ एक्ति) व्यातित्व मत्न कतिव, त्र विवक्षण ठक्षना वर्षार উৎकर्धा-भागिनी वटि।'

সা-প ২০১ সংখ্যক পুথির পাঠ গ্রহণ করিলেও প্রায় এইরূপ অর্থ ই ছইবে। 'তানত' বা 'বিভানত' শক্ষের অর্থ 'বিভার করে' বা 'প্রকাশ করে'; রতরাং 'আঞ্চত রান বিভানত লোলি' পাঠের 'য়ান' শক্ষি স্পষ্টতঃ 'আন' কিংবা 'জান' শক্ষের হলে লিপিকর-প্রমাদ গণ্য করিলে বথাক্রমে অর্থ হইবে—(শ্রীয়াধা) আসিলে অপূর্ব লোলতা প্রকাশ করিবে, (ভবিষ্যুৎ-সামীপ্যে বর্জমান প্রয়োগ) কিংবা 'শ্রীয়াধা আসিলে আনিব (সে) লোলতা প্রকাশ করিতেছে।' 'আওত আনবি তানত লোলি' পাঠ করনা করিলেও ঠিক এইরূপ অর্থ ই ছইবে। এই সকল পাঠের মধ্যে আমরা 'আওত মানবি

ভাগ ত শোলি।' পাঠই সমাচীন বলিয়া বিবেচনা করি।

শ্রীরোগ 1১

একলি কুঞ্জহি কান।
পথ কেরি আকুল প্রাণ ॥
মনমপে জর জর ভেল।
তৈখনে কুন্দরি গেল॥
কেরই নাগর কান।
কোরত্ব অমিয়া-সিনান॥
নব অমুরাগিণি নারি।
কি কহব কহই না প্রারি॥
নাহ-দরশে ভেল ভের।
কো কহ আরহি-ভর॥
সহচরিগণ পিছে গেল।
হেরি ছুকু আনন্দ ভেল॥
পূরল মন-অভিলাষ।

হ:ঠাস্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দরশনে'ক,চ।

याननी ।>

মাধব কি কহব দৈব-বিপাক²।
পথ-আগমন কথা কত না কহিব হে°
যদি হয় মুখ লাখে লাখ ॥ গ্রু ॥
মান্দির তেজি যব পদ চারি॰ আওলুঁ
নিশি হেরি কম্পিত অফ ।
তিমির তুরন্ত পথ হেরই না পারিয়েণ
পদ্যুগে বেড্ল ভুজক ॥
একে কুল-কামিনি ভাহে কুল-বামিনি
খোর গহন অভি দূর।

আর তাহে জলধর বরিখয়ে বর বর

হাম যাওব কোন পূর ॥

একে পদ-পঙ্কজ পদে বিভূষিত

কণ্টকে জরজর ভেল।
ভূয়া দরশন-আশে কছু নাহি জানলুঁ কির ছুখ অব ১০ ছুর গেল॥
ভোহারি মুরলি যব প্রাবণে প্রবেশল
ভোভূলুঁ গৃহ-সুখ আশ।
পাস্থক ছুখ১১ তৃণ- ছুঁ করি না গণলুঁ ১২

কহন্ডহি গোবিন্দ দাস ॥৭॥৯৭৯॥
গাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪২৯ ও প-র পুথির ১৫।২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'দৈবক পাক' প-র-সা। ৩। 'পথ' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ,—'পথে বত অন্তর্ম তাহা বা কহিব কত'। ৪। 'ছই' প-র। ৫। 'হেরই' ইত্যাদি স্থলে 'লথই না পারই' প-র। ৬। 'থরতর' প-র। ৭। 'রহব' প-র-সা, প-র। ৮। 'পুর' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৯। 'ভুয়া' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ—'ভুয়া মুখ দরশনে সব স্থখ পাওব।' ১০। 'দব' প-র। ১১। 'ছথ' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১২। 'পছক' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ—'বৈছনে আওলুঁ তৈছনে দেপিলুঁ'।

ততঃ সম্ভোগঃ।

বিহাগড়া।

কিবা সে দোঁহার রূপ।

কিশোর-কিশোরী- রূপ গসারই

সরস রসের কৃপ ॥ গ্রুণ।
অরুণ-কিরণেং মলিন ইন্দু
কুমুদ মুদিত লাজে।
চাল্দের ভরমে চকোর মাত্রল

रेन्दीवन राटन माटन ॥

চান্দের উপরে চান্দ পেখলু हेन्द्रूत्र छेशदत भनी। প্রেমের হ্যাবেশে পিয়ে রস-হুধা খঞ্জন-যুগল পশি॥ যমুনা-ভরক্তে व्यक्तग् उत्रा তারার পদার তথা। অরুণ ঝাঁপিয়া তিমির রহল কিয়ে অদভুত কথা। হ্মার্য-শিখর কনক-লতায় ঘনের জনম তায়। মুকুতা ফলিল ঘনের লাংায় কেবা পরতীত যায়॥ त्रदमत्र देवञ्चव সে রাধামাধব-কহিতে শক্তি কায়। রসের পাথারে না জ্ঞানে সাঁতার ডুবল শেখর রায় ॥৮॥৯৮०।

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরণ'ক। ৩। 'ইন্দু'থ, ব, প-র-সা। ৪। 'উদয়ে'ক। ৫। 'রস'ক।

টাকা

৪—१। "অরুণ" ইত্যাদি। অরুণ অর্থাৎ
প্রীরাধার ললাটাইত সিন্দুর-বিন্দুর জ্যোতির বারা
ইন্দু অর্থাৎ তৎসংলয় প্রীক্তমের ললাট-হিত চন্দনবিন্দু নিপ্রভ হইল। (ইন্দুর নিপ্রভাতা দর্শনে)
কুম্দ অর্থাৎ প্রীরাধার নেত্র লজার মুদিত
হইল। (এ হলে অতিশরোক্তি অলমারের বারা
প্রীরাধার সম্ভোগ-হর্থ-জনিত নেত্র-নিমীলন ব্যঞ্জি
হইতেছে)। চকোর অর্থাৎ প্রীরাধার মুণ্চজ্রের
ক্থাপারী প্রীকৃষ্ণের বদন চক্ত-প্রমে অর্থাৎ
প্রীরাধার বদনের সহিত চক্তের সামৃত্র দর্শনে
ক্রাভ হইলা (অধ্য-স্থাপানে) মন্ত হইলঃ

'(ইছা দেখিয়া) ইন্দীবর অর্থাৎ শ্রীরাধার নয়ন মধ্যে । থাকিয়া (কৌতুক হেজু) ছাসিতে লাগিল।

১২-১৫। "ব্যুনা" ইত্যাদি। ব্যুনা-তরকে

অগং স্থনীল শ্রীক্লফের দেহের উপরে শ্রীরাধার দোহল্যমান হারের মধ্য-মণিক্লপ হর্যের উদয় হইল এবং দেই স্থলে হারের মুক্তা-রাজি-ক্লপ ভারাগণের বিস্তার হইল। (শ্রীরাধার উন্মুক্ত বেশ-পাশ-ক্লপ) ভিমির (আন্দোলন-বশতঃ) তাঁহার (হার-মধ্য-মণি-ক্লপ) স্থাকে আচ্ছাদন করিল—কিক্লপ অন্তত কথা! ১৬—১২। "কনক-লভায়" ইভ্যাদি। (শ্রীরাধার ক্লপালের-ভাহাতে (কেশ-পাশ-ক্লপ) মেঘের উদ্ভব; দেই মেদ্-লভায় অর্থাং বিকাপ কেশ-কলাপে (শিরো-ভূষণ) মুক্তা-জালের উৎপত্তি হইল; (এইক্লপ অন্ত কথা)কে বিখাস পাইবে?

(क्षांत्र 1)

ভূমি বৃন্দাবন রতি র**ণ-রঙ্গ** রণ-বাজন পিকু-রাব। চ**ঢ়লং মনোর**থে দোসর মনমথে পরিমলে অলিকুল ধাব॥ দেখু রাধামাধ্ব মেলি। চরিত নাহি সম্ঝিয়ে ছুত্কর চপল किर्म कन्द्र किर्म (किना अम কবরি কুচ-কঞ্ক⁸ জরজর চন্দন বিপুল পুলক ফুল-বাণ। তুত্ত মণি-কিঙ্কিণি ছ্ছ নৃপুর-ধনি কঙ্কণ-বলয়া-নিসান॥ হহু ভুজ-পাশ পরি তুহুঁজন বন্ধন অধর-তথা করু পান। চিকুর শিখি-চন্দ্রক আকুল বসন (शाविक्समात्र द्रत शान ॥२॥२४)।

পাঠান্তর

১। ইহাপার পৃথির ১২।০ সংখ্যক পদ। ২।
'গ্রহ' চঢ়ল' ক, গ। ৩। 'দেখ স্থি' প-র। ৪।
'কবরি কচ-কঞ্ক' স্থেল 'কর কুচকঞ্ক' ক; 'কবচহি বঞ্ক' ধ, ঘ। ৫। 'চিকুর শিধি-চক্ষক' স্থেল 'রতনময় অভরং' প-র।

> নব অমুরাগী নব অমুরাগ। মীলল চুকুঁ তমু গলে গলে লাগ॥ ইত্যাদি পূর্বেবাক্তপদানি গেয়ানি।

ভধারাপ।
রাধামধিব রতি-রণ বিরমে ।
বৈঠল মাধব রাধা বামে ॥
হেরি সহচরি কোই চামর বিজই ।
বয়ান পাখালি বসনে কোই মোছই ॥
কোই সখি দেয়ল তামুল বয়নে ।
আনন্দে হেরই চরচর নয়নে ॥
কোই সখি দেয়ত গন্ধ হ্বাসে ।
চরণ সেবন করু বলরাম দাসে ॥১০॥৯৮২॥
ইতি অভিসারাকুরাগান্তে মিলনম্ ।
ইতি ঘদশপল্লবঃ ।

ত্যথ অভিসারোৎকণ্ঠা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মলার ৷১

বিরলে বসিয়া গোরা রায়।
আপাদ মস্তক পুলকে পুরিভ
পুলকে পুরিভ
প্রেম-ধারা বহি যায়॥ গ্রুছ॥
সহচরগণে ক্রহুতে নারিয়ে ঘরে।
নদ্দের নন্দন পাই দরশন

তবেং **সে পরাণ ধরে**॥

কস্তবী চন্দন অকে বিলেপন गत्न नीलम्बि-माना। **এ সাজ সা**ঞ্চায়েণ ত্তপের ছটায়ে ভুবন করিলে আলা॥ (मिथ्या भीत ভাবিয়া অন্তর বসনে ঝাঁপয়ে তমু। চাঁচর চিকুর বেড়িং নানা ফুল कलरम विक्रो अनू ॥ গোরাঙ্গ স্থন্দর সঙ্গে সংচর ञ्जधूनो-ोटज ५८० । ভাবাবেশং মন আকুল বচন এ দাস মোহন বলে ৷ ১১৯৮৩৷ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'সবে' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'সাজ্যে' ক, **৭, চ,** প-র-সা। ৪। 'বেড়ি' ক। ৫। 'ভাবা-বেশে ক, প-র-সা।

अवशक्ती।>

গগনে অব ঘন

মেহ দারুণ স্বনে দামিনি ঝলকই। কুলিশ-পাতন-भवन यन यन প্রন খরতর বলগই ॥ সজনি আজু গুরদিন ভেলং। হ্মারি কাস্ত নি-তান্ত আগুসরি मह्हज-कूछिरि (भन । धः। **जत्र क्ल**थ्र ব্রিখে ঝর ঝর গরজে ধন ঘন ঘোর। খাম নাগর এकिन देक्ड्र পম্ব হেরই মোর । সঙ্গি মসু তমু অবশ ভেল জমু অধির ধর্ণর কাঁপ।

এ মঝু গুরুজন-नग्रन मात्रन ঘোর ভিমিরহি ঝাঁপ॥ ভূরিতে চল অব কিয়ে বিচারহ জিবনত মরু আগুসার। রায় শেখর*-বচনে অভিসর किएम रम विधिन विधान ॥२॥৯৮॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'সজনি আবজু গ্রদিন ভেল' হইতে 'গ্রজে ঘন খন ঘোর' পর্যান্ত পাঁচটি পংক্তি থ পুথিতে নাই; উহার হলে থ পুথির পাঠ, যথা—'দব্দনি আজু হুর-मिन (पांत्र।' ७। 'क्षीयन' क, ह, भ-द्र-ना। **धरे भर्गा विषय-माजिक जिभमी-ছत्म ३**६७; ঞাব ব্যতীত ইহার প্রত্যেক চরণ-দ্বমে নিম্ন-লিখিডরূপ মাতা-বিভাগ দৃষ্ট হয়; যথা,—

> **9**+8 0+8+81

স্থতরাং 'জিবন' স্থলে 'জীবন' পাঠ গ্রছণ করিলে ছন্দোভঙ্গ হয়। ৪। শ্রীষুক্ত নগেবদ বাবু 'রায়-শেখর' ছলে 'কবিশেখর' পাঠ ধরিয়া এই পদটি বিভাপতির রচনা বলিয়া ছির করিয়াছেন; কিন্ত এখানে ছন্দ-অনুসারে যে 'ক্রিশেখর' পাঠ হইতে পারে না—তাহা লক্ষ্য করেন নাই।

তিরোধা ধানশী।১ ঝরঝর বরিথে সঘনে জল-ধারা। দশ দিশ সবহু ভেল আক্ষিয়ারা 🛭 এ স্থি কীয়ে করব পরকার। অব জনি বাধয়ে হরি-অভিসার 🛭 🕸 🛭 व्यक्टत शोम-हन्म शत्रकाम । मनहि गरनांखांव (लाई निक शांणा কৈছনে সংক্ষতে বঞ্চয়ে কান। সেঙরিতে জর জর অথির পরাণ।

ঝলকই দামিনি দহন সমান।
বনঝন শবদং কুলিশ ঝনঝান ॥

ঘর মাহা রহইতে রহই না পার।

কি করব এ সব বিঘিনি বিথার ॥

চচ্বং মনোরপে সারথি কাম।

তুরিতে মিলায়ব নাগর ঠাম ॥

মন মাহা সাথি দেয়ত পুনবার।

কহ শেখর ধনি কর অভিসার ॥০॥১৮৫॥

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শক'ক। ৩। 'চঢ়ল'প-র-সা।

कारबार । काबड़ा ।>

লম্বরে ডম্বর ভরু নব মেহ।
বাহিরে ডিমিরে না হেরি নিজ দেহ॥
অন্তরে উয়ল শুগামর-ইন্দু।
উছলল মনহিঁ মনোভব-সিন্ধু॥
অব জনি সজনী করছ বিচার।
শুভধণ ভেল পহিল অভিসার।
মুগমদে তমু অমুলেপহ মোর।
তহিঁ পহিরায়হ নীল নিচোল॥
কী ফল উচ-কুচ-কুঞ্ক ভার।
মুর কর সৌতিনি মোতিম-হার॥
তুহুঁ স্থি দেখহ দেহলি লাগি।
গুরুজন অবহুঁ খুমল কিয়ে জাগি॥
চলইতে দীগ-ভরম জনি হোয়।
গোবিন্দলাস সঙ্গে চলু গোয়॥৪॥৯৮৬॥

পাঠান্তর

›। এই পদটি ৩৪২ সংখ্যক পদ-রূপে ইতি-পুর্ম্পে উদ্বত হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ষ পদে ডাইবা।

তথা রাগ।১

মন্দির-বাহিরং কঠিন কপাট।
চলইতে শক্ষিল পদ্ধিল বাট॥
তহিঁ অভি তুরতর বাদর দোলণ।
বারি কি বারইং নাল নিচোল॥
স্কুলরি কৈছে করবি অভিসার।
হরি রহ মানস-স্থরধূনি পার॥
ঘন-ঘন ঝন-ঝন বজর নিপাত।
ভূনইতে প্রবণ মরমং জরি যাত॥
দশ দিশ দামিনি দহনং বিথার।
হেরইতে উচকইং লোচন-ভার॥
ইথে যবং স্কুলরি তেজবি গেহ।
প্রেমক লাগি উপেখবি দেহ॥
গোবিন্দদাস কহ ইথে কি বিচার।
ছুটল বাণ কিয়ে যতনেং নিবার॥৫৮৯৮৭॥

পাঠান্তর

अ। देहां शं-त-मां शूथित २२१,8३६ ७ शं-त शूथित २८।8 मरथाक शन। २। 'वाहिदत' थ, ६। ०। 'छिर्' देछानि इटल 'छाटर प्पछि वानत नत्तनत द्यांन' शं-त-मा; 'छाटर ष्पछि वानत इत्तकत द्यांन' शं-त-मा; 'छाटर ष्पछि वानत इत्तकत द्यांन' शं-त। १। 'वाति कि वाति' थ; 'वातिक वात्व' शं-त। १। 'व्यव मत्रम' इटल 'व्यवल मत्रम' क। ७। 'नहरे' क, शं-त-मा। । 'ठमकरे' शं-त। ৮। 'विन' क, थ; 'क्रनि' शं-त। ०। 'व्यवल' क, ह, शं-त-मा, शं-त। ०। 'व्यवल' क, ह, शं-त-मा, शं-त।

शन्त्री ।>

কুল-মরিযাদ^২- কপাট উদঘাটলুঁ
ভাবে কি কাঠকি• বাধা।
নিজ্ঞ মরিযাদ- সিন্ধু সঞ্জে পঞ্চরলু
ভাবে কি ভটিনি[®] অগাধা।
সহচরিদ মঝু পরিধণ কর দুর।

বৈছে হাদয় করি পম্ব হেরত হরি সোঙরি সোঙরি মন ঝুর॥ গ্রা কোটি কুন্থম-শর বরিখয়ে শত্পর তাহে কি জলদ-জল লাগি। যাক হৃদ্যু ২ সহ প্রেম-দহন -দহ তাহে কি বজরক> আগি। জীবন সোঁপলুঁ यङ् भन्डत्ल निक তাহে কি তমু অনুরোধ। करहे धनि ॐ खिमत्रै সৌবিন্দদাস সহচরি পাওল বোধ॥ ৬॥ ৯৮৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ২২৮, ৪:৬ ও প-র পুথির ১৫।৪ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হলে 'কেদার' প-র। ২। 'ক্ল-মরিয়াদ' (প-স) হলে 'ক্লবতি কঠিন' ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৩। 'কপাটকি' প-র-সা; 'কপাটক' প-র। ৪। 'ক্ল'প-র-সা। ৫। 'ধর' প-র-সা। ৬। 'পউরস্থ' ক; 'পৎরিল্' প-র-সা; 'শৈরল্' প-র। ৭। 'ধ্যুনা' প-র-সা। ৮। 'সক্রনি' ক। ৯। 'কৈছে' ক; 'উছে' প-র-সা। ১০। 'পরিথ্যে' থ; 'বরিথ্ড' প-র-সা। ১১। 'দহনে' ক, ঘ। ১২। 'হ্লেগ্রে' ঘ, প-র। ১৩। 'বল্লর্কি' চ। ১৪। 'অবসর' প-র-সা; 'আগুসর' খ-র।

টাকা

>—৪। "কুল-মরিষাদ' ইত্যাদি। কুল-মর্থাদা-ক্লপ কঠিন কপাট উদ্ঘাটন করিমাছি,—তাহাতে কাঠের অর্থাৎ কাঠ-কপাটের বাধা কোন্ ছার ? নিজের মর্থ্যাদা-রূপ সিদ্ধু হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছি,— ভাহাতে অ্পাধ নদী কোনু ছার ?

তত্রাভিগারঃ। কাষোগ। নীলিম মৃগমদে তুমু অমুলেপন নীলিম হার উজোর। নীল বলয়গণে ভুজযুগ মণ্ডিড পহিরণ নীল নিচোল॥ স্থন্দরি হরি-অভিসারক লাগি। নব অমুরাগে গোরি ভেল শ্যামরি কুত্ যামিনি ভয় ভাগি॥ অলিকে হিলোলতং नोल अलकाकूल নীল তিমিরে চলু গোই। नोल नलिनि जगू শ্যামর-সায়রেণ লখই না পার্ই কোই । नौल खमद्रगन পরিমলে ধাবই চৌদিকে করত ঝকার। অভয়ে অমুমানল গোবিন্দ দাস রাই চললি অভিসার ৷৭৷৷১৮৯৷ পাঠাস্তর

১। 'অন্লক' ক। ২। 'হিলোলিড' ক। ৩। 'শ্রামর-সায়রে' স্থলে 'শ্রাম সিদ্ধু-রসে' ক,চ। টীকা

১২—১৫। "নীল ভ্রমরগণ" ইত্যাদি। ক্রম্বর্ণ ভ্রমরগণ সৌরভ জ্ঞে চৌদিগে ধাবিত হইতেছে (এবং) ঝন্ধার করিতেছে; অতএব (সহচরীস্থানীয়) গোবিশ-দাস অস্থান করিলেন বে, প্রীরাধা অভিসারে চলিয়াছেন। (এ স্থলে 'নীলিত' নামক অণকার হইয়াছে)।

কেদার ৷১

গুরুজন-নয়ন বিধুস্তাদ মনদ।
নাল নিচোলে ঝাঁপিং মুখ-চনদ ॥
কুহুং-যামিনি ঘন তিমির ছুরন্ত।
মদন-দীপ দরশায়ল পছ ॥
চললি নিত্যিনি ছরি অভিসার।
গতি অভি মন্তর আরতি বিধার॥ এ ॥
রস-ধাধসে চলু পদ ছুই চারি।
লীলাকমলং ভেজল বরনারি॥

পরিহরি মৌলিক মালতি-মাল।
তেজল শানিষয় গীমক হার॥
নব অনুরাগ-ভরম ভরে ভোরি।
নিন্দরে পীন পরোধর জোরিদ॥
বেশ-শেষ রন্থ নীলিম বাদ।
মিললি নিকুঞ্জে কহু গোবিন্দদাস দে॥১৯০॥

পাঠাহর

১। ইহা প-র-সা পুণির ৪৪৮ ও প-র পুণির
১০.১২ ও ১৫।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝাঁপণি'
ক; 'ঝাঁপিলুঁ' থ। ৩। 'দহ'ক। ৪। 'চললি
নিত্যিনি' ফুলে 'চলু গজগামিনি' প-র। ৫। 'নীলকমল' থ, প-র। ৬। 'ডোড্ল' প-র-সা, প-র।
৭। 'ডরম ভরে' ফুলে 'ভরমে ভেল' ক। ৮।
'গোরি' প-র (১০।১২ সংখ্যক পদ)। ১। 'মিল্লি'
ইড্যাদি ফুলে 'অভরণ সহফ্র' প-র (১১।১৫ পদ)।

অথ ঐীকৃষ্ণোক্তিঃ।

পঠমপ্রবী 12

অথব ভরি নব নীরদ ঝাঁপং।

কত শত কোটি শবদেণ জিউ কাঁপেণ।
তহিঁ দিঠি জারত বিজ্বিক জালা।
ইথে জনিং ছোড়বি মন্দিরণ বালা।
ঐছন কুঞ্চে একলি বনমালি।
অন্তর জর জর পস্থ নেহারি।
ভামইং ভুজজম নিশি আদ্ধিয়ার।
তহিঁ বরিখত অবিরত জলধার।
গাঁতর মাণ ভেল আঁতরণ বারি।
কৈছে পভারবণ সো স্কুমারি।
থীণ গুণিণ আকুল চলল মুরারি।
মীললগং আধ পদ্থে বরনারি।
গোবিন্দ দাস কহই পুন্ণণ ধন্দ।
প্রেম পরীশত মনমধ্য মন্দ্র।১৯৯১।

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথিতে 'গগনহি নিমগন দিনমণি-কাঁতি' ইত্যাদি ১৯৪ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জনী'
হলে 'কেদার' প-র। ২। 'ঝাঁপি' প-র-সা, প-র।
৩। 'লবদ' ক। ৪। 'কাঁপি' প-র-সা, প-র।
৫। 'জানি' ক। ৬। 'ছোড়বি মন্দির' হলে 'মন্দির ছোড়হ' প-র। ৭। 'অমর' ক, ঝ, ঘ, চ, প-র-সা।
৮। 'না' ক, প-র। ১। 'আতর' ড়, প-র-সা,
প-র। ১০। 'পোয়ায়ব' ক; 'গোঙায়ব' ঝ, প-র।
১১। 'গণি গণি' ক, ঝ, প-র-সা। ১২। 'মিলল'
ক, ঝ, প-র-সা, প-র। ১০। 'সব' প-র-সা।

(FRITE)

ছহ জন আওল কুঞ্জক মাহ।

অপরুপং কো বিহিও রস নিরবাহ॥

ঝর-ঝর বরিথে গগনে জল ধাত।

চুামিনি দুইই ঝা কে অনিবার॥

ঐছে সময়ে বর রাধা কান।

কুঞ্জক মাঝে বৈঠি এক ঠাম॥

ছহু তমু মাললং মনমধে মাতি।

হহু পরিরম্ভন সমরক ভাতি॥

অপরুপং হুহু জন নিধুবন-কেলি।

গোবিন্দদাস হেরই স্থি মেলি॥১০॥৯৯২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'অপরূপ'ক, ধ, প-র-সা। ৩। 'কো বিছি' স্থলে 'হুত্ জন' প-র-সা। ৪। 'মিলল' ক, ধ, পর-সা। ৫। 'অপরূপ' ক, ধ, প-র-সা।

এতদ্দিনান্তরং সম্ভোগপদং গেয়ম। দিনান্তরে। वस्वस्थो।>

মেঘ-যামিনি চললি কামিনি পছিরি নীল নিচৌল রে^ই।

কুস্থম-শায়ক সঙ্গে নায়ক ছোড়ি মঞ্জির° লোল রে॥ চল উলট-পদ গুরুয়া কুচ-ভরে পীন জঘনক ভার রে। ফটিক-ভরু জানি হেরি দামিনি চমকি ধরু নিরধার⁹ রে॥ भीभ जनूर कानि प्तिथि क्रिन-मिन वाम कत्र (पर वांति (त। এহি ফণি-পতি১১ জানি যুবতী' সঘনে তমু উঠে কাঁপি রে॥ ভেটল তুল্ল ভি১২ প্রাণ-বল্লভ পুরল মনমথ । ঐছন পাই গেহ্ণ সফল করু দেহ' বদত ২৬ গোবিন্দ দাস রে ১১১৯৯৩॥ পাঠাস্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৫।২১ সংখ্যক পদ। এই পদের প্রত্যেক অষ্থা ও ষ্থা চরণে নিয়লিথিত রূপ নালা দৃষ্ট হয়; য়থা,—-

৩+8 ৩+8 (অব্থা-চরণ)
৩+৪+৩+২ (ব্থা-চরণ)

২। পানর পথিতে মুগ্র-চরণগুলির লেবে 'রে' নাই;
হুতরাং উহার মুগ্র-চরণগুলিতে হুইটি মাত্রা কম
আছে। ৩। 'মজীর ক, ৭; 'মন্দির' পানর। ৪।
'চল উল্টালিছ' হুলে 'চলিতে পদ টলে' পানর। ৫।
'ছেরিয়া' ক। ৬। 'বামিনী' ক। ৭। 'ধক্ব নির্ধার' হুলে 'ধর নীরধার' ক। ৮। 'ক্রছ' ক, ৭,
পানর। ৯। 'করে' ক। ১০। 'ক্রানি মুবতী'
হুলে 'ক্রানল মুবতী' ক; 'ক্রানল মুবতী' বু, চ।
১১। 'এহি ফ্লিণতি' হুলে 'বিষম অহিপতি' পানর।
১২। 'ভেটল হুর্লভি' হুলে 'ভেট বহিঁ হুর্ছ' পানর।
১০। পুরল মনমধ্য হুলে 'ছুর্ছ পুরল মন্য ক;
পূর্ব মনোর্ব' পানর। ১৪। 'ক্রক্র দেহ' হুলে
'ক্রের মনোর্ব' পানর। ১৫। 'ক্রক্র দেহ' হুলে
ভিক্র বৃত্ব' পানর। ১৫। 'ক্রক্র দেহ' হুলে

অত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি। অথ বর্ষাকালোচিত-দিবাভিসারঃ।

সিদ্ভা।>
সগনহি নিমগন দিনমণি-কাঁতি।
লখই না পারিয়ে কিয়ে দিন রাতি॥
ঐছন জলদ° কয়ল আহ্মিয়ার।
নিয়ড়হি কোই লখই নাহি পার॥
চলু গল্প-গামিনি হরি-অভিসার।
গমন নিরঙ্কুশ আরভি বিধার॥
চৌদিশে অণির পবন করু দোল।
জগ ভরি শীকরনিকর হিলোল॥
চলইতে গোরি নগর পুর বাট।
মন্দিরে মন্দিরে লাগল কণাট ॥
যব ধনি কুঞ্জে মিলল হরি পাশ ।
ছরহি ছবে রক্ত গোবিক্দদাস॥২২।৯২৪।
গাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ৪৫০ ও প-র পুথির
১৫।৩২ সংখ্যক পদ। 'সিদ্ধুড়া' ক্লে ধানত্রী' প-র।
২। 'বুঝিরে' প-র। ৩। 'ঘোর' প-র-সা। ৪।
'মদন' প-র। ৫। 'চৌদিরে' ক। ৬। 'ভরু'
ক, ধ, ম, চ। ৭। 'পুট' ধ। ৮। 'হেরি
হেরি' প-র। ৯। অভঃপর প-র-সাও প-র প্রিতে
নিম্নলিধিত অভিরিক্ত কলিটি দেখা বার, যথা,—

'জানসু গুণবতি পুণকণ সোই।
হরদিন কাহুক গুড দিন হোই॥'
১০। 'বব ধনি' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে প-র-সা
পুথিতে 'অহুর ভরি নব নীরদ বাঁপি' ইত্যাদি ৯৯১
পদটি লিখিত হইরাছে।

অস্থ্যেচিত-সম্ভোগঃ।
বিগণ ।
বিগণ দিনমণি প্রাত্থি নীর।
তথি অতি দর দর বহুত সমীর॥

রাধা মাধব রভি-রণ-ধীর।

তুহুঁ পরবেশল কুঞ্জ-কুটীর ॥

নিধুবন-কেলি মিলিত এক সান।

পরাভব পাওল কিয়ে পাঁচবাণ॥

রাধা মাধব তুহুঁ ক বিলাস।

ভাহি রসিকগণ অধিক উলাস॥১০॥৯৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'পরতহি' থ, ঘ। ৩। 'রাধা মাধ্ব' ফলে
'রাধামোহন' ক, থ, ঘ, চ। ৪। 'তাহি' ইত্যাদি
ছলে 'ভাহা হেরি পোবিন্দ দাস' প-র-সা।

অথ শীতকালোচিত-দিবাভিসারঃ। ভূপানী।>

হরি রছ কাননে কামিনি লাগি।

জাগরে জর-জর মন গিজ-আগি॥

দারুণ গুরুজন-নয়ন নিপাও।

না মিলল স্থান তৈ গেল পরাতং।

আজি ভেল ভালে কুঝটি-আন্ধিয়ার।
ঐতিহে সময়ে ধনি চলু অভিসারও॥

বিঘটি মনোরপ অবইতেও কান।

ধনি চলু আন ছলে মাঘ-সিনান॥

যব ছছুঁ মালল অনজনং পস্থ।

দরশনে মীটল বিরহ ছরস্ত।

যব ছছুঁ হরধে তরধে করু কোর।

বিঘটি কি ঘটলাও চকোরক জোর।

গোবিন্দদাস ছলহ রস গাব।
ভাজলাও গঠইণ মদন-পরভাব। ১৪॥১৯৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪০০ ও প-র পুৰির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রভাত' ক, প-র-সা, প-র। ৩। 'প্রছে' ইন্ডাদি স্থলে 'অব্তনে রাই

নির্ভই অভিসার' প-র-সা; 'কয়লছি রাই দিনছি
অভিসার' প-র। ৪। 'অব ইথে' ঘ, চ। ৫।
'আন মান' ক, ৬, প-র-সা; 'আনমান' ঘ; 'আনয়ন' চ। ৬। 'বিঘটি' ইত্যাদি হলে 'বিঘট বিঘটল'
ঘ; 'বিঘটছে ঘটল' প-র। १। 'ভাগল' ক, প-র।
৮। 'ঘটছি' প-র।

টীকা

ে৬। "আজি" ইত্যাদি। আজ (প্রাতে)
ভালর অক্সই কুল্লাটিকার অক্ষকার হইল; (স্থান্দর
ব্রিয়া) ঐ সময়ে শ্রীরাধা অভিনারে চলিলেন।

ং—৮। "বিঘটি" ইত্যাদি। মনোবাঞ্ছা ব্যর্থ হইয়া শ্রীক্লফ (সঙ্কেত-কুঞ্জ) হইতে আসিবার কালে শ্রীরাধা (গৃহ হইতে) অক্সছলে মাঘ-মানে চলিলেন।

৯—১০। "বব" ইত্যাদি। বধন উভরে (দৈবাৎ) পরম্পারের পথে (যাইতে বাইতে) সন্মিলিত হইলেন, (তথন) পরম্পারের দর্শনে দারুণ বিরহ বিদ্রিত কইল।

১১১—১২। "ৰব" ইত্যাদি। বধন (দর্শনজনিত) আনন্দেও (অপরে দেখিবে বলিয়া) ভরে
উভয়ে উভয়কে ক্রোড়ে ধারণ করিলেন,—(তধন
মনে হইল) চক্রবাক-যুগল (রজনীতে) বিচ্ছির
ছইয়া কি (দিবসে) সন্মিলিত হইল ?

দিনান্তরে।

थाननी ।>

সহজই শীত সময় অতি হীমং।
তাহাধিক পবন বাঢ়ায়ত সীম।
কুষটি ভেল তহি দশ দিশ ব্যাপি।
দিনমণি-কিরণ স্বহু রহু ছাপিঃ।
রাই করল স্থে হরি-অভিসারং।
স্সময় জানি অব তাক সঞ্চার। ধা।
কছু নাহি দীশইং গতিং অনিবার।
স্থাধ দেখায়ল সদন্ধ দিশার।

কুস্থম-পরশে যোই বরণিত শহোই।
এতত্ত্বীত্বিল পদ নিরাপদ সোই॥
ঐছে মিলল বর যুগল কিলোর।
রাধামোহন শহু আনন্দে ভোর॥১৫॥৯৯৭॥
পাঠাস্কর

১। ইহাপ-র-দা সুথির ১৪০৬ ও প-র পুথির ১৫।০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হিম' ক, ঝ, প-র-দা, প-র। ০। 'তাহে ধিক' ঝ, ঘ, প-র। ৪। 'ঝাপি' প-র। ৫। 'রাই করল' ইত্যাদি স্থলে 'রাই কমলমুখী স্থথে অভিসার' প-র। ৬। 'দিশই' ক, চ, প-র; 'দীশহ' ঝ; 'দিবসই' প-র-সা। ৭। 'রাভি' প-র। ৮। 'প্রেম' প-র। ৯। 'তর্কীভ' প-র। ১০। 'গোবিন্দ দাস' প-র।

টাকা

১—২। "সহজ্বই" ইত্যাদি। শীত-কাল অভাৰতই অভি শীতল, তাহাতে (হিমালয়ের) বায়ু (শৈত্যের)সীমা আরও বৃদ্ধিত করিতেছে।

৭—৮। "কছু" ইত্যাদি। কিছুই দৃশ্য হই-তেছে না; (অথচ) শ্রীরাধার গতি ক্ষান্ত হইতেছে না; (কেন না, দিগ্দশক কলপ স্থাপধ দেখাইলেন)।

৯--> । "কুন্থম" ইত্যাদি। (প্রীরাধার) বেই চরণ কুন্থমের ম্পর্শে ত্রণিত অর্থাৎ ত্রণর্ক হ্র, সেই চরণ (প্রেমোৎকণ্ঠার প্রাবল্যে) এরূপ হিমের মধ্যেও নিরাপদ অর্থাৎ অবিচলিত রহিয়াছে।

তথা রাগ।
রাধামাধব করু রস-পুঞে।
হিম-ঋতু-দিনহিঁ মিলল তুহুঁ কুঞে॥
নিবিড় আলিগনে শাত নিবারণ।
এক মুধে ঘাম আরেং শিতকার॥
ঐছনে কতহুঁ করত সঞার।
ত্বত-পরোনিধি তুহুঁ তেল পার॥
তুহুঁকর গুণা তুহুঁ করুণ পরশংস।
রাধামোহন-প্রহু তুহুঁ অবতংস ॥১৬॥৯৯৮॥

পঠিক্তির

১। 'অনিবার' ক, খ। ২। 'আবার' ক। ৩। 'গণ' ক। ৪। 'জন' ক, চ।

অথ বর্ষা কালোচিতে। যথা।

তুপালী।>

চলু গজ-গামিনি হরি-অভিসার।

গমন নিরকুশ আরতিং বিধার॥ এছ॥

পক্ষ-পিছল পথ গুরুয়া নিতস্ব।

পড়ুকত বেরি নাহি অবলম্ব॥

বিজুরি-জোতি দরশায়ল দেহে ।

উঠইতে চাহে জলধারক থেহং॥

বৈজনে মীলল নাগর পাশ।

গোবিন্দদাস কহ পুরল আশা॥১৭॥৯৯৯॥

গাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ৪৬৬ ও প-র পৃথির ১৫।২২ সংখ্যক পদ। প-র-সা পৃথিতে এই পদের প্রারম্ভে নিমলিখিত চারিটি অতিরিক্ত পংক্তি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'মন্দির বাহির পদ ছই চারি।
বারি খনাখন মেহ ভক্ন বারি॥
এক গুণ তিমির লাখ গুণ ভেল।
উতর দখিন ভান দ্রহি গেল॥'
২। 'মদন' প-র। ৩। 'এহ' পার-সা। ৪। 'এহ'
ক, খ, খ, চ।

টাকা

৫—৬। "বিজ্বি" ইত্যাদি। বিহাতের হাতি (অন্ধকারের মধ্যে) শ্রীরাধার দেহকে দৃষ্টিগোচর করাইল। (ভূপতিতা মুগ্ধা শ্রীরাধা) বৃষ্টি-জলের ধারা অবশ্বন করিরা উঠিতে চাহিতেছেন।

रररे।) जासू केटह एजजीन श्रवरे। क्रिकान किहन श्रवहाति जित्नहै ॥ শুরুজন-ভয়ে কি না কাঁপণ।

ঘন-আজিয়ারে সবহুঁ দিঠি কাঁপ ॥

কুহুঁ কৈছে হেরলি রাভি।

মরমছি উয়ল মনমথ-বাতি ॥

দূভরণ পস্থ সঞ্চার।

চচ্ল মনোরপে ইথে কি বিচার॥

একলি আওলি এত দূর।

আগহি আগে কুসুম-শর শুর॥

আপে করই হুহুঁ কোর।

মীলল হুহুঁ জনণ তুমু ভুমু জোর॥

রাধামাধব-ভাষ।

না বুঝলদ মুগধল গোবিন্দদাস॥১৮॥১০০০॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪২২ ও প-র পুথির ১২।২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আল' ইত্যাদি (প-র-মা) ফলে 'আলু কৈছে ফুলরি তেজলি গেহ'ক, খ, ঘ, চ; 'আলু কৈছে ধনি' ইত্যাদি প-র। প-র-মা পুথি বাতীত অভাভা পুথির পাঠে ছলোভঙ্গ ঘটে। পদামূহ-সমুদ্রের পাঠ পদরমসারের অফ্রপ। ৩। 'ফ্নেহ' ক, খ, চ। ৪। 'কাঁপি' খ, প-র-মা, প-র। ৫। 'ঝাঁপি' খ, প-র-মা, প-র। ৫। 'ঝাঁপি' খ, প-র-মা, প-র। ৫। 'ঝাঁপি' খ, প-র-মা, প-র। ৩। 'ছতর' ক। ২। 'না বুঝা' হলে 'কি কছব' প-র।

পাঠান্তর

শ্রীকৃষ্ণং প্রতি দখ্যক্তিঃ।

কেলার।>
কণ্টক গাড়ি কমল সম পদতল

মঞ্জিরং চারহি কাঁপি।
গাগরি-বারি ঢারি করু পীছল

চলতহি অঙ্গুলি চাপিঃ॥

মাধব তুয়া অভিসারক লাগি।
দূতর পন্থ-গমন ধনি সাধ্যে

মন্দিরে বামিনি কাগি॥

কর্যুগে বর্ন মুন্দি চলু ভাবিনি
ভিমির-প্রানক আশে।
কর-কঙ্কণ পণ ফণি-মুখ-বন্ধন
শিথই ভুজগ-শুরু পাশে॥
শুরুজন-বচন বধির সম মানই শ্রান শুনই কহ' আন।
পরিজন-বচন' মুগ্ধি সম হাসই ২২
গোবিন্দ্রদাস প্রগণ॥১৯॥১০০১॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৬২ ও প-র পুথির ১০।২০ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ন্প্র' প-র-সা, প-র। ৩। 'করু পীছল' ফলে 'করি পিছল' ক, চ। ৪। 'ঝাঁপি' ক। ৫। 'কর-ডলে' প-র-সা, প-র। ৬। 'ভামিনি' প-র-সা, প-র। ৭। 'প্রান গতি' প-র। ৮। 'প্রে' প-র-সা। ১। 'ভাষর' প-র-সা; 'ভাস-র' প-র। ১০। 'শুরুই কহ' স্থলে 'শুনত কহে' প-র-সা; 'শুনত কহ' প-র। ১১। 'বচনে' ঝ, ঘ: ১২। 'প্রিজন' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা ও প-র প্থির পাঠ, যথা— 'প্রিজন-হাসে মুগ্রি জন্ম হাস্মে'।

টীকা

১—৪। "কণ্টক" ইত্যাদি। (স্কুমারী প্রীরাধা
অন্ধলারার্ত, সর্পদস্থল, কণ্টকাকীর্ণ, পিচ্ছিল বনপথে
অভিসার অভ্যাস করার উদ্দেশ্তে কি কি কার্য্য
করিয়াছেন, স্থী তাহা বর্ণন করিতেছেন) প্রীরাধা
(গৃহালনে) কণ্টক রোপণ করিয়া (শব্দ নিবারণ
জক্ত) নুপুর বসনাঞ্চলে আচ্ছাদন অর্থাৎ বন্ধন করিয়া
কলসীর জল ঢালিয়া পিছল করেন এবং প্রেম্ম স্থার
(স্কোমল) পদত্রে আসুল চাপিয়া চলেন।

৮—১১। "করবুগে" ইত্যাদি। (প্রীরাধা)

আক্ষকারে গমনের আশার করবুগল ছারা নিজের

চক্সু মুদ্রিত করিরা চলেন এবং নিজের করের (স্থবণমর) কল্প মূল্য দিয়া সর্গ-গুরু সাপুড়িয়াছিগের

নিকট (মন্ত্রৌষধি ছারা) সর্পদিগের মুধ-বন্ধন শিথিতেছেন।

১২ — ১৫। "গুরুজন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা)
গুরুজনের বাক্য বধিরের স্থায় গ্রন্থণ করিতেছেন,—
এক শুনিরা অক্স উত্তর দিতেছেন; নিজের স্থাদিগের
(উপদেশ) বাক্যে মুগ্ধার হায় হাসিতেছেন
অর্থাৎ সেই বাক্য হাসিয়া উড়াইয়া দিতেছেন; (এ
বিষরে) গোবিন্দদাস প্রমাণ! ('গোবিন্দ দাস
প্রমাণ' বাক্যের সহজ অর্থ স্থাস্থানীর গোবিন্দ দাস
শ্রীরাধার এই অপুর্ব্ধ অভিসার-কীলা প্রত্যক্ষ করিয়া
এই পদে উহা ব্যক্ত করিতেছেন)।

তথা রাগ ৷>

ভীতক চীতং ভুজগণ হেরি যো ধনি চমকি চনকি ঘন কাঁপ। **অব আন্ধি**য়ারে আপন তনু ছাপই**ঃ** কর দেই ফণি-মণি ঝাঁপ। মাধব কি কহব ভুয়া অনুরাগং। ভূয়া শ্বভিসারে অবশ নব নাগরি• জীবই বহু পুণভাগণ॥ ঞ ॥ যো পদতল থল-কমল-স্থকোমল ধরণি-পরশে উপচন্ধ। অব কণ্টকময় সঙ্কট বাটছি আয়ত বায়ত নিশক 🛚 মন্দির মাঝ সাজ্ঞ নাহি ভেজভ (पर्शामान्य पृत्र। অব কুন্ত-যামিনি চলয়ে একাকিনি (गाविन्मनाम कर कृत्रः ॥२०॥>००॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪২৫, ৪৬৪ ও প-র পুথির ১০।১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চিড' ক, প-র-সা, প-র। ৩। 'জুলগ' ছলে পদায়্তসমূজ গ্রন্থে 'পুডলি' পঠি গৃহীত ও ব্যাখ্যাত হইরাছে। 'পুডলি' পাঠ গ্রহণ করিলেও বথন উহার অর্থ 'ভুজজের মৃষ্ঠি' না করিলে অসকতি হইরা পড়ে, তথন পদকরতক, পদরস্মার ও পদরত্বাকর অমুদারে 'ভুজগ' পাঠই সমীচীন বোধ হর। ও। 'আপন তমু ছাপই' হলে 'আপন তমু হাপই' ক, চ; 'বসনে তমু ছাপিরে' পার-সা। ৫। 'ভুরা অমুরাপ' হলে 'খনী অমুরাগি' পার-সা। ৬। 'ভুরা' ইত্যাদি হলে 'ভুরা অমুরাগ রভদে নব নাগরি' পার। ৭। 'জীবই' ইত্যাদি হলে 'জিবইতে বছ পুণভাগি' পার-সা। ৮। 'বাত' চ, পার-সা, পার। ৯। 'সাঁজ' ধ, চ, পার-সা। (পাঠান্তর); 'সাঁবে' পার। ১০। 'হুর' ক, চ, পার-সা, পার।

টকা।

১—৪। "ভাতক" ইত্যাদি। বে স্থন্দরী ভিদ্ধি অর্থাৎ গৃহের প্রাচীরের চিত্রিত ভুকলন দেখিরা চমকিয়া পুনঃ পুনঃ কম্পিত হয়,—(সে) এখন অন্ধলার নিজের দেহ লুকাইয়া হাত দিয়া বিষধর সর্পের মস্তকস্থিত মণি চাপা দিতেছে। (মণির আলোকে পাছে শ্রীবাধাকে কেহ দেখিতে পার, দেই আশহার তিনি উহা আচ্ছাদিত করিতেছেন)।

গান্ধার।১

যব ধনি দর সঞে ভেল বাহার।
ঝর ঝর বরিখে জলদ অনিবার ॥
কর ঠেলনং নছে দন আদ্মিরার।
দিশ দরশায়ল মদন দিশার ॥
কি কহব মাধব পুণ-ফল ভোরি।
এতহুঁ দূর ভরিং ভোহে মিলু গোরি ॥
গলকভ বিজুরি নরন ভরুচক।
চলইতে খলইং সঘনে মহি পক্ষ॥
উঠইভেং ফণি-মণি উজরং ছেরি।
কনক-দণ্ড বলি ধরু কত বেরি॥

ঐছনে সোঁপলুঁ তোহে নিজ দেই।
অপরুপ ঐছন তোহারি ফুনেই ॥
এত দিনে প্রেমক পরিচয় ভেল।
গোবিন্দদাস ভরম হুরে গেল॥

ং১৯১০০০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সা পুথির ৪৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'ঠেরল' দ। ৩। 'দুর তরি' হলে 'ত্রতরা'
প-র-সা। ৪। 'থলমে' ক; 'থলত' প-র-সা।
৫। 'উঠই' থ। ৬। 'উজোর' ক, থ; 'উজর' চ।
৭। 'হলেং' ক, থ, চ, প-র-সা, পর।৮।
'দুরে' ক, থ, প-র-সা, প-র।

অত্র সম্ভোগপদানি গেয়ানি।

অথ গ্রীষ্মকালোচিত-দিবাভিদারঃ। বরাড়ী।১ মাথহি তপন তপত পথ-বালুক আতপ দহন বিথার। ননিকং পুতলি তমু চরণ কমল জমু দিনহি° কয়ল° অভিসার॥ হরি হরি প্রেমক গতি অনিবার। কামু-পরশারদে পরবশা রসবতি বিছুরল সবহুঁ বিচার ॥ গ্রু॥ **ওরুজন-নয়ন-পালগণৎ-বার**ণ মারুত-মণ্ডল-ধূলি। ^{©।} পয়ে**॰ মে**नि চলनि বর রজিণি পম্বহি গেও সবং ভূলি ॥ যত যত বিঘনি জিতলি অমুরাগিণি गांधल मन्जिक-मळ। गिविमानाम कहरे अव ममूबि

হরি সত্তে রসময় ভদ্র ॥২২॥১००৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৪৯ ও প-র পুথির
১৫:৩০ সংখাক পদ। ২। 'স্নীক' থ, প-র;
'নোনীক' ক; 'নোনিক' চ। ৩। 'তবহি' দ,
প-র-সা, প-র। ৪। 'চগলি' প-র-সা, প-র।
৫। 'পাপগণ' ক, চ। ৬। 'তা পরে' ছলে
'তাহিক' থ; 'তোহা পর' প-র-সা; 'তা সঞে'
প-র। ৭। 'পথছথ গেলহি ভূলী' প-র। ৮। 'বত
বত' ছলে বিত সব' ক; 'জয় জয়' থ; 'কত কত'
প-র। ৯। 'তয়' প-স।

টীকা

১—৪। "মাথহি" ইত্যাদি। মন্তকোপরি স্থ্য; পথের বালুকা উত্তপ্ত; স্থ্য-কর অধি বিস্তার করিতেছে; (প্রীরাধার) দেহ নবনীতের পুত্তলিকা, — চরণ পদ্মের হার (স্ক্কোমল),—(এ অবস্থারও তিনি) দিবাভাগে অভিসার করিলেন!

৮—>>। "গুরুজন" ইত্যাদি। বাতাবর্ত্ত অর্থাৎ
ঘূর্ণা বৃায়্র ধূলি গুরুজনদিগের নমন-রূপ ফাঁদগুলির
নিবারক (হইল); জভিদারানক্ষযুক্তা এরাধা সেই
ধূলিমন্ন বাতাবর্তের সহিত মিশিয়া অভিসারে গমন
করিলেন এবং পথেই সকল (প্রতিবন্ধকতার কথা)
ভূলিয়া গেলেন!

১২—১৫। "ষত ষত" ইত্যাদি। অমুরাগবতী শ্রীরাধা ষত কিছু বিদ্ন, সব ক্ষম করিলেন ও কলপের (বশীকরণ)-মন্ত্র সাধন করিলেন; গোবিলদাস ক্ছিতেছেন- এখন (শ্রীরাধা) হরির সহিত রসমর তন্ত্র অর্থাং আনন্দ-জনক কাম-তত্ত্বের অমুশীসন ক্ষন!

তথা রাগ।>

রাধামাধব মালন ভেগ। নিদাঘক দূখং সবস্ত ত্বেও গেল॥ উহি পুন সবোবর-মন্দির মাঝ। জল-কণ-শীকরণ-নিকর বিরাজ॥ সৌরভ মিলিত গন্ধবহ মন্দ। কি করব দিনমণি-কিরণক বন্ধ॥ তহিঁবর স্থরত বাপিশু অবগাহ। রাধামোহন প্রু রসিক স্থনাহণ॥

120120001

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪০৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ছংখ' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'দুরে' ক,
প-র-সা। ৪। 'জল' ইত্যাদি হুলে 'জল কলসী
কর' চ। ৫। 'সৌরডে' ক, খ, প-র-সা। ৬।
'বারি' ক, চ, প-র-সা। ৭। 'সুলেহ' প-র-সা।

অথ উৎকণ্ঠায়াং ভ্রমাভিসারঃ।

দুহ্যুক্তিঃ।

তথা রাগ।১

স্থানির কৈছন আরতি তোর।
বিঘটিত ঘটিত সাজ নাহি জানল
ভূলল মাধব মোর॥
বিপরিত চীর পহিরি হরি সাজল
দুহুঁ অক্ষদ চুহুঁ কাণে।
সীথি বলয় করি হাথে সাজাওল
কুণ্ডল মুদরিক জানে॥
কিছিণি-জাল মাল করি পহিরল
হার সাজাওল হাতে।
চূড়ক সাজ করি চরণহি পহিরল
মঞ্জির পহিরল মাথে॥
পুরুব উত্তর নাহি দীগ দিগান্তর
নব অমুরাগক লাগি।
বল্লভদাস কহ চঢ়ল মনোরধ্রে

সঙ্কট দূরহি ভাগি ৷২৪৷১০০৬৷

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৮ সংখ্যক প্র।

২। 'জুলল' ক, প-র-সা। ৩। 'বাহে' ক, চ,
প-র-সা। ৪। 'করি' শব্দটি ক, খ, চ ও প-র-সা
প্থিতে নাই। উহা ব্যতীত ছন্দোভক খটে। ৫।
দিগ দিগন্তর' ক, প-র-সা; 'দিগ দীগান্তর' খ;
'দীগ দীগান্তর' চ।

धानशै ।>

কামুক ইহ উত্তক্তিত জানি।
বিছুরল স্থানরি আপনার বাণী।
কি কহিতেই কি কহয়েই নাহিক পেই।
বিছুরল অভরণ আপনক দেই।
কামুক নেহ হদয় মাহা জাগ।
সো রূপ নিরুপম নয়নহি লাগ।
কহইতে চল চল রহ রহ বোল।
লহে লেহ কহইতে দেহ দেহ বোল।
সাজহুই কহইতে ভালহুই ভাষ।
আনহুই বাণি জানুই সাইটে হাস।
কি কহব সহচরি বল্লভ দাগ।

126120091

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৩৯ সংখ্যক পদ।
২। 'করিতে' খা ৩। 'হর' ক। ৪। 'সাল'
খ; 'সাল সাল' প-র-সা। ৫। 'ভালই' ক;
'ভাল ভাল' প-র-সা। ৬। 'আনহি' ক, খা ^{1।}
'বাণি জান' হলে 'বাণী জাল' ক, খ; 'বাণী জান' প-র-সা।

ফোর।> মণিষয়ৎ মঞ্চির যভনে আনি ধনি দো পহিরল° ছুই হাভ । কিছিণি গীম-হার বলি পহিরল
হার সাঞ্চাওল মাথং॥
স্থানির অপরুপ পেথলু আজ।
হারি-অভিসার-ভরম-ভরে স্থানির
বিছুরল সাজ বিসাজ॥ ধ্রং॥
খন আহ্মিয়ার রক্ষনি জনিও কাজর
সরজত বরিধত মেহ।
বিষধর ভরল তুত্তর পথিদ পাঁতর
একলি চললি তেজি গেহ॥
চঢ়লি মনোরপে দোসর মনম্প
পন্থ বিপথ নাহি মান।
গোবিন্দ্দাস কইই ব্রজ-নাগরি ও

১। ইছা প-র-সাপুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ।

২। 'মণি' ক, চ। ০। 'পছিরস্থ' ক। ৪।
'হাডে' প-র-সা। ৫। 'মাখে' প-র-সা। ৩।
'ঘন' থ, ছ; 'জিনি' প-র-সা। ৭। 'ছরড' থ,
ঘ, প-র-সা; 'ছরডর' চ। ৮। 'পস্থ' থ, ছ।
১। 'মনমথে' ক, থ, প-র-সা। ১০। ধিনি এছন'
প-র-সা।

এীরাপ ।১

রাই সাজে বাঁশী বাজে পড়ি গেওং উল°।

কি করিতে কিবাণ করে সব হৈল ভুল ॥

মুক্রে আচরিং রাই বাজে কেশ-ভার।

পায়ে বাজে ফুলের মালা না করে বিচার॥

করেতে নুপুর পরে জভ্নেং পরে ভাড়।

গলাতে কিঙ্কিণী পরে কটিতটে হার॥

চরণে কাজর পরে নয়নে আলভা।

হিয়ার উপরে পরে বঙ্করাজ-পাতা॥

শ্রাণে করয়ে রাই বেশর সাজনা।

নাসার উপরে করে বেশীর রচনা॥

বংশীবদনে কহে যাঙ্ড° বলিহারি।
শ্রাম-অমুরাগের বালাই লৈয়া মরি ॥
॥২৭॥১০০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'পড়ি গেও' ফলে 'না পড়িল' ক, খ, খ, চ।
'না পড়িল' পাঠে অর্থ-সঙ্গতি ঘটে না। এই বাঙ্গালা
পদে হিন্দী 'গেও' শন্দের ব্যবহারও চিন্ধনীর বটে।
সম্ভবতঃ 'পড়ি গেল' প্রকৃত পাঠ হইবে। ৩। 'ওল'
প-র-সা। ৪। 'কিনা' ক, প-র-সা। ৫। 'আচারে'
ক, প-র-সা। ৬। 'কভে' প-র-সা। ৭। 'যাই' ক।

(बनाबनो ।)

বিপরিত বেশে মিলল ধনি মাধব
মাধব বিপরিত বেশ।
ভূলল সরস সন্তাষ হাসময়
জমু নহ আরতি লেশ॥
সলনীং অপরুপণ প্রেম বিচারি।
দোঁহ দোঁহা হেরি শুন্ত ভেল কলেবর
চাত-পুতরি সম থারি॥ ধ্রু॥
বহুখণে সহচরি-বচনহি তুহুঁ জন
ধাই কয়ল তুহুঁ কোর।
ভৈছন তুমু তুমু লাগি রহল তুহুঁ
তুহুঁ দোঁহাঁ ভাবে বিভোর॥
বিছুরণ কেলি-বিলাস রস-লালসং
রহলহি কোরে আগোরি।
ঐছন সহচরি শেজে শুভারল
বল্লভ হেরি বিভোরি॥২৮॥১০১০॥

পাঠান্তর

)। हेहा भ-त-ना श्रुचित २०१२ मः शाक भना २। 'नव्यनि' क, च, ठ, भ-त-ना। ७। 'व्यभक्रम' क, च, ठ, भ-त-ना। ४। 'टेडहरन' क, e। 'বিছুরল' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি চ ও প-র-সা পুথিতে নাই।

কেদার 15

কতত্বতনে দুহুঁ দুহুঁ তমু তেজ। বৈঠল সরস কুন্তমময় শেক। বিপরিত চরিত হেরি স্থি হাস। তমু তমু তেজি অতমু পরকাণ ॥ সহচরিগণ কহ তুর্জন-রীত। শুনইতে তুহুঁ জন চমকিত-চী ह। लाक हिँ सुन्म ति ना क हर स वालि। তেজল ভূষণ বিপরিত জানি॥ উপজল কতত্ত হাস পরিহাস। কভ কভ কোতুক মদন-বিলাস॥ রাধামাধবং প্রেগ-তরজ। হেরই বল্লভ° সহচরি সঙ্গ ॥২৯॥১০১১॥

ইতি ভ্রমাভিসারঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'রাধামাধব ছত্' প-র সা। ৩। 'বল্লভদাস' প-র-সা।

> অথ জ্যোৎস্নাভিদারঃ। প্রকারান্তরং যথা।

> > ভথা রাপ । ১

অবহুং রাজপথে পুরজন জাগি। চাঁদ-কিরণ জগমগুল। লাগি॥ রহিতে সোয়াথ নাহি নৌতুন নেহ।। হেরি হেরি স্থানির পড়ল সন্দেহ ॥ খ।। কামিনি কয়ল কডায়ে পরকার। পুরুষক বেশে কয়ল অভিসার 🛭

ধামিলি লোল ঝট করি বন্ধ। পহিরলদ বদন আন করি ছফা॥ অম্বরে কুচ নাহি সম্বরু গেল । বাজন-যন্ত্র হৃদয়ে করি নেল। এছনে মালল কুঞ্জক মাঝ। হেরি না চিহ্নই :• নাগর-রাজ ॥ হেরইতে মাধ্ব প্রভাহি ধন্দ। পরশিতে ভাঙ্গল জনয়ক দন্দ ।। বিগ্রাপতি কহ তব কিয়ে ভেলি। উপজন কত কত মনম্থ কেলি 🛭

190130321

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪৬ ও প-র পুথির २८।>० मरथाक भन। २। 'ब्रवह" क, ह ; 'वरहे' প-র। ৩। 'জামিনী' প-র। ৪। 'জগমওলে' থ, প-র। ৫। 'রহিতে' ইত্যাদি স্থলে 'সহই না পারই নব নব লেহ' প-র। ७। 'কামিনি' ইত্যাদি ১২টি পংক্তির স্থলে প-র পুথির পাঠ, যথা---'কসিদ কনয়া জেন কুন্দন হেম।

তুলনা দিবারে নাই এ দোহার প্রেম॥ দোহে দোহা নির্থিতে দোহে দোহা ভূবে। গোবিন্দ দাস চিতে নিরবধি ঝুরে॥' ৭। 'ধামিলী' ক। ৮। 'পছিরণ' ক, প-র-গা।

»। '(७व' क। >•। 'हौनहे' थ। >>। 'बल' क।

পুনশ্চ দিনান্তরে। थाननी ।>

पः कूठ-विज्ञाठ-त्योक्तिक-याना। প্মিত-সাক্রীকৃত-শশি-কর-জালা ॥ হরিমভিসর স্থন্দরি সিড-বেশা। রাকা-রজনি রজনি গুরুরেয়া। ধ্রু। পরিছিত-মাহিষ-দধি-ক্লচি-সিচয়া। वश्वर्विड-धन-हम्मन-मिह्य।

কর্ণ-করম্বিভ-কৈরব-হাসা। কলিভ-সনাতন-সঞ্চ-বিলাসা ॥৩১৫১০১৩॥ পাঠাম্বর ১। ইছা প-র পুথির ১৫।২০ সংখ্যক পদ। টীকা

১-৮। 'অমিতি"। (হে রাধে।) তং কুচয়ো: বল্লিতা (গতিবেগেন উল্লেফ্টিডা) মৌক্তিক্ষালা যন্তা তাদুনী। পুন: কাদুনী ?—িশ্বতেন (ঈষদ্ধান্তেন) সাক্রীকৃতঃ (নিবিড়ীকৃতঃ) চল্লকরাণাং জালঃ (সমূহঃ) यक्ष छातृमी। (रु स्टब्स्ति ! निटर्दमा (७ झर्दम-ধারিণী) ত্বং শ্রীক্ষকাং অভিদর (তদস্তিকং গচ্ছ) এষা রাকা-রন্ধনিঃ (পূর্ণিমা-নিশা) গুরুঃ (উপদেষ্টা) অঞ্নি (ফাতঃ ়৷ বাকারজন্তাঃ শুত্রবেন শুক্লাভি-সারোপযোগাৎ অভিসাঝোপদেষ্টুত্বং বোধ্যম্। ত্বং পুন: কীদৃশী ?—পরিহিতং মাহিষ-দ্বি-ক্তি দিচ্যং (বসনং) যয়াসা। পুনশচ বগৃষি (দেহে) অপিতঃ ঘনঃ চন্দন-সমুহো যয়া সা। পুনশ্চ কর্ণয়োঃ কর-ষিতাভ্যাং (সংযুক্তাভ্যাং) কৈরবাভ্যাং হাস:(প্রকাশঃ) ষস্তা: সা। পুন্দচ কলিত: (জনিত:) স্নাত্নস্ত (ঐক্তম্ভ) সঙ্গে বিলাদো यम्रा मा। পক্ষে কলিতঃ সনাতনক্ত (ভবামকগোস্বামিন:) সঙ্গঃ (স্থীভাবেন সাহচর্যাং) তত্র বিলাসে। যরা সা।

অমুবাদ

১—৮। (গতি-বেগে) তোমার কুচবুগে মুক্তাহার বলিত হইতেছে; তোমার ঈবৎ-হাস্তে চল্দকিরণ আরও ঘনীভূত হইতেছে; হে শুল্ল-বেশধারিণী স্থলরি! ভূমি (এখন) শ্রীক্ষের নিকটে
অভিসার কর; এই পূর্ণিমা রজনী (ভোমার অভিসার-কার্য্যের) উপদেপ্তা হইরাছে! তোমার পরিধের
বসন মাহিষ দধির স্থায় শুল্ল-কান্তি; দেহে ঘনচন্দনাস্থলেপন অপিত হইরাছে; ভোমার কর্ণ-শ্বত
কুমুদের শেত-শোভা প্রকাশিত হইরাছে এবং ভূমি
সনাতন-সঞ্গ-বিলাস্ক বর্দ্ধিত করিয়াছ।

 'সনাতনসন্ধ-বিশাস' পদটি লিট। ইহার এক অর্থ 'সনাতন অর্থাৎ আদি পুরুষ প্রীক্ষের তথা রাগ।

কুণ কুস্থমে ভরু কবনিক ভার॥ ইত্যাদি পূর্বেনাক্তং গেয়ম্ ।

ज़्रीली ।ऽ

গুরু ছুকং বঞ্চ উজোরলা চন্দ।
ছুরজন নামন পদহি পান ফন্দ॥
ভাবে লাভ ছুরতর পাছ সঞ্চার ।
ভাতে লাভ ছুরতর পাছ সঞ্চার ॥
কি কহব মাধব প্রেমক রীত।
ভুয়া অমুরাগিণি ক্রিভুবন জীতা ॥ গ্রা শ্রম শাধনে ভাত ধুনান।
সাধনে ধাওয়ে কাজ পাঁচবাণ॥
সো ভোহে কুঞ্ মিলল নিরবাধ।
গোবিনদান কহ পুরল সাধ ॥৩২॥১০১৪॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প্-র-সা পুথির ৪৬১ ও প-র পুথির
১০ ২২ সংখ্যক পদ। ২। 'হর' চ। ৩। 'বঞ্চন'
প-র-সা। ৪। 'উজোর বর' প-র-সা, প-র।
৫। 'গুরুজন'ক,ঝ। ৬। 'তাংহ অতি' ইত্যাদি
পংক্তি হুইটি প-র পুণিতে নাই। ৭। 'জিড'ক,
ঝ, প-র-সা, প-র। অতঃপর প-র সা ও প-র
পুথিতে নিয়্লিখিত অতিরিক্ত কণি হুইটি দৃষ্ট হয়,
য়ধা—

'পতিভূজ ভূজগবদ্ধ করে তোড়ি।
চরণক খাতে কুলাচল ডারি॥
তাহে কি কহব লঘু মন্দির-কপাট।
ভরে মরিষাদে সিদ্ধু দেই বাট ॥'

স্থিত সংস্থাগ-বিশাস'। অপর অর্থ-সনাতন-নামক গোস্থামীয় সাহচর্য্য-অনিত বিশাস।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

শ্রীরাগ ৷১

চিকুর-ভরক্তক-ফেন-পটলমিব

কুত্বৰং দধতী কামস্থ।

নটদপসব্যদৃশা দিশতীৰ চ

নৰ্ত্তিতুমতমুমবামন্ ॥

রাধা মধুর-বিহারা।

হরিমুপগচ্ছতি মম্থর-পদ-গতি-

লঘু-লঘু-তরলিত-হারা ॥ধ্র•॥

শঙ্কিত-লজ্জিত-রস-ভর-চঞ্চল-

मध्र-पृशंख-लर्वन ।

মধু-মধনং প্রতি সমুপহরস্তী

কুবলয়-দাম রসেন॥

গজপতি-রুজ্ত-নরাধিপমধুনাতন-

महन् मधूटत्र ।

রামানন্দ-রায়-কবি-ভণিতং

ত্বখয়তু রস-বিসরেণ।

11 D C 0 C 11 2 C |

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৪৮ সংখ্যক পদ। ২।
'দেখতী কামং' (জঃ বঃ) স্থলে 'দেখতি সকামং' ক, খ,
য়, চ, প-র-সা। ৩। 'নটদপস্ব্য' ইত্যাদি (য়, ড়ঃ
বঃ) সংক্রিব্রের পাঠ জ্বাভ পুথিতে নিতার
বিক্ত। ৪। 'নরাধিপ' ইত্যাদি (জঃ বঃ) স্থলে
'নরাধিপমধুনা তমুমধুরং' ক, খ, য়, চ, প-র-সা।

টাকা

১—১৫। "চিকুরে"ত্যাদি। মধুর-বিহারা
মধুরসন্তোগবতী শ্রীরাধা মহর-পদগত্যা অরারং
কম্পিতঃ হারো বস্তাঃ তাদৃশী হরিমুপগচ্ছতি শ্রীক্রকাস্কিবং গতা। কীদৃশী শ্রীরাধা ? চিকুরাণাং (কেশানাং)
তর্গক্ষের্ (ক্রুবীচির্) তর্গার্মানকেশের ইত্যর্থঃ
ক্রেন্থে ড্রুপুলারাজিং দ্বতী (ধার্মতী) তথা ক্রুব-

ৰামনেত্ৰেণ বামা-রহিতং কলপং নর্গ্তিতুং আদিশতীৰ উপদিশস্তীব। পুন: কীদৃশী ? শব্ধিত: লব্ধিতত্ত্ব त्रमख्टत्रन हक्षमः (या मधूदता मृशंखनयः कृषेक्रतन-ত্তেন (করণে ভৃতীয়া) মধুরাপাকদৃষ্ট্যেতি ভাব: মধুস্দনং প্রতি রসেন (অমুরাগেন হেতুনা) কুবলয়-माम (नीरनारभन मानार) ममूभश्वको (जेभरोक-য়ন্ত্ৰী)। অত্ৰ শ্ৰীরাণায়। নীলনলিনাভকটাক-পরস্পবৈব কবিনা কুবলয়দাম-র্নপেণ বর্ণিতেতি বোধ্যম্। রামানন্দরায়াধ্যকবের্জণিতং গীতং মধু-(त्रन त्रन-विनादन (त्रन-विखादन) व्यधूनां अनमानः (ইদানীস্তনকন্দর্পং কন্দর্পস্তাভিনবাবতারমিতার্থঃ) 'গল্পতি'রিভি গজপতি-ক্লড্র-নরাধিপং স্থয়তু। বিশেষণেনান্ধিত: যো ক্ষত্রনরাধিপ: প্রতাপক্ষ্যনর-নামৈকদেশগ্ৰহণে নামমাত্ৰগ্ৰহণভ পতিস্তম্। সিদ্ধত্বাৎ ক্ষদ্র-শব্দেন প্রতাপক্ষাে গম্যতে।

অহ্বাদ

১—১৫। শ্রীরাধা তরদায়মান কেশ-কলাপে ফেনরাজির প্রায় (খেড) কুস্থমসমূহ ধারণ করিয়াছেন এবং নিজের স্পাল্দমান বাম নেত্র ছারা খেন রতি-বির্হিত কল্পর্থকে নর্ত্তনের জল্প উপদেশ করিতেছেন। স্থমধুর-সজ্ঞোগ-শালিনী শ্রীরাধা মছর-পদ-সঞ্চারে মৃক্তাছার ঈবং দোলাইয়া শ্রীক্রফের নিকট উপনাও ছইতেছেন। তিনি কিঞ্চিং শক্তিও লজ্জিত রস চঞ্চল স্থমধুর কটাক্ষ-রাজি ছারা প্রীতিবশতঃ শ্রীকৃত্তকে খেন নীলোৎপল-মাল্য উপহার অর্পণ করিতেছেন। রামানক্ষ রার কবির রচিত এই সলীত স্থমধুর রস-বিত্তার ছারা কল্পর্পের অভিনব ক্ষবতার গলপ্রতি

(क्षांत्र ।)

কলয়তি নয়নং দিশিং দিশি বলিতম্। পদ্ধদিন মৃত্-মারুত-চলিতম্॥ কেলী-বিশিনং প্রবিশতি রাধা। প্রতিপদ-সমৃদিত-মনসিল-বাধা॥ अ ॥ বিনিদধতী° মৃত্-মন্থর-পাদম্। রচরতি কুঞ্চর-গতিমনুবাদম্॥ জনয়তু° রুদ্র-গজাধিপ-মুদিতম্। রামানন্দ-রায়-কবি-গদিতম্॥৩৪॥১০১৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৪৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'নিশি'প র-সা। ৩। 'বিনিদধতী' (জঃ বঃ) ছলে 'বিনিদধতি' ক, থ, च, চ, প-র-সা। ৪। 'জনয়তি' ক।

টাকা

>—৮। "কলয়তী"ত্যাদি। প্রতিপদং (প্রতিপদ-তাদে) সম্দিতঃ সমৃত্তো মনসিজস্ত কন্দর্পপ্ত বাধা (পীড়া) ষস্তাঃ সা রাধা কেলীবিপিনং (কেলিনিক্স্পং) প্রবিশতি। পুনঃ কিং করোতি ?—য়হমাকতচালিতং মৃত্-প্রন-চঞ্চলং প্রজন্মব নীলোৎ-প্লমিব দিশি দিশি বলিতং চতুর্দিক্ প্রেরিতং নয়নং কলয়তি (ধারয়তি) নিকুম্পে শ্রীকৃষ্ণঃ কৃত্র তিষ্ঠতীত্যানতী বলবছৎকণ্ঠয়া দিশঃ পশ্রতীতি ভাবঃ। পুনঃ কিং করোতি ? মৃত্-মছর-পাদং (মন্দমন্দররণ) বিনিদধতী (বিশ্বস্তম্ভী) কুস্পরগতিং অমু কুস্পরগমনং লক্ষীকৃত্য বাদং (বিবাদং) রচয়তি (গজগতিং জয়তীতি ভাবঃ)। রামানন্দরায়কবেরিদং বাক্যং ক্সেপ্রাধিপস্ত মৃদ্ভিং (ছর্ষং) জনয়তু।

অমুবাদ

১—৮। গ্রীরাধা মৃহপবন-চালিত নীলোৎপলের প্রার নিজের নরন চারি দিকে প্রেরণ করিতেছেন। প্রতিপদ-বিক্ষেপে তাঁহার কল্প-পীড়া উদ্ভূত হই-তেছে; তিনি কেলিকুল্পে প্রবেশ করিতেছেন। তিনি বৃহমন্থ্যভাবে চরণ নিক্ষেপ করিয়া কুঞ্জর-গতিকে পরাজিত করিতেছেন। রামানন্দ রার কবির এই বাব্য গল্পতি প্রতাপক্ষত্মের আনন্দ উৎপাদন কলক। মারুর।>
সম-বয় বেশ-ভূষণ^২-ভূষিত-তমু
সধিগণ সম্বহি মেলি।
গজ-গতি^১ নিন্দি^৫ গমন অতি স্থান্দর^৫
কিয়ে জিত-খঞ্জন-কেলি ॥
দেখ রাই করলণ অভিসার।
শিরিষ-কুমুম জিনি কোমল পদতল
বিপথে পড়ত অনিবার ॥গ্রা

যো থল-কমল পরশে অতি কোমল বামর ভই উপচক্ষ।
সো অব যাহাঁ তাহাঁ কঠিন ধরণি মাহা
ভারত বড়ই নিশক্ষ।

ঐছন ভাতি মিণল কৃঞ্জ মাহা দৃতিক যাহাঁ উপদেশ। ভণ রাধামোহন তঁহি যো আচরণ হাম কিয়ে পায়ব উদেশদ॥

119611303911

পাঠান্তর

১। 'মায়ুরী' ক। ২। 'ভূবণ' ক, ধ। 'ভূবণ' পাঠে ছলোভঙ্গ বঠে। ৩। 'গজপতি' ধ।
৪। 'নিন্দিত' (পাঠাস্তর—ক, ধ, ম, চ, ১০৫৬
সং পদ)। ৫। 'গমন' ইত্যাদি 'গমন স্থমছর'
(পাঠাস্তর—ক, থ, ম, চ, ১০৫৬ সং পদ)। ৬।
'অতি কোমণ' স্থলে 'স্কোমণ' (পাঠাস্তর—ক,
ধ, ম, চ, ১০৫৬ সং পদ)।

জত্র সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনান্তরে।
তিসিরাভিদারে দৃত্যুক্তিঃ।
বরাজা।>

রতি-স্থধ-সারে গঙমভিসারে মদন-মনোহর-বেশম্। ন কুরু নিভস্বিনি গমন-বিলম্বনমন্ত্রুসর তং হৃদয়েশম্॥
ধীর-সমীরে যমুনা-তীরে
বস্তি বনে বনমালী।ধ্রু॥
নাম-সমেতং কুত সক্ষেতং

বাদয়তে মৃত্রু বেণুম্। বহুমসুতে নসু তে তসু-সন্ধত-

পবন-চলিতমণি রেণুম্॥

পততি পভত্রে বিচলতি পত্রে

শকিত-ভবহুপযান্ম।

রচয়তি শয়নং সচকিত-নয়নং

পশ্তি তব পত্তানম্॥

मूथत्रमधीदः छाज मञ्जोतः

রিপুমিব কেলিষু লোলম্।

চল সখি কুঞ্জং সতিমিরপুঞ্জং

শীশ্র নীল-নিচোলম্॥

উরসি মুরারেরুগহিত-হারে

ঘন ইণ তরল-বলাকে।

ভড়িদিব পীতে রতি-বিপরীতে

রাজনি প্রকৃত-বিপাকে॥

বিগলিত-বদনং পরিহাত-রদনং

घটয় জঘনমপিধানম্।

किमलग्र-भग्नत शक्क-नग्रत

নিধিমিব হর্ষ-নিধানম্॥

হরিরভিমানী রজনিরিদানী-

মিয়মপি যাতি বিরামম্।

कूरू मम वहनः अष्टर-ब्रह्मः

প্রয় মধুরিপু-কামম্॥

শ্রীজয়দেবে কৃত-হরি-সেবে

ভণতি পরম-রম্পীয়ম।

প্রমুদিত-হাদয়ং হরিমতি-সদয়ং

नम् रङ्ग ७-कमनी व्रम् ॥ ७५॥ २० २৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৫।১**০ সংখ্য**ক পদ। 'বরাড়ী' স্থলে 'পঠমঞ্জরী' প-র।

টাক1

জন্দেবের শ্রীগীতগোবিন্দ সর্বব্য স্থলভ বলিয়া এ স্থলে টীকা ও অন্থবাদ দেওয়া হইল না।

ভূপানী ।১

স্থিগণ-বচনে বনায়ল বেশ।
বিরচিল কবরি জাঁচরি নিজ কেশ।
ভালহি দেয়ল সিন্দুর-বিন্দু।
চন্দন-রেথ শোভয়ে আধ ইন্দু॥
কত কত অভরণ সাজায়ল অবে।
হেরইতে মুর্ছয়েং কত্ত অনকে।
নাল-বসনে তমু ঝাঁগলি গোরি।
চললি নিকুঞ্জে শ্রাম-রুদে ভোরি॥
মদনমোহন-মনমোহিনি নারি।
ভ্যানদাস কহ যাভ বলিহারি।
ত্যানদাস কহ যাভ বলিহারি।

পাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪৮ সংখ্যক পদ।
 ব্রক্ত্রে ক; ব্রত্ত প-র-সা।

বেলোরার ৷ ১

সাজলি রসবতি রঞ্জিণি রামাং।

মন্দ মন্দ গতি নুপুর-কলরবলচ্ছিত-রাজহংসকুল বামাণ॥গ্রা।

চম্পক কনক কেশর-কুসুমাবলি
ক্রচি জিনি সুন্দর অপাহন সাজে।

অলিকুল অঞ্জন জলদ নীলমণি
ছবিচয়-নিন্দিত বসন বিরাজে॥

অমল ইন্দিবর- দল লোচন্মুগ

ক্ত ক্ত শশি জিনি ক্ষ্প-ব্য়ানী।

অরুণ-ছবি নিন্দই সিন্দুর-বিন্দু श्रह-त्रभगी किंग (विश विभी । মধুর মৃতু হাসনি বিদ্রুগ-অধরে त्रभन श्रुनामिनि एमन क**रत्र**। তার⁸-হার মণি-কুণ্ডল লম্বিড কত মণি দরপই দরপবরে॥ চৌদিশে সহচরি যন্ত্ৰ বাজায়ত ধিরে ধিরে॰ রসবতি চলত সমাজে। বল্লভ ভণভ প্রবেশলি নিধুবনে হেরি কত রতিপতি ভাজল লাজে 🛭 105120201

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বামা' খ, চ। ৩। 'রামা' ক, খ, চ। ৪। 'ভার' ঘ, প-র-সা। ৫। 'ধীরে ধীরে' ক, খ, প-র-সা।

यहरे ।)

মিললৈ নিকুঞ্জে রাই কমলিনী।
দোহে দোহাঁং পায়ল পরশ-মনি॥
দরশনে ছতুঁ মুখ ছতুঁ প্রেমে ভোর।
নয়নে ঝরয়ে দোহাঁরে আনন্দ লোর॥
সরস-সম্ভাষণে উপজল রক।
উথললঃ ছতুঁ মন মদন-তরক॥
সহচরিগণ সব আনন্দে ভাস।
ছতুঁ মুখ হেরই নেরোত্তম দাস॥৩৯॥১০২১॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'দৌহে' ক, চ। ৩। 'ছইার' ক, চ। ৪। ভিছ্লন' প-র-সা। ৫। 'নেহারই' প-র-সা।

মঙ্গল 1>

ও মুখ শরদ-স্থাকর-সুন্দর हेर निमिन-मन गर्छ। ও তমু নব্ঘন স্থানর রঞ্জিত ইহ থির দামিনি পুঞে॥ (मर्भ त्राधांभाधव (काति। ছহু ক পরশ-রসে গুৰু পুলকাইডং ত্বত্বাহা রঙল আগোরি ।ধ্রু। ও নব নাগর সব গুণে আগর ইং সে কলাবতি-সীম। ও অতি চতুর-শিরোমণি বিদগধ এ সব গুণহি গরীম ॥ মধুর রুন্দাবনে শ্যাম-গোরি-ভক্ত ছত্ত নৰ কিশোরি কিশোর। নৱোত্তম দাস আশ চরণে রন্ত শ্রীবল্লভ-মন ভোর ॥৪০॥১০২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৫১ সংখ্যক পদ। ২। 'পুলকায়িত' ক। ৩। 'গরিম' ক, খ, প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

कनामी ।>

বয়স সমান সজে নব রজিণি
সাজলি শ্যাম-দরশ-রস লোভে।
কোই রবাব মূরজ সরমগুলং
বীণণ উপাক্ষ হাত পর শোভে।
ভালে বনি আওয়ে ব্যভামু-ভনি।
চরণ-কমল-ভলে অরুণ বিরাজিভ
মঞ্জির-রঞ্জিত মধুর-ধনিণ ক্রাঞ্জা

গতি অতি মন্থর নব যৌবন-ভর
নীলং বসন মণি-কিঙ্কিণি বোলে।
গজ-অরি মাঝরিং উপরে কনয়া-গিরি
বীচহি সুরধুনি মুকুতা-হিলোলে॥
রবি-মণ্ডল-ছবি জিনি মণি-কুণ্ডলং
স্থানর সিন্দুর ভালিরে ভালে।
গোবিন্দদাস কহ ভূললং অলিকুল
বেড্ল কবরিক মালতী-মালে॥
॥৪১॥১০২৩॥

পাঠান্তর

১। देश भ-द्र-मा शूबित १८१ मःथाक भाषा १। 'ख्रम्थन' क। ०। 'रीना' च। १। 'ध्रिनि' क, थ। ८। 'क्षमिछ' भ-द्र-मा। ७। 'रावादि' क, थ, भ-द्र-मा। १। 'द्रिन-म्थन' हेल्यां मि ख्रम् 'द्रिवम्थन' क; 'द्रिवम्थन खिनि इदि क्थन' घ; 'द्रिवम्थन इदि क्थन वन-मन' भ-द्र-मा। ७। 'क्षम्द्र देल्यां मि ख्रम् विम्त कानि द्रिक्ष कानि द्रिक्ष विभूत विमूत् कानि द्रिक्ष' क। । 'ज्रम् द क्यन' क, थ, भ-द्र-मा।

विद्यांत्र ।

রাই কনক-মুকুর-কাঁতি। শ্যাম বিলাসিতে স্থাপর তমু সাজয়ে কতেক ভাতি। নীল বসন রতন ভূষণ कलरम मामिनी मारक। টাচর কেম্বের^২ বিচিত্র বেণী ত্রলিছে হিয়ার মাঝে॥ রসের আবেশে গমন মৃত্যু হেলি ছুলিও চলি যায়। আধ ওচুনি ঈষত হাসিয়া• विषय-मद्रात होत्र ।

সি থায়ে সিন্দুর নয়ানে কালর
তাহে চন্দনের রেখা।
নব জলধরে অরুণ-কোরেণ
নবীন চাঁদের দেখা॥
শ্যামানন্দ ভণে নিকুঞ্জ-ভবনে
কলপ-তরুর মূলে।
রসের আবেশেণ বৈসেণ বিনোদিনী
শ্যাম নাগরের কোরেদ ॥৪২৮১০২৪।

পাঠান্তর

১। 'দরশনে' খং প্রা: পুলি। ২। 'কেদর'
খ; 'কেশেতে' খং প্রা: পুলি। ৩। 'হেলি ছলি'
হলে 'হেলি দোলি' খ, ছ; 'ভাবে ঢুলি' খং প্রা:
পুলি। ৪। 'হাসিনী' খং প্রা: পুলি। ৫। 'নব
জলধরে' ইত্যাদি ছলে—'অরুণের কোরে নব জলধর' খং প্রা: পুলি। ৬। 'রদের আবেশে' হলে
'হাসিতে হাসিতে' ছ। ৭। 'বসিলা' খ, ছ। ৮।
'কোলে' খং প্রা: পুলি।

জত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি। পুনশ্চ জ্যোস্মাভিসারো যথা।

বেলোয়ার 13

সধি মাধব নিকট গমন করিং
তুরিতহিঁ এমতি করবি চতুরাইণ।
যদবধি গগনে উদিত নহেণ হত-বিধু
হরি অভিসারবি সময় জানাই ॥
মদন-দহনে ততু অবিরত দাহই
পরাণক ছখ তুহুঁ জানসি চীতণ।
ইং তাহে নাহি জানাওবি অস্তর
হাম বাহে কুলবতি-পথে উপনীত ॥
এত শুনি দুতি চলল অবিলখনে
আসি ভেল উপনিত কামুক পাশ।

নয়ন-ভরত্তে সকল সমুঝায়ল
পুন হেরি কুম্দ কহে পরকাশ ॥
কুম্দিনি শুণ পরি- মলে জগ জীতল
কাহে বিলমায়ঙ শামল ভূল।
দৃতিক বচনে চলল বরনাগর
ভুরতহি গৌর হাদয় পরসয় ॥৪৩॥১০২৫॥
পাঠাছর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৫২ সংখ্যক পদ।

২। সকল পুথিতে 'সথি' ইত্যাদি পাঠ দৃষ্ট হইলেও
সন্তবত: 'এ সথি' ইত্যাদি প্রকৃত পাঠ হইবে; কেন
না, 'সথি' ইত্যাদি পাঠে প্রথম চরণে ছইটি মাঞা কম
হর। ৩। 'ভূরিতহিঁ' ইত্যাদি ছলে 'ভূমি তহিঁ'
ইত্যাদি ক, ঝ, ষ। ৪। 'উদিত নহে' ছলে
'উদিত নয়' ক; 'উদর নহে' য়, চ। ৫। 'চিত'
ক, ঝ, প-র-সা। ৬। 'উপনীত' ক। ৭।
'গণ'ষ। ৮। 'বিফ্লারত' ক, ঝ, য়, চ।

টাকা

৯—১৬। "এত" ইত্যাদি। দুতী ঐ কথা তনিয়া অবিণছে চলিলেন এবং প্রীক্লফের নিকট আসিয়া উপস্থিত হইলেন; (তিনি) নমনের চঞ্চল ইন্সিত বারা তাঁহার সকল অভিপ্রার প্রীক্লফকে অবগত করাইলেন; পুনশ্চ কুমুদের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া ম্পাইভাবে বলিলেন—'কুমুদিনী তাহার গুণ ও সৌরভ বারা জগৎ জয় করিয়াছে,—(এ অবস্থায়) স্থামবর্ণ ভূল কেন বিলম্ব করিতেছে ?' দৃতীর এই বাক্যে নাগর-লিরোমনি সম্বর (প্রীরাধার সঙ্কেত-কুম্বে) গমন করিলেন; (ইহাতে স্থী-স্থানীয় পদ্কর্জা) গৌরের স্থাম্ব আনন্দিত হইল।

म्बन ।

স্থা পথ হেরই

স্থা পথ হেরই

স্থা পথ হেরই

স্থা তির করি করি করিল বিধু-মণ্ডল

বিষ্ণা করিণ পরচার ॥

সমূচিত বেশ করহ বর চন্দ্রন কপুর-খচিত করি অঙ্গ। ছ্গ্ব-ফেন-সিভ অম্বর পহিরছ কুঞ্জহি চলহ নিশক। **ठत्रग-कमाल** नृ-পুর তেজি স্থন্দরি চল তাহে শবদ-রহিত। এতহিঁ বচনে চললি গজ-গামিনি মনসিজ-মদে উলসিত 🛚 নয়ন কমল-মূগ-খঞ্চন-গঞ্চন সচকিত হেরত গোরি। গৌরমোহন অন্ত-মানই আনবি শ্রাম-নয়ন চিত চোরি #৪৪॥১০২৬॥

(क्श्रीत्र १३

কুন্দ কুমুদ গজ-মোতিম হার।
পহিরল হাদয়ে ঝাঁপি কুচ-ভার॥
ধোরহিং শশধর-কিরণ বিধার।
কৈছন সময়ে কয়ল অভিসার॥
চৌদিকে সচকিত-নয়নে নেহার।
মদন-মদালসে চলই না পার॥
মিললি নিকুঞ্জে কুঞ্জ-নূপ পাশ।
কহ কবিশেখর কেলি-বিলাস॥৪৫॥১০২৭॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৪ সংখ্যক পদ। ২। 'থোরই'ক ;থোরহি''চ।

ভতঃ সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনান্তরে।
শংমাত্যা।
ধনি ধনি বনি অভিসারে।
স্বিনি রক্ষণি : প্রেম-ভর্ম্বিণি
সাক্ষলি শ্রাম-বিধারে ॥ ধ্রু ॥

চলইভে চরণ সঙ্গে চলু মধুকর মকরন্দ-পানকি লোভে। সোরভে উনমত ধরণি চুম্বয়ে কত যাহাঁ যাহাঁ পদচিক শোভে॥ কনক-লভা জিনি জিনি সোলামিনি বিধির অবধি রুপং সাজে। কি জিলি রণরণি বঙ্করাজ-ধনি চলইতে স্থমধুর বাজে। হংসরাজ জিনি গমন স্থলাবণি অবলম্বন স্থি-কান্ধে। মিললি নিকুঞ্জ-বনে व्यवस्थात ७८१ পুরাইতে শ্রাম-মন সাধে 18 ৮//১০২৮ / অত্র সম্ভোগপদং সম্ভবপরং গেয়ম। ইতি তৃতীয়শাখাগাং ত্রয়োদশপল্লবঃ। পাঠাশ্বর ১। 'কনক-লভা' ইভ্যাদি আটটি পংক্তির च्रान च পूचित्र পाठ, यथा---'লোচনে অঞ্চন **থঞ্জন-পঞ্জন** द्रश्चन वमन विद्रांख । কিঙ্কিণি রণরণি বঙ্করাজধনি চলইতে সুমধুর বাজে॥ কনক-লতা জিনি জিনি সৌদামিনি विधित्र व्यवधि ऋश त्राट्थ। অনস্ত দাস ভণে গমন নিক্ঞ বনে

অথ রূপোলাসঃ।

শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।

শ্বনী।>
গোরাচাঁদ কিবা ভোমার বদন-মগুল।
কমক-কমল কিয়ে শরদ-পূর্ণিমা-শ্রী
নিশি দিশি করে ঝলম্লু॥ ঞা॥

পুরাইতে শ্রাম-মন-সাধে ॥'

২। 'কৃপ' ছলে 'রূপ' ক, চ।

ভোমার বরণখানি অসুং হরিতাল জিনি किए प्र थित्र विक्र ती किनिया। কিয়ে নব গোরোচনা কিয়ে দশবান সোল মনমথ-মন-মোহনিয়া ॥ খগপতি জিনি নাসা অমিয়া-মধুর ভাষা তুলনা না হয় ত্রিভুবনে। আকৰ্ণ নয়ান-বাণ ভুরু-ধন্ম-সন্ধান किंगिक शंनद्य नाती-मदन । আগামুলম্বিত ভুঙ্গ বিলেপিত মলয়জ অঙ্গুরী বলয়া তাহে সাজে। সিংহ জিনি মধ্য সরু হেম-রম্ভা জিনি উরু চরণে নৃপুর বঙ্করাজে॥ জিনি ময়মত্তঃ হাতী হংসরাজ জিনিং গতি দেখিয়ে এ হেন রূপ-রাশ। क रुख्य (गाविनम (घाष মোর মনে সম্ভোষ নিছনি যাইয়ে হেন বাসি ॥১॥১০২৯॥ পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪৫৫ সংখ্যক পদ।
২। 'তফ্'প-র-সা। ৩। 'নারীর মনে' খ, খ,
প-র-সা। ৪। 'মদমন্ত' ক, খ। ৫। 'হংস্রাজ
জিনি' ফ্লে 'হংস জিনিয়া' ক, খ। ৬। 'দেখিয়া'
ক, খ, খ, চ।

यहरे ।

আহা মরি গোরা-রূপে কি দিব তুলনা।
তুলনা নহিল যে ক্ষিল বান সোণা॥
মেঘের বিজুরী নহে রূপের উপাম।
তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম ॥
তুলনা নহিল স্বর্গ-কেডকীর দল।
তুলনা নহিল গোরোচনা নির্মল্॥
কুকুম জিনিয়া অল-গন্ধ মনোহরা।
বাহ্য কহে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা॥
॥২৪১০৩০॥

ভাটিরারী।১

ওহে গৌর বসিয়া থাকহ নিজ ঘরে। দেখিয়াও রূপ ঠাম মোহে কত শত কাম युवि रिभन्न किरय भरत ॥ क्ष ॥ হেরিয়া বদন-ছাঁদং **छमग्र ना क**रत हास्म লাজে যায় মেঘের ভিতরে। সৌদামিনী চমকিল চম্পক শুখাঞা গোল ' লাজে কেহ সোণা নাহি পরে॥ ভাঙ গ-ধনু ভ ক্সমায় ইন্দ্ৰ-ধনু লাজ পায় দশনে মুকুতা নাহি গণে। দেখিয়া চাঁচর কেশ চামগী ছাড়িল দেশ **ठकन जनम जान जारन ॥** भूगांल रहेथांग्र लाटक দেখিয়া যুগল ভুজে রক্ষ-ভূমি জিনিল হিয়ায়। হরি হেরি মধ্যদেশে কন্দরাতে পরবেশে উরুতে কি রাম-রম্ভা ভায়। স্থল-পক্ষ আদি য় হ তরুতে শুখায় কত ना टानरा (इति भन्भानि। শুন গৌরস্থন্দর এই ভোমার কলেবর ভুবন-বিজই অসুমানি ।৩॥১০৩১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'টাদ'চ। ৩। 'শুথাইরা' ব, চ, 'শুথাই' প-র-সা। ৪। 'ভাঙ' ক, প-র-সা। ৫। 'চমরী' ক, খাড। 'ভোলার' প-র-সা। १। 'বিশ্বরী' ক।

তথা দাগ।১

দামিনি-দাম-দমনং-ক্লচি দরশনে
স্থেক গেও দরপক দাপ।
সোন কুমুম তাহে কোন গণিয়ে বের
প্রান্তর-জক্লণ-সন্তাপ।

গোরা-রূপে যান্ত বলিছারি।
হৈরি স্থাকর মুরছি চরণ-তলে
পড়ি দশ-নথ-রুপ-ধারী ॥ এদ ॥
স্থবরণ-বরণ কেরি নিজ কুবরণ
মানি আপেন মনতাপে ।
নিজ-তনু জারি ভসম সম করইতে
পৈঠল অনল-সন্থাপে ॥
যা সম বিধিক অধিক নহেদ অনুভবি
তুলনা দিবার নাহি ঠোর।
জগদানন্দ কহুঁ পহুঁক ভুলনা পহুঁ
নিরুপম গোরকিশোর ॥৪।১০০২॥

পঠিস্থির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মদন'থ। ০। 'দ্রে'ক; 'দ্র'খ, ছ। ৪। 'শোণ'ক; 'সৌন' প-র-সা। ৫। 'গণিয়া' চ। ৬। 'মনস্তাপে' ক। ৭। 'জারস' থ। ৮। 'নাহি'ক, প-র-সা।

টীকা

১—৪। "দামিনি" ইত্যাদি। (শ্রীগোরাকের)
বিছাৎপুঞ্জন্মী কান্তি দুর্গন করিয়া (সৌন্দর্য্যের)
গর্ম্ব কারীর দর্প বিদ্রিত হইল; সেই কান্তির নিকট
শন-পুশা কিংবা প্রস্তাতের অরুণ-কিরণ কে গণনা
করে?

ভৰা রাগ ৷১

গৌর কলেবর

চিকুর ঐছে নেহারি।
(জমু) হেম মহিধর-^২

শৌপবে^{*} চামর

দেই উর পর ডারি⁸ ॥
শীন উর উপ
বীতে-শীতিম রক্ত^{*}।
(জমু) কনর-ভূধর

স্থান-তরজিনি গল ॥

আধ অম্বর

(জমু) মীন-কেতন

আধ সম্বরণ

कक़ निमक्षनभ्र

আধ অস স্থােীর।
(জমু) জলদ সঞ্জে অভি বাল রবি-ছবি
নিকসে অধিক উলোের ॥
অগত-আনন্দ শত্তক পদ-নথ
লখই > গ্রেছন ছন্দ।

চরণে দেই দশ চন্দ ॥८॥ऽ०७०॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩৫> সংথাক পদ।
এই পদের প্রত্যেক অবৃগ্য ও বৃগ্য চরণে ধ্বাক্রমে
নিম্নলিখিত মাতা আছে; ধ্বা,—

৩+৪ ৩+৪ (অবুফাচরণ) ৩+৪+৩ (বুফাচরণ)

২। 'মহীধর' ক, ধ। ৩। 'শেধরে' চ। ৪। 'ছেই' ইত্যাদি স্থলে 'দেই উক' ইত্যাদি ক, ধ, দ; 'ছেলি মনমণ ঢারি' প-র-সা। ৫। 'শীতিম রক' স্থলে 'শিতিম রক' ক, প-র-সা; 'সীতমতক' ধ, দ। ৬। 'অধ্রে' প-র-সা। १। 'স্কুক' প-র-সা। ৮। 'তক্ব' প-র-সা। ১। 'কগদানন্দ' দ, চ। 'জগদানন্দ' পাঠে ঘতি-ভক্ত ঘটে। ১০। 'ছেরি' প-র-সা। ১১। 'নিরম্ভন' ক, ধ।

টাকা

>--৪। "পৌর" ইত্যাদি। (শ্রীগৌরান্দের)
দেহ পৌর-বর্ণ; মন্তক ও কেশ এরপ মনোহর দেখিভেছি, খেন স্থবর্ণ-গিরির শিথরে (কেছ) চামর
(সেই গিরির) বক্ষ পর্যান্ত ঝুলাইরা দিয়াছে।

৫—৮। "পীন" ইত্যাদি। (তাঁহার) বিশাল
বক্ষে উপবীতের খেত-শোভা প্রাপিত হইরাছে; বেন
স্থবর্ণ-গিরিকে বেষ্টন করিরা স্থর-নদী গদা শোভা
পাইতেছে।

অথ শ্রীরাধিকায়াঃ সপ্থ্যক্তিঃ।

কাষোদ কন্দৰ্গ ৷১

ধনি ধনি কো বিহিং বৈদগধি-সাধে।
মদন স্থা-রসে যো নিরমাওল
ত্রা মুখ-মণ্ডল রাধে ॥ গ্রুল ॥
ভালত আধ-ইন্দু-অমিয়া আগোরল
ভাঙ, তিমির ঘন যোর ।
কিরণ-বিকাশিত শ্রুভি-কুবলয় পরি
ধাবই নয়ন-চকোর ॥
নাসা-শিখর সমুখে উদিত পুন
দিন্দুর-ভামু উলোর ।
অহনিশি বদন-কমল তহি বিক্সিত
শ্রাম শ্রুমর নাহি হোড় ॥
অরুণ-কিরণ পুন অধরে হেরি হেরি
হার-তর্গিণি-তারে ।
কুচযুগ-কোক শোক নাহি জানত
গোবিন্দদাস কহ ধীরেণ ॥৬॥১০৩৪॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পুথির ১৬৬ সংখ্যক পদ। 'কাষোদ কলপ' ছলে 'কাম কলপ' ক। ২। 'বিথি' থ। ৩। 'ভালে' থ, থ, প-র। ৪। 'ফুরে'ক।

विका।

১—০। "ধনি ধনি" ইত্যাদি। হে জীরাবে! বৈদ্ধীর আকাজনার বে কন্দর্শ স্থা-রস দারা তোমার মুখ-মণ্ডল নির্মাণ করিল, (তাহার তুলনার) বিধাতা অর্থাৎ ব্রহ্মা কে? (এইরপ অম্বৃত্তমর নির্মাণ কৌশল কেবল হুরসিক কন্দর্পের পক্ষেই সম্ভবপর, অরসিক প্রাচীন ব্রদ্ধার পক্ষেইহা নিতাস্তই অসম্ভব)। তুলনা ক্ষন,—

'ৰডা: দৰ্শবিধো প্ৰশাণতিরভূচকো স্থ কাৰিথা: পুলারৈকরণ: খবং স্থ মধনো বানো স্থ পুলাকরঃ!

বেদাভ্যাসজড়: কথং সু বিষয়ব্যাবৃত্তকৌতৃহলো নিৰ্মাতং প্ৰভবেশ্বনোহ্রমিদং রূপং পুরাণো সুনি:॥ ৪—১৫। "ভাল" ইত্যাদি। (ব্রহার স্টিতে চন্দ্র ও স্র্য্যের, জ্যোৎসা ও অন্ধ্রুরের যুগপং द्वेमग्र এवः চকোর ও চক্রবাকের যুগপৎ भानन সম্ভবপর নহে; এ স্থল তাহাও দুষ্ট হইতেছে.— মুতরাং শ্রীরাধার রূপ ব্রহ্মার স্বষ্ট নছে—ইহা দেখাইবার জন্ত সধী বলিতেছেন) ভোমার ললাট অর্দ্ধ-ইন্দুর অর্থাৎ অষ্টমীর চন্দ্রের অমৃত এবং তোমার ভ্রমুগল (অষ্টমী-রঞ্জনীর) ঘোর অরকার সঞ্চিত করিয়া রাখিয়াছে; তোমার (ললাট-রূপ চন্দ্রের) কিরণে প্রাক্তিত কর্ণের নীলোৎপলের উপরে (ভোমার) নেত্র-ক্লপ চকোর ধাবিত হই-ডেছে। (নয়ন আকর্ণ-বিস্তৃত ব্লিয়া কবি লুপ্তোৎ-প্রেকা অবভারের সাহায্যে চকোর নীলোৎপলের মধুপানের জন্ম ধাবিত হইতেছে বলিয়া উৎপ্রেক্ষা করিতেছেন)। (তোমার) নাদিকা-রূপ স্বর্ণ-গিরি-শ্লের সমুধে আবার সিন্দুর-বিলুরূপ স্থ্য উদিত হইয়াছে ও সেথানে দিবারাত্রে (সম-ভাবে) ভোমার মুধ-রূপ পদ্ম প্রক্ষুটিত বৃদ্ধিবাছে ; (স্করাং) ক্রফবর্ণ ভ্ৰমর (অপর অর্থে-- শ্রীকৃষ্ণরপ ভ্রমর) উহাকে পরিত্যাগ করে না। (ভোমার) মুক্তা-হার-রূপ ভটিনীর কুলে (ভোমার) কুচবররূপ চক্রবাক-যুগল (ডোমার) অধরে (আরক্তিমতা-রূপ) অরুণ-কিরণ দেখিয়া দেখিয়া (ভৃগু হওয়ায়) শোক জানে না ;— গোবিন্দ-দাস ধীর-ভাবে এই কথা বলিতেছেন।

निहात ।>

এ ধনি না করু পসাহন সানং। এডক্ত নেহারি মুগধ মধুসুদন দিন রক্তনীং নাহি জান। ধ্রু॥ সিন্দুর-ভরুণ-অরুণ-ক্রচি-রঞ্জিত ভাগ স্থাকর-কাঁভি। সো ঘন চিকুর-ভিমির-ঘন-কুম্বিভ
ইহ অভি অপরুপ ভাতি ॥
লোচন-যুগল কমল কিয়ে কুবলয়
শঞ্জন চারু চকোর।
কাজ হ*-জালে পড়ত কিয়ে সংশয়
ততহিঁ ভ্রমই অলি-জোর॥
তবহু বেশ হাসি অধর দরশায়সি
অরুণিম কৌমুদি-কাঁতি।
সোহিত জনকে কি ফল পুন মোহন
গোবিদ্দাস নাহি ভাতি ॥৭॥১০৩৫॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৬৮ সংখ্যক পদ। ২।

'এ ধনি' ইত্যাদি (প-র) স্থলে 'এ ধনি না কক্ষ
পদাহ নয়ান' ক, ঝ, ঘ, চ। সংস্কৃত 'প্রদাধন'

শব্দের অপভ্রংশ হইতে 'পদাহন' শক্ষ ও উহার অস্ত্য
ন-কারের লোপ দারা 'পদাহ' শক্ষ দিছ হইলেও
এ স্থলে সাধারণতঃ প্রদাধনের কথা না বিলয়া নয়নপ্রদাধনের উল্লেখ করার সঙ্গতি দেখা দায় না;

স্তরাং প-র প্রির পাঠই সমীচীন বটে। ৩।

'স্কারি' প-য়; ৪। 'দিন রক্ষনী' স্থলে 'দীন
রক্ষনি' ঘ। ৫। 'চয়' প-র। ৬। 'কাকর' ঘ।

৭। 'পড়ত' ইত্যাদি স্থলে 'গড়ব যব আকুল' প-র।
৮। 'তবছ যে' স্থলে 'তবহি লো' ক, প-র;
'তবহি বে' খ।

টীক 1

১—৩। "এ ধনি" ইত্যাদি। হে স্থক্ষর !
আন্ত সাজ-সজ্জা করিও না; ইহা অর্থাৎ তোমার
আভাবিক রূপ দেখিরাই শ্রীকৃষ্ণ মোহিত হইরাছেন,
—দিবা কি রাজি জানেন না! (অর্থাৎ তিনি এরপ
মুখ্য হইরাছেন যে, উহার অতি স্থল জ্ঞানও বিশ্বা
ইইরাছে।)

ততো রূপোল্লাদেন অভি**দারোপ-**যুক্তং বেশং রচয়তি।

ष्ट्रज़े।

সিচয়মুদক্ষয় হাৰয়াদল্পম্।
বিলিখাম্যভূত-মকরাকল্পম্ ॥
ইহ নহি সঙ্কুচ পক্ষজ-নয়নে ।
বেশং তব করবৈ রতি-শয়নে ॥
রাধে দোলয় ন কিল কপোলম্ ।
চিত্রং রচয়াম্যহমবিলোলম্ ॥
তব বপুরস্থ সনাতন-শোভম্ ।
জনয়তি হাদি মম কঞ্চন গোভম্ ॥৮॥১০৩৬॥

টাকা

১-৮। "সিচয়"মিত্যাদি! (ছে রাধে!) খং छव इत्रमार (वरकारमणार) निष्ठमार (वन्नर) অরং ৰথা ভাৎ তথা উদঞ্য (অপদারয়); কন্মাৎ 🕈 -- অহং তত্ত্র অন্ততং (বিচিত্রং) মকরাকলং মকরা-कांत्र-िहळः विनिधामि (धनहन्तनत्रदमन त्रहन्नामि)। (इ श्रा-तात्। हेर (अब ध्रमांशत) निर मक्र ন সন্ধৃচিতা ভব: কম্মাং ? তব রতি-শয়নে (রতি-শ্ব্যাবিষয়ে) বেশং করবৈ (রতি-শ্ব্যোচিতং) বেশং রচরামীতি ভাব:। হে রাধে। ছং কপোলং (গগুং) न किन (मानम् (न भक्षानम्) व्यहः व्यवित्नानः का 5 का न वर्षा छा १ ७ था 6 जा १ तह स्रोम । करनान-দোলনে চন্দন-চিত্রজালমমূলরং ভাদিতি অন্ত সনাতনশোভং স্থচিরস্থারি-সওনং সনাতনাৎ শ্রীকৃষ্ণাৎ শোভা যন্ত তৎ শ্রীকৃষ্ণেন কৃত-শোভং ইতি ভাব: তব বপু: (অঙ্গং) মম হৃদি কঞ্ন লোভং (কামপ্যনিক্তিনীয়াং লালসাং) জনয়তি (উৎপাদয়ভি)। পক্ষে সনাতনেন কবিনা (স্থী-স্থানীয়েন) রচিতা শোভা ষত্র তং তাদৃশং বপুঃ।

অস্থাদ

>--
। হে প্রীরাধে। তুমি বক্ষঃস্থল হইতে
বসন কিঞ্জিৎ অপসারিত কর; আমি (সেখানে)

বিচিত্র মকর-চিত্র অন্থিত করিব। হে ক্ষণ-লোচনে। ইহাতে সস্কুচিত হইও না; আমি ভোমার রতি-শংঘাচিত বেশ রচনা করিতে চাহি। ভোমার কণোল সঞ্চালিত করিও না, আমি উহাতে হ্রি-ভাবে চিত্র রচনা করিব। অন্ত ভোমার স্থির-শোভা-যুক্ত দেহ আমার ক্রমের কি এক গোভ স্বন্মাইতেছে।

এই পদটি ষে শ্রীক্বফের উক্তি, তাহা একটু প্রাণ্ধান করিবেই প্রতীত হইবে; স্বতরাং পদের টাকা তদমুসারেই করা হইরাছে। বৈফবদাস বে কি জর ইহা স্থীর উক্তিরপে সন্নিবেশিত করিয়াছেন, তাহা বুঝা যার না।

তত্তাভিদারঃ।

বেলোয়ার।

ৰুন্দৰ্প তাল।

কঞ্জ-চরণযুগ যাবক-রঞ্জন

খঞ্জন-গঞ্জন মঞ্জির বাজে।
নীল বসন মণি-কিক্ষিণি রণরণি

কুঞ্জর-গমন দমন খিনং মাঝে॥

সাজলি শুদাম বিনোদিনি রাখে।

সক্ষহি রক্ত-তর্মিণি রক্তিণি

মদন-মোহন-মন-মোহন-ছাঁদে॥

কনক-কটোর চোর কুচ-কোরক

জোরে উজোরল মোভিম-দাম।

ভুজযুগ খীর বিজুরি পরি মণিময়

কন্ধণ ঝনকিতে চমকিত কাম।

মধুরিম হাস অ্ধারস-নিরসন।

দশন-জোভি জিভি মোভিম-কাঁভি।

স্ভুগ কপোল লোল মণি-কুণ্ডল

দশ দিশ ভরল নম্ন-"-শর-পাঁতি I

কাঁপলং কবরি ভালে অলকাবলি
ভাঙ্গু-ধসুয়া জন্ম মনমথ সেবি।
গোবিন্দদাস হৃদয়ে অবধারলং
মুরতি শিসার-দেবণ-অধিদেবি॥

11 60061611

পাঠান্তর

১। 'কুজার-দমন-গমন' ক, ধ। ২। 'ক্ষীণ' ক; 'ক্ষিণ' ঘ। ৩। 'মনমোহিনী' ধ; 'মনমোহিনি' ঘ; 'মন' চ। ৪। 'কুসুম' ঘ। ৫। 'ঝাঁপলি' ক, চ। ৬। 'অবধারলি' ক। ৭। 'দেবী' ধ।

বিহার্গড়া।১

এ ধনি আঁচিরে বদন ঝাঁপাউং।
লুবধল মধুপ চকোর বিধুস্তাদ
অনত অনত চলি যাউও॥
মুখ-মণ্ডল কিয়ে শরদ-সরোক্তহ
ভালহি অটমিক চন্দ।
মধুরিপু-মরমেণ ভরম যাহাঁণ ঐছন
ভাহে কি গণিয়ে মতি-মন্দ॥
জনি কহ গরবে পাণিতলে বারব
ও থল-কমল-উজোর।
তহিঁ নখ-চাঁদ-ভরম ভরে ঐছন
ভতহিঁ পড়ত জনিণ ভোর॥
ভাঙু-ধসুয়া কিয়ে স্তকু ধুনায়িদ
যছু শরে গিরিধর কাঁপ।
সো কিয়ে অতসু-পতগ-শিরে ভারসি
গোবিন্দাস-হিয়ে ভাপ॥১০॥১০৩৮॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র পুথির ১৬।৭ সংখ্যক পদ। ২। বিশিশঙ'ক ; 'বিশিশঙ'চ। ০। 'ৰাঙ'ক। ৪। 'ষরম'ক। ৫। -'বাহি' প-র। ৬। 'আকুল' প-র। ৭। 'বানি'ক।

টাকা

>— ০। "এ ধনি" ইতাদি। হে অকৰি। তুমি অঞ্চ দাবা বদন আবৃত কর; সুত্ত অমর, চকোর ও রাজ অভাক্ত হানে চলিয়া যাউক!

৪—१। "মুখ-মগুল" ইত্যাদি। (ইছা)
মুখ-মগুল, কি শরৎ-কালের পলা । ললাট, কি আইমীর চন্দ্র । যেখানে (চজুর-চূড়ামনি) শ্রীক্রফের
মনেই এইরূপ ভ্রম হয়, তাহাতে বৃদ্ধিনীনকে
(অর্থাং ভ্রমর, চকোর ও রাহকে) কি গণনা
করিব । অর্থাং ভ্রমর ইত্যাদির যে ভ্রম অধ্যেকে,
তাহাতে কি সন্দেহ আছে।

৮—>>। "জনি" ইত্যাদি। গর্ম হেতু বলিও
না বে, (উহাদিগকে) কর-তল দারা বারণ করিব;
(তাহাতেও অনর্থ দটিবে; কেন না,) তোমার দেই
কর-তল স্থল-পদ্মের ভায় উজ্জন (কান্তিবিশিষ্ট);
তাহাতে নথ-চক্র শোভা পাইতেছে। স্মৃতরাং ঐক্রণ
ত্রম-বশতঃ মৃথ্য হইয়া পাছে তাহারা বাইয়া পড়ে।

১২—১ং। "ভাঙ্" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা স্থীর পরিহাস-বাক্য শুনিরা ত্রা ক্ষিত করার, স্থী পুনরার পরিহাস করিয়া বলিতেছেন) হে স্থানিরি! ভোমার জ্র-রূপ ধন্থ কি জ্ঞু কম্পিত করিতেছ। বে ধন্মর শর-বর্বনে (অর্থাৎ কটাক্ষ-বালে) স্বরং গিরি-ধারী অর্থাৎ বীরশ্রেষ্ঠ শ্রীক্ষক্ষ কম্পিত হন, তুমি (মুশা মারিতে কামান দাগার স্থার) সেই শর কি জ্ঞু কন্দর্প-রূপ পতকের মন্তকে নিক্ষেপ করিতেছ। (ইহাতে) গোবিন্দলাসের সদরে ক্লেশ হুইতেছে।

यहरू ।>

হন্ত ন কিমৃ শস্থ রয়সি সন্ততমভিজন্ম।
দন্ত-বোচিরন্তরয়ভি শন্তমসমনলম্ ॥
রাধে পথি মৃক ভূরি সন্তমমভিসারে।
চারয় চরণামুক্তে ধীরং ক্রুমারে ॥ এ ॥
সন্তমু ঘন-বর্ণমভূল-কুন্তল-নিচয়ান্তম্ ।
ধ্বান্তং তগ জীবভূ নথ-কান্তিভিরভিশান্তম্ ॥

সসনাতন-মানসাত্ত ধান্তী গভ-শঙ্কম্। অকীকুরু মঞ্-কুঞ্জ-বসতেরলমক্ষম্॥১১॥১০৩৯॥

পঠিক্তির

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৬১ ও প-র পুথির ১৫।১৭ সংখ্যক পদ। 'স্হই' হবল 'স্হিনী' ঘ, চ; 'আশাবরী' প-র। এই সংক্রত পদের প্রত্যেক চরণে নিম্নলিথিত রূপ মাজা-বিভাগ দৃষ্ট হয়, য়ঝা,—০+৩+৩+৩+৩+৬+৯ লে দিরলি রের্মার তা 'রোচির স্তর্মতি' ক, চ; 'কিল' প-র-সা। তা 'রোচির স্তর্মতি' হলে 'কিচির স্তর্মতি' ক, চ, প-র সা, প-র; 'ফ্চিরস্তর্মসি' খা 'রুচি' পাঠে ছল্পোভঙ্গ ঘটে। ৪। 'ধীরে' ক, ঝ, প-র-সা। ৫। 'সস্নাতন্মান্সাপ্ত' (প-র) হলে 'সা স্নাতন্মান্সাপ্ত' ক, ৩, ঘ, চ,

विका

>-- b । "रुख" ामि । (ट् द्राट्स !) वस हेकि খেদে। সম্ভঙং (সভতং) অভিজ্ঞ : (অভিভাষিতং) किम् (कथः) न मध्तप्रति (न निवर्तप्रति) छत्। কিং দূৰণমিতি চেজজাহ—তব দক্ত-রোচিঃ (দশন-ছ্যুতিঃ) অনরং (বছলং) সম্ভয়সং (অশ্ধকারং) অস্তরয়তি (বিদ্রয়তি)। (দশন-কাশ্ব্যা) বিদু-রিভাদ্ধকারে বর্মনি তবাভিদার: স্থলভপ্রচারো ভবিষ্ণ ঠীতি ভাবঃ। হে রাধে! দ্বং পথি (বন্ধ নি) **অভিসা**র-বিষয়ে ভূরি (প্রভূতং) সন্ত্রমং (ভরং) মুক (ভাজ) কিঞ্চ ভব স্থকুমারে (স্থকোমলে) চরণাস্ক্রে (পাদাস্ডোকে) পদ্মবৎ স্ক্রোমলং পদ-ৰন্থমিত্যৰ্থ: ধীরং যথা ভাৎ তথা চার্য (স্ঞাল্য)। নমু দক্তকান্তির্মরা পিছিতা নথকান্তিপিধানে কোহভূ্য-भात रेखि **टाखजार—** छव धनवर्गः (दमप-ऋहि) অতুল-কুন্তল-নিচয়ান্তং (অনুপম-কেশ-সমূহ-প্রান্তং) সম্ভন্ন (বিস্তারয়) নখোপরীতি ভাবঃ। তেন কিং ভাদিত্যতাহ—তব নথ-কাম্বিভি: অভিশাষ্ট্ मिर्वात्रिष्टः श्वीखः (ठिमितः) कौरकु क्वकिः স্বৰূপং লভভাষ্। স্বস্তু সর্ক্রাশো ন কার্য্য: স্বীরা-

ভিদারামূকুদ্বাদিতি ভাব:। স্সনাতনং (সনাতনযুক্তং) মানসং (চিন্তং) যতাঃ সা দং অভ গতশহং
(বিগত-ভয়ং) ধণা ভাব তথা বাস্তী (মভিদরস্তী)
মন্ত্-কুঞ্জ-বসতেঃ (মুন্সর-কুঞ্জ-গৃহন্ত) অম্বং (ক্রোড়ং
মধ্যমিতি ভাবঃ) অস্পীকুরু (ম্বাকুরু)।

व्यक्त

১--৮। হে প্রীরাধে! হার! তুমি কেন
অনর্গন আলাপ একটু বন্ধ কর না? ভোষার
দশন-কান্তি প্রভূত অন্ধকার বিদ্বিত করিতেছে!
তুমি পথে অভিসারের প্রবন্ধ আশ্বন পরিত্যাগ কর
ও ভোষার স্কেমিল পদ-পঞ্চল ধীর-ভাবে চালনা
কর। ভোষার মেঘ-বর্ণ অন্তলনীয় কুন্তলের
প্রান্ত নথ-রাজির উপর প্রসারিত কর,—ভোষার
নথ-কান্তির ঘারা নিবারিত অন্ধকার জীবিত থাকুক।
সনাতন-গত-চিন্তা তুমি অন্ত নিঃশঙ্ক-ভাবে অভিদার
করিয়া মনোহর কুঞ্জ-গৃহের ক্রোড্কে অব্যন্ত কর।

(क्षांत्र 1>

কলয়তি নয়নং দিশি দিশি বলিতম্।
পক্ষমিব মৃত্ব-মারুত-চলিতম্।
কেলী-বিপিনং প্রবিশতি রাধা।
প্রতিপদ-সমূদিত-মনসিজ-বাধা॥ ধ্রু॥
বিনিদ্ধতী মৃত্ব-মন্থর-পাদম্।
রচয়তি ক্ঞর-গতিমনুবাদম্॥
জনয়তু রুদ্রগজাধিপ-মুদিতম্।
রামানন্দ-রায়-কবি-গদিতম্॥১২॥১০৪০॥

পাঠাক্তর

>। এই পদটি ১•১৬ সংখ্যক পদ-ক্সপে ইভি-পূৰ্বে উদ্ভ হইরাছে; স্ভরাং পাঠান্তর, টাকা ও অনুবাদ উক্ত পদে এইবা।

পূর্ব্বরাগাভিদার:।

শঙ্করাভরণ ।১

এ ধনি পছমিনি পড়ল অকাজ।
জনি ভেটহং হরি কুঞ্জকরাজও॥ ধ্রা॥
তুলুঁ গজ-গামিনি মতি অতি ভোর।
উচ কুচ-কুল্প-গরবে নাহি ওর॥
বৌবন-গরবে নাও হেরসি পছ।
পরিমলে বাসিত করসি দিগন্ত॥
যব তোহে করব অরুণ দিঠি-ভল।
নিয়ড়ে না হেরবি সহচরি সক্ষ।
বো ধর-নথর পরশ যব হোতি।
এ কুচ-কুজ্পে না রাধব মোতি॥
গণ্ডে করব যব দশনক ঘাত।
মুরছি পড়বি তহিঁ ধরণি নিপাত॥
বোবিন্দদাস যবল বিভাৱাব।
অধর-সুধা দেই তবহি জিয়াব॥

12012 0821

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৬।১০ সংখ্যক পদ। 'শহরাভরণ' হবে 'ধানশ্রী' প-র। ২। 'ভেটত' ক, ধ। ৩। 'কুঞ্জক রাজ' হবে 'কুঞ্জক মাঝ' ক, চ। ৪। 'গরুবে না' হবে 'মদে নাহি' প-র। ৫। 'রাথবি' ক, ধ। ৩। 'ভহিঁ' শস্ক ক, ধ পুথিতে নাই। ৭। 'ভবহুঁ' প-র। ৮। 'দেই ভবহুঁ' হবে গুনহে পুনহি' প-র।

প্রস্থা মিলনম্ ।

ধাননা ।

নূপুর-কলরব শুনইতে মাধবং

কুঞ্চক ভোই বাহার ।

চলইতে থলই বলইং সব ক্লাভরণ

ক্ষার নহড স্কারং ॥

সজনি অদভূত কামুক নেছ।
আগুসরি আদর ভাবহি বাদর
কি করব না পায়ই পেছ। এ ।
কর গহি সঙ্কেত লেই॰ পরবেশই
করু নিরজন নিজ হাত।
শীকরযুত সর-সিজ-দলে বাজইদ
মলয়ল লেপই গাত।
রাই পুন দরশ-পরশ রসে নিমগন
লাজহি অবনত মুখা।
হেরি রাধামোহন সোই স্প্শোভন ।
১ইবি পুরুবক দূখা । ১৪॥১০৪২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬২ ও প-র পুথির ১৫:৩৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চমকই' প-র-সা; 'চমকিড' প-র। ৩। 'কুঞ্জনে' প-র। ৪। 'পড়ই' ক। ৫। 'সাজার' ও, 'সজাল' প-র। ৬) 'পুন' প-র। १। 'করু নিরজন' হলে 'করু নীরাজন' ক, চ; 'করই বিজন' প-র। ৮। 'শীকর্মুড' ইভ্যাদি হলে 'শীক্বমুড সরসীদলে বীজই' ক, চ, প-র-সা। ৯। 'মুখ' ক, ব, প-র-সা, প-র। ১০। 'হেরি' ইভ্যাদি হলে প-র পুথিব পাঠ ববা— 'গোবিক্ক দাস হেরি সোই লোভন'। ১১। 'হুখ' ক, ব, প-র-সা, প-র।

শ্রীকৃষ্ণদ্যোক্তিঃ রূপোল্লাদঃ।

७वा वान ।>

তুয়া মুখ চাঁদ কমল আদি কবলই
নিবিড় চামর জিতি কেশ।
কনক কমল আলি জিনিং অলকাবলি
শ্রুতি অছু গিধিনি বিশেষ।
তক্ষণি-মুকুট-মণি গোরি।

জ্মধুগ নরতনে° কাম-ধসু⁸ কম্পিত পরাণ-পুতলি তুহু মোরি ॥ গ্রু ॥ **४क्ट नग्रन इन्हो**वत निन्हर গণ্ডহি জিডল মুকুর। নাসা ভিলফুল অধর পভারকুল প্রিত জিতি^৬ অমিয়া কপুর[৽]। কুন্দ করগ-বিজ্ঞ জিতি বিজ্ঞ-লাবণি কণ্ঠহি কম্বুক শোভা। বাছ মৃণাল করযুগ পক্ষজ मयू मन-मधुकत-(लांखा ॥ কুচযুগ কোক লোম ভুগঙ্গিনি ত্রিবলি ত্রিবেণী-বিলাস। মাঝ বর সিংহ নিতম্ব করি-কুম্ভ উরু রম্ভা করু উপহাস 🛚 পদ থল-কমল নথ জিত টাদ কত লাবণি অমিয়া-তরক। রাধামোহন পত্ত কংইতে ঐছন ভাবে অবশ ভেল অজ ॥১৫॥১০৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'অভি' প-র-সা। ৩। 'জেবুগ নরতনে'
হলে 'জেবুগল রাতনে' ক; 'জেবুগল রতনে' ও; 'জবুগল নবতেনে' চ। ৪। 'কাম-ধহ্ম' হলে 'তহ্ম
অতি' ক। ৫। 'ভিলক ফ্ল' ও। ৬। 'জিত'
ব, চ। ৭। কিপুরি' ক। ৮। 'বীজ' ক, ও।
১। 'অভি' ক, ধ।

शमनी ।>

নির্মিল কো বিধি কেলি-কলানিধি

মণ্ডল কিলোর কিশোরী।

সূহঁ লোহাঁং নির্ধি পুলককুলে আকুল

হাসি কহই গিরিধারী।

শুন শুন হুন্দরি রাধে। তুয়া মুখ-মাধুরি লেশ নাহি হেরি ক্মল মুকুরবর চাঁদে ॥ গ্রা যো বিধু শোভিত সোই কলঙ্কিত বিরহি-বিদারণ-শূল। নিরখি বদন তব সোই জুড়ায়ত ইথে শশি না ভেল তুল ॥ দরপণ মলিন পরশে যদি জল-কণ মাৰ্জ্জন-বিহিনণ অসার। তুয়া মুখ মলিন কবহুঁ নহে স্থল্দরি नोद्र निहर উक्षिश्रात ॥ নিতি নিতি নলিন মলিন জল মাঝহিং ८७ जरे जाल मधुभान। তুয়া মুখ-কমল বিমল নব পরিমল মঝু মন মধুপ সমান & শুনি ধনি বাণি অলস দিঠি-পঙ্কজ প্রিয় সহত্রি হেরি হাস। নিরখিতে শ্রাম পরস রসে মাতল কহতহিঁ নম্দন দাস ॥১৬॥১•৪৪॥ পঠিস্থির

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ছ্ইা'ক, চ। ৩। 'তুল'ক, থ, প-র-সা। ৪। 'বিনহি' প-র-সা। ৫। 'মলিন' ইত্যাদি হুলে 'মলিনী হুল মাজহি'প-র-সা।

नाकात्र ।>

শুন শুন নাগর সকল কহিতে পার
কে বুঝিবে বচন-তরক্ষ।
একে তুহুঁ বিদগধ ভাহে প্রিয়ন্দর্শ
তাহে কভ রসবতি সক্ষ।
মাধব রসিক রসায়ন-বাণী।
অঞ্চবধু-বদন , বিমল বর রাজীবিশ
ভাহে ভ্রমর তুহুঁ জানি। ধান।

আড় নায়ন করি আলক তিলক হৈরি

মুচ্কি মুচ্কি করু হাস।

সো হসনামত অধরে মিলায়ত

তঁহি মধু-মঞ্জুল ভাষ॥

তাপনি-তীর তার নিভি ধায়সি

তাহে এত শীতল দেখি।

স্বাধুনি দেবি সেবি কিয়ে স্থমধুর

পুছহ নন্দ এক সাথি॥১৭॥১০৪৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৪৬€ দংখ্যক পদ।
২। 'প্রিয় সম্বদ' ব। ৩। 'বিমলবর রাজীব' স্থলে 'বিমল স্বরাজিত' চ; 'বিমল রাজিত' প-র-দা। ৪। 'নন্দন' প-র-দা।

পুন*চ শ্রীকৃষ্ণস্থোক্তিঃ।

ফুলরি, আন-গুণে নহেই মোর বচন মধুর।
তুরা পরসাদে সাধ সব পুর ॥
গান-সঙ্গ কভুই না কছবি মোর।
টাদ না তেজই কবহু চকোর ॥
তুরা গুণ-গায়ন বয়নই হামার।
তুরা হুদি শীতল পঙ্কজ-হার ॥
তুহু দরপণই বিন্তু সব আদ্ধিয়ার।
মিছ নহ নন্দই কহয়েই কত বার॥
॥১৮॥১০৪৬॥

পঠিস্কির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৬৬ সংখ্যক পদ। ২। 'নহ'ক,চ, প-র-সা। ৩। 'কব'প-র-সা। ৪। 'বরান'চ। ৫। 'দরশন'ক,খ, প-র-সা। ৬। 'নক্ষন'প-র-সা। ৭। 'কহত'প-র-সা।

कृषानी ।>

হত রসে ভোর হেরি পাঁচ-বাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সন্ধান।
দেখ পুন চেতন হুত অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুম্ব॥
বিপুল পুলক বর স্বেদ-সঁচার।
চির থির নয়নে নার অনিবার॥
কাঁপই থরহরি সদ-গদ ভাষ।
হুত হুই। পরশনে কতন্ত উলাস॥
আন-আন-সন্ধ-রক্ষে জক অন্ব।
কো করু অমুজব প্রোয়-তরক্ষ॥
নিতি নিতি ঐচন হোয়ত বিলাস।
কব স্বের রাধানোহন দাস॥১৯১১০৪৭॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ইতিপুর্বে ৭৬২ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ভ হইয়াছে; স্বতরাং পাঠান্তর ও টীকা উক্ত পদে দ্রষ্টব্য।

বিহাগড়া ।>

রভি-ত্থ-শয়ন-নিবেশহি ত্রুদরি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কৌতুক
অমুগত নিধুবন কেলি॥
অদভূত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রামজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বর শোভন
অলখিত সহজহি হাস।
অনধিন বাত্ত-বল্লি অরু সব অঞ্প
তে উহু রহত উদাস॥

বিগলিত অপ্নরাগ অক্স অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত-কেশ। রাধামোহন চিতে নিভি নিভি ভাবই ঐছন প্রোম-আবেশ ॥২০॥১০৪৮॥

ইতি রূপোল্লাসঃ।

পঠিক্তির

১। এই পদটি ইতিপূর্বে ৭৮০ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ভ হইয়াছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে এইবা।

অথ রূপোলাদঃ প্রকারান্তরং যথা।

औभएकोत्रहऋः।

ৰৱাড়ী।১

নিরূপম সুন্দর পোরদ-চন্দ।

কুন্দ-করগ-বিজ্ঞ নিন্দি স্মুশোভিত

অভিশয় দস্ত স্কুন্দ॥

কুঝলুঁ কাম পুন সাধে।

অমিয়াক সার ছানি নিরমায়ল বিহি-সিরজন ভেল বাধে ॥ গ্রদ ॥ অকলত চান্দ ভানে বিধুস্তাদ ধাবই° পরশক লাগি।

নিকটহি বাই হেরি ভছু মাধুরি ভছু কর-ভয়ে পুন ভাগি ॥

প্রতিবোগি° আদি নাম-দোব শত গুণ ভেল° যাক ধেয়ালন।

সেই চরণ-গুণ কলিযুগ-পাবন কল্প রাধামোহন গানে ॥২১॥১০৪৯॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा भूषित ১९७৯ मरश्यक भन्न। २। 'किफ' थे। ०। 'बीक' कृष, भ-त-मा। ৪। 'বুৰণ' ক, প-র-সা। ৫। 'ধাওই' খ, চ। ৬। 'প্ৰভিবোগী' ক, খ। ৭। 'ভেলহিঁ' ক, চ। টীকা

৫—१। "বুঝলুঁ" ইত্যাদি। বুঝিলান, प्रशः कम्मर्भ সাধ করিয়া অমৃতের সারাংশ ছানিয়া লইয়া (তন্থারা ঐীগৌরালের রূপ) নির্দ্ধাণ করিল,— ব্রহ্মার ক্রষ্টে ব্যর্থ ছইল। (অর্থাৎ কন্মর্প ই কেবল এইরূপ অমৃতময় রূপ নির্দ্ধাণ করিতে পারেন; ব্রহ্মার এরূপ সাধ্য নাই। ১০৩৪ সংখ্যক পদ্মের ১—৩ পংক্তির টীকা জ্ঞের্য)। তুলনা কক্সন,—

'ধনি ধনি কো বিছি বৈদগধি-সাধে। মদন হুধা-রসে যো নিরমাওন

ভূষা মুথ-মণ্ডল রাধে॥ গ্রু॥ —প-ক-ত, ১০৩৪ সংখ্যক পদ।

>২—>৩। "প্রতিবোগি" ইত্যাদি। রাধা-মোহন ঠাকুর লিখিয়াছেন,—'প্রতিবোগ্যপ্রসিদ্ধানরো দোষা কবিতারাং সন্তি তথাপি ওচ্চরণগুণবর্ণনাং সর্ব্বে নিরন্তা ইত্যর্থ:।' অর্থাৎ কবিতার 'প্রতি-বোগী', 'অপ্রসিদ্ধ' প্রভৃতি দোষ বাঁহার চরণ-ধর্ণ-বর্ণন ধারা নিরন্ত হইরাছে।

শ্রীকৃষণস্থ রূপম্।

বীরাগ।১

স্ব-পতি-ধমু কি শিখণ্ডক চ্ডে।
মালতি-ঝুরি কি বলাকিনি উড়েং॥
ভাল কি ঝাঁপল বিধু আধ-ধণ্ড।
করিবর-কর কিয়ে ও ভূজ-দণ্ড॥
ও কি শাম নট-রাজ।
ভলদ কলপ-তক্র ভক্রণি-সমাজ॥ ধ্রু॥
কর-কিসলয় কিয়ে অরুণ-বিকাশ।
সুন্দি-ধুর্লি কিয়ে চাত্ত-ভাব॥

হাদ কি ঝরয়ে অমিয়া মকরন্দ।

হার কি তারক-দোতিকও ছন্দ ॥

পদ-তলে কি থল-কমল ঘন-রাগ।

তাহে কলহংস কি নুপুর জাগ॥

গোবিন্দদাস কহয়ে মতিমন্ত।

ভূলল যাহে দিক রায়ঃ বসন্ত ॥২২॥১০৫০॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র পুথির ২।ং২ সংখ্যক পদ। ২। 'উড়ে' ক, থ, চ, প-র। ৩। 'দ্যোতিক' ক, থ; 'মোতিম' প-র। ৪। 'রাজ' ক, থ, চ, প-র।

শ্রীকৃষ্ণস্থ অভিগারঃ।

তথা রাগ।১

কাননে সবছ কু ফুম পরকাশং।
শারি শুক পিককুল-মধুরিম-ভাষ॥
মউর মউরিগণ ঘন দেই নাদং।
শুনইতে কাতর ভেল উনমাদ॥
দেখ দেখ নাগর-রাজ।
চললহি সঙ্কেত-কুঞ্জক মাঝ॥ গ্রু॥
কিশলয়-পুঞ্ছি শেক্ষবর কেল।
তঁহি পরং বৈঠি পুন তর্মিত ভেল॥
পথ হেরি আকুল বিকল পরাণ।
অবহু মা ফুন্দরি করল পয়ান॥
অন্তরে মদন কয়ল পরকাশ।
চৌদিশে হেরই গোবিন্দদাস॥২০॥১০৫১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৪৭০ সংখ্যক পদ।

২। 'কাননে' ইত্যাদি স্থলে 'কাননে ভেল সব কুত্ম

বিকাস' প-র-সা। ৩। 'মউর' ইত্যাদি ছবটি পংক্তি

ইংল প-র-সা পুৰির পাঠ, বধা—

'শুষত ভ্ৰমর ভ্ৰমরি উত্তরোগ। মধু-লোভে মাতি রহু মানতি-কোগ॥ তাহি গমন কল বিদগধ-রাজ। লহকত নৃপ্র অধিরত বাজ॥ অমি অমি বৈঠলি নিবিড় নিকুলে। শেল বিছারল কিদলর-প্রে॥'

শ্রীমত্যাঃ আগুদুত্যাঃ উক্তিঃ।

গান্ধার ৷১

কালিয়-দমন জগতে ভুয়া ঘোষই সহচরি শুনইতে কাণে। ভুয়া সঞেং বাদ করিয়া ধনিং আওত मनम् । हाउँ वैं निर्देश । মাধ্ব অভয়ে কহিয়ে ভূয়া লাগি। ত্রিবলিক মাঝে লোম ভুজার্সনি হেরইতে তুহুঁ জনিং ভাগি ॥ ধ্রু ॥ ন্যুন-ক্মল পর যুগল-ভুজগবর কাক্ষর-গরল উগারি। মদন-ধনন্তরি আপে যব আওব সো বিশ্ব তগৃহি না সারি ॥ বেণি-ভুঞ্জগবর পিঠ পর দোলত हित्रिन अधिन शिशास । শুনইতে নাগ-দমন-ভমু কম্পিভ কহত্হিঁ গোবিন্দদাসে 12812০৫২1 পাঠান্তর

)। इंहा প-র-সাপুথির ১৬৭১ সংখ্যক পদ। २। 'সনে' क। ७। 'সভে' थ, थ। ८। 'क्रांनि' क। ९। 'समन' थ, ह।

টাকা

>—8। "কালিয়" ইত্যাদি। (প্রাচীন সমরে
সাপ্ডিয়াদিপের মধ্যে মাঝে মাঝে প্রতিথিকিতা
হইত; তাহাতে এক পক্ষ অপর পক্ষকে পরাজিত
করার অন্ত অনেক ভত্ত-মত্ত প্রয়োগ করিত ও গুণ
দেখাইবার অস্ত উত্তর পক্ষকে উত্তর পক্ষের প্রদত্ত

ভয়ানক ভয়ানক বিষধর সর্পের সহিত ক্রীড়া করিতে হইত। এই 'বাদ' বা প্রতিধন্দিতার নাম 'ঝাঁপান'। উভয় পক্ষ মাঁচার উপর চড়িয়া এই ক্রীড়া করিত বিলিয়া ইহাকে 'ঝাঁপান চড়া' বলা হইত। প্রীরাধার আপ্রদৃতী প্রীরাধার সহিত প্রীক্তক্ষের সম্ভোগক্রীড়াকে পরিহাস করিয়া 'ঝাঁপান চড়া'-রূপে বর্ণন করিয়া বলিতেছেন) হে প্রীক্তক্ষণ । তোমাকে জগতে (সর্পশ্রেষ্ঠ) কালিয়-নাগের দমন-কারী বলিয়া ঘোষণা করে—(আমাদিগের) স্ববী (প্রীরাধা) (এই কথা) কালে শুনিবা মাত্র ভোমার সঙ্গে প্রতিধন্দিতা করিয়া, কন্দর্পের ঝাঁপানে চড়িয়া (এথানে) আসিতেছেন।

🕶 রাগ ।১

রাইক আগমন-বাত।
শুনইতে উলসিত গাত।
তাহে কহই নব-কাম।
নাগ-দমন মঝু নাম।
খগ পতি রহু মঝু পাশ।
সবহুঁ সে করব গরাস।
বিকট মকর পুন হোয়।
এক না রাধব সোয়।
দৈব করয়ে যব আন।
দংশয়ে হামারি বয়ান।
রসনা-ধনস্তরি আগে;
ভহিঁ পুন অমিয়া লাগাবে।

নিরবিধ হোয়ব ভায়। জীতব এহিত উপায়॥ এত শুনি সহচরি গেল। গোবিন্দ অনুমতিং দেগ ॥২৫॥১০৫৩॥ পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'নব-কাম' স্থলে 'নব কান' চ, প-র-সা। ৩। 'গোবিন্দ অফুমতি' স্থলে 'গোবিন্দদাস মতি' ক।

শ্রীমভ্যাঃ অভিসারঃ। শীরাগ ।১ নিরুপম কাঞ্চন-রুচির কলেবর লাবণি বরণি না হোইং। নিরমল বদন হাস-রস-পরিমলে মলিন স্থাকর অন্বরে রোইণ। আজু বনি নব রঞিণি রাই। স্ফিনি সকল শিক্ষারিণি সাই ॥ লোলঃ অলক তিলকাবলি বঞ্জিত সীথহি° কাঞ্চন-কমল উদ্ভোৱ। লোচন-মধুকরি চলত ফেরি ফেরি শ্রুতি-কুবলয়-পরিমলে কিয়ে ভোরঃ শ্রামর-চীত-চোর কুচ-কোরক নীল নিচোল-কোরে করু বাদ। যাবক-রঞ্জিত অরুণ চরণ-তলে **कि** जित्रमञ्ज्व रशाविन्मनाम ॥२७॥১०४॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির থাৎ সংখ্যক পদ।
২। 'ছোর' প-র। ৩। 'মলিন' ইত্যাদি হুলে
'অম্বরে হুখাকর রোর' প-র। ৪। 'লোলত' পর।
৫। 'সিন্দুরহি' প-র। ৬। 'অক্রণ' ইত্যাদি
হুলে 'চরণ-সরোক্রছ' প-র। ৭। 'নিরম্ভ্র' শ্রে'
'নিরম্ভ্র' প-র।

সিমুড়া ।১ শরদ-স্থাকর-মগুল-মগুন थ धन यहन-विकाभर। অধরে মিলায়ত শ্যাম-মনোহর চীত চোরায়নিও হাস॥ আজু নব খ্যাম বিনোদিনি রাই। তমু তমু অতমু-যুথ-শত-সেবিত लाविन वंत्रनि ना यांहै ॥ ध्रम ॥ কবরি-বকুল ফুলে আকুল অলিকুল মধু পিবি পিবি উভরোল। সকল অলম্বতি কঙ্কণঃ ঝন্ধতি किकिनि तनत्रनि दर्गन ॥ পদ-পক্ষজ পর মণিময় নৃপুর পুরিত ংখঞ্চন-ভাষ। মদন-মুকুর জমু নখ-মণি-দরপণ नीइनि ' त्राविन्ममात्र ॥२१॥১०६०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৬০ সংখ্যক পদ। ২।
'মখল-মখন' ইত্যাদি ফলে 'বদনমগুল থগুন'
ইত্যাদি ফ; 'মগুল-মখুন বদন চাঁদ বিকাশ' প-র-সা।
ত। 'চোরায়লি' থ। ৪। 'করুণ' ক, থ। 'কনক'
ক, (পাঠান্তর)। ৫। 'রণঝণ' ক, থ (পাঠান্তর)
'বনঝন' প-র-সা। ৬। 'জিনী' প-র-সা। ৭।
'নিছনি' ক, খ, প-র-সা।

মার্ব।>
সম-বর বেশ-ভূবণ-ভূবিত-তমু
সখিগণ সঙ্গহি মেলি।
গজ-গতি নিন্দি গমন অতি ফুন্দর
কিয়ে জিত-খঞ্জন-কেলি॥
দেখ রাই করল অভিসার।
শিরিব কুমুম জিনি কোমল পদতল
বিপধে পড়ত জনিবার ॥ধা

বো থল-কমল-পরশে অতি কোমল
কামর ভই উপচন্ধ।
সো অব যাহাঁ তাহাঁ কঠিন ধরণি মাহা
ভারত বড়ই নিশঙ্ক॥
ঐছন ভাতি মিলল কুঞ্জ মাহা
দৃতিক যাহাঁ উপদেশ।
ভণ রাধামোহন তহিঁ যো আচরণ
হাম কিয়ে পায়ব উদেশ ॥২৮॥১০৫৬॥

১। এই পদটি ইতিপূর্বের্ম ১০১৭ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ধৃত হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর উক্ত প্রে অইবা।

(क्रांत्र ।

ছহ দোহাঁ দরশনে উলসিভ ভেল। আকুল অমিয়া-সাগরে ডুবি গেল একা इर्ख मिठि इर्ख मूर्य অবধি নাহিক স্থাৰ পুলকে পূরল ছত্ত ততু। বেতৃল স্থার ঠাট বৈছন চান্দের হাট ভার মাঝে সাজে রাধা কাতু॥ দোহাঁর রূপের ছান্দে মদন পড়িয়া কান্দে স্থাকর কিরণ লুকায়। দোহাঁর সুখের বাণী অমিয়া-অধিক শুনি সধীগণ শ্রবণ জুড়ায় । উলসিভ স্থীগণে দোহাঁর মাধুরী-গুণে নানা ফুলে দোঁহারে সাজায়। কপুর তাম্ব লৈয়া ञ्चगिक ठम्पन पिश বিশাখিকা দোঁহারে যোগায় ॥ মালিনা আইল ধাঞা ললিতা-ইন্সিত পাঞা বিনি স্বতে গাঁপি ফ্লহার। হিয়ার উপরে দোলে দেওল দোঁহার গলে দেখি আঁখি শীতল সভার ৷২৯৷১০৫৭৷

পাঠান্তর

১। 'হুহু''ক, চ। ২-৩-৪। 'দোইবি' হুলে 'হুইবি' ক, চ।

তথা রাগ।

রাধামাধব স্থমধুর-কেলি।

তুহুঁ রূপে তুহুঁ জন' নিমগন ভেলি ॥
উলসিত বিনদং নাগরবর কান।
কহই অমিয়া-বাণি হসিত-বয়ন॥
স্থানির কি কহব ভোহারি বাখান।
স্থানির কি কহব ভোহারি বাখান।
স্থানি জিতলি তুহুঁ ইহ পাঁচ-বাণ॥
স্থান্যাণ কামান নয়ান-বেশণে এক।
স্থার এক ইম্বত হাস পরতেক॥
করহি স্থাকুস্থমণ ভাহে এক হোয়।
ক্ষিত কেশ দরশে এক সোয়॥
স্থাহি অল কিরণ কত ভেল।
হেরি পরাভব ভাই৬ চলি গেল॥
কহ কবিশেখর কি কহব কান।
লাখ বয়ানে নহত পরিমাণণ ॥৩০॥১০৫৮॥

পঠিবির

১। 'গণ' ছ। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'শুকুমা' ক। ৪। 'কুম্ম' থ। ৫। 'কিরণে' থ, ছ। ৬। 'হোই' প-র-সা। ৭। 'পরিণাম' ক, খ, চ।

পুনশ্চ।
কীরাগ।>
তথামূখি কো বিহি নিরমিল বালা।
অপক্ষপ রূপ মনোভব-মঞ্চল
ত্রিভুবন-বীঞ্ছং মালা।ধ্রণ।
স্থান্দর বদন চারু অরু লোচন
কাল্যের রঞ্জিত ভেলা।

কনক-কমল মাঝে কাল-ভূজজিনি
ফ্রীযুত-শঞ্জন-খেলা।
নাজি-বিবর সঞ্জেণ লোম-লতাবলি
ভূজগি নিশাস পিয়াসাণ।
নাসা-খগপতি-চঞ্-ভরম-ভয়ে
কূচ-গিরি সান্ধিং নিবাসা।
তিন বাণে মদন জিতলণ তিন ভূবনে
অবধি রহল দউণ বাণে।
বিধি বড় দারুণ বধিতে রসিক জন
সোঁপল তোহারি নয়ানে॥
ভণয়েদ বিভাপতি শুন বর যুবতি
ইহ রস কো পয়েন জান।
রাজা শিবসিংহ রূপনারায়ণ
লছিমা দেবি পরমাণ।৩১॥১০৫৯।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৭৬ এবং প-র প্রির ১৬২ সংখ্যক পদ। ২। 'বিজয়ী' ক ; 'বিজই' চ, প-র-সা, প-র। ৩। 'দে' প-র-সা। ৪। 'বিয়সা' খ, ঘ। ৫। 'সাধি' প-র। ৬। 'তিজ্বল' ক। १। 'দৈ' ক ; 'দোউ' খ। ৮। 'কহ' প-র। ৯। 'যুব্তি' ক, খ, প-র-সা, প-র।

বিহাগড়া ৷১

শুনহ স্করি কি রূপ তোর।
হেরিতে হরল মরম মোর॥
মদন-সদন বদন-চাক্ষ।
ভূরু সে মুরতি স্থরত ফাক্ষ॥
অরুণ তরুণ অধর-কাঁতি।
নিন্দিত-মোতিম দশন-পাঁতি॥
ভীলং-কুস্থম-স্থম নাসা।
গ্রাম চাঁচর চিকুর-পাশা॥

ভামল কমল লোচন জোর।
তরল করল হাদয় মোর ॥
ক্রচির চিবুক মধুর গীম।
বিধিক শিলপও-শক্তি-দীম॥
কনক-দাড়িম কুচক জোরণ।
মুনিক মানস-চতুর-চোর॥
ভণয়ে বল্লভ না লভং বাক।
মদন দেয়ল জয়-পভাক ॥৩২॥১০৬০॥

পাঠান্তর

১। ইকা প-র-সা পুথির ১৪৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'তিল' ক, খ, প-র-সা। এই পদের প্রত্যেক
চরণে ত্রিমাত্রিক চারিটি গণ আছে; স্থতরাং 'তিল'
পাঠে ছন্দোভক ঘটে। ৩। 'সিলিপ' ঘ, চ। ৪।
'গুর' ঘ; 'রোর' চ। ৫। 'না লভ' ছলে 'না লব
বাক' ক; 'নাল' ঘ।

তিরোধা ।>

জাঁচরে বদন ঝাঁপায়হং গোরি।
রাজা শুনইছে চান্দকি চোরি ॥এ॥
ঘরে ঘরে পহরি ছোড়ি গেল জোর।
অবহি দেখব ধনি নাগরি ভোয় ॥
হাসি স্থামুখি না কর বিজোরি।
বাণিক ধনি ধনি বোলবি মোরি ॥
অধর সমীপ দশন করু জোতি।
সিন্দুর সমিপ বসায়লি মোতি ॥
শুন শুন স্থন্দরি হিত উপদেশ।
অপনে হোয়ে জনি । বিপদক লেশ।
চান্দক আহয়ে ভেদ কলছ।
ও যে কলছিড । ভূতুঁ নিকলঙ্ক ॥
রাজা শিবসিংহ লছিমা দেবি সল্টং।
ভপরে ব্রিভাপতি মন্ত নিশ্ব ॥৩০।১ • ৬১।

পাঠান্তর

১। ইহা পার-সা পুলির ১৪৭৮ ও পার পুলির ১৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝালহ' ক; 'ছালাহহ' ধ। ৩; 'ডনইতে' ক; 'শুনিয়াছে' পার; 'শুনল' পার-সা। ৪। 'পাহরি' ইত্যাদি হলে 'পাহর গোলছি জোর' পানর। ৫। 'দেখৰ ধান' হলে 'না দেখিল' পানর। ৬। 'কর বিজোরি' হলে 'করবি জোরি' ঘ; 'করবি রোরি' চ। 'হাদি' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির হলে পানর পুলির পাঠ, যধা—

'হাসি হাসি স্থামূখি না করবি আন। সাথি দেওব ইথে তোহারি বয়ান॥'

৭। 'মোরি' গুলে বিভাপতির অধিকাংশ মুদ্রিত সংস্কৃত্যে 'গোরি' পাঠ দৃষ্ট হয়, কিন্ধ আমরা 'থোরি' পাঠ কোন পুণিতেই প্রাপ্ত হই নাই। ৮। 'দশন কর্ম' স্থলে 'দশনক' থ। ৯। 'সমিপ বসায়লি' স্থলে 'সীমে প্রসারক' প-র। ১০। 'জানি' প-র-সা। ১১। 'কলকী' ক; 'কলকি' ম, চ; 'কলকিনি' প-র-সা। ১২। 'দেবি সৃদ্ধ' স্থলে 'ক্রা' প-র।

১--২। "আঁচরে" ইত্যাদি। ছে গৌরাদি!
তুমি অঞ্চল ধারা বদন আফাদিত কর; (কেন না)
রাজা চালের চুরি শুনিতেছেন, অর্থাৎ চালের চুরি
শুনিয়া উহার বিচার করিতেছেন!

৩—৪। "বারে" ইত্যাদি। (চান্দের চোর কোথার আছে,—তাহা অঞ্সন্ধান করার উদ্দেশ্তে) প্রহৃতী প্রতি বর দেখিয়া (চান্দের চোর না পাইরা) ছাড়িরা গেল; হে স্থলারি নাগরি! (সে) এখনই ভোমাকে দেখিতে পাইবে।

e-- । "হাসি" ইত্যাদি। হে স্থামূথি!
(তুমি) হাসিয়া বিছাৎ (প্রকাশ) করিও না;
(আমার কথার উপকারিতা বুঝিতে পারিয়া) আমার
কথার ধন্ত ধন্ত করিবে!

ততঃ সম্ভোগঃ।

(क्शंत 1)

স্থদ বৃশ্বাবন স্থময় শ্রাম। স্থময়ি রাধা ভহিঁ ব অসুপাম । छुएँ भिल (कलि-विलान कक़। ছুত্ অধরামতে ছুত্ মুখ ভরু । ছহু অঙ্গ পুলকিত বিলাসে বিভোর। विनिष्टिन द्रांधा विनिष्धा-टकांत्र॥ प्रहाँ (किन-পिঙিড রূপে গুণে সম। বিলাস রভস•-রসে কেহ নহ° কম ॥ হ্বরত মুরতং হুহঁ করু পরকাশ। রতিপতি-হৃদয়েত• লাগত৽ তরাস 🛭 অদভূত পরিরম্বণে ধনি লাজ। নৃপুর রুণু রুণু কিকিণি বাজ। এক-ডমু এক-মন একহি পরাণ। ছুত্ত তমু এক ভেল বিহি-নিরমাণ ॥ শ্রম-জলে ভীগল ছহ জন-গায়। তুত্ত রতি-সায়রে ওর না পায় ॥ ष्ट्रहर्ष (मार्डा १) हिन्द नमाधन १) (किना ष्ट्रं जन-रमवत्न रमध्य रम्म ॥०८॥১०७२॥

ইত্যাদি রূপোল্লাস:। ইতি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্দ্দশপল্লব:।

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৭৯ সংখ্যক পদ।

২। 'অতি' প-র-সা। ৩। 'রভসে' च; 'বিক্রম'
প-র-সা। ৪। 'নহে' ক। ৫। 'রুকত' চ;
'রুরতি' প-র-সা। ৬। 'ফ্ররত' খ, চ; 'ফ্রর' ঘ।
৭। 'লাগল' ঘ, প-র-সা। ৮। 'রুপুরুপু' ছলে
'ক্র্রুপু' ক; 'রুপু রুপু' খ। ৯। 'ভিগল' ক, খ,
প-র-সা। ১০। 'হুইা' ক। ১১। 'চুছি স্বাধ্ন'
ছলে 'চুছন স্বাধ্নি' প-র-সা।

অথ নিত্যরাদঃ দর্বকালোচিতঃ।
তছচিতঞ্জীগোরচন্দ্রঃ।

ছ্ড়া ।> দেখত বেক্ত গোর-চন্দ বেঢ়**ল** ভক্ত^২-নখত-বুন্দ অধিল-ভুবন উঙ্গরকারি

কুন্দ°-কনক-কাঁতিয়া। অগতি-পতিত-কুমদ-বন্ধু হেরি উছল রসক সিন্ধু° হৃদয়-কুহর-তিমির-হারি°

উদিত দিনহিঁ রাতিয়া।
সহজে স্থানন মধুর দেহ
আনন্দে আনন্দে না বান্ধে থেহ
চুলি চুলি চুলি চলত খলত

মত্ত-করিবর-ভাতিয়া।
নটন ঘটন ভৈ গেল ভোর
মুকুন্দ মাধব গোবিন্দ বোল
রোয়ত হসত ধরণি খসত

শোহতী পুলক-পাঁতিয়া। অসম-মহিমা কো কর্তুট ওর নিজ পর ধরি করইণ কোর প্রেম-অমিয়া হরধি বরধি

তরখিত মহি মাতিয়া।
বো^{১১} রসে উত্তম অধম ভাস
বঞ্চিত একলি গোবিন্দদাস
কো ভানে কি^{১২} খেনে কোন গঢ়ল^{১৩}
কাঠ-কঠিন ছাতিয়া ॥১॥১০৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ৬/৪২ ও ১৫।১ সংখ্যক পদ। ২। 'বেকড' প-র, ১৫।১। ৩। 'রুক' প-র, ১৫।১। ৪। 'হেরি উত্তল রসক সিত্র' ব্লে 'হেরি উছল রসিক্সিক্ন' ক, ধ; 'হেরি উছল রসিক্সিক্ন' ষ; 'হেরতউ ঐছন' ইত্যাদি প-র। ৫। 'হ্দর' ইত্যাদি স্বলে 'তিমিরহারি উজরকারি' প-র ১৫।১। ৬। 'ঢুলি ঢুলি ঢলি' স্বলে 'ঢুলি ঢুলি' ক, ধ। ৭। 'শেভত' ক। ৮। 'মহিম' ক, ঘ; 'মহিমা' ধ, চ; 'মহি' প-র ৬।৪২; 'অসিম' প-র ১৫।১। ৯। 'করু' প-র ১৫।১। ১০। 'করত' থ, প-র। ১১। 'তেশ' ক, ধ। ১০। 'কোন গঢ়ল' স্বলে 'কোন পড়ল' প-র ১৫।১।

শীরাপ ।>

মুরলি বোলায়ভ পরম মধুর মৃত্ व्यथन-द्रशंभदत भतिशा। ধ্বনি শুনি ধরণি ধরলং কুল-কামিনি চোঙক পড়ল জগ ভরিয়া॥ नीभ निकरि नव त्रिशा। পদের উপরে পদ তরুমূলে শ্রামচাঁদ লীলা-ললিত তিরিভঙ্গিয়া° ॥ধ্যা পঞ্চানন চস্তু-রানন নারদ ধ্বনি⁸ শুনি স্থ্রপতি ধন্দে। ফল ফুলে মগন मकल वृन्मावन তরু সঞ্জে ঝরে মকরন্দে। গুনিয়া বংশীর গান মুনিজন ভুলে ধ্যান (यांगीख मूनीख मूक्रहांग्र। রায়শেখর বোলে বাঁশী শুনি কে না ভুলে কুলবজী কি বাঁচিবে ভায় ॥২॥১०৬৪॥ পঠিভির

>। ইহাপ-র-সাপুথির >৪৮> সংখ্যক পদ।

र। 'ধরল' ক। ৩। 'ত্রিভলিরা' ক, খ, খ,
প-র-সা। ৪। 'ধনি' খ, চ। ৫। 'ফুলফলে' খ।

। 'ভাল' খ। ৭। 'বানী খনি' ছলে 'ধ্বনি

ভিনি' প-র-সা।

মাযুৱ।১ नव-योवनि धनि क्य किनि लावनि মোহিনিই বেশ বনায়লিই তাই। মনমথ চীত ভাত নাহি মানত কুঞ্জরাজ পর সাজলি রাই॥ চললि® निक्छ क्श्वत-वत्र-गमनो। যুবভিযুপ মেলি" গাওত বাওত চলত চিত্র-পদ বিদগধ রমণী ॥ধ্রু॥ হেরই শাম হ্রত-রণ-পণ্ডিত रांत्रि यपन यरप यांजलि वाला। রতি-রণ-বীর ধীর সহচরি মেলি বরিখয়ে নয়নে কুস্থম-শর-জালাদ ॥ নয়নে নয়নে বাণ ভুজে ভুজে সন্ধান তমু তমু পরশে নাহিণ জন্ন ভন্স। গোবিন্দদাস চিতে > অব নাহি সমুঝল বাজত কি কিণি কে'ন্>২ ভরজ ॥ 11913 - 961

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রির ৪৫৮ ও প-র প্রবির ৪২০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মোহন' ক; 'মোহনী' চ; 'মোহনী' প-র-সা। ৩। 'বনারই' প-র-সা। ৪। 'মিললি' প-র-সা, প-র। ৫। 'মুবভির্থ মেলি' ফলে 'ম্বভির্ত মেলি' ক, ব; 'য়্বভির্থ শভ' প-র-সা, প-র। ৬। 'হেরইভে' প-র। ৭। 'মাভল' ক। ৮। 'মালা' প-র। ৯। 'বছনে' প-র। ১০। 'পরশে নাহি' ফলে 'পরশনে হেরি' প-র। ১১। 'কেই' প-র। ১২। 'কৌন' ক।

विद्यात्रहा ।>

দেখ রিং সধি শ্রাম-চন্দ ইন্দু-বদনি রাধিকা। বিবিধ বস্ত্র স্বৃতি-রুন্দ গাওরে রাগ-মালিকা। মন্দ-প্ৰন কুজ্ম-গ্ৰম-মাধুনী।
মদন-বাজ নব সমাজ গ
ভ্ৰমনা-ভ্ৰমিল-চাভুনী ॥
ভ্ৰমনা-ভ্ৰমিল-চাভুনী ॥
ভ্ৰমনা-ভ্ৰমিল-নাল গতি ছলাল
নাচে নটিনি নটন-মূব ।
প্ৰাণ-নাল কর ছাভ
রাই ভাহে অধিক পূব ॥
অক্সে অঙ্গে প্ৰদেশ ভোৱ

কেন্তু রহত কাত্ত কোরণ। জ্ঞানদাস কহত রাস বৈছন জলদে বিজুরি জোর॥

181120661

পাঠাস্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮২ ও প-র পুথির ৩৮/১২ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখ রি' ফ্লে 'দেথবি' ক; 'দেখ রী' খ, ঘ; 'দেখ দেখ' প-র। ৩। 'নব সমাল' ফ্লে 'রস্তম মাঝ' খ, ঘ। ৪। 'ল্রমরা ক্রমরি' ফ্লে 'ল্রমর ল্রমণ' ক, চ। ৫। 'কেছ্' ইত্যাদি ফ্লে 'দোইার আনন্দে নাহিক ওর' প-র।

৫—৮। "য়য়য়" ইত্যাদি। কুঞ্জ-গৃহ য়য়-পবনবৃত্ত,—উহাতে কুস্থম-গদের মাধ্ব্য (রহিরাছে);
মদন-রাজ অর্থাৎ মদনের অধীখর ঐক্কয় ও নববৃব্তিগণের সমাজ অমর-অমরীর চাতুর্য্য-শালী।

টাকা।

৯—১২। "তর্গ" ইত্যাদি। চঞ্চল তাল ;—
মোহন গতি,—নটন-নিপুণা (ব্রজালনা) ও নটন-বীর (প্রীকৃষ্ণ) নাচিতেছেন; তাহাতে প্রাণনাথ (প্রীকৃষ্ণকে) (অনক্তর্সাধারণ) রূপ-শুপের ছারা হত্তে করিয়া ক্ষর্থাং বশীকরণ পূর্ব্বক প্রীরাধা (সেই রাস-লীলায়) শ্রেষ্ঠ (স্থান) পূর্ব করিতেছেন। তথা বাগ ৷১

মত্ত মধুকর বিবিধ গুঞ্জর **टकंकिना शक्षम शांग्र।** নানা তরুকুল বিক্সিত ফুল খসিং পড়ু শ্ঠাম গায়॥ শ্যাম গোরি গোরি শ্যাম निष्टत हक्ष्म भ्रमि। কনক-ল ভায় বেতৃল থৈছে रेख नीलम् ।। কবহু গোরি ভোরি চলভ কৰছঁ চলভ কান। রুসের আবেশে অবশ অঙ্গ ওর নাহিক পান ॥৫॥১০৬৭॥

পঠিস্কির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থি'থ।

তথা রাগ ৷১

নব নায়রি নব নায়র নৌতুন নব নেহা। তাঁখে তাঁখে নিমিখে নিমিখে विद्वन निक (महा । নোতুন গণ নোভুন বন নৌভুন সখি গানে। ভা দিগ দিগ ভা দিগ দিগ **(था मिग मिगर (था मिग मिग** তাল ফুকারই গামে 🛭 নোতুন রস কেলি-রঙ্গ নৌতুন গতি ভালে। জিমি ধো জিমি থো জিমি জিমি

বাৰত সুধি তালে ॥

हक्षम मनि-

কুণ্ডল চল

চঞ্চল পট-বাস।

দোহঁ দোহাঁ-কর ধরিয়া নাচত

ছেরত অনন্তদাস ॥৬॥১০৬৮।

পাঠান্তর

১। প-র-সা পুথিতে এই পদটি ১০৩৭ সংখ্যক পদের শেষাংশক্ষপে লিখিত হইয়াছে। ২। 'তা দিগ দিগ'ইত্যাদি স্থলে 'তা দিগ দিগ থো দিগ দিগ'ক, প-র-সা। ক ও প-র-সা পুথির তালের বোল অপেকা ধ, ব ও চ পুথির বোল বিগুণ আছে; স্থতরাং উহা 'চতুরক' গীতের বোলের ভায় 'হন্' লমে অর্থাং বিশুণ ক্রত-ভাবে উভারিত হইবে। ৩। 'ফুকরই' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'তালে' ব, চ। ৫। 'স্থিমি' ইত্যাদি স্থলে 'দ্রিমি ধো দ্রিমি দ্রিমি, খো দ্রিমি খো দ্রমি' থ, ব। এই পদটির প্রত্যেক অর্থা চরণে চারিটি ত্রিমাত্রিক গণ আছে; স্থতরাং ধ ও ব পুথির চতুর্মাত্রিক বোলে ছলোভঙ্গ ঘটে। ৬। 'বাওল'ক, ধ, ব, চ। ৭। 'ভালে' ব, চ। ৮। 'দোই দোই।' স্থলে 'হুহে ছহা' ক। ২। 'নাচমে' ক, চ।

মলার শবরাভরণ ৷১

বাজত তাল ব্ৰবাৰ পাথোয়াজ নাচত যুগল কিশোর।

আল বেলাহেলি নয়ন চূলাচূলি হুহুঁ দোহাঁং মুখ হেরি ভোর ॥

চৌদিগে স্থি মেলি গাওত বাওত করিছ করিছ করি জোর।

নব্দন পরে জন্ম তড়িত লতাবলি হুহুঁ রুপণ অধিকঃ উলোর॥

বীণং উপাল মুরজ সর-মগুল বাজত পোরহি পোর।

যৈছন চাক্ষ চকোর 191১০৬৯।

রাই-মুখ নির্থই

পনন্তদাস-পচ্

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৮৪ সংখ্যক প্রদা ২। 'ছহাঁ'ক। ৩। 'রপ'ক, থ, প-র-সা। ৪। 'জডি'ক, থ; 'আতি' ব, চ। ৫। 'বীণা' থ, ব, প-র সা।

মলার ৷১

শ্রাম রাস-রস-রক্সিয়াং।

নব যুবরাজ যুবতি সঙ্গিয়া ॥এ॥

চঞ্চল-গতি

চরণে চলত

সঞ্জিত হারজিয়া।

নাচে মনোহর-গতি° অস-ভবিয়া॥

বীণ অধিক

বিবিধ যন্ত্ৰ

বাওয়ে উপান্ধিয়া।

মধুর তাতা

टेब टेब टेब

বোলতঃ মুদলিয়া॥

কাসু লপত স্থরণ মোহন

লাল মঞ্জির মান রি॰।

রুচির তাতা থৈয়া থৈয়া

গাওত স্থর তানণ রিদ॥

ব্যভামু-নন্দিনি কিশোরি গোরি

গাওত অমুপাম রি ।

শিবরাম আনদেদ নাহিক ওর

হেরত রাস-ধাম রিণ ॥৮॥১০৭০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'রাস-রন্ধিয়া' ক, চ, প-র-সা; 'সারন্ধিয়া' থ।
৩। প র-সাপুথিতে 'গোরি' শব্দ দৃষ্ট হয়। ৪।
'বলে' থ। ৫। 'স্র' ঘ, চ। ৬। 'রে' ক।
৭। 'স্তান' ক, চ। ৮-৯-১০। 'রে' ক।

বিহাগড়া।১

বাজে গিড়ি গিড়িং দিং জাম্ও জাম জিমি জিমি কট দিদি জাম্ উঘটতঃ পটতাল মুদক

রজ রভস-মূল ॥ধ্রা॥

তা তা থোলি থোলি ধোলি ননন ঝিঝি ননন কাঙ্কত নন ঝনন ননন

মনমণ-মন ভূলা। ছর্ম প্রশ সরস হাস নয়ন ছয়ল মরতি-বিলাস ১৯ল প্ট-অঞ্চল মণি-

কু গুলতেঁ ১০ ফৃল ১৭ ৯ ভারক ১৩-মণিহারক ১৫ শশি ঝিলমিলি দপিদার ১৫ কলসি ১৫ পুঞ্জ পুঞ্জ মঞ্জুল অতি

গুঞ্জতি অলিকূল> । তাতা থৈথৈ দাদ নপুর দ গান মান তানং মধুর ধ্বনি শুনি শিবরাম-অন্তরে আনন্দেতেং ভূল ॥৯॥১০৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পিড়ি গিড়ি' হলে 'গ্ড়ি গ্ড়ি' ব, চ। ৩।
'দিং আম' হলে দাং' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'ও ঘটড' প-র-সা। ৫। 'তোল' ক, চ; 'তোলি'
খ, প-র-সা। ৬। 'বিবি' ক; 'বি বিশ্' ব; 'কি
কি' চ। ৭। 'নন বনন' হলে 'নানা বন' প-র-সা।
৮। 'ভ্ল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৯। 'ছলর' ক;
'ছল' চ। ১০। 'রতি' চ। ১১। 'কুঙলাতে'
ক, চ, প-র-সা; 'কুঙলতে' ব। ১২। 'হল' ক,
খ, চ, প-র-সা। ১০। 'ভাকর' ক। ১৪।

'মণিহার' ক, থ, চ, প-র-সা। ১৫। 'হাপ' প-র-সা। ১৬। 'কলসী' ক, খ, 'কলসি' চ। ১ং। 'অলিকুল' ক, থ, চ, প-র-সা। ১৮। 'থৈ' খ। ১৯। 'ন্প্র' ক; 'স্প্র' খ, প-র-সা। ২০। 'তাল' প-র-সা। ২১। 'আনন্দিত' প-র-সা।

কোর ৷১

राटक धुःनिः धुःनिः वाटक श्रीतर ध्रुश्तिः খটত্তাং ভাগর্ধো নাগর্ধো নাগর্ধো । ধুকা ধুদা বে ।। গ্রা বীণ উপান্ধ তাল সর-মণ্ডল বাজত ডম্ফ রবাব যে। বাজে থো দ্রিমি দ্রিমিধো তথৈ তথৈ তথ ভা থো থো বোল মুদক যে॥ কিন্ধিণি কিনিকিনি কনক-কঙ্কণ यननन मक्षित्र-त्राव (य। স্থঘড়-শিরোমণি রাধা-কর ধরি নাচত কহই প্রবন্ধ যে। কবহু তাল কহই নট-শেধ্য কবহু চন্দ্ৰমূখি গাওই বে। मगरन स्थाक्त्र আনন্দ-সাগরে भिवत्रामताम मनः **खाउँ** रय ।

পাঠান্তর

12061061

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'খটা' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'নাগর্ধো' শব্দ ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৪। 'ক্রে' খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৩। 'ভাও' ক, খ, ঘ, চ।

সিমুড়া ।১

জলদহি জলদ বিজুরি দিঠি-তাপক
মরকত কনয় কঠোর।

এ হুহুঁং তকু মন-নয়ন-রসায়ন
নিরুপম নওল কিশোর ॥
দেখ সথি রাধামাধব-ভাতি।
কো বিছি নিরমিল কোন ঘটাওল
শ্যামর-গোরি-সম্লাতিঃ ॥
ধর্ব হুহুঁ হুহুঁ হেরি নয়ন-অঞ্চলি ভরিং
আন-আনু পিবইতে চাহ।
তমু তমু পৈঠত সঘন আলিজনে
কৈছে হোয়বুদ নিরবাহ ॥
আরতি অধর-সুধারস পিবি পিবি
ছুহুঁক পিরিভিং-উনমাদ।
গোবিন্দদাস কহং অধিক রস-আবেশেঃ
কিয়ে না করু পরমাদং ॥১১॥১০৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮৮ ও প-র পুথির ১২।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ ছহুঁ' হলে 'এতহুঁ' ক। ৩। 'দেশ স্থি' ক, খ, च, চ ও প-র পুথিতে নাই। ৪। 'সাজ্যাতি' চ; 'সাজাতি' প-র। ৫। 'পুরি' প-র-সা। ৬। 'হহু দোহা' च; 'হহু রূপ' প-র। १। 'সঘন আলিকনে' হলে 'সঘনে আলিদিত' ক, খ, च, চ, প-র-সা। ৮। 'কৈছে হোরব' হলে 'কৈছে হোরত' ক, খ, চ, প-র-সা; 'পুন কৈছে হোরত' ক, খ, চ, প-র-সা; 'পুন কৈছে হোরত' ক, খ, চ, প-র-সা; 'পুন কৈছে হোরত' প-র। ৯। 'মদন' প-র। ১০। 'ভব' প-র। ১১। 'অধিক' ইত্যাদি হলে 'হেন লর মন্তু মন' প-র। ১২। 'কিরে' ইত্যাদি হলে 'ঘতি রসে অতি প্রমাদ' প-র।

টাকা

>-- 8। "जनपरि" हेलापि। जनम जनपरे (पर्शार जीवन इहेरनश्च जनपत्व जीवहे निकृष्टे); विद्युर (उद्मन इहेरनश्च) मृष्टित्र नीषांजनक; मत्रक्ल (৩) স্বর্ণ (বথাক্রমে শ্রীক্লফ ও শ্রীরাধার অঙ্গকান্তির তুলনাস্থল হইলেও) কঠিন; (কিন্তু) এই উভরের দেহ—নয়ন ও মনের আনন্দজনক; (স্ক্রাং) নবীন কিশোর ও কিশোরী উপমা-রহিত।

कारमाम ।>

একতাল ধরা।

কদম্ব-ভরুর ডাল ভূমে নামিয়াছে ভাল ফুল ফুটিগ়াছে সারি সারি। পরিমলে ভরল मकल वृद्धावन কেলি করে ভ্রমরা ভ্রমরা॥ রাই কামু বিলসই রঙ্গে। কিয়ে হুত্ঁ বাবণি ेरवमगिथ धनि धनि॰ মণিম্য় অভরণ অসে ॥ধ্রু রাইর দক্ষিণ কর ধরি প্রিয়ণ গিরিধর मधूत भधूत छिल याग्र। আগে পাছে সখাগণ করে ফুলং বরিষণ **टकान भश्री ठामत एलाग्र**॥ চন্দ্ৰ-কৱে স্থলীতল পরাগে ধৃসর স্থল মণিময় বেদার উপরে। রাই কামু-কর ধরিও নৃত্য করেণ ফিরি ফিরি পরশে পুলক অক্স ভরে ॥ করে করি স্থীগণ युश्यम हन्मन বরিধয়ে ফুল গন্ধরাকে। खाम-ज्ञल विन्तृ विन्तृ (माएछ त्राहेश्- मृथ-हेन्तृ व्यक्षत्त्र भूत्रलो नाहि 🗥 🗀 কুন্তুমিত বৃন্দাবন 4019-12. 154 পরাগে ভরল>> অধ্যকুল। মন্দির স্থন্দর যেন রতনে খচিত ৫১ম ন্রোন্তম-মনোরপ পূর্ব ৷ ১২॥১০৭৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র সা পুঞ্জির ১৪৮৯ ও প-র পুঞ্জির

২৫।১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরে ছ্র্ছ' ছলে 'কিবা দ্ধপ' প-র-সা। ৩। 'কিরে ছ্র্ছ' ইত্যাদি পংক্তিবর দ্বলে প-র পুথির পাঠ যথা,—

'নৃত্যাবেশে বৈদগধি ধনি ধনি ম্বদনি অভরণ বাজে আজে আলে । জ্লা' ৪। 'পছ' প-র-সা। ৫। 'পুষ্প' প-র-সা। ৬। 'জোড়ি' প-র-সা; 'জুড়ি' প-র। ৭। 'নৃত্য করে' ছলে 'গতি চিঅ' প-র। ৮। 'তহু' প র-সা, প-র। ১। 'ধরে' প-র। ১০। 'করে' প-র-সা, প-র। ১১। 'ভরল' ক, ধ, চ। ১০। 'কুম্মিড' ইত্যাদি কলিটির হলে প-র পুথির পাঠ, যথা,---

> 'হাস বিলাস রস কলা স্থমধুর ভাষ লোচনে মোহন লীলা ধরু। ছহঁ রূপ লাবনি হেম মরকত জিনি নরোত্তম মনোরণ ভরু॥'

C#RT# 13

কানন-ভ্ৰমণ নটন ছহুঁ মেলি।
কাভিশর প্রমযুত ছহুঁ হৈ গেলি।
ছহুঁ জন বৈঠল মণিময় কুঞ্জে।
কুস্ম-শেজ পরে আনন্দ-পুঞ্জে।
চামর বীজাইং কেহ ছহুঁ অক্ষে।
কোই তামুল দেই প্রেম-ভরজে।
কত কভ কোতুক হাস পরিহাস।
নিরখই আনন্দে উদ্ধব দাস।১০॥১০৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯• সংখ্যক পদ। ২। 'বীজয়ে' খ, ঘ, চ।

অথ বিপরীত-রতি।

গাননী।

মর্ পদং দংশল মদন-ভ্রম ।
গরলহিং ভরল অবশ ভেল অক ।

তুহঁ বদি স্থন্দরি করসি উপায়।
মৃধগল জন তব জীবন পায় । আন
পহিলহি বাঁরেবি দীঠি পসারি ।
করে কর পঞ্চনে ভাব সম্ভারি ॥
আম-জল অসহি করবি বিথার।
কুচযুগ-কলসে করবি পানি-সার ॥
খর নখ-রঞ্জনি তুয়া নখ মানি।
ঝারবি নিরবিষ উর পর হানি ॥
যতনে অধর ধরি অধর-রস দেবি।
অধরক দংশে অধর-বিষ নেবি ॥
রজনি উজাগরি রহবি অগোরি।
গোবিন্দদাস গুণ গাওব ভোরি॥

1128113-961

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২৮৪, ১৪৯১ ও প-র
পুথির ২৪।৮ সংখ্যক পদ। ১। 'পদে' ঘ; 'মন'
প-র-সা; 'মনে' প-র। ৩। 'গরলে' প-র। ৪।
'দগধল' পর। ৫। 'ঝারবি' ইত্যাদি হলে 'ঝাপবি
দিঠে পসারি' ক, চ; 'হেরি ঝাড়বি দিঠি সারি' প-র-সা, প-র। ৬। 'করে' ইত্যাদি হলে 'করে কর
পঞ্জনে ভার সম্ভারি' ক; 'করে কর মঞ্জনে ভাব
সম্ভারি' প-র-সা, প-র। ৭। 'দংশনে' ক, ব;
'দংশন' ঘ, চ।

TICHT!

রতি-রগ-উচিত শরনহি নাগর
বাচত বিপরিত কেলি।
অমুনর কতহঁ করয়ে জনি হসি হসি
মুখহি মুখহি করি মেলি॥
শুনি হসি শশি-মুখি লাজহি কুঞ্জিত
অবনত করত বয়ান।
জিয়ইতেও উপবাসি দারিল বৈহন

মাগয়ে ভোজন পান ।

(मथ (मथ देवमश्रीय-त्रः ।

কামকলা-গুরু রসিক-শিরোমণি না ছোড়ই সো রস ঢক্সং॥

পাদ পরশি পুন রাই মানায়ল নিজন্তথ বহুত জানাই।

ভণ রাধামোহন তছু স্থাধ সুধি উহ অভয়ে সে হোত বাধাই ॥১৫॥১•৭৭॥

পাঠান্তর

১। 'बोडिहेर्ल' कः, 'बिडिहेर्ल' ह। २। 'त्रम इक' फ्रान 'मक' चे।

টাকা

১৪—১ং। "ভণ" ইত্যাদি। রাধামোহন কহি-তেছেন,—উনি (অর্থাৎ শ্রীরাধা) তাঁহার (অর্থাৎ শ্রীক্ষের) মধে মধী; অত এব সেই (প্রীক্ষের প্রিয়) বাধাই অর্থাৎ আনন্দ-উৎসব (উদ্ভূত) হইল। 'বাধাই আনন্দবিশেষঃ'—পদায়তসমূল-টীকা।

शक्ती।

উদসল কুস্তল-ভারা।
মূরতি নিলার-লখিমিং অবভারা॥
অতিশয় প্রেম-বিকারা।
কামিনি করত পুরুখ°-বিহারাণ॥
কামিন করত পুরুখ°-বিহারাণ॥
বাম্ন-কলে থৈছে দৃধকণ ধারা॥
ক্চ-কুস্ত পালটলণ বয়নাণ।
রস-অমিয়া জন্ম চারল ময়নাণ॥
প্রিয়তম করংণ তহিঁ দেবা।
সরসিজ মাহে জন্ম রহলংগ চকেবা॥
কঙ্কণ কিঞ্জিনি বাজে।
জয় জয় ডিগ্রিম মদন সমাজে॥
রসিক-শিরোমনি কান।
ক্রির্জন রস ভাব॥১১॥১০৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র পুথির ২৫।১০ সংখ্যক পদ।
'গুর্জ্জরী' হলে 'বেলোরার' প-র। ২। 'মুর্জ্জ'
ক। ৩। 'পুরুর' ক, থ, চ, প-র। 'পুরুর্ঝ'
পাঠে ছলোভঙ্গ ঘটে। ৪। 'বেবহারা' প-র। ৫।
'দোলত' থ; 'ভোড়ল' পর। ৬। 'ছ্ধক' ক, থ,
প-র। ৭। 'পালট' প-র। ৮। 'কুচ্কুশ্ঝ'
হত্যাদি পংক্তিচ্তুষ্টর পদাম্তসমূদ্রের টীকার ব্যাখ্যাত
হলেও লিপিকর-এমে উহার মূলে পরিত্যক্ত হইনাছে
রাচ্ছে; ওজ্ঞাপ সাহিত্য-পরিবদের বিস্থাপতির পদাবনীতে এই পদটি পদকরতক্ত হইতে উদ্ধৃত হইরাছে
বিল্যা উল্লেখ থাকিলেও এম-ক্রমে উক্ত পংক্তিচ্তুইর
পরিত্যক্ত হইরাছে। ৯। 'নর্থনা' ক। ১০।
'প্রির্ভ্যাকর' হলে 'প্রিয় মরক্ত' প-র। ১১।
'কনক' প-র।

बिका

১—২। "উদস্পশ" ইত্যাদি। 'উদস্প ক্স্বণ-ভারা ইত্যাদিনা বিগণিতক্বরী। শৃশারণস্মী: মৃঠ্রিষ্ঠী অধ্যনতীর্ণা' রাধানোহন ঠাকুরের টীকা।

৭-- ৮। "কুচকুন্ত" ইত্যাদি। কুচকুন্ত ও বদন বিবর্ত্তিত হইল। 'ময়না মদন: অমৃতরসং কলস-ধার্মা দদাতীব' রাধামোহনের টাকা;---অর্থাৎ মদন কুচ-রূপ কুন্ত ধারা অমৃত-রস ঢালিল--এইরূপ বোধ হুইতেছে। (লুপ্রোংপ্রেকা অলকার)।

৯—> । "প্রিরতম" ইত্যাদি : প্রিরতমের (গুগল) কর তাহাতে প্রদত্ত হইরাছে ; বেন সরদিজ-বুগণের মাঝে (জারক্রিম) চক্রবাক বুগল
রহিরাছে । পদামূত-সমূত্র-কার রাধানোংন ঠাকুর
'দেবা' শক্টিকে সংস্কৃত জৌড়ার্থক 'দিব' ধাকু হইতে
নিলার বিশেশ্য-পদ মনে করিয়া উহার অর্থ 'জৌড়ন'
লিখিরাছেন । এরূপ প্ররোগ মৈথিল-ভাষার দেখা
বার না।

ভূপানী।১

বিগলিত-চিকু মিলিত মুখ-মগুল

চাঁদে বেচুল ঘনমালা।
মাণিময়-কুঙল শ্রাবণে ছুলিত ভেল
ঘামে তিলক বহি গেলা॥
ফুলরি ভুয়া মুখ মঞ্চলদাতা।
রাজ-বিপরীত-সময়ে যদি রাখবি
কি করব হরি হর ধাতা॥ধ্রা॥
কিন্ধিণি কিনি কিনি কন্ধণ কণ কণ
কল-রব নূপুর বাজে।
নিজ-মদে মদন পরাহব মানল
জয় জয় ডিগ্রিম বাজে॥
তলে একু জঘন সঘন-রব করইতেং
হোয়ল সৈনক ভঙ্গ।
বিভাপতি-পতি ও রস-গাহক
যামুনে মালল গল-তর্ম ॥১৭॥১০৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুবির ২৫।১১ সংখ্যক পদ। ২। 'কহইডে' ক। 'ভলে একু' ইভ্যাদি কলিটির স্থলে প-র পুবির পাঠ বধা,—

'ভড়িত শতাতলে জ্বদ সাতাওল আতরে বহু জলধারা। তরল তিমির শশি স্থরে গরাসল চৌদিগে খসি পড়া তারা॥ অহর ধ্সল ধরাধর উল্টল ধরণী ডগমগ **ডোলে**। ধরতর প্রন স্মার বহে বহুবেগে **Бक्षत्रिगंग कक्क (ब्रांट्य ॥** প্রশাসপয়োধি অবধি জলে ভাগল ব্দব নাহি ধুগ অবসান। রতি বিপরীত কথা কো পাতিয়াওব ক্ৰি বিশ্বাপতি ভাণ ॥' প-র পুৰির উদ্ভ কণি ভিনটি পদক্রভক্রর ১০৯৬ সংখ্যক পদে ২ৱ, ৩ৱ ও চতুর্থ কলিরূপে উদ্ভ কইয়াছে।

টাকা

ধ— १। "স্থলরি" ইত্যাদি। রাধানাহন
ঠাকুরের ব্যাধ্যা— 'রতি বিপরীত সমরে ধদি রাধবি
অর্থাৎ তদ্রসং ধদি স্থগরসি তদা হরিহুরাদর: কিং
করিস্থান্তি কিমৃত ত্বাধীনোহহং।' রাধানোহন
ঠাকুরের প্রতিপাদিত 'রাধবি' শব্দের 'স্থগিত করিবে'
অর্থ এ স্থলে সংলগ্ন হর না। এ স্থলে 'রাধবি'
শব্দের অর্থ 'রক্ষা করিবে' বা 'পালন করিবে'।
তুলনা কঙ্কন,—
'আলোলামলকাবলিং বিলুলিতাং বিভ্রুচ্চলংকুঞ্জাং
কিঞ্জিন্ত ই-বিশেষকং তমুতরৈ: স্বোলাহ্নসাং শীকরৈ:।
তব্যা যথ প্রতান্ত তাস্ত নম্নং বক্ত্রং রতি-ব্যতারে
তথে স্থাং পাতু চিরার কিং হরি-হ্র-ব্রহ্মাদিভিট্দেবত্তঃ'।

— অমক্রণতক

বিহাপড়া ।১ গৌর দেহ স্থ-চারু স্থবদনিং শ্যামস্থাদর নাহ রে। क्वनम উপরে ভড়িত সঞ্চ সরূপ° ঐছন আহ রে॥ পীঠ পর ঘন শ্যাম বেণী নিরখি⁸ ঐছন ভানরে। (জমু) উজর হাটক-পাট• কর গহি लिथन (लश्रू भारतीन (त ॥ খণ ন' থির রছ **ज्ञान मक्ष्र** मिक (मथल-त्रांव (त्र।

ময়ন রায় ছ- হাই কছ কং* জঘন যশ রস গাব রে॥

রয়নি বরুণ অব- সান মানিরে কেশিণ নহ অবসান রে। রসিক যতুপতি রমণি রাধা

সিংহভূপতি ভাণ রে ॥১৮॥১०৮०॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পৃথির ২৫।৯ সংখ্যক পদ। ২।
'স্থার স্বদনি' ছলে 'স্থারস স্বদনি' ক, খ।
'স্থার স্বদনি' ঘ, চ। ৩। 'অরূপ' ক, খ।
৪। 'দেখিরে' প-র। ৫। 'অরূপ' ক, খ, ছ, চ।
৬। 'পাঁতি' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'লিখন লেখু' ছলে
'লিখন লিখু' থ; 'লিখন লিখ' প-র। ৮। 'খন ন'
ছলে 'খলন' ক, চ; 'খনন' খ, ঘ। ৯। 'কহ
কহ' ছলে 'দেই দেই' থ, ঘ। ১০। 'অরূপ' ক;
'বর' প-র। ১১। 'রভদ' প-র।

টীকা

৭—৮। "জমু" ইত্যাদি। 'অজর হাটক পাঁতি কর গহি অনখর-অর্পতাং করে গৃহীতা লিখনং নিজ-পরাজরস্চকং ব্যলিখত পঞ্চবাণঃ'—রাধামোহন ঠাকু-রের টীকা। অর্থাৎ বোধ হয়, যেন (পৃষ্ঠরূপ) অনখর অর্পতা করে গ্রহণ করিয়া কন্দর্প (বেণীরূপ) নিজের পরাজরস্চক লিপি লিথিয়াছে। পদর্মাকর পৃথির 'উজর' ও 'পাট' পাঠ উৎক্রইতর বলিয়া মূলে গৃহীত হইয়াছে। 'উজর হাটক-পাট' অর্থাৎ উজ্জন অর্পের প্রক্রন।

याननी ।

বদন সোহায়ল গ শ্রামজল-বিন্দু।

মদন মোভি দেই পূজল ইন্দু ॥

প্রিয়-মুধ সমুখহিং চুম্বন ওজ।

চাঁদ অধামুখে পিবই সরোজ ॥

রতি-বিপরীত বিলম্বিত হার।

কনক-লভা পরি দুধক ধার ॥

কিছিণি-শবদ নিতম্বহি সাজ।

মদন-বিজই রণ-বাজন বাজ ॥

বিগণিত চিকুর মাল ধরু অল ।

জমু যামুন জলে গল্প-তর্মণ ॥

মকবি বিভাপতি এহ রস জান।

জলদে বাঁপল জমু চপল মুঠান ॥১৯॥১০৮১॥

পঠিক্তির

>। 'সেহাগণ'ক,খ,খ। ২। 'সমূধ'ক;
'অমুধহি'চ। ৩। 'ছ্ধক'ক,খ। ৪। 'বিজ্ঞী' ক। ৫। 'ছ্ধডরল' ক; 'দুধ ভরল' চ। ৬। 'ইছ'ক,খ,চ।

মলার।

রতি-অবসানে বৈঠি শ্যামস্থলর
পৌছয়ে নিজ করে ঘাম।

জমু ঘিজ-রাজ পুজই বর কোকনদে
পরাভব পাইয়া কাম॥
অপরুপ নাগর-প্রেম।
না জানিয়ে কি করব ঘৈছন দারিদ
পাইয়া ঘট ভরি ছেম॥ঞা।
বীজনে মৃত্তর পবন করই পুন
চন্দন গাভ লাগায়।
খপুর কপুরয়্ত পর্ণ স্থোভি ভ

মুখ ভরি প্রচুর যোগায়॥
ঐছন বছবিধ করিয়া স্থ্সেবন
পুন লই দুরল শয়ন।
কহ রাধামোহন কব হব শুভ দিন
যবহি পায়ব দরশন॥২০॥১০৮২॥

পাঠান্তর

১। 'পুক্ই' ক, ধা ২। 'অপক্ষণ' ক। ৩। 'পূৰ্ব' ক, ধ; 'প্ল' ঘা ৪। 'পূন লই' (প-স) হলে 'পুনহি' ক, ধ, ঘ, চ। 'পুনহি' পাঠ ছন্দোভঙ্গ-হট।

त्रमालमः ।

(क्यांत्र १३

রাস-জাগরণে

নিকৃঞ্জ-ভবনে

আপুর্যা^২ আক্স-ভরে।

আপনা পাসরি শুতলি কিশোরী পরাণনাথের কোরে । স্থি হের দেখসিয়া বা। নিন্দ বায় ধনাঃ **हैं।**ल-वननी শ্যাম-অকে দিয়াপা॥ ধ্ৰু॥ করিয়া শিপান নাগরেব বাহু বিথান বসন ভূষা। নিখাসে তুলিছে রতন•-বেশর° হাসিখানি তাহে মিশা^৮ n নিতে চাহে হরি ১٠ পরিহাস করি সাহস না হয় মনে। না করিছ রোল ধীরি করি১১ বোল माम खगनाथ^{>२} खटन ॥२১॥>०৮०॥

পঠিস্থির

)। हेहा श्र.ब-मा श्रृथित ১৫৩० मःश्राक श्रम। '(क्षित्र' ऋरण '(होड़ि' भ-त्रमा। २। 'आनुका' कः 'बाडेगारे' भ-त-मा। ७। 'धाननात्वत्र' कः थ, घ, ठ। ८। 'निन्म' रेजामि ऋष 'निन्म आनि স্থুনরি প-র-সা। ৫। 'বিধার' ক, থ। ৬। 'নাশার' থ। ৭। 'নিখাসে' ইত্যাদি হলে প-র সা পুৰির পাঠ যথা---'নাকের নিখাসে বেশর ছলিছে'। ৮। 'হাসি' ইত্যাদি হলে 'মুথে হাসি আছে মিশা' **थ, घ; 'भूरथ कांध हांनि भिना' প-त्रना। ১।** 'অত্যান' প-র-সা। ১০। 'চুরি' প-র-সা। ১১। 'शैरत शैरत' भ-त ना। >२। 'लान व्यवताथ' ऋल 'আনদাস রদ' ক; 'ছিব্ব চ গুট্টাদে' প-র-সা। চণ্ডী-দাসের মুদ্রিত সংস্করণগুলিতে এই পদটি চণ্ডীদাসের বলিরা গৃহীত হইয়াছে। প্রাচীনতর খ, ব ও চ পুৰিত্ব প্ৰমাণাত্মসাহে ইহা জগলাৰ দাসের রচিত বলিয়াই অস্ত্ৰমান হয়।

> কোন। জালসেং শুভল দোঁহে মদন-শয়ানে^ই।

উরে উর দোহেঁ দোঁহার° বয়ানে বয়ানে ॥

ছুহঁক উপরে দোহেঁ ছুহুঁ শির রাখি।
কনয়া-জড়িত যেন মরকত কাঁতি ॥
রতি-রসে পণ্ডিত নাগর কান।
রতি-রণে পরাভব ভেল পাঁচ-বাণ॥
স্বেদ-মকরনদ বিন্দু বিন্দু গায়।
নরোত্তম দাস করু চামরের বায়॥

144170481

পাঠাস্তর

>। 'कानरम' च। २।'मदरन' च। ७।'६६ पोदर' च। ७। 'तरम' क, च।

> রসালসোপযুক্তরূপং যথা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

> > ভৈৱৰী।১

সোঙ্জো নব গৌরচন্দ্র° নাগর বনয়ারি°।

नवहोश-इन्द्र

नवबोभ-इन्द्र् कः क्राना-निष्ठ्र ७७७-वर्षमा कांग्री १॥ अ.॥

বদন-চন্দ অধর রক্ষ নয়নে গলত প্রেম-তরক্ষ চন্দ্র কোটি ভান্ম কোটি

শোভা[©] নিছ্য়ারি[©]। কুস্থম-শোভিত চাঁচর চিকুর ললাটে তিলক নাসিকা উ**জো**র দশন মোতিম আমিয়া হাস দামিনি ঘনরারি[©] ॥

মকর-কুণ্ডল ঝলকে গণ্ড মণি-কোস্তভ-দীপ্ত কণ্ঠ জরুণ বসন করুণ বচন শোভা অভি ভারি।

भागा-कन्मन-क्रिकि ख्रिया

লাজে লজ্জিত কোটি অনক। অঞ্চল বলয়া রতন ১০ নৃপুর যজ্ঞ-সূত্রধারি॥

ছত্র ধরত ধরণিধরেন্দ্র গাওত যশ ভক্তবৃন্দ কমলা-সেবিত পাদবন্দ্ব विलास्त्रभ विनश्ति। কহত দান কৃষ্ণদাস গৌর-চরণে করত হাশ। পতিত-পাবন নিভাই চান্দ প্রেম দানকারী ॥২৩॥১০৮৫॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সাপ্থির ১৪৯৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সোঙর' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'গৌরচন্দ্র' (প-র-সা) ফলে 'গৌরত্বনর' ক, এ, ঘ, চ। ৪। 'বন প্রারি' খ, খ, প-র-সা; 'বনওয়ারি' চ। 📢 'বচ্ছলকারী' প-র-সা। 🕒। 'মুধশোন্তা' ক, ধ। **া। 'নিছওরারি' থ,** চ, প-র-সা। ৮। 'ঘনওরারি' पं, ठ, शःत्र-मा। २। 'ठनस्त' क, थ, घ, ठ। ১०। 'তরল' খ। ১১। 'বলিয়া' ক, খ, ঘ, চ।

ख्या होत्र ।>

গোবিন্দ-মুখারবিন্দ नित्रिथ मन विहादनाँ । চন্দ্ৰ কোটি ভানু কোটি मनन दर्वाणि अशहर्याः । স্কর কপোল লোল **পक्काल-नग्रना**। অধরবিমু মধুর হাস কুন্দকলিক-দশনা #

মণি-কুণ্ডল মকরাকৃত অলক-ভূত্বপুঞা। কেশ্বকোণ ভিলক বৈনো সোণে মড়ি গুঞা। নব জলধর ভড়িদম্বর গলে বনমালা শোহে। লালা-নট সূরকে প্রভূ क्राप्त कश-मन-(मार्ड ॥२०॥) • ৮७॥

পঠিস্কির

)। हेर्ग श-द्र-मा शृथित ১৪৯৫ मरशाक शृहा ২। 'বিচারো' ক! ৩। 'মদন কোটি' স্থলে 'मननरका' भ-तःमा। ४। 'कारता' क। ६। 'কেশরকোহ' প-র-দা। ৬। 'দোণে মড়ি' স্থলে 'সোপে মড়ি' ক; 'সোণায়ে মড়ি' প-র-সা।

তথা রাগ।

রাধা-মুখ কঙল বিমল নির্মি চিত রিঝাওয়ে?। কোটি চন্দ্ৰ কোটি ভাগু मनन इवि निइडिट्सर ॥ ভাল স্থন্দরু অভি মনোহর क्रवलयपन-नयनो । অধর অক্লণ মুকুতা দশন হাস অমিয়াবয়নী 🛭 শ্রবণ-ভূখণ জিনি রবি-ছবি বেশরযুত । নাসা। ঘন মৃগমদ-তিলক অলক খলিত চাঁচর কেশা। किनि नगवन नौल प्रमन গলে গজমোভি-হার। ত্রিভুবন-মন-মোহিনি রূপ

উদ্ধৰ বলি হার ।২৫।১০৮৭।

পাঠাস্তর

>। 'রিঝাঙে' ক, ধ। ২। 'নিছাঙে' ক, ধ। ৩। 'সুক্রি' চ। ৪। 'কেশরযুক্ত' প্র-রুনা।

তথা রাগ ।১

দেখ রি সথি কঙল-নয়ন
কুঞ্চমে বিরাজ হেঁং ॥ গ্রুণ ॥
বামেতে কিশোরি গোরি
অলস-অল অতি বিভোরি
হেরি শ্রাম-বয়ন-চন্দ

মন্দ মন্দ হাস হেঁ। অঙ্গে অঙ্গে বাহেণ ভীড় পুছত বাত অতি নিবীড়ঃ প্রেম-ভরঙ্গে চরকি পড়ত

কঙল মধুপ সক্ষ হেঁ॥
শারি শুক পিকু করত গান
ভ্রমরা ভ্রমরি ংধরত ভান
শুনি ধনি ধনি উঠি বৈঠত
চোর চপল যাত হেঁ।

শ্রীগোপাল জ্ট্ট-আশ বৃন্দাবন কুঞ্জে বাদ শয়ন সপন নয়ন হৈরি

ভূলল মন আপ হেঁ॥২৬॥১০৮৮॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হে' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'বাহেঁ' ধ।
৪। 'নিবিড়' ক, ধ, প-র-সা। 'নিবিড়' পাঠে
ছন্দোভদ ঘটে। ৫। 'ভঙরা ভঙরী' প-র-সা।
৬। 'ধ্বনি' ক, ধ; 'গুনি' ছ। ৭। 'নয়নে' পর-সা। ৮। 'ভুলণ' ক, ধ, প-র-সা।

বিভাষ ৷১

ছেরি ছুত্ নিশি অবসান
তৈখনে তেজল শ্যান।
সব সহচরিগণ মেলি
করি কত কোতুক কেলি ॥
মন্দিরে করন্ত প্যান
করে কর ধরিং ধনি কান।
হেরি যতু তুত্ ক ব্যান
কি করব তাক বাধান ॥২৭॥১০৮৯॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কর ধরি' স্থলে 'কত ধনি' ক।

ভৈশ্ববী।১

রাধিকা-মুখারবিনদ
কোটি ইন্দু লাজে।
নয়ন-যুগল অতি রসাল
বিবিধ রত্ন কণ্ঠমাল
উমগতি অতিং প্রোম-বিবশ
থোবন-মদণ গাজে॥
মণি দামিনি নছঙং দশন
পহিরিং গোরি নীল বসন
কঙ্কণ কিকিণি মুপুর আদিণ

মধুর মধুর বাজে।
নিরথি মুকুন্দ ছবিকে রঞ্গ লাজে লজিড কোটি অনক তাহে কনয়-মুকুর অঙ্গ

> দামিনি খন সাজে>• ॥২৮॥১ ০৯০॥ পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উনগতি অতি' হলে 'উনতি পতি' প-র-সা। ৩। 'নদে' প-র-সা। ৪। 'লসভ' ক, খ, 'লহড' প-র-সা। ৫। 'পহিরে' ক, চ, প-র-সা। ৬।
'য়ুপুর আদি' ছলে 'নুপুর' থ, ছ; 'নুপুরাদি' চ। ৭।
'ছবিকে রল' ছলে 'ছবিতরক' ক, প-র-সা। ৮।
'লজ্জিত' ক, থ, চ, প-র-সা। ৯। 'কনক' ক;
'করল' প-র-সা। ১০। 'দামিনি' ইত্যাদি ছলে
'বিবিধ মঞ্জির বাজে' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ ৷১

চললহি মন্দিরে নওল কিশোরি। হেরইভে হরি-মুখ অলস বিলোচন চেতন-রতন চোরায়লিং গোরি # ঝামর বদন শ্যাম-ঘন-চুম্বনে প্রাভর-ধুসর-শশধর-কাঁভি। চম্পক-মাল ললিভ-করে বারই পরিমলে লুবধল মধুকর-পাঁতি ৷ বিগলিত কেশ বেশ সব খণ্ডিত নখ-পদ-মণ্ডিত হৃদয় নেহারি। **শীত বদনে** চমকি ভমু ঝাঁপই রস-আবেশে চলু চলই নাও পারি ॥ **লহু লছু হাসি** সম্ভাষই সহচরি महिक्छ-लाहरन मुभ मिभ हाहे। গোবিন্দদাস কহই জনি গুরুজন⁸ জাগৰ চলহণ ভুরিতে ঘর বাই ॥ 129170971

ইভি তৃতীয়-শাখায়াং পঞ্চদশপল্লবঃ। পাঠান্তর

১। ইবা প-র পুথির ৩৯।১৭ সংখ্যক পদ। ২।
'চোরাওলি' খ, চ। ৩। 'চলু চলই না' খলে
'চলই নাহি' প-র। ৪। 'গোবিব্দ দাস' ইড্যাদি
হলে 'গোবিব্দ দাস কহ জানৰ 'গুরুজন' ক, খ, চ।
ধ। 'লাগৰ চলহ' খলে 'চলহ' ক, খ, চ; 'জানই
বৈঠে' ছ।

অস্টেচিত-রদোলারঃ। শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাষ।>
আরে মোর গোর কিশোর।
রজনী-বিলাস-রস-ভাবে বিভার ॥

শংশ কহই তে গদগদ কহই না পার।
নিরক্তনে বসিয়া নয়নে ক্তলধার ॥

শোলসেও চুলু চুলু অরুণ নয়ান।
কহইতে রসরসং বিরস বয়ান॥

চকিত্ত-নয়নে পত্ত চৌদিশে নেহারে।
চতুর ভকতগণ পুছে বারে বারে ॥

কি আছে মনের কথা কহনেও না যায়।
এ রাধামোহন পত্ত গোরা-শুণ গায়ণ॥

পাঠান্তর

171709

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯০ সংখ্যক পা ২। পু-র-সা ব্যতীত অক্সান্ত পুথিতে 'ঞ' নাই। এ 'রসালসে' প-র-সা। ৪। 'কছইতে রসরস' হুং 'কছই সরস রস' ক; 'কছইতে সরস' চ। ৫ 'প্রেক্' ক, খ, খ, চ। ৬। 'বুঝন' প-র-সা। ৭ 'গোরা-শুণ গাম' হুলে 'চ্কিত হুদ্ম' প-র-সা।

আদৈ স্থ্যক্তি:। বিভাষ।>

কহ কহ স্থি নিক্ঞ-মন্দিরে
আজু কি হোয়লং ধন্দ ।

চপলে কাপল জন্ম জনধর
নাল উতপল চন্দ ॥

ফণী মণিবর উসরেণ নির্বি
শিখিনী আনত গেল।

হুমেরু উপরেণ হুর-ভর্রিণী

কেবল ভরল ভেল ॥

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৫৯১ সংখ্যক পদ। হৈ। 'ছইল' ক, প-র-সা। ৩। 'উরগে' ঘ় ৪। 'শিখরে' প-র-সা। ৫। 'তুরিজ্ঞতিক্ছ' ঘ। ৬। "নাক্র' ছলে 'নায়ক' ক। ৭। 'অফুনায়' প-র-সা। ৮। 'গায়' প-র-সা।

পঠিস্তির

निका

৩—৪। "চপলে" ইন্ডাদি। যেন চপলায় জল-ধরকে (এবং) চন্দ্র নীলোৎপলকে আবৃত করিল। (এ স্থলে শ্রীরাধা চপলা ও চন্দ্ররূপে এবং শ্রীক্রফ জলধর ও নীলোৎপল-ক্রপে বর্ণিত হইয়াছেন)।

e—৮। "ফণী" ইত্যাদি। ফণী অর্থাৎ শ্রীরাধার উন্মুক্ত বেণী মুক্তা-জাল কিংবা পূজা-সমূহক্সপ মণি উদ্গীরণ করিতেছে,—দৃষ্টি করিয়া শিখিনী অর্থাৎ শ্রীক্ষফের ময়্র-পুচ্ছ-শোভিত কেশ-কলাপ অক্তন্ত গেল অর্থাৎ বিশ্রস্ত হইরা পড়িল এবং শ্রমেক অর্থাৎ কুচের উপরে হার-তর্গিণী অর্থাৎ মুক্তাহার শুধু চঞ্চল হইল।

৯—১২। "কিঞ্চিণী" ইত্যাদি। তাহাতে কিঞ্চিণী, কন্ধণ ও নৃপুর অধিক কল-ধ্বনি করিতেছে; কন্দর্পের স্থল্পর নৃত্যে (বেরূপ) তৌর্যাঞ্জিক অর্থাৎ নৃত্যানীত ও বান্ধ, ঐরূপ সকল শোভা পাইতেছে!

১০—১৬। "না কর" ইত্যাদি। গোপন করিও না; (ভোমার) নিজ পরিজন (আমরা) এই সভোগ-নীলা অমুমানে বুরিতেছি। (এই গীড) বিভাগতির রচিত; তাঁধারই কুপাতে (নাম-প্রকাশে ন্দনিচ্ছুক ?) কোন ব্যক্তি (ভাষান্তরে ?) ইহা গান করিতেছেন।

বিভাপতির পদাবলীর সম্পাদক শ্রীর্ক্ত নগেল্রনাথ গুপ্ত মহাশ্য শেষ পংক্তিটির 'কে ন জান ইছ
গান' পাঠ গ্রহণ করিয়া ঐ পাঠে লিপিকর-প্রমাদ
থাকা অহমান করিয়াছেন। বস্ততঃ এই পদটি জবিকল বিভাপতির রচিত হইলে 'কুপামে তাহারি কে ন
জান ইহ গান' বাক্যাংশের কোন সার্থকতা থাকে
না; স্থতরাং এই পদটিতে কোন অক্সাতনামা কবি
কর্ত্তক বিভাপতির মৈথিল পদের ভাব তাবাস্তরিত
হইরাছে, এইরূপ অহ্মান অধিকত্র সৃষ্ঠত নহে কি গ

বিভাষ ৷১

আজুক রজনীং নিধুবনে খানি कदल विताम द्राप्त । রসের সাগরে **ডুবায়ল**° মোরে ভুললঃ আগন বাস॥ শুনহ মরমিণ সোই। তুহুঁ সে আমার প্রাণের গোসর তেত্রি সে ভোমারে কই ॥
। তাহার সাধন-বচন যতেক তাহা কি কহনে যায়। রতি বিপরীভ লাগিয়া নাগর ধ্যুল° হামারি পায় ॥ ভাহারি পিরিভেশ বশ যে হইয়া করিলু তাহারি মত। না জানিলুঁ মুঞি তাহার স্থাই আপনি হইলু রভ 🛊 ছইয়া - বিকল মোর শ্রেমজল মোছয়ে আপন করে। আপনি বীজয়ে বীজন লইয়া

আমার ছরম-ডরে॥

সে সব কাহিনী কহিতে আপনি
অবশ হইল^{১১} অক ।

এ রাধামোহন-দাস কি শুনব^{১২}

এ সব প্রেমক রক্ত ॥৩॥১০৯৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ১৫৯২ ও প-র প্থির ১৩৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'রজনি' খ, চ; 'জামিনি' প-র। ৩। 'ড্বাইয়া' প-র। ৪। 'ভ্লেলু' চ; 'চলল' প-র। ৫। 'সরস' প-র। ৬। 'পরালের' ক, খ। ৭। 'ধরল' ক। ৮। 'পিরিভি' খ। ৯। 'য়্থেভে' প-র। ১০। 'দেখিয়া' প-র-সা। ১১। 'হইছে' প-র। ১২। 'এ রাধামোছন' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র পুথির পাঠ, যথা— 'গোবিন্দাস

লিদাস কি কহব স্ব এহেন প্রেমক রক ⊮

यहरे ।>

কি কহব রে সখি কেলি-বিলাস।
বিপরিত হ্রত নায়র-অভিলায ॥ধ্য॥
মাতল নায়র হুরে রহু॰ লাজ।
অবিরত কিন্ধিনি কঙ্কন বাজ ॥
তানইতে ঐছন লছ লছ ভাষ।
হুছ মুখ হেরইতে উপজল হাস ॥
শ্রম-জল-বিন্দু মুখে হুন্দর জোভি॰।
কনক-কমলে বৈছে ফুটি বহুণ মোভি ॥
কুচযুগ কনক-ধরাধর জানি।
ভালি পড়য়েদ জন্মুণ পহুঁ দিল পানি ॥
ভগহুঁণ বিভাগতি শুন বরনারি।
নহিলে ব্সিক্ণ কৈছে তোহারি মুরারি ॥

পাঠান্তর

1181120201

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৫৯৩ ও প-র পুৰির ^{১০)৬৮} সংথাক পদ। ২। প-র ব্যতীত অভাত

ভাটিরারি ৷১

স্থি হে কি কৃষ্ব নাহিক ওর। স্বপন কি পরতেক কহইং না পারিয়ে किरय़° व्यक्ति निकरे कि॰ पृत्र ॥ध्या ভড়িত-লতাতলে তিমির সাস্তায়লণ আঁতিরে॰ স্থরধুনি-ধারা। তরলু তিমির শশি সূর গরাসল চৌদিগে খদি পড়ুদ তারা ॥ অম্বর খদল ধরাধর উলটল ধরণি ডগমগ ডোলে। খরতর-বেগ স-भोत्रग मक्षक চঞ্চরিগণ করু রোলে॥ প্রলয়-পয়োধি জলে জমু বা পিল ইহ নহ যুগ-অবসানে। কো বিপরীত কথা পভিয়ায়ব্য কবি বিভাপতি ভাগে ৷৫৷১০৯৬৷

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'লখই' প-র-সা। ৩। 'কি' ক, খ, খ, চ।
৪। 'কি' খলে 'হি' প-র-সা। ৫। 'তিমির
সাস্থায়ল' খলে 'অলদ সম্ভোজল' প-র-সা। ৬।
'আত্তরে' খ, চ। ৭। 'তক্লণ' প-র-সা। ৮। 'খিদি

পড়ু'ৰলে 'সঞ্জ' প-র-সা। ১। 'পরতীত'ৰ। ১০। 'পাতিয়ারব' ক, খ, চ, প-র-সা।

টীকা

৪—১১। "তড়িত" ইত্যাদি পংক্তিশুলিতে বীরাধার কশ-তমু তড়িৎ-লতা, শ্রীক্বফ তিমির, শ্রীরাধার মুক্তা-হার স্থরধুনী-প্রবাহ, শ্রীরাধার উন্মুক্ত কেলপাল তরল তিমির, শ্রীরাধার ললাটের চন্দন-বিন্দু শলী, দিন্দুর-বিন্দু হর অর্থাৎ হর্ষ্য, পূলা-মাল্যচ্যুত কুন্মাবলি তারা, অধর (বন্ধ) অধর (আকাল), কুচমুগ ধরাধর অর্থাৎ পর্বত, নিতম্ব মেদিনী, নিখাস্বায়ু ধরতর পবন ও ভূষণ-শিক্তিত ভ্রমর-ধ্বনিক্রপে 'অতিশরোক্তি' অল্কারের সাহাধ্যে বর্ণিত হইরাছে।

১২—১৫। "প্রান্তর" ইত্যাদি। ইহা বুণের অবসান নহে,—(তথাপি) বেন (স্বেদ-প্রবাহরপ) প্রান্তর-কালীন সমুদ্ধ-জ্বলে আচ্ছাদন করিল। কবি বিছাপতি কহিতেছেন, (এই) বিপরীত (এক অর্থে বিক্রদ্ধ, অস্ত্র অর্থে বিপরীত-সম্ভোগের) কথা কে প্রত্যায় করিবে? [ইহার তাৎপর্য্য এই বে, কেবল প্রান্ত-কালেই পূর্ব্য-বর্ণিত নানা বিক্রদ্ধ ঘটনা দৃষ্ট হর্তেছে, স্মৃতরাং ইহা কে বিশাদ করিবে?]

শ্রীবৃক্ত নগেজ বাৰুর গৃহীত "প্রণয়-পরোধি-জনে" পাঠ কোন পুথিতেই দৃষ্ট হয় না এবং উহার অর্থণ এ স্থলে ভাদৃশ স্থাস্থত নহে।

वैद्यांग ।)

আমার পিয়ার কথা কি কহিব সই।
যে ভার চিতে তাহাই করি স্বতস্তরী নইং॥
তাহার গলার ফুলের মালা
আমার গলায় দিল।
ভাহার মত মোরে করি
সে মোর মত হৈল॥

ভূমি সে আমার প্রাণের অধিক,
তেঞি সে ভোমার° কহি।
এই° যে কাজ কহিডে॰ লাজ
আপন মনেই রহি॥
ভাহার প্রেমের বশ হইয়া
ধে কহে ভাহাই করি।
চণ্ডীদাস কহয়ে ভাষ
বালাই লইয়া মরি॥৬॥১০৯৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বে ভার' ইত্যাদি ছলে 'বে হর ভাহার চিতে
স্বভস্তরী নই।' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'আপনার'
প-র-সা। ৪। 'ভোমারি' ক, খ। ৫। 'এ' দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'কহইতে' ক, খ।

পুনবর্যক্তরূপেণ স্থাং প্রতি কথয়তি।

এ কথা করিবে সই এ কথা কহিবে।
অবলা এতেক ভপ করিয়াছে কবে॥
পুরুষ পরশং হৈয়া নন্দের কুমার।
কি ধন লাগিয়া ধরে চরণে আমার॥
কাহারে কহিব স্থিপ মরমের কথা।
নাগর হইয়া দেয় মোরণ চরণে আলভা।
আপন চূড়ার বৈশ বনায় আমারেণ।
রমণী হইয়া বেনণ রহে মোর কোরে।
কহিতে সরম সই কহিতেণ সরম।
আমারে আচরেশ সই পুরুষ-ধরম।
জ্ঞানদাস কহে শুন শুন বিনোদিনি।
জিতে কি পাসরাশ বার কালু গুণমণি।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৫৯৬ ও প-র পুৰির ১৯৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'পরেস' প-র-সা, প-র। ৩। 'সুঞ্জি' পর। ৪। 'দের মোর' ছলে 'মোরে দের' প-র-সা। ৫। 'বনার আমারে' ছলে 'বনারে আমারে' ক, চ; 'দের মোর শিরে' প-র। ৩। 'রমনী' ইভ্যাদি ছলে 'আপনি রমনী হৈরা' প-র। ।। 'বলিভে' প-র। ৮। 'আমারে আচরে' হলে 'মোরে আচরিভে বোলে' প-র-সা। ৯। 'জিতে কি পাসরা' ছলে, 'জিভে পাসরা না' ধ।

शर्रमञ्जी ।>

কুচযুগ চারু ধরাধর জানি।
হাদি পৈঠব জনিং পছঁ দিল পাণি।
ঘামবিন্দু মুখ হেরয়ে নাহ।
চুখরে হরকে সরস অবগাহ।
বুঝই না পারিয়ে পিয়া-মুখ-ভাব।
বদন নেহারিতে উপজয়ে হাস।
আপন-ভাব মোহে অমুভাবি।
না বুঝিয়ে ঐছনেং কিয়ে হুখ পাবি।
তাকর বচনে কয়লুঁ সব কাজ।
কি কহব সো সব কছইতে লাজ।
এ বিপরীত 'বিভাপতি ভাগ।
নাগরি রমইতে 'ভয় নাহি মান।৮১১০৯৯।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৫৯৭ সংথ্যক পর।
'পঠনজরী' হলে 'বিভার' প-র-সা। ২। 'জানি'
পাঠ সকলগুলি পুরিতে হুই হইলেও উহা ছলোভলহুই বলিরা 'জনি' পাঠই সনীচীন বোধ হয়। ৩।
'হরবে সরস' হলে 'হরব সরস' ক। ৪। 'ঐছন'
ক, ধ, ঘ, চ,। ৫। 'বিপরীত প্রত' প-র-সা।
৬। 'নরইভে' ধ।

बीवांग 15

আজু মরু সরম ভরম রহু দূর। ব্দাপন মনোরও সো পরিপুর॥ কি কহব রে সখি কহইতে হাস। সব বিপরিত ভেল আজুক বিলাস ॥ধ্র। জলধর উলটি পডল মহি মাঝ। উয়ল চাক ধ্বাধ্ব-বাক ॥ মরুক্ত-দর্পণ হেরইতে হাম। উচ নিচ° না বুঝি পড়লুঁ সোই ঠাম। পুন অমুমানিয়ে নাগর কান। তাকর বচনে ভেল সমাধান॥ নি-বাদে বাস পুন দেয়ল সোই। লাজে রহলু হিয়ে আনন গোই। সোই রসিকবর কোরে আগোরি। আঁচরে শ্রম-জল মোছল মোরি॥ मृक् मृक् विकरेख घूमल बाम। ভণয়ে বিভাপতি রস অমুপাম ॥৯।১১••॥*

ইত্যাদি বিপর্বাত-রসোদগার।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'উরল' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৩। 'নীচ' ক,
ধ। ৪। 'মৃছ্ মৃহ' হলে 'মৃছ' ক। ৫। 'ঘুনল'
ক, ধ, চ, প-র-সা। ৬। অতঃপর ক, চ পুৰিতে
নির্লিখিত প্রক্ষিপ্ত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হর, যথা—

তথা বাগ।

'নিলজে কহিন্স সথি রাধিং হিরার। জীবন নিছিরে বাহে ইং কি তাহার॥'

ট্রকা

৭-৮। "মরকত" ইত্যাদি। আমি (এরকের ক্লঃখ্লরণ) মরকত-দর্শণ দৃষ্টি করিরা, উচা-নীচা বুরিতে না পারিরা দেই খনে পতিত হইনার! (দুর্শবস্থ প্রতিবিদ্ধ উঠো-ভাবে দৃষ্ট হর বনিরা প্রতি- বিষে শয়ান প্রীক্ষণকে উপবিষ্টবৎ ও উপবিষ্ট আপনাকে শয়ানবৎ কান করিয়া পতিত হইলাম!) তুলনা করুন,—

"প্রতিবিধিত-প্রিয়া-তন্ত্ব সকৌস্তভং জয়তি মুরভিদো বক্ষ:। পুরুষায়িতমভ্যক্তি লক্ষীর্যবীক্ষা মুকুরমিব॥"—আর্য্যা-সপ্তশতী। ১—১০৷ "পুন" ইত্যাদি। (কিন্তু স্পর্শবারা) অন্থমান করিতেছি, (নিয়-দ্বিত ব্যক্তি) নাগর শ্রীকৃষ্ণ! (ইহাতে আমি লক্ষাত্রা হইলেও) ভাঁহার (অন্থনয়)-বাক্যে (কার্য্যের) সমাপ্তি

১১—১২। "নি-বঃশে" ইত্যাদি। তিনি (আমার)
বল্পহীন (অদে) বল্প দিলেন; (কেন না) আমি
লজ্জার তাঁছার বকে (আমার) মুখ ঢাকিরা রহিয়াছিলাম। ['লাজে রহলুঁ' ইত্যাদি বাক্যে অতি
স্থলর 'শ্বভাবোজি' অলকার রহিয়াছে]।

অথ শ্রীকৃষ্ণস্থ রসোদগারো যথা। তত্ত্বচিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

বিভাষ ৷১

व्यथक्रभ भारतिहास्य ।

বিভার হইয়া রাধার প্রেমে তার গুণ কহি কান্দে ॥ধ্র॥ ।

নয়নে গলয়ে প্রেনের ধারা

পুলকে পুরল অঙ্গ।

ধেনে গরন্ধয়ে খেনে সে কাঁপরে

উথলে ভংব-ভরঙ্গ॥

পারিষদগণে কছরে যতনে রাধার প্রেমের কপা।

জ্ঞানদাস কহে গোরাক্স নাগর° বে লাগি আইলা এথা ॥১০॥১১০১॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৯ সংখ্যক পদ।
 १। প-র-সা ব্যতীত অক্সান্ত পুথিতে 'জ' নাই।
 । 'চান্দ' প-র-সা।

সিচ্চুড়া ছুটা ।১

আজুকার নিশি নিকুঞ্জেত বসিং कदल° विविध द्राप्त । রসের সাগরে ভুবাইয়া⁸ মোরে বিহানে চলিলা বাস॥ শুন হে স্থবল স্থা। (म **(इ**न ञ्चन्पत्री° গুণের আগরি পুন কি পাইবা দেখা 1 মদনে আগলি গলে গলে মিলি চুম্বন করল । যত। কেশ বেশ আদি বিথার হইল তাহা বা কহিব কভ॥ অশেষ বিশেষে বচন কহিয়া> व्याद्यदम्भः नहेग्रा दकादत्र । হিয়া জুড়াইল> অঙ্গের>২ পরশে কেমনে বিসরি^{১৪} ভারে॥ চণ্ডীদাসে কছে ১৫ শুন হে নাগর এ বড় লাগল ধন্দ। সে রাধা রমণী রস-শিরোমণি ভোমারে করিল বন্ধ 1>>1>>০২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬০০ ও প-র পুথির ১৩া৭৩ সংখ্যক পদ। ২। 'নিকুল্লেড বিসি' ফ্লে 'নিকুলে আসি' ক; 'নিকুলেড আসি' চ; 'নিকুলেডে বিসি' প-র। ৩। 'করল' প-র। ৪। 'ভুবাইল' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'নাগরী' প-র-সা। ৩। 'আপোরি' ধ, প-র-সা। १। 'হইব' প-র। ৮। 'বদ্দেশ' ইত্যাদি স্থলে 'মদন আনলে লাগে গলে গলে' প-র।
১। 'কররে' প-র। ১০। 'বচন কহিয়া' হলে
'বচন কহিয়ে' প-র-সা; 'বে কিছু কহল' প-র।
১১। 'আমারে' প-র। ১২। 'সে জল' প-র।
১০। 'ড্বাইল' ক, চ, প-র-সা। ১৪। 'পাসরিব'
প-র। ১৫। 'চণ্ডীদাস কহে' স্থলে 'কহে বিস্থাপতি'
প-র। ১৬। 'সে রাধা' ইত্যাদি স্থলে 'রাধা
বিনোদিনি রসিক রমণি' প-র।

छहिनो ।>

ত্বলের সনে বসিয়া শ্যাম।
কহরে রজনি-বিলাস কাম।
সে বে স্থাননি সুন্দরি রাই।
আবেশে হিয়ার মাঝারে লাই।
চুম্বন করলং কভক্ত ছন্দ।
রভসে বিহসি মন্দ মন্দ।
বছবিধ কেলি করল সোই।
সে সব সপন হোয়ল মোই॥
কিবা সে বচন অমিয়া-মীঠও।
ভাঙ্গুর ভজিমা কুটিল দীঠ॥
সে ধনিং হিয়ার মাঝারে জাগে।
বিভাপতি কহে নবিনং রাগে॥১২॥১১০৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০১ সংখ্যক পদ। ২। 'ক্রপু' প-র-সা। ৩। 'মিঠ' ক, থ। ৪। 'ভাল বিভলিম' ধ। ৫। 'সে ধনি' ফ্লে 'ধনী' ক; 'ধনি' চ। ৬। 'নবীন' ক।

> গঠনএর ।> কি কব রাইয়ের গুণের কথা। সব গুণে ভারে গড়িলে ধাডা॥ এ রাস-বিলাস করিল যত। এক মুখে ভাহা কহিব কড॥

কিবা সে মধুর নটন গান।
অমিয়া-অধিক করিলুঁ পান॥
সে দব কহিতে হিয়া না বান্ধে।
দরশন লাগি পরাণ কান্দে॥
শুন হে পরাণ-বল্লভ স্থা।
সে ধনা পুন কি পাইব দেখা॥
নয়ন-বাণেং সে হানল যবে।
বিভার হইয়া রহিলু ভবে॥
চূত্বন করল যখন ধনা।
অথির ভবলুঁ কছু না কানি॥
দৃঢ় আলিঞ্গনে হরল জ্ঞান।
বিপরীত কবিরঞ্জন ভাণ॥১০॥১১০৪॥

পাঠ 'স্থ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০২ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়ন বাণ'ক, ধ, চ, প র-সা।

সুহই 🗀

রাধার প্রেমের ভরেই বিনোদ নাগর।
ধরি স্থবলের করেই কংতর-অন্তর ॥
দৌহে চলি আয়লাই নিকুপ্তক মাঝ।
রাইকুণ্ড-ভীরে সেই বসিলা রস-রাজ ॥
হুন্দা দেবি ভহিঁ মালক মাই ।
ভাহে মিনতি বহু করক কানাই ॥
শুনিদ আওল সোই রাইক পাশ।
উদ্ধব দাস কহ মধুরিম ভাষ ॥১৪॥১১০৫॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপ্রথির ১৯০০ সংখ্যক পদ।
২। 'তবে'ক। ০। 'কর'প-র-সা। ৪। 'আওক'
চ। ৫। 'নিকুল' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'সে'
শক্টি ব পুর্বিতে নাই। ৭। 'মিলন' ক। ৮।
'তনিরা'ক, ধ, ব, চ।

काटमान । >

স্করি তুরিতহিঁ করহ পদ্ধান।
সবহঁ তিরিপ-ফল স্থামি-স্মঙ্গল
ভামুক কুণ্ডে, সিনান একা

থ্রুছন বচন কহল যব সো স্থি
গুরুজনে অমুমতি মাগি।
বহু উপহার স্থকপুরি চন্দন
লেওল ভামুক লাগি॥
সবহুঁ স্থী মেলি দেই হুলাহুলি
চলতহিঁ পত্থক মাঝ।
সো বর-স্করের করি পথ চাতুরি
মিলায়ল নাগর-রাজ॥
রাইক বদন-চান্দ হেরি মাধব
পূরল সব অভিলাষ।
হুহুঁ দরশনে হুহুঁ আরভি নব নব
কহতহিঁ গোবিন্দদাস॥১৫॥১১০৬॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১৬০৪ সংখ্যক পদ।
 'কামোদ' খলে 'তথা রাগ' ক; 'পঠমঞ্জরী' প-র-সা।
 ং কুগু' প-র-সা।

जुभानो ।>

দোহার ছলহ ছছঁ দরশন ভেল।
বিরহ-জনিত ছুখ সব ছরেং গেল।
করে ধরি বৈসায়ল বিচিত্র জাসনে।
রমরে রতন-ভাম রমণি-রতনে।
বছবিধ বিলসয়ে বছবিধ রজ।
কমলে মধুপ যেন পাওল সজ।
নয়ানে নরান ছুহাঁর বয়ানে বরান।
ছুহাঁ গুণে ছুহাঁ গুণ ছুহাঁ জনে গান।
ভুগরে বিভাগতি নাগর ভোর।
বিভাগতি নাগরি ঠোরণ।১৬৪১১০৭৪

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা প্রির ১৩০৫ সংখ্যক পদ।

২। 'প্রে' ক। ৩। 'বৈসায়লি' ক, খ। ৪।
'বিজয়ী' ক; 'বিজহ' প-র-সা। ৫। 'নাগরি ঠোর'

ছলে 'নাগর চোর' ক; 'নাগরি চোর' ব। প্রাচীন
প্রিতে জনেক ছলেই 'ঠ' জকরাটয় শিরঃছিত বক্র
রেখা দৃষ্ট হর না; স্নতরাং ঐ সকল ছলে উহা 'চ'

জকর বিলা সহজেই ভ্রম হইতে পারে। এইরপ
ভ্রম হইতেই 'ঠোর' হলে ক, ব প্রন্থি ও বিভাগতির
মুক্তিত সংক্ষরণের হাস্ত-জনক 'চোর' পাঠের উৎপত্তি
হইরাছে।

টাকা

৯—> । "ভগরে" ইত্যাদি। বিভাপতি বলিতেছেন—নাপর মুখ হইলেন; ত্রিজুবন-পরান্ধরী প্রীকৃষ্ণ নাপরী প্রীরাধার স্থানে (পরান্ধিত হইলেন)। খ পুথির পত্রপ্রান্তে 'ঠোর' দক্ষের অর্থ 'ঠাই' লিখিত আছে। 'ঠোর' দক্ষের ব্যুৎপত্তি ও প্ররোধ পরিশিটে 'পদাবলি-শন্ধকোবে' ত্রেষ্ঠব্য।

তত্ৰ জল-ক্ৰীড়া।

তত্ত্বভিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

गात्रण । >

জলকেলি গোরাচান্দের মনেতং পড়িল। পারিবদগণ সঞ্জে জলেভে নামিল॥ কারো॰ জঙ্গে কেহো কেহো॰ জল পেলি॰ মারে।

গৌরাক পেলিয়া° জল মারে পদাধরে ।
জল-ক্রীড়া করে পোরা হরবিড-মনে।
হলাহুলি বোলাবুলি করে জনে জনে ॥
পৌরাকচান্দের লীলা কহনে না বার।
বাস্থ্যেব বোবে ডহিঁ পোরা-গুণ গার ॥
৪১৭৪১১০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৬০৬ সংখ্যক পদ। ২। 'মনেতে' ক, থ। ৩। 'সক্ষে' ক, প-র-সা। ৪। 'কার' ক। ৫। 'কেছ কেহ' ক, চ। ৬। 'ফেলি' ক, চ। ৭। 'ফেলিয়া' ক, চ।

আশাবরী ৷১

রাধা সথি জল-কেলিয় নিপুণাং।
ধেলতি নিজকুতে মধুরিপুণা ॥
জ্চ-পট-লুঠন
শ-নির্ম্মিত-কলিনা।
আয়্ধ-পদবা-বোজিত-নলিনা॥
দ্চ-পরিরস্থা-চুম্বন-হঠিনা।
হিমাণ-জল-সেচন
শ-কর্মাণ কঠিনা॥
স্থা-ভর
-শিথিল-সনাতন-মহসা।
দয়িত-পরাজয়-লক্ষণ-সহসা॥
৮য়িত-পরাজয়-লক্ষণ-সহসা॥
১৮॥১১০১৯

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০৭ ও প-র পুথির ৩২।২ সংখ্যক পদ। ২। 'জলকেলিফুনিপুণা' ঘ। ৩। 'লুঞ্জিড' প-র। ৪। 'শ্রম' প-র। ৫। 'দিঞ্ন'প-র-সা। ৬। 'ভব'প-র-সা,প-র।

টাকা

১—৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টকা বথা— তত উভয়োর্জনবৃদ্ধং দর্শয়তি 'রাধে'ত্যাদি। হে সধি! অলকেণিষু নিপুণা শ্রীরাধা শ্রীক্রফেন সহ নিজকুণ্ডে থেলতি পরম্পারং নানাভল্যা অলমুৎ-কিপতি। কীলুশেন ?—কুচরোঃ পটলুঠনেন কঞ্-শিকাকর্ষণেন নির্দ্মিতঃ কলিঃ কলহো যেন। সা চ কীলুশী ?—আয়ুধস্তাত্ত জলকপান্ত পদব্যাং পথি বোজিতং তল্পবারক্ষেন নির্দ্ধিতং নলিনং যয়া। ইচপরিরম্ভণচুক্ষনরোর্হঠোহস্তাত্তীতি তথা তেন। অত্ত নিমিত্ত-সন্থমী। শীতলক্লসেককর্ম্মণি মুদা। প্রথাতি-শব্দেন শিধিলং সনাতনং নিত্যং মহত্তেলো ব্ল তেন। 'মহত্ত ৎসবভেজ্যগোরিত্যমরঃ। পক্ষে ভরারা গোখামিনা সংহতি শ্লেষার্থ:। দ্বিত্ত প্রাশ্য-চিক্নে সহাত্য। ।"

অমুবাদ

১—৮। ছে স্থি! বিবিধ জ্বল-কেলিতে
নিপুণা প্রীরাধা নিজ-কুতে প্রীক্তমের স্থিত ক্রীড়া
করিতেছেন। প্রিয়তম তাঁহার কুচ-বদন জ্বপছর
করিতে উন্ধত হইলে, তিনি তাঁহার সহিত (কুলিম)
কলহ করিয়া ক্ষল-সমূত্রপ অল্প বর্ধণ করিয়া
নিবারণ করিতে চেষ্টা করিতেছেন। প্রিয়তম গাচ্
চুখন ও আলিঙ্গনের নিমিত্ত বল-প্রয়োগ করিলে,
তিনি (তাঁহার প্রতি) স্বেগে শীতল জ্বল স্পেচন
করিতেছেন। স্থাতিশ্য হেতু প্রিয়তমের ক্রীড়াবেগ শিথিল হইলে তিনি ভাঁহার প্রাক্তমের লক্ষণ
দর্শনে হাজমুখী হইতেছেন। (ক্ষণের পক্ষে
অর্থ—প্রিয়তমের প্রাক্তম্নলক্ষণ দর্শনে তিনি
আনন্দ-ভর-মন্থর স্নাত্তন গোখামীর সহিত হাজ
করিতেছেন।)

거(3박 1)

রাধে নিজ-কুণ্ড-পর্মাস তুলীকুরু রলং।
কিঞ্চ সিঞ্চ পিঞ্ছ-মুকুটমন্সাকৃত্য-ভলং।
অত্য পশ্য ফুল্ল-কুগ্রম-রচিতোন্নত-চূড়া।
ভীতিভিরতি-নাল-নিবিড়-কুগুলমমুগুঢ়া॥
ধাতু-রচিত-চিত্র-বীথিরস্তাম পরিলানা।
মালাপ্যতি শিথিল-বৃত্তিরন্ধনি ভূল-হানা॥
শ্রীসনাতন-মণিরত্বমংশুভিরতিচ গুং।
ভেজে প্রতিবিশ্ব-জাব-দ্যাত্রব গণ্ডং॥

পাঠান্তর

o C C C # 6 C

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৬০৮ সংধ্যক পদ। ২। 'মুক্টমলাকৃত' (প-স) ছলে 'মুক্টমলাকৃক' ক, ধ, চ, প-র-দা; 'মুক্ট ভলীকৃক' দ। টাকা

১-৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টীকা, বথা---'তত: কাচিৎ সৰী ত্রীকৃষ্ণত পরাজয়ং স্চয়স্ত্রী প্ৰীমতীং প্ৰতি পুনৰ্জলদেকাৰ্বং 'রাধে নিজ কুণ্ডে'-ত্যাদিকমাহ। হে রাধে। নিজকুগুপয়দি রুঙ্গং चनरमकरकोमनः जुन्नोकुक वर्षम्। शिक्षमुकृष्ठेर জীকুফং সিঞ্চ। কীদৃশং ৃ—অনীকৃত-ভন্নং স্বীকৃত-পরাকরং। ভঙ্গ-চিহ্নান্তাহ। অস্ত একুফাস্ত ফল্ল-কুস্বদেন রচিতা উন্নতচ্ডা অতিনীলনিবিড়কুস্তলমস্ শক্ষীকৃত্য ভীভিভিগূ ঢ়া সংশ্বপ্তা পুরুদ্ধিতা ইতার্থ:। তথা ধাতুভিবৈরিকৈ রচিতা চিত্রপঙ্কিরস্কসি পরিলীনা নিমগ্রা ভীতিভিরিতি সর্বত্ত যোঞ্চাম। 'বীৰিঃ পঙ্কৌ গৃহাঙ্গে চ ক্লপ-কাস্তারবল্মনো'রিতি বিখ:। মালাপি ভূপবিহীনা সভী শিধিল বুভির্ঞন স্লানবদনা জাতা। 'ভৃত্ববিহীনে'ত্যনেন ভৃত্বানাং প্রায়নং স্চিতং তেন সর্বসহায়ানাং পরাক্ষয়ো বৃত্ত:। ৰৎ শ্রীসনাতনক্ত শ্রীকৃষ্ণক্ত মণিরত্বং মণিশ্রেষ্ঠং কৌৰভং অংশুভিশ্চঙাং পঞ্চসি ভদপি তব গঙাং প্রতিবিশ্বভাব-কপটাৎ ভেল্পে তাং শরণং গতমিতি প্রভা 'কপ্টোহন্ত্রী ব্যাক্ষদক্ষোপ্রধ্য' ইত্যমর:। পক্ষে শ্রীসনাত্তনগোস্বামিনো মণিঃ শিরোমণিঃ শ্রীরুষ্ণঃ ততা রত্ম।'

অসুবাদ

১—৮। হে প্রীরাধে! তুমি নিজ-কুণ্ডের জলে ক্রীড়া-কৌশল বিভার এবং স্বীকৃত-পরাজয় শিথি-পুছধারী প্রীকৃষ্ণের অলে জল-দেচন কর। দেথ, ফুল-কুস্ম-রচিত ইহাঁর উন্নত চূড়া ভরের জন্তই স্থাল নিবিড় কুস্তলের মধ্যে লুকারিত হইরাছে! ইহাঁর গৈরিক-রচিত চিত্ররাজি (ভরের জন্তই) জলের মধ্যে বিলীন এবং মালা শিধিল-গ্রাছ ও প্রমর-রহিত হইরাছে! প্রভাজাত্মর প্রীকৃষ্ণের মণি-শ্রের্ছ (কৌজভ,—অপর পক্ষে—সনাতন গোত্মানীর শিরোমণি প্রীকৃষ্ণের রড়) প্রতিবিশ্বছ্লে ভোমার গ্রেণ্ডন শরণ লইরাছে!

शननी ।১

নাহি উঠিল দোঁহে কুণ্ডক তীর। তমু তমু লাগল পাতল চীর॥ অজে বনায়ল নব নৰ বেশঃ কুঞ্চক মাঝে করল পরবেশ। বিবিধ মিঠাই কত্ত্ উপহার। ভোজন করু তঁহিং কত পরকার॥ রাইক যতনে সোই শ্রামরায়। বত্বিধ ভুজলুও হরিষ-হিংার 🛭 যো কছু শেষ রহল পুন থারি। স্থি স্থে ভোজন করল বর্নারি। তামুল খাই শয়ন চুত্ত কেল। আলসে আকুল দোঁহে নিন্দ গোল 🛊 স্থিগণ তাহিঁ । শ্যুন করু কুঞ্চে। কুন্থম-শেজ রচিত রসপুঞ্চে॥ নিতি নিতি ঐছন ছুহুঁক বিলাস। বীজন করতহি গোবিনদাস ॥২০॥১১১১॥ ইতি তৃতীয়-শাখায়াং ষোড়শপল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৬০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কক তহিঁ' ফলে 'করতহিঁ' খ। ৩। 'জুলন' ক; 'ডোজন কক' থ, ব; 'ভোজন' প-র-সা। ৪। 'তহিঁ' ক, খ, চ।

অথ জন্ম-লালা।
আদে শ্রীঅবৈতচন্দ্রত্য যথা।
শিষ্তা।
এ তিন ভুবন মাঝে অবনী-মণ্ডল সাক্রে
তাহে পুন অভি অমুপাম।
শোক দুখ অপত্রয় বার নামে শাস্ত হয়
হেন সেই শান্তিপুর গ্রাম॥

কুবের পণ্ডিত তার শুদ্ধ-সত বিজ্ঞরায় নাভাব দেবী ভাষার গৃহিণী। শান্তিপুরে করি° স্বিভি কৃষ্ণ-পূজা করে নিডি ভক্তি-হান দেখিয়া অবনী ॥ কলি-হত জীব দেখি মনে তুখ পায় অতি ভক্ত্যে আরাধয়ে ভগবান। সেই আরাধন-কাজে নাভা দেবী-গর্ভ মাঝে মহাবিষ্ণু হৈলা অধিষ্ঠান। শুক্লা সপ্তমী দিনে মাঘ মাস শুভক্ষণে অবতীৰ্ণ হৈলা মহাশয়। হৈলা হর্ষত-মতিং দেখিয়া পণ্ডিত অতি নয়নে আনন্দ-ধারা বয়॥ আনন্দ পাইল মনে আচস্বিতে জগ-জনে কি লাগিয়া কেহো নাহি জানে। এ বৈষ্ণবদাসে বলে উদ্ধার হইবে হেলে পতিত পাৰ্ণ্ডী দীন হানে #১॥১১১২॥

পাঠান্তর

) । हेक्षा श्र-त्र-जा शू (श्रंत २७५० जरशास श्रम । १। 'नाष्ठा' क। १। 'नाष्ठा' क। १। 'व्हित्र मिष्ठि' भ, च। ७। 'व्हित्र विकार-मार्जि' कृतन 'देवश्वरवत्र मार्जि' भ, च।

क्नानि ।)

কুবের পণ্ডিত অতি হর্ষত দেখিয়া পুক্রের মুখ।
করি জাতকর্মা যে আছিলং ধর্মা বাঢ়য়ে মনের স্থখ।
কর ক্ষাক্ষণ বর্মন কাঞ্চন বর্মন কমল-শোভা।
ভাজামুলস্থিত বাস্থ স্থবলিত

নাভি স্থগভার পরম সুন্দর নয়ন কমল জিনি। অরুণ চরণ নখ-দরপণ জিভি কত বিধুমণি॥ মহাপুরুষের চিহ্ন মনোহর দেখিয়া বিশ্বয় সভে। বুঝি ইহা হৈতে জগত তরিবে এই করে অমুভবে 🛭 যত পুরনারী শিশু-মুখ হেরি° व्यानन्त-माग्रददः ভाদ। না ধরুয়ে হিয়া পুন পুন গিয়া नित्रश्राय अनिमिर्ध ॥ করে পরিহারে তাহার মাতারে কহে হেন স্থত যার। ভার ভাগ্য-সামা কি দিব উপমা ভূবনে কে সম তার। স্ব' নারাগণ এতেক বচন কহে গদ গদ ভাষা । বুঝল কারণ জগত-তারণ नाम देवखरवज्ञ आ**मा**भ्य ॥२॥১১**५७॥**

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১১ সংখ্যক পদ।
২। 'বে আছিল' হুলে 'বেবা বিদি' ধ; 'বেবা ছিল'
প-র-সা। ৩। 'বত পুরনারী' ইত্যাদি পংক্তি
চারিটি থ পুথিতে নাই। ৪। 'সাগরে' ক, প-র-সা।
৫। 'ক্রি' থ, প-র-সা। ৩। 'তাহার' ইত্যাদি
হুলে 'তাহার মাতার করি পরিহার' প-র-সা। १।
'ক্হে' প-র-সা। ৮। 'ভাব' প-র-সা। ৯।
'বুঝিল' ঘ। ১০। 'আশ' প-র-সা।

यहरै ।)

নাহি কৃষ্ণ-নাম-ভন্ত বিষয়ে সকলং মন্ত ভক্তিশৃগ্য হইল অবনী⁹। কলিকাল-সর্প-বিষে দগ্ধ জীব মিথাবিসে না জানয়ে কেবা⁸ সে আপনি ॥ নিজ কন্যা-পুজোৎসবে ধন-ব্যয় করে সভে নাহি অন্য শুভ কর্মলেশ। যক্ষ পুজে মন্ত মাংসে নানা মতে জীব হিংসে এই মত হৈল সর্বব দেশ। কমলাক নাম ধরি দেখিয়া করুণা করি অবতীর্ণ হৈলা গৌড় দেশে। সাক্ষোপাজে অবতার ব্রজরাজ-কুমার করাইব এই অভিলাবে ॥ সর্ব্ব-আগে আগুয়ান জীবের করিতে ত্রাণ শান্তিপুরে করিলা প্রকাশ। সকল চুক্কতি যাবে সভে কৃষ্ণ-প্রেম পাবে कट्ट मीन देवखदवत्र मांग ॥०॥১১১৪॥ পাঠান্তর

ভণা রাগ ৷>

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১২ সংখ্যক পদ।

२। 'त्रकरन' क; 'त्रकनि' थ। ७। 'स्मिनी'

भ-त-ना। **८। 'किवा' थ। ८। 'अस्र' भ-त-ना।**

জয় জয় অবৈত আচার্য্য দরাময়।

অবতীর্ণ হৈলা জীবে হইয়া সদয়॥

মাধ মাস শুক্লপক্ষে সপ্তমী দিবসে।

শান্তিপুরে আসি প্রভু হইলা প্রকাশে॥

সকল মহান্ত মাঝে আগে আগুরান।

শিশুকালে থুইলা পিতা কমলাক্ষ নাম॥

কলি-কাল-সাপে জীবে করিল গরাস।

দেখিয়া করুণা করি হইলা প্রকাশ॥

॥৪॥>>>**८॥** ইভ্যাদি গেয়ন্। পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৬১৩ সংখ্যক পদ। 'তথা রাপ' হলে 'ঐ।' খ।

ততঃ জ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রাবির্ভাবঃ।

শ্ৰীরাগ।১ রাতদেশেং নাম এক6ক্রা গ্রাম হাডাই পণ্ডিত-ঘর। শুভ মাঘ-মাসি শুক্লা ত্রয়োদশী জনমিলা হলধর॥ হাড়াই পণ্ডিত অতি হর্ষিত পুজ্র-মহোৎসব করে। ধরণী-মগুল করে টলমল আনন্দ নাহিক ধরে॥ শাস্তিপুর-নাথ মনে হর্ষিত করি কিছু অমুমান।

বুঝি জনমিলা

অন্তরে জানিলা

কতে তুখী কৃষ্ণদাসে (৫)১১:৬) পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৬১৪ সংখ্যক পদ।
 १। 'রাচ্চেশ' ক, প-র-সা।

श्रहें।

ভূবন-আনন্দ-কন্দ বলরাম নিত্যাধন্দ অবতীর্ণ হৈলা কলি-কালে। ঘূটিল সকল চুখ দেখিয়া ও চান্দমুখ ভাসে লোক আনন্দ-হিলোলেণ্ট

क्य क्य निजानम त्राम। অঙ্গুলে চান্দের পাঁতি _{কনক-চ}ম্পক-কাতি রূপে জিতল কোটি কাম ॥ প্রদ_াং शृर्ग-ठन्त्र किरम त्निश् ও মুখ-মণ্ডল দেখি দিঘল নয়ান ভাঙ, ধমু। আদাসুলম্বিত ভুজ তল থল-পক্ত কটি খীণ করি-অরি⁶ জমু॥ ভকত-ভ্ৰমন্ন বুলে চরণ-কমল-ভলে আধ বাণী অমিয়াণ প্রকাশ। हेर कलियुग-कौरव উদ্ধার হইবে এবে करह दीन हुची कृष्णनाम ॥७॥১১১१॥

পঠিক্সির

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১৬১৫ সংখ্যক পদ।
'বৃংই' স্থলে 'শ্রীরাগ' প-র-সা। ২। 'হৈল' ক,
ধ। ৩। 'সাপরে' প-র-সা। ৪।প-র-সাব্যতীত
অস্তাত পুথিতে 'শ্রু' নাই। ৫। 'শ্রীর' ক; 'রৈরি'
চ। ৬। 'আনিরা' ধ। ৭। 'ফইল' ক; 'হইব'
গ-র-সা।

थामणी ।>

আগে জনমিলা নিভাইচান্দ।
পাতিলা অমিয়া করুণা ফান্দ ॥
নারীগণ সভে দেখিতে যায়।
সভাবে করুণা-নরানে চায়॥
দেখিয়া সে ঘরে আসিতে নারে।
রূপ ছেরি ভার নরান কুরে^২॥
দেখি সভে মনে বিচার করে।
এই কোন মহাপুরুখ-বরে॥
দেখিতে দেখিতে বাঢ়ুরে সাধ।
যবে আসিবারে পড়ুরে বাদ ॥
মানে করি ইহায় হিয়ায় ভরি।
মন্নানে কাজর করিয়া পরি॥

কত পুণ্য কৈল ইহার মাতা।

এ হেন বালক দিলা বিধাতা ॥

এত কহি কারু নয়ান দিয়া।

আনন্দের ধারা পড়ে বাহিয়া॥

কারু স্থন বাহি ছুগ্রধ করে।

কেহো যায় তারে করিতে কোরে॥

এ সব বিকার রমণীগণে।

শিবরাম আশা করুয়ে মনে॥৭॥১১১৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৬১৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝরে'ক,চ।

তথাহি

তথাহি

তথাহি

তি চৈতত্য-ভাগবতে যথা ।

রাচ় মাৰে একচাকা নামে প্রাছে প্রাম ।

হাড়াই পণ্ডিত নাম শুদ্ধ বিপ্ররাজ ।

মূলে সর্বর্ব পিতা তানে কৈল পিতা-ব্যাজ ॥

মহা জয়জয়-ধ্বনি পুষ্পা-ব্যবহণ ।

সক্ষোপে দেবতা গে করিলা তথন ॥

ক্পা-সিন্ধু ভক্তিদাতা

ত্তিবিষ্ণব-ধাম ।

অবতার্গ হৈলা রাচে নিভ্যানন্দ রাম ॥

সেই দিন হৈতে রাচ্-মণ্ডল সকল ।

পুন পুন বাঢ়িতে লাগিল স্থমস্বল ॥

১৮১১১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুঁথির ১৬১৭ সংখ্যক পদ।

হ। 'মধ্যে' ব; 'দেশে' প-র-সা। ৩। 'তহি'

ইত্যাদি হলে 'তাহে' ইত্যাদি ক, খ; 'তাহা অবতীর্ণ

হৈলা নিত্যানন্দ রাম' প-র-সা। ৪। 'সকলে' ক,
ব। ৫। 'পুনঃ পুনঃ' ক। ৬। 'পুমল্লে' ক,
ব।

12042251

অথ জ্রীচৈতত্মচন্দ্রস্থ জন্মলীলা। ভাটগারি।>

ফাল্পন পূর্ণিমা তিথি হতেগ সকলি।
জনম লভিবে গোরা পড়ে হুলাহুলিই।
অম্বরে অমর সভে ভেল উনমুখ।
লভিবে জনম গোরা যাবে সব ছুথ॥
শহ্ম ছুন্দুভি বাজে পরম হরিষে।
জয়-ধ্বনি হুরকুল কুহুম বরিষে॥
জগ ভিবি হরিধ্বনি উঠে ঘন ঘন।
আবালবনিতা আদি নরনারীগণ॥
শুভক্ষণ জানি গোরা জনম লভিলই।
পূর্ণিমার চন্দ্র যেন উদয় করিলই॥
দেই কালে চন্দ্রে রাহু করিল গ্রহণ।
হরি হরি ধ্বনি উঠে ভরিয়া ভুবন॥
দীন হীন উদ্ধার হইবে ভেলই আশ।
দেখিয়া আনন্দে ভাগে জগরাধ দাসই॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হড়াহড়ি' প-র-সা। ৩। 'লভিলা' ক,
প-র-সা। ৪। 'করিল' ক, প-র-সা। ৫। 'হেন'
ছ। ৬। 'দেখিরা' ইত্যাদি স্থলে 'আনন্দে তালে
প্রুপ্রাথ দাস' প-র-সা।

ছুড়ী।১

জয় জয় কলরৰ নদিয়া নগরে।
জনম লভিলা গোরা শচীর উদরে।
ফাল্পন-পূর্ণিমা ভিথি নক্ষত্র ফাল্পনি।
শুভক্ষণে জনমিলা গোরা বিজমণি।
পূর্ণিমার চন্দ্র জিনি কিরণ প্রকাশ।
দূরে গেল অন্ধকার পাইয়া নৈরাশ।

থাপরে নন্দের ঘরে কৃষ্ণ অবভার।

যশোদা-উদরে জন্ম বিদিত সংসার॥

শচীর উদরে এবে জন্ম নদীয়াতে।

কলিযুগের জীব সব নিস্তার করিতে॥

বাস্থদেব ঘোষ কহে মনে করি আশা।

গৌর-পদ-ঘন্দ মনে করিয়া ভরোসাং॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরদা'ক,খ,প-র-সা।

कमानि ।>

নদিয়া-উদয়-গিরি পূর্ণ-চন্দ্র গৌরহরি কুপা করি করিলা উদয়। ত্রিজগতে উল্লাস পাপ-তম হৈল নাশ জগ ভরি হরি-ধ্বনি হয়। হেন কালেং নিজালয়েও উঠিয়া অহৈত রায়ে নৃত্য করে আনন্দিত মনে। ছরিদাস লৈয়া সঙ্গে ভূঙার গর্ভন রবে কেনে নাচে কেছো° নাহি জানে। দেখি উপরাগ-রাশি শীত্র গঙ্গাঘাটে আসি আনন্দে করিল গলামান। পাঞা উপরাগ-ছলে আপনার মনোবলে ব্রাক্ষণেরে করে নানা দান। रमिश्र मरन विश्वव জগত আনন্দময় ঠারে-ঠোরে কছে হরিদাস। ভোমার ঐছন রক भारत मन भरतम বুঝি কিছু কাজে আছে ভাষ॥ আচার্য্য-রত্ন শ্রীবাস হৈল মনে সুখোরাগ यारे ज्ञान कर्त्र शकाकरन । दिक्न इति-मङ्गीर्वन जानएक विश्वल-मन नामा मान देवन महनाबहन ॥

এই মত জক্ত তথি যার যেই দেশে স্থিতি
তাহাঁ তাহাঁ গাই মনোবলে।
নাচে করে সঙ্কীর্ত্তন আনন্দে বিভোল ১১ মন
দান করে প্রাহণের ছলে ॥১১॥১১২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২০ সংখ্যক পদ।
২। 'হেন কালে' স্থলে 'সেই কালে' প-র-সা। ৩।
'নিজালয়' প-র-সা। ৪। 'রায়' প-র-সা। ৫।
'কেহ' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'দেখি' ইত্যাদি
অবশিষ্ট কলিগুলি প-র-সা পুথিতে নাই। १। 'মনবলে' থ। ৮। 'কৈল' খ। ৯। 'ভিডি' ঘ;
'তিথি' চ। ১০। 'তাহা তাহা' ক। ১১।
'বিহ্বল' ক, চ।

দিনান্তরে। বিভাব বা তুড়ী।১

বিভাগ বা জুড়া।১

হের দেখসিয়া নয়ান ভরিয়া

কি আর পুছসি আনে।

নদিয়া নগরে শচীর মন্দিরে

চান্দের উদয় দিনে।

কিয়ে লাখবান ক্ষিল ক্রাঞ্চন

কিয়ে লাখবান ক্ষিল কাঞ্চন রূপের নিছনি গোরা। শচীর উদর- জলদে নিক্সিল

থীরং বি**জু**রি পারা॥

কত বিধুবর বদন উজোর নিশি-দিশি সম শোভে।

নয়ান-ভ্ৰমর শ্রুতি-সরোরুহে

ধায় মকরন্দ-গোলে॥
পাজামুলন্থিত ভূজ স্বালিত
নাজি ছেম-সরোবর।

^{ক্টি} করি-জরি° উর° হেম-গিরি এ লোচন-মনোহর° ॥১২॥১১২৩॥

পঠিক্তির

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২১ সংখাক পদ। ২। 'ফ্রি'ক,চ। ৩। 'ঠ্র'গ-র-সা। ৪। 'উক'ক,থ,ঘ,প-র-সা। ৫। 'মনহর'ঘ।

মুহিলা।১

প্রকাশ হইলা গোরচন্দ।
দশ দিশেই বাড়িনই আনন্দ॥
রূপ কোটি মদন জিনিয়া।
হাসে নিজ-কার্ত্তন করিয়া॥
অভি প্রমধুর মুখ জাইয়।
মহারাজ-চিহ্ন দব দেখি॥
শ্রীচরণে হ্বজ বন্ধ্র শোহে।
দব অঙ্গে জগ-মন মোহে॥
দূরে গেলই সকল আপদ।
ব্যক্ত ইইল সকল সম্পদ ॥
শ্রীচিত্ত নিত্যানন্দ জান।

বৃন্দাবন তছু পদে। গান॥১৩॥১১২৪॥
 পাঠাস্কর

)। देश भन्त-माशूबित ১७२२ मःशाक भन्न। २। 'निर्गि' क, थ, ह, भन्त-मा। ७। 'वाहिन' थ, 'वहिन' भन्त-मा। ८। 'ग्रिड' भन्त-मा। ८। 'भन' घ।

भव्यव्यव्यो । ३

শুনি লোক নদিয়ার

শ্রীচৈতম্য অবতার

উঠিল পরম মঙ্গল রে।
সকল-ভাপ-হর শ্রীমুখ স্থন্দর
দেখিয়া হুচল বিভোর রে।
অনস্ত ব্রহ্মা শিব আদিং বুচ দেব
সভাই নর-রূপ-ধারা রে।
গায়েন হরি হরি গ্রহণণ ছল করি
লখিতে কেহোণ নাহি পারি রে।

কেহো করে স্তুতি কারো॰ হাতে ছাতি কেহো চামর ঢুলায় রে। কেহো পুষ্প বরিষে পরম হরিষে কেহো নাচে কেহো গায় বায় রে । লোক নদিয়ায় **দশ দিগে ধায়** করিয়া উচ্চ হরি-ধ্বনি রে। মামুষ দেবে মেলি এক ঠাঞি বরে কেলি व्यानरम नवशीभभूतो (त । শচীর অঞ্চনে मकल (नवगरन প্রণত হইয়া পড়িল বে। লখিতে কেহো নারে গ্রহণ-অন্ধকারে দুজে য় চৈত্যের থেলা রে। সকল শক্তি সঞ্চ আইলা গোরাঙ্গ পাষ্ডী কেহো নাহি জ্বানে রে। রান্ত ধরল ইন্দু প্রকাশেদ নাম-সিমু कलि-मर्फन वाटक वाना (त 1)81))२०॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২০ সংখ্যক পদ।
২। 'আদি করি' প-র সা। ৩। 'গ্রহণের'
প-র-সা। ৪। 'কোই' থ, ঘ, চ। ৫। 'কার'
ফ। ৬। 'এক ঠাক্রি' হলে 'একক্র' প-র-সা।
৭। 'চৈড্রু' ফ, থ, প-র-সা। ৮। 'প্রকাশ'
ফ। ১। খপুথি ছাড়া অক্সাক্র পুথিতে 'বাজে'
শব্দ নাই।

তথা বাগ ৷১

দ্বন্দুভি ডিণ্ডিমিং মন্ত্রী জ্বয়-ধ্বনি গাওয়ে মধুর বিধান রে। বেদের অগোচর ভেটিব গৌরবর বিলম্বে নাহি আর কাক বে॥

আনন্দে• ইন্দ্রপুর মলল-কোলারল সাজ সাজ বলি সাজ রে। চৈত্তত্য প্ৰকাশে বহু পুণ্যভাগে পাওল নবদ্বীপ মাঝ রে॥ **অ**ন্যোগ্যেগ্ আলিসন - চুম্বন ঘনে ঘন লাজ কেছো নাহি মানে রে। নদিয়া-পুরবাসী আপন পর নাহি জানে রে॥ ঐছন কোতুকে দেবতা নৰবীপে আওল শুনি হরি-নাম রে। পাইয়া গোর-রদে বিভোর পরবলে হৈতত্য জয় জয় গান রে। দেখিলা শচী-গৃহে গোরাক্ত পরকাশে একত্রে কত কোটি চান্দ রে^১ ॥ মাসুষ-ক্লপ ধরি গ্রহণ-ছল করি (वालर्य উচ্চ হরি-নাম রে॥ সকল শক্তি সঙ্গে আইলা গৌরাপে পাষ্ডী কেহো নাহি জানে রে। শ্রীটেততা নিত্যানন্দ অবৈত আদি ভক্ত-বুন্দ वृन्नावनमाम अन गान (व ॥)৫॥))२७। ইত্যাদি প্রীক্ষবৈত-নিত্যানন্দ-भोत्रहत्त्रण जग्न-लोग। ইতি তৃতীয়-শাখায়াং সপ্তদশপল্লবঃ।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ডিভিম'ক, দ, চ। ৩। 'মহরি' প-র-সা।
৪। 'মধু' খ। ৫। 'বিশাল' প-র-সা। ৬।
'আনন্দ' প-র-সা। ৬। 'পুণ্য ভাগো' ক; 'পুণ্য ভাবে' প-র-সা। ৮। 'পুন্য ভাগো' ক; 'পুণ্য ভাবে' প-র-সা। ৮। 'জনক্তে' প-র-সা। ৯। 'কৌতৃক' ক। ১৬। 'একত্তে' ইত্যাদি হলে 'একত্তে বৈছে কড় কোটি চান্দ রে' ক; 'একত্ত ঐছে কোটি চান্দ রে' চ।

পাঠান্তর

অথ একুষ্ণত জন্ম-লীলা।

नटन्मां ९ मवः ।

অস্তোচিত-শ্রীগৌরচক্রঃ।

कमानी ।>

পুরুব জনম-দিবস দেখিয়া আবেশে গৌর রায়। হর্ষিত হৈয়া নিজগণ২ লৈয়া নন্দ-মহোৎসব গায় ॥ খোল করতাল বাজয়ে রসাল कीर्खन जनम-लोला। গোগান্ধ-স্থন্দর আবেশে আমার গোপ-বেশ নির্মিলা॥ মুত ঘোল দধি গো-রস হলদি अवनी भाषाद्व छालि। কান্ধে ভার করি তাহার উপরি নাচে গোরা বনমালী # নিতাই স্থন্দর করে**তু লগু**ড় আনন্দ-আবেশে নাচে। রাম গোরীদাস রামাই মহেশ নাচে তার পাছে পাছে[।] ॥ হেরিয়া যতেক नोलाहल -- (ला क প্রেমের পাথারে ভাসে। দেখিয়া বিভোর আনন্দ-সাগর এ জগমোহন দাসে ।১॥১১২৭॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ছিলপণ' ক, ধ, ঘ, চ। ৩। 'করেতে'
প-র-সা। ৪। 'পিছে পিছে' প-র-সা। ৫।
'নীলাচল' প-র-সা। ৬। 'এ জগমোহন দাসে'
ছলে 'গার বৃন্ধাবন দাসে' প-র-সা।

বিভাগ 1>

নিশি-অবশেষে জাগি বরজেশারি
হেরই বালক-মুখ চান্দে।
কতত্ত্ব উল্লাস কহই না পারিয়েং
উপলাই হিয়া নাহি বান্ধে।
আনন্দ কো করু ওর।
শুনি ধনিও নন্দ গোপেশ্বর আয়ল
নিশু-মুখ হেরিয়া বিভোর ॥ধ্রু॥
চলতত্ত্বি খলত উঠত খেনে গারত।
কহি সব গোকুল-লোকে।
আয়ল বন্দিগণ খোলান সজ্জন
করত্তি জাত বৈদিকে॥
দধি স্বত নবনি হরিদ্রা হৈয়ক্ষব
ঢালত অফন মাঝে।
কহৎ শিবরাম দাস আনন্দে নাচত
গাওত ব্যলবর-রাজে ॥২॥১১২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৬২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পারই' প-র-সা। ৩। 'ধ্বনি' ক। ৪।
'গিরত' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'কহ' ইত্যাদি
স্থলে—'কহ শিবরাম দাস অব আানন্দে নাচত গাওত
ব্রহ্মবর-রাজে॥' ক, ধ, ঘ, চ।

ধানশী।১

নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি আনন্দ করত বাধাই। গোকুল নগর-লোক সব হর্ষিত নন্দ-মহলং চলু ধাই॥ গোরোচনা জিনি গোরি স্থনাগরি নব নব রজিণি সাথা। নন্দ-সূন্দ সবে হেরইতে আনন্দে লোক চলত পথ মারা॥ আনন্দে ধ্যে কর ওর।
পত্তি গান ওান কত কর ত্তিঁ
মন-স্থে সব জন ভোব ॥ গ্রু ॥
আওল নন্দ-মহল মহা আনন্দে
অজনে ভেল উপনীত।
বশোমতি রোহিণি লেই সব গোপিনি
করতহি সব জনে পাত ॥
বশোমতি-বয়ন হেরি সভে পৃহত
কৈছন বালক দেখি ।
জনম সফল ভুয়া আনন্দ ধন জন
পুণ্য ভুবনে কত লেখি ।
গোপ গোপিগণ দধি স্তুত মাধন
ঢালত ভারহি ভার।
কহ শিবরাম সকল তুখ মীটল ২
আনন্দে কো করু পার ॥৩:১১২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৭ সংথাক পদ।

২। 'মহলে' খ, প-র-সা। ৩। 'সাত' ঘ।

৪। 'ম্ন'ক, থ, চ; 'ভন' প-র-সা। ৫। 'আনশ্দ'

ক, খ। ৬। 'গমনে'খ। ৭। 'তাল' প-র-সা।

৮। 'জন'ক, চ। ৯। 'পুছত'ক, চ, প-র-সা।

১০। 'তোর' প-র-সা। ১১। 'দেখি'ক, থ, চ।

'জনম সকল' ইত্যাদি পংক্তিম্মের স্থলে—'ভনি

কুসোম্ভি আনন্দে অতি দেখহ বালক মোর ॥'
প-র-সা। ১২। 'মিটব'ক, 'মিটল' চ।

टिश्रवी।>

পুত্রমুদারমস্ভ যশোদা।
সমজনি বল্লব-ততিরতিমোদাং ॥
গ্রুম
কোহপূগনয়তিং বিবিধমুপহারম্ ।
নৃত্যতি কোহণি জনো বছবারম্ ॥

কোহপি মধুরমুপগায়তি গীতম।
বিকিরতি কোহপি সদধি-নবনীতম্ ॥
কোহপি তনোতি মনোরথ-পূর্ত্তিম্।
পশ্যতি বোহপি সনাতন-মূর্ত্তিম্ ॥৪॥১১৩०॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুণির ১ ২৮ সংখ্যক পদ।
১১৩০।১১৩১ সংখ্যক পদৰর নরহরি চক্রবর্তীর 'ভব্জিরদ্ধাকর' গ্রন্থে (রামনারাধ্য বিভারত্বের সংস্করণ)
২৭৮ পৃঠার উদ্ধৃত হইরাছে! ২। ভ-র গ্রন্থ ব্যতীত
অহান্ত পুণিতে 'ধ্রু' নাই। ৩। 'কাপ্যুপন্ধতি'
ক; 'কোপ্যুপন্ধতি' প-র-সা।

টাকা

> — ৮। "পুত্র"মিত্যাদি। বশোদা উদারং মহাস্তঃ পুত্রং অহত প্রহত্তত্তী। বল্লব হতিঃ গোপ-সমাজঃ অতিমোদা প্রকৃষ্টহর্ষঃ সমজনি জাঙঃ। কোহিপি বিবিধমুপহারং উপনয়তি সমাসত বিজাদিতাঃ বিতরতি। কোহিপি জনো বহুবারং হর্ষাতিরেকাং বারং বারং নৃত্যাতি। কোহিপি মধুরং গীতং উপগায়তি কোহিশি দল্লা সহ নবনীতং বিকিয়তি দিবিনবনীতাদিকং ভূমৌ বিকীর্য্য মঙ্গলমাচরতীতি ভাবঃ। কোহিপি মনোরপপুর্তিং বাঞ্চিতপুরণং বাচকানামিতি শেষঃ তনোতি বিদ্ধাতি কোহিপি সনাতনমূর্তিং প্রকৃষ্ণং পক্ষে সনাতনগোস্থামিনঃ আরাধ্যমূর্তিং পশ্রতি।

অহবাদ

১—৮। বশোদা পুত্র-রত্ন প্রস্ব করিলেন;
গোপগণ আনন্দোৎফুল হইলেন। কেহ বিবিধ
উপহার আনয়ন ও কেহ বারম্বার নৃত্য করিতেছেন।
কেহ মধুর স্বরে গান করিতেছেন ও কেহ দ্ধির
সহিত নবনীত ছড়াইতেছেন। কেহ (বাচক্দিগের)
বাহ্নিত-পুরণ করিতেছেন; কেহ বা সনাতন-মূর্জিকে
দেখিতেছেন।

আশাৰরী।১

বিপ্র-বৃন্দমভূদলক্ক তিং-গোধনৈর পি পূর্ণম্।
গায়নানপি মবিধান্ ব্রজনাথ তোষয় ভূর্ণম্॥
সূত্রভূত৽-স্থানারেছিলিঃ নন্দরাজ তবায়ম্।
দেহি গোষ্ঠ-জনায় বাঞ্জিতমুৎসবোচিত-দায়ম্
॥ अ॥

তাবকাত্মজ্ব-বীক্ষণ-ক্ষণ-মন্দি মধিধ-চিত্তম্। যন্ন কৈরপি লব্ধমর্থিভিরেতদিচ্ছতি বিত্তম্ ॥ শ্রীসনাতন-চিত্ত-মানস-কেলি-নাল-মরালে। মাদৃশাং• রতিরত্র তিষ্ঠতু সর্ববদা তব বালে॥

101125051

পাঠাস্তর

১: ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৯ সংখ্যক পদ।

২। 'রক্ষমভূদলঙ্কতি' (ভ-র) স্থলে 'র্ক্ষমভূদল
য় ১' ক, ঝ, য়, ঢ়; 'র্ক্ষমভূদলয়তং' প-র-সা। ৩।

'প্নরস্তুত' (?) য়। ৪। 'য়্ক্লরো জানে' ঝ।

৫। ভ-র ব্যতীত অভাক্ত পুথিতে 'এ' নাই। ৬।

'মাদৃশাং' স্থলে 'মাদৃশং' য়, চ।

টাকা

১—৮। "বিপ্রবৃক্ষ"মিত্যাদি। হে ব্রজনাথ ব্রজেম্বর নকা। বিপ্রবৃক্ষং ব্রাক্ষণসমূহঃ অসম্বার্থনাথনৈঃ পূর্ণং পুরিতাভিলায়ঃ অভ্ জাতঃ মধিধান্ মংসদৃশান্ গায়নান্ গায়কান্ অপি তুর্ণং সম্বরং তোরয় য়য়াদিদানেন প্রীণয়। হে নক্ষরাজ। তব অয়ং হয়ঃ ক্ষেরঃ অভ্তম্করঃ অপ্র্রম্প্রীকঃ অজনি লাতবান্। অতঃ গোঠজনায় গোপজনায় বাঞ্চিত-মতীইং উৎস্বোচিত-ধনং দেহি। তাবকক্ত স্থংসম্বন্ধিনঃ আত্মক্ত বীক্ষণ-ক্ষণেন দর্শনানক্ষেন নক্ষতে মোগতে ইতি তথা মহিধানাং জনানাং চিত্তং মং কৈরপি আর্থিভিন্যিটকৈঃ ন লক্ষং প্রোপ্তং এতং এতাবং বিত্তং ধনং ইছেতি অভিলবতি অক্তমনগ্রন্ধতিং ধনং কাজ্মতাতি ভাবঃ। প্রীঃ স্নাতনী মক্ত স্প্রিক্কশুক্ষিন্ত তিরং বেবাং অর্থাৎ তত্তজানাং মানসং এব মানস্বরঃ ত্মিন্ কেলিবিবরে বো নীল্ময়ালঃ নীল্ময়ালবৎ প্রীক্কঃ

ভিন্মিন্। পক্ষে গ্রীসনাতনক্ত গোলামিনঃ চিন্তমেৰ মানসং মানসদরক্তন্ত্রিলিভাাদি শেবং পূর্ববিং। তব অত্র বালকে মাদৃশাং ত্রিভাপকাভরাগাং ইভি ভাবঃ রতিরম্বাগঃ সর্বাদা তিওঁতু স্থিরীভবতু।

অহবাদ

—৮। হে ব্রেম্বর! বিপ্র-রুক্ত অলভার ও গোধনে বারা পরিত্থ ইইমাছেন; (এখন) মাদৃশ গাগ্রকদিগকেও সত্তর সম্ভূট ককন। হে নক্ষরাল! আপনার এই পুত্র অতি অপুর্ব সৌক্র্যাশানী জ্মিরা-ছেন; আপনি গোপগনকে উৎসবোচিত অভীপ্ত ধন দান করন। আপনার পুত্র-দর্শনানক্ষোৎজ্ল মাদৃশ জনের চিত্ত, যাহা অভ্যে পার নাই, এইরুপ বিভ কামনা করিভেছে। রুফাগত-চিত্ত ব্যক্তিগণের চিত্ত-রুপ মানস-সরোবরের স্থনীল মরাল (অপর পক্ষে— সনাতন নামক গোসামার চিত্তরূপ মানসের স্থনীল মরাল) আপনার এই বালকের প্রতি মাদৃশ জনের অপুরাগ সর্বাল অবিচলভাবে অবস্থান করক।

ष्ट्रहो ।>

🕨 জয় জয় ধ্বনি ব্রঞ্জ ভরিয়া রে। উপনন্দ অভিনন্দ **जनम नमन नम** পঞ্চ ভাই বাচে বাহু তুলিয়া রে ॥ ধ্রু॥ ञ्चलवानि त्याश नव যশোধর যশোদেব নাচে নাচে আনন্দে ভুলিয়া রে। नाटि दि नाटि दि नम मटक टेलश दिशा दिशान-युम 'হাতে লাঠি কান্ধে ভার করিয়া রে॥ সৃতিকা-গৃহেতে ধায় খেনে নাচে খেনে গায় गित्रदम्भ वालक-मूथ द्दित्रमा दत्र। मधि १४ छ। द्व छ। दव जनस्य व्यवनी भरत्र কেহ শিরে ঢালে দধি ভুলিয়া রে॥ व्याउन शेरत शैरत লগুড় লইগ্রা করে नत्मत अननो नाटह वत्रोग्रमाः वृष्ट्रियाः दत्र । জজকারখ-ধ্বনি করি ষত বুদ্ধ গোপ নারী আশাধ করয়ে শিশু বেঢ়িরা রে।

নর্দ্তক বাদক কত নাচে গায় শত শত
ধেসু ধায় উচ্চ পুচ্ছ করিয়া রে।
ভোর হৈল গোপ সব অপরূপ নন্দোৎসব
এ দাস শিবাই নাচে ফিরিয়া রে॥

॥७॥५५७१॥

119112 7001

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৬৩০ সংখ্যক পদ।

হ। 'পঞ্চ ভাই' ফলে 'সবে মেলি'ক, ধ, চ; 'পাঁচ
ভাই' হ। ৩। 'ফিরয়ে' ক, ধ। ৪। 'বরিমিনি'
ক, ব, চ, প-র-সা; 'বরীয়িনি' হ। ৫। 'বুড়িয়া'
হ। ৬। 'জয়কার' ক, চ। ৭। 'বেড়িয়া' ক।

ঝুমর।>

স্বর্গে ছুন্দুভি বাজে নাচে দেবগণ।
হরি হরি হরি ধ্বনি ভরিল ভুবন ॥
ব্রহ্মা নাচে শিব নাচে আর নাচে ইন্দ্র।
গোকুলে গোয়ালা নাচে পাইয়া গোবিন্দ ॥
নন্দের মন্দিরে গোয়ালা আইল ধাইঞা।
হাতে লড়িং কান্ধে ভার নাচে থৈয়া থৈয়া।
দিধি ছুগ্ধ স্থুত ঘোল অঙ্গনে ঢালিয়া।
নাচে রে নাচে রে নন্দ গোবিন্দ পাইয়া॥
আনন্দ হইল বড় আনন্দ হইল।
এ দাস শিবাইর মন ভুলিয়া রহিল॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০১ সংখ্যক পদ। 'ঝুমর' ছলে 'ভুড়ী' প-র-সা। ২। 'লাঠি' ক, খ, ছ,চ। ৩। 'থেইয়াথেইয়া' হ,চ।

कनानी।>

যশোদা-নন্দন দেখি আনন্দে পূর্ণিত আঁখি
কৌভূকে নাচয়ে গোপ-রাণী।
তৈল হরিদ্রা পায় সভে সভার অলে দেয়
হলাহুলি দিয়া জর-ধ্বনি ॥

কেহো নাচে কেহো গায় কেহো নানা বাছ বায়
নন্দের আনন্দের নাহি সীমা।
উৎসব করয়ে রোলে ঘন ঘন হরি বোলে
কি কহিব যশোদার মহিমা॥
অধিল-ভূবন-পতি অনাথ জনার গভি॰
সকল দেবের শিরোমণি।
আজু শুভ দিন মোরে হৈলা প্রভু নন্দ-ঘরে
বড় ভাগ্যবতী নন্দ-রাণী ॥৮॥১১৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুর্বির ১৬৩২ সংখ্যক পর। ২। 'নাচে' ক। ৩। 'অখিল-ভূবন-পতি' ইত্যাদি কলিটি প-র-সা বাতীত অক্সাক্ত পুথিতে নাই, তং-স্থলে 'ইত্যাদি' শব্দ আছে।

व्यव मर्या १३

বোগমায়া ভগবতা দেবী পৌর্ণমাসী।
দেখিয়া যশোদা-পুক্ত নন্দ-গৃহে আসি ॥
সভে সাবধান করি যশোদারে করে।
বছ পুণ্যে এ হেন বালক মিলেং ভোহে।
বছ আশার্বাদ কৈলা হরষিত হৈয়া।
রূপ নির্থয়ে স্থথে এক-দিঠে চাইয়া॥
এ দাস শিবাই বলে অপরূপ ছেরিং।
দেখিয়া বালক-ঠাম যান্ত বলিহারি॥

190661

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুশির ১৬৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'মেন' প-র-দা। ৩। 'এ দাদ শিবাই' ইত্যাদি ভণিতার কলি প-র-দা ব্যতীত অভার পুশিজে নাই। আশোরারী ।১

ব্রজরাঞ্চ-কোঙর।
গোকুল-উদয়গিরি-চাঁদ উজোর ॥ এই ॥
কোটি ইন্দু জিনি মুখ তন্ম জলধর।
একত্র উদয়ে আলো করিয়াছে ঘর॥
মুখ নীল-সরোক্রহ বিন্ধু অধর।
অরুণ-কমল শ্রুতি নয়ান শুমর॥
করভ জিনিয়া কর রক্তপক্ষবর।
নীল ধরাধর উর্গু নাভি সরোবর ॥
সিংহের শাবক কটি অতি মনোহর।
উলটি কদলা উরু দেখিতে স্থন্দর ॥
ও পল কেমল জিনি চরণ রাতুল।
হেরিয়া উদ্ধব প্রু চিত মন ভূল॥
॥১০॥১১৩৩॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৬৩3 সংখ্যক পদ।
২। প-র-সাব্যক্তীত অভাভ পুথিতে 'ঞ' নাই।
৩। 'আল' ক, থ, খ, প-র-সা। ৪। 'উক'
ক,থ,ঘ,প-র-সা। ৫। 'ও থল' হলে 'উধ্ল'
প-র-সা।

অথ শ্রীরাধিকায়া জন্মোৎসবঃ। তত্ত্র শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

গোরা-রূপে কি দিব তুলনা'।
তুলনাং নহিল যে কবিল বানং সোণা॥
মেদের বিজুরা নহে রূপের উপাম।
তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম॥
তুলনা নহিল স্বর্ণ-কেডকীর দল।
তুলনা নহিল গোরোচনা নির্মল॥
কুকুম জিনিয়া অল-গরুং মনোহরা।
বাস্থ কহে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা॥

12212201

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সা পৃথির ৩৭। ও ১৬৪১ ও প-র পৃথির ২া১ সংখ্যক পদ। ২। 'উপমা' ক, থ, ঘ, চ। ৩। 'ক্ষিল বান' ফ্লে 'ক্সিদ কাঁচা' প-র। ৪। 'ক্লেপর' প-র-সা, 'ক্লেপ' প-র। ৫। 'অফ্ল-সক্ল' ফ্লে 'ক্লপ ক্ষতি' প-র-সা, প-র।

> "গাও রে গৌবাস-গুণ গাও। গাইয়া দেখ কেমন জুড়াও॥" ইত্যাদি পূর্বাপরং গীয়তে।

> > कमाधि ।>

ভাদ্র-শুক্রাষ্ট্রমী তিথি বিশাখা নক্ষত্ৰ ভথি শ্রীমতার জনম সেই কালে। মধ্যদিন-গত রবি দেখিয়া বালিকা-ছবি জয় জয় দেই কুতৃহলে॥ প্রতি ঘরে প্রতি ঘরে° বৃষভাত্ম-রাজপুরেং क्य ब्राट्स जीबाट्स ब्राट्स ट्याटन । কল্যার শ্রী-মুখঃ দেখি রাজা হৈলা মহাস্থী দান দেই ব্ৰাহ্মণ সকলে। নগরের যত নারী নানা দ্রব্য হস্তে করি वाहेला मण्ड कीर्छिमा - मिन्स्दि । দৈব হৈলা অমুকৃলে অনেক পুণ্যের ফলে এ হেন বালিকা মিলেও ভোরে॥ এহোত মামুৰ নয় মোদের মনে হেন লয় कान इरल किवा अनिमला। না করিছ সংশয় ঘনশ্যাম দাস কয় कृष्ठ-श्रिया नमय हरेला ॥>२॥>>७৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'পুরে' ক, খ, ঘ, চ। ও। 'প্রতি ঘরে' হলে
'ব্রে' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'চান্দ-মুখ' ক, খ, ঘ,
চ। ৫। 'কৃত্তিকা' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'বেল্লু'

প-র-সা। ৭। 'এহত'প-র-সা। ৮। 'ঘনরাম' প-র-সা।

चाटभाषात्री ।>

ক্ষয় জয় ব্যভাপু-তনি।

অবনী উয়ল খির বিজুরী জিনি॥

অরুণ অধর মুখ চক্র জিনি।

উগারে অমিয়া তাহে ঈষত হাসনি।

নয়নযুগল শ্রুতি অতি মনলোভা।

কর-পদতল এই অই পল্প-শোভা॥

মুখ-ইন্দু গগুযুগ ভালে অর্দ্ধ চান্দে।

কর-পদ-নথে কত বিধু পড়ি কান্দে॥

কনক-মৃণাল ভুজ নাভি সরোবর।

এ দাস উদ্ধব হেরি চিত্ত মনোহর॥

12012201

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'জয়জয়' হলে 'জয়' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'হেরিচিড' হলে 'কছে বিচিঅ' খ।

यूभव ।>

বৃষভাপু-পুরে আজু আনন্দ বাধাই।
রত্বভাপু স্থভাপু নাচয়ে তিন ভাই॥
দধি প্বত নবনীত গো-রস হলদি।
আনন্দে অসনে ঢালে নাহিক অবধি॥
গোপ গোপী নাচে গায় বায় গড়াগড়ি।
মুখরা নাচয়ে বুড়ী হাতে লৈয়া নড়ি॥
ব্যভাপু রাজা নাচে অন্তর্গ-উল্লাসে।
আনন্দ বাধাই গীত গায় চারি পালে॥
লক্ষ্যক্ষ গাবী বৎস অলক্ষ্ত করি।
আক্ষণে করয়ে দান অপুনা পাসরি॥

গায়ক নর্ত্তন ভাট করে উতরোল।
দেহ দেহ লেহ লেহ শুনি এহি বোল।
কন্মার বদন দেখি কীর্ত্তিদা জননা।
আনন্দে অবশ দেহ আপনা না জানি।
কত কত পূর্ণ-চন্দ্র জিনিয়া উদয়।
এ দাস উদ্ধব হেরি আনন্দ হৃদয়॥

#>81>>8e|

ইভি জন্মলীলা।

তৃভীয়-শাখায়াং অফীদশ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুণির ১৬৪৬ সংখ্যক পদ।
 ২। 'আব্বি' ক, প-র-সা। ৩। 'আনন্দ' প-র-সা।
 ৪। 'ক্ত্তিকা' ক, চ, প-র-সা।

অথ বাৎদল্যং কৌমারকালোচিতং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:।

ष्ट्रहो ।ऽ

এক মুখে কি কহব গোরাচান্দের লীলা।
হামাগুড়ি বায় নানা রজে শচার বালাং।
লালেও মুখ ঝর ঝর দেখিতে স্থানর।
পাকা বিষুফল জিনি স্থান্ত অধর।
অজদ বলয়া শোভে স্থান্ত যুগলে।
চরণে মগরা খাড়ু বাঘনখ গলে।
বোহদেব বোষ কহে নিছনি আপনা।
॥১॥১১৪১৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হামাগুড়ি' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'হামাগুড়ি দিয়া নানা রকে করে থেলা॥' প-র-সা। ৩। নোলে'ক, চ। ৪। 'সুক্ষর'ক, খ, খ, চ। नाहिकां (वर्रणांशांत्र 1)

নাচত মোহন নন্দ-ছুলাল মেরো কান।
নাসা-বিরাজিত মোতিম-ভূষণ
কটি মাঝে খুঙ্গুক্ত রসালণ ॥
ফুল্রর উর পর বর ক্রক্ত-নখ-পদ
সরক্রহ রতন-মঞ্জীর।
নব নব বচহুঃ-পুচ্ছ ধরি ধায়ত
পতন অঙ্গুলিং ধুলিঃ-ধুসর শরীর॥
মরকত চান্দ মুক্রং মুখ-মণ্ডল
পরিসর কুঞ্জিত অলক-হিলোল।
ব্রজ-রমণী পরবোধ করায়ত
নয়ন ফ্রিয়াত্ত আধ আধ বোল॥
অভিনব নীল জলদ জিনি তমুক্তচি
কহিল নহিল রুপেশ্ কিয়ে নিরমাণ।
কত কত ভক্ত যতন করি ধ্যাওতং
সবে চূড়ামণি দাসের এই নিবেদন॥

পাঠান্তর

115856151

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৬৪৯ সংখ্যক পদ।

২। 'মোর' প-র-সা। ৩। 'যুক্তরক সান' প-র-সা।
'হলাল' শব্দের মিলে 'রসাল' শব্দ বারা কলিটি শেষ
করার বুঝা বাইতেছে বে, প্রথম পংক্তির 'মেরো
কান' অংশটি গীতের আথর-রূপে প্রযুক্ত হইরাছে।
আধুনিক রীতি অমুসারে উহা বন্ধনী-চিল্ডের মধ্যে
রাথার বোগ্য। ৪। 'বংস' ক, থ, ঘ, চ। ৫।
'অললি' প-র-সা। 'অসুলি' পাঠে ভাল অর্থ হয়
না; বোধ হর, 'অলনে' শুদ্ধ পাঠ হইবে। ৬।
'ধূলি' শব্দ ধ পুথিতে নাই। १। 'মুথর' ধ।
৮। 'রূপ' ধ, চ, প-র-সা; 'রূপে' ক। ৯।
'ধারত' ক।

বিভাব ৷১

বাল গোপাল রজে সম-বয় স্থাং সজে হামাগুড়ি অফিনায় ধেলায়। ভেজিয়া মাধন সরে তুলিয়া কমলঃ-করে মৃত্তিকা মনের হৃগে খায়॥ বলরাম তা দেখিয়া यत्नाता निकटि यामा। কহিলা ভাইখের এই কথা। শুনি তবে যশোমতী আইলা তুরিত গভি (गार्थान बारेए मारि यथा ॥ মায় দেখি মাটি ফেলে না খাই না খাই বোলে আধ আধ বদন ঢুলায়। মুখ নিরখয়ে গাণী ধরিয়া যুগল পাণি মন-ছুখে করে হায় হায় । ध थित्र नवनी मत কিবা নাহি মোর ঘর মৃত্তিকা খাইছ কিবা হথে। পিতা যার ত্রপ্প-রাজ কি ভার এমন কাজ শুনিলে হইবে মনে দ্বধে। এর্ডেক বলিয়া রাণী (कारम कति नोममन ছল-ছল ভেল তু নয়ান। এ উদ্ধব দাস গাঁতে যশোমতা হরষিতে অনিমিখে নেহারে বয়ান ১৩১১:৪৩১ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'বেশ' ক। ৩। 'আলিনা' ক, চ। ৪। 'কোমল' ক। ৫। 'বাঞা' ক। ৬। 'নিরখিয়া' ক,খ।

তথা রাগ।১

বদন মেলিরা গোপাল রাণী পানে চার।
মুখ মাঝে অপরূপ দেখিবারে পার।
এ ভূমি আকাশ আদি চৌদ্দ ভূবন।
স্থুরলোক নাগলোক নরলোকগণ।

অনস্ত ত্রন্ধাণ্ড গোলোক আদিং যত ধাম।
মুখের ভিতর সব দেখে নিরমাণ॥
শেষ মহেশ ত্রন্ধা আদি স্তৃতি করে।
নন্দ যশোমতা আর মুখের ভিতরে॥
দেখি নন্দ ত্রজেখরী বচন না ক্যুরে।
স্থপ্রপ্রায় কি দেখিলুঁ হেন মনে করে॥
নিজ-প্রেমে পরিপূর্ণ কিছুই না মানে।
আপন তনয় কৃষ্ণ প্রাণ মাত্র জানে॥
ডাকিয়া কহয়ে নন্দে আশ্চর্যা বিধান।
পুত্রের মঙ্গল লাগি বিপ্রে করং দান॥
এ দাস উদ্ধবে কহে ত্রজেখরীর প্রেম।
কিছু না মিশায় থেন জামুনদ হেম॥

118826181

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫১ সংখ্যক পদ।
২। 'বোলোকাদি' ব। ৩। 'ব্রফেশ্বরীর' ধ,
প-র-সা। ৪। 'করে' ক, ধ, চ। ৫। 'ব্রফে ৬ফ' ক, ধ, ব, চ। ৬। 'না মিশার' স্থলে 'নাহি সীমা' ক: 'না মিসরে' প-র-সা।

টাকা

১৫—১৬। "এ দাস" ইত্যাদি। উদ্ধব দাস কহিতেছেন বে, এজেখনী বশোদার প্রেম বেন (নির্মাণ) ভাত্মদ-অর্ণ,—উহাতে কিছুই মিশ্রিত হয় না; অর্থাৎ আত্মদ-অর্ণ বেমন মলিনতা মিশিতে পারে না, সেইরূপ বশোদার এই বাৎসল্য-প্রেমেও জ্রেখন্য প্রভৃতি অন্ত কোন ভাব মিশ্রিত হইতে পারে না; ওজ্জন্তই নিজ পুজের ঐখর্য্য-দর্শন তাঁহার চিত্তে কণিক বিশ্বর ব্যতীত অন্ত কোন ভাব উৎপাদন করিতে পারে নাই।

বিভাৰ ৷১

কোলেভেৎ করিয়া রাণী নিরধয়ে মুখ। স্থানের সায়রে ভূবে পাসরে সব স্থা। মারের কোলেতে গোপাল মুখ পদারিল।
এ ভব-সংসার সব তাহাতে দেখিল।
ই কি ই কি বলি রাণী হিয়ায় লইল।
স্থপন দেখিলও কিবা বুকিতে নারিল।
থুতু সুতু দেয় রাণী বসনের দশি।
দেখিয়া মায়ের রাত ও না মুখে হাসি।
ঘনশ্যামও দাস আশা করে এই মনে।
কবে বা সেবিব আমিও যশোদা-চরণে।

11011/2/1911

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬:২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোলে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'দেখিয়' ক, চ। ৪। 'ঘনরাম' খ, প-র-সা। ৫। 'য়ই' প-র-সা।

क्लक्राया यथा।

ভাটিয়ারি ৷১ এক দিন মথুরা হৈতে ফল লৈয়া আচ্মিতে আইলাসে ফল বেচিবারে। ডাকে পুন পুন সেং कल (लह कलर (लह नामारेला नटमन्न छ्यादन ॥ ব্ৰজ-শিশু শুনি তায় ফল কিনিবারে ধায় বেতন লইয়া পরতেকে। কিনি কিনি ফল খায় আনন্দিত হিয়ায় প্রসারি বেডিয়া একে একে ॥ ধাম্ম লইয়া একাঞ্চলি শুনি কৃষ্ণ কুতৃহলী কর হৈতে পড়িতে পড়িতে। ফল দেও বলে হাসি পসারি° নিকটে আসি ধান্ত দিল ফলাহারী° হাতে।

ধান্য লৈয়া ফলাহারী পুন পুন মু**ধ হে**রি নিমিষ তে**জিল** পসারিণী।

এ দাগ উদ্ধব কয় কহিলে কহিণ নয়
ভূবনমোহন ক্লপথানি ছঙা>১৪৬া

পাঠকৈর

১। **ইহাপ-র-সাপ্**থির ১৬৫৩ সংখ্যক পদ। ২। 'লেহ' ক। ৩। 'পসার' **ছ**। ৪। 'ফলহারী' প-র-সা।

তথা রাপ ৷১

ফল লেহ ফল লেহ ডাকে ফলাহারীং।
চ্যুত ধান্য শুধা করে আইলা জীহরি।
পসারে পেলিয়া ধান্য ফল দেহ বোলে।
অনিমিথে পসারিণী সে মুখ নেহালে॥
নয়নে গলয়ে ধারা দেখি মুগখানি।
কার ঘরের শিশু ভূমি ঘাইয়ে নিছনি॥
কোন পুণাবতী ভোমা করিলেক কোলে।
কাহারে বলিয়া মা স্তন পান কৈলে॥
ঘনরাম দাসে বোলে শুন পসারিণি।
ফলের সহিত কর জীবন নিছনি ৭॥১১৪৭॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৪ সংখ্যক পদ।

१। 'ফলহারী' প-র-সা। ৩। 'শুধ' ক; 'হুধা'

१। ৪। 'ফেলিরা' ক, ধ, ঘ, চ। ৫। 'ডোমার'
প-র-সা। ৬। 'ডোমার' প-র-সা। १। 'ঘনভাম দাসে' ক, ঘ, চ।

यहरे ।>

ও মোর সোণার চাঁদ কি ভোর মায়ের নাম
কার ঘরে হৈ শা উতপতি।
বছ কাল তপ করি কে পুজিলেং হরগৌরী
কোন পুণ্য কৈল সেই সতী।
ভোমারে করিয়া কোলে কত শত চুম্ব দিলে
নয়ানের জলে গেল ভাগি।
পাইয়া মনের মুখে স্তন দিল চান্দমুখে
মুঞি ষাই হব তার দাসী।

এত কহি ফলাহারীও ফল দিলও কর ভরি
প্রেম-ভরে গরগর চীত।
ক্ষাচন্দ্র ফল হাতে খাইতে খাইতে পথে
আসি নিজ-গৃহেও উপনীত॥
ফল দেখি যশোমতী আনন্দে না জানে কভি
খাওয়াইয়া প্রেম-স্থেথ ভাসে।
ধত্য সেই ফলাহারীও ফলেও পাইলেধ নন্দহরি
করে কিছু ঘনরাম দাসে ৮৮॥১১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপ্রথিণ ১৮৫৫ সংখ্যক পদ।
২। পুলিল'ক। ১। কিলহারী প-র-সা। ৪।
'দেন'ক, চ। ৫! 'আসি নিজ-গ্রে' ছলে 'নিজ-গ্রেইলা' প র-সা। ৬। 'ফলহারী' প-র-সা।
৭। 'ফল'ক, খ, প-র সা। ৮। 'খাইল'প-র-সা।
টাকা

১৫—১৬। "ধতা" ইত্যাদি। সেই ফল-বিক্রেজী ধন্তা; (কেন না) ফলের দ্ব, না নন্দ-নন্দন শ্রীক্রম্বকে প্রাপ্ত হইণেন। (শ্রীক্রফের দীলা অপার বলিয়া) ঘনরান দাদ (যথা-দাধ্য) কিঞিছ

श्रुहिनो ।>

বর্ণনা করিতেছেন।

ডালা হৈল রভনে পূরিত। ফলাহারীং সবিম্ময়-চিত্ত॥ আপনা আপনি করে থেদ। মনে মনে ভাবে নিধ্বেদ।৯॥১১৪৯॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ফলহারী'প-র-সা।

৩--৪। "আপনা আপনি" ইত্যাদি। ডালা রত্বপূর্ণ দেখিয়া ফলবিফেত্রী আননদ প্রকাশ না করিরা থেদ করার তাৎপর্য্য এই যে, তাঁহার তথন
মনে হইল—আমি কি হওডাগিনী! স্বয়ং ভগবান্কে
পাইরাও পাইলাম না; যদি তাঁহাকে চিনিতে
পারিতাম, তাহা হইলে ছার ধন-রক্ত না চাহিয়া
তাঁহার পদ-সেবা মাগিয়া লইতাম। উহা না করিতে
পারার তাঁহার মনে নির্মেদ-ভাব আসিল।

অথ কোমার-পোগগু-কালোচিত-বাৎসল্যং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মায়ুর ।১

কিয়ে হাম পেখলুঁ কনক-পুতলিয়া।
শচার আফিনায় নাচে ধূলি-ধূসরিয়া॥
চৌদিকে দিগন্থর বালকে বেঢ়িয়াই।
ভার মাঝে গোরাই নাচে হরি হরি বলিয়া॥
রাতৃল কমল-পদে ধায় বিজমণিয়া।
জননী শুনয়ে ভাল নূপুরের ধ্বনিয়াই।
বাহুদেব ঘোষে কহে শিশু-রস জানিয়া।
ধক্য নদিয়ার লোক নবদ্বীপ ধ্নিয়া॥

পাঠান্তর

11006611061

>। 'মাউর' ঘ, চ। ২। 'বেড়িয়া' ঘ, চ। ৩। 'গৌর' ঘ। ৪। 'নুপ্রের ধ্বনিয়া' স্থলে 'নুপ্র-মুধ্বনিয়া' ক।

ভথা রাপ ৷১

শচার আজিনায় নাচে বিশ্বস্তর রায়।
হাসি হাসি ফিরি ফিরি মায়েরে লুকায়।
বয়ানেং বসন দিয়া বোলে লুঁকাইলুঁ।
শচী বোলে বিশ্বস্তর আমি না দেখিলুঁ॥

মাথের অঞ্চল ধরি চঞ্চল-চরণে।
নাচিয়া নাচিয়া যায় খঞ্জন-গমনে।
বাস্তদেব ঘোষে কছে অপরূপ শোভা।
শিশু-রূপ দেখি হয় জগ-মন-লোভা।

১১॥১১৫১।

পাঠাস্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'বদনে'প-র-সা।

মায়ুৰ ।>

পঞ্চ-বরিখ-বয়সাকুত-মোহন ধাবমান পর-অঙ্গনা। পায়স পাণি উর্থলে মাখন খায়তং মিটায়ত বয়না ॥ দোলে দোলে মোহন গোপাল। প্রখরত চরণ-গতি মুখর কিঙ্কিণি কটি **८**लाउँ न ८लालर र वनमाल ॥ अ ॥ সোণায় বাদ্ধিলা ভাল রুক্ত-নথ উরে মাল পিঠে দোলে পাটকি থোপ। খেনে আলগছি দেই খেনে ভূমে গড়ি ^{যাই} থেনে পরসর খেনে কোপ। নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি আনন্দে হুত-মুখ চায়। নয়ন-দৃগঞ্চল কাজরে রঞ্জিত হাসি হাসি বদন দেখায়। कुरुता त्रज्य मिन यानमा (परि)। কুণ্ডলে উচ্ছল গণ্ড কালর আঁখি। ঘনরাম দাসে বোলে শুন নন্দরাণি। ত্রিজগত-নাথ নাচাও করে দিয়া ননী **।** 112122021

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুলির ১৬৫৮ সংখ্যক পদ।
 এই পদটি লিপিকর-অনে খ পুলিতে বর্জিত হইরাছে।

২। 'আরত' ক। ৩। 'নধর' প-র-সা। ৪। '_{বাণম্}লি' প-র-সা। ৫। 'কাজ্বের্ছ' প-র-সা।

বাটিকা।১

চপলহি নন্দ-নন্দন মতি ভাওয়ে। বহুবিধ বালক সঙ্গহি রঙ্গহি অঙ্গ দোলাইয়া আওয়ে ॥ গ্রা হেরি হর্ষিত অতি রাণি যশোমতি বাছ পসারিয়া ধাওয়ে। কটি-ভটে কিন্ধিণি খুঙ্গুর-রণরণি অরুণিত-চরণ নাচাওয়ে॥ এক করে লবনি আর করে পায়স খেলন সঞ্চিয়া যাচাওয়েং। গারতং আধ আধ কর বদনহি রহি রহি আধ আধ খাওয়ে ১১০॥১১৫৩॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'নিদ্ন'ক,খ, প-র-সা। ৩। 'চরণে'ক, খ।৪। 'বাচরে'ক; 'বাচওরে'খ। ৫। 'গিরড' ক,পর-সা।

মাযুর।১

ধাতু প্রবাল-দল নব গুঞাফল

ব্রজ-বালক সক্ষে সাজে।

কৃটিল কুন্তুল বেঢ়ি শমণি মুকুতা ঝুরি
কটিতটে ঘুকুরং বাজে।
নাচত মোহন বাল গোপাল।
বরজ-বধু মেলি দেওই করতালি
বোলই ভালি রে ভাল॥
নন্দ স্থনন্দ হত-মুখ চায়।
ক্রজণ দৃগঞ্চল কাজরে রঞ্জিত
হালি হালি দশন দেখায়।

বংশি কহই সব ব্রজ-রমণীগণ
আনন্দ-সায়রে ভাগ।
হেরইতে পরশিতে লালন করইতে
স্তন-থিবে ভাগল বাস ॥১৪॥১১৫৪॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'ঘুগুর' ব। ৩। 'দেই' ক, প-র-সা। ৪। 'সনদ্দ' ধ।

বিভাব ৷১

রুচির করতল আঁথি হোর দেখ বাছার বিধির করণ এক ঠাম। বুঝিয়া সে মুনিরাজ আমার মনের সাধ গোপাল বলিয়া থুইল নাম । অতিশয় শিশু-মতি মন্দ মনদং গভি किंग-७८ किंकिनी वार्ष । কম্ব-কণ্ঠ পরি মোতি°-মালবর লাম্বত রুকু-নথ সাজে। অনেক সাধ করি করে নবনিত ভরি (प्रश्नू (डाजन मागि। খিতিভলে ডারভ সো নাহি খাওত ইহ মোর কর্ম অভাগি ৷ মাত[ঃ] যশোমতি ব,শি কহয়ে শুন (७) हात्रि हद्राप करवी । ভুবন-বি**মোহন** এ ভুয়া নন্দন পুণ-ফলে পাওই কেবা ॥১৫॥১১৫৫॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬৬১ সংখ্যক পদ।
২ 'মন্দ্র মন্দ্র' স্থলে 'চলে মন্দ্র মন্দ্র' প-র-সা। ৩।
'মোতিম' ক, 5; 'মোতি' প-র-সা। ৪। 'মাতা'
ক। ৫। 'বংশি' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'বংশীবদন

কাছে শুন ওচে যশোষতি' প-র-সা। ভ। 'কারঙ' প-র-সা।

ভাটিরারি ৷১

ভাল নাচে রে নাচে রেই নন্দ-তুলাল। চৌদগে বেচুল ব্রজ্ব-রমণাগণ যশোমতি দেই করতাল। রুতুর ঝুতুর ধ্বনি ঘাঁঘর কিকিণী গতি নট খপ্লন-ভাতি⁸। হেরইতে অথিল-নয়ন মন ভূলয়ে ইহ নব-নীরদ-কাঁতি॥ করে করি মাখন দেই রমণিগণ খাওই নাচই রঙ্গে। ধ্বজ-বজ্ঞাকুশ-পক্ষজ-সুল্লিভ চরণ চালই কত ভঙ্গে। কুঞ্চিত কেশ বেশ দিগম্বর কটি-তটে ঘুঙ্গুর সাজ। वः नि करहे किए জগ-জন-মঞ্চল শ্রবণে স্থধা সমণ বাজ ॥১৬॥১১৫৬॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৬২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'নাচেরে নাচেরে' ফলে 'নাচ রে নাচ রে'
 क। ৩। 'ঘাঘর' ঘ, চ। ৪। 'ভাঁভি' ক, চ।
 ६। 'फूলয়ে' ক, च; 'ড়লভ' প-র-সা। ৬।
 'দিগাঘর' ঘ, চ। ৭। 'অধাসম' ছলে 'অধাময়' প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে। মায়ুর।১

দধি-মন্থ-ধ্বনি শুনইতে নীলম্বণি আওল সজে বলরাম। বশোমতী হৈরি মূখ পাওল মরমে ত্থ চুম্বয়ে চান্দ-বয়ান। কহে শুন যাত্ৰমণিং ट्यादित मित्र क्लोब ननो খাইয়া নাচহ মোর আগে। নবনী-লোভিত হরি মায়ের বদন হেরি কর পাতি নবনীত মাগে। রাণা দিল পুরি কর খাইতে রঞ্জিমাধরু অতি সুশোভিত ভেল তায়⁸। খাইতে খাইতে নাচে কটিতে কিঙ্কিণী বাৰে হেরি হর্ষিত ভেল মায়॥ नम्म- जूलांग नात् जांग । ছাড়িল মন্থন°-দণ্ড **उथिलिल म**श्रीनम সঘনে দেই করতালি। ধা। গদ গদ কহে রাণী দেখ দেখ রোহিণি যাত্রয়া নাচিছে দেখ মোর। রোহিণী আনন্দময় ঘনরাম দাসে কয় ত্ত্ ভেল প্রেমে বিভোর ॥১৭॥১১৫৭॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপৃথির ১৬৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'ষত্মণি' ক। ৩। 'ৰঞ্জিমাধর' প-র-সা।
৪। 'রার' ক, খ। ৫। 'মথন' প-র-সা।
৬। 'স্বনেহ' প-র-সা। ৭। 'বাণী' প-র-সা।
৮। 'প্রেমেতে' প-র-সা।

পঠমঞ্জী ৷১

নাচে রে নাচে রে মোর রাম দামোদর।
যত নাচ তত দিব ক্ষীর ননী সর ॥
আমি নাহি দেখি বাছা নাচ আর বার^২।
গলায় গাঁথিয়া দিব মণিময়° হার ॥
তাতা থৈয়া থৈ° বোলয়ে নন্দ-রাণী।
করতালি দিরা নাচে রাম যতুমণি ॥
রাম কামু রে মোর রাম° কামু।
মণিময় ঝুরি॰ মাথে ঝলমল তমু

ADPAD SON

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৪ সংখ্যক পদ।
২। 'নাচ আবে বার' ছলে 'নাচন তোমার' প-র-সা।
৩। 'গলমতি' প-র-সা। ৪। 'তাতা থৈয়া থৈ'
ছলে 'তাতা থৈয়া তাতা থৈয়া' প-র-সা। ৫।
'গুরে রাম' প-র-সা। ৬। 'ঝুলি' প-র-সা।

व्हिनी ।>

नव-नीत्रम-नील स्रुठीन र जुरू। ঝলমল ও মুখ চান্দ জমু॥ শিরে কুঞ্চিত কুম্বল-বন্ধ ঝুটা। ভালে শোভিত গোময়-চিত্ৰ ফোঁটা ॥ অধরোজ্জল রঞ্জিম বিস্থু জিনি॰। গলে শোভিত মোতিম-হার মণি 🛭 ভুজ-লবিত অঙ্গদ মণ্ডনয়া⁸। नथ हिन्द्रक गर्वत - विश्व धनशा ॥ হিয়ে হার রুক্ত-নথ রত্ন জড়। কটি কিঙ্কিণি ঘাঁঘর ভাহে মড়া ॥ পদ্-নৃপুর বঙ্করাজ হুশোভে। থল-পঞ্চজ-বিভ্রমে ভুক্স লোভে ॥ ব্ৰজ-বালক মাখন লেই করে। সভে**> খায়ত** দেয়ত শ্যাম-করে ॥ বি**ংরে নন্দ-নন্দন** এ ভবনে। भन-रमवक रामव नृमिश्ट छाए। ॥১৯॥১১৫৯॥ পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'হুঠাম' ঘ, চ, ৩। 'জনি' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'মগুলয়া' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'চন্দ্র' খ। ৬। 'রদ্ধে' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'মোড়া' क; 'মঢ়া' প-র-সা। ৮। 'পদে' ঘ, চ। ৯। 'স্বে' ক।

ভটিয়ারী।১

নাচত মোহন নন্দ-ছুলাল। রক্ষিম চরণে মঞ্জির ঘন বাজ্ত কিঙ্কিণি তাহিঁ রদাল ॥ স্থল-পঙ্কজদল জিনিয়া চরণতল অরুণ-কিরণ কিয়ে আভা। ভাহার উপরে নথ-চান্দ স্থশোভিত্ত হেরইতে জগ-মন-লোভা ॥ মণি-অভরণ কভ অঙ্গহি ঝলকভ নাসায় মুকুতা কিবা[°] লোলে। মামামাবলি চান্দ-বদন ভুলি নবীন কোকিলা[©] যেন বোলে #২০#১১৬**০**# ইতি তৃতায়-শাখায়াং উনবিংশতি-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৬ সংথ্যক পদ। ২। শোভিত দেখি' প। ০। 'কঙ' পর-সা। ৪। 'কোকিল' ক, ধ, ঘ, চ।

অথ বাৎসল্যরমঃ প্রকারান্তরং যথা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

अधिशांत्र १३

সোরা নাচে শচীর জ্লালিয়া।

Cচীদিকে বালক মেলি সতে দেই করভালি

চরিবোল হরিবোল বলিয়া ॥ গু ॥

প্রক্ষ চতুনা মাথে গলায় সোণার কাঁটি।

সাধ করিয়া মায় পরাইছে ধড়া গাছি আঁটি ॥

স্থানর চাঁচর কেশ প্রবিলত তমু।

প্রন-মোহন বেশ জুরু কাম-ধমু ॥

রক্ষত কাঞ্চন নানা অভরণ

অক্ষে মনোহর সাজে।

রাতা-উত্পল চরণ-যুগল

ভূলিতে নূপুর বাজে ॥

শচীর অক্সনে

নাচয়ে সম্বনে

বোলে আধ আধ বাণী। বাস্থদেব ঘোষে বোলে ধর ধর কর কোলে গোরা মোর• পরাণের পরাণি॥ ॥১৯১৬১॥

পঠিক্স

>। ইহাপ⊹র-সাপু(শ্বর ১৬৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'চতুকা' চ। ৩। 'পরাঞাছে' ক। ৪। 'পোরা'ক।

ভথা রাগ।>

যমুনার জলে গেলা যশোদা বোছিণী।
শৃষ্ঠ ঘর পাঞা লুটে এ ক্ষার নবনী ।
পিঁ ড়ির উপর পিঁ ড়ি উদ্বল দিয়া।
তমু ত শিকার ভাগু লাগি না পাইয়া॥
নড়িতে ছেদিয়া ভাগু হেটে পাতে মুখ।
হেনই সময় দেখে জননী সন্মুখ ॥
মায়ের শবদ শুনি যাহু ধন নাচে।
ধড়ার অঞ্চল দিয়া চাঁদ-মুখ মোছে॥
এমনে কেমনে গোপাল লুকাইবা আর।
তোমার বুক বাহিয়া পড়ে গো-রসের ধার॥
ঘনরামদাসে বোলে শুন যশোহত।
মায়ারপে তোমার ঘরে অধিলের পতি॥

পাঠান্তর

121122620

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'এ ক্ষীর নবনী' হলে 'ক্ষীর সর লনী' প-র-সা। ৩। 'তলে' প-র-সা। ৪। 'হেনই সমর দেখে' ছলে 'হেনই সমর হইলাগোপাল' ব। ৫। 'পিত থড়ার' ব।

यहरे।

স্থার প্রথম উরে নবনী লাগিয়াছে রে

মরি মরি বাছনি কানাই।

হৈরি যশোমতা প্রেডে প্রিড আঁখি

আয় কোলে বলিহারি বাই ॥

করে মোছে স্থার মিঠাই ।

আয়ত মোর বাছনি কানাই ॥৩॥১১৬৩।

পাঠান্তর

১। 'কর' ক, চ, প-র-সা। ২। 'মোছাই' ক; 'মোছই' থ। ৩। 'আবে' ম,চ।

শ্রীরাপ 1>

ত্ব বাহ্য পদারি আগে যায় নক্ষরাণী। ধরিতে ধরিতে ধরা না দেয় নীলমণি 💵 গুহে পড়ি গড়ি যায় দধি নবনীত। কোপ-নয়নে রাণী চাহে চারি ভীত॥ **ट्रा**म दत्र नवनो-८ठावा विन পा**र**ू थात्र। এ ঘর ও ঘর করি গোপাল লুকায়। নজি হাতে নন্দরাণী যায় খেদাজিয়া। অখিল-ভুবন-পতি যায় পালাইয়া। এ তিন ভুবনে যারে ভয় দিতে নারে। সে হরি পালাঞা যায় জননার ডরে॥ রাণীর কোল হইতে গোপাল গেলা পলাইয়া। व्याकृत रहेना दानी त्नाभान ना त्निश्रा। ঘরে ঘরে উক্টিল সকল গোকুল। ভোমা না দেখিয়া প্রাণ হইল আকুল। কার ঘরে আছে গোপাল বোলং ডাক দিয়া। ভোমার মায়ের প্রাণ যায় বিদরিয়া 🛭 श्चीनाम ডाकिया त्वात्न कानाई बामात्नव चत्र। সভাকার প্রাণ গোপাল সুকাইল মারের ডরে।

18122781

ঘনরাম দাসে কহে থির কর মন। প্রেমের অধীন গোপাল পাবে দরশন॥

পাঠান্তর

১। ইছা প র-সা পুথির ১৬৮৭ সংখ্যক পদ। প-র-সা পুথিতে নিম্নলিথিত কলি দারা পদটি আরম্ভ করা হইয়াছে। যথা,—

"ৰন্ধন ছাড়িয়া দিয়া গোপাল নিল কোলে।
কোল হৈতে নামি গোপাল ধাইয়া চলিলে॥"
পদকরতক্ষ-গ্রন্থে বৈষ্ণবদান শ্রীক্ষেত্র বন্ধনলীলার
পদ সন্ধিবেশিত করেন নাই; বোধ হয়, সেই
জন্তই অসঙ্গতি-ভয়ে এই পদটির প্রথম ছই পংক্তি
পরিত্যাগ করিয়াছেন। পদাংশ-বর্জনের এইরূপ
দৃষ্টান্ত একান্ত বিরল নহে। ২। 'বোলে' ক, চ;
'বল' ঘ। ৩। 'আমার' ক, প-র সা। ৪। 'ঘনরাম দাসে' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি কেবল ঘ
পুথিতেই দৃষ্ট হয়।

সিদ্ধৃড়।।

আমি কিছু নাহি জানি ভাপিয়াছে ক্ষীর ননী
তোমারে সোধাই ইহার কথা।
না দেখি গোকুলচান্দ কেমন করয়ে প্রাণ
বোল না গোপাল পাব কোথা॥
আমি কি এমন জানি কোলে লৈয়া যাত্মণি
বাছারে করাইছি স্তন পান।
মোরে বিধি বিভৃত্বিল উথলি গো-রস গেল
ভা দেখি ধরিতে নারি প্রাণ॥
ভূলিলাম রোহিশীর বোলে
গোপাল নামাঞা কোলে

গোপাল নামাঞা কোলে সে কোপে কোপিত বাতুমণি। কোপিত নয়ান-কোণে চাইয়াছিল আমা পানে আমি কি এমন হবে জানি॥ ভোমরা করিছ খেলা

গোপাল আমার কোথা গেল।

দঢ় করি বোল এক বোল ।

ঘনরাম দাসে কহে আকুল হইলা সভে

রাখালের মাঝে উত্রোল ॥१॥১১৬৫॥

शनभो ।>

कि विलग नमतानी হারাইয়াড় নীলম্পি কানাই বিনা না রাখিব হিয়া। ক্ষুধা বল্যা ভাইয়াং গেলা সেই হৈতে বৈয়াছে খেলা আম্বা বৈয়াছি মুখ চাঞা ॥ হেদে শ্রীদামের মা অন গো রোহিণি বা এ পথে দেখাছ গোপাল মোর। আর এক বিপরীত যাইতে না দেপি পথ কাল হৈল • য়ানের তে ব ॥ শ্নরমিয়া শোক-নদী ভাহে ফেলাইলা বিধি বিধি ভাহে না দিলা সাঁভার। এ তুখ কহিব কাবে স্তন ফাটে॰ ক্ষীর-ভরে চলিয়া যাইতে নারি আর ॥৬।১১১৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ১৬৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'ভাই'ক,চ; 'ভাষা'প-র-সা। ৩। 'ছটি' ক,খ,বৈ,চ,প-র-সা।

बाननी ।>

ঘরে ঘরে উকটিতে পদ্চিত্র দেখি পথে
সক্রেণ-নয়ানে নেধারে।
আহা মরি হায় হায় মুঞ্ছিয়া পড়ে তায়
কান্দে পদ্চিত্র গৈয়া কোনে ॥

সক্রিয়ার কিবা দোষ মায়েরে করাছ রোষ কোথা আছ বোল ডাক দিয়া। যদি থাকে মনে রোষ ক্ষেম ভাই সব দোষ যশোদা মায়ের মুখ চায়্য।। শুনিয়া শ্রীদামের কথা মরমে পাইয়া বেথা ভূরিতে আইলা নীলমণি। মরণ-শরীরে যেন পাইল পরাণ দান শুনিতেইং নুপুরের ধ্বনি॥ বসিলাও মায়ের কোলে গদগদ বাণী বোলে অনেক সাধের যান্তমণি। সব ধন সম্পদ সকল তোমার আগে চল যাই করিগাঃ নিছনি ॥ ধরিয়া বলাইর হাতে 🕟 দাডাঞা মায়ের আগে নচিতে লাগিলা চুই ভাই। ঘনরাম দাসে কয় হইলা আনন্দময় গোপালের বলিছারি যাই ॥৭॥১১৬৭॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯১ সংখ্যক পদ।
এই পদট ক পুথি ও তদম্বাদী বটতলার মুদ্রিত
প্রান্থে পূর্ব্ব-পদের শেষাংশরূপে লিখিত হইয়াছে।
অক্তাক্ত সকল পুথিতেই ইহা অতন্ত্র পদ। ২।
ভোনিয়া' ক,খ, ঘ,চ। ৩। 'বসিয়া' ক, খ।
৪। 'করিয়ে' ক, প-র-সা।

পাঠান্তব

ধানশী।১

কত ভল্পী জান গোপাল নাচিতে নাচিতে।
অরুণ-কিরণ দেখিং চরণ তুলিতে॥
বাঘণ-নথ মণিহার হিয়ার মাঝে দোলে।
চরণে নৃপুর কিবা রুণু বুনু বোলেং॥
গোপাল নাচিছে তুড়ি দিয়াং।
কোখা গেলা নক্ষরার আনন্দ বহিয়া যার
দেখলিয়া নরান ভরিয়া॥

চিত্র বিচিত্র নাট চরণে চাঁদের হাট চলে যেন খঞ্জনিয়া পাখী। সাধ করিয়া মায় নৃপুর দিয়াছে পায় পা ধানি তুলিয়া নাচ দেখি ॥৮॥১১৬৮।

তাত। থৈ থৈ তাতা থৈ থৈ বোলে নন্দরাণী। করতালি দিয়া নাচে রাম যাত্মশি॥

ইত্যাদি গেয়ম।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'দিছে' ক, থ, ষ, চ। ৩। 'ব্যাছ্ৰ' ক, থ,
য়, চ। ৪। অভঃপর প-র-সাপুথিতে নিয়লিথিত
কলিগুলির ঘারা এই পদটি সমাপ্ত করা হইয়াছে
মধা—

'হেন কালে নন্দরায় আইল বাথান হৈতে। কেমন নাচিলি বাপ নাচ আমার সাক্ষাতে। গোঠে মাঠে যাইতে তোরে সঙ্গে করি নিব। যিঠ লনী হথেরে সর নিতি থাইতে দিব॥ কেমনে নাচিলি বাছা নাচ আর বার। ভবে সে গঠিয়া দিব গজমতি হার॥'

ংগাপাল' ইত্যাদি হলে প-র-সা প্রির
পাঠ বলা—'দেখসিরা রামের মা গোপাল' ইত্যাদি;
প-র-সা প্রিতে 'দেখ সিরা' ইত্যাদি পরবর্ত্তী
কলিগুলি হুতয় (১৯৯৫ সংখ্যক) পদরপে লিখিত
হুইয়াছে। ৬। অতঃপর প-র-সা প্রিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলিটি দৃই হর, বলা—
'বাছ-পদ-তিহু তার

'বাছ পদ-চিক্ত তার পৃথক পড়িরা বার ধ্বৰ-বল্লাভূশ তাহে সাজে। বাদবেক্স দাসে কর নাটুরা গোবিক্স রার প্রেমভরে অধিক বিরাজে॥

व्यथ (गार्काक मी-यावा।

श्रीमरम्भोत्रहस्तः।

গোরাজ-চান্দের মনে কি ভাব উঠিল।
পুরুব-চরিত্র বুঝি মনেতে পড়িল ॥
গোরীদাস-মুখ হেরি উলসিত হিয়াই।
আনহ হান্দন ভূরি বোলে ডাক দিয়া ॥
আজি শুভ দিন চল গোঠেরে যাইব।
আজি হৈতে গো-দোহন আরম্ভ করিব ॥
ধবলী সাঙলী কোথা শ্রীদাম ফ্লাম।
দোহনের ভাগু মোর হাতে দেহ রাম॥
ভাবাবেশে বেয়াকুল শচীর নন্দন।
নিত্যানন্দ আসি কোলে করে সেই ক্ষণ॥
চৈতন্মদাসেতে বলে ছান্দনের দড়িই।
হারাইল গোরীদাস গোলী কৈল চুরি॥

পাঠান্তর

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০০ সংখ্যক পদ। ২। 'হয়া'খ। ৩। 'ডুরি'প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

নন্দের মন্দিরে আজু বড়ই আনন্দ।
রাম-কৃষ্ণ-হাডে দিব পোদোহন-ভাও।
প্রভাতে উঠিয়া নন্দ লৈয়া গোপগণ।
গাত্র মিত্র সহিতে বসিলা সভা-জন।
বন্ধ করি বড়েক আন্ধান মুনিগণে।
আনাইলা নন্দ্রোর করি নিমন্ত্রণে।
বাম কৃষ্ণ বন্দ্রিকান মুনির চরণে।
মুনিগণে করে শুন নন্দ মহামতি।
আজি শুভ দির হন্ধ শুক্লাকীনী তিপি।

পুক্র-হত্তে দেহ গোদোহন-ভাও আৰ।
গোঠপুজা মহোৎসব কর মহারাজ।
পাইয়া মূনির আভ্যা নক্ষ মহাকার।
মহামহোৎসবে করে আনক্ষ হাদর।
চৈতগুলাসের মনে পরম উলাস।
দেখিব নয়নে গাবীং-দোহন বিলাস।

100122901

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০১ সংখ্যক পদ। ২। 'গাড়ী'প-র-সা।

जबक्रवरी ।>

ডাকিয়া তখন নিক প্ৰকাগৰ আজা দিল ত্রগ-রাজ। বস্ত্র অলকার নানা উপহান্ত করহ গোষ্ঠের সাজ # শুনি গোপী বভ আনন্দিত-চিত যৌতুক থালীতে ভরি। নন্দের ভাবনে मिना पत्रमदन দিব্য বাস ভূষা পরি। নন্দের গৃহিণী यटनामा, त्राहिनी व्या किनियानि भएन। গন্ধ উত্তর্জন হরিতা কুকুম विना बाम-कृष्ण-**ज्या** ধাশ্য দূর্ববাদলে সুবাগিত কলে স্নান সমাপন করি। মণি-অভরণ প্ৰিয়া বসন

গোষ্ঠেতে চলিলা হরি ।

নন্দ মহামতি মুনির সংহতি

সভাসদ÷গণে লৈরা ।

নানা বাত বাজে মঞ্চল স্থসালে

া ৰাজ বাজে — বনতা হত। **লোক্তে প্ৰবেশিলা বাঞা ॥** যশোদা রোহিণী (गाभिनी मिनी মঙ্গল-দ্রব্য সহিতে। নানা উপহারে বন্ত্ৰ অলম্বারে গোষ্ঠে হৈলা উপনীতে 🛮 मिरा व्यक्तिभटन অগোরঃ চন্দনে স্থান কৈলা পরিষ্ণার। দিব্য চন্দ্রাভপ নিবারি আতপ উপরে বান্ধিল তার॥ शांभिन कानी জল ঘট ভরি সহিত আফ্রের দল। রত্ন-পীঠোপরি বৈদে রাম হরি হৈল মহা কোলাহল ॥ স্বর্ণ-সূত্রেণ করি ছান্দনের ভুরি রত্নের দোহন-ভাগু। মূনি-আজ্ঞামতে রাম-কৃষ্ণ-হাতে व्यानरम पिरलन नम ॥ বেদ পাঠ করি ব্ৰাহ্মণ সকলি करत्र व्यानीर्व्याप्त-भवनि । নৰ্ত্তক গায়ক **छो**षि याठक শব্দ চভুৰ্দ্দিকে শুনি । স্বর্গে স্থরগণ পুষ্প ব্যৱষ্ণ করিয়া হথেতে ভাসে। ত্রিভুবন ভরি আনন্দ সভারি करात्र टेव्डिग्रमात्म ॥>>॥>>१०॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০২ সংখ্যক পদ। 'অরজয়ত্তী' হলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'কিল্মানি' প-র-সা। ৩। 'অভরু', হ। ৫।, 'গিড়ি পরি' প-র-সা। ৩। 'হাঅ' প-র-সা।

ভণা সাগ ৷১

তবে নক্ষ শীত্র আনাইলা দুই গাই।
ধবলা সাঞ্জলা বংসং সহিত তথাই ॥
স্থরজি-সন্ততি সেই মহা দুগ্ধবতী।
স্থর্বিফুল শৃক্ষণ পুর নবীন যুবতী ॥
দুই গাই দুই ভাই ছাক্ষনে ছাক্ষিয়া।
দোহন করিলা গাবী আনক্ষিত হৈয়া॥
দোহাকার দুই ভাগু ক্ষণেকেণ পুরিল।
প্রথম দোহন দুগ্ধ আক্ষণেরে দিল॥
চৈডগুদাসেতে কহে গাবীর দোহন।
দেখি অল-বাদিগণের জুড়াইল মন॥

1175117794

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৭০৩ সংখ্যক পদ।
'ভেলা রাগ' ছলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'বছ'
প-র-সা। ৩। 'ত্ই' প-র-সা। ৪। 'ক্ষেণেকে' ।।

७था द्रांग ।>

আইণা সকলে ন্দের মহলে नम जानमि छ-मन। প্রথমে পূজিল ব্ৰাহ্মণ সকল **क्रिन्न व्यानक थन ॥** গাৰী বৎস কড হ্বর্ণ র**জ**ত লকাধিক পরিমাণ। मिना महिज অলম্বার যত बाकारण कत्ररय मान । ভট্টাদি बांদक নৰ্ত্তক গায়ক গোধনে ভূষিল সভে। করাইং জোজন নানা মিফ্ট-অন্ন विषात्र कत्रिमा ज्या স্থাগণ বাদ কুঞ্চ বলরাম

করিল ভোজন-কেলি ।

করিল আরভি নন্দ যশোষতী গোপ-গোপীগণ মেলি॥ ধম্য সে ত্রাক্মণ ধ্যা ব্ৰহ্ন জন ধ্যা সে গোকুলপুর। যমুনী-পুলিন ধন্য গাবীগণ এ দাস ভৈত্য ফুর ॥১০॥১১৭৩॥

পাঠান্তর

১। हेडा अ-त्र-मा भूषित्र ১१०८ मःश्राक शह। 'ডলা রাগ' ভলে 'আছিরী' প-র-সা। ২। 'করাইল' ক। ৩। 'সাথ' খ'; 'রাম' প-র-সা।

অথ বৎসচারণাদি। ভন্নচিত-শ্রীগৌরচন্দ্র:।

ভাটিয়ারী।১

डां लिट्स नांट दस्य भारत महोत कुलाल। ञ्जभूनो-छौदा ८क्न চঞ্চল বালক মেলি হরিবোল দিয়া কর-ভাল। বদনে অমিয়া করে कृषिन कुछन भिदत রূপ জিনি সোণা শতবান। ধড়া পরাইছে ভায় ষ্ডন করিয়া মায় কাজরে উজোর তুনয়ান। ভুবে শোভে ভাড় বালা গলে মুকুভার মালা कत्र-भार कांकनार विनि । • সভে কছে মুরি মরি সাগরে কামনা করি হেন স্থান্ত পাইল শচী রাণী ॥১৪॥১১৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৭০৫ সংখ্যক পদ। १। 'मारह दा' क, थ, ह, भ-ब-मा।

यानचे ।>

ও গো^২ মা আজি আমি চরাব বাছর। পরাইয়া দেহ ধড়া মন্ত্ৰ পড়ি বান্ধ চূড়া চরণেতে পরাহ নৃপুর॥ অলকা ভিলক ভালে বন-মালা দেহ গলে শিঙ্গা বেত্র শেণু দেহ হাতে। ञीनाम द्वाम नाम 🎍 স্থবলাদি বলরাম সভাই দাঁড়াইয়া রাজপথে॥ বিশাল অৰ্জ্জুন জান কিঙ্গিণী অংশুমান मिक्स मजारे शाद्धे यात्र। গোপালের কথা শুনি সজল-নয়নে রাণী অচেতনে ধরণী লোটায়॥ কেমনে ধাইবা বনে চঞ্চল বাছুরি সনে কোমল পুথানি রাজা পায়। विश्रमाम (चार्य वर्ण এ वग्रम भारि रगरन প্রাণ কি ধরিতে পারে মায় ॥১৫॥১১৭৫॥ পাঠাস্তর । ইহা প-র-সা পুথির ১৭০৬ সংখ্যক পদ

२। 'व्याशा' क। ७। 'कमन' थ, च, भ-ब्र-मा।

क्ष्ट्र १३

(शांशांन नांकि यांत्र पृत्र-वरन।

তবে আমি না জীব পরাণে ॥ গ্রা সম্মুখে বদিয়া খেলে দ্ধি-মন্থন-কালে আজিনার বাহির নাহি° করি। আঙ্গিনার বাহির হৈয়া यपि शांभाम (थरम गिया। ভবে প্রাণ ধরিতে না পারি॥ গোপাল যাবে বাধানে কি শুনিলাম এবণে যাত্র মোর নয়ানের ভারা। কোরে থাকিতে কত চমকি চমকি উঠিগ नवान-निमित्थ हरे हाता ।

গোপাল আমার পরাণ-পুতলী। ভোমারে সোঁপিয়া রাম কিছুই সন্দেহ নাইদ তমু প্রাণ করয়ে ব্যাকুলিশ ॥১৬॥১১৭৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭০৭ সংখ্যক পদ।

২। প-র-সা ব্যতীত অস্তান্ত পুথিতে 'এ' নাই।

৩। 'নাই' চ। ৪। খ্লাঞা' ক; 'বাইরা' চ,

প-র-সা। ৫। 'বাবে বাথানে' খলে 'বাইবে বনে'

শ-র-সা। ৬। 'ভনি রে' প-র-সা। ৭। 'উঠে'

ব। ৮। 'কিছুই সন্দেহ নাই' খলে 'কিছু ভর

নাহি চিতে' প-র-সা। ৯। 'বিকৃলি' ক, খ,

প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

বলরাম ভুমি নাকি আমার প্রাণ লৈয়া বনে ষাইছ। বারে চিয়াইয়া ত্রথ পিয়াইতে নারি ভারে তুমি গোঠেরে সাজাইছ ॥ বসন ধরিয়া হাতে ফিরে গোপাল সাথে সাথে पट्छ पट्छ पम वात थात्र । এ হেন ছুধের ছাওয়াল वटमदत्र विनाग्न निग्ना দৈবে মরিবে বুঝি মার ॥ কড জন্ম ভাগা করি আরাধিয়া হরগোরী ডাহে পাইলাম এ ছঃখ-পাসরা। **टक्मरन देश्यम धर**त মায় কি বলিতে পারে বনে বাউক এ প্রশ্ন - কোভরা॥ হাওরালে হাওরালে খেলে ষরে যাইতে পথ ভুলে

বরে ষাইতে পথ ভূলে' ছটি হাত মুখে দিয়া কান্দে। আউলাইরা কটি-থড়া ছচরণে লাগে বেড়া আপনা আপনি পড়ে ফান্দে। শীলাম স্থলাম লাম স্থবল আদি বলরা শুন ভোমার যতেক রাখাল। বংশীবদনের বাণী কান্দি কছে নন্দরা আছু রাখি যাও বে গোপাল ॥১৭॥১১৭৭॥

পাঠকৈর

১। ইহা শ-র-সা পুথির ১৭০৮ সংখ্যক প্র ২। 'বলরাম রে' প-র-সা। ৩। 'পরাণ' ক, চ 'গোপাল' প-র-সা। ৪। 'রোঠে' প-র-সা। ৫ 'ছঝ' প-র-সা। ৬। 'বলে' ক। ৭। 'ঝুনি প-র-সা। ৮। 'কভ জয়' ছলে 'জনম' ক, থ, থ চ। ৯। 'ছখ' ক, চ। ১০। 'ছাওয়াতে ইত্যাদি অভি হন্দর কলি ছইটি কেবল প-র-সা প্রিভেই দৃষ্ট হয়। উহাদিগের পরিবর্জে ল প্রিভে নিম্নলিখিত প্রক্ষিপ্ত-লক্ষণাক্রান্ত কলিটি দৃষ্ট হয়,

'জল থাইতে গিয়াছিল আনলে বেটিয়াছিল ছই হাতে আনল ধরি পিরে। নন্দের ভাগাবলে যশোদার পুণাফলে তেঞি দে গোপাল মোর জিয়ে॥'

७वां प्रोत्र ।>

নন্দরাণি গো মনে না ভাবিছ কিছু ভরং।
বেলি-অবসান কালে গোপাল আনিয়া দিব
ভোর আগে কহিলুঁ নিশ্চয় ॥এ॥
সোঁপি দেহ মোর হাতে আমি লৈয়া বাব গাথে
যাচিয়া॰ খাওয়াব খীর ননী।
আময়াণ জীবন হৈতে অধিক জানিয়ে গো
জীবনের জীবন নীলমণি ॥
সকালে আনিব ধেন্ম বাজাইব॰ শিলা বেণু
গোচারণ শিখাইব ভাইয়েরে৽।
গোণ-কুলে উতপতি গোধন-চারণণ বুলি
বিসারা থাকিতে নাইণ্ খরে ॥

শুনিয়া বলাইর কথা মরমে পাইয়া বেথা ধারা বহে জারুণ নয়ানে। এ দাস শিবাই বোলে রাণী ভাসে প্রেম-জলে হেরইতে কানাইর বয়ানে ॥১৮॥১১৭৮॥

পাঠাক্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭০৯ সংখ্যক পদ।
। 'না ভাবিহ' ইত্যাদি ছলে 'কিছু না ভাবিহ
ভর'ক। ৩। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঞু' জাছে।
৪। 'বাচার্যা' দ, চ। ৫। 'জামার' ক। ৬।
'বাজাইরা' ক, ধ,। ৭। 'ভাইয়ারে' প-র-সা।
৮। 'চরপে' প-র-সা। ৯। 'নাহি' ক, ধ।

মারুর ।১

কান্দিয়া সাজায় নন্দরাণী।
হৈরি হলধর পানে ধারা বহে তুনয়নে
মুখে না নিঃসরে কিছু বাণী ॥ প্রাং ॥
অলকা ভিলক দিতে মুখ ঘানে আচ্ছিতে
দেখিয়া বিভোর যশোমতী।
নারিলেণ পাঠাইতে বনে দেখিয়া সেমুখ পানে
শিশুগণে করয়ে মিনভি ॥
তান-কীরে আঁখি-নীরে বসন ভিজিয়া পড়ে
বেশ বনাইতেং কাঁপে কর।
কান্দি গদগদ কহে আজি রাখি যাহ সভে
শৃশ্য না করিছ মোর ঘর ॥১৯॥১১৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭১০ সংখ্যক পদ। ২। কেবল প্-র-সা পুৰিতে 'ঞ' আছে। ৩। 'নারিব' প-র-সা। ৪। 'বানাইতে' প-র-সা।

পান্ধার (১

ব্যব্দ পরাইতে ব্যবহণের শোকা। প্রতি-বস্তু চুম্বইতে ব্যবং হয় লোভা। বান্ধিতে বিনোদ চূড়া নির্মাতিত কেল।
আঁখিযুগ ঝরঝর না হইল বেল।
পরাইতে নারে রাণী রক্ত পীত ধড়া।
ক্ষণি মাজাও দেখি ভয়ে ভালি পড়ে পারা।
পরাইতে নূপুর কমল সে চরণ।
নারিলুঁ বিদায় দিতে কহে ঘন ঘন।
স্তন-ক্ষীরে ভিজিল রাণীর সব বাস।
নিছনি লইয়া মরু ঘনরামদাস॥২০॥১১৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭১১ সংখ্যক প্র। ২। মনশ্ব,চ। ৩। মাঝ্যা

श्रीवांत्र 15

গোপালেই সাকাইতে নন্দরাণী না পারিল।

যতনে কানাই-চূড়া বলাই বাহ্মিল।

অসদ বলয়া হার শোভিয়াছে ভাল।

তাবণে কুগুল দোলে গলে গুঞ্জাহারই।

পীত ধড়া আঁটিয়া পরায় কটি-ভটে।

বেক্র মুবলা হাতে শিলা দোলে পিঠে।

ললাটে তিলক দিল ক্রিদাম ভাসিয়া।

নুপুর পরায় রালা চরণ ধরিয়াই।

ঘনরাম দাসে বোলে কান্দিতে কান্দিতে।

অমনি রহিল রাণী বদন ছেরিতে।

পাঠান্তর

1157172671

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১২ সংখ্যক প্র। ২। 'গোপাসকে' প-র-সা। ৩। 'গুলহার' ক, থ। ৪। 'ধরিয়া' প-র-সা।

मनन ।>

বিশিনং গমন দেখি হৈয়া সক্ত্ৰণ আঁথি কান্দিতে কান্দিতে নান্দিতে নন্দ্ৰনাণী।

গোপালেরে কোলে লৈয়া প্রতি-অঞ্চে হাত দিয়া রক্ষা-মন্ত্র পড়য়ে আপনি। এ ছখানি রাজা পায় ত্রক্ষা রাখিবেন তায় জাতু রকা করু দেবগণ। কটিভট স্থল্ঠর রকা করু যভেরশ্বর कारप्र द्रार्थन नादायण ॥ ভুজযুগ নখাঙ্গুলি রক্ষা করু বনমালী কণ্ঠাণ মুখ রাখুণ দিনমণি। , মস্তক রাথুন শিব পৃষ্ঠদেশ হয়গ্রীব অধ উর্জ রাখু চক্রপাণি॥ कलि श्वरल शित्रि व्यन রাখিবেন জনাদ্দনে मण मिट्रा मण मिक्शाल। খত শক্ত হউ মিত্র রক্ষা করু সর্ববত্র নহে ভূমি হও তার কাল। এই সব মন্ত্ৰ পড়ি প্রতি-অক্টে হস্ত ধরি शामरप्रत्र रकाँ है। लाल मिल। নন্দরাণী প্রেমময় এ দাস মাধ্ব কয় বলরামের ১০ হাতে সমর্পিল। 1144177441

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১০ সংখ্যক পদ। २। 'बिनिदन' भ-ब-भा। ७। 'भहरब' । ।। 'আপুনি' ধ, চ। ৫। 'কঠ' ক, ধ। ৬। 'রাধ' 🕶 ; 'ब्रांथूक' भ-त-प्राः। १। 'ब्रांथून' कः। ৮३ 'कन' क । त्र 'रूक' श-त-गा। >o। 'वनतारम' **4, 4, 4,** 5 (

তথাহি শ্লোকঃ।

मृनू रन मम वाकाः वानकानाः वनी पः ं भित्रि-वन-कन-मर्था त्रक कृष्णः महोतः। ইভি ৰঙ্গ-কন্ন-যুগ্যে কৃষ্ণ-পাণিং নিধার ्रे मन्न-भनिष-धान्ना नग-बान्ना ननाउ ।

कारमाप १३

প্রণতি করিয়া মায় টাললা যাদব রায় আগে পাছে ধায় শিশুগণ। घन वांटक भिका दव्य गगरन त्या-धूब-दब् শুনি সভার হরষিত মন॥ আগে আগে বৎসপাল পাছে ধায় ত্রজ-বাল रि रेट भवन घन द्रांन । মধ্যে নাচি যায় শ্যাম দক্ষিণে সে বলরাম ব্র**জ**-বাসী হেরিয়া বিভোর[়]।। নবীন রাখাল সব আবা আবা কলরব শিরে চূড়া নটবর-বেশ। আসিয়া যমুনা-ভারে নানা রক্তে খেলা করে কত কত কৌতুক বিশেষ॥ **क्टिश यांग्र त्रय-ছाटम्म** কেহো কারো চড়ে কান্ধে কেহো নাচে কেহো গান গায়।

এ দাস মাধব বলে কি শোভা যমুনা-কূলে রাম কানাই আনদে ধেলায়।

11201177201

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১৫ সংখ্যক পদ। প-র-সা পুৰিতে 'শৃণু' ইত্যাদি সংস্কৃত প্লোকটিকে चाउद्य (১१১৪ मरथाक) भवता भागा कर्ना हरे-श्राष्ट्र। २। 'छनि मङात्र' इरन 'ऋत्रमत्र' क, ४; 'হ্রবলের প-র-সা। ৩। 'বোল' ধ। ৪। বিভোল' **५, ६ ; '**विरह्वान' श-द्र-मा । ८ । 'कांद्र' क ।

ভাটিয়ায়ি ৷১

সকল রাধাল মেলি থেলা আরম্ভিল। রাম কানাই ছুই-ভাই ছ দিগে দাঙ়াইলং। 🕆 ञ्जिपाटम कामांहरत्र त्थमा बनाहरत्र॰ छ्वरन । धारे में जान जन निसंगटन देवदन है

কানাই হারিয়া কাকে করয়ে জ্রীদানে ।

হবল হারিয়া কাকে করে বলরানে ॥

বংশীবটের তলে রাখিবারে যায়।

হেরি সব শিশুগনে শিলা বেণু বায়।

জ্রীদান কানাইর কাকে হইতে নামিল।

আবা আবা রব দিয়া নাচিতে লাগিল।

এ দাস মাধব বলে অপরূপ নহে।

প্রেমের অধীন কানাই সাধু লোকে কহে।

হেয়ে অধীন কানাই সাধু লোকে কহে।

হেয়ে ১৯৪১১৮৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭১৬ সংথাক পদ।
২। 'গুদিগো দাঁড়াইল' ফ্লে 'গুই দিগে হইল' প-র-সা। ৩। 'বলাই' ক, চ,প-র-সা। ৪। 'শীদাম' ছ। ৫। 'বলরাম' ছ। ৬। 'কানাই' ক, ধ, ছ, চ।

সারক।১

নিরমল যমুনা-জল মাহা খেরই আপন আপন তমু-ছাহ^২। নয়ন করি বঙ্কিম দশনহি অধর কোপ করয়ে পুন ভাহ॰॥ রক্তঃ করি রহতহিঁ খেণে ভিরিভঙ্গ (थरन ८थरन दवनू वाकांग्र। होलन (परे त्रणहि বেণে ভক্লবর विष्त्रहेश नम्म-छुलान । গলে গুঞ্চাবলি শৃঙ্গ মুরলি করে **(होमिट्श विक् उक्कवान ॥२०॥**>>৮०॥ ইভি ভৃতীয়-শাখায়াং বিংশভিপন্নব:।

পঠিক্তির

>। देश भ-त-ना श्रवित ১৭১৭ मध्यक भव। २। 'हांक' क, ब, इ, भ-त-ना। ७। 'छांत' क, খ, চ, প-র-সা। ৪ । বিশেক, খ। ৫ । কর-ডিচি'কা ৬ । বৈশ্বিশ প-র-সা। ৭ । বিহরজে ক, খ।

অথ সখ্যরসঃ গোঠ-গ্যনং যথা।
শ্রীগোঞ্চন্তঃ।

(वंशायात्र)

আজু রে গৌরাপের মনে কি ভাব উঠিল।
ধবলী সাঙ্জলী বলি সঘনে ডাকিলং ॥
শিক্ষা বেণু মুরলা করিয়া জয়-দ্বনি।
হৈ হৈ বলিয়া গোরা ফিরায় পাঁচনা ।
রামাই ফুল্বানন্দ সঙ্গে নিত্যানন্দ।
গোরীদাস অভিরাম সভার° আনন্দ ।
বাহ্দেব ঘোষ কহে মনের হরিষেং।
গোষ্ঠলীলা গোরাচাঁদং করিলা প্রকাশেণ ॥
॥১॥১১৮৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হাকিল' প-র-সা। ৩। 'অভিরাম সভার'
ফলে 'অভিরামের বাঢ়িল' দ। ৪। 'মনের হরিবে'
ফলে 'মনে করি আল' প-র-সা। ৫। 'মহাপ্রাফু'
প-র-সা। ৬। 'প্রকাশ' প-র-সা।

ভূপালী।১

নীল পীত ধড়া নন্দ পরায় আপনি।
চন্দন-তিলক দেই যশোদা রোহিণী ।
চূড়ায় ময়ুর-পুচ্ছ গলে গুঞা-হার।
চরণে নূপুর রাণী দেই দোগকার ।
গোপালে সাজাঞা রাণী দোলমাল হিয়া।
একবার কোলে আয়ে রে মা মা বলিয়া।
॥২১১৮৭।

্ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ১৭১৯ সংখ্যক পছ। ২। 'ৰউরের পাথা' প-র-সা। ৩। 'লোহার' খ,চ।

सर्हे ।>

বের আর রে বলরাম হাত দে মোরং মাথে।

বড় রাধিয়া প্রাণ দিরেং তোর হাতে।

আর এক কথা কহি শুন হলধর।

বশোদার বালক বলি না ভাবিহ পর।

বাচিরা নবনী দিহ নিকটে রাধিবেং।

বেলি অবসান হৈলে সকালে আসিবেং॥

10177661

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২০ সংখ্যক পদ। ২। 'মারের' ক, চ। ৩। 'দিলু' প-র-সা। ৪। 'রাথিহ' প-র-সা। ৫। 'আসিহ' প-র-সা।

बित्रांत्र ।>

আমার শপতি লাগে না ধাইহ ধেমুর আগে পরাণের পরাণ নীলমণি।

নিকটে রাধিহ ধেমু পুরিহ মোহন বেণু ঘরে বসি আমি যেন শুনি ।

বলাই ধাইবে আগে আর শিশু বাম ভাগে শ্রীদাম ফ্লাম সবং পাছে।

ভূমি ভার মাঝে ধাইর॰ সঙ্গ হাড়া না হইর৽ মাঠে বড় রিপু-ভর আছে।

পুৰাণ হৈলে লইরাণ ধাইরং

পথ পানে চাহিদ যাইর শভিশর তৃণাকুর গণে। কাঙ্গ বোলে বড় থেমু কিরাইডে না বাইর কাঞু হাড ভুলি দেহ বোরণ সাধে। থাকিবে ভরুর ছার বিশ্বতি করিছে মার রবি বেন না লাগরে গায়। যাদবেকে সজে লইয়ং

> বাধা পানই>• হাতে থুইয়> বুঝিয়া যোগাবে রাজা পার ॥৪॥১১৮৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' প-র-সা। ৩। 'ধাইরো' চ; 'রইও'
প-র-সা। ৪। 'হইও' প-র-সা। ৫। 'কুধা'
ক, খ। ৬। 'চাহি' ক, খ; 'চাহিরা' প-র-সা।
१। 'আইর' ए। ৮। 'চাহিরা' ए। ৯। 'বাইও'
প-র-সা। ১০। 'বেহু মোর' হলে 'বেরে মারের'
প-র-সা। ১১। 'থাকিও' ক; 'থাকিছ' চ;
'বসিহ' প-র-সা। ১২। 'লেহ' প-র-সা। ১০।
'নুপুর' প-র-সা। ১৪। 'বেহু' প-র-সা।

ভাটিরারি।১

নাজ নাজ বলিয়া পড়িয়া গেল নাড়া।
বলরামের শিক্ষাতে সাজিল গোয়াল-পাড়া॥
হান্যা হান্যাং রব যে উঠিল ঘরে ঘরে।
নাজিয়া কাচিয়াং সভে ছইলা বাহিরে॥
আজি বড় গোকুলের রজ রাজপথে।
গোধন চালাঞা সভে চলিলা একং সাথে॥এ॥
চারি দিকে সব শিশু মধ্যে রাম কান্য।
কাঁচনী পাঁচনী কারুং হাতে শিলা বেণু॥
সভার সমান বেশ বয়স এক ছান্দ।
ভারাগণ বেঢ়িরাং চলিলা আমচান্দ॥
ধাইরা বাইয়া কেছ ধেনু বাহুড়ার।
ভারনদাস এক ভিতে দাঁড়াইরা চার ॥৫॥১৯০॥

পাঠান্তর

३। देवा श-त-मा श्रुवित २१२२ मरवाक शव। २। वामा वामा वा ७। कालिक्स वा हा 'अक्टें' था का 'कांत्र' का छ। '(विहि (वन, च।

নাচত গায়ভ

বেণু বাজায়ত

ধেমু চালায়ত রজে। ভোজন-সন্তার

লৈয়া আঞ্চনার

योगरवन्त हलू मरक ॥१॥५५०३॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২৪ সংখ্যক পদ। 'ভেরট' ফলে 'ভেউট' চ; 'ভেউড়ি' প-র-সা। ২। 'গোঠেরে' ফলে 'আজু গোঠে' ব। ৩। 'স্ব' শব্দ ঘ, চ পুথিতে নাই। ৪। 'মাৰে' প-র-সা। ৫। 'গুলাগাঁথা' ব। ৬। 'ভাই' ক. চ।

ভাটিরারি ৷১

ভালি রে গোপাল চ্ড়ামণি।
বংশীবটের মাঠে গোঠের সাক্ষমি ॥ ধ্রুং ॥
বান্ধিয়া মোহন চ্ড়া গুঞার আটনি।
বরিহা বকুলমালে ঈবং টালনি ॥
গলায় ফুলের দাম গো-ধূলি সব গায়।
নাচিয়া যাইতে সে মঞ্জীর বাব্দে পায় ॥
মণিময় অভরণ শ্রাম কলেবর।
ভড়িতে জড়িত যেন নব জলধর ॥
সভার সমান বেশ নাটুয়া-কাচনিং।
সঘনে প্রন-বেগ্রে ফিরায় পাচনি ॥
'ব্রজ্ব-বালকের সিলে রক্তে চলি বায়।
নবচন্দ্র দাস পায় পড়িয়া লোটার ॥
॥৮॥১১৯০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৫ সংখ্যক পদ।
২। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ক' আছে। ৩।
'বিনোদ' প-র-সা। ৪। 'দে' শক্টি প-র-সা পুথিতে
নাই। ৫। 'কাছনি' ক। ৩। 'বালক' ক, ব,
দ,চ।

ख्या तात्र ।>

আজু বন বিজই রাম কামু।

আগে পাছে শিশু ধায় লাখে লাখে ধেমু॥

সমান বয়েস বেশ সমান রাখাল।

সমান হৈ হৈ রবে চালাইছে পাল॥

কারু নীল কারু পীত কারু রালা ধড়িং।

ফ্রক্স চতুনাং মাথে বিনোদ পাগড়িং॥

কারু গলে গুল্লাগাভাং কারু বনমালা।

রাখালের মাবেং নাচিছে চিক্ণ কালা॥

নৃপুরের ধ্বনি শুনি মুনিং-মন ভুলে।

ঝাপিল রবির রথ গো-খুরের ধুলে॥৬৮১১৯১৪

পঠিক্তির

>। ইহাপ-র-সাপুণির ১৭২৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ছড়ি'খ। ৩। 'চতুলা'চ। ৪। 'পাশুড়ি' খ। ৫। 'হার'খ। ৬। 'মাঝোরে' প-র-সা। १। 'মুনির' প-র-সা।

ভাটিয়ারি। ভেরট।১

८गार्क्टद्रश्माकल ८गार्भाल । ४विंग माञ्जल পিউলি বলিয়া हैं[क्रांट्स भव॰ त्रांथान ॥ अ ॥ কাক্ল কান্ধে⁸ টেলি বিনোদ পাগড়ি কাক্ল গলে গুঞাগাভা[°]। কারু নীল পীত শেত লোহিত ৰটি-ভটে ভাল শোভা। পুরিছে বিষাণ ভাইয়া॰ বলরাম कानारे भृतिहरू (वर्)। শ্রবণ ভুলিয়া উচ্চ পুচছ করি আগে চলে সব ধেনু।

मात्रक्र १३

ও রাম কানাই কালিন্দীরং তীরে। শ্বেত শ্যাম প্রই ভাই চান্দে মেঘে এক ঠাঞি শিশুগণ তারা যেন ফিরে: গ্রু॰ ॥ কেতো জলপানে ধায় অঞ্চলি পুরিয়া খায় কেহো দেখে নিজ অস-ছায়া : ভরঙ্গ উঠিছে ঘন ব্যুনা আনন্দ-মন দেখি खज-वालक्त्र भागा॥ ভুলিল কানাইর বানা ঠাত্রি ঠাত্রি রাখালের থানা স্থবলের থানা সভার আগে। ভার বামে বলরাম মাৰে রাজা শ্রাম-ধাম রাখাল বেড়িল লাখে লাখে। রাখাল রাখালে বয় কেহো হাতী ঘোড়া হয় কেহো নাচে কেহো গায় গীত। কেহো বায় শিকা বেণু বনে বাজা হৈল কামু বলাই হইলা তার মীত॥ বসিলা রাখাল-রাজ কেছো বলে সাজ সাজ অহুর উপরে দেও° হানা। দধি ছুগ্ধ কাঢ়ি খায় वश्नी वहरन शांत्र কংসের যোগান দিতে মানা ॥ 118666161

পাঠান্তর

- ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'কালিন্দি' ব। ৩। 'চাঁদ মেব' ক। ৪।
কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঐ' আছে। ৫। 'উঠিছে
লন' ছলে 'উঠে বন বন' প-র-সা। ৬। 'বংগ'
ক, ধ; 'বোনে' ব, চ। ৭। 'দেহ' প-র-সা।

वानचे ।)

বমুনাক তীর তক্ষতল স্থূণীতল আসিয়া মিলল হোনং ভাই।

मटि वान खान कि (थना (थनादि (ala আজু খেলিব এই ঠাঞি। কারু কোচডেতে ভেটা কডি রামচাকি দাডাগুলি কেহো কেগে পাচনি ফিরায়। রাম কানাই কুতৃহলে ছুই ভাই ছুই দলে শিশুগণ করে ধাওয়া ধায় ॥ को जूरक रहे नार्छिन নিজ অন্ন হেলাহেলি কেহ কেহ লাটুয়া খুরায়। সব শিশুণ থরে থবে গেঁড়ুয়া বলাই করে লোফে গেঁড়ু মত বলাই॥ ভাকে মহামন্ত বলী সাতলিদ ভাকলু বলি চৌদিগে পড়ে ধাওয়া ধাই?। সাতলি পা গাছি পুন এক শিশু কহে শুন মার যদি কানাইর দোহাই ॥১০॥১১৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৭ সংখ্যক পদ।
২। 'গৃই' প-র-সা। ৩। 'থেলাবি' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'কারু' ইত্যাদি হলে 'কারু কাহরেত' ইত্যাদি ক; 'কারু কাঁছড়েড়ত' ইত্যাদি খ,
চ; 'কারু কোছে' ইত্যাদি প-র-সা। ৫। 'দিপে'
ক, খ, চ, পার-সা। ৬। 'নাটুরা' প-র-সা। ৭।
'সব শিশু' হলে 'শিশুগণ' ঘ। ৮। 'সাওলি' ক।
১। 'সাতলি' ইত্যাদি পংক্তিমর ক, চ পুথিতে নাই।
অতঃপর খ, ম পুথিতে নির্মাণিতি অতিরিক্ত পংক্তিমর দৃষ্ট হর, বথা—
'কেহো ধার ছ্রাছরি কেহো ভরু লক্ষ করি
পাছে পাছে মন্ত বলাই।'
প-র-সা পুথিতে উদ্ধৃত পংক্তিমরের পরিবর্জে পুনরার 'সব শিশু' ইত্যাদি পংক্তিমর লিখিত হইরাছে। ভাটিয়ারি ৷১

আরে মোর রাম কানাই। যমনা-ভীরের ছায় খেলে দোন ভাই॥ সভাই সমান খেলু বাটিয়া লইল। হারিলে চড়িব কাল্কে এই পণ কৈল ॥ (य कन शदिर छोटे कारक कवि लावि । বংশী বটের তলে বাথিয়া আসিবে ॥ তুই দিগে তুই ভাই আসি দাঁড়াইলা। যার যেই খেলু সব বাঁটিয়া লইলা॥ श्रीनाम श्रुनाम चानि कानाइत निर्ग देश । স্তবল বলাইর দিগে নাচিতে লাগিল। শ্রীদাম ক**হে আ**মরা কানাইর দিগে হব। কানাই হারিলে উহার° কান্ধে না চডিব ॥ এমতে বাঁটিয়া খেলু খেলা আরম্ভিলা। সম্বনে গম্ভীর নাদে খেলিয়া চলিলা॥ घनत्राम मान करह दम्बिश वलारे। আপনি সাতলি ভালি হারিলা কানাই।

196661661

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২৮ সংখ্যক পদ।

২। 'ভরুর' খ, চ, প-র-সা। ৩। 'থেড়ু' প-র-সা।

৪। 'লিবে' ক, খ। ৫। 'ভলে নিরা' ক, খ।

৬। 'থেড়ু' প-র-সা। ৭। 'আর' ক, খ, চ,

শ-র-সা। ৮। 'থেড়ু' প-র-সা। ৯। 'সাওলি'

ড়, খ, সাঁভেলি' খ, 'সাঙ্গি' চ; 'সাঁওলি'

শ-র-সা।

etecha.

আজি খেলার হারিগা কানাই।

ক্ষালে করিয়া কাজে বসন আঁটিয়া বাজে

বংশীবটের ভলে বাই ॥ গ্রা

শ্রীদাম বলাই লৈয়া চলিতে না পারে খাইরা
শ্রাম-জল-ধারা পড়ে অলে।

এখন খেলিব যবে হইব বলাইর দিগে

আর না খেলিব কানাইর॰ সজে ॥

কানাই না জিতে কভু জিভিলে হারয়ে ওছু

হারিলে জিতয়ে বলরাম।

খেলিয়া বলাইর সজে চড়িব কানাইর কাজে

নহে কাজে নিব ঘন-খাম ॥

মন্ত বলাই-চান্দে কে করিতে পারে কাজে

খেলিতে যাইতে লাগে ভয় ।

গেড়ুয়া লইয়া কবে হারিলে সভারে মারে

ঘনরাম দাস দেখি কয় ॥১২॥১১৯৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৯ সংখ্যক পদ। ২। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঞ' আছে। ৩। 'থেলিব কানাইর' হলে 'থেণাৰ কাহু' প-র-সা।

मात्रम ।>

ভাগ্যবতা ষমুনা মাই।

যার এ কুলে ও কুলে ধাওয়া ধাই।

শ্বেত শাঙল দোন ভাই।

যার জলে দেখে আপন ছাই।

যমুনার জলে কিবা শোভা⁸।

এ খড়নন্দন-মনলোভা ১০॥১১৯৮।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭০০ সংখ্যক পথ।
২। 'বার' শক্ষ ঘ পুথিতে লাই। ৩। 'নিক্ষ আক'
घ; 'আপলার' চ। ৪। 'বমুনার' ইত্যাদি
কলিটি কেবল প-র-সা পুথিতে আছে। অতঃপর
উহাতে নিয়লিখিত প্রক্ষিপ্ত কলিটি দৃষ্ট হয়, বথা—
'নিমানক্ষ দাসের হয় তথি।
কলে দেখি কতেক সুরতি ৪'

নিমানক্ষ দাস বৈক্ষবদাসের পরবর্তী সমরের ব্যক্তি;
ক্ষতরাং বৈক্ষবদাসের 'পদকরতক্ব' প্রছে নিমানক্ষ
দাসের ভণিতাযুক্ত রচনা সরিবেশিত হওয়া অসম্ভব।
প-র-সা পুলিতে এই পদে বহুনক্ষন দাসের ভণিতার
আছে; তৎপরে আবার নিমানক্ষ দাসের ভণিতার
কোন সার্থক্তা দেখা বার না। নিমানক্ষ দাস এই
প্রেন সূপ্ত-প্রার ভণিতাটির উদ্ধার করিয়াছেন বলিয়া
এই প্রের শেবে নিজ্ব-নামান্ধিত অপর ভণিতা
সংযোজিত করিয়াছেন কি ?

অধ বনভোজন।

তথা রাগ।

খেলা সমাধিয়া শ্রমযুক্ত হৈয়া স্থাগণ লৈয়া সঙ্গে। ভোজন-সন্থার ছিল ভারে ভার ভোজনে বসিলা রক্তে। ষমুনা-পুলিনে বেটি স্থাগণে মাঝে করি বৈসে কামু। পাড়ি বনপাভ তাহে নিল ভাত कल खित्र भिका (वन् । সব সথা মেলি করিয়া মণ্ডলী ভোজন করয়ে হুখে। ভাল ভাল কৈয়া मूथ टेहर ७ टेनग्र সভে দেই কামু মুখে। সভৈ কৰে ভাই আমার কানাই মোরে বড় ভাল বালে। ব্যাসার সমূৰে বসি খায় হুখে नमा ब्रट्ड स्मात्र शार्म । এহি করি মনে করয়ে ভোজনে আনন্দ-সাগরে ভাসে। বিশ্বন্তর দাস করি মনে আশ ब्रट्ट ख्वरणब शीरण ॥>८॥> >>>॥

শহরভিরণ ৷ সম ভাল ৷ ১

তোর মাইঠাং বড় মিঠা লাগে কানাই রে। খাইতে বড় স্থুখ পাই তেঞি তোর আইঠা খাই খেত্যে খেত্যে বেঁতে হৈতে দিতে হৈল

ভাই রে॰ ॥ধ্রু॥

ও রাক্ষা অধর মাকে না জানি কি মধু আছে
আমরা তোর চান্দ-মুখের বালাই বাই রে।
এই উপহার নেও খাইয়া আমাদিগে দেও
এ দাস উদ্ধাবে কিছু দিতে চাই রে॥

100561961

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৩১ সংখ্যক পদ।
২। 'আঁইঠ' হ; 'আঁঠা' চ; 'আঠো' প-র-সা।
৩। 'থেতো' ইত্যাদি স্থলে 'থাইতে বেঁতে হৈতে
দিতে' ইত্যাদি ক; 'থেতে বেঁতে হইতে দিত'
ইত্যাদি ক; 'থেতো বেঁতে হৈতে দিতে' চ;
'থাইতে দিতে' প-র-সা। ৪। 'তোমার' ক।
৫। 'লাও' থ; 'মাও' হ; 'লেও' ক। ৬।
'আমার দিগে' হ।

তথা নাগ।
ভোজন সমাপি সবছা ব্রজ-বালক
বৈঠল নীপক ছার।
কালিন্দি-নীর-সমীর বছই মৃত্
শীতল করু সব গার॥
ফুল্সর শ্রাম-শরীর।
শীলামক কোরে জলসে তহি শৃতলং
ফুবল-কোরে বলবীর ॥এ॥
নব নব পরেব লেই স্থাগণ
বীক্ষই ছুত্ জন-কলে।
কোকিল জনর কামু-মুখ হেরি হেরি
গারই শবদ-ভরতে ॥

আলস তেজি বৈঠল নন্দ-মন্দন দুরহিঁ গেও সব ধেনু। হেরইতে যভনে একযোগ কারণে বায়ই মোহন বেণু ॥১৬॥১২০১॥

পাঠান্তর

३। हेर्स भ-त्र-मा পूषित ১৭৩२ मश्याक भए। २। '७७न' क, ठ, भ-द-मा। ७। 'कांनरन' 어-국-커!!

वर्षाः ज्ञात्र । >

সব সহচর সনে বেণু বাজাওয়ে। প্রেমহি কোই কাসু-গুণ গাওয়ে ॥ কোই কোই নিরথয়ে কামুক মুধ। খেলই কোই ভততুঁ মন সুধ। কোই চক্রাবভং লগুড় ফিরায়। কা**হুঁক কান্ধে কোই°** চড়ি যায়॥ ঐছে সখা সহ খেলয়ে কান। মোহন রাম-কাতুক গুণ গান ॥১৭॥১২০২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৩০ সংখ্যক পদ। २। 'ठळाव९' क, ब, ब; 'ठळावछ' ह। 'ठळाव९' ও 'চক্ৰবন্ত' পাঠে ছম্মোভল ঘটে। 'চক্ৰাবন্ত' শব্দ সংস্কৃত 'চক্ৰাবৰ্ত্ত' শব্দের অপএংশ। ৩। 'কেই **हिए' ऋल 'हिए क्लिट्र' क, थ, घ, है।**

ক্সৰ ভাটনারি।১

वाक् राम वानम वाशह। গাভিয়া বিলোগ খেলা · আনদেশ হইলা ভোলা **बूब बरम दंगन ग**र गारे ॥अ

ধেমু না দেখিয়া বনে স্থকিত রাধালগণে শ্রীদাম স্থাম আদি সভে। কানাই বলিছে ভাই খেলা ভালা যাবে° নাই व्यानिक त्याधन त्वनू-व्रत्व ॥ সব ধেমু নাম কৈয়া ञधरत मूत्रली टेलग्रा ডাকিয়া পুরিল উচ্চম্বরে। শুনিয়া বেণুর রবং ধায় ধেন্যু বৎস সৰ পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে॥ ধেতু সব সারি সারি হাম্বা হাম্বা রব করি माँ पृथ्वित कृष्या कि कि । চুগ্ধ স্রাবি পড়ে বাঁটে প্রেমের ভরক উঠে স্নেহে গাবী শ্রাম-ব্রুস চাটে॥ দেখি সব স্থাগণ আবা আবা ঘনে ঘন কামুরে করিল আলিঙ্গন। প্রেমদাস কছে বাণী কানাইর মুরলা শুনি পশু পাখা পাইল চেডন ॥১৮॥১২•৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৩৪ সংখ্যক পদ। २। 'मखोरे' थ, भन्द्र-मा। ७। 'स्ट्व' क, ४, প-ब्र-ना। ६। 'कश्चिम' प; 'कब्रा' छ। ६। 'ब्रट्न' च। ७। 'मट्न' च। १। 'स्वनि' श-ब्र-मा।

সিক্তা।>

অংস পরি লবিত শ্রুতি-অবতংস मूत्रली व्यथत स्वय । ধটিকর ব্ অঞ্চল চরণে লম্বিড পিডং গো-খুলি-খুসর খাম-অজ । বেণু বাজাওভ ধেনু চরাওত কানাই কালিন্দি-তীরে। **होत्रः** तिहाँ दे ধবলি সাঙলি বলি भव्रक्षरे मन्म भकीदन ।

ভূমে আয়োগিত করপুত-লগুড় কটি-অবলম্বন-কারী। বাম-চরণ পর দখিণ চরণ খানি অস-ভস জগ-মন-হারী ॥ ব্ৰজ-বালক সঞ্জে রঙ্গে কত ধাওত মত্ত সিংহ-গতি গমনে। চান্দ-মুখের ঘাম বামকরে বারই রহই লগুড হিলানে ॥ উচ্চ পুচ্ছ করি ধেমুগণ ধাওভ চাহত ঝরঝর দীঠে। অনম্ভ দাস কহ কামু-মুখ হেরি হেরি পুচ্ছ নাচাওত পীঠে ॥১৯॥১২০৪॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পূথির ১৭০৫ সংখ্যক পদ।

২। 'পীত' ক, চ। ৩। 'ধাটকর' হুলে 'ধরি
কর' ক; 'ধরি করু' থ, প-র-সা; 'ধটির' ছ।
ধটিকর = ধটির। ৪। 'দিঘ' ক; 'দিঘ' চ, প-র-সা।

। 'ডোমে' ঘ, চ। ৬। 'জিনিরা' ক, খ।

१। 'হিলোনে' চ; 'হিলনে' প-র-সা। ৮। 'দিঠে'
ক, চ, প-র-সা। ৯। 'পিঠে' ক, প-র-সা।

वरवस्यो ।)

স্থাগণ সঙ্গে রজে এজ-নদ্দনং
থেসু চরাওত কালিন্দি-তীরে।
সম-বর-বেশ কেশ পরি চন্দ্রক
গজবর-প্রমনে চলই ধিরেণ ধীরে।
লাম শ্রীলাম মহাবল কোকিল
সবস্থা সঞ্জে বছবিধ খেল।
কর চরণে মহিণ ধরই ধবলি সম
কোই বংস কোই বুর সম ভেল।
কোই কোকল সম গরজই কুছ কুছ
কোই ময়ুর সম নৃত্যু রসাল।

ঐছন ক্রীড়নৈ নিমগন সব জন

দূর কানন মাহা চলু সব পাল।

যমুনা-ভরক রল হেরি কোই কোই

জল মাহা পৈঠি করয়ে জল-খেলা।

ঐছে আনন্দে বিহরে ত্রজ-বালক

দাস অনস্ত-চীত হরি নেলা। ২০৪১২০৫।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪৬ সংখ্যক পদ।
২। 'বছনক্ষন' ক; 'কত ধারত' প-র-সা। ৩।
'ধীরে' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'মহী' ক। ৫।
'ক্রীড়ন' ব। ৬। 'মহা' ব। ৭। 'ক্রন্' ক,
ধ; 'ক্রত' প-র-সা। ৮। 'থেনত' প-র-সা।
৯। 'অনস্তক চীত' চ; 'অনস্ত চিত' ব; 'অনস্তক

শীরাগ।১

যমুনার তীরে কানাই শ্রীদামেরে বৈরা।
মাথামাথি রণ করে শ্রামযুত হৈরা॥
প্রথম রবির তাপে শুখাইল মুখ।
দেখি সব স্থাগণের মনে হইল দুখ॥
আর না খেলিব ভাই চল বাই ঘরে।
স্কালে বাইতে মা কহিয়াছে সভারে॥
মলিন হইল কানাই মুখানি তোমার।
দেখিয়া বিদরে হিয়া আমা সভাকার॥
বেলি অবসান হৈল চল ঘরে বাই।
কহে বলরাম দূর বনে গেল পাই॥

123132061

পঠিক্তির

) देश भ-त-ना পृथित ১१०१ नश्याक भए। २। 'श्रीवादम' च ; 'हिवाम' भ-त-ना। ७। 'क्रि' च, च । ८। 'क्रेबाट्ट' भ-त-ना। ८। 'त्रूकानि' च।

অথ উত্তর গোষ্ঠ ৮

তথা বাগ ৷১

পাল জড় কর জ্রীদাম সান দেওং শিক্সার।
স্থনে বিষম খাই॰ নাম করে মায় ॥
আজি মাঠে আমাদের বিলম্ব দেখিয়া।
কেন বুঝি কান্দে মায়॰ পথ পানে চাইয়া॰ ॥
বেলি অবসান হৈল চল যাই ঘরে।
মায়ে না দেখিয়া প্রাণ কেমন জানি করে॥
বলরাম দাস কহে শুনি কানাইর বোল।
সকল রাখাল মাঝে পড়ে উত্রোল ॥

পঠিস্তির

1221122091

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৭৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দাপ্ত' ঘ, চ। ৩। 'লাগে' ঘ। ৪ 'মাডা' ক; 'মা' চ। ৫। 'চাঞা' ক।

টাকা

২। "স্বনে" ইত্যাদি। আমি বার্থার বিষম থাইতেছি,—(তাহাতে অন্থমান হইতেছে বে) মাতা আমার নাম স্থাপ করিতেছেন। (কেহ একাগ্র-মনে দ্রন্থিত প্রির জনকে স্থাপ করিলে, তাহার বিষম গাগে— এইক্লপ প্রচলিত সংস্থার আছে।)

ভাটিগরি ৷১

চাঁদ-মুখে বেণু দিয়া সব ধেন্থ নাম লইয়া
ভাকিতে লাগিলা উচ্চস্বরে।
শুনিয়া কানাইর বেণু উদ্ধান্থে ধায় ধেন্থ
পুচছ ফেলি পিঠের উপরে ॥
শবসান বেণু-রব বুবিয়া রাখাল সব
ভাসিয়া মিলিল নিজ-স্থা ।
বে বনে বে ধেন্থ ছিল ফিরিয়া একত্র কৈল
ভালাইলা গোকুলের মুখে ॥

খেত-কান্তি জমুপাম আগে ধার বলরাম

জার শিশু চলে ডাহিন বাম।

শ্রীদাম ফুদাম পাছে ভাল শোভা করিয়াছে

তার মাঝে নবঘন-শ্যাম।

ঘন বাজে শিঙ্গা বেণু গগনে গো-ক্ষুর-রেণু

পাপে চলে করি কভ ভঙ্গেং।

যতেক রাখালগণ আবা আবা ঘনে ঘন

বলরাম দাস চলু সঙ্গেও ॥২৩॥১২০৮॥

পাঠান্তর

পৌরী।>

२। 'ভिवा' প-র-সা। ৩। 'স্বা' প-র-সা।

১। हेरा भ-त-मा भूचित्र ১৭०৯ मः बाक श्रमा

বন সঞ্জে আওত নন্দ-তুলাল। গো-ধূলি-ধূসর শ্রাম কলেবর আজামুলস্বিত বন-মাল ॥ধ্রু॥ খন খন শৃঙ্গ বেণু-রব শুনইভে वत्रक्र-वानिशन थात्र। মঙ্গল পারি मोभ करत्र वधुगन॰ मन्दित-घाटत माँ ए। य मूथ जिनिः विश्ववत পীতাম্বর-ধর नव-मञ्जूति व्यवज्ञःम । শিখণ্ডক-মণ্ডিভ চূড়া ময়ুর-বায়ই মোহন বংশ। বাল বুদ্ধ জন বরজং -বাসিগণ অনিমিখে মুখ-শশি হেরি। ভূথিল চকোর চান্দ প্রসু পাওল मिन्दिन ना हनदा॰ स्क्रि । ८गार्ठ भन्नदबलन গোগণ সবছ मिमरत हन् नमनान। যশোসতি আওল আকুল পত্তে মোহন-ভণিত রসাল ॥২৪।১২০৯॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪∙ সংখ্যক পদ। ২। 'ব্ৰহ্ণ'ক, খ, খ, চ। ৩। 'বধুগণ' ক, খ। ৪। 'জিডি'খ। ৫। 'ব্ৰহ্ণ'ক,খ,খ,চ। ৬। 'নাচলয়ে' হলে 'নাচয়েং' ক।

পৌরী।১

নন্দ-ছলাল বাছা যশোদা-ছলাল।

এত ক্ষণ মাঠে থাকে কাহার ছাওয়ালং॥
রতন-প্রদীপ লৈয়া আইলা নন্দরাণী।
এক দিঠে দেখে রাজা চরণ ছখানিও॥
নেতের আঁচলে রাণী মোছে হাত পা।
ভোমার মুখের নিছনি লৈয়া মরিও যাউক মা॥
কহে বলরাম নন্দরাণী কুতৃহলে।
কত লক্ষ চুত্ব দেই বদন-কমলে॥২৫॥১২১০॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'ছায়াল' হ। ৩। 'এক দিঠে' ইত্যাদি ছলে
'গদগদ কঠ নানিকসরে বাণী॥' (পাঠান্তর—ক)।
৪। 'মরে' ক; 'মর্যা' খ, চ।

টাকা

৪। "এক দিঠে" ইত্যাদি। বশোদা এক দৃষ্টে

জীককের আরক্তিম চরণ-বুগল দেখিতে লাগিলেন—
পাছে বন-অমণ-কালে উহাতে কন্টকাদি বিদ্ধা হইরা
থাকে। জুলনা করুন,—

শনব ভূগান্থর কত ভূকিল চরণে। এক-দিঠি হৈয়া রাণী চাহে চরণ পানে ।"
—প-ক-ত, ১২১২ সংখ্যক পদ।

क्लांगे।

शक्तोरथ नित्रमञ्जन (कन । क्छ मछ हुच वहन शब (सन ॥ কোরে আগোরি স্থত মন্দিরে গেল।
বহু উপহার থারিং পর দেল।
রাম কানাই ব্রজ-বালক সজেও।
ভোজন কয়ল কতহুঁও রসরজেও।
কাতরে তবহিও পুছরে নন্দরাণী।
গদগদ কণ্ঠ না নিকস্বয়েও বাণী।
স্তন-খিরেদ ভীগলত পহিরণ-চীর।
ক্রের্মর নয়নে গলয়ে ঘনত নীর।
আকুল ভই১১ তব পুছত্যং বাত।
মোহন নির্থই রোহিণি সাধ্যুও।

12612221

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'থার' ক, চ। ৩। 'সল' च। ৪। 'বহুত'
ক, খ। ৫! 'রসরল' ঘ। ৬। 'ভবহু' ক, খ।
৭। 'সররে' च। ৮। 'ক্ষীরে' ক, চ। ৯।
'ভিগল' ক, প-র-সা। ১০। 'বহু' প-র-সা। ১১।
'হোই' প-র-সা। ১২। 'পুছত' ক, চ, প-র-সা।
১৩। 'সাত' খ, চ।

গৌগী ৷১

কোন বনে গিয়াছিলা ওরে রাম কামু।
আজি কেন চান্দ-মুখের শুনি নাই বেণু।
ক্লীর সর ননী দিলাম আঁচলে বাদ্ধিরা।
বুকি কিছু খাও নাই শুখাঞাছে ছিয়া।
মলিন হৈয়াছে মুখ রবির কিরণে।
না জানি কিরিলা কোন গহন কাননে।
নব তৃণাস্কুর কত ভুকিলং চরণে।
এক-দিঠিং হৈরা রাণী চাহে চরণ পানে।
না বুকি ধাইয়াছ কত ধেমুর পাছে।
এ দাস বলাই কেনে এ ছুখ বেখ্যাছেং।
। এ দাস বলাই কেনে এ ছুখ বেখ্যাছেং।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'জুঁকিল' ক। ৩। 'একদিঠ' ক, খ, চ, প-র সা। ৪। 'দিরাছে' ব।

शननी ।>

ওগো মা ভোমার গোপাল কিবা জানয়ে মোহিনী। তমুত নামন পাই আমরা সজের ভাই ভোমারে ভুলাবে কত খানি॥ তৃণ খাইতে ধেমুগণ যদি যায় দূর বন কেহ ত না যায় ফিরাইতে। পুরয়ে মোহন বেণু তোমার ছুলাল কামু ফিরে ধেমু মুরলীর গীতে 🛭 আমরা ফিরাইতে ধেনু ভাহা নাহি দেয় কানু সদা ফিরে হুবলের পাছে। ञ्चल कतिया (कारन (क्षारम गमगम विराल না জানি মরম কিবা আছে । কিবা লীলা করে এহ বুঝিতে না পারে কেহ অপরূপ চরিভ বিহরে । বলরাম দাস ভণে বলাই দাদা নাহি জানে আনে কিবা বুঝিবে অস্তরে॥ 11イン くりつ!

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৭৪৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিহারে' খ, চ, প-র-সা। ৩। 'বোলে' ক,
 চ, প-র-সা।

ইনন কলাণী।>
রাণী ভালে আনন্দ-সাগরে।
বানে বলাইরা স্থাম স্বন্ধিতে বসাইরা রাম্থ ভূত দেই মুখ-প্রধাকরে ॥ এ ॥ ক্ষীর ননী ছেনা সর আনিয়া সে থবে থর
আগে দেই রামের বদনে।
পাছে কানাইর মুখে দের রাণী মন-স্থুণে
নিরখয়ে চাঁদ-মুখ পানে।
গোপের রমণী বভ চোদিগে শত শত
মুখ ছেরি লকু লকু বোলে।
মাতা যশোমতী মেলি মলল ক্লাক্সলি
আরতি করয়ে কুতৃহলে॥
বালিয়া রতন-বাতি করে সবে আরতি
হরষিত যশোমতী মাই।
কহে বলরাম দাসে আনন্দ-সাগরে ভালে
দোই৽রপের বলিহারি বাই ১২৯১২১৪৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২১৪ সংখ্যক পদ। 'ইমনকল্যানী' স্থনে 'ইহমন কল্যানী' চ। ২। 'ক্কিনে বসাইয়া রাম' স্থলে 'ক্কিনেডে বলরাম' প-র-সা। ৩। 'মহাস্থ্যে' ক, খ। ৪। 'র্ছ' ক,'প-র-সা।

(कवल मधावां मना-त्रम यथा।

क्नावि।>

জয় জয় রাম কানাই ছই ভাই।
কলিতে হইলা দোহেঁ চৈতক্ত নিভাই ।
পঞ্চ রসে মাতাইলা অধিল ভুবন।
সে কুপা নহিলে ইহা জানিবে কোন জন।
১০০ ১১২১৫৪

ইতি তৃতীয়-শাধায়াং একবিংশতিপল্লবঃ। পাঠাবৰ

>। हेरा श-क्ष-मा श्वित १९८० मध्याक श्वा ।

অথ সখ্য-বাৎসল্য-রস প্রকারান্তর যথা।

গোঠবিহারাদি। व्याप्ति मश्र अपु । ভাটিরারি ৷১ গৌর কিশোর পুরুব-রসে গর গর मत्न (छन (गार्ठ-विशंद। माम औमाम स्वन विन जाकर नग्रस्त गलद्य कल्यात ॥ বেত্র বিষাণ বেণু লেই সাজহ যায়ব ভাণ্ডিঃ সমীপ। গৌরীদাদ সাজ করি তৈখনে গৌর নিকটে উপনীত। ভেষ্যা অভিয়াম বদন ঘন বাওই নূপুর চরণহি দেল। নিত্যানন্দ-চন্দ্র পর্ট আগুসরি थविन थविन थिन (कन ॥ নদিয়া-নগর-লোক সব ধাওত হেরইভে গৌরক রক। দাস জগন্নাথ ছান্দ দোহনি লেই যাওব সব অমুসঙ্গ ॥১॥১২১৬)

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৪৯ সংখ্যক পদ।

২। 'বিশান' খ, খ, চ; 'বিশান' ক, প-র-সা।

৩। 'সাঞ্চ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'ভাতীর'

ক, খ; 'ভাতির' চ। ৫। 'ভাই' ক, খ, চ,

প-র-সা। ৩। 'বলনে' ক। ৭। 'নুপুর' ইভ্যাদি

হলে 'চরণে ছুপুর আনি' খ। ৮। 'ধ্বনি' ক, খ,

প-র-সা।

ভবা হার ৷>

বোঠে আমি বাব মা গো গোঠে আমি বাব। জীবাৰ স্থদাম সলে বাছৰি চরাব ॥ চূড়া বান্ধিং দে গো মা মুরলী দে মোরং হাতে।

আমার লাগিয়া শ্রীদাম দাড়াইগাং রাজপথে।

পীতধড়া দে গো মা গলায় দেহং মালা।

মনে পড়ি গেল মোর কদন্থের তলা ॥

শুনিয়া গোপালের কথা মাতা যশোমতী।

সাজায় বিবিধ বেশে মনের আরতি ॥

আলে বিভূষিত কৈল রভন-ভূষণ।

কটিতে কিন্ধিণী ধটী পীতং বসন ॥

কিবা সাজাইল রূপ ত্রিভূবন জিনি।

পুষ্প গুল্পা শিশি-পুচ্ছ চূড়ার টালনি ॥

চরণে নূপুর দিলা তিলক কণালে।

চন্দনে চর্চিত অল রত্ত-হার গলে।

বলরাম দাসে কয় সাজাইয়া রাণী।

নেহারে গোপালেরং মুখ কাতর পরাণি।

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৭৫০ সংখ্যক পদ।
২। বৈষ্ণা'ৰ, চ। ৩। বেগা'থ। ৪। দাঁড়াঞা'
ক। ৫। দে পো'ইত্যাদি ছলে পেরার মা গে
গলার দার' ব; দে গো মা মোর গলার দেই'
প-র-না। ৬। নীল'প-র-না। ৭। গোগাল'
ক, চ, প-র-না।

সিমুড়া ।>

শীদান হাদান দানং শুন ওরে বলরান
মনতি করিয়ে তো সভারে।
বন কভ॰ অভি দূর নব তৃণ কুশাঙ্করণ
গোপাল লৈয়া না ঘাইহ দূরে ॥
স্থাগণ॰ আগে পাছে গোপাল করিয়া॰ মাবে
ধীরে ধীরে করিহণ গমন।
নব ভূণাঙ্কুর আগে রালা পার জানি লাগে
প্রধ্যেধ না মানে মোরণ মন ॥

নিকটে গোধন রাখ্য

মা বল্যা শিক্ষার ই ডাক্য ই ঘরে থাকি শুনি যেন রব।
বিহি কৈলে ই গোপ-জাতি, গোধন-পালন বৃত্তি তেঞি বনে পাঠাই যাদব ই ॥
বলরাম দালের ই বাণী শুন ওগো ই নন্দরাণী মনে কিছু না ভাবিছ ভয়।
চরণের বাধা লৈয়া দিব আমরা যোগাইয়া
তোমার আগে কহিল ই নিশ্চয়॥

101175771

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫১ সংথ্যক পদ।

২। 'দাস' শদ থ পুথিতে নাই। ৩। 'কতি' ए।

৪। 'কুশ ভূণাস্থ্র' ए। ৫। 'সথা সব' ए।

৬। 'নইয়া' প-র-সা। ৭। 'করিয়' থ, চ। ৮।
'মায়ের' ক, থ, চ, প-র-সা। ৯। 'য়েয়' ए;
'রাইথো' প-র-সা। ১০। 'বলে' ক; 'বৈল্যা' চ।

১১। 'শিলাভে' ক, থ, চ, প-র-সা। ১২।
'ডেকো' ক; 'ডেক' ए; 'ডাইকো' প-র-সা।

১৩। 'বৈল্যা' ক; 'বৈল্য' চ। ১৪। 'পাঠাই যাদব'

বলে 'পাঠাইরা দিব' ক। ১৫। 'বলরাম দাসের'

বলে 'এ দাস বলাইর' ए। ১৬। 'শুন' ए। ১৭।
'কহিছ্য' ক।

ধানশী ৷১

সাজল রাধালগণ নিতি নব নৃত্নং
নদের জলনে সভে বার।
কানাই কানাই বলি করে জল হেলাহেলিও
জানন্দে ললিওও গীত গার।
গোপালেরে সাজাইরা চাঁদ মুধ মোছাইরা
ভালে দিল চন্দানের বিন্দু।
দব জলবর বেন চলিয়া বাইতে হেনং
উদয় হইল যুগ ইন্দু।

ছই ভাই সাজিয়া তায় হাসিয়া হাসিয়া বাদ্ধ
করে কর করি একবন্ধ।
দেখিয়া বালক সব শুনি শিলা বেপু-রব
শুরপুরে লাগে বহু ধন্দ।
ব্রজ-নারীগণ সব যার বেই বালক
সভাকার বিয়াকুল চিত।
ঘনরাম দাস ভণে হৈয়া আনন্দিত মনেশ্
নির্থই দোহাঁকার বাত ।৪৪১২১৯।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ১৭৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'নৌতুন' ক, চ। ৩। 'কানাই' ইন্ডাদি
স্থলে 'অঙ্গ হেলাহেলি কানাই কানাই বলি' খ।
৪। 'আনন্দে ললিড' স্থলে 'রাধাল আনন্দে'
প-র-সা। ৫। 'বাইডে হেন' স্থলে 'বাইছে হেন'
ক, প-র-সা; 'বাইছেন' খ, চ। ৬। 'সাজি'
ক, খ, প-র-সা। १। 'ক্রি' ক, প-র-সা।
৮। 'হৈরা আনন্দিত মনে' স্থলে 'আনন্দ হইরা
মনেশ খ। ১। 'ছহাকার' ক, চ।

अधिवावि ।>

সকালে আসিহং গোপাল ধেমুগণ লৈয়া।
আভাগিনী বৈল ভোষারণ চাঁদ-মুখ চাইয়া।
খাকিহ শ্রীদানের সজে চরাইহ বাছুরী।
জোরে শিক্ষা রব দিহ পরাণে না মরি।
এ খীর নবনী এইং খাইবারেণ দিলুঁ।
ভূমি যাবে দুর বনে আমি ভাবি মপুঁ।
॥৫॥১২২০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫০ সংখ্যক পথ। ২। 'আনিহ' প-র-সা। ৩। 'ডোর' খ। ৪। 'চাঞা' ক; 'চাহিলা' খ। ৫। 'রে' প-র-সা। ৬। 'থাইডে ডোরে' ক, চ। ভণা সাগ ৷>

নন্দরাণি বাহ গো ভবনেং।
তোমার গোপাল আনি দিব বেলি অবসানে।
লৈরা বাছি তোমার গোপাল রাখিব বসাইয়া ।
আমরা ফিরাব ধেনু চাঁল-মুখ চাইয়া ।
লৈরা যাইতে তোমার গোপাল পাই বড় হুখ।
বেণুতে ফিরার ধেনু এ বড় কোতুক।
বে দিন বেবা মনে করি কানাই ভাষা জানে।
খুখা লাগিলে অন্ন কোথা তিহতে আনে।
এক দিন দাবানলে মরিভাম পুড়িয়া।
ভাষাতে রাখিল গোপাল ? কেমন করিয়া।
নন্দরাণি ভেঞি ভোমার গোপাল লৈয়া যাই।
সল্ভেডে সালিল পাছে এ দাস বলাই॥

পাঠান্তর

16175571

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫৪ সংখ্যক পদ।
- ২। 'নক্ষাণি' ইত্যাদি হলে 'জাই পো তবনে
রাণি জাই গো তবনে।' খ। ৩। 'বাইছি' প-র-সা।
হ। 'বসাঞাে' ক। ২। 'চাঞাে' ক। ৬।
'গাই বড়' হলে 'বড় পাই' ক, চ। ৭। 'বেণ্রবে' খ। ৮। 'বে' খ। ৯। 'হইলে' প-র-সা।
১০। 'জানি কোঝা' প-র-সা। ১১। 'কোনাই' খ।

ভূপানী।১

আজু গোঠেরেই সাজল দোন ভাই।

রাম কানাইই গোঠে সাজে

বোড়ই শিলা বেপু বাজে

বরজে পড়িল ধাওয়া ধাই এএই ॥

টোরিকে অল-বধ্ সঙ্গল গারভ

মুরহিত কতহঁ নরান।

আগে লাখে গাখেই বেলু গান ॥

মুরহর হলধর ধরাধরি করে কর
লীলায় দোলায় দিল অঙ্গ।

ঘনায়া ঘনায়া কাছে মউরা মউরী শলাচ

চান্দে মেঘে দেখি এক সঞ্গ।

হবল তুলিল বানা ঘেখানে বলাইর থানা

রাখালের কান্ধে ভাল সাজে।

রাম কানাই কুতুহলে সাজিলা যে আগুনলে

বলাইর যুগল শিলা বাজে। ৭।১২২২।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৫ সংখ্যক পদ।
২। 'গোঠে' খ, ঘ। ৩। 'কাফু' খ। ৪।
'কোরে' ক, খ, ঘ, চ। ৫। কেবল প-র-সা
পুৰিতে 'ক্র' আছে। ৬। 'আগে লাবে লাবে'
হলে 'লাবে লাবে বার' প-র-সা। ৭। 'উড়িছে'
প-র-সা। ৮। 'লিলারা দোলারা' প-র-সা। ৯।
'ঘনাঞা ঘনাঞা' ক, 'ঘনারা ঘনারা' ঘ। ১০।
'মউরা মউরা' হলে 'আনন্দে ময়্র' ক, খ, 'নান্দে
মউরি' ঘ, চ।

তথা রাপ ৷১

কানাই বলাই চলে দোন ভাই বিদায় হইয়া মায়। নন্দ বদোমতী স্লেহাধিক অতি সজে সজে চলি योग्र । কড যে যতনে পিভা মাভাগণে নিজ গুৰে পাঠাইয়া। মত বলরাম ব্দভিশন্ন প্রেম বিচিত্ৰ ভৈগেল হিয়া 🛭 (वद्रांकून-मर्नः সহিত সগণে^{*} অজ-রাজ গেলা ঘর। ভাহার পিরিভে **অগ্নেয়ান**°-চিডে कित्रि চলে रलयत् ॥

ভূলিয়া সধারণ প্রেমের আবেশে কানাই চলিলা বনে। বলাই ফিরিল কিছু না জানল এ দাস উদ্ধবে ভণে ॥৮॥১২২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫৬ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ব্যাকুল নয়বে' ক; 'বেরাকুল মন' প-র-সা।
 ৩। 'সগণ' প-র-সা।
 ৪। 'আগে আন' ঘ।
 ৫। 'স্থার' প-র-সা।

ভাটিরারি ৷১

শিক্ষা বেপু বেত্র বাধা কটিতে জাঁটিয়া।
সাজল রাধালরাজ সজে শিশু লৈয়া।
শ্রীদাম ডাকিয়া বলে ভাইরে কানাই।
এ সব রাখাল মাঝে বলাই দাদা নাই॥
ভূমি যদি বেণু পুরি ডাক এক বার।
বড় মনে সাধ আছে ভালি খাব তাল॥
শ্রীদামের কথা শুনি হর্ষিত হৈয়া।
হাসি পুরে বেণু দাদা বলাই বলিয়া॥
হনরাম গালের মন করে উচাটন।
দাদা রে বলাই বলি ডাকে ঘনে ঘন ॥
॥৯॥১২২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫৭ সংখ্যক পর। 'ভাটিরারি' হলে 'ভথা রাগ' ক। ২। 'বলরান' প-র-সা। ৩। 'বলে খন' হলে 'নিভগণ' ক, খ, চ।

मात्रम ।>

বট ভাণ্ডিরে খাবি শলাই আর রে মার। ররজ-বালক সব ভোর মুখ চার। ধেনু তৃণ নাহি খায় তোহারি ধেয়ানে।
উচ্চ-পুচ্ছে ধায় সব ব্রজ-পুর পানে।
যনুনার ভারে যত রাখালের মেলা।
নাহিক নটন গীত নাহি কারু খেলা।
তো বিমু নাহিক সুখ গহন কাননে।
যাদবেক্র ডাকে ঝাটি দেও দুরশনে।

1175561061

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উচ্চ পুছহ' ক, প-র-সা। ৩। 'ঝাটি' প-র-সা।

ভথা রাগ ৷১

ধাইয়াই আইল নন্দরাণী কেশ নাহি চাকে।
বাছার মুখের বেণু তোরে কেনু ডাকে ॥
কানাইর মুখের বেণু শুনিয়া বলাই।
মাতল রোহিণী-মুভ ডাকে ভাই ভাই ॥
শিক্ষা-রবে বোলে কেনেই ডাক রে কানাই।
নিকটে বাইছি আমি আর ভয় নাই॥
ঘনরামই দাস বোলে শুন যশোমতি।
জান না এমতি হয় রাধালের পিরিতি ॥
॥১১॥১২২৬॥

পঠিস্বর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৯ সংখ্যক প্র।
'ভধা রাগ' হলে 'ছুড়ী' য; 'মঙ্গণ' প-র-সা। ২।
'ধাই' ধ, প-র-সা। ৩। 'বোলে কেনে' হলে
'ক্ছে কেন' ক, চ; 'কেন কেন' য। 'আসিছি'
ক, চ; 'আসেছি' প-র-সা। ৫। 'বলরাম' প-র-সা।
৭। 'ম্ভি' ক, চ; 'রিভি' প-র-সা।

직무이 IS

বাঁকুয়াং পাঁচনী হাতে রক্ষিয়া রাখাল সাথে वाहित देहलां दर्शहिगी-नम्हन। শিকা দিয়া চাঁদ-মুখে উভ করি দিলা ফুকে শিক্ষা-রবে ভেদিল গগন ॥ পরিধান নীল ধটী গলে শেভে হেম কাঁঠি কোটি চক্ৰ জিনিয়া বদন। আৰুৰ্ণ শোভিভ ঠান আঁথিয়ুগ খুৰ্মান শোভে কত রতন-ভূষণ 🛭 দেখিতে লাগয়ে সাধ এক কাণে কোকনদ আর কাণে মকর-কুগুল। জিনি ময়-মন্ত হাতী গমন মন্থর-গভি थत्री कत्रद्य देलमल u বাহির হৈলা বলরাম না দেখিয়া ঘন-শ্যাম প্রেমে ছলছল তুনয়ন। क्कांनमारमण्ड क्य মিলিলা° রাখালময় मार्ट्य कति नरम्पत नम्पन ॥১२॥১२२१॥ পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৬১ সংব্যক পদ। প-র-সা পুৰিতে নির্লিধিত পরার দারা পদটি আরম্ভ করা হইবাছে, বধা—

বাম কক্ষে শিলা বলাইর কাপে রালা ফুল।
বিহানা বাস্থা পানে ছই ঞাখি রাতৃল ॥'
২। বাখুরা প-র-সা। ৩। বাহির হৈলা ছলে
বেইরাইল রে' প-র-সা। ৪। কোনচক্র লাস'
প-র-সা। মিলিরা ক, খ।

দেশবয়াডী।>

কত কোটি চন্দ্ৰ জিনি উজোৱ বাংন থানি

মল-ছাঁবে পরে নীল ধটা।

কর পার্ট হ্বরাজুল জিনি কোক্ষম ফুল

বিনোর-ক্ষপের পরিপাটা ঃ

वनाहे भद्रात्राभ काहेना कानत्व। শ্ৰীকরে চম্পক বেড়া চাঁচর চিকুরে চড়া শিখি-পুচ্ছ উড়িছে প্ৰনে ধ্ৰু भटन देवजग्रसी माना কনক অঙ্গদ বালা मकत्र-कृधन এक कारन। কান্ধে শোভে শিক্ষা বেত্র ঘুর্ণিভ র্রাভুল নেত্র রাতা উত্তপল আর কাণে॥ বাধানে আসিয়া হুখে मिना पिन ठाँप-मूर्य ডাকে শিক্ষা ধাও ধাও বলি। শুনিয়া শিক্ষার রব थारेन थवनी जव মেल राम द्रांथाल-मखनी॥ হাঁকি নিজ নিজ পাল সব করি সমিশাল সভে মেলি করি এক ছাঁদে। বলাই র**জিয়া** বড়ি হাতে নিল ছান্দন-ডুরি চলিলা যেমন সোণার চাঁদে ! সকল রাখাল সজে পরম কোতৃক রঙ্গে তাল-বন পানে ঘন চায়। জুড়ায় ভাপিত আঁখি রূপ গুণ বেশ দেখি প্রেমদাস কি বলিবে ভার ॥১৩॥১২২৮॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৬২ সংখ্যক পদ।
'দেশ বরাড়ী' ছলে 'বরাড়ী' ছ। ২। 'বলাই' "
শব্দ ঘ পুথিতে নাই। ৩। 'বাথানে' ক, ধ, চ,
প-র-সা। ৪। 'হুমিশাল' চ। ৫। 'ছান্দে'
প-র-সা। ৬। 'ছিল' ক, ধ, প-র-সা। १।
'বেন' ছ। ৮। 'চান্দে' প-র-সা।

नेवान ।

আসিয়া বলাই বলে কানাই ওরে তাইয়া।
আমারে ডাকিয়া ছিলা কিসের লাগিয়া।
হাসিয়া কানাইং বলে বলাইণ ওরে তাই।
বেমুক নারিয়া সভৈ তাল কল বাই ।

শুনিরা বলাই॰ মনে হর্ষিত হৈয়া।
সামাইলা॰ তাল-বনে কৌতুক লাগিয়া॰ ॥
কৃষিয়া আইল ধেনুক বলাই দেখিয়া।
লীলার মারিল ভারণ পুচ্ছ ঘুরাইয়া॥
ভাল ফল লৈয়া সভে করিলা ভোজন।
ঘনরাম দাস হেরি আনন্দিত মন॥

12812551

পাঠান্তর

১। ইহা প-র সা প্থির ১৭৬৩ সংখ্যক পদ।
২। বিলাই' ক। ৩। কোনাই' ক। ৪।
বিলাই মনে'হলে বিলাইর কথা'ক। ৫। প্রেবেশিলা' প-র-সা। ৬। কেরিয়া' ক, থ, চ,
প-র-সা। ৭। তারে প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

চলিলা রাখালগণ যথা গিরি গোবর্জন

ধেমুগণ ধায় আগে আগে ।

ঘন বায় শিলা বেণু গগনে গো-ফুর-রেণু
চরণে শরণ মহী মাগে॥

বমুনার তীরে তীরে গোগণ আনন্দ চরে
পাছে পাছে ধার রামকামু।

শ্রীদাম হুদাম দাম ধাইছে ডাহিন বাম
উভ করি মুখে দিয়া বেণু॥ ১৫॥১২৩০॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৬৪ সংখ্যক পদ। 'ভাটিরারি' হুর্লে 'বরাড়ী' প-র-দা।

वानचे ।>

নানা খেল্পা খেল্যা শ্রমমূত হৈয়া বসিলা ভরুত্ব মূলে। মলত্র-পবন বহুত্বে স্থন শ্রীভূল ব্যুনা-কূলে।

ए३८म घत्राम আলসে বলাই শুইলা স্বল-কোরে। কানাই দেখিয়া আকুল হইয়া পাদ সম্বাহন করে। নবীন পল্লব लहेया जीमाम ं मघटन कब्रट्य वीग्र। বসন ভিঙ্গাঞাং যতনে খানিয়া মোছায়ত বলাইর, গায় ॥ শ্রম দূরে গেল শীতল হইল বলরামের ঐী-অঙ্গ। সব স্থাগণ হরসিত মন শিवाই (म**খर्य तक ॥**) ७॥) २७) ॥

পঠিন্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভিপায়া'প-র-সা। ১। 'মোছয়ে' প-র-সা। ৪। 'বলাই'ক, চ।

> অথ যজ্ঞপত্নী-অন্ন-ভোজন ভাটিৰানী।>

শ্রীনন্দ -নন্দন করি গোচারণ
মলিন ও মুখ-শশী।
সঙ্গে হলধর সব সহচর
বংশীবট -তলে বসি॰ ॥
সকল রাখাল খুধার আকুলং
কহয়ে তেজিয়া লাজ।
হুদর বুঝিয়া কি খাবে বলিয়া
পুছয়ে রাখালরাজ ॥
বটু কহে ভাই অন্ন খাইতে চাই
বিদ্ খাওয়াইতে পারণ।
ক্রের অধ পাই গোধন চনাই

তবে সুধ পাই গোধন চরাই কিছু না চাহিয়ে আরণ ॥ ৰটুর বচন শুনিয়া তখন হাসি নবঘন-শুাম। এ উদ্ধবদাস চির দিন আশ পূরাহণ মনের কাম ॥১৭॥১২৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৬৪ সংখ্যক পদ।

২। 'নক্ষের' প-র-সা। ৩। 'মিলি তক্ষ' ঘ।

৪। 'আসি' প-র-সা। ৫। 'ব্যাকুল' ক। ৬।
'হাদর বুরিরা' ছলে 'হাদরে ঝুরিরা' প-র-সা। ৭।
'পারো' প-র সা। ৮। 'আরো' প-র-সা। ৯।
'পুরাও' ক, চ, প-র-সা।

এীরাপ—একভালী ভাল ।১

শ্ৰীদাম স্থদামে ডাকি কহয়ে কানাই। যাজ্ঞিক নিকটে চাহি অন্ন আন যাই । কহ গিয়া যাজ্ঞিক ব্ৰাহ্মণগণ আগে। রামকৃষ্ণ থুধায় ভোমারে অল মাগে ॥ শুনিয়া শ্রীদাম গিয়া মুনিং বরাবর। রামকুষ্ণ **অন** চাহে° কি কহ উত্তর ॥ মুনি কৰে কোন রামকৃষ্ণ কহ শুনি। বলে ত্রজরাজ-স্থৃত পরিচয় জানি॥ व्यक्रग-नग्रत्न युनि मर्त्काथ-वहन। বজ্ঞ-অগ্রভাগ চাহে গোপের নন্দন ! দেবভারে অন্ন নাছি করি সমর্পণে। গোপ কাভি আপে মাগে ভয় নাহি মনে ॥ निन्मा छनि श्रीमामापि कित्रिया चारेना । মুনির ভৎ সনা রামকুফেরে কহিলা ॥ অন্ন নাহি দেয় আর কহে কটুবাণী। শুনিয়া উদ্ধবদাসের কাতরণ পরাণি 🛊

174175001

পাঠান্তর ১ । ইহা গ-র-না শ্রমির ১৭৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'র্নির' প-র-সা। ৩। 'বাগে' প-র-সা। ৪। 'পোরাল' প-র-সা। ৫। 'আরকুল' প-র-সা।

তথা রাগ ৷১

শুনিয়া শ্রীদামের কথা অন্তরে পাইয়া বেখা কহে ভূমি যাহ পুনর্বার। যাহাঁ যজ্ঞপত্নী রহে কহ কৃষ্ণ অন্ন চাহে श्वित्व देनद्राभ नटर कात्र॥ শুনি আর বার ধাইং যজ্ঞপত্নী-শ্বানে যাই৽ কৃষ্ণ-আজ্ঞা কহিলা সম্বর। কহি তোমাদের আগে রামকুষ্ণ অন মাগে ইথে মোরে কি কহ উত্তর ॥ প্রেমে পরিপূর্ণ অঙ্গ শুনি কৃষ্ণ-পরসঙ্গ পরে পরে থালী সাজাইয়া। দিব্য অন্ন ভরি ভরি চলিলা যে সারি সারি কুল-ভন্ন লঙ্কা তেয়াগিয়া॥ আর এক মুনির নারী তার পতি করে ধরি वाधिना निर्द्धन-गृट्ट जादा। নিব্দ তমু তেয়াগিয়া যাইবারে না পাইয়া শ্রীকৃষ্ণ ভেটিল দেহান্তরে॥ লৈয়া মুনি-পত্নীগণ নানা অল ব্যঞ্জন বেখানে বসিয়া রাম্কামু। নবখন-শ্যাম দেখি প্রেমে ছল ছল আঁথি সমর্পিল অন্ন সহ• তমু ॥ নিরখিয়া খ্যাম-রূপ কি কোটি কন্দর্প-ভূপ **পদ-তলে করয়ে নিছনি।** এ উদ্ধবদাস কয় লখিলে লখিলা নয় व्यथित व्यभिया-त्रम-थनिष् ॥১৯॥১२७॥॥ পাঠান্তর

) । देहां भ-त्र-मा शूबित ১१६৮ मरबाक भए।

२। 'बाहेबा' भ-ब-मा। ७। 'बाहेबा' भ-ब-मा।

श 'बारक' च। ६। 'शूर्च , देहक' न-ब-गां

৬। 'সহে' ক, খ, চ, প-র-সা। १। 'লখিলে লখিল' হলে 'নিখিলে নিখিল' ছ; 'লিখিলে লিখন' প-র-সা। ৮। 'খানি' প-র-সা।

यक्त ()

নবখন জিনি ভসু मिथेन करत्राज (वन् স্বলের কান্ধে বাদ-ভুজ। চ্ড়া বান্ধাং শিখি-পুচছ বরিহা মালতী-গুচছ ভাত ভূক নয়ান অসুজ॥ অলকা ভিলক ভালে কাণে মৰুর-কুণ্ডলে পাকা বিশ্ব জিনিয়া অধর⁸। দশন মুকুভা-পাঁভি কল্বু-কঠি শোভে অভি মণি-রাজ হিয়া পরিসর ॥ বনমালা ভহিঁলন্বে সারি সারি অলি চুয়ে ক্ষীণ কটি স্থপীত বসন। নাজি-সরোবর পাশে ত্রিবলী-লভিকা ভাসে मगन व्रमी-मीन-मन ॥ রামরস্তা উরু-ছাম্দে কভ বিধু নখ-চান্দে व्यक्रग-कमन भए-उटन। দাড়াঞা কদম্ব-তলে বঙ্কিম লগুড় হেলে রঙ্গ-ভঙ্গী নয়ান-অঞ্জে 🛚 ত্রিভন্ত-ভল্লিম রলে বেশ নটবর-অস্থে হাসিয়া মধুর মৃত্ বোলে। এ দাস উদ্ধৰ ভণে ভুলিল রমণীগণে क्रिश दिश्य निमिष ना हत्य ॥२०॥>२७८॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বাদ্ধা' দক্ষ ক পৃথিতে নাই। ৩। 'ভদী'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'লধরে' ঘ, চ। ৫। 'কঠে' ঘ। ৬। 'শোভা' ক, চ, প-র-সা। ৭। 'হিবা পরিসর' হলে 'হিবার ইপরে' ঘ; 'হিবা পরিসরে' চ। ৮। 'মগন' ইত্যাদি স্থলে 'নিষগন রমণীর মন' ক, খ; 'নিমগন রমণি-মিন-মন' ছ।

अधिक्ति।ऽ

যজ্ঞ-পত্নী অল দিয়া নয়ান-ইচ্চিত পায়্যা নিজ গুহে করিলা গমনে। অন পাইং বন মাঝে আনক্ষেণ রাধালরাজে সখা সহ বসিলা ভোজনে॥ অথক শ্রীবলরাম কৃষ্ণ করি নিজ বাম চৌদিগে বেড়িয়া সব সখা। আনিয়া পলাশ পাভ বাঢ়িলা ব্যঞ্জন জাত কি আনন্দ নাহি তারঃ লেখা। খাইতে খাইতে হুখে কেহণ দেই কারু মুখে বহা ভোজন রস-কেলি। খাইতে খাইতে আগে• ব্যঞ্জন যে ভাল লাগে প্রশংসি প্রশংসি ভাল বলি 🛭 কক্ষতালি দিয়া দিয়া ভুগ্লায়ে আনন্দ হিরা হুখের সাগর মাঝে ভাসে। ভোজন হইল সায় আচমন কৈলা ভাষ গুণ গায় এ উদ্ধব দাসে ॥২১॥১২৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'পাঞা' ক; 'পাইরা' চ। ৩। 'আনক্ষ' থ, খ। ৪। 'আর' থ। ৫। 'কেছ' থ। ৬। 'ক্থে' প-র-সা। ৭। 'ক্রি' প-র-সা।

অথ বন-বিহার যথা।

ছটা।
রাখালে রাখালে মেলা খেলিতে বিনোদ খেলা
অভিশন্ন শ্রম সভাকার।
ননীর পুত্নী শ্রাম রবির কিরণে বাম
অবে ধেন মুকুজার হার।

ীদাম আসিয়া বোলে বৈসহ জরুর জলে কানাই ছইবে মাঠে রাজা। ষম্না-পুলিনে ভাই কংসের দোহাই নাই কেছ পাত্র মিত্র কেছ প্রকা। ৰনফুল আন যভ সপত্ৰ কদৰ শভ অশোক-পল্লব জাত্র-দাখা। শুনি শ্রীদামের কথা সকল আনিল তথা নবগুঞ্চা-গুচ্ছ শিখী-পাধাৰ ॥ গাঁথিয়া ফুলের মালে কদম্ব-ভক্তর তলে রাজপাট করি নিরমাণ্ড। कक्कडालि घटन घटन এ উদ্ধৰ দাসে ভণে व्यांवा व्यांवा वाकाग्र वशान ।२२।১२०१॥

পাঠান্তৰ

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৭১ সংখ্যক পদ। ২। 'নব' ইত্যাদি হলে 'নবঙ্গ শিৰিপুক্ত পাধা' য। ৩। 'করি নিরমাণ' হলে 'করিল নির্বাণ' প-র-সা।

वाननी ।>

বিবিধ কুষ্ম দিয়া সিংহাসন নিরমিয়া
কানাই বসিলা রাজাসনে।
রচিয়া ফুলের দাস ছত্ত ধরে বলরাম
গদগদ নেহারে বদমে।
আশোক-পল্লব করে স্থবল চামর করে
স্থানের করে শিধি-পুচছ।
ভারসেন গাঁপি মালে পরার কানাইর গলে
শিরে দের গুঞ্জাকল-গুচছ।
ভারস্কিং পুতি বানা ঠাঞি ঠাঞি বসাইলা পানা
আজা বিনে আসিতে না পার।
জীলামাদি দুত হৈরা কানাইর দোহাই বিরা
চারি পালে সুবিরা বেড়ারঃ।

করবুগ বৃড়ি ভবি অংশুমান করে স্তৃতি

 রাজ-আপ্তা বচন চালার।
বটু করে বেদ-ধ্বনি পড়ে আশীর্বাদ-বাঁশী
দাম বস্থদান নাচে গায়।
ভাতি মনোহর ঠাট নিরমিরা রাজপাট
কতেক হইল রস-কেলি।
এ উদ্ধবদাস কয় স্থ্য-দাস্ত-রসময়
সেবয়ে সকল স্থা মেলি ॥২৩॥১২৩৮॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুশির ১৭৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'ডোককুফ' ৭,চ।

मात्रक ।>

মোহন যমুনা-মাঠে অশোকের বন।
নবীন পল্লব সব অভি স্থানাতন ॥
তার মধ্যে তুই ভাই কৃষ্ণ বলরাম।
সথা সচ্ছে বিহরয়ে অভি অমুপাম ॥
নবীন-জলদ-খ্যাম-তমু মনোহর।
থাজু-রাগ-নবং-গুঞা-শৃক্ষ-বেপুধর* ॥
কদম্ব-মঞ্চরী কাণে শিধি-চক্র চুড়ে।
পীতবাস পরিধান বনমালা উরে ॥
শীদামের অংসেং বামং হস্ত-পল্লং দিয়া।
দক্ষিণ হস্তেভ এক পল্ল খুরাইয়া ॥
দাঁড়াইয়া ভক্র-তলে সচ্ছে বলরাম।
নব মেখে চাক্ষেণ কিয়ে জেল এক ঠাম।
আহীর-বাশক সব বেড়ি চারি পাশ।
মনের ছরিবে দেখে নবচক্র দাস॥

পাঠান্তর

. 148174031

>। देश न-ब-मा श्रवित्र ১१४० मरनाक नव। २। विभिन्नवीयुरम् विभवन्य नुसुन्ता। १० (दक्ष ধর'ক। ৪। 'অংক' ব, পার-সা। ৫। 'রাম' ক, চ; 'ডেহ' পার-সা। ৬। 'বাম হক্ত' পার-সা। ৭। 'মেম চাক্ষ' পার-সা।

বীয়াগ।১

পীত-ধটা হেম-কাঁঠি ছান্দন ভূরি মাথে।
গাবী-দোহনং-ভাগু শোভে বাম হাতে॥
শিলা বেণু মুরলী দক্ষিণ কক্ষ-মূলে।
ধবলি বলিয়া ধায় কালিন্দীর কুলে॥
লম্বিত শুঞ্জার মালা গোরোচনা ভালে।
গোধূলি-ধূসর অক্ষ কাণে ফুল-ভালে॥
ছান্দনের ভূরি জার রালা লড়ি হাতেও।
নবচন্দ্র দাস রহে চাহি এক ভিতে॥
॥২৫৪১২৪০॥

পাঠাস্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৪ সংখ্যক পদ। ২। 'লোহনের' প-র-সা। ৩। 'হান্দনের' ইত্যাদি ভণিভার কলি কেবল প-র-সা পুথিতে দৃষ্ট হয়।

শীপান্ধার ।১

শিশুগণ মেলি পাণ জড় করি নামাইল বমুনার জলে। করে জলপানে चानटम रगागरन পিও পিও সভেং বোলে॥ জলে পেট ভরি উচ্চ পুছে করি উপৰে উঠিল ধেমু। হেলিয়া হেলিয়া য়াখাল মেলিয়া चन बान्न भिन्ना त्वपू । ধেসু খাইয়া খাইয়া° দৰ ভূণ পাইয়া समरत्र यमूना-कीरत् । ক্রি গোচারণ ्यानान गर्म क्रिन

বেলি অবসান দেখি বলরাম

ধেমুগণ লৈয়া ফ্থে।

কৃষ্ণ মাঝে করি স্থাগণ যেরি

চলিলা গোকুল মূখে॥

গোঠে প্রবেশিয়া গোগণং রাখিয়া

পান্তে মিলিলা মায়।

পুত্র কোলে নিলা পরাণ পাইলা

দাস গোবর্জন গায়॥২৬॥১২৪১॥

ইতি তৃতীয়-শাধায়াং ঘাবিংশতিপল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৭৫ সংখ্যক প্র।
২। 'স্বা'প-র-সা। ৩। 'ছবিরা ছবিরা' ক, থ,
চ; 'ভূবিরা ভূবিরা' প-র-সা। ৪। 'থাইরা
থাইরা' হলে 'থাওরাইরা' প-র-সা। ৫। 'গোপাল'
প-র-সা।

অথ গোবৰ্দ্ধন-যাত্ৰা। তন্তুচিত-শ্ৰীগোরচন্দ্ৰঃ।

শীপাদার ৷>

দেখ দেখ অপরূপ গৌরাজ-বিলাস।
পুন গিরি-ধারণ পুরব লীলা-জ্ঞেম
নববীপে করিলা প্রকাশ । গ্রন্থ ভিন্তি গোবর্জন পূজা কর জগ-জন
এই বিধি দিলা কলি মাঝে।
শ্রাবণাদি নব অল করাভরুমর শৃক্তং
প্রকান্তর লোভা অশ্রুম-জল মনোলোভা
মন্দ্র বায়ু বেপপু স্থুম্মর।
নিজেক্রির-উপচারে সেব সেই গিরিবরে
ধ্রোম-মণি পাবে ইন্ট-বর ॥

দেখিয়া লোকের গতি কলিযুগ-স্থুরপডি কোপে তমু কম্পিত হইল। কুমতি-ইন্দ্রাণী সাথে **অধরম-ঐ**রাবতে সসৈয়েতে সাজিয়া আইল ॥ কাম-মেঘ বরিষণে কোধ-বন্ধ নিক্ষেপণে লোকের হইল বড়ু ওর। লোভ-মোহ-শিলাঘাতে মাৎসর্যাদি-খর-বাতে रिश्वा धर्म छए नित्रस्त ॥ শ্রীগোরাক দয়ানয় জানিয়া জীবের ভয় উপায় চিন্তিলা মনে মনে। ভক্ত-ভাব-সারোদ্ধার নিজে করি অপ্রকার ভক্তি-গিরি করিলা ধারণে॥ ভাহার আশ্রয়ে লোক পাসরিল তঃখ শোক कलि-छग्न थशिल जकला। ভবে কলি-দেবরাজ পাঞা পরাভব-লাজ স্তুতি করে চরণ-কমলে ॥ অপরাধ ক্ষমাইয়া[ঃ] কৰে কিছু দীন হৈয়া যভ জীব প্রভুর আশ্রয়। বেবা তব গুণ গায় ভাতে মোর নাহি দায় এই সভা করিল নিশ্চয়। প্রভু তারে দয়া কৈল ধতা কলি নাম থুইল অভাপিই ঘোষয়ে সংসার। চৈভশ্বদাসেভে বলে গোৰ্ব্ধন-লীলা-ছলে यूर्ण यूर्ण कीरवत উद्यात ॥>॥>२8२॥

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৭৭৬ সংখ্যক পদ। 'শ্রীগান্ধার' হুলে 'ধানশী' গ-র-সা। ২। 'অল' ক, ব, চ, প-র-সা। ৩। 'বহা' ব, প-র-সা। ৪। 'ক্লেমাইরা' ক, ব, চ।

ভথা রাপ ৷১

গাও রে গাও রে হুখে কুফের চরিত। গিরি গোবর্জন-যাত্রা মনোরম শ্রবণ-মঙ্গল গীত। প্রণ। এক দিন ত্রজে ্ইন্দ্ৰ-পূজা কাজে সাজে গোপ গোপী যত। জানিয়া কারণ नटमन्न नम्मन ক্ৰেন আপন মত। শুন ব্রজ-রাজ গোপের সমাক ना शृक प्राप्तत ताका। মোর লয় মনে গিরি গোবর্দ্ধনে সাবধানে কর পূজা 1 এহি দে উচিত মোর অভিমত পাইবে বাঞ্ছিত ফল। নানা উপহারে বন্ত্ৰ অলঙ্কারে **अक्टब मिक्सि हल ॥** বিপ্ৰে দেহ দান হইবে কল্যাণ মা ভাবিহ আন চীতে । কহে কুঞ্চদাস সভার উল্লাস শ্রীবাস-বচন-রীতে ॥২॥১২৪৩॥ পাঠান্তর

তথা রাখ ৷১

३। हेर्डा श-त्र-मा श्रुचित्र ১१११ मश्चाम श्रान् ।

२। 'हिट्छ' क, च, श-ब्र-मा।

কি আনন্দ আজু বৃন্দাবনে।
গিরি-গোবর্জন-পূজা না বার কহনে । এ।
দল আদি গোপ গোপী একত্র হইরা।
গিরি-গোবর্জন পূজে নিকটে বাইরা।
দিকীর পকার আনি ধরিলা সকলে।
ক্ষ-ত্ব পার নানা বাত কোলাবলে।

হেনই সমরে কৃষ্ণ দেব-মারা মতে।
আরোহণ একরপে করিলা পর্বতে।
বেখি গোপ গোপীগণে প্রণাম করিলা।
সভে কহে গোবর্জন মূর্ত্তিমন্ত হৈলা।
প্রণাম করিয়া কহে নন্দের নন্দন।
দেখ দেখ কি ভাগ্য বভেক গোপগণ।
যত ব্রজ্ঞ-বাগী সভে পাইয়া আহলাদ।
পর্বতের স্থানে মাগি নিল আশীর্বাদ।
নানা দ্রেয় অলঙ্কারে সাজায়া গোধনে।
বেদের বিহিত দান দিলেন ব্রাক্ষণে।
কৃষ্ণের সহিত তবে গেলা গোবর্জনে।
ইন্দ্রে-মথ-ভক্ত-কথা কৃষ্ণদাস ভণে।

11885611011

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৮ সংথ্যক পদ। ২। 'গিরি-গোবর্জন' ইত্যাদি পংক্তিটি কেবল প-র-সা পুথিতেই দৃষ্ট হর। অস্তান্ত পুথিতে 'কি জানন্দ' ইত্যাদি পংক্তির পরেই 'ঞ'।চহু আছে।

তথা রাগ।১

পুজে গোবৰ্দ্ধন যত গোপগণ ना देकल हैटन्द्रत श्रृजा। পাই **অপ**মান কোপে কম্পমানং সাজিলা দেবের রাজা। মহা অহম্বারে कुष्छ-निम्मा करत **অজ্ঞানে মোহিত হৈ**য়া। ক্ৰে গোপ-পুরী মহাবৃষ্টি করি লাজি ডুবাইব বাঞা॥ ডাকি মেঘগণে যভেক প্ৰনে আজা দিলা হয়-পতি। শিলা-বৃত্তি ক্রি ভাল এল-পুরী বাহ খাই শীত্র-গভি ।

আপনে তখনে চড়িয়া বারণে विकु रुख (मर्वश्रीक। সঙ্গে সেনাগণ ছাইয়া গগন আইল গোকুল মাঝ॥ **ठञ्जर्षिश भार्य** ধার বায়ু - বেগে पित्न देश्न अक्षकात । খর বরিষণে বজের কেপণে ভালিল ঘর ছ্য়ার 🛭 প্রলয়ের হেন বৃষ্টি-ধারা ঘন বঞ্জনা চিকুর পড়ে। হাহাকার করি পথাপথ ছাড়ি खनवांनो नव नर**्**ष পড়িয়া সঙ্কটে কৃষ্ণের নিষ্টে আইলা গোকুল-বাসী। মূথে মূথে কভ ধেমুগণ যত দাঁড়াইল নিকটে আসি 🛦 কুক্ত মহামতি গোকুলের পভি কর পরিত্রাণ বোলে। চৈতভোর দাস করি এই আশ এবার রাখ গোকুলে 1817২৪৫1

পাঠাতর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭৯ সংখ্যক পদ।
২। 'কম্পবান' প-র-সা। ৩। 'বাহনে' ক, ৰ,
'বিমানে' প-র-সা। ৪। 'বাউ' ব, 'বহ' প-র-সা।
৫। 'বেপনে' ব। ৩। 'চিক্র' প-র-সা। ৭।
'লড়ে' প-র-সা। ৮। 'বুথে বুথে কড' বলে 'বুথ
বুথ কৃত' প-র-সা। ৯। 'টেডভ্রনাস' ক।

७वा नाव ।>

নন্দ আদি গোপ গোপী বইলা বিকল। দেখিয়া আনিলা কৃষ্ণ ইস্লেণ করে বল ॥

এতেক ভাবিরা কৃষ্ণ নন্দের নন্দন। **এक रुख जुनिया धतिना (भावर्षन ।** कम्मुटकत थात्र शिति धतित्रा टकोकूटक । সভারে ডাকেন আর জননী জনকে। আইস আইস সভে শিশু বৎসগণ লৈয়া। এই গৰ্তে থাক আসি নিৰ্ভয় **হ**ইয়া^৩ ॥ গোপগণ বলে কুঞ শুন হে বচন। হাত হৈতে তোমার° যদি পড়ে গোবর্দ্ধন ॥ সকল গোকুল-পুরী বাবে রসাভলে। কিসে হৈতে^৫ রক্ষা তায়^৩ পাইব^৭ সকলে ॥ কান্দিয়া যশোদা দেবী কহে গোপগৰে। একাকী পর্বেড কুফ ধরিব । কেমনে ॥ কোৰা রেণ্ড কৃষ্ণের প্রিয় শ্রীদান স্থদান। সভে মেলি গোবর্জন ধর বলরাম ॥ চৈতগ্ৰদাসেতে কছে শুন যশোমতি। গোকুল রাখিতে ভুয়া সহায় ঐপতি।

16175891

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৮০ সংখ্যক পদ।

২। হৈক্রে ক। ৩। 'এই' ইত্যাদি পংক্তি হুলে 'আনার নিকটে সভে থাকহ আসিরা' প-র-সা।

৪। 'কুরা' ব। ৫। 'হবে' প-র-সা। ৬। 'ভবে' প-র-সা।

৮। 'রাণী' প-র-সা। ৯'। 'ধরিবে' ক, ঝ, প-র-সা।

১০। 'কোধা রে' হুলে 'কোধার' প-র-সা।

क्या जान ।>

বেন কালে স্থী নেলেং রাই-কনক-গিরি
আচ্ছিতে বরশন দিলা।
বাড়াঞা মণের তরে ধরি সহচ্রী-করে
সূধ বিনি শনী বোলকলা

রাই নিব ফুমেক্ল-ফুঠান। শ্মিত-স্থরধুনী-ধারে ब्रटमब बंबना बाद হেরি হেরি তৃষিত[ে] নয়ান ॥ নব অমুবাগ-বাতে শ্বির নাহি বান্ধে চিত্তে পাসরিলা নিজ মরিষাদ। কাঁপে ভতু পরহরে পর্বত ভোলরে করে **र्गायात्म भिन्न भवमान ॥** লগুড লইয়া করে কেছো কেছো গিরি ধরে উদার ত্রজের গোপগণ। ननिज (मवी (ये इनि मा शहिला > जारम जानि वाहरवा कविना व्यक्ति। ভাব সম্বরিয়া হরি রাখিল গোকুল-পুরী रेटक्रद्र कतिया भन्नक्र । হৈতস্থাদের বাণী ত্রিভুবনে জয়-ধানি (शावक्त-लीला त्रमयू १०॥) २,८१॥

পাঠান্তর

>। देश श-त-मा श्रीवेत्र >१४> मःशुक शह।
१। 'सिनि' ष; 'सिनि' श-त-मा। ०। 'त्र्य'
देणांकि वरण 'त्र्य रव किनित्रा मिनिकना' श-त-मा।
३। 'व्हर्जन' क, ठ; 'व्हर्जान' थ। ८। 'फ्लिब'
क। ७। 'नतारन' थ। १। 'कारश जक्ष' वरण 'कारश्र थ। ७। 'ततारन' थ। १। 'कारश जक्ष' वरण 'कारश' क, थ, श-त-मा।
३। 'रवरो रव' वरण 'रवरो' क, थ, घ, ठ। >०। 'त्रोव्हर्जा' क; 'त्रावेद्रत्ज्ञ' श-त-मा। >२। 'कतित्रा' क।
>०। 'नीना तम्मव्य' वरण 'नोनांत्र ममत्र' क।

ত্বা রাগ।>
জয় জয় অজেন্স-নন্দম।
অজের জীবন প্রোণ-ধন ।ঞ্জা
পরিবার সহ অজ-বাসী।
পর্ব বৈতে উঠিলা হয়ই ।

(महेचारन नीमात्र विश्वि । আগিলেন গোবর্জন গিরি নন্দ আদি যত্ত গোপগণে গ আশীর্কাদ করে কায়মনে। (क्ट्रा क्ट्रा क्ट्रा व्यक्तिक्रन । স্থার্গে স্থাতি করে দেবগণ। য়ােলা রাহিণী হর্ষ পাঞা। চাঁদ-মুধ চুম্বয়ে চাপিয়া ॥ আনন্দেতে নাচে বিভাধরী। পুষ্প বর্ষে অপ্সরাঃ কিন্নরী। দেববাজ পাঞা পরাভব। কর ঘৃতি॰ করে নানা স্তব। निक व्यथताथ दक्तमारेया। (भना जाभनात भन देनता ॥ তৈভন্মদানেতে ইহা গায়। ষুপে যুগে ভক্তের সহায় ॥৭॥>২৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইছা, প-র-সা পুথির ১৭৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'স্ব' প-র-সা। ৩। 'আনন্দেতে নাচে' হলে 'আনন্দে নাচেন' হ। ৪। 'অপছরি' প-র-সা। ৫। 'বোড়ে' চ।

भूनण्ड यथा।

255 IS

ক্ষের আদেশ পাঞা ইন্দ্র-যজ্ঞ নিবারির।
নন্দ আদি যভ গোপগণ।
নানা উপহার লৈক্ষা সকলে একত্র হৈরা
আইলেন বধা গোবর্জন ॥
সহস্র সহস্র জন রাজে জন ব্যঞ্জন
এক ঠাঞি লৈরা করে রাশি।
দথি-ছুখ-সরোবর রোটা-বালি ধরে ধর
হরিবে সাংলারং জল:বাসী ॥

শ্রীকুষ্ণের অন্তিমত পাক হৈল বহু মৃত সূপান্ত° পায়স শিখরিণী। ব্যঞ্জনের কত কুপ পৰ্বত সমান স্তুপ অনকোটি° করিলা সাজনি 🛭 নানা বাছ্য বাজে কত নৰ্মকী নাচত্তে খড সহস্র সহস্র লোকে গায়। যত গোপ গোপীগণ व्यक्षक ज्ञान আনন্দ অবধি নাহি পায়। কভ স্বর্ণ-মুদ্র। লৈয়া ধেমু বৎস সাজাইয়া ত্রান্সণেরে দেই নন্দরায়। মহা মহোৎসব রোল কে কার শুনয়ে বোল এ মাধ্ব দেখিয়া বেড়ায় ৯৮।১২৪১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৮৩ সংখ্যক পদ। ২। 'না-ধার' ক। ৩। 'স্পাঞ্চ' ক,খ,ছ,চ; 'শুপার' প-র-সা। বোধ হর 'স্পার' গুছ পাঠ হইবে। ৪। 'জর্রোটা'প-র-সা।

श्चित्रांत्र ।>

নানা মত অন্নকোটিং করিয়া সাজন।
গোবর্জনে বিপ্রগণ কৈল সমর্পণ ॥
মুর্ত্তিমন্ত গোবর্জন আপনে আইলা।
অন্ন ব্যঞ্জন সব ভোজন করিলা ॥
প্রসম হইয়া বর দিলা গোপগণে।
দেখি ব্রজ-বাসীগণ সবিন্ময় মনে ॥
কৃষ্ণ করে এই শৈল কর নমন্দার।
মাগি বর লেহ সভে যে ইচ্ছা যাহার॥
বর দিয়া গোবর্জন অন্তর্জান হৈলাও।
প্রণাম করিয়া সভে বিন্ময় হইলা ॥
গোবর্জন-প্রসাদ সভে করিলা ভক্ষণ।
আনন্দিত ব্রজ-বাসী প্রসন্ন হৈল মন ॥

191756-1

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির 3°৭৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'অর্রোটা' প-র-সা। ৩। 'কৈলা' ব, চ। ৪। 'গোবর্ড্রের' প-র-সা।

शांवनी ।>

श्रुका देवना रंगावर्कन যত ব্ৰহ্ম-বাসীগণ ना कतिल हैट्यत चर्छन्। করিল শৈলের পূজা শুনি ইন্দ্র মহারাজা ক্রোধ করি ডাকে॰ মেঘগণ ॥ मरात्कार्य रेज्यस्य প্রলয়-কালের মেঘ ठांत्रि व्यत्न जिल्ला वानिन। অভি কোপঃ-মন করি নন্দের গোকুল-পুরী **जुवाहेए** जारत बाजा मिन ॥ ব্দানি ঐরাবত হাতী ভবে দেব হুরপতি আপদি করিলা আরোহণ। গোধন নাশিতে মেঘ বায় ভাতি বায়ু-বেগ উপনীত নন্দের ভবনং 🛭 উড়াইল বুক্ষ ঘর প্রনে করিয়া কড় মূবল-ধারার পড়ে জল। ৰানকিণ ভড়িভ পাভ ঘন হয় বজাবাড जल पूर्व देशन छक्त प्रम । कृटकः व चारम्भ शायाः । त्राथनामि नव देनया (शांवर्कत्नत्र महेका भन्न । কৃষ্ণ-চন্দ্ৰ অভি ত্ৰন্তি প্ৰাৰিয়া বাম হস্ত ধরিলেন গিরি গোর্থন ৷ তার মধ্যে গোপগণ ८४मू वदम धन कन সপ্তিত হইয়া রহিলা। बुष्टि कविश् भन्नवीन रैटाएव माउँ पिन পরাত্র আপনি মানিলা ॥১০॥১৯৫১॥১৫

३। देश मन्त्रना श्रापित ३१४८ तस्योग समुन्

২। 'অশ্চন' প-র-সা। ৩। 'ফোখ করি ছাকে' ছলে 'ডাকে খন খন' প-র-সা। ৪। 'ফোখ' ক। ৫। 'ডুবন' খ, চ। ৬। 'লড়' প-র-সা। ॥ 'ঝড়কি' প-র-সা। ৮। 'সগু' প-র-সা। ॥। 'করে' প-র-সা। ১০। অভঃপর ধ প্রিভে 'ইভ্যাদি শীক্ষক্ষকলে।' ও ধ প্রিভে 'ইভ্যাদি।' পাঠ দৃষ্ট হর।

তথা রাখ ৷১

পর্বত-গভরে থাকি জ্ঞ বাসীগণ।
কৃষ্ণ রাখিলেন প্রাণ এই সভার মন।
পরাভব মানি ইন্দ্র গেলা নিজ-ছান।
ধেসু বৎস লইয়া উঠে যত গোপগণ।
নন্দ যশোমতী অতি হর্ষিত হৈয়া।
বন্ধ দান কৈল কুষ্ণের কল্যাণ লাগিয়া।

1>>1>400

ইভি তৃতীয়-শাধারাং ত্রন্নোবিংশডিপল্লবঃ। পাঠান্তর

३। हेरा भ-त-ना श्रवित्र ১१৮७ मध्याक भागा

অথ শরৎকালীয়-পূর্ণিমায়াং ম**হারাসঃ।** ভছচিত-**ত্রি**গৌর**চন্দ্রঃ।** ছু**ট**়।

যুক্ষাবন-সীলা পোৱার মনেতে পড়িল।

যুক্ষাবন-সীলা পোৱার মনেতে পড়িল।

যুক্ষাবন দেখি যুক্ষাবনের মনান>।

গহচরগণ গোপীগণ অসুমানং।

গোল করতাল গোরা ভ্যেতি করিছা।
ভার, নাকে নাচে গোরা ভ্যেতি করিছা।
মানুক্ষাব করার আরু করার নিয়ার

शांकीखन्न ३। 'नवांदन' व, ह। २। 'बङ्बांदन' व, ह।

কানেদ।
নাচত গোর রাস-রস অস্তর
গতি অতি ললিত ত্রিভঙ্গী।
বরজ-সমাজ রমণিগণ বৈছন
তৈছন অভিনয়-রজী ॥
দেশ দেশ নববীপ মাঝ।
বাওত গাওত মধুর ভকত শত
মাঝহি বর-বিজরাজ ॥ধ্রা॥
ভা ভা দ্রিমি দ্রিমি মাদলং হ্রাজত
ব্যুমু বুমু মুপুর রসাল।
রবাব বীণাণ আর সর-মগুল
হ্রমিলিত করণ করভাল॥
এ হেন আনন্দ না হেরিয়ে ত্রিভুবনে
নিরূপম প্রেম-বিলাস।
ও হুখ-সিক্স পরশ কিয়ে পাওব

পাঠান্তর

ক্ছ রাধামোহন দাস ॥২॥১২৫৪॥

)। 'সমাঝ' ক, ছা হা 'মৃদল' ক, চা ৩। 'বীণ' ক, খ, চা ৪। 'করু' খা

অভিদার।

শ্বদ্য। । ।
শ্বদ-চন্দ প্ৰন মন্দ
বিপিনে ভ্ৰন কুন্ত্ম-গন্ধ
ফুল্ল মলিকা মালতি যুথি
মন্ত-মধুক্ব-ভোরণিং।
হেরভং রাভি ঐছন ভাভি
শ্রাম মোহন মদনে মাভি
মুরলি-গান পঞ্চম তান
কুলবভি-চিত চোরণিং।

শুনত গোপি প্রেম• রোপি মনহি মনহি আপন সোপ তাঁহি চলভ যাঁহি বোলভ মুরলিক কল পলোলনি ।। বিসরি১১ গেহ নিজ্ঞ ১২ দেছ এক নয়নে কাঞ্জর-রেহ বাহে রঞ্জিত কম্বণ একু১৬ একু কুণ্ডল ডোলনি ।। मिथिल-इम्म निविक वक्रभ বেগে ধাওত যুবভিবুন্দ খসত বসন রসন চোলি>• গলিভ বেণি লোলনিং। তত্হিঁ ১৮ বেলি স্থিনি মেলি কেন্ত কান্তক পথ না হেরি এছে শিলল গোকুল-চন্দ (ग्राविन्मपाम् गाञ्जिवरः ॥०॥>२००॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৫০০ ও প-র পুলির ওচাং সংখ্যক পদ। 'কানড়া' স্থলে 'টোড়ি রাগ' প-র-সা; 'কেদার' প-র। ২। 'বুভি' ক, চ; 'জোভি' খ; 'জুথি' খ, প-র-সা। ৩। 'জোরণী' ক, খ, ছ, চ, প-র। ৪। 'হের' থ; 'হেরই' প-র। ৫। 'চোরণী' ক, খ, খ, চ, প-র। ৬। 'প্রেমহি' খ। ৭। 'মনহি মনহি' ঘ। ৮। 'আপনা' ক। ১। 'মুরলিক কল' স্থলে 'মুরলি কনক' প-র-সা। ১০। 'লোলনী' ক, খ, ঘ, চ, প-র। ১১। 'বিছুরি' ক, খ, ঘ, চ। ১২। 'নিজহি' প-র-সা, প-র। ১৩। 'কহণ একু' স্থলে 'মজির এক' প-র। ১৪। 'জোলনী' ক, খ, ছ, চ; 'দোলনি' প-র-সা, প-র। ১৫। 'নিবি নিবছ' প-র-সা, প-র। ১৫। 'নিবি নিবছ' প-র-সা, প-র। ১৮। 'জোলনি' ক, খ, ছ, চ, প-র; 'ললনি' প-র-সা। ১৭। 'জোলনী' ক, খ, য়, ঢ়, প-র; 'ললনি' প-র-সা। ১৮। 'জমহি' প-র। ১৯।

'ঐছনে' ক, ধ, দ, চ, প-র-সা। ২০। 'বোলনী' ক, ধ, দ, চ; 'গায়নি' প-র-সা।

महात्र । ३

বিপিনে মিলল গোপ-নারি
হেরি হসভং মুরলিধারি
নিরধি বয়ন পুছত বাত
প্রেম-সিফু গাহনি ।
পুছত সবকং গমন-খেম৬
কহত কীয়ে করব প্রেম
ব্রেজক সবছঁ কুশল বাত
কাহে কুটিল চাহনি ॥
হেরি ঐছন গ্রুজনি গেরির
তৈজি তরুণি পতিক কোর
কৈছে পাওলি গ্রুজনি বাহনি ।
গলিত-ললিত-কবরি-বন্ধ ।
কাহে ধাওত যুবতির্নদ
মন্দিরে কিয়ে পড়ল দক্ষ ।

বেঢ়ল বিপথ-বাহিনি>৽ ॥ কীয়ে শরদ>৽ চান্দনি রাতি নিকুঞ্চে ভরল কুস্থম-পাঁতি হেরত শ্যাম ভ্রমর>৮-ভাতি

বুঝি আওলি সাহনি ।
এত হুঁ কহত ২০ না কহ২০ কোই
রাখত কাহে মনহিং২ গোই
ইহহি আন নহই কোইং৩
গোবিন্দদাস গাহনি ২০ ॥৪৭১২৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৫০১ ও প-র পুথির ওচাত সংখ্যক পদ। 'মলার' ফ্লো 'তথা রাগ' প-র-সা, প-র। ২। 'হাসত' য, প-র। ৩।

'বিয়ান' ক, চ। ৪। 'পাহনী' ক, ধ, ঘ, চ; 'গাওনী' প-র। ६। 'मक्न' श-ब्र-मा। ७। 'ርጥዛ' ኞ | 9 | 'करु कौत्त्र' ऋत्व 'कर्ड কিরে' ক; 'কহ অব কিরে' প-র। 'मकन' প-त्र। अ। 'ठाहनो' क, थ, ब, ह, প-র। ১০। 'हिति धेष्टन' ऋलে 'हित्रङ खेरह' প-র-সা; 'হেরত ঐছন' প-র। ১১। 'পাওল' ब, ह। ১२। 'देक्ट्इ' हेजानि ऋत्न 'काद्व आधनि কানন ওর' প-র-সা, প-র। ১০। 'কাহিনী' क, খ, ঘ, চ, প-র। 'থোর' ইত্যাদি স্থলে 'কছ না থোর কাহিনী' প-র। ১৪। 'রুন্দ' ক, খ, ঘ, চ। ১৫। 'बन्द' क, ধ, পর-সা। ১৬। 'বাহিনী' ক, খ; 'বাছনি' চ; 'বাহনী' ধ। ১৭। 'কীরে শরদ' ছলে 'কিলে শারদ' ক। ১৮। 'ভর্ম' প-त-नाः, 'खम' প-तः। ১०। 'नाहनी' के, थ ৰ, চ, প-র; 'শোভনী' পাঠাত্তর থ; 'সাহিনি' প-র-সা। ২০। 'এতত্ঁ কহত' স্থলে 'এত হি কহি' প-র-লা, প-র। ২১। 'না কহ' স্থলে 'নাহক' চ। ২২। 'মোহে' প-র। ২০। 'ইহহি' ইভাদি यरण 'हेरहे जान न रहाहे (काहे' प, ह; 'हेरहि আন কোহি না হোই' প-র-সাঃ 'শুনি আনন বিরস হোই' প-র। ২৪। 'গায়নী' ক, খ, চ; 'গাওনী' 어-로 1

টাকা

৩—৪। "নির্ধি" ইত্যাদি। (শ্রীক্লফ) পোণা-দনাদিগের বদন নিরীক্শ করিরা বার্তা জিজাসা করিতেছেন,—(যেন) প্রেম-দিল্লতে অবগাহন।

শেদ। "পুছত" ইত্যাদি। (প্রীক্ষণ) সকলের গমন-কুশল জিল্পানা করিতেছেন এবং বলিতেছেন, (ডোমাদিগের) কি প্রীতি-হচক কার্ব্য করিব? বজের সকলের মদল-বার্ত্তা বটে ত ?—কেন কুটল দৃষ্টিপাত (করিতেছ?) ভুলনা কক্ষন,—
'বাগতং বো মহাজাগাঃ প্রিরং কিং ক্রবাণি বঃ। বজ্জানাময়ং ক্চিদ্ ক্রভাগমনকারণ্য ।'

--- भ्रमहाभवक, ১०१२॥১९।

৯— > ২। হিছির ইত্যাদি। এরপ খোর (আছকার-বুক্ত) রজনী দেখিয়া, ঘূবতী (তোমরা) খামীর ক্রোড় পরিত্যাগ করিয়া কিরুপে কানন-প্রাক্তে উপস্থিত হইলা

শৃ—(ইহা) অল কথা নহে

।

১৩—১৬। "গলিড" ইত্যাদি। স্থন্দর কবরীবন্ধন অলিত হইয়াছে—এরপ ব্বতি-বৃন্ধ (তোমরা)
কি জন্ত (বনে) ধাবিত হইতেছ; গৃহে কি কল্ছ
উপন্থিত হইয়াছে? বিপথ-গামিনী অর্থাৎ কুল্টা
ত্মীগণ কি (তোমাদিগকে) বেষ্টিত করিয়াছে?
(কুল্টাদিগের সাহচর্য্য কুল্বতীগণের গৃহ-ত্যাগের
বলবৎ কারণ বটে।)

১৭—২•। "কীরে" ইত্যাদি। কিংবা (আঞ্চ)
শরৎকালীর কোৎসামন্ত্রী রক্তনী; কুকুম-সমূহে কানন
পরিপূর্ণ করিয়াছে; শুমান্দ (প্রিক্রফকে) ভ্রমর(প্রের্জর) ক্তার দেখিয়া স্থাধীনা (তোমরা) বোধ
হর, (এখার) আসিরাছ! ('হেরত' ভাবে
সপ্তমী)।

২১—২৪। "এতছ" ইত্যাদি। (প্রীকৃষ্ণ) ইহা কহিলে, কেহ (কিছু) কহিলেন না; (ডখন প্রীকৃষ্ণ বলিলেন) কেন (মনের কথা) মনে গোপন করিবা রাখিতেছ ? এখানে অস্ত কেহই নাই!—গোবিন্দ্রাবের এই গান।

यामनी ।>

প্রছন বচন কছল যব কান।

ব্রজ-রমণীগণ সজল-নয়ান ॥

টুটলং সবছাঁ মনোরণ-করণি।

অবনত-আননে নখে লিখু ধরণি॥

আকুল অন্তর গদগদ কছই।

অকরুণ-বচন-বিশিখ নাহি সহই॥

শুন শুন কুকপট শুগার-চন্দ।

কৈছে কহসিং ভুহুঁ ইহ অমুবর্ষণ॥
ভাঙ্গলি কুল-শিলং মুরলিক সানে।

কিছেরিগণ জমু কেশ ধরি জানে॥

অব কহ কপটে ধরমযুত্য বোল।
ধার্মিক হরেরে কুমারি-নিচোল।
ভোহে সোঁপিত জিউ' তুয়া রস পাব।
তুয়া পদ ছোড়ি অব কো কাই। যাব।
এতত্ত্ব কহল অজ-যৌবত মেল।
শুনি নন্দ-নন্দন হর্ষিত জেল।
ক্রিণ্ণ প্রসাদ তহি করুয়ে বিলাস।
আনন্দে নির্ধয়ে গোবিন্দদাস।।৫॥১২৫৭॥

> : ইহা প-র-সা পুথির ১৫০৪ সংখ্যক পদ।
২। 'টুটল' ক; 'ছুটল' প-র-সা। ৩। 'কহন্ড' প-র-সা। ৪। অনতঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্ন-লিখিত কলি ঘারা এই পদটি শেষ করা হইরাছে।

পাঠান্তর

ষ্থা,—'নন্ননে গলন্নে জল বুক বায়া পড়ে। কাজরে মজিল কুচকুঙ্কুম পাথালে॥'

প-র-সাপ্থিতে অতঃপর 'বথা রাগ। পরমধার্থিক হরা ধরম নিথাও হে। জা।' পংক্তি ছারা একটি নৃতন পদ আরম্ভ করা হইয়াছে। ৫। 'কুল্ণীল' ক, ধ। ৬। 'মুরলিক সানে' স্থলে 'মুরলীর গানে' প-র-সা। १। 'কপটে ধরমবুত' ছনে 'ধরম কপটবুত' প-র-সা। ৮। 'জাউ' ক, ধ, প-র-সা। ১। 'কহত' ক, ধ। ১০। 'কবি' ক।

মহারাসঃ।

কানে। ত কাঞ্চন মণিগণে জমু নিরমাওল রমণী-মণ্ডল সাজ। মাঝহি মাঝ মহামরকত-মণি শুসামর নটবররাজ। ধনি ধনি অপরুপ রাস-বিহার। শীর বিজুরি সঞ্জে সঞ্চরণ জলধর রস বরিধয়ে জনিবার। গ্রা কত কত চান্দ তিমির পর বিলসই
তিমিরক্ত কত কত চান্দে ।
কনক-লতায়ে ভমালর্ দ কত কত
হত হৈ ত তমু তমু বান্ধে ॥
কত কত পত্নমিনি পঞ্চম গাওত দ্বানি কত পত্নমিনি গ গাওত
মুগ্ধল গোবিন্দদাস ॥৬॥১২৫৮॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮।ও সংখ্যক পদ। 'কামোদ' হুলে 'ধাননী' প-র-সা। ২। 'মণিগণ' ক, প-র-সা। ৩। 'সম' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৪। 'ধনি ধনি' প-র-সা পুথিতে নাই। তৎ হুলে 'রুন্দাবনে' প-র। ৫। 'চঞ্চল' ক, প-র-সা। ৬। 'ভিমিরহি' ক। ৭। 'চান্দ' প-র। ৮। 'ভমালহ' ছ। ৯। 'বাদ্দ' প-র। ১০। 'পঞ্চম গাওড' হুলে 'বারত গারত' প-র-সা। ১১। 'কম্লিনি' প-র।

অত্যন্তরে অন্তর্কানং যথা।

বেগর।>
রাস-বিহারে মগন শ্রাম নটবর
রসবতি রাধা বামে।
মগুলিং ছোড়ি রাই-কর ধরি হরি
চললি আন বন্ধ-ধামে ॥
বব হরি অলখিত ভেল।
সবহঁ কলাবতি আকুল ভেল অতি
হেরইতে বন মাহা গেল।ব্রু॥
স্থিপণ মেলি সবহঁ বন চুঁড়ইং
পুছইং তক্লগণ পাশ।
কাইা মস্থ প্রাণ-নাধ ভেল অলখিত্ব
না দেখিয়া জিবম নিরাশ ॥

কহ কহ কুস্থম-পুঞ্চ ভূত ফুলিত
শ্রাম-ভ্রমর কাহাঁ পাই।
কোন উপায়েশ নাহ মঝু মীলবংশ
উদ্ধবদাস তাহাঁ যাই ॥৭॥১২৫৯॥
পাঠান্তর

১। ইহা গ-র-সা পুৰির ১৫১৭ সংখ্যক পদ।

২। 'মগুল' ক, ধ; 'মগুলী' প-র-সা। ৩।
'আন বন' হলে 'নিকুল' প-র-সা। ৪। 'সকল'

য। ৫। 'চুড়ই' য, চ। ৬। 'পুছুই' ক, ধ,
প-র-সা। ৭। 'কাহাঁ' ইত্যাদি হলে 'কাহাঁ মুরু প্রাণনাথ ভেল অতি অল্থিত' ক, ধ। ৮। 'কুল' প-র-সা। ৯। 'কোন উপারে' হলে 'কোনছ উপার' প-র-সা। ১০। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা।

द्या भाग ।> পনস পিয়াল চুত্তবর চম্পক অশোক বকুল বক নীপ। একে একে পৃছিয়াং উত্তর না পাইয়া আওল তুলসি সমীপ॥ জাতি যুপি নব-মল্লিক মালতি **पृष्ट मध्य-नग्राटन।** উতর না পাই পতিনি সম মানই **मृत्रिं कत्रन श**र्यात्न ॥ পুন দেখে তরুকুল অতিশয় ফলফুল-ভবে পড়িয়াছে মহি-মাঝ। কামুক হেরি প্রণাম করল ইর এ পথে চলল खन-वान I এত কহি বিরহে বেয়াকুল অভিশয় ত্রজ-রমণীগণ রোর। উদ্ধৰণাস বহ স্থাম ভেল অলখিও কভি খণে মীলবং মোর মে।১২৬০।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'পুছিরা' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'যুথী'
ক। ৪। 'মলিকা' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'পাইরা'
ক, চ। ৬। 'দেখি' প-র-সা। ৭। 'মিলব'
ক, প-র-সা।

छवा जोत्र ।>

মুখে যুখে রঞিণি বরজ-বর-কামিনি যামিনি কানন মাহ। সব জন পরিহরি কুঞ্চে চলল হরি করে ধরি রাইক বাহ। त्रक्नी.° व्यव हति (कान कानन माहा (शल। গুণবতি গুণহি মনহি মন বান্ধল নাগর অসুকৃলঃ ভেল॥ **এ**°॥ ঠামহি ঠাম চরণ-চিহ্ন হেরই রাই করল যাই। কোর। কুমুম ভোড়ি বছ বেশ বনায়ল স্থ্রত-রভসে ভেল ভোর॥ কিশলম্ব-শেক ঠামহিঁ ঠাম হেরই টুটল কভ ফুলমাল । ছুত্ অক্স-পরিমলে কামন বাসল গুঞ্জরে মধুকর-জাল ॥ धनि धनि वर्मान-भिरवामनि सम्मिव व्यात्राधल मनम् ५ (प्रव । (भाभानमान कह ७ नहार्ति नहे রাধামাধ্ব সেব ॥৯॥১২৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বুলে বুলে' ক। ৩। 'সজনি' ক, ব, চ,
প-র-সা। ৪। 'অলুক্ল' ক, ধ। ৫। কেবল
প-র-সা পুথিতে 'জ' চিক্ আছে। ৩। 'টুটল'

ক, চ, প-র-সা। १। 'কুলবান' প-র-সা। ৮। 'কান' প-র-সা। ৯। 'গোপালদান' ইত্যাদি ফলে 'গোপালদান ক্রমে সহচরি সহ' প-র-সা।

ধানশী।>

সকল রমণিগণ ছোড়ি বর-নাগর রাইক কর ধরি গেল। বনে বনে ভ্রমই কুত্মকুল ভোড়ই (कम-(वम कत्रि (नल । চলইতে রাই চরণে ভেল বেদন कारक ठएव मन ८क्न। বুঝইতে ঐছে বচন বহু-বল্লভ নিজ তমু অগখিত ভেল। না দেখিয়া নাহ তাহিঁ খনি রোয়ত হা প্রাণনাথ উতরোলে। ব্ৰজ-রমণীগণ না দেখিয়া মন-ছুখে ভাসল বিরহ-হিলোলে ॥ উদ্দেশে কৌই কোই বনে পরবেশিয়া হেরল রোদতি রাধা। मिश्राम (मिल धर्मि भर्म ल्रेड्र উদ্ধবদাস চিতে বাধা ১১০॥১২৬২॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫২০ সংখ্যক পদ।
২। 'বুবাইতে ঐছে' হলে 'বুবাইতে ঐছন' প-র-সা। ৩। 'তাহি' দ; 'তহি' প-র-সা। ৪। 'ব্রক্টাব্দ রমণ' থ। ৫। 'সূঠই' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাস ।>

সভে মিলি বৈঠন কালিন্দি-ভীর। ঝর ঝর সবহঁ নয়নেং বহ নীর॥ কাহাঁ সেও নাহ° ছখ-সাগরে ভারি। অবলা-মতি কৈছে তরইতে পারি°।

বিবছ-বিয়াধি° -বিরামক লাগি। গাওত তছু গুণ যামিনি জাগি॥ विध-जन वान वर्ष खरा त्रांथि। অব কাহে মার্সি অক্রুণ-আঁখি॥ যবভ চলসিও বন গোধন সাধ। নিমিখে মানিয়ে জমু যুগ-শত যাত ॥ অব কৈছে ভুয়া বিষে ধরব পরাণ। তব বচনামুত্র না করিয়াদ পান ॥ তে পa³-পক্ত কোমল জানি। স্তন-যুগে রাখিতে ভয় অমুমানি॥ देक एक क फिक-वरन क ब्रिश विश्व विश्व । সোভরি সোভরি জিউ ধরই না পার১১॥ এত কহি রোয়ত গদ গদ ভাষ। কহ রাধামোহন দাসক দাস ॥১১॥১২৬৩॥

পঠিক্তির

১। हेहा भ-त-मा भूषित ১৫२১ मरबाक भन। २। 'नवन' घा ७। 'नाथ' क, थ, घ, घ। ८। 'অবলা' ইত্যাদি স্থলে দ পুৰির পাঠ বৰ্ধা— 'পহিলে किशह भागि भून माति। १। 'भटशिथ' थ, च। 'চলল' প-র সা। ৭। 'চরণামৃত' প-র-সা। ৮। 'क्तिरत्न' क। भ। 'ख्व' श्र-त्र-श्रा। ১०। '(वहांत्रि' घ। ১১। 'शांत्रि' ह।

वबाढी ।>

় তব কথামৃতং ভপ্তজীবনং কবিভিরীড়িতং কলাধাপহং। শ্রবণমঙ্গলং শ্রীমদাততং ভূবি গুণস্তি বে ভূরিদা জনাঃ। পাঠান্তর

১। এই শ্রীমণ্ডাগবতীয় শ্লোকটি প-মু-সা

हेरां व च उन्न भन-कर्ण श्री क क्विरन २८म अन्न द्व নির্দিষ্ট পদ-সংখ্যা বাড়িয়া বার; তথাপি পদকর-ভক্র সকলগুলি পুথিতে গ্লোকটি উদ্ভ হওরার উহা আমরাও উদ্ধৃত করিলাম। ২। 'কবিভিন্নী-ড়িতং' হলে 'কৰিভিন্নীরিতং' ক, ধ, চ পুৰি।

টীকা

"ভবে"ভ্যাদি। শ্রীকৃষ্ণং প্রতি গোপী-জন-বাক্যম। তব কথা এব অমৃতং ভূরিদাঃ পূর্বজন্মনি বহ-দাতারো জনা পরম-স্কৃতিন ইত্যর্থ: ভূবি সংসারে আততং বিস্তৃতং যথা স্যাৎ তথা গৃণস্তি প্রাপ্ন বস্তি। क्थामृडः कीषृभम् ? उश्चानाः সংসারানলদ্ধানাः कौवनः कौवनबक्लीवशः कविख्यिकामिखिबीएउः ল্পতং কল্মযাপ্ৰং পাপনাশনং শ্ৰীমৎ সৌভাগ্যাম্পদং কল্যাণাবহমিতি ভাব:।

অমুবাদ

সংসারে বাঁহারা পর্ম-পুণ্যবান্ ব্যক্তি, তাঁহারাই এমাদির প্রশংসিত কপুর-নাশন, শ্রবণ-মদল ও কল্যাণকর আপনার কথামৃত প্রভূতরূপে লাভ कत्रित्रा शंदकन !

বিহাপদা ৷১

অক্তনামক্তনামন্তরা মাধবো মাধবং মাধবং চাস্তবেপাঞ্চনা। ইখমাকল্লিতে মণ্ডলে মধ্যগো **८**वर्ग मः कर्गा (पवकी-मन्पनः ॥ 1134581

পাঠান্তর

 हेहा भ-द्र-मा श्रुबिद्र ১८२७ मःश्रुक भए। টাকা

১-- 8। "व्यक्ता"विकाति। माधवः व्यक्तार অন্তর্না প্রতিব্রদাননাবরত মধ্যবন্তী। 'পর-(त'कावात-तार्ग विक्रीता। ज्याना ह माथवर माथवर পুৰিতে উভূত এবং চ পুৰিতে গণিত হয় নাই। অভবেশ প্ৰত্যেকমাধ্যপ্ৰকাশনোঃ মধাবজী। 'পার-

রেণে'তাব্যমবোগে বিতীয়া। ইখং অনেন প্রকারেণ আকলিতে রচিতে মগুলে চক্রাকারেণ রাদ নৃত্যে মধ্যগো মধ্যবর্তী সন্ দেবকীনন্দন: শ্রীক্রফঃ বেণ্না সংজ্ঞা গানং ক্রতবান্। "অস্ত সর্বব্রজাগনা-মধ্যগতত্বং অলাতমিব দর্শনং চক্রভ্রমন্তারেন নৃত্যবিশেষকোণ-লেনেতি বোধ্যং ন বৈশ্বর্থেণ।" ইতি রাধামোহন:।

ব্যুবাদ

প্রত্যেক ব্রদাসনা-ব্রের মধ্যে প্রীকৃষ্ণও ব্র্রুপে প্রকাশমান, প্রত্যেক শ্রীকৃষ্ণব্রের মধ্যে ব্রদাসনা— এইরূপে সংগঠিত রাস-মণ্ডলের মধ্যগত হইরা দেবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণ বংশীর গান বিস্তার ক্রিলেন!

তাৎপৰ্ব্য-ব্যাখ্যা

রমণীবন্ন পরস্পারের কর ধারণ করিয়া মণ্ডলা-কারে বে নৃত্য করেন, উহাকে রাস বা মঞ্গী-নৃত্য वना रहा। महस्य महस्य उवाक्रमानिश्वत्र मय-छार्य व्यानम-वर्त्तन कतिए हरेल, श्रीकृष्ण डाँशिएशव প্রত্যেকের সহিত যুগপৎ নৃত্যাদি করিতেছেন, তাঁহাদিপের মনে এই বিখাদ উৎপাদন করা আবিশ্রক। অবগ্র শ্রীভগবানের পীক্ষে ইহা অসম্ভব নহে। 'বোগেখবেণ ক্লফেন তাদাং মধ্যে ছয়ো-ৰ ষো:। প্ৰবিষ্টেন পৃথীতানাং কঠে খনিকটং খ্ৰিয়:॥' এই ভাগৰতীয় শ্লোকের শ্রীধর-স্বামি-ক্লত ব্যাখ্যার আভাবে বুঝা ৰাম্ম ৰে, এক্রিঞ্চ বোগ(মায়া) ৰারা ৰুগণৎ বহু মূৰ্ত্তি পরিপ্রাহ করিয়া এই কার্য্য সিদ্ধ क्रिशिक्षिता। क्रिक श्रीक्रक्षणीगांत्र विस्थितनी সনাতন গোস্বামী ও বিখনাথ চক্রবর্তী শ্রীক্রফের মধুরভাবাত্মক ত্রল-লীপার এখর্য্য প্রকাশ অবৌক্তিক मरन क्रिका. व्याच्या क्रिकारक्त रा, वश्वकः अवहे কৃষ্ণ নৃত্য-পটুতা হেতু এক সময়েই সকল গোপী-দিপের নিকটে আছেন বলিয়া প্রতীত হইয়াছিলেন। বিখনাথ চক্ৰবৰ্ত্তীর মতে পুৰ্কোক্ত ভাগবতীয় শ্লোকের 'ক্ষেন' ও পরবর্ত্তী 'ভত্রাতিশুগুভে তাভির্ভগবান্ দেৰকীস্থত:। মধ্যে মণীনাং হেমানাং মহামার-करा विश्वा । अविकास विश्वासी विश्वास करा । अविकास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्व वहनास भव-दत्र दात्रा अहे अधिआतहे ऋहिक हत्र।

বস্ততঃ প্রশিধান করিলে টীকাকারদিগের এই মতবিরোধের বিশেষ সার্থকতা দেখা বায় না। বে
অভূত নৃত্য-কৌশল ধারা নর্ভক ব্গপৎ সহস্র সহস্র
প্রকাশরপে প্রতিভাত হইতে পারেন, তাহা
অলৌকিক ও তজ্জরই অতিপ্রাক্ত বলিয়া স্বীকার
করিলেও বোধ হয় কোন ধোম হয় না। বস্ততঃ
শ্রীক্ষ্ণ-চরিজের বহু অবদান তাহার পক্ষে সহজ ও
স্বাভাবিক হইলেও সাধারণ মানবের পক্ষে বে একান্ত
অসাধ্য ও অসম্ভব, ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে
হইবে।

ভথা রাপ ৷১

যভ নারাকুল বিরহে আকুল ধৈরজ ধরিতে নারে। রসিক নাগর ৰুঝিয়া অন্তর্ मैड़िल यमूना शादत ॥ কদম্বের তলে বসি কোন ছলে शृक् शृक् वादय वाँनी। শুনিতে শ্রবণে ভ্ৰ-বধুগণে তাহাই মিলল আসি । মরণ-শরীরে পরাণ পাইল ঐছন সবহু ভেলি। বন-দাবানলে পুড়িয়া যেমন আমিয়া-সায়রে কেলি ॥ চাভকিনী-গণু ८इत्रि नव∙चन मत्नत्र यानत्म खात्म। वतन खन्मत জিনি শশধর हरकाविनी हावि⁸ शास्त्र ॥ বিরহে ভাপিত ভেল ভিরপিভ विद्राः अभिग्रा-त्रांभि । স্থামের বদনে জ্ঞানদাস কৰে আধ ঈষত হাসি ॥১৩॥১২৬৫॥

পঠিক্তির

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সমর' প-র-সা। ৩। 'ব্রজবধ্গণ' প-র-সা। ৪। 'চারু' प; 'চাৰু' প-র-সা।

८वरनायात्र ।> বাজত ডক্ষ রবাব পাৰোয়াজ করতল তাল ভরলং একু মেলি। চলত চিত্ৰ-গতি সকল কলাৰভি করে করে নয়নে নয়নে করু খেলি॥ নাচত শ্যাম সঙ্গে ত্রজ-নারি। জনদ-পুঞ্জে জমু তড়িত-লতাবলি অন্স-ভক্ষ কত রক্ষ বিধারি 🛚 🕸 🔻 नहेन-हिलाल-लाल मनि-कृथन अभ-जन एन एन वहनक् हम्ह । त्रम ভবে গলিভ ললিভ কুচ-কঞ্ক নীবি খসত অরুণ কবরিক বন্ধ॥ তুহুঁ তুহুঁ সরস পরশ-রস লালসে আলিক্সই রহ তমু লাই। গোবিন্দদাস পত্ত মুরতি মনোভব কভ যুবতী পরতি আরতি বাঢ়াই 🛭

পাঠান্তর

#>8#**>**₹৬৬#

১। ইহা প-র পুথির ৩৮।৬ সংখ্যক পদ।
২। 'চরণ' প-র। ৩। 'শ্রমজ্বণ' ইত্যাদি স্বলে
'শ্রমজ্বল চরচর মুখ-জরবিন্দ' প-র। ৪। 'জব'
ঘ; 'উক্ল' চ। ৫। 'আলিঙ্গই' ইত্যাদি স্বলে
"'তক্ল তক্ম আলনে রহ তক্ম লাই' ক, খ; 'আলনে
বহুত ললাই' চ। ৬। 'বুবতি' ক, খ; 'বুবতি' ঘ।
'বুবতি' পাঠে ছন্দোভদ ঘটে। ৭। 'মৃতি' খ।

रमन श्रीषात्र ।

বলায়ানাং নৃপুরাণাং কিঙ্কিণীনাঞ্চ বোষিতাং। সপ্রিয়াণামভূচছব্দস্তমুলো রাস-মগুলে॥
॥১৫॥১২৬৭॥

नेका

"বলমানা" মিত্যাদি। রাসমগুলে স্থিরানাং ক্ষেস্ছিতানাং বোষিতাং স্ত্রীণাং বলমানাং ক্র-ভূষণানং নূপুরাণাং পদভূষণানাং কিছিণীনাং কটি-ভূষণানাং চ নৃত্য-বেগ-চঞ্চলানামিতি ভাবঃ ভূম্লঃ সন্ধীর্ণঃ বলম-নূপুরাদি-শিঞ্চিত-মিঞ্জঃ শক্ষোহভূৎ নিনাদো ভাতঃ।

অমুবাদ

রাস-মওলে ঐক্সফের সহিত সন্মিলিতা এলালনা-দিপের বলর, নূপ্র ও কিছিণীর ধ্বনি-মিশ্রিত শব্দ উদ্ভূত হইল।

(क्षांत्र।)

কালিন্দি-ভীর স্থীর সমীরণ
কুন্দ কুমুদ অরবিন্দ বিকাশ।
নাচত মোরং ভোরণ মন্তণ মধুকর
শুক সারিকণ পিকু-পঞ্চম ভাষ ॥
মধুবনেণ নিধুবনণ-মুগধ মুরারি।
মুগধ গোপ-বধু অধিক লাখ সঞ্জে
রক্ষে বিহরে রুখভানু-কুমারিদ ॥ এছ ॥
নাচত নটিনি গাওয়ে নট-দেখর
গাওত নটিনি নাচেণ্ণ নট-রাজ।
শুসামর গোরিণ্ণ গোরি সঞ্জে শুসামর
নব জলধরে জমুণ্ণ বিজুরি বিরাজ ॥
হেরি হেরি অপরুপণ্ণ রাস-কলা-রস্ণা
মনমধে লাগল মনমধ্য ধন্দ।
ভূললাণ গগনেণ্ণ সগণেণ্ণ রজনীকর
চৌদিশেণ্টিক্সভ দীপধরণ্ণ ছল্ক ॥

ভারা-গণ সঞে তারা-পতি হেরি
লাজে লুকায়ল দিনমণি-কাঁতি।
গোবিন্দ দাস পত্ত জগ-মন-মোহনং
বিহরইং ভেল কলপ সম রাতি ॥
॥১৬॥১২৬৮॥

পাঠান্তর

३। हेरा भ-त-मा भूषित ১८৪१ । भ-त भूषित ৩৮/৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ময়র' ক। ৩। 'ভোর' শব্দ প-র-সা পুথিতে নাই। ৪। 'মত্ত' শব্দ থ পুৰিতে নাই। ৫। 'শারি শৃক' ব, চ; 'গুক সারি' भ-त-मा ७। 'सध्त' क। १। 'निध्तत्न' थः 'নাচভ' প-র-সা। ৮। 'কিশোরী' প-র-সা, প-র। २। 'গার' क: 'গারে' 5। > । 'নাচত' প-র। ১১। 'শ্রামর গোর' ক. থ: ভোষক গোরি' প-র-সা; 'গ্রাম গোরি' প-র। >२। 'देव(क' भ-दा >)। 'दान' भ-दा >8। 'विनाम मत्नाहत्र' श-द्र। ১৫। 'खेवन' श-द्र-मा। ১७। 'मगरव' भ-द्र। ১१। 'मगव' भ-द-मा; 'भगरन' भ-त्र। अन्। '(होबिरग' क, ह। ३३। 'मील यदि इन्म' कः 'मील धक् इन्म' ल-द। २०। 'জগ-মন-মোহন' ছলে 'নটবর-শেধর' প-র। ২১। 'বিহরিজে' প-র।

টীকা

e—१। "মধ্বনে" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর লিখিরাছেন,—'বধুবনে মথুবামগুলে তক্তহে নিধুবননার গুণবদে মুগধ মুঝো হরিরিতি। ব্যা নিধুবনমুঝা 'রভং নিধুবনং মৃত'মিত্যর্থা। অর্থাৎ 'নিধুবন-মুগধ' শন্দের অর্থ মধুবন-স্থিত নিধুবননামক উপবনে' কিংবা নিধুবন শব্দ অভিধানে 'ক্ষরত' অর্থে প্রসিদ্ধ বলিয়া 'প্ররত-মুঝ'। 'অধিক লাখ সঞ্জে' বাব্দ্যের অর্থ 'লক্ষ সংখ্যা অপেক্ষাও অধিক'।

১২-১৫। "হেরি" ইত্যাদি। অপূর্ব রাস-কলা-উৎসৰ দৃষ্টি করিতে করিতে করণের অর্থাৎ কন্দর্পের চিজে মন্মণ অর্থাৎ অপ্রাক্ত মন্ত্রন (শ্রীক্ষণ)
ধাঁধার তার বোধ হইল ! (শ্রীজগবানের নিকাদ
প্রেম-লীলা যে, কন্দর্পের নিকট হবোঁধা বলিরা
প্রতিভাত হইবে, তাহা সহজেই অন্থমের)। গগনে
নিজের গণ অর্থাৎ নাত্রসমূহের সভিত নিশাকর
চক্র (রাস-লীলা-দর্শনে) মুগ্র হইলেন এবং প্রদীণধারী অর্থাৎ মশাশ্চির ভার, (রাস-ত্বলী আলো
ক্রিড করিরা) টোদিগে ঘুরিতে লাগিলেন।

capia is

মণ্ডিত-ছন্নীযক-মণ্ডলাং ।
নটয়ন্ রাধাঞ্চল-কুণ্ডলাং ॥
নিখিল-কলা-সম্পদি পরিচয়া ।
প্রেয়সখি পশ্য নটভি মুরজয়ী ॥ প্রাণ ॥
মুন্তরান্দোলি ভ-রত্ন-বলয়ং ।
সনয়ন-বলয়ৎ • কর-কিশলয়ং ॥
গতি-ভঙ্গিভিরবশীকৃত-শশী ।
স্বিত-সনাতন-শঙ্কর-বশী ॥১৭॥১২৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮।১৫ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'ভৈরবী' প-র। ২। 'মগুলা' প-র-সা। ৩। 'কুগুলা' প-র-সা। ৪। প-র পুথি ব্যতীত অক্ষান্ত পুথিতে 'গ্রু' নাই। ৫। 'বলয়া' প-র-সা। ৬। 'সনয়ন' ইত্যাদি ছলে 'সনয়ন চলয়ন' ক, প-র; 'সনয়ন্ চলয়ন্' শ, চ; 'সনয়ন বলয়ন্' শ। ৭। 'কিশলয়া' প-র-সা।

नेवा

১০৮। "মজিতে" ত্যাদি। মঞ্জিং শোভিতং হলীবক মঞ্জণ রাদ-চক্রং বরা তাং চলকুঞ্জনাং চঞ্চলকর্ণাভরণাং গ্রীরাধাং নটারন্ নিধিল-ক্লা-সম্পুটো পরিচন্নী পারদর্শী মুরারি-র্নিটভি--হে প্রিয়স্থি। পঞ্চ। ক্থং নটভি? — মুহ্বারং বারং আন্দোলিতং রত্বলয়ং বিলা।
প্রশান নরনেন সহ বলয়ৎ বিল্পয়ৎ করকিশলয়ং
বিলা। তৎ বলা তাং তথেতি ক্রেয়া-বিশেবণং। মূরআরী পুন: কীলৃশঃ ?— গতিভঙ্গীতিঃ নৃত্যকালীনাঙ্গসঞ্চালন-বিশেবৈঃ অবশীক্ষতঃ কামাকুলীকৃতঃ শশী
চল্লো বেন। প্রশান হলিতঃ নিম্নেয়াছেকাৎ জড়ীকৃতঃ
সনাতনঃ তয়ামকো বোগীৠয়ঃ পকে তয়ামকঃ কবিঃ
শাস্ত্রশান বেন স চাসৌ বশী চেতি তালৃশঃ। 'কৃষ্ণবিক্রীড়িতং বীক্ষ্য ব্যম্হান্ ধেচরিল্লাঃ। কামার্দিতঃ
শাশাক্ষান সগণো বিন্মিতোহ্তবং॥' ইতি শ্রীদশমে
শ্রীক্তবাক্যমন্থ্যক্রম।

অভুবাদ

১—৮। ছে প্রিয়-স্থি। দেখা রাদ মগুল-শোভিনী চঞ্চল-কুগুলা জীরাধাকে নর্ভিত করিয়া নিখিল-কলা-পারদর্শী মুরারি নৃত্য করিতেছেন। নৃত্যবশে তাঁহার রছ-বলর বার্ষার আন্দোলিত ও নরনের সহিত কর-পল্লব বিঘূর্ণিত হইতেছে। জিতেজির তাঁহার নৃত্যকালীন অস্ভঙ্গী দর্শনে শশাস্ক কামাকুল এবং স্নাত্ন ও শঙ্কর স্তর্জাভূত হইতেছেন।

বিহগড়া।> প্ৰৰশ্ব।

কণু কণু কণু কুণু কুণু কুণু কুণু কুণু কৰণ কর বণরণি।

কম কম ঘাঁঘর ঘাঘটি কটি কিছিনি

কলণ কুমর ধননি ॥

ডগ মগ ডগ মগ ডফ ডিমিকি ভূমি
পী পী বেণু-নিসানে।

চলত চিত্র-গতি নর্তন-পদ অভি

মাধব ইহ রস গানে ॥১৮॥১২৭০॥

পাঠান্তর

বিহুপড়া ৷১

চৌদিকে চারু

রিদিনি কড গায়নিং।

ক্রেন্তাণ বৈয়া বৈয়া বোলনি।

মাঝে বিরাজে শ্রাম স্থড় শিরোমনি।

কিঙ্কিনিং কিনি কিনি বোলনি।

ভাগরং ন ধোগ্গা ঘেটিঙা ঘেটিঙা থেটিঙা থেটি
তী খেনে নাঙ্ঙীস্তম্ম ভীস্তম নাঙ্।

গরণ খেনাভীনি ডা খিটি তৃমং ভীম্বর ঝাঁ।

বর্ণিড রাস বিভাপতি সূর।

রাধামোহন দাস রস-পুর॥১৯॥১২৭১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২০৭ সংখ্যক পদ।
'বিহপড়া' হলে 'ডুক' প-র-সা। ২। 'গাউনি'
ক, ব, ব, চ। ৩। 'ক্রডা' হলে 'ক্রডাডা' ক,
ব, চ; 'কুডিডা ক্রডিডা' প-র-সা। ৪। 'বাবে

ক্ষণ ক্ষ' প-র-সা। ৫। 'তাপর' ইত্যাদি অবশিষ্ট পংক্তিভালি প-র-সা পুথিতে নাই।

(क्षांत्र १३

ও নব-জলধর অল ।
ইহ থির বিজুরি-তরক ॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহ কাঞ্চন দশবান ॥
রাধামাধবং মেলি।
মুরতি মদন-রস কেলি ॥
ও তমুণ তরুণ তমাল।
ইহ হেম যৃথি রসাল ॥
ও নব পতুমিনি সাল ।
ইহ মত মধুকর রাজ ॥
ও মুধ চানদ উজোর।
ইহ দিঠি লুবধ চকোর॥
অরুণ নিয়ত্তে পুন চন্দ ।
েগাবিন্দান রহু ধন্দ ॥২০।১২৭২॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১২।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রাধানাধ্ব' ফ্লে 'দেখ রাধানাধ্ব' প-র। ৩। 'নব' প-র। ৪। 'ছনদ'খ।

बिज्ञात ।>

রাস-অবসানে অবশ ভেল অর ।
বৈঠল ছত্ঁ জন রভস-তরক' ॥
শ্রেম-ভরে জল ধাম বহি যার।
কিছরিগণ করু চামরের বার ॥
পৈঠল সবত্ঁ বমুনা জল মাহ'।
পানি-সমরে ছত্ঁ করু অবগাহ' ॥
মাজি-মগন জলে মণ্ডলি কেল'।
ছত্ঁ ছত্ দেলি কর্ইণ জলখেল ॥

কণ্ঠ-মগন জলে করল পয়ান।
চুম্বরে নাহ তব সবহু বয়ান।
ছলে বলে কান্মু রাই লেই গেল।
যো অভিলাস করল ছহু মেল।
জল সঞ্জে উঠি সভে মোছই শরীর।
জন্ম বিধু-মণ্ডিত ধামুন তারু ॥
রাস-বিলাস করি পানি বিলাস।
দাস অনন্তক পুরল আশ ॥২১॥১২৭০॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-দাপুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'রভদ-তরক' হলে 'দথীগণ সফ' প-র-দা।
৩। 'ষাই'প-র-দা। ৪। 'কর অবগাই' প-র-দা।
৫। 'অঞ্চল ফেলি'প-র-দা। ৬। 'করল' প-র-দা।
দা 'তব' ক, ধ, চ; 'দব' প-র-দা।
৮। 'যামুন নীর'ক, চ; বিমুনাক তীর'প-র-দা।

८क्षांत्र १३ কেলি সমাধিং উঠল ছত্ত তীরহি বসন ভূষণ পরি অস। রতন-মন্দির মাহা বৈঠল নাগর করু বন-ভোজন⁴-র**জ**॥ व्यानत्म (को कक्न ७३। বিবিধ মিঠাই খীর বহু বনফল जुक्षरे नन्प-कि एपात ॥ अ ॥ মাগর-শেষ লেই সব রঙ্গিণি ভোজন করু রসপুঞ্চ। ভোজন সমধি তামুল সভে খাওল শৃতলিং নিজ নিজ কুঞে। ললিভানন্দ কুঞ্জ যমুনা-ভট• শৃতল যুগল কিশোর। দাস নরোত্তম করতহি সেবন অলস নয়ন হেরি ভোর ৷২২॥১২৭৪৷

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২৯ সংখ্যক পদ।
'কেদার' স্থলে 'বেহাগ' প-র-সা। ২। 'সমাধি'
স্থলে 'সমাধিয়া' প-র-সা। ৩। 'করু বন-ভোজন'
স্থলে 'করল ভোজন' প-র-সা। ৪। 'সজিনী'
প-র-সা। ৫। 'শুতলি' ক, ধ, প-র-সা। ৬।
'বামুন-ভট' ক, ধ, ঘ, চ।

कारमाम 13

কম্বম-আসন হেরি বামে কিশোরি গোরি रेवर्ठल कूक्ष-कूछीरव । চিবুকে দক্ষিণ কর ধরি প্রিয় গিরিধর मूर्थानि निष्या (लहे भिरत । (एथ मधि अशक्षण हात्म । প্রেম-জলধি মাঝে खुद**ल दृष्ट् कम** মনমপ পড়ি গেল ফান্দে ॥ শেজ বিরাজিও রভন পালক পর শৃতল যুগল কিশোর। শ্বের মধুর মুখ-পঙ্গল মনোহর মরকত কাঞ্চন জোর ৷ প্রিয় নর্ম্ম-সহচরি বীজন করে ধরি বীজাই মারুত মন্দ। শ্ৰেম্-জল সকল करनवत्र भौदेन হেরই পরম আনন্দ।

নিজ নিজ কুঞ্চে নিন্দ গেও স্থিগণ প্রিয়জন সেবই বিধানে ॥২৩॥১২৭৫॥
——

(भवन-मधुतिम-भारन।

আশ পদ-পকল-

মরোত্তম দাস

^{ধাৰণী।>} কো**ৰল-গশি-** কর-রম্যা-বনাল্ডর-নিশ্মিত-গীত-বিলাস^২। তুর্ণ-সমাগত-বল্লব-যৌবত-বীক্ষণ-ক্বত-পরিহাস॥ জয় জয় ভামু-মুতা-তট-রঙ্গ-মহানট इन्पत्र नन्त-क्रूमात्र। শরদক্ষীকুত-দিব্য-রসাবৃত-মক্লণ - রাদ - বিহার ॥ এ ॥ গোপী-চুম্বিড রাগণ-করম্বিড মান-বিলোকন-লীন। গুণ-বর্গোন্নত-রাধা সক্ষত भाक्त-भण्याम्धीन ॥ ত্বচনামূত-পান-মদাহ্যত-বলয়ীকুত-পরিবার। স্থর-তরুণীগণ-মতি-বিক্ষোভন খেলন-বল্লিত-হার॥ অমু-বিগাহন-নন্দিত-নিজ-জন-মপ্রিত-যমুনা -তার। হুখ-সন্থিদ্যন শূর্ণ-সনাতন निर्याम-नोम-भन्नोत्र ।२८॥১२१७॥ ইভ্যাদি শরৎকালীয়-মহারাসঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুৰির ৩৮।>৪ সংখ্যক পদ।
২। 'রসাল' ব। ৩। 'রসামৃত' ব। ৪। 'মঙাল'
ক, ব। ৫। 'রাজ' ব। ৬। 'বাস' ব। १।
'মুরামৃত' ক, ব, ব। ৮। 'বিলোভন' চ। ১।
'বামুন' ব, প-র-সা।

ी का

১—২০। "কোমলে"ত্যাদি। আনে এবণবং ব্যাধ্যারতে — ভাতুত্তভারাতট্যের রলঃ নর্কনয়ানং তত্র মহানট নটলিরোমণে হে স্থার নঝামার শ্রীকৃষ্ণ মং কর কর সর্কোৎকর্ষেণ বিরাকার। মং কীল্ণাঃ শুলারদি অকীকৃতঃ দিব্যোনাপ্রাক্তভাছ-রাগেণার্তে। মন্দ্রো রাস্বিহারো বেন তৎসবোধনং। भूनः कीकृभः ? -- ८कामन-मनि-कटेतः त्रत्या खन्तरत গীভবিহারকারিন্। তুর্ণদমাগত গোপ-বুবতিসমূহক ভাবীকণাম পরিহাদ-কারিন। হে গোপীচুম্বিত হে রাপকরম্বিত রাগাণাপকারিন কান্তানাং মানজ পর্বান্ত বিলোকনেন লান কুভান্তর্ভান ছে। ভাণবর্তৈকরতয়া অসমোদ্ধগুণবত্যা রাধয়া সহ সক্ত হে। ভক্তা যা সৌস্দ-সম্পৎ প্রেম-সম্পত্তিঃ ভক্তা অধীন। যথা গুণবর্গোলভারাং রাধারাং সভতা या সৌक्षममण्ये जम्भीन हर । 'क्रमाविविश मःभावः বাসনাবন্ধশৃঞ্জালাং। ভাধামাধার হৃদরে তত্যাক এক-**त्रमत्रीः ॥" रेखामि अग्रामत-(शारकन ओक्रक्ष**ना রাধাপ্রেমাধীনত্বং কুটমেব। ভাসাং গোপীনাং বানি বচনামুভানি ভেষাং পানেন ধো মদক্তবিষয়কেন প্ৰেৱা মন্ততা তেনাহত তাসাং সদস্থানীত হে। বন্ধী-কৃত: মণ্ডলাকারেণ স্থাপিত: পরিবার: গোপাগনা-রূপ-পরিক্রে। বেন তৎসম্বোধনং। - হুরতক্ণীনাং ৰৎ মতিবিক্ষোভনং বুদ্ধিচাঞ্চাস্তারকং থেলনং রাগ-নৰ্ত্তনং তেন ৰল্লিড: উল্লফ্নশীলো হারো ষ্প্য তৎ-मरचाधनः। अपूर्विशाहरनन अन-क्रोएबा निसरेठः श्रीनिटेखः निवक्टनम खिलः यमूनाजीतः यन ७९-স্বোধনং। স্থং আনন্দঃ স্থিৎ জ্ঞানং তয়োর্থনঃ শাক্ষানন্দবিজ্ঞানরূপ ইত্যর্থঃ পূর্বঃ আপ্রকামঃ সনা-ভনক্তে ভৎসংখাধনং। পক্তে সুধসম্বিদ্বনেন পুৰ: কুতাৰ্থীকুতঃ সনাতননামা ক্ৰিৰ্থেন তৎসংখাধনং। मिर्चन-नीनभंदीय व्यमन-स्मीन-करनवर।

অন্থবাৰ

> — ২০। বমুনা-তট-রজভূমির নটরাজ হে
স্থান্থর নন্দকুমার ! তোমার জয় হউক। তুমি
শারৎকালে অপ্রাক্ষত-রস-পূর্ণ মললজনক রাস-বিহার
প্রকাশিত করিয়াছ। তুমি কোমলচন্দ্র-কিরণ বারা
স্থান্থর বন-স্থলীতে গীত-বিলাসের অফুর্চান ও দ্বরার
সহিত স্মাগত গোপ-ব্রতিগণের ভাব-পরীক্ষার
নিমিদ্ধ পরিহাস করিয়াছ। হে গোপীচুম্বিত রাগালাপ্রারী শীক্ষণ। তুমি প্রিয়াগণের পর্ম্ব-তাব
দর্শনে অন্তর্ধিত হইয়া শ্বণ-প্রণ-ব্রেশ্যা শ্রীরাধার

সহিত সমিলিত এবং তাঁহার প্রেম-সম্পাদের অধীন হইরাছ। তুমি গোপীগণের তৎকালীন প্রেম-পূর্ণ বচনামূত-পানে বিমুগ্ধ হইয়া তাঁহাদিগের সমীপে উপস্থিত ও তাঁহাদিগের বারা পরিবেটিত হইয়াছ এবং তুমি হৢবয়না-গণের চিভোন্মাদক জ্রীড়া বারা চক্ষণ-হার-বিশিষ্ট হইয়া বিরাজ করিতেছ। ভোমার জল-কেলির বারা আনন্দিত গোপাসনারূপ পরিজ্ঞ বারা ব্যুনার তার-ভূমি স্থুশোভিত হইয়াছে। ছে নির্ম্মণ-নীল-কলেবর খ্রীকৃষ্ণ। তুমি চিদানন্দ-মূর্ত্তি ও পূর্ণ-সনাতন। প্রেম-তুমি চিদানন্দ বারা কবি সনাতনকে কৃত্যার্থ করিয়াছ।)

ন্ট্রীতৈতক্ত-নিত্যানন্দ-চরণ-ধ্যানেন এড্বন্যাতসংগ্রহঃ।

> অথ পুন×চ রা**সঃ।** শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

> > कारमान ।

দং ত্রিমিকি ত্রিমি² মাদল বা**ল**ভ কওলুঁ তান স্থভাসুয়া²।

অধিল ভুবনক নাধ নাচত শ্রীবাস আদি সভে গামুয়াও ॥

জামু-লবিত বাহ-যুগল

কলিভ কলধোত ঠামুয়া।

অরুণ-অন্বরে ভূবন ভগমণি

বৈছে প্ৰাতর*-ভাতুয়া। খণহি কম্পিত খণছি পুশকিত

খণহি কর্যুগ-চালমা^e।

খণহি উচ করি বোলই হরি হরি

পুরব-প্রেমক পালনা 🛚

हाँ मन्दर्भाष्ठ डाक्त चरेबड

সঙ্গে সহচর মেলিয়া।

পাঠান্তর

১। 'জিমি' ছলে 'জিমি জিমি' ক, ধ, চ।
২। 'তান স্তার্থা' ছলে 'তাল স্তার্থা' ক, ধ।
৩। 'গাস্থা' ব; 'গাজ্ঞা' চ। ৪। 'পাতর'
ক, ধ। ৫। 'কর্থুগলানা' ব। ৬ 'দরবৃতি' ক, ধ।

কেবার ৷১

একে দে মোহন যমুনাং কুল আরে দে॰ কেলি-কদম্ব-মূল আবে সেং বিবিধ ফুটল ফুলং আরে সে শরদ-যামিন। ভ্রমরা ভ্রমরি করত রাব পিকু কুছ কুছ করত গাব সঙ্গিনি রঞ্জিণি মধুর বোলনিং বিবিধ রাগ গায়নি। বয়দ কিশোর মোহন ঠাম নির্থি মূরছি পড়ত কাম স্কল-কলদ-শ্যাম-ধাম शियुल्य वनन मामिनि। भाष्ट्रणभ्य प्रवाप्त कालि १० (शांत्रि বিবিধ বসন > বনি কিশোরি নাচত গারত রস-বিভোরি ১৫ नवर्षं ^{२७} वत्रक-कामिनि । বিণা কপিনাসং পিনাক ভালং নপ্ত-সূর্ণ বাজত তাল **এ সর-মণ্ডল মন্দিরা** ডক্ফং (मिनिरे क्डह रेर गायमि। भूभूत भूक्तर मधूत (वान योनन ननमर्ग्नहेन (लालर्ग হাসি হাসি কেহং করত কোল ভালি ভালি । বোলনি।

বলরাম দাস পঢ় ৬২৮ তাল গাওত মধুর অভি রসাল শুনত শুনতংশ জগত উমত হৃদয়-পুতলি দোলনি ॥২৬॥১২৭৮॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুৰির ৩৮।১১ সংখ্যক পদ। २। 'वमूनांब' क, थ। ७-८। ৫। 'ফুল' ক, ধ, চ, প-র। ৬। 'রাব' চ। ৭। 'মধুর বোলনি' ছলে 'সঞ্জি ধার' প-র। ৮। 'বিবিধ' ইত্যাদি স্থলে 'গাওত বিবিধ রাগিণী' 'ञ्च्यव' भ-व। >। 'शिव्रणि' প-র। ১১। 'শাঙলি' প-র। ১২। 'ধ্বলি' भ-ता २०। 'कांनिम' क, **५**, ह। २८। 'वन्रत्न' ১৫। 'कब्रज (कनि' 'সঙ্গিডি' প-র। ১৭। 'বিনা কপিনাস' ভালে 'विनोक विभाग' भ-त्र। ১৮। 'त्रोव' भ-त्र। ১৯। 'বীণা সপ্তাহরা' প-র। ২০। 'ডম্ভু'ক ; 'ডম্পু' **छ । २२ । '(क्नि' क् च । २२ । 'क्व्नुड' न-व्र**। २०। 'वांतर' भ-ता २८। 'यन यम यान' भ-ता २६। '(ज्ञान' भन्त्र। २७। '(क्ह' क्, थ। २१। 'कांगि कांगि' च, च, ठ; 'कांग कांग' भ-त्र। २৮। 'शर्वेख' सं; 'भक्ष्य' ह। २२। 'क्न्छ' क्, 4, 4, 51

তথা নাগ।>
নাচত বৃথভাতুং-কিশোরি
অঙ্গে অঙ্গে বাহু জোরি
মেব উপরে হৈছে দামিনি
কিরত ঐছন ভাতিয়া।।
তক্ষ তমাল শ্রামনাল
মাবে রহত ধরত তাল
ভালি ভালি করত রহত।
গম্ম মন্থর পাডিয়া।।

মুপুর বলয়া কন্ধণ সাজ কন কন কন্দ কিন্ধিণি বাজ ভালে রিঝত স্বত্দেখর

ভূবল জলদ-কাতিয়া'' ।
বসন ভূষণ কবরি-ভার
খোলি পড়ত বার বার 'ব
হসত খসত কোই পড়ত
রঙ্গিণি রজে মাতিয়া ॥
তাল মূদক্ষ' ডক্ষ বাজ্ঞ'
বিণা পাখোয়াজ মধুর গাজ'
ভানন্দে মগন বুখভামু-মুভা'
সব স্থিগণ সঙ্গিয়া ।
রস-ভবে উহ' খীণ্ড অক্স
রাই বৈঠলি শ্যাম সঞ্জ

কাসু-অচ্চে অজিয়া^২ ॥২৭॥১২৭৯॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ও প-র পৃথির ৩৮।১ সংখ্যুক পদ। ২। 'বুষভাম' ক, ধ, খ, চ, প-ব্ল-সা। ৩। 'বৈছে দামিনি' স্থলে 'জ্মু (त्रोशियनी' श-द-त्रा; '(यन त्रोशियनि' श-द। 8 I 'ভাঁভিন্ন' চ; 'পাভিন্ন' প-র-সা। ৫। 'মাঝে' প-র। 🗣। 'বছত' প-র; 'বছ' প-র-সা। १। 'পাঁতিয়া' **Б; 'छा**डिवा'्श-द-त्रा, श-द। ७। 'कन कन কন' ছালে 'কুমু কুমু কুমু' প-র-সা; 'রুমু রুমু কুমু' প-র। ৯। 'রীঝড' ক, ধ, ঘ, চ। ১০। 'হুগর-(मथम् ११-त । ১১। 'त्रिकिनिस्मा' ११-त-मा 'রস্ক সিহুলা' প-র। ১২। 'বারহি বার' প-র-সা, প-র। ১৩। 'ভাল মুদদ' ছলে 'বিবিধ ভাল মিলি' প-র। ১৪। 'ডক্ষ বাল' ছলে 'পাধওাল' প-র-সা; 'পাধারু' প-র। ১৫। 'বিনা' ইত্যাদি ছলে 'ভক্ষ বীণা ঝাৰুর গাৰু' প-র-সা; 'বীণ ডগু কতহি বাজ' প-র। ১৬। 'ভাসুনব্দিনি' প-র।

১৭। 'উলসই' প-র-সা; 'স্ব' প-র। ১৮। 'শিপিল' প-র। ১৯। 'রহত' প-র-সা; 'কান' প-র। ২০। 'কাফ' ইত্যাদি থলে 'আলে আল হেলিয়া' প-র।

বিহুগড়া।১

সঙ্গে শোহনং नम-नमन নওল গোকুল-কামিনি। তপন-নিম্মনি-তীরে ভালি বনি ভুবন-মোহন লাবণি ॥ ভাভা পৈয়া পৈয়াণ বাজে পাধাওজ মুখর কন্ধণ কিন্দিণি। বিলসে গোবিন্দ প্রেম-আনন্দ সজে নব নব রঞ্জিণি । তুত্ঁক অসম্ব গ্ভতাবী ফাব भवत्व व्यक्षण (पानिनः। ভরলদ শ্রামজল ত্বত কলেবর মোতি মরকত হেম মণি 🛭 বাজত কিঙ্কিণি উর্হিঁ ১০ লোলনি মুপুর-ধ্বনি অমুসঞ্চিয়া। नग्रन-नाठनिभ्भ গীম-দোলনি সলে রসবভি রকিয়া^{১২}॥ বিবিধ বিলস্ই ১৩ রাদে মধিব সঙ্গে সজিনি । মাতিয়া। খ্যাম-সুরতি नील प्रत्रभगः হেরত গোবিন্দ দাসিয়া।২৮।১২৮০।

পাঠান্তর

ইং। প-র-সা পুলির ও প-র পুলির ওচাচত সংখ্যক পদ। 'বিহুগড়া' স্থলে 'কেদার' প-র। হ। 'মোহন' প-র-সা। ৩। 'তাবৈ তাবৈ' প-র-সা; 'তা তা বৈ বৈ' প-র। ৪। 'বাজে পাঝাওক' স্থলে 'মুদক বাজত' প-র-সা; 'মুদক বাজত' প-র। ৪। 'তাঁক চিজিত' ইত্যাদি স্বব-

শিষ্ট কলিঞ্চলির পরিবর্ত্তে প-র-সা পুথিতে নিয়-লিখিত পাঠ আছে ; বর্থা,— 'উরে লখিত কনক চম্পক-দাম কর্দিম চন্দনে।

দাম কন্দম চন্দ্ৰনে।
দোহ কলেবর ভেল প্রমঞ্জল
মোতি মরকত কাঞ্চনে।
রালে মাতল সলে বড় ঋড়
কুঞ্চনাননে রাজই।

ভক শিখী শিক চাতক ডাছক ভ্ৰমরা পঞ্চম গার্হ ॥

রাগ মঞ্জল গোণিনীকুল শ্রাম সঞ্জে নব রলিথী। কেই করতালি বোলে ভালি ভালি কাশীদাস বলি জাইনি ॥'

৬। 'কিঞ্চত' প-র। १। 'দোলনে' প-র।
৮। 'ভেল' প-র। ১। 'কাঞ্নে' প-র। ১৽।
'উরছি রণরনি' প-র। ১১। 'চাংনী' প-র।
১২। 'নজিয়া' প-র। ১০। 'রাসে' ইত্যাদি
ব্লে প-র পুথির পাঠ, মধা—

'রাসে মধুকর কুঞ্জে নাচত' ১৪। 'রস্বতি' প-র। ১৫। 'দরপণে' প-র। বিহণড়া।

নাচে রে নাগর-শিরোমণি।

মুখে মুখে পাটোয়ার স্থাড় রমণী॥

রক্ষিম অধরে মৃত্ন মধুরিম হাস।

বঙ্ক নেহারণি পিরিভি-সম্ভাষ॥

বৈ ভাভা থৈ ভাভা কেহ কেহ বোল।

বলয়াং-মুপুর মণি-কিঙ্কিণি বোল॥

চৌদিগে গাওত কভ কভ রমণী।

মাঝে বিরাজে শ্রাম স্বাড়-শিরোমণি॥

॥২৯৮১২৮১॥

পাঠান্তর ১। 'বুৰে বুৰে' ক। ২। 'কনরা' ক। (क्शंत्र ।

নটছি নটবর রাস-মগুল রমণি-মগুল মাঝ রে। বেংম-করিণী- নিকর জাল্পরে

বিহরে কুঞ্জর-রাজ রে ॥

কনয়া-কঙ্কণ ঝনর ঝন ঝন রঙন-কিজিণি বোল রে।

জিমিকি জিমি জিমি ভাগ ভাগৰ ব রাস-রসে মন ভোর রে ॥

গোরি গোপিনি বাছ স্বলনি শ্যাম তরুণ তমাল রে।

रियट्ड रागूनाक गांदश विश्वहर

কনকময় মিরিণাল রে।

স্থভগং আনন ঘামময়-কণ মুদিত মনসিজ আছে।

দাস অনস্ত করে ও রূপণ বরণি নহে বরিশে কত কত রঙ্গ ॥৩০॥১২৮২॥

পাঠান্তর

ঠ। 'নটহি' ছলে 'নটহি' খ, চ। 'নটই' বোধ হয় শুদ্ধ পাঠ হইবে। ২। 'স্কুত্ক' ছ। ৩। 'ও দ্বপ' ছলে 'দ্বপেয়' ক, খ।

कारमाय ।

চন্দন চান্দ কুহুম নব কিশলর
মন্দ পবন পিকু-রাব।
বরিহা কপোত জোরে জোরে নাচত
চীতক নিজ পরখাব ॥
ভালি রে ভালি অভিনব মদন-সমাজে।
রাধা রসবতি অভি রসে আরতি
কামু রসিক-বর রাজে॥ ঞা॥
কুহুমিত কুঞ্চই রঞ্জন মনসিক

नव नव त्रक्रिशि (मिनि।

রসময় ভ্রম কতত্ঁ রস মধুকরি

শুমি শুমি করু রস-কেলি ॥

ধনি রে ধনি রে ধনি ছেত্ঁ রুপ সাবণি

ধনি বৈদগধি কত ভাতি।

জার কেই কত্ঁ কত ছুত্ঁ রুসে উন্মত

জ্ঞান কৰে নাহি দিন রাতি॥

॥৩০॥১২৮৩॥

পাঠান্তর ১। ক্লপ'ক। ২। কেহ'থ।

তথা রাগ।

মনমথ-যন্ত্ৰ-স্থার স্থনায়রি
শ্রামস্কর রস-সীম।
সব বৈচিত্র-কলা-রস-চাতৃরি
নাগরি গুণ-গরীমণ॥
বিলসই রাসে রসিকবর কান।
রাই বিনোদিনি শোভই বাম॥ ধ্রু॥
নয়নক অঞ্জন কামু-কৃত রেখহিং
রাই তাহি ভেল ভোর।
প্রেমে পরশ-রস লিলাও-রস-লহরি
তৃত্ত তমু ভাবে উলোর॥
চঞ্চল চারু চিকুরে শিথি-চন্দ্রক
স্করে সিন্দুর দাগ।
সূত্র ক্লেয়ে উদয় স্থ-সম্পদ
ভ্রান কাহে ধনি অমুরাগ॥৩২॥১২৮৪॥
গাঠান্তর

১। 'खन शतिम' क; 'खन गतीम' ४, घ। २। 'त्रिचरि', क, ह। ७। 'नीना' क।

> হুবই। নাগরি নাগর ভাগে রসরাজে । রজে মিলল ছুর্ভু মণ্ডলি মাঝে ।

অভিরসে পুলকিত অক।
উপজত কত কত মদন তরক।
বিগলিত কেশ-বেশ জেল অক।
রতি-রস-আবেশে বাঢ়ল ছুহুঁ রক॥
রাসে রসিকবর বিলসই রাধা।
গৌর আধ তুমু শুনমর আধা॥ এছ।
ছুহুঁ সুখে আপনে নাহি রস-ওর।
হেম মরকত জুমু লাগল জোর॥
ভুজে ভুজে বেটি অধর-রস নেল।
ছুহুঁ মুখ-চাঁদে ছুহুঁ চুম্বন দেল॥
ছুহুঁ কুমরম ছুহুঁ জানল ভাল।
ভুগান্দাস কহে মদন দালাল॥৩০॥১২৮৫॥
পাঠান্তর

১। 'রসরাজে' ছলে 'রাজে' ক. ধ।

বেলোয়ার।

রাস-বিলাসে রসিক বর-নাগর विलंगरे तमवि मात्य । कुछँ वनि वस वग्रम देवनगिष অবধি করিয়া ধনি সাজে ॥ এক অপক্লপ রস এহ খিতি-মণ্ডলে মধুময় কুন্থমিত-কুঞ্চে। রাধা রাভি দিবস রস-আরভি শ্যামর-ঘন-রস-পুঞে I অলিকুল-রবঃ শুক-রাব। Cक् किलकुल शक्त शक्षम गांव ॥ अ ॥ ক্ষিরত মনোহর মউরক পাঁতি। মদন-হাট পড়য়ে দিন রাভি॥ বাজত বিবিধ যন্ত্ৰ একতান। নিজ সব সজে রজে রস গান । নারি পুরুষ ছুহুঁ ভাবে বিভোর। छ।नमात्र कह कि कहर ७३२ । ०४॥ ३२४७। পাঠান্তর

১। 'বর' ক, ধ। ২। অবংপর ক, ছ ও চপুথিতে নিয়লিথিত প্রক্রিংগ পদ্টি দৃষ্ট হয়, যথা,— মহতা।

সংজে শ্রাম মনোহর ছালা।
লীলা-রগুস মনোহর ফালা॥
তাহে কত বেশবিশেব পরিপাটি।
হেমমণি রমণিক হৃদরক শাটি॥
ধনি বনি আওল নোহন রার।
ব্রু-বনিতা বনি সন্ধিত গার॥
ভালে বিলম্বিত চন্দ্রক-তৃড়।
কত কত মধুকর উনমত উড়॥
কিরে হির-হারক চন্দ্রক-জোতি।
বুফু আহিমার তলে গ্রু-মোতি॥
কটি কিমিণি ধটি উপরে কাছ।
কর্মন সৌলামিনি ধির আছ॥
চরণকমল মণিমন্তির বোল।
ভানদাস আনন্দ্র উত্রোল॥

এই পদটি ধ পুথিতে নাই ও ইহার সহিত রাসলীলার পুর্বের ও পরের পদগুলির সামঞ্জ নাই।
ইহাকে প্রক্ষিপ্ত না বলিলে ২৪শ প্রবের নির্দিষ্ট
পদসংখ্যা অপেকা একটি পদ বৈনী হইরা পড়ে;
স্থতরাং ত্রিবিধ কারণেই এই পদটি প্রক্ষিপ্ত বলিয়া
বুবা বাইতেছে।

क्रव्हेंबी ।

বিলসে গোবিন্দ প্রেম-আনন্দ সক্ষে নব নব রঙ্গিণি। চারু চিত্রিত তুছুঁক অম্বর পবনে কিঞ্চিত দোলনি॥ উরে লম্বিত হার চম্পাক-দাম কর্দ্দিম চন্দনে।

ছুই ক কলেবর ভরল শ্রাম-জল মোভি মরকভ কাঞ্চনে । কনক দরপণ

ভাল বেচল

প্রেম-দোলান

মাঝে শুগাম নট-রাজ রে। নৰিন জলধরে থীর বিজ্ঞুরী নবিন শশধর সাজ রে॥

বলয়া রণরণি কনক-কিঙ্কিণি মুপুর-ধর্মন অমুসন্ধিয়া।

नग्न-ठांश्न

टिवरे नव नव बिषया ॥०८॥>२৮१॥

পাঠান্তর

১২৮• সংখ্যক পদের ৫ সংখ্যক পাঠান্তর জইবা।

(बटनायांत्र।

विनिष्टिन द्रांधा नव नागद्र कान। निव-विनाम-छेनाम शूनक-छुनू এক শক্তি ছুই একই পরাণ॥ ধ্রু॥ একে নব কুঞ্জ কুস্থম অতি মনহর ভ্রমরা ভ্রমরিগণ গাওয়ে রসাল। রতনক দীপ নীপ পর হিমকর मननरप्त रमाहन नहेत्राकः ॥ বাজত বলয় মুপুর মণি-কিন্ধিণি শ্যাম-বামে রহু গোরি কিশোরি। ভুজ হতুঁ হতুঁক কান্ধ পর শোভই नव वातिए अञ्च विनष् विकृति ॥ মৃত্ব মধুরশ্মিত মিলিত-দুগঞ্চল আনন্দে হেরি হছ হুছ ক বয়ান। অধিল ভুবন স্থ-সাগরে শুভল জ্ঞানদাস চিতে ঐছন ভান 🛭 10617511

পাঠান্তর

>। সকল পূথিতেই 'নটরাল' পাঠ আছে— ব্যাধি তাহাতে হীন-মিলন দোব ঘটে। ২। 'বিনোহ' ক। ৩। 'গুডল' ক, ধ। বিহপড়া।

ছুহঁ জন নটন- পরিশ্রম অভিশয় প্রিয়-সহচরিগণ মেলি। নিকটিই যমুনা- নীর স্থীতল পৈঠি করত জল-কেলি।

পৈঠি করত জল-কেলি॥
দেশ রাধামাধব রজে।

হেম-কমলিনি সঞ্চে নাল-কমল জন্ম ভাসই ধমুনা-তরকে॥ গ স্থিগণ করে কর-বন্ধন

মাঝহি রাধা কান। জল-মণ্ডুকং-ধনিং করে জ

জল-মণ্ডুকং-ধনিও করে জল উছলনি
আনন্দে করল সিনান ॥
অপদ্ধপ শ্রামচরিত কোই সমুঝব
সঝি সঞ্জে কেলি-বিলাস।
সব জন মরমে নিকটে মঝু বিহরত
কহতহিঁইহু শ্রামদাস ॥৩৭১২৮৯॥

ণাঠান্তর

১। 'ज्ञात' क। २। 'मुखक' ची ७। 'स्वनि' क,चो

তথা রাগ।

রাধানাধব সথিগণ সন্ত।
নাহি উঠল ভিরে মাহল অল ।
সভে নেলি কয়ল বসন পরিধান।
করতহি বছবিধ বেশ বনান ।
বৈঠল তুহুঁ জন নিরজন-কুঞ্জে।
রভন-পীঠ পর আনন্দ-পুঞ্জে।
বছ উপহার ভাহি আনি দেল।
ভোজন কয়ল স্থীগণ মেল ।
ভোজন কারি শয়ন-পরিষ্কে।
মাগরি শুভলং নাগর-ক্ষে ।

লিলতা ভামূল বীড় বনাই। উদ্ধবদাস কৰে দেওব° যোগাই॥
॥৩৮॥১২৯০॥

পাঠান্তর

)। 'छोदा' क, था २। 'छछन' का ७। 'करद रमध्य' यूरन 'करद रमधन' ह।

श्नम्ह ।

ধানশী।

শরদ-পূর্ণিমা নিরমল রাভি উল্লোর সকল বন। মল্লিকা মালভী বিক্সিভ ভ্রিণ

মল্লিকা মালতী বিক্সিত তথি³ মাতল ভ্ৰমরাগণ।

তরুকুল ভাল ফুলং ভরি ডাল সৌরভ পুরিল তায়। দেখিয়া সে শোভা জগ-মন-লোজা

দেখিয়া সে শাে্ডা জগ-মন-লােডা ভূলিলা নাগর-রায়॥

নিধ্বনে আছে রভন-বেদিকা
মণি মাণিকেতে বান্ধা।
ফটিকের তরু শোভিয়াছে চারু
ভাহাতে হীরার ছান্দা॥
চারি পালে পাজে প্রবাল মুকুতা

গাঁথনি॰ মাঠনি কত। তাহাতে বেঢ়িয়া কুঞ্জ-কুটীর

নিরমাণ শত শত ॥
নেতের পতাকা উড়িছে উপরে
কি তার কহিব শোভা।

অভি রম্য স্থল বেশ°-আপোচর কি কহিব ভার আভা॥

মাণিকের ঘটা কিরণের ছটা এমতি মণ্ডপ-ঘর। পাঠাস্তর

১। 'ততি'ক,খ,চা ২া 'ফল' থ, খা ' ৩। 'গাখনি'ম,চা ৪। 'দেব'ধ।

कांट्यांव ।

রমণী-মোহন বিলসিতে মন
হইল মরমে পুনি।
গিরা বৃন্দাবনে বসিলা যতনে
রমিতে বরজ-ধনি॥
ব্যুর মুরলী পুরে বনমালী

त्रांश त्रांश कित शान।

একাকী গভীর বনের ভিতর বাজায় কডেক তান ।

সমিয়া-নিছন বাজিছে স্থন মধুর মুর্লী-গীত।

অবিচল কুল-রমণী সকল শুনিয়া হরল চিত।

শুৰণে বাইয়া রহল পশিয়া বেকতে বাজিছে বাঁশী।

আইস আইস বলি ডাকয়ে মুরলী থেন ভেল সুখ-রাশি॥

जानम-जवम शूलक-मानम

গৃহ-কর্ম বত হৈল বিসরিত সকল করিল বাধে ঃ

রাইরের অগ্রেতে বতেক রমণী কহরে মধুর বাণী।

ওই ওই শুন কিবা বাজে তান কেমন করয়ে প্রাণী॥ সহিতে না পাার মুরলীর ধ্বনি পশিল হিয়ার মাঝে।

বরজ-ভরুণী হইল বাউরী হরিল কুলের লাজে ।

কেহো পতি সনে আছিল শয়নে ত্যজিয়া ভাষার সক্ষ।

কেহো বা আছিল সখীর সহিত কহিতে^১ রভদ-রক্স।

কেহো বা আছিল প্লগ্ধ-আবর্তনে চুলাতে রাখি বেসালি।

ভেজি আবর্ত্তন হই আনমন ঐছনে সে গেল চলি॥

কেহে। শিশু লৈয়া কোলেতে করিয়া ছগ্ম করায়ে^২ পান।

শিশু ফেলি ভূমে চলি গেল প্রমে শুনি মুরলীর গান ৷

কেহো বা আছিল শর্ম করিয়া নয়ানে আছিল নিন্দ।

যেন কেহো আসি চোরাই লইল° মানসে কাটিয়া সিদ্ধ° ■

কেহো বা আছিল বন্ধন করিতে তেমতি চলিয়া গেল।

কৃষ্ণ-মুখী হৈয়া মুরলী শুনিয়া সব বিসরিত ভেল ॥

সকল রমণী ধাইল অমনি কেহো কাহো° নাহি মানে।

যমুনার কুলে কলন্থের মূলে মিলল স্থামের সনে ॥

ত্ৰ-নারীগণ দেখিয়া তথ্য

রাস-বিলসন করল বচন বিজ চণ্ডীদাসে গার ৪৪০॥১২৯২॥

रानिया नागव-वाव ।

পাঠান্তর

১। 'ক্রিডে' ঘ। ২। 'করায়েন' ক।
৩। 'বেন' ইত্যাদি ছলে 'বেন চোরাই লইল' ক;
'বে কেহো' ইত্যাদি ঘ। ৪। 'সিন্দ' ক; 'সীম্ন'
থ। ৫। 'কেহ কাহা' ক; 'কেহোঁ কাহোঁ' চ।

মঙ্গল।

হেরি হর্ষিত মন ব্ৰজ-নাগরিগণ নাগর নটবর-রাজ। উলাসহি নিমগন নটন-বিলাস-**ट्रिक्टिंगर त्रम्शि-ममाञ्ज** ॥ করে কর ধরাধরি যুথে যুথে মেলি মণ্ডলি রচিয়া স্থঠান। উপান্ন পাখাওজ বাজত বীণ মাঝহি রাধা কান॥ গগনহিঁ । নিরমল শরদ-স্থাকর কাননে কুন্তুম-বিকাশ। গাওয়ে অতি হস্তর কোকিল ভ্ৰমৰ অমল কমল পরকাশ । হেরি হেরি ফেরি ফেরি বাছ ধরাধরি নাচত রঙ্গিণি মেলি। নাগর রসময় জ্ঞানদাস কহ

পাঠান্তর

করু কত কোতুক-কেলি॥

187175201

>। 'রম পীগণ' ক; 'নারিগণ' থ, চ। ২। 'চৌদপে' ক। ৩। 'র্থে মুখে' ব। ৪। 'গগনহি' ব, চ। ৫। 'ফেরি ফেরি' হলে 'ফিরি ফিরি'
ক; 'কেরি' ব। ৬। 'কর' ক।

(क्लांच ।

স্ঠামর-স্কল-কলারস-সীম। পোরি নাগরি কড গুণহি পরীম। তুহুঁ বনি বেশ বয়স এক-ছান্দ।
বাজিত কঞ্চ মুঞ্জ মুখ- চাঁদ॥
বিলসই বাসে রসিক-বর নাহ।
নয়নে নয়নে কত রস নিরবাহ॥
তুহুঁ বৈদগধি তুহুঁ হিয়ে হিয়ে লাগ।
তুহুঁ ক মরমে পৈঠে তুহুঁ ক সোহাগ॥
তুহুঁ ক পরশ-রসে তুহুঁ ভেল ভোর।
বোলইতে বয়নে উগয়ে নাহি বোল॥
পুরল তুহুঁ ক মনোরথ-সিন্ধু।
উছলিত ভেল তহিঁ সেদ বিন্দু বিন্দু
তুহুঁ ক পরশ-রসে তুহুঁ উমভায়।
ভ্যানদাস কহ মদন সহায়।৪২১১২৯৪॥

পাঠান্তর

১। 'কুল' ঘ। ২। 'মূল' পাঠ সকল পুৰি-তেই দৃষ্ট হয়। বোধ হয়, 'মল্লু' শুদ্ধ পাঠ হইবে। ৩। 'বিলসহ' ব। ৪। 'ভেল তহি' খলে 'ফ্রু ভেল' ঘ। ,

युहरे ।

কুত্ম নব পল্লৰ কুঞ্জ-কুটীর ভ্রমরা ভ্রমরি কত রঙ্গে। সারি নারি শুক পুরুষ যোড়ে যোড়েং মউর মউরি ক**ভ[ং] সঙ্গ**॥ রস অতি মোহন ভুকনে অমুপ রাস-ষড়-ঋতু নব নিভি নিভি। নিভি নব নিরবাছে রাই কামু তাহে খেনে খেনে নবিন পিরিতি॥ পরশিতে গুণ দশ নয়নে নয়নে রস ি বিহুসিতে শত গুণ রঙ্গ। হৃদয় পরশাইতে ८४८न ८४८न छन्टन ভাবে ভরয়ে হ্রু অস।

নাচত গাওত হৈশই কোই বাওত বিলসিতে বিগলিত বেশ। জ্ঞানদাস কহ আবেশে অবশ তমু

1891759811

পাঠান্তর

১। 'কোরে কোরে' ছ। ২। 'মউরি কত' ছলে 'ময়্রীক' ক; 'মউরিক' ছ, চ। ৩। 'রোষ' ক, খ। ৪। 'দোহ' ক, খ।

वित्रांत्र 15

खति माग्रतश-(कांत्र[®]। বিলসই রাই পুষ্বের নাহি ওর ॥এ॥ ধনি বক্তিণি রাই। विनम्हे हित मुद्धि द्रम व्यवगारे। হরি মানস সাধা। বিলসই শ্রাম পরাজিত রাধা ॥ হরি ফুন্দর মুখে। ভামুল দেই চুম্বই নিজ হুখে"। ধনি রঙ্গিণি ভোর। ভূলল গরবে কামু করি কোর॥ हुएँ हुएँ छन भाग्रे । একই মুরলি-রক্ষে তুজন বাজায়। (कर करर मृष्ट्र ভाष। া নাগরি-পরশে অবশ পিতবাস। क्ष्य कां कि नाम (वर् । রাস-রসে আজু ভূলল কাসু।

1881**)** 2261

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পুথির ২৫।৮ সংখ্যক পদ। 'শ্রীরাণ' ছলে 'কেদার' প-র। ২। 'ভরি নারর' ছলে 'হরি নাররি' প-র। ৩। থ পুথিতে প্রভ্যেক অব্থা চরণের পেবে (২) অর্থাৎ প্নকৃতির চিছ্
আছে, প্রতরাং ও পুথির মতাস্থারে 'গুরি নারর-কোর
ভরি নারর-কোর।' ইত্যাদি পাঠ ব্রিতে হইবে।
৪। 'নাররী' ক, ব। ৫। 'বিদদই হরি সঞ্জে'
ছলে 'হরি বিদদই কত' প-র। ৬। 'প্রাভব' প-র।
৭। 'মুবে' প-র। ৮। 'চুঘই নিজ প্রবে' হলে
'চুঘন ঘন স্বে' প-র। ৮। 'চুঘই নিজ প্রবে' হলে
'চুঘন ঘন স্বে' প-র। ৯। 'জুলল' ক, ব। ১০।
'ছহ' ইত্যাদি পরবর্ত্তী কলিগুলি প-র পুথিতে নাই,
তৎপরিবর্জে নিম্নলিবিত ভণিতা দৃষ্ট হয়, ববা—
'বিদ্যাপতি কবি ভাষ।
কহতহি হেরত গোবিস্কাশ ম'

यहरें।

আজু রসে বাদর নিশি।
প্রেমে ভাসল সব বৃদ্দাবন-বাসী ॥
খ্যাম-খন বরিধয়ে কত রস-ধার।
কোরে রলিণি রাধা বিজুরি সঞার ॥
ভাবে পিছল পথ গমন স্বকং।
মৃগমদ-চন্দন-পরিমল পক্ষ ॥
দীগা বিদিগ নাহি প্রেমের পাধার।
ভূবল নরোত্তম না জানে সাঁভার ॥

পাঠান্তর

1186122291

>। 'রদের' খা ২। 'হেরফ' খা ৩। 'দিগ' কা

শীৰাপ।

আবে, নিকুঞ্জ-বনে শ্রাহের সনে
কিন্নপ দেখিপুঁ রাই ।

কেমন বিধাতা গঢ়লং মুরভি
লখই নাহিক বাই ।

সজল জলদ কামুর বরণ
চম্পক-বরণী রাই ।

ম্পি মরকভ কাঞ্চনে জড়িভ
থীছন রহল ঠাই ॥

কিয়ে অপরূপ রাস-মণ্ডল
রমণী মণ্ডল-ঘটা।

মনমথ-মনং পাইল অচেডন।

দেখিয়া ও অস-ছটা॥

বদনে মধুর হাস অধ্বের

হদয়ে জদয়ে সক্ষ।

কোন রসবভী রসের আবেশে

নবীন মেবের নিবিড় আভা
তাহে বিজুরি উলোই ।
দাস লোচনের রাই সরবস
ও রস্-আবেশ মোই ॥৪৬॥১২৯৮॥

কুমুম-শয়নে অজ।

পাঠান্তর

১। 'কিরপ রাই দেখিলু' ব। ২। 'বটন' ক; 'বটল' চ। ৩। 'লখই' ইভ্যাদি হলে 'পিরিভি লখিতে নারিলু' ব। ৪। 'মিশাই' ব। ৫। 'মনে' ক, খ, চ। ৬। 'চেতনে' ক, খ, চ। १। 'রোই' চ; 'বোই' ক, খ। ৮। 'আবেশে' ক, চ।

दक्षां ।

আজু ছছ ভালে বনি।

ছছ কান্দে ছছ ভুল দোঁহে দোঁহা প্রেম-পুঞ্জ লাবণ্য-সায়রে যৈছে চান্দ চান্দনি । এল ভুলার সে মুখ ভাল ভিলক ত্রিভল লাল ভুন্দরী-সিন্দ্র-বিন্দু ইন্দু-বদনা।

শিরে শিখণ্ড বেণী মন্ত মউর কণী ভাতিরসে অবশ বিনদ বিনদিনী ॥

রস-ভরে পীনস্থলী বিনদ বিনদিনী ॥

রস-ভরে পীনস্থলী বিনদ বিনদিনী ॥

ক্তিরিটে পড়ে ভুরে ফুক্রে কিছিণী।

অরুণ চরণ-ভলেও ছহু প্রেম-রস-রজেও কুরুম-রঞ্জন নখ-মণি খনি খনি॥ ॥৪৭॥১২৯৯৫

পাঠান্তর

১। 'চিন্তিনি' য। ২। 'পিনছণি' য়; 'পীন-ছণি' চ। ও। 'ভঙ্কি' য। ৪। 'রকি' য়।

ততঃ সম্ভোগঃ।

ভূপানী ।১

রাখাং-বদন হৈরি কামু আনন্দ॰।

অলনিধি উছলই হেরইতে চন্দ॰॥

কতন্ত্র মনোরথ কৌশল কত রি॰।

কুম্ম-শরে রাই কামু অসম্বরি॰॥

পুলকে পুরলং তমু হাদয় উলাস৮।

নয়ন চুলাচুলি আধ আধং হাদ॥

সূত্র অভি বিদাধ অতুলনং নেহা।

রসের আবেশে বিছুরলং নিজ দেহা॥

হার টুটল পরিরস্তা-কেলি।

মুগমদ চন্দন সব ছুরেংং গেলিং॰॥

খসল কুমুম কেশ ছুত্র অভি ভোর।

নিলম্পিং৽ কাঞ্চন জড়িত উজোর॥

॥৪৮॥১৩০০।

পাঠান্ডর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ০৮০ ও প-র প্ৰির
০৭০ সংখ্যক পদ। 'ভূপানী' বলে 'ধানঞ্জী' প-র।
হ। 'রাই' প-র। ০। 'আনকা' প-র। ৪।
'জলনিথি' ইভ্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ,—'জলথি
উছলে বৈছে হেরইভে চন্দা।' ৫। 'কভ রি'
বলে 'ক্রি' ক; 'ভিন্নি' প-র। ৬। 'ক্র্বেশ
ইভ্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ—'রাধা কারু ক্র্বেশ
দর সমরি।'

৭। 'পুরিত' ক; 'পুরিল' থ, চ। ৮। 'উলান' ক, খ। ৯। 'আধ আধ' স্থলে 'লহ লহ' প-র। ১০। 'অত্ল' খ; 'অনবধি' প-র। ১১। 'রসের' ইত্যাদি স্থলে 'রস আবেলে বিসরি' প-র। ১২। 'দ্রে' ক, খ। ১৩। 'মৃগমদ' ইত্যাদি স্থলে 'মৃগমদ কুসুমে পরিমল মেলি ১' প-র। ১৪। 'নীলমনি' মৃচ।

শক্ষাভারৰ।

কুহ্মিত মধুবন মধুকর মেলি। পিককুল গাওত মনমধ-কেলি॥ निश्वरन भूगथल नागति कान। এক-কলেবর ছুত্^{*} ১ একই^২ পরাণ ॥ঞ্জ চান্দ চন্দ্ৰ মন্দ মলয়জ বাভিত। অতিরসে বাদর নহে পরভাতি৽ ৷ রাধামাধব মধুর বিলাস। শহু অবলোকনে মৃত্ মৃত্ হাস॥ রূপ কলা গুণ ছহু সমতৃণং। প্রেম পরশ-রস আরতি অমূল 🛊 নিবিড় আলিজন কয়ল অপার। চুম্বনে বদনে রচয়ে সিভকার^ণ ম পুরল মনোরথ বিগলিত স্বেদ। ছহু তমু একই নহত লব ভেদ। বিগলিত কেশ বসন ভেল আন। জ্ঞানদাস কহ একই পরাণ ॥৪৯॥১৩০১॥ পাঠান্তর

্)। হিছ্' শক্ষ ক, ধ পুৰিতে নাই। ২। 'একুই'ক। ৩। বাজে' ঘ। ৪। 'প্রভাতে' ক। ৫। 'স্মজুক'ক, চ। ৬। 'ক্রক'ক, ধ, চ। ৭। 'নীতকার'ক।

बड़ाड़ी ।

বড় অপরপ দেখিলুঁ > সজনি নয়লি । নিকুশ্ব॰ মাৰে।

रेखनीन-मि কনকে স্বড়িভ হিয়ার উপরে সাজে 🛭 পুস্থম-শগ্ননে মিলিভ নয়নে উলসিত অরবিক্ষা । শ্যাম-সোহাগিনী কোরে ঘুমায়লি চান্দের উপরে চন্দা^e ম কুঞ্ছ কুস্থমিত স্থাকরে রঞ্জিত তাহে পিককুল গান। মরমে মদন-বাণ দোঁতে অগেয়ান কি বিধি কৈল নিরমাণ ॥ मन्त्र मलग्रुक পবন বহ মৃত্ ও হুখ কো কক্ল অন্ত। দোঁহার তুহুঁ জন সরবস ধন ক্ৰয়ে বায় বসস্ত ॥৫০॥১৩০২॥ ইভি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্বিংশভিপল্লবঃ।

পাঠাস্তর

>। 'পেথিলু' খ। ২। 'নয়লী' ক; 'নঙল' খ। ৩। 'কুঞ্জের' ক। ৪। 'অবেবিন্দ' ক। ৫। 'চান্দ' ক।

> অথ গোষ্ঠবিহারঃ। তত্তিত-জ্রীগৌরচন্দ্রঃ। হহই। ভাটনারি।>

লাধবান-ছেম- বরণ গৌর-জুভিং
মুখ বর শারদ-চান্দ।
অধিল ভূবন-মন- মোহন মনমণ্থমনমণ্থ রাজকি হান্দ।
দেশ গৌরচন্দ্র নব কামণ।
আনন্দ-সারণ মিলিভ নববিপেণ
প্রকট ভাব অবিরাম ॥ এদ ॥

সঙ্গবশ-স্থসময় হৈরি খেনে বোলভ
হোরব গোঠ-বিহাবে।
পুন তব বোলত> সফল জিবন > তচু
যো ইছ রূপ নিহারে॥
ব্রহ্মপতি-নন্দন চান্দ চলত বন
সৌধ উপরে চল >> যাই।
রাধামোহন ইছ রস >২ মাগয়ে
সোই চরণ জমু পাই।১॥১৩০৩॥

পাঠান্তব

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮০৬ সংথ্যক পদ। 'স্বছই। ভাটিয়ারি' ছলে 'স্বছই' প-র-সা। ২। 'জ্যোভি' ক; 'যুভি' চ; 'জুথি' প-র-সা। ৩-৪। 'মনরথ' প-র-সা। ৫। 'নব কাম' ছলে বর কান' প-র-সা। ৬। 'আনন্দ-সার' ছলে 'আজু সব মিলিভ' প-র-সা। ৭। 'নবছীপে' ক, চ। ৮। 'সঙ্গর' ক, খ। ৯। 'রোয়ভ' প-র-সা। ১০। 'জীবন' ক, চ। ১১। 'চলু' প-র-সা। ১২। 'বর' ক, খ।

मात्रुव ।> দেখ দেখ ত্রজেখরি-নেহ। বিজয় করু নিজ হুতে গোধন সঙ্গে কি করব না পায়ই থেছ ॥ধ্রু॥ মুখ ধরি চুম্বন করতহিঁ পুন পুন नग्रदन भन्तरम् जन-धात्र। ভীগিং পড়য়ে ঘন ন্তন-গভ বসন ক্ষীর-ধারণ অনিবার 🛭 বিনিহিত নয়ন বয়ন-কমল পর रेयहन हाम्मः हरकात्र। কীয়েণ পুন হেরব **पिन-व्यवनाटन** অনুমানি হোয়ত বিভোর। প্রেম ঘটায়ল কো বিহি অদভূত ভাতে পুন ইহ পরমান।

ভণ রাধামোহন অসুদিন ঐছন হোয়ভ রস-মহিযাদ ॥২॥১৩∙৪॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮০৭ সংথাক পদ। ২। 'ভিগি' ক, প-র-সা। ৩। 'ক্ষীর ধারা' ক, চ। ৪। 'চন্দ্র' च; 'চন্দ্র' চ। ৫। 'কিরে' ক, প-র-সা। ৬। 'হোড' ক; 'হোওড' ৢ, চ। ১। 'অজুড' ঘ, চ।

তথা রাপ। মওল ভাল।>

আজু বিপিনে যাওতং কান মুরতি মুরত কুমুম-বাণ অসু জলধর রুচির অস ভঙ্গি-নটবর-শোহনি। ইষত হসিত⁸ বয়ন-চক তরুণি-নয়ন-ময়নণ-ফন্দ विच्नू-ऋभरत मूत्रल-भूत्रलि ত্রিভুবন-মন-মোহনি ॥ কুজ্ম-মিলিড চিকুর-পুঞ চৌদিগে ভ্রমর ভ্রমরি গুঞ্চ পিঞ্চ-নিচয়-রচিত-মুকুট মকর-কুণ্ডল ডোলনি⁹। চঞ্চল নয়ন শপ্তন জোর সঘন্দ ধাওত প্রবণ-ওর গীম শোহত রতন-রাজ মোতিম-হার লোলনি > ॥ কটি পিত-পট>> কিন্ধিণি বাজ মদগতি অতি>২ কুঞ্চর-রাজ জামু ১ ০ লখিত কদম্ব-মাল মত্ত মধুকর ভোরণি>। छा # व-वद्रव ठद्रव-क**छ** ভক্লৰ-ভর্বি>ং-কির্ণ গঞ্চ

গোবিন্দদাস-হৃদয় রঞ্জ>৬ মঞ্জ-মঞ্জির বোলনি ॥৩॥১৩০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৭৩।১৮০৮ ও প-র श्रुवित्र शह ७ २१।० मःथाक भए। 'छवा तान्न' ऋल 'কল্যাণ' প-র-সা; 'মাউর' প-র। ২। 'আবওত' क, थ, भ-त-मा; 'हमरे' भ-त २१।७। ७। 'ख्रुवरु' খ। ৪। 'হাসত' ক। ৫। 'তক্ৰি-নয়ন-ময়ন' (সা-প, २०) नः शूथि) ऋल 'उक्ती-नम्रन-नम्रन' क, म, ह; 'ভক্ষণীগণ-নয়ন' थ: 'ভক্পিনয়ন বয়ন' প-র। ৬। 'ৰচিত' প-র। ৭। 'দোলনি' ক, খ, প-র ২।৫। ৮। 'সম্বনে' ক, ধ, ঘ, চ। ৯। 'শোহত' (প-র ও সা-প, ২০১নং পুথি) স্থলে 'শোহন' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ১০। 'দোলনি' প-র-সা ১৫৭৩নং পদ। >>। 'शीख शढें' क ; 'शीखशंढिं' প-त्र, २९।७। >२। 'মদগতি অতি' স্থলে 'ময়মন্তগতি' প্র-নাঃ 'মন্তগতি জিভি' প-র; 'মরমদগভি' সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'बजार' भ-त्र २१।०; मा-भ २०> भूषि। >8। '(कांबनी' প-त २१।०। ১৫। 'अक्रम' প-त, मा-भ. २०५ श्री । ५७। 'त्रक्षन' घ, छ।

তুড়ী ।১

গোঠেং বিজই ও অজ রাজ - কিশোর।
জননী-বিরচিত ও বেশ উজোর ॥ এল।
আগে অগণিত কত গোধন চলিয়া ।
পাছে অজ - বালক হৈ হৈ বলিয়া ॥
সম-বয় - বেশ সবছ করে ছান্দ।
রাম - বামে চলু শ্রামর - চান্দ॥
মউর - শিখণ্ড চুড়ে ঝলমলিয়া।
মণিময় কুণ্ডল গণ্ডে টলমলিয়া॥
শির পর ছান্দ অধ্য পর মুরলি।
চলইতে পত্তে করমে কত শুরলিশ॥

কটি-ভটে পীত পটাম্বর বনিয়া।
মন্থর-গতি চলু গজবর । জিনিয়া।
মণি-মঞ্জির বাজত ক্লণিক্রিয়া ।
গোবিন্দদাস কহই ধনি ধনিয়া।৪॥১৩০৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-না পুথির ১৮০৯ ও প-র পুথির ২৭।২ সংখ্যক পদ। 'তুড়ী' ছলে 'করুল ভাটিয়ারি' প-র। ২। 'গোঠ' ক, খ, খ, প-র। ৩। 'বিজয়ী'ক। ৪। 'বিরাজিত'প-র। ৫। 'আগে' ইত্যাদি স্থলে 'আগে আগে গোধন অগণিত চলিয়া' প-র। ৬। 'এক' প-র। ৭। 'ধাম' প-র-না। ৮। 'চান্দ'প-র। ৯। 'বুরুলি' ও। ১০। 'কুঞ্জর' প-র। ১১। 'রণকানিয়া'ক, ও; 'কুনিকুনিয়া'ব।

মলার।১

গোঠে গোচর গৃঢ় গোপাল। গণ্ডকিরি গুর্জ্জরি গাওত গমকে গোরি গোল গান্ধার । গোপী-গোপ-গ্ৰীগণ8-গোপক গোকুল-গামণ-বিহারি। গুঞা গৈরিক গোরদ-গরভিত• रगारबाठन-ऋठिक-धाती ॥ গহন-গ্রহাগত গোচারণ-রত গো-দোহন-গভিঃ-কারী। গো-গিরিধারি গুঢ় গরবাইত্য গুরু-গোরব-পরচারী। গজ-গভি-গামি গান-গুণ-গুন্ফিড্১১ गगटन हत्रद्र स्वत्रुम । গোরস-গাছিং গিরীশ্বর>৩-নন্দন গাওত দাস গোবিন্দ ॥৫॥১৩০৭॥ পাঠান্তর

)। देवां शं-त-मा शृथित २৮১० ७ शं-त शृथिह २११८ मार्थाक शंव। 'बजात' ऋता 'बालक' शंत । ২। 'পোচারই' প-র। ৩। 'পোরিগণ' প-র-সা।
৪। 'গরিমগুণ' ক, খ, প-র-সা; 'গরীমগুণ' খ,
চ; 'গাবিগণ' প-র। ৫। 'গীম' প-র-সা। ৬।
'ভাবিত' প-র। ৭। 'রুচির' ক, প-র-সা। ৮।
'গৃহাগত' প-র-সা। ৯। 'রতি' ক, খ। ১০। 'পো'
ইত্যাদি হলে 'গো গিরি গৃঢ় গুরুষা গরবাইত' প-র।
১১। 'গুস্থিত' খ। ১২। 'গ্রাহি' প-র। ১৩।
'গোঠেমার' প-র।

अप्रकारको ।>

মুদ্দির-মরকত-**মধুর মূর**তি মুগধ মোহন ছান্দ। মল্লি-মালভি-মালে মধুকরং মত্ত মনমথ-ফান্দ 🛚 স্থঘড়-শেশ্বর শ্যাম স্থন্দর শরদ-শশধর-হাস। স্থবে**শ সম**-রস⁵ भटक भवग्रभ সতত তুখময় ভাষ ॥ধ্য॥ চিকুর-চুম্বিত চিক্প চাঁচর চারু চন্দ্রক-পাঁতি। চপল চমকিত চকিত গাহনি চীত-চোরক ভাতি। গিরিক গৈরিক গোরজ-গোরচন গন্ধ-গরভিত বাস। গরিম গুণ-গণ গোপ গোপন গাওত পোবিন্দদাস ॥৬॥১৩০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপৃথির ১৮১১ ও প-র পৃথির ২।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'বধুমত' প-র। ০। 'সমবর' (পাঠান্তর—ক, খ), প-র-না, প-র। ৪। 'সমবেশ' প-র। 'ত্বেশ সমরস' হলে 'বরশ রসমর' প-র-না। । 'চল্লিড' খ। ৬। 'মভিড' প-র। ৭। 'পদ্ধ বিশ্বত' খ; 'গোরস প্রভিত' প-র-না, প-র।

৮। 'গোগণ' ড়; 'পোপাল' প-র-লা। ৯। 'ঋণ-গান' ক, খ।

मवित्र 13

গোধন সক্তে त्राच्य यक्तम्मन् বিহরই যমুনা ঃভার। नाम जीनाम স্থদাম মহাবল त्गां प्राप्तां मान्य मान्य विश्व । वांकड घन घन विशाग (तन्। रेट रेट त्रव হামারব গরজন আনন্দে মগন চরত সব ধেমু ॥এ॥। সম-বয়^-বেশ কেশ পরিমণ্ডিড চূড়েশ শিখণ্ডক কুন্থম উজোর। মণিময় হার গুঞানব মঞ্জ হেরইতে জগ-জন-মন করু ভোর 🛭 বলয় বিশাল কনক কটিণ কিক্ষিণি मृপूद् क़नू सूजू वाक । গোবিন্দদাস-পহু নিতি নিভি ঐছন বিহরই নব-ঘন বিপিন সমাল ॥ 160061161

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮১২ সংখ্যক পদ।
২। 'নন্দনন্দন' ব, চ, প-র-সা। ০। 'বামুন' ব;
'যমুনাক' প-র-সা। ৪। 'গোরাপ' ক। ৫। 'সলে'
শক্ষ চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'নিসান'
ব; 'বিশাল' ক, চ। ৭। কেবল প-র-সা পুথিতে
'ঞু' আছে। ৮। 'রসমর' প-র-সা। ৯। 'চুড়' ব,
চ। ১০। 'কনক কটি' হলে 'কটি পর' প-র-সা।

অথ দিবাভিসারঃ।

খ্যুট সারস ।১

তপনক তাপে তপত ভেল মহিতলৎ অতল বালুক দহন সমান। চঢ়ঙ্গ মনোরথে ভাবিনি চলু পথে তাপ তপন নাহি জান। প্রেমক গতি ছুরবার^ও। নবিন-যৌবনি ধনি চরণ কমল জিনি তবহিঁ কয়ল অভিসার ॥ ধ।। কুল গুণ গৌরষ সভি-যশ অপ্ৰধ তৃণ করি না মানয়ে রাধে। मरशामि एक्नन মন মহা মদন ছোড়ল কুল-মরিযাদে । জীতল অমুরাগিণি কভছঁ বিঘিনি সাধল মনমথ-ভন্ত। নিবারিতে স্থবদনি গুরুজন-নয়ন পাঠ করয়ে মণিমন্ত্র ॥ কেলি-কলাবতি কুত্বম সরসি কুলে (कोणत्म कग्रन भग्रान। যত ছিল মনর**৭**° পুরল মনমর্থ ইহ কবিশেখর গান ॥৮॥১৩১০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১৩ সংখ্যক পদ। **'स्त्रहे नात्रल' ऋरण 'स्ट**३ हे नात्रलो' च। २। 'सही-ভল'ক। ৩। 'অনিবার' ক। ৪। 'অনুরথ' চ। ध। 'मत्नात्रथ' च, ठ; 'क्यूत्रथ' च, च।

7147 IS

महहत्र मत्य त्राञ्च नमा-नमानः কত কত মত করি থেল। সময় বুঝি ভৈখনে রাইক গমন-আন ছলে আপহি গেল। मक्रमी (शंत्र[®] (प्रथ भी गन् - द्रक्ष । रेवइन जननिधि চাঁদক দরশনে উছলিত অধিক তরক' ৷ধ্রা

দূরহি ত্বন্ত মুখু হে∢ইতে তুওঁকর नग्रनश् वानक नीत्र। ছুহু অঙ্গ পুলকিত **তুত্** খরমাই**ভ** ক স্পিত চুন্ত ক শরীর 🛭 কতভাঁযতনে দ্বভাঁ হোয়ল একঠাম ছু**হু রুপ**ণ পিবইতে চাহ॥ রাধামোহন পত্ত চ কুর-শিবোমণি খেলত রম অবগাহ 🛮 ৯ ॥ ১৩১১ 🖠

পাঠান্তর

 हेर्श श-त्र-मा श्रृं शित्र २०२० भःशाक श्रम । 'नाइक' इटल 'नाबको' घ, छ। २। 'यञ्जलन' क। ৩। 'সঞ্জনী হোর' স্থলে 'সঞ্জনি হোর' ক, খ; 'मर्कान इब' ह, श-ब-मा। ।। 'मिनन' क, ह, প-র-সা। ে। 'অধিক ভরঙ্গ' হলে 'আর কভ রজ'প-র-দা। ৬। 'রু ১'ক, প-র-দা।

यानी ।>

দুরহিঁ ছুই হেরি দ্বহু পুলকাইত তুহু ভেল ভাবে বিভোর। छ्छ (पार्श नित्रथर नश्रुटन नश्रुटन यव তব বহুং আনন্দ-লোর^৩ ॥ मजनो (एथ द्राधामाध्य-(श्रम । ছ্র্ নোহাঁ কি করব থেছ না পাওত জমু হকু দারিদ-ছেম গ্রা ছ্ছ কর বচন রচন পুন গদ গদ হুহু অক ভেল হুকম্প। ছহু দোহা পরশিতে ত্তু ভেল নিমগন এছন হোয়ত শুস্ত ॥ অপরুপ বিধূ-মণি ছত কিয়ে বিধুবর মঝু মন করত আশংস। রাধামোহনগ্-পত্ত গুরু অভি নিরুপম ত্রিভূবন করু অবভংসা । 120011011

পঠিস্তির

১। देश প-त्र-मा পूषित ১৮১৫ ও প-র পুषित
১৫।২৫ সংখ্যক পদ। ২: 'বহু' প-র। ৩।
'নোর' খ। ৪। কেবল প-র-মা ও প-র পুষিতে
'গ্রু' আছে। ৫। 'ছছ' ইত্যাদি ফ্লে 'হহু'ক ডেলছি কম্পা' প-র। ৬। 'শ্রর্ভ্ড' প-র। ৭।
'গৌবিন্দ দাস' প-র। ৮। 'অবশংস' ক, থ, চ, প-র-মা; 'পরশংম' প-র।

7/17 13

ঘন পরিরম্ভণ ঘন ঘন চুম্বন ভুজে ভুজে সঘন বন্ধান। ঘন ঘন নখ-শর-খাতন তুত্ত জনং আনন্দে আপনা নাওজান ॥ অপরুপ । নিধুবন-কেলি। **क्तिह**ँ होश माध्य অতি রসে নিমগন मनन-कनन छूद्र (शल । धा তুত্ত দোঁহা উর পর নিচ**ল-কলে**বর করত সঘন সিভকার। থার বিজুরি কিয়ে অভিনব ঘনবর বেড়ি রহল অনিবার॥ मान यञ्चनक्रन কৰ সোই হেরব (शंग्रव (विन व्यवमान। তবছি নিবেদব শুক্ষুগ হেরি করইতে সো সমাধান ॥১১॥১৩১৩॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১৬ সংখ্যক পদ।
'সারক' হলে 'সারকী' থ, চ। ২। 'বন বন' ইতাদি
পংক্তি হইটির হলে—

'বন নথশর বাত ছহ' জন আনন্দ আপনা আপনা নাহি জান।' প-র-সা। ৩। 'নাহি' জ, খ, চ। ৪। 'অপরূপ' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'দুরে' জ, চ, প-র-সা। ৩। 'থির' ক, প-র-দা। ৭। 'ভবর্চ' ক, ২, প-র-সা; ভিবহি'চ।

अहरें ।ऽ

রাধা মাধব যব ততুঁ মেলি।
নিদাঘক দাহ সবলুঁ জুৱেই গোলি ॥ধ্যা
তহিঁ পুন সুৱোবর মান্দির মান্দা।
কল-জল-শাকরত-নিকর বিরাজ ॥
সৌরভ-মিলিত গন্ধবহ মন্দা।
কি করব দিনমানি-কিরণক বন্ধ ॥
তহিঁ বর সুরভ-বাপিই অবগাই।
রাধামোহন পত্ত রসিক স্থনাই ॥১২॥১৩.৪॥
ইত্যাদি গ্রীজ্ঞ সমুয়োচিত-মিলনম।

পাঠাস্তর

১: ইছাপ-র-সাপুশির ১৮১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'দুবে' ক, প-র সা। ৩। 'কল-জল-শীকর'
ক; 'ফল-জল-শীকর' চ। ৪। 'বাণী' ৬,
প-র-সা।

টীকা

৩—৪। তিছিঁ ইত্যাদি। তথার শরোবরস্থিত
মন্দিরের মাথে কল কর্থাৎ কোরারার জল-কশা-সমূহ
বিরাজ করে। 'কল: শিল্প-বিশেষ: ফুঝারা হাত
বস্তাখ্যা তত্পজলকণা-সমূহীব্যাজমানে।' ১তি
রাধামোহন ঠাকুরের টীকা। ৭। "তহিঁ" ইত্যাদি।
'স্থারতমেব বাদি দার্থিকা' ইতি রাধামোহন।

धाननी ।>

রাই নিয়ড় সঞ্জে চলু বরং কান।
সখাগণ মাঝহি কংল পয়ান ।
তুরহিং নেগরি ধেমুগণ ধার।
স্হচরগণ সব মালকং গায়ং॥
ধেমুগণ অক্সহিং দেওড় হাত।
উচ্চণ পুচ্ছ করি ধুনায়তং মাণ॥

সবহঁ সথাগণ পূ্ছত^{্ত} তাই। কোন কাননে ছিলা ভাই কানাই॥ কাহে মলিন ভেল ভোহারি বয়ান। যতুনন্দন হেরি আকুল পরাণ॥১৩1১৩১৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ধ্ব' ক, চ। ৩। 'দ্রহি' ক, খ। ৪।
'মিলল' ক, প-র-সা। ৫। 'আর' ঘ। ৬। 'সক্ষহি'
ঘ। ৭। 'দেরল' ঘ। ৮। 'উদ্ধ' ক, খ, প-র-সা।
৯। 'ঢুলারত' প-র-সা। ১০। 'পুছ্ত' ক, চ,
প-র-সা।

কঙ্গণ ভাটিরারি।১

হিয়ায় কণ্টক দাগ

মলিন হৈয়াছে মুখ-শশী।

আমা সভা তেয়াগিয়া কোন বনে ছিলা গিয়া

তোমা বিনে সব শৃত্য বাসি॥

নবঘন-শ্যাম তমু ঝামর হৈয়াছে জমু

পাষাণ বাজিয়াছে রাসা পায়।

বনে আসিবার কালে, হাতে হাতে সোঁপি দিলে

ঘরে গেলো কি বলিব মায়॥

বেলাব বলিয়া বনে আইলাম ভোমার সনে

বসিয়া থাকিব ভক্ত-ছায়।

বনে বনে উকটিয়া তোর লাগি না পাইয়া

আমা সভার প্রাণ ফাটি যায়॥

1281170701

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ১৮২৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বন্ধন নাগ' ক; 'বন্ধন রাগ' ধ, প-র-সা।
৩। 'বেকেছে' ক; 'বাজিছে' প-র-সা। ৪।
'ঘর' খ, চ। ৫ 'ধাক রে' প-র-সা। ৬। 'ভলাসিরা'
প-র-সা।

অথ উত্তর-বোষ্ঠ-গৃহাগমনম্। শ্রীগৌরচন্দ্র:।

তুড়ী।১

বেলি অবসান হেরি শচিং-নন্দন ভাবহি গদ গদ বোল। কাতুক গমন-সময় অব হোয়ল रुनिरय ° ८वनुक ध दोन ॥ সজনি না বুঝিয়ে গৌরাঞ্গ-বিলাস। রহতহিঁ অসুখন প্রেমহি নিমগন কথিত নাহি অবকাশ ॥ধ্ৰু॥ খেনে পুন কহই निकरे श्वित्य अव ঘন হান্ধা-রব রাব। হেরইতে শ্রাম-চদ্ৰ অমুমানিয়ে গোকুল-জন যত ধাব। ঐছন ভাতি করত **কত অনু**ভব যো রসে কৃত-অবভার। রাধামোহন-প্র দো বর শেখর ভৈছন সভত বিহার ১১৫॥১৩১৭॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮২৮ সংখ্যক পদ।
২। 'শচীনন্দন'ক। ৩। 'শুনিয়া' য়, চ। ৪।
'ধেমুক' প-র-সা। ৫। 'কভিছ' ক, খ। ৬।
'নিকট' ইত্যাদি স্থলে 'নিকটই শুনিরে' য়, চ;

পঠিক্তির

'নিকটহি শুনই' প-র-সা।

কাৰড়া বা গৌরী।১

গো-পুর-ধূলি উছলি ভরু প্রথম

ঘনত হাথা-রবং হৈ হৈ রাব।

বেণু-বিষাণ- নিসান সমাকুল

সজে রজে সব সহচর ধাব।

বন সঞেও গিরিবরধর হার আওেরেঃ।

জলদ হেরি জমু হর্ষিত চাঙ্কি ব্রজ-রমণাগণ মঙ্গল গাওয়ে ॥ধ্রু॥ কুটিল অলককুল গোরজ-মণ্ডিত° वर्श-मुक्ठे भरनारत हाना। বিপিন-বিহারি ছরম বর্মাইত ঝামর নিল উতপল মুখ-চান্দ। ললিত মণি-কুগুল কিশলয়-বলিত গগু-মুকুরে উজিয়ার। নটবর-শেখর গোবিন্দদাস-পত্ হেরইতে জগ ভরি মদন বিথার॥

পাঠাম্বর

১। ইছা প্-র-সা পু্ থির ১৮২৯ ও প্-র পু থির ৩৫।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রব' শব্দ প্-র-সা পুথিতে নাই। ৩। 'বনতে' প্-র। ৪। 'বন সংক্রু' ইত্যাদি অংব-ক্লিটির স্থলে প্-র-সা পুথির পাঠ, বধা—

'বন সঞ্জে গিরিধর বরহি আয়ল জলদ হেরি জমু আওয়ে। সব জন হরষিত ব্রজ-রমণীগণ মুলল সব ওণ গাওয়ে॥' ৫। 'মাওল' ঘ। ৬। 'বরিহা' ক। ৭। 'ছরমে' ক। ৮।, 'নীল' ক, ধ। ৯। 'মুক্র' প-র।

পৌরী।>

ভরুণা-লোচন- তাপ-বিমোচনহাস-স্থাকুর-ধারা।
মন্দ-মরুচ্চল- পিঞ্-কুভোজ্জ্লমৌলিরুদার-বিহারী।
স্থান্দরি পশ্ম মিলতি বনমালা।
দিবসে পরিণতি- মুপ্গচ্ছতি সতি
ন্ব-ন্ব-বিভ্রম-শালী। গ্রা

ধেমু-খুরোদ্ধৃত ২ রেণু পরিপ্ল তফুল-সরোক্ত-দামা।
আচর-বিকসর লস্দিন্দীবরমণ্ডল-সুন্দর-ধামা॥
কল-মুরলী-ক্তি- কৃত-ভাবক-রতিরর দৃগস্ত-তর্জী।
চারু-সনাত্তন- ক্রি স্ক্লদগণ-স্ত্রী ॥: ৭॥:৩১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৮০০ ও প-র পুথির ৩৫।৫ সংখ্যক পদ। 'গৌরী' ফলে 'মলার গৌরী চলত' ধ, চ: ২। 'ঝুরোদ্বুড' (প-র) ফলে 'ঝুরোদ্বুত'ক, ধ, ব, চ, প-র-সা, প-র।

6 41

১-->৫। রাধামোহন ঠাকুর ক্বত টীকা যথা, --"ভতঃ শ্রীকৃষ্ণং দৃষ্ট্য প্রাদাদ-শিথরাক্টা ব্রহ্নদেব্যঃ 'ভক্লণী-লোচন' ইভ্যাদিকং পরম্পরমৃচুঃ। হে স্করি! বন্ধাণী মিলতি বগৃংমাগচ্ছতীতি পশ্চ। কীদুশ:--তরুণী-লোচনানাং তাপখণ্ডকো যো হাস-সুধাস্কুরন্তদারণশীল:। তথা মন্দমক্তা চলেন চঞ-লেন পিঞ্নে ক্বুড উজ্জ্বলো মৌলির্যন্ত স শোভন-বিহরণশালঃ মহাবিহারী বা। তথা দিবদে পরিণতিং माञ्जः প্রাপ্তে সভি নবনববিজ্ঞমো गोगাবিশেষো कावविर्णायां वा उत्युकः। (धश्रुश्रवाकृत्उन रत्रश्ना পরিপ্লুতঃ তথা ফুল্ল-সরোকহদামা স চাসে) স চেতি। **७९कान**विकानि-लम्भित्रम्थनस्य स्मारः धाम স্বৰূপং ষ্ঠ তাদৃশ:। মধুরমুরলীশব্দেন কতা ভাৰকানাং ভবদীয়ানাং প্ৰীতিৰ্যেন সং। অত্যত্তৰি দৃগগুতরদী। চাকী হ'লরী সনাতনী তহুর্যভ পকে স্নাতন্নামানং গোসামিনং ত্নোতি অর্থাৎ সান্দং করোতি ধাতৃনামনেকার্থতা কলনা। তথা অহরলন-কারি-স্কলগণানাং সলী।"

অসবাদ

১-->८। (इ चुन्ति ! (मन, वनमानी चात्रमन

কারতেছেন। তিনি তফণীগণের গোচন-তাপনাশন হাস্ত-ম্থাছ্র-ধারী, মল্প পবন-চঞ্চল শিধি-পুছে
উজ্জ্ল-চূড়া-বিশিষ্ট ও মুল্লর ক্রীড়াশীল। দিবাঅনুসান হইলে তিনি নব নব বিলাস-বিভ্রম প্রকাশ
করিয়া থাকেন। তাঁহাব ফুল্ল-পর্ক্তন মাল্য থেছখুরোদ্ধ্র খুলি বারা সমাত্ত হইয়াছে; তিনি অচিরবিক্সিত নীলোংপল পুলের ভার কান্তি বারা শোভা
পাইতেছেন। তিনি মধুর মুরণী-রব বারা ভোমার
প্রীতি উৎপাদ্ধিত করিয়া, তোমার পানে প্রশংশন:
বিহ্ম দৃষ্টি-পাত করিছেন; তিনি মুল্লর সনাতনতম্ব (পক্ষাস্তরে—গোস্থামা সনাতনের আনন্দদায়ী)
ও চিত্তাম্রঞ্জনকারী হৃজ্লগণের বারা বেটিত
হইয়া রহিয়াছেন।

दा हिंदू

গোঠেং প্রবেশ করায়ল গোগণ मधागप निष्क निष्क मिल्टा राजा। বৎসক বান্ধি ছান্ধি ধেমুগণ ঘন ঘন দোহন কেল। ফুব্দর শ্রামর-গঙ্গ। রঙ্গ পটাম্বর হার মনোহর (गा-मृलि-धृमत व्यक्त ॥ अ ॥ নব নব পল্লব-গুচ্ছ-স্থমণ্ডিত চুড়ে শিশগুক বেঢ়ল দাম। মকরাকুত মণি-কুগুল দোলনি হেরই চমকি পড়ায়ে কত কাম॥. বন-ফুল-মাল বিরাজিভ উর পর কিঞ্চিণি-রণরণি নৃপুর পায়। গোবিন্দদাস-পত্ জগ-মন-মোহন ব্রজ্বনমণাগণ হর্ষিত ভায়। 127170501

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'গোঠ' খ। ৩। 'করাবল গোগণ' ছলে 'গোপ স্থাগণ' প-র-সা। ৪। 'স্থাগণ নিজ নিজ' স্থলে 'নিতি নিতি' প-র-সা।

> অথ দিনাস্তরে গোষ্ঠবিহারাদি। জ্রীগোরচন্ত্র।

> > হুৰ্ট সাৰ্গ ।>

ম্বরধুনি-তীর্থ তীর মাহা বিলসই সম-বয় বালক সঙ্গ। করতল-তাল-বলিত হরি হরি ধনিত নাচত নটবর-ভঙ্গ। জয় শচি-নন্দন⁸ ত্রিভূবন-বন্দন পূর্ণ পূর্ণ অবভার। জগ অমুরঞ্জন ভব-ভয়-ভঞ্চন সংকীর্দ্তন পরচার॥ চম্পক-গৌর প্রেম-ভরে কম্পই ঝম্পই সহচর কোর। অঞ্চি অঞ পুলককুল আকুল क्क-नग्रत्न कंक्र लाज ॥ ধনি ধনি ভাঙনিং চতুর-শিরোমণি विषग्ध-कोवन कीव। **८गाविम्ममाम** এ হেন রূসে বঞ্চিত অবহু শ্রবণে নাহি পাব ।১৯॥১৩২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'হ্যরধুনী-ভীরে' ক। ৩। 'ধ্যনি' ক, ধ,
প-র-সা। ৪। 'লচীনন্দন' ক। ৫। 'ভাঙনি'
(প-স ও ব পুথি) হলে 'ভাবিনী' ক; 'ভাবিনি' থ,
চ,প-র-সা। ৬। 'পিব' ক,প-র-সা।

শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা।

তথা রাগ।১

শোভা করে মুখ-শণী কমল জিনিয়া আঁখি कक्रगात्र मञ्जा भारत हाय। বাত পসারিয়া বোলে আইস আইস করি কোলে প্রেম-ধন সভারে বিলায় **॥** কাঁচনিং কটির বেশ শোভিছে চাঁচর কেশ বান্ধে চূড়া অভি মনোহর । বুঁক বাহি পড়ে লোরে नाष्ट्रेया-ठेमरक हरल বিবিধ জীবের তাপ-ছরঃ # হরি হরি বলং বলে ভাহিনে বামে অঞ্চ দোলে त्राम (गोत्रोहाटमत्र गमा ४ति। নিতাই প্রেমের ফান্দ মধুমাখা মুখ-চান্দ ভাব-সিক্ষুণ উছলে লহরী। ॥ নিভাই করুণা সিন্ধ পতিভ'ণ জনার বন্ধ কঙ্গণায় জগত ডুবিল। প্রসাদ হইল ধন্দ মদন-মদেত>> অন্ধ নিতাই>২ ভব্তিতে না পারিল ॥২০॥১৩২২॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩৩ সংখ্যক পদ। २। 'क्फिनि' च, ह। ७। 'मरनाइरत्र' च। ८। 'छान **रृद्ध' थ । ৫। 'दांग' १-**त-ना। ७। 'छाहिन' ৰ, চ। ৭। 'নিভাইর' ব। ৮। 'ভবসিদ্ধ' ক, थ, घ, छ। »। 'উছলে नहत्री' ऋल 'वनिहाती' भ-त्र-ना। >०। 'क्यम' भ-त्र-ना। >>। 'मरनत्र' क। ১২। 'নিতাইহ' প-র-সা।

পাঠান্তর

ष्ट्रहो ।>

धीदब हुनू मांधव যমুনাক ভীরে मन्म मधुद (वनू वां छहेर दि । বরজ-বধু কামিনি ইন্দিবর*-নম্ন সঙ্গন ডেজিয়া বনে ধাওই রে।

অসিত অন্মধর অসিত সরসিরুহ অভসি-কুমুম অহিমকর স্থভা-নিরণ। ইন্দ্র-নীলমণি উদার মরকভ-শ্ৰী-নিন্দিত বপু-আভা• রে॥ শিরে শিখণ্ডদল নব অঞাফল নিরমল মুকুভা লম্বিণ নাসাতলদ। নব কিশলয় অবভংস গোৱোচন

অলক তিলক মুখ শোভা> রে॥ শ্রোণি পিডাম্বরণ বেত্রণ বাম কর कञ्च-कर्ण वनभाना मरनाहत्रभ्रः। ধাজু-রাগ-বৈচিত্র> কলেবর

চরণে চরণ পরি শোভা রে॥ (गा-धूलि-धृमत विभाल वक्ष्यनः রজ-ভূমি জিনি বিলাস নটবর গো-ছান্দন রজু>৬ বিনিহিত কন্ধর क्राप्त कृतन-मनालाका ११ (त ॥ ত্রগাঞ্চ পুরন্দর দিনমণি শঙ্কর (या চরণার্ম্ম সেবে নিরন্তর> । সোহরি কৌতুক ব্রজ-বালক সাথেং

গোপ-নগরিং অভিলাসা রে॥ নো প্রভূ-পদভল-পরাগ-ধৃসর্ংং মানস মন করু আশা নিরস্তর। অভিনৰ সংক্ৰি দাস জগন্নাথ कननि-कठेव-छग्र-नाभा दि ॥

1122170501

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৪ ও প-র পুথির ২৭৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ৰাৰ্ই' প-ৰ-সা। ৩। 'हेसीवत्र' क। ८। 'वध्' क, थ, भ-त्र-मा, भ-त्र। 'অসিত কুমুৰ অহি করত স্তানি রে' ক, ধ; 'অত্সীকুশ্বন মহিন্তর ভগানিরে' প-র-সা; 'অসিত কুন্ত্ৰ অহী ৰকর স্থভা নির' প-র।

৬। 'রাভা' চ। ৭। 'লবিভ' ক, প-র-সা; প-র। ৮। 'নাসাতল রে' ৯। 'শোভনি' খ : ১০। 'পীতাম্ব' ক, খ। ১১। '(वर्ग' भ-त-मा। ১२। 'मरनाहत (त' क. প-র-সা। ১৩। 'বিচিত্র' প-র। ১৪। 'বক্ষরল' क; 'ককভল' প-র-সা, প-র। ১৫। 'নটবর রে' ক: 'নটবরে' প-র-সা। 'রক্সভূমি' ইত্যাদি স্থলে 'রক্তৃমি পর নাচত নটবর' প-র। ১৬। 'রজ্জু' ক, थ, প-র-সা, প-র। ১৭। 'মনোলোভা' क। ১৮। 'खन्ना' क, च, च, ठ, ११-त-भा। ১৯। 'नित्रखत्र (त्र' ক, প-র-সা। ২০। 'সো হরি' ইত্যাদি স্থলে **'কৌতুকে সোহরি বর**জ বেশ ধবি' প-র। ২১। 'গোপ-নগরি' হলে 'নন্দ মন্দির' প-র। ২২। 'লো পহঁ ইত্যাদি (প-র) পংক্তিবয় ক, ধ, ঘ, চ ও প-র-সা পুথিতে নাই।

শ্ৰীগাছার।১

खब-नम्मकि नम्भन नीलम्भी । इति॰-ठन्मन-छोमक खारम ननी⁸॥ শিখি-পুচছকিং বন্ধনি বামে টলী।। ফুল দাম নেহারিতে কাম ঢলী ।। অতি কুঞ্চিত কুস্তুল লম্বি চলীশা মুধ নীল-সরোরুহ বেটি অলী ।। ভুজ-দণ্ডে বিশণ্ডিত হেমমণী >। নৰ বারিদ বিদ্যুত খার জনী>>॥ অতি চঞ্চল লম্বিভ পীত ধটী সং। 🌣 কল-কিঙ্কিণি সংযুত পীত কটি>০॥ পদ-নৃপুর বাজ ভ পঞ্চ- শরং ১৪। কর-বাদন নর্ত্তনাৎ গীত বরং 🛭 পদ-নূপুর বাজত পঞ্চরসে। কিবা বেশু>॰ বেল্পাপিড>॰ দীগ>৮ দশে॥ योगि योग जूल मूनि शान छेला। ধার কাষিনি কামনে ঙেজি কুলে ৷

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৫ সংখ্যক পদ। २। 'नोनम्बि' क, भ-त्र-मा। এই भन्नि '(ভাটक'-ष्ट्रत्म त्रिष्ठ ; हेरांत्र ०व्र, ७४, २म ७ २२ म वर्ग अक्र : হতরাং অস্তা বর্ণটি ওঞ্জ হওয়া আবশ্রক। ১। 'হেরি' ক, ধ, পর-সা। ৪। 'বনি' ক, ধ, প-র-সা! ৫। 'পুছেক' ক, খ, প-র-রা। ৬। 'টলি' क, थ, श-त-मा १। 'एवि' क, थ, श-त-मा । ৮। 'हिनि' क, थ, भ-ब-मा। २। 'चनि' क, थ, भ-ब-मा। >•। 'ट्रियमनि' क, च, ठ, প-র-সা। ১১। '**क**नि' क, थ, প-ब्र-मा। ১२। 'धरि' क, थ, প-ब्र-मा। ১০। 'কটি' ক, খ, প-র-সা। ১৪। 'পঞ্চশরং' क, हा ५६। 'नर्खक' भ-त्र-मा। .७। 'किवा (ववू' ন্থলে 'বেণু' ক, ধ; 'বেণুধ্বনি' ঘ। ১৭। 'ব্যাপিড' घ। ১৮। 'मिश' क, थ, घ, প-র-সা। ১৯। 'গুক' প-র-সা। ২০। 'ভূবিকৃধ' কা, প-র-সা; 'ভূবীक्रम' च ; 'ভূবীরধ' थ।

টা কা

৭—৮। "ভূৰ" ইত্যাদি। (শ্ৰীক্ষের) ভূক্ত রূপ দণ্ড বারা অপ-রূপ মণি পরাজিত হইরাছে। (তাঁহার স্নীল অক ও পীত ধড়া) বেন নবীন মেৰ ও হির বিহাৎ।

১৭—১৮। শগর ইত্যাদি। (প্রীক্তকের
দর্শন লালসা হেতু) গল সর্প প্রভৃতি প্রাণিগণ সলে
গিরিরাক হিমাদল ক্র্য-জনক রূপবিশিষ্ট ভূমি, লতা
ও পূলা-ফলের সহিত সমাগত হয় অর্থাৎ তাঁহার
দর্শনানকে পৃথিবী পূলা-ফলে পরিপূর্ণ হইয়া উঠে।

वैद्यात ।>

শ্রুতিপাশ বিলাস মণি-মকরাকৃতি कुछन मधिज भएछ (मारन। চুড়াং শিখি সাজনি नहे-दिन स्टक्न মালতি-মাল প্রসন্ন গলেও॥ বেণু বাজায়ত ধেনু চরায়ত कालिन्मि-छोत्र श्रुलीन - वरन। প্রিয় দাম শ্রীদাম স্থদাম মহাবল এ সব গোপ সখা সগণে ॥ বহে মলয়ানিল• **অভি মন্দ স্থান্ধ** উরভ চূড়ে মউর-শিখও। धविल माङ्गल পিয়লি ডাকই মণি-মণ্ডিত করে পাচনি-দণ্ড॥ **श्रिथ-भूट्य-शिद्य नव-८भघ-क्रिटिः** মণি-কাঞ্চনে-ভূষিত বেপু-করং। সিভ-চন্দনে চর্চিড নীল-তমুং বনমাল্য **গলে** বর-পীত-পটং ॥ 120120261

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৬ সংখ্যক পদ।
২। 'চূড়া' ক, ধ। ৩। 'নলে' ক, ধ, দ, চ।
৪। 'পুলিন' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৫। 'স্থনে'
প-র-সা। ৬। 'জতি বন্দ' ইত্যাদি কলিট কেবল ঘ
পুথিতে আছে। ৭। 'শিধি-পুদ্ধ' ইত্যাদি প্লোকটি
প-র-সা পুথিতে নাই।

नीवण ।>

গিরিধর লাল গিরি পর খেলন তক্স হেলনং পদ-পদ্দক দোলনিয়া। অভি বল স্ববল মহাবল বালক কান্ধে ছান্দ করে ভাড়া দোছনিয়া। গিরিবর নিকট বেলভ খ্যামস্থানর ঘূর্ণিত নম্ন বিশালা। নোৰুন তৃণ হেরিয়া বসুনা-ভটণ **५ कल शांत्र (गांभाना :** স্থাগণ সজে त्राप्त्र नमा-नमान উপনিত• যমুনা-ভার। পাঁচনি বেত্র বাম কক্ষে দাবই अञ्चल ভরি পিয়ে नोत ॥ প্রিয় বহুদাম শ্রীদাম মধুমঞ্চল তিরেশ রহি হেরত রঙ্গ। শ্রামল স্রন্দর মুর্ভি মনোহর হেরি যমুনা অতি বাঢ়ল ভরক ৮ 12811/0261

পাঠান্তর

১। 'গিরিধর' ইত্যাদি পদটি প-র-সা পুথিতে ১৩২৫ সংখ্যক পদের শেষাংশ-রূপে লিথিত হইরাছে। ২। 'হিলন' ম, চ। ৩। 'ভাঙ' ক; 'ভাড়ে' ম, চ। ৪। 'ভামস্থ্রর ছলে 'নন্দনন্দন' প-র-সা। ৫। 'ব্যুনা-তট' স্থলে 'সব বন মাহা' ম। ৬। 'উপনীড' ক। ৭। 'স্থদাম' ক, ম, চ; 'দাম স্থদাম' প-র-সা। ৮। 'তীরে' ক, চ, প-র-সা।

তথা বাগ। >

গলিত রজত-গিরি জিনি তমু স্থানর
জামু লখিত বন-মাল।
নীল বসন বনি অপক্ষপ শোভনি
মরকতে হীরং মিশাল॥
ধাওত ধবলি পাছে বলরাম।
চঞ্চল নয়ন চুলয়ে অমু প্রজ
হৈরি মুগ্ধ ভেল কাম ৪ঞা।
উভ করে ধবলি শাঙলি বলি ডাকই
কোমল বংস লেই কাজে।

সহনে খসরে শিখি-

পিঞ্• মনোহর

ছাব্দন-ভুরি দেই বান্ধে।

বয়ান চান্দ অধর জমু গ্রাহ্মলি

তাহে মধুর মৃত্ হাস।

বরিখনে অমিয়া শ্রাবণদ ভরি পীবই

সহটর স্থান্দর দাস ॥২৫॥১৩২৭॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩৭ সংখ্যক পদ।

২। 'হীরক' ক; 'হারা' প-র-সা। ৩। 'ঢুলারে'
ক, খ, প-র-সা। ৪। 'করি' ক, খ।৫। 'কেমন' প-র-সা। ৬। 'পুছে' ক। ৭। 'লিনি' ক, খ। ৮। 'নরন' ক, খ। ৯। 'পিবই' ক, প-র-সা।

कांद्रियाति ।>

नील वनन

রভন ভূষণ

ৰাটুয়া মোহন বেশ।

বদন-ছাল্দেৎ

মদন কান্দেও

ठामत्री ठाँठत्र ८कम॥

ভাহাতে বিনোদ চূড়া।

শিখণ্ড রচিভ

গুঞ্জায় খচিত

বিবিধ জুহ্বমে বেড়া 🛚 🕸 🗈

গণ্ড-মণ্ডলে

এক কুণ্ডল

এক মঞ্চরি^৬ ফুল।

চান্দ-বদনে

শিঙ্গার নিসানে

था ७८३ थव निक्न॥

ৰধু-মঞ্চল

বামে স্থবল

সমূধে চিকণ কালা।

ভার মাঝে রাম

জিনি কোটি কাম

যমুনা হ-কুল আলা।

পুনা ছ কুল আলা স্থাগণ সনে

ভাণ্ডীরেরণ বনে

বমুনা-পুলিনে বৈয়া।

इत्राट्य ४ ८ ४ जू

বাজায়ে বেণু

बान चुम्बरवः रेनवा ॥२७।३७३८।

পঠিক্তির

>। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৩৮ সংখ্যক পদ
২। 'চান্দে' খ। ৩। 'বান্দে' প র-সা। ৪।
'মণ্ডল' খ। ৫। 'দোলরে' প-র-সা। ৬। 'মুঞ্জি'
ক; 'মঞ্চরী' থ, প-র-সা। ৭। 'ভাণ্ডির' খ।
৮। 'চরার' ক, খ; 'চরাইছে' প-র-সা। ৯।
'বান্দার' ক, খ; 'বাজাইছে' প-র-সা। ১০।
'ক্লের' ক, খ, প-র-সা।

पूड़ी ।>

চলত রাম স্থন্দর শ্রাম
পাঁচনি কাচনি বেত্র বেণু
মুরলি-খুরলি গান রিং।
প্রির শ্রীদাম স্থদাম মেলি
তর্গিণ-তনরা-তীরে কেলি
ধবলি শাঙলি আও রি আও রি
ফুকরি চলত কান রিং॥
বরেসং কিশোর মোহন ভাতি
বদন-ইন্দু জলদ-কাঁতি
চার্য়-চন্দ্রিণ গুঞ্জাহার
বদনে মদন-ভান রি।
আগম নিগম বেদসার
লিলারণ করত গোঠ-বিহার
নিরমামুদ করত আল
চরণে শরণ দান রি ॥২৭॥১০২৯॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त्र-मा शृथित ১৮०৯ म्रःथाक भन। र। '(त' भ-त्र-मा। ७। 'छक्षभि' क। ८। 'त्र' भ-त्र-मा। ६। 'वरत्रस्म' क, ६। ७। 'इक्षिका' सा १। 'नोनांत्र' क, स। थावनी ।>

মরকত রজত মিশাল।
খ্যাম রাম রূপ ভাল ॥
খ্য:সহি ভূজ অবলম্বি।
ছুহুঁ তুলুঁ ললিত ত্রিভঙ্গী ॥
হেলন কেলি কদম্ব।
বনি বনমালং বিলম্ব ॥
ছুহুঁ মুখ চান্দ উজোর।
খ্যামদাস-চিত ভোর ॥২৮॥১৩৩০॥
পাঠাস্কর

)। ইহা প-র-সা পুলির ১৮৪০ সংখ্যক পদ।
 । 'বিনি বন্যাল' ছলে 'বিলি বল্বান' প-র-সা।

অথ দানলীলা।

औरगोत्रहस्य।

মলার। সমতাল।>

(कांत्र (एथ नव नव

मयमहि नित्र वह

গোরাজ-মাধুরি

ক্সপে বিভল কোটি কাম।

अवह अव

ঘামকুল সঞ্চরু

যৈছন মোভিম-দাম ॥

কম্পই থির নহ

হাসি কহত মৃত্ বাত।

কো জানে কি॰ ক্ষণে ঘর সঞ্জো আয়লুঁ

ঠেকি গেলুঁ শ্যামর হাত।

বেশক উচিত দান কভু না শুনিয়ে

কাহাঁ শীখলিং অবিচার।

বুঝি দেখি নিরজন বন সেং গোবর্জন

সূটবি ভুহ বাটপার।

কো ইহ ভাব- ভরহি ভরমাইত

কিঞ্চিত পাটল আঁখি।

স্থাধামোহন কিরে আনন্দে ড্ৰব্ধ ও রস-মাধুরি দেখি ॥২৯॥১৩৩১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'নীর'ক। ৩। 'কী' ঘ। ৪। 'শিখলি'
ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বন সে' ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'গোবর্জন কানন' প র-সা।
৭। 'লুটবি'ক, প-র-সা। ৮। 'ভূবথ' ক, চ, প-র-সা।

শ্রীকৃষ্ণস্থ রূপং অস্টেচিতং যথা।

মুদির-মরক জ

মধুর মূর্তি

মুগধ মোহন ছান্দ।

মল্লি-মালভি-

মালে মধুকর

মত মনমথ ফান্দ ।

ইভ্যাদি।*

অথ অভিসারাসুবন্ধঃ।

बाबनी ।>

ञ्चलित अमर्र बाष्ट्रक क्या।

তাপ দূরে গেল

সৰ ভাল হৈল

ইহাত উপজিল যথা॥ ধ্রু॥

व्यक्रन উদয়ে

আইল গোকুল মাঝ।

জরতীর° স্বানে

कत्रि निर्वतरन

ত্রাক্ষণ-নিচয়ে

আপন মনের কাজ।

এই পদটি ইতিপুর্বে :০০৮ সংখ্যক পদরপে উদ্ভ হইবেও সক্পগুলি পুর্বিভেই এ খনে
পুনরার উদ্ভ হইবাছে। এই সদটি এ খনে গণনা
করিলে নিশ্বিষ্ট পদ-সংখ্যা বাজিয়া বার; খভরাং উহা
এ খনে সম্পূর্ণ উদ্ভ ও গণিত হইল না।

আমরা হরিবে গোৰ্ডৰ পাশে করিব যজ্ঞের কাম। মুত দিবে ৩থি যে গোপ-যুৰ্ভি रे**के** वंद्र शाद मान ॥ জটিলা শুনিয়া আমারে ডাকিয়া যভন করিয়া বৈল। গাবী-ম্বত লৈয়া বধুরে সাজাঞা তুরিতে তাহাঁই চৈল• ॥ সব সখীগণে এ সব বচনে রাইয়ের° আনন্দ হোয়। গুণের সাগর সে ছেন নাগর **पत्रम ब्हेट्य ८मोग्र ॥** অভিরসে ভরি এত মনে করি অঞ্হ সুবেশ কেল। ম্বতের পদার সাজাঞা সহর সভে মেলি চলি গেল ॥ এ কথা জানিয়া **८म ८**य विद्नां पिया वाश्वित्रा ७ इड़ा-ठाटम्म । স্থবলাদি লইয়া আধ পথে বাইয়া त्रहल मानीत हाटम ॥ বেশুর নিসান করয়ে সম্বন বাজায় ও জয়-ভুরী। এ যতুনন্দন করে দরশন নিষিত্ আনন্দে ভরি ॥৩০॥১৩৩২॥ পাঠান্তর रेहा প-त्र-मा श्रुवित्र ১৮৪२ मरवाक भए। ২। 'ভন ভন' প-র-সা। ৩। 'ইহ' প-র-সা। ৪। 'স্থুবভীর' প-র-সা। ৫। 'কৈল' প-র-সা। ७। 'ठन' प। १। 'ब्रोहेब' क। ৮। 'ह्रांटन'

क्, थ, घ; 'ठाक' श-त्र-शा। २। 'ছाक्क' श-त्र-शा।

कांद्रिवाचि ।> চললি রাজপথে রাই স্থনাগরি নাসবেশ করি অকে। মুভ দধি হুগ্ধে माकारेग्रा भन्नार প্রিয় সহচরি° করি সঙ্গে । ८वनन⁸ शाटित कारम বান্ধিয়া কবরীণ বেড়িয়া মালতী-মালে। সিঁথায়• সিন্দুর লোচনে কাজর অলক তিলক চারু⁹ ভালে ৷ মণিময়-অভরণ শ্রবণে কুণ্ডল भीरम स्ट्रामबीप राव। রূপ নিরুপম বিচিত্র কাচলি পীন পয়োধর ভার। রাতুল আলভা চরণ-কমলে বাজন শ নুপুর বাজে । গোবিন্দদাস ভূণে ও সক্ষপ খৌবনে ক্সিডব^{১২} নিকুঞ্জ-রাব্দে 1৩১॥১৩৩৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৪০ ও প-র পুথির
২৮।১ সংথ্যক পদ। 'ভাটিরারি' হুলে 'সারক' প-র।
২। 'হুড' ইভ্যাদি হুলে প-স গ্রন্থের পাঠ বথা—
'হুর্ব-বাট করি পাবী হুত ভরি'
৩। 'প্রাণস্থীগণ' প-স। ৪। 'বেনিন' প-র-সা;
'বেলন' প-র। ৫। 'ভাদে' ইভ্যাদি হুলে 'ভাদের
বাদ্ধিয়া' প-র-সা; 'ভাদেতে ক্যরি' প-র। ৬।
'স্থাক' প-র। ৭। 'চাক' শহ্ম প-র-সা ও প-র
পুথিতে নাই। ৮। 'হুডেখরী' প-র। ১। 'চিত্রের'
প-র। ১০। 'বোহন' প-র। ১১। 'এ' প-র।
১২। 'ভিতরি' ক, ৭; 'ভিতল' চ, প-র-সা।

नेत्रात ।>

অলকুল-নন্দন চান্দ হাম পেখলুঁ অপরূপ কম কড বেরি।

ভরক্তিম শোভন প্রতি সঙ্গ রক্ষ পুরবর্ছি এতছ না হেরি॥ সজনীং কো ইছ মাধুরি অপার। যো হ্বধা-সিন্ধ विन्द्र नव भून भून মরু আঁখি পিবই না পার ॥ধা॥ তমু তমু অতমু-यृथ किएम सम्बद्ध কিয়ে রুপ আপহি সেব। কিয়ে স্থমনোহর 🔧 কান্তি-রূপ-ধর किएय वत-तम- श्रिक्त ॥ এত কহি গোরি ভোরি পুন অনিমিখ-নয়ন-চধকে° করু পান। সো বচনায়তে কিয়ে রাধামোহন শ্লাঘই® পাত্ৰৰ কান ॥৩২॥১৩৩৪॥ পাঠান্তর

>। ইছাপ-র-সাপুথির ১৮৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সঞ্জনি'ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'চ্যক' ক; 'চুসক' প-র-সা। ৪। 'লাখহি'ক,খ,ঘ। টীকা

৮—১১। "তম্ম" ইত্যাদি। কন্দর্শ-সমূহ কি (তাঁহার) প্রতি অজ সেবা করিতেছে? কিংবা তিনি নিজেই নিজের রূপের সেবা করিতেছেন? (তিনি) কি (জনির্কাচনীর) রূপ ও কাল্ডিগারী! (তিনি) কি শ্রেষ্ঠ (পুলার)-রুসের জ্থিষ্ঠাত্-দেবতা?

बबाड़ी ।>

সহচরি সজে রজে চলু কামিনি
দামিনি বৈছে উজোর।
গোবর্ত্ধন-ভট নিকট বাটহিং
লেই বজ্ঞ-প্রভ বোরণ ॥
দেশ সখি অপরূপ রঙ্গ।
নিরূপম বিলাস বসায়নণ পিবইডে
দুল্ল কন পুল্লিভ জ্ঞা।

ত্ব সঞ্জে দরশন অনিষিধ লোচন
বহত হিঁ আনন্দ-নীর।
আনন্দ-সায়রে ডৃবলং ত্র্ভ জন
বহু খণে ভৈ গেল থীর• ॥ গ্রা॥
আভিশয় আদর বিদগধ নাগর
রাই নিয়ড়ে উপনীত।
ইহ যতুনন্দন নির্ধই ত্র্ভ অন
অভিন্থে নিমগন-চীত ॥৩৩॥১৩৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'নিকট বাটহি' হুলে 'নিকটহি বাট' ক,
প-র-সা। ৩। 'ঘোর'(প-র-সা) হুলে 'ঘোল' ক,
গ; 'থোর' ব, চ। ৪। 'নিকপম' ইন্ড্যাতি হুলে প-স গ্রন্থের গঠি—

'নিকপম প্রেম- বিলাস রসায়ন পিবইতে পুলকিত অক'।' ৫। 'ডুবল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'পির' ২, প-র-সা। ৭। •'চিত' ক, প-র-সা।

অথ রূপোল্লাসঃ।

शननी ।>

সিন্দুর-বিন্দু ञ्चनव वनत्व শাঙ্কর চিকুর-ভারণ। জমুরবি শশি সঙ্গহি উয়ল পিছে করি আধিয়ার ॥ त्रामा (इ॰ व्यक्षिक हिन्तम॰ (ख्या। কত না' বতনে কত অদমূত विक् विक (ভাষেশ দেল ॥ अ॥ हिटब्र॰ वाँशायनि উরজ-অঙ্কর (थात्र (थात्र) पत्रभात्र । কত না গোপসি> ৰত নাং যতনে হিমে গারি না সুকার 🛭

চঞ্চল-লোচনে বৃদ্ধ নেহারণি ও অঞ্চন শোভন তায় ও।

অনু ইন্দীবর প্রনে পেলল ১৭

আল-ভরে উলটায় ।
ভগ্য বিস্থাপতি শুনহ যুবতি ১৯

এ সব এরূপ জানং ও।
রায় শিবসিংহ রূপনারায়ণং ১
লাছ্মা দেবি প্রমাণ ॥৩৪॥১৩৩৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৪৬ ও প-র পুথির ১৬।০ : मरश्यक भन। २। 'मांडन' क, ४, ४, প-র-সা। ৩। ভারা প-র। ৪। আহিয়ারা প-র। ৫। 'রামা ছে' ফ্লে 'রুধামুখি' প-র। ৬। 'চাকম' প-র-সা: 'চজীমা' প-র। १। 'কভ ना' ऋरन 'क्डह्' भ-त्र। ৮। 'वहि (ভাছে' ऋरन 'নিধি তোরে' ক, খ; 'না ভোহারে' প-র-সা। ১। 'উর্জ-অছুর' ফ্লে 'উরত উরজ' প-র। ১০। 'होदब' क, थ, श-त-मा। >>। '(थात (थाब' ऋल 'পুন পুন' প-র। ১২। 'কড না' ছলে 'কডছ' প-র। ১৩। 'না গোপদি' ফ্লে 'লুকাওই' প-র। ১৪। 'हिश्वा' भ-ब-मा; 'ट्रम' भ-ब। ১৫। 'ट्रम्'-রই' প-র। ১৬। 'শেভন তার' ফ্লে 'শেভন পার' ক, ধ; 'শোভিত পার' প-র। ১৭। 'প্রনে (भनन' चरन 'भरत (भनिन' च, ठ, भ-द-मा; 'भवत्न दंशना' थ ; 'भड़त्न (भनन' भ-द्र। ३৮। 'ক্ৰে' প-র। ১৯। 'গুনহ বুৰ্তি' ক্লে 'গুন স্থবদ্নি' প-র। ২০। 'এ সব' ইত্যাদি স্থেল 'এ সৰ শ্বৰূপ জান' ধ; 'তুরা রূপ অফুপাম' প-র। ২১। 'রার' ইভ্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ বর্থা---'मित्रा किया निधि নিরমিল বিধি

যোহিতে নাগর কান ॥' টীকা

>---৪। "স্থন্দর" ইত্যাদি। (তোনার) স্থন্দর বহনে সিন্দুর-বিন্দু ও কেপ-ভার স্থামবর্ণ; (বোধ হয়) যেন (সিন্দুর-বিন্দু-রূপ) ক্র্যা (চন্দন-বিন্দুরূপ)
চল্লের সলে পশ্চান্তাগে (কেশ-পাশরূপ) অন্ধনার
করিরা উদিত হইল ! ("অন্ত্তোপষা" অলম্ভার)।

৫---৭। "রাষা" ইত্যাদি। হে ক্মন্দরি।
(রবি ও চন্দ্র একতা উদিত হওরার) অধিক জ্যোৎরা
অর্থাৎ প্রকাশ হইল ; না জানি কত বত্বে বিধি
তোষাকে উহা (বহি = ওহি) দিয়াছেন !

বরাডী।১

কামুক্থ মধুর বচন রচনগণ শুনইতে নায়রিং ভোর। মধুরিম-হাস-মিলিভ নয়নে থোর চাহনি তাকর ওর॥ मक्नी (का कह (श्रम-विनाम। হেরইতে ঐছন निक निक कीवन নীছন করু অভিলাধ ॥ প্র* ॥ তুত্তন নয়নণ নয়ন-শর বরিষণে হানল ছহু কর চীডে। রস-আকুতে ভরি আন ছলে নাগরি অনতহি ভেল উপনীত। নাহ রসিক বর পন্থ আগোরল কহতহি চতুরিম বাত। व्यानस्य निम्पान नाम वष्ट्रनमन শুনতহি পুলকিত গাড় ॥৩৫॥১৩৩৭॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৮৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কাহর' ক, চ। ৩। 'বচন রচনগণ' হলে
'ৰচন রচন' ক, ধ; 'রচন ভনিতে' প-র-সা। ৪।
'ভনইতে নাররি' হলে 'নাগরী হইলা' প-র-সা।
৫। 'নীছন করু' হলে 'মিছন করু' ক; 'নিছন
করি' প-র-সা। ৬। কেবল প-র-সা প্রিতে 'রু'
ভাছে। ৭। 'নরনে' ক। ৮। 'চিড' ক, প-র-সা।

সিমুড়া ।১

আহির্-রমণী যত চালাঞা॰ বাহির পথ আপনে যাইছ॰ আন ছলে। वाह नाडा पित्रा यांड॰ मानी भारन नाहि हांख এত না গরব কার বলে। ছেদে লো কিশোরি গোরি শুনহ বচন মোরি ভোর দান না করিব আন। এতেক শুনিয়া তবেদ হাসিয়া বোলয়ে সভে किया मान कह (मिश्र कान ॥ শুন অহেগ্ বিনোদিনি পুন হাসি কহে বাণী অল্ল নিব্ তোহারি পিরিতে। পীভ-বাস কাম-রায় সে বা যত দান চায় ভাহা পুন>**॰ না পারিবে দিতে ॥**১৫ এক লক্ষ দান তার গলে গলমোডিঃ - হার कृरे लक्न जिँथांग्र जिन्सूत्र। দান মাগে পীত-বাস তিন লক কেশপাশ চারি লক্ষ পায়ের নৃপুর॥ পাঁচ লক্ষ দান ভারি ১ কুস্থম-কবরী ঝুরি নছে কছ যে হয় উচিত। মোগা কর্মোণ রাজ-সেবা কাঁচুলীতে লুকা কিবাস্

কাঁচুলীতে সুকা কিবাস দেখাইয়া করাও পরতীত ॥ কেঃশ আনে কিসেরংগ দান,

কি বোল বলিলে কানং ।

অন্ত হৈলেং আমি ভালে জানি।

বদি পুন হেনং বোল মাধায় ঢালিব ঘোলং।

হাসিল জনস্ত-পহঁ শুনি ॥৩৬॥১৩৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৮৪৮ ও প-র পুৰির ২৮।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আহীর' ক্ষু 'আহিরি' প-র-সা। ০। 'চালাইরা' ব, চ; 'চলাইরা' প-র-সা। ৪। 'কাপনি চনরে' প-র

ৰ। 'জুলে' প-র-সা। ৬। 'বার' ধ। ৭। 'বোলে' ব, চ। ৮। 'সভে' প-র। ৯। 'তবে' প-র। ১০। 'একে' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'হের' প-র। ১১। 'লব' প-র। ১২। 'তোমার' ক। ১০। 'তুমি' ক, প-র। ১৪। অতঃপর প-র পুথিতে নিয়ণিখিত কলিটি দৃষ্ট হয়, বথা—

পোনীরে ভাড়াঞা পোরি নিতি বাও মধুপুরী
হেন কান্ধ না হর উচিত।
শুন ব্থভামুর ঝি আঁচলে ঝাপিলে কি
দেখাইয়া কর পরতীত ॥'

১৫। 'গলার মোতির' প-র। ১৬। 'কুম্ম' ইড্যারি
কলিটি প-র পুথিতে নাই। ১৭। 'ক্ম্ম' ধ;
'কর' প-র-সা। ১৮। 'লুকি কিবা' প-র-সা।
১৯। 'কো' ধ। ২০। 'কেশের' ধ। ২১। 'কিবোল' ইড্যানি স্থলে 'কিবা বলিলেন' প-র-সা।
২২। 'নহে' প-র। ২০। 'এমন' ঘ। ২৪। 'ডবে

বরাড়ী।

এই তং বৃন্দাবন-পথে।

নিতি নিতিং করি গভায়াতে ।

যদিং হাতে করি লইরেং সোণা।

ভূমি কে না কহে কোনং জনা ।

ভূমি দেখি পুছহ বড়াই।

কিসের দান চাহেনং কানাই । গ্রুণ ।

সঙ্গে সবেং স্থাতেরং পসার।

ভাহে কেনে এতেক জঞ্জাল ।

ভূমি কেনে করিবে অকাজ ।

ভূমি কেনে করিবে অকাজ ।

দূর কর হাস পরিহাস।

কহতহি ২ং গোবিন্দদাস ।০৭।১০০১।

পাঠাত্তর

পাকাত্তর

পাঠাত্তর

পাঠাত্তর

পাকাত্তর

প

১। देश প-ब-ना পृथिब ১৮৪৯ ও প-बु পृथिब २৮/০ ग्रश्युक भए। २। 'अस्डि' भ-ब-ना क, । 'মিভি' শক্ষ প র-সা প্রিতে নাই। ৪। 'বর্দি'
শক্ষ ক, ব, চও প-র-সা পরিতে নাই। ৫। 'করি
লই যাই' ক, ব, চ; 'করি লইরা' च; 'করা
লঞা' প-র; 'করি ল্বা' প-র-সা। ৬। 'হেন'
च, চ। 'তৃমি' ইত্যাদি স্থলে 'কেহত না বোলে
কোন' প-র-সা। ৭। 'মাগেন' প-র। ৮। কেবল
প-র প্রিতে 'ঞ্ল' আছে। ১। 'সভে' প-র-সা,
প-র। ১০। 'দ্বির' প-র। ১১। অভঃপর প-র
প্রিতে নিম্নিরিভিত পংক্রিবর দৃষ্ট হয়, যথা—

'সবে আছে স্বত হ্যা দ্ধি। ইহাতে পাইবে কোন নিধি॥' ১২। 'দেখতছ' প-র।

धाननी : ३

গরবহি স্তন্দবি চললহ আন্তং
নাগৰ পত্ন আগোর।

কহত হিঁবাত দান দেহ মঝু হাত
আন ছলে কাঁচলি ভোড় ।
অপরুপ প্রেম-ভরক।

দান-কেলি-রস- কলিত মহোৎসব
বর কিলকিঞ্জিত-রক্ষ ।
অলপ পাটল ভেল অথির দৃগঞ্চল

ধুনাইত ভুকা-ধমু পুশকে পুরলণ তমু অলখিত আনন্দ-হাস ৷

তহি অল-কণ পরকাপ।

· ঐছন হৈরি চকিত পুন তৈখনে• বাহুড়ল পদ গুই চারি।

পঠিকির ১। ইহা প-র:সা পুথির ১৮৫০ সংখ্যক পশু। ২। 'চলল আপন পথ' ক; 'চলল আন পথে' শ,খ,চ। ৩। 'ডোর' ক, খ,চ। ৪। 'ফু' থ, ম, চ। ৫। পূর্ল ক। ৬। 'তৈথন' ক, চ। ৭। 'পদতল' প-র-সা।

টাকা

>-->৫। পদক্রতা রাধামোহন ঠাকুর শক্তর টাকার লিথিরাছেন, "ততঃ গরবছি হৃন্দরি" ইত্যাদিনা তৎকোশগম্দাহরতি। অপূর্ব্বোহরং প্রেম-বিলাস: বেন দানকেলিরসে কলিতো জনিতো বো মহোৎসবস্তত্র বরঃ কিলকিঞ্চিত্ত রঙ্গঃ কৌশলো জাতঃ। তল্লকণং বথা শ্রীমহুজ্জলনীলমণে), — গর্বা। জিলাব-কদিত-শ্বিতাপ্রা-ভর-কুধাং। সঙ্করীকরণং হর্বাহুচাতে কিলকিঞ্চিতং॥' 'আনত' অক্তত্র। জত্র প্রথমচরণে গর্বাঃ স্পষ্টঃ। 'অলপ পাটল' ইত্যানেন জোধঃ। 'তহি জল-কণ' ইত্যানেন রোদনং। 'ধুনাইত ভূক-ধমু' ইত্যানেনাস্রা। 'পূল্কে পুরল' ইত্যানেনাভিগারঃ। 'অলথিত আনন্দ-হাগ' ইত্যানেন শ্বিতং। 'ইত্যানে বাহুড়ল পদ হুই চারি' ইত্যানেন ভয়ং ইতি সপ্ত।' টাকা প্রাঞ্জল বলিয়া অনুবাদ জনাবশ্যক।

ভাটিয়ারি ৷১

এই মনে বনে দানী হইরাছ ছুঁইতে রাধার অস। রাথাল হইয়া রাজ-কুমারী সনে॰ কিসের রভস⁶ রজ ॥ এমন আচরণ নাহি কর ডর ঘনাঞা পাসিছ কাছে। করিব গোচর গুরুবর আগে ভখন জানিবাদ পাছে। ছুইয় লাছুইয় না निज्ञ कानारे আমরা পরের নারী। পর-পুরুবের भवन भन्ना

সচেলে শনান করি 🛊

গিরি গিয়া যদি গোরী আরাধহ পান>> কনক-ধূমে। কামনা করহ কাম-সাগরে (वनी-वन्त्रिकाव्यम ॥ সূর্য্য ২-উপরাগে मध्य युक्तवी ব্রাক্ষণে করহ সাভ^{১৩}। ভোমার শক্তি> তভু হয়ে নহে› ब्राह-व्यक्त मिए इंडि ॥१७ ८गाविष्म माटमत বচন মানহ না কর এমন চক। যোই নাগরী ও রসে আগরি১ লবহ তাকর্ফ সঙ্গ ॥৩৯॥১৩৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-মা পৃথির ১৮৫১ ও প-র পৃথির ২৮৮৮ সংখ্যক পদ। ২। 'এমন বলেতে' প-র-মা। ৩। 'স্কে' ক, ধ, ঘ, চ। ৪। 'স্রুত রসের' প-র। ৫। 'আচার' ঘ। 'এমন আচার' ইভ্যাদি কলিটি প-র পৃথিতে নাই। ৬। 'আনিবে' ক। ৯। 'ছুইও না ছুইও না' ক; 'ছুর নাছুর না' ঘ। 'ছুইর না' ইভ্যাদি কলিটি প-র-মাও প-র পৃথিতে নাই। ১০। 'সচেল' ঘ। ১১। 'পান কর' ক, থ, চ, প-র-মা, প-র। ১২। 'স্রুজ' ক, থ, ঘ, চ, প-র-মা। ১০। 'সাথ' প-র-মা। ১৪। 'ভুর আহিছার শিরা পর। ১৬। অভংপর প-র পৃথিতে নির্মলিথিত কলি ছইটি আছে, বথা—

গোএর মলা বনি তুলিয়া কেলাই
সেহ ছব কাচা সোনা।
ব্ৰৈয়ে ছাম বনি বুছিয়া কেলাই
সে হব চাব্দের কোণা।
বাছ গন্ধ নাই ভোমার কথার
বুচকি বুচকি হাস।

এ রূপ দেখিরা আপনা চাহিতে, ছিছি কাজ নাহি বাদ : ' ১৭। 'আগোরি' অ, প-র-সা : ১৮। 'ভাহারু' প-র-সা, প-র :

টাকা

১৪। "পান" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর গিধিরাছেন, —'পান কনক ধুনে' ইতি কনকধুন-পানং অতি-কঠোর-ভপত্যাবিশেষ: বতেছেগোমুখঃ সন্কনকবণ্যুমং পিবন্ত্রত্যাভগ্যিত-সিদ্ধার্থ: তপতি।' অগাৎ 'কনক-ধুন-পান' শব্দের অর্থ অতি কঠোর তপত্যাবিশেষ,—বাহাতে উদ্ধান্ধ অন্ধান্ধ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুন অন্থাৎ আন্ধান্ধ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুন অন্থাৎ আন্ধান্ধ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুন অন্থাৎ আন্ধান্ধ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুন করিয়া অভাই-লাভের অন্ত তপ্রা করিতে হয়।

वाननी ।>

ভোহারি হৃদয় বেণি-বদরিকাশ্রম উন্নত কুচ-গিরি কোরং। কনক-ধৃম পিৰি প্ৰুম্পর বদন-ছবি তত্তি তপত জিউ° মোর। স্থন্দরি ভোহারি চরণযুগ° ছোড়ি। काही छॉन या धर গোরি-আরাধনে ভূত্ সে ভিবিথময়ি গোরি ॥ প। मुगमनः शदलनः निम्द्र स्भन এহি" সুরজ-গ্রহ জানি"। রাজহি দোঁপলু তুরা পদ-নথ-দিজ^১ -স্কুদ্দরি সহস্র>> পরাণি>২॥ मरकर निभगन কাম-সাগরে হাম কাম পুরবি ভূর্ত্ত রাই। **চ**२८१ मां ४ ८ ठेम वि শ্যামর বলি অব^{১৩} (गांविसमात्र सूच ठाइ 1801) 2821

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫২ ও প-র পুথির ২৮।৯ সংখ্যক পদ। ২। 'জোর' প-র। ৩। 'মন' প-র। ৪' 'নিয়ড অব' প-র। ৫। 'ডিরিথমর' ক, ঝ, চ, প-র-সা, প-র। ৬। 'মৃগমদে' ক। ৭। 'মৃগমদি' করা ৯। 'জান' প-র। ৮। 'এই' ক; 'সেই' প-র। ৯। 'জান' প-র। ১০। 'বিজ' ক, ঝ, চ, প-র-সা, প-র। ১১। 'সহজ' প-র। ১২। 'পরাণ' প-র। ১৩। 'জামক বোল' প-র। ১৪। 'নাহি' প-র।

योषुत्र ।>

কাত্ত্বে কামু যব স্থিগণ সমুখহিং স্বিনয়° করলহিঁ দীঠে ত্তৰ তছু অভিমত করইতে কোই স্থি (भाषा वहन कह भीर्द्ध ॥ স্থন্দরি অলখিতে হও ডিরোধান। গিরিবর-কুঞ্জ-কুটিরে অতি গোপতে যাই রাথহ নিজ মান । ঞ ।। চরিত বর গিরিধর ইছ অতি চপল-কিয়ে জানি করু বিপরীতে। 🗢নি উহ স্থবচন ভীতহিঁ জমু জন রাই করল সোই নীভে। বুঝি পুন নাগর সব গুণ-আগর অলখিতে তহি উপনীত। দেখি স্থনাগরি **রাধামোহন** व्यानरम्य निमर्शन-होड ॥४५॥५७४०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৩ সংখ্যক পদ। হ। 'সমুখেহি' থ। ৩। 'সবিনয়' ঘ। ৪। 'দিঠ' প-র-সা। ৫। 'কহ মিঠ' প-র-সা। ৬। 'আঙ' ঘ। ৭। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ক্র' আছে।

शामनी ।>

পরশহি গদ গদ নহি নহি বোল।
তমু-তমু পুলকিত জাননদ হিলোল।
কো করু অমুত্ব গৃছুঁক বিলাস।
এক মুখে সিতকার এক মুখে হাস।
নিমিলিত নয়ন নয়ন করু থীর।
মণিত-বলিত মণি-মঞ্-মঞ্জীর।
নাগরি দেওল খন-রস দান।
রাধানোহন পতুঁ অমিয়া সিনান॥

1880/1581

পঠিক্র

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৫৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মণি ভর্নিভ' ক; 'মনিত রনিভ' খ, ব; 'মিনিত ব্নিভ'প-র-সা।

भूनर्लार्छ-गमनम् ।

मात्रक 13

মন্দের নন্দন যায় বেপু বাজাইয়া।
মরুক মেনং গৃহ-কাল দেখ বাহির হৈয়া।
কার ঘরের বন্ধুরা যার রূপ দেখি বাইয়া।
বলি না শুনং আমার বোল মরিবা ক্রিয়া।
নীল উত্পল শুমা বসন শোভা ভালা।
খীর বিজুরি মেঘেণ করিয়াছে আল ॥
রতন-খিচনি মোহনং বাঁশী শোভে বাম হাতে।
চলিতে মা চলে অল দোলার্গ রাজপথে ॥
৪৪৩1১৩৪৫৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৫ ও প-র পুথির ২৭।» সংথাক পদ। ২। 'মক্ষক বেন' প-র-সা, 'থাকুক ঘেনো' প-র। ৩। 'বেথো দাড়াইরা' প-র-সা, 'চল দেখি বাঞা' প-র। ৪। 'কার প্রাণ্যস্থ বার বেথ বারি হঞা' প-র। ৫। 'বা ভূমি' প-র-সা। ৬। 'ছুকুল বাহিরা বার নয়ন না চাঞা' প-র। १। 'ছিরণ-ক্রিরণ শ্রামবরণ শোভা করে ভাল' প-র। ৮। 'মেছে বেন' প-র। ১। 'মোহন' শব্দ প-র প্রথিতে নাই। ১০। 'লোলে' প-র।

ভাটিয়ারি ৷১

কালিক্দী কিনারে নাগর ধায় ।
আমা পানে চাইয়া ঘনাইয়া বাঁলী বায় ॥
তথ্যে থেণে শ্রীদামের কান্ধে অবলন্ধি।
তথ্যে থেণে বাঁলায় বাঁলী হইয়া ত্রিভঙ্গী॥
নখ-মণি ইন্দু জিনি রালা চরণেত গাজে।
ছ গাছি সোণার সুপুর না চলিতে বাজে॥
মণিময় অভরণ বসন পিয়লি।
মব অলখ্যে যেন গ পড়িছে বিজুরি॥

পঠিস্ব

188170861

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৬ ও প-র পুথির ২৭১০ সংখ্যক পদ। 'ভাটিরারি' হলে 'পঞ্চম' প-র। ২। 'ভাম বার' প-র। ৩। 'আমা' ইভ্যাদি পংক্তির হলে—'আমা পানে চাঞা চাঞা হালা বালা বালা বালা বালা পানে চাহিরা হলাইরা হলাইরা বালার।' হ; 'আমা পানে চাহিরা হলাইরা হলাইরা বালার।' হ; 'আমা পানে চাহিরা হলাইরা হলাইরা বালার।' হ; 'আমা পানে চাইরা হলাইরা হলাইরা বালার। শহুর বার ॥' হ। এই পদের সক্ষরভাগ কলি পরার-ছলে রচিত হইরো প্রথম কলিটি বে লিপেরী ছলে রচিত হইরে, ইহা সম্ভবার বোহ হর । গ্রহার পার কলাটি বে লিগের হা। 'হলবেতে' ক, বংলাইর সমীচীন বোহ হর। ৪-৫। 'হলবেতে' ক, বংলাইরা হা। 'হিলেগ প-র। ৯। 'রাচনিতে' ব, ব, ক, ল-র-সা। ১৯। 'নব কলবরে অহ' ক, ব, প-র-সা; 'নবীন মেবেতে কহ' গ্নর।

টাকা

৬। "ছগাছি" ইত্যাদি। (শ্রীক্ষেত্র চরপদর

একপ স্থান্দল বে, বোধ ক্ষর বেন) সোনার নূপ্র

ছগাছি না চলিতেই বাজিতেছে! (এ ছলে অভিলয়োক্তিমূলক প্রতীয়মান 'উৎপ্রেক্ষা'-অলছার

দারা নূপ্রের স্থাক্তলতা-রূপ বস্ত ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

নৃত্যকালে সকল নূপ্রই বাজিয়া থাকে; স্তরাং
"নাচনিতে' পাঠ ধরিলে অর্থের কোন বৈচিত্র্য থাকে
না। প্রাচীন প্রির 'ল' ও 'ন' প্রায় এক রক্ষ

এবং অনেক সময়ে শক্ষ্মের মধ্যে ফাঁক না রাধাতেই এই পাঠ-বৈষ্ম্যের উৎপত্তি হইয়াছে।

उथा जान ।>

नील-कमल-प्रल ञीमूच-मश्रलः

ঈষত মধুর মৃত্ন হাস।
নাচিতে নাচিতে যায় গো-ধূলি লাগাছে গায়
আহীর-বালক চারি॰ পাশ।

মণিময় ঝুরি স্মধে কনয়া^০ পাঁচনি হাতে রভন-মূপুর রালা পার।

আগে আগে ধেকু ধার° পাছে বাল আন্তানরার ব্যিহা উড়িছে মন্দ বায়া ■

সভার সমান ঝুঁটা কপালে চন্দন-কোঁটা রাখাল কোন জনা বিন্দিয়া' ।

শ্রীলামের কান্ধে হাত ওই যায়›> প্রাণনাৰ রাই দিছেন চিনাইয়া চিনাইয়া^২ ■

পাঠান্তর

182176891

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৭ ও প-র পুথির ২৭১১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' হলে 'কন্ধণা' প-র। ২। 'নীল-ক্ষণ' ইত্যাদি কলিটির হলে প্-র পুথির পাঠ, ব্ধা—

'আহির-বালক চারি পাশ। নীল-কমল-দল শ্রীমুখ মধ্যল ঈযত মধুর শ্বহু হাল।' ০। 'চারু' ব। ৪। 'সোনার' প-র। ৫। 'নাচিতে নাচিতে' প-র। ৬। 'বার' ক, ধ, প-র-না, প-র। ৭। 'পাছে' চ, প-র-না, প-র; 'ধার' ক, ধ। ৮। 'গোধুলি-ধ্সর স্থানকার' প-র। ১। 'র্ঠা' থ; 'ঝোটা' প-র। ১০। 'বিনোদ রাধাল কোন জনা' ক, ধ, ব, চ, প-র। ১১। 'বার মোর' প-র। ১২। 'বিলাছেন দেধাইয়া' প-র-না; 'রাই দিছে চিনিয়া চিনিয়া' প-র।

তথা রাগ।১

মকর-কুগুল মেলে কনক-কেতকী দোলে
কেওয়াই নহে কামের করাতি।
উপরে বিজুরি-ভাতি হেম-অভরণ-কাঁতি
পীত পিন্ধন কত ভাতি॥
সক্ষানি পেখলুঁ বিহিছা চূড়া মালে।
মাতল ভ্রমর জানিই ঘুরিয়া ঘুরিয়া বুলে
পড়ে জানিই নয়ন-কমলে॥
কুন্দোগুল কালা কনক কেয়ুরং বালাই
ভাম-অত্যে করে ঝিকিমিকিই।
ক্রের সৌরভ পাঞা অলি-কুল্ম আইল ধাঞা
লাখে লাখে মদন ধানুকী॥৪৬॥১৩৪৮॥
গাঠাত্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫৮ সংখ্যক পদ।
২। 'কেরা' সা-প ২০১নং পুথি। ৩। 'জালে'
ক; 'জরু' প-র-সা। ৪। 'জনি' সা-প ২০১ নং
পুথি। ৫। 'বিজুরি' চ, প-র-সা। ৬। 'মালা'
ক, ধ, প-র-সা, প-র। ৭। 'ঝকমকি' সা-প
২০১নং পুথি। ৮। 'আলিরাল' ক, ধ, ঘ, চ,
প-র-সা, প-র।

ডথা রাগ।> কামুক গোঠ গমন ছেরি রাই। বিরছে বেয়াকুল মিরজ্বনে বাই॥ তহি মুখরা সধি সংগ্রে উপনীত।
রাইক মুখ হেরি গদগদ চীত ।
সো কহে কাহে বিলপদিং অমুরাগে।
হাম মিলায়ব তোহে কামুক আগে।
ধনি কহে এক দিন হেরিলুঁ তাহে।
উদ্ধব কহরে গোঠেত কানন মাহে।

18911/082

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১৮৫৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলাপনি' ক; 'বিলনি' ধ। ৩। 'গোঠে'
শক্টি ব পূথিতে নাই।

বরাড়ী।১

বড়ি মাইং কান্সুরে পরাণ পোড়ে মোর। যমুনা-পুলিন বনে দেখ্যাছি রাখাল সনে (थला-त्रा देश्योहिल (छात्र॰॥ ছায়া অভি সুশীভল বংশী বটের তল তাহাতে যাইতে না॰ লয় মন। মুখানি ঘামিয়াছিল व्रवित्र किवरण ठान्म-ভোখে আঁখি অরুণ-বরণ ॥ পীত ধড়ার অঞ্চল খানে ভিতিয়াছিল ধূলার ধূসর শ্রাম-কারা। যদি নহে লোক-ভয় মোর মনে হেন হয় আঁচর কাঁপিয়া করেঁ। ছায়া # এ তুখ কাছারে কব কি করিব কোথা যাব ना कहिरल मरन (वर्श नार्म। কি করিবে লোক-ভর वःशीवम्दन क्य क्र यहिया यट्नामात्र व्याट्ग ४८०४०४

পঠিভিছ

১। ইহা প-র-না পৃথির ১৮৬০ ও প-র পৃথির ২৭।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'নাই গো' প-র। ৩। 'হইরাছে বিভোর' প-র। ৪। 'ভাতে বাজ্যে নাহি' প-র। ৫। 'ভোগে' প-র-সা; 'ভূবে' প-র। ৬। 'অক্লণ ব্রন' প-র-সা; 'মলিন ব্যান' প-র। ৭। 'ধড়ার অঞ্চল তার' প-র। ৮। 'ধাষেতে ভিজিয়াছে' প-র। ৯। 'নাহর' প-র-সা। ১০। 'করো' क ; 'করু' ধ ; 'করঙ' প-র-সা।

ञ्च्हे ।>

কহিতে কহিতে এ সব কথা। দ্বিগুণ ভৈগেল অশ্বরে বেথা। রূপের লাবণি অসীম গুণে। **ट्यांड**ित देश्त्रक ना श्रद्ध मरन ॥ পুন পুন গোঠ-গমন লীলা। কহিতে নয়ন নীরে ভরিলা। সখীগণ কহে প্রবোধ-বাণী। হেরিয়া উদ্ধব আকুল প্রাণী ॥৪১॥১৩৫১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৬১ সংখ্যক পদ। २। '(शार्फ' क, ब, श-ब-मा।

थानगै।>

কাতুক গোঠ-গমনে ধনি রাই। বিরহে বেয়াকুল খীর না পাই । স্থিগণে কহে হইং বিরহে বিভোর। কৈছে মিলব আজু নন্দ-কিশোর। হৃদয়ক তাপ তব মিটব হামার°। গোগৰে কানন ভেল বিথার ॥ গোপ সখাগণ তাহে অপার। আৰু কি করব মিলন বিচার ॥ **दिक्टान** यां ७व हेर मिन मांव । वष्ट्रसम्बन ভूत्रा मक्रशि माक्र ॥४०॥>०৫२॥ - পাঠান্তর

)। **हेवा** श-त-ना श्वित >৮७२ नःवाक शव। २ । 'हेर' १-त्र-मा। ७। 'समत्रक खांग मिहेव छव

মোর' ক, প-র-সা। ৪। 'আছু' ইত্যাদি পংক্রিট ক ও প-র-দা পুথিতে নাই। ৫। 'কৈছে বাওব এছ দিন মাঝার' প-র সা। ৬। 'বছনন্দন' ইত্যাদি পংক্তির পরে প-র-সা পুথিতে নিম্নলিখিত পংক্তি দৃষ্ট হয়, ৰথা—'স্ব স্থী করু ধনিক সাহ্ন'।

व्यथ मान-लीला। मरक्ष छ-मृतली। ভত্নটিত শ্রীগৌরচক্র:।

(वटनांशीय 1)

সোঙ্করি পুরব-লীলা ত্রিভঙ্গ হইয়া। (भारत भूतलो (शांवा व्यथ्दत लहेशा ॥ भूवलीत तरका कृक मिलर रशाताहाम। অঙ্গুলী চালাঞা করে স্থললিত গান। নগরের লোক যত শুনিয়া মোহিত। সুরধুনা-ভীরে ওক্ত লভা পুলকিত॥ ञ्चन (माङ्ग (भारा-मूतलोत करत। বাস্থদেব খোষ ইথে কি বলিছে পারে । 102020101

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৮৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'দিয়া' ক। ৩। 'ভূবন মোহিন' (পাঠান্তর—চ)।

🛢 ब्रोग । 🤊

(थला-त्राम हिला कानार श्रीसारमत्र मत्न । ছেন কালে রাধারে পড়িয়া গৈল মনে ॥ আপনার ধেনু সব° সঞ্চিগণে দিয়া। রাধা বলি বাজার বাঁশী ত্রিভঙ্গ হইয়া। রাধা বলি কানাই পুরিল মোহন বাঁশী। ব্ৰীরাধিকার কাণে তাথা প্রবেশিল আসি। छिनि ध्वनि ख्वमनी खिथत ब्हेग्रा। वकूदत कांभना मित्रा मिनिव॰ वारेवा॰ ॥

রায় শেখর কহে এই কথা বটে।
চল সভে বাই আমরা যমুনার ভটে ॥
॥৫২১১৩৫৪॥
পাঠাত্তর

১। ইহা প্-র-সা পুথির ১৮৬৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ক্ষ্বেলর' (পাঠান্তর—খ) প-র-সা। ৩।
'বচ্ছ' প-র-সা। ৪। 'মিলব' দ, চ। ৫।
'বন্ধুরে' ইভ্যাদি স্থলে 'বন্ধুরে ভেটিৰ বারা আপনাকে
দিরা' প-র-সা। ৬। 'এ কথাটি' প-র-সা।
৭। 'চলো আমরা বাই সভে কালিন্দীর ভটে'
প-র-সা।

গান্ধার ৷>

আকুল হইয়া সভে° মোহন মুরলী-রবেং व्यात हिन्छ धतरण ना याहै। মথুরার বিকে যাই চল চল বড়ি মাই দান-ছলে ভেটিব কানাই। **हम् दृष्डायुः नम्मिनी** । আনন্দে আকুল চিত অঙ্গ ভেল পুলকিত শুনিয়া গোৰিন্দ পথে দানী ॥ধ্ৰা। স্থত দধি ছেনা পুরিণ স্বর্ণের ভাণ্ড **ভ**রি⁸ সারি সারি পসরা উপর। ভাৰতে ওচনি ভালি বিচিত্ৰ নেভের ফালি प्रांभी भिरत करत अनमल u পাধানি টলমল করে নিভম্ব-প্রক্লয়া-ভরে (यन मग्र-मख कतिनी। लाउन लाउन भर्ठ कांकानि नुकाय मूर्ठ ভাহে শোভে বিচিত্ৰ কিছিণী। বেন মুকুভার দাম মূখে চুয়াইছে খাম (रन वृति कुमूरणत मर्थ। শীতল ভক্তর ছায় রহিয়া রহিয়া বার यमूना-किनादन मिन दम्था ॥

নাগর আছিল। কভি দেখিয়া সে কুলবভী দান ছলে আগুলিলা> আসি। দাস জগলাথে কয় মুখ নির্ধিয়া রয় বেমন>> চকোরে মিলে শৰী।

100170661

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৫ সংখ্যক পদ।
২। 'অবে' প-র-সা। ৩। 'রহিতে না দিল বরে'
প-র-সা। ৪। 'প্রতি' প-র-সা। ৫। 'হানা
আদি' প-র-সা। ৬। 'উড়নি' ক, থ, চ, প-র-সা।
१। 'ডালি' ক, ব, চ। ৮। 'কাকালি'ব।
১। 'তথি' প-র-সা। ১০। 'আক্রিলা' প-র-সা।
১১। 'বেন'ক।

थानगै।>

চলইতে গজ-পতি বেচনেং যাহ।
কনক-মুকুর কত মুখ নিরবাহ।
জধর জরুণ-ছবি মাণিক॰ কাঁতি।
দশনে চোরায়সিং মোতিম পাঁতি।
এ ধনি কমলিনি কি বলিব জান।
সভে তোহে ছোড়ব গোরস-দান ॥
উর পর বিরাজিতং কনক-মহেশ।
চামর-ধাম স্থবাসিত কেশ॥
সিন্দুর-বিন্দু ভাল পর শোভং।
দানি নাহি ছোড়য়ে বিক্রম-লোভং।
দানি নাহি ছোড়য়ে বিক্রম-লোভং।
নয়নক জঞ্জন কঠকং হার।
ইবে জনিং জাছয়ে কতরেংং বেভার॥
সিধি সঞ্জেণ বুগতি করহংং জান ঠামে।
ভ্রানদাস কহবংং পরিণামে ॥৪৪॥১৩৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রির ১৮৬৬ ও প-র প্রির ২৮।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বেড়ক' প-র-না। গাণিকের'ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪।
 'চোরারল প-র। ৫। 'আবরু' প-র। ৬।
 'শোভা' প-র। ৭। 'লোভা' প-র। ৮। 'কঞ্ক' ক, খ; 'কাটক' প-র-সা। ৯। 'আনি' খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১০। 'কহরে' ক, খ, চ, প-র-সা। ১১। 'সন্বে'ক, খ, প-র-সা। ১২।
 'কররে'ক, খ, প-র-সা। ১০। 'অব করহ'প-র-সা।

তথা রূপোলাস। শিশুড়া।

আইসং বৈস তক্ত-মূলে শশি-মূখি রাই।
তোমার বদন-শোভারণ বলিহারি বাই॥
চর চর ক্ষিল-কাঞ্চন-ভুকু গোরিণ।
ধরণী পড়িছে নব-যৌবন-হিলোরিণ॥
বদন শরদ-স্থানিধি অকলক।
মনমথ-মথন অলপ দিঠি বছ॥
আলো রাই কি বলিব আর।
ভূবনে দিবার নাহি ভূলনা ভোমার॥ প্রণ॥
কুটিল কুস্তল বেঢ়ি কুসুমের আদ।
স্থাক্ত সিন্দুর সিধেণ বড় পরমাদ॥
উন্নভ উরক্ত কিবা কনক-মহেশ।
মূঠেণ ধরিয়েণ কিবা খিন মার-দেশ॥
উল্ভি-ক্দলী উক্তণ গুরুহা নিভন্থ।
আনদানের পত্ত জীরে এইণ অবলম্ব॥

পাঠান্তর

11006130091

३। देहा श-व-ना शूचित २৮७१ नरशक शर।
३। 'लाई' ह। छ। 'लांख' क, श-व-ना।
३। 'लांति छह' श-व-ना। ६। 'हिगह' श-व-ना।
७। दक्षण श-व-ना शूचिट 'व' लांहि। १। 'निरंत' क, थ, श-व-ना। छ। 'छेलत' थ, य, ह, श-व-ना। ३। 'यूर्ड' क, थ, ह, श-व-ना। २०। 'पतिवा' य, ह। २२। 'छक्त' के के के के कि

মার্ম।১

কবরী ভয়ে চা-মরি গিরি-কলরেং মুখ-ভয়ে চান্দ আকালণ। **इति**नि नग्नन-छात्र স্বরু-ভরে কোকিল গতি-ভয়ে গল বন[্]-বাদ•॥ সন্দরি কাছে মোহে সম্ভাষি না বাসি। ভুয়া ডৱেশ্ ইর সব তুর্হিণ পলায়ল ভুহু পুন কাহে>> ভরাসি।ঞ। क्ष- ७ दश कमल- (कांत्रक १९ व्याल मूलि त्रह १० घढे भः त्राम छ । (भः। দাভিম' শ্রীফল গগনে বাস করু শস্তু গরল করু গ্রাসে ১ । ভুজ ভয়ে কনক-মুণাল পঙ্গে রছ कत-खरम् किमलग्र कैरिश। বিহ্যাপতি কহ্ণ কত কত ঐছন कत्रहार समनान भारतिक्षः 1406 (1401

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৮ ও প-র পুথির
১৬)১ সংখ্যক পদ। 'বার্র' ছলে 'ভিরোধা
ধাননী' প-র। ২। 'কবরীক ভরে নিথি পেও গিরিকলরে' প-র। ৩। 'আকালে' ব। ৩। 'ছার'
ব, চ। ৫। 'বর' চ। ৩। 'বালে' ব।
৭। 'এ ধনি ভূছ পুন কাছে না সভাবি'
প-র। ৮। 'ভরে' ব। ১। 'কাছে ন' ব। ১৫।
'রুকুল' প-র। ১০। 'বিজি পেও' প-র। ১৫।
'জুলুলে' প-র-সা। ১৫। 'ভাড়িম' প-র। ১৬।
'গরালে' প-র। ১৭। 'কবিশেধর ভব' প-র।
১৮। 'কবছ' প-র। ১৯। 'বদম' প-র। ২০।
'ক্র ভাপে' প-র।

বরাড়ী।১

ছেন রূপে কেন যাও মথুবার দিকে।
বিষম রাজার ভয়ে ঠেকিবা বিপাকে॥
দিনকর-কির্ণে মলিন মুখখানি।
হেরিয়া হেরিয়া মোর বিকল পরাণী॥
বিসায় ভক্তর ছায় করহ বিশ্রাম।
শ্রম-জল-বিন্দু যেন মুকুভার দাম।
বংশীবদনে কহে শুন হে নাগর।
বুক্লাম বট ভূমি রসের সাগর॥

1491120421

· পাঠাস্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৯ সংখ্যক পদ।

লীগান্ধার।১

' **না যাই**য় না যাইয় রাই^২ বৈদ ভরু-মূলে। আনিতে পাইয়াছ বেঝাণ চরণ-যুগলে।। মণি মুকুভার দামং অক ঝলমলি। खरकत विषम (ठांत्र लहरवं नकलि ॥ **ठाँ**ठत ८करमद (वनी छ्िट्ड ८काम्(बर)। क्नीत खत्राम (वन्नी निश्चित मशूद्रा॥ मीन अष्टनोत्र भारत मूथ भाषा करतः। সোণার কমল বলি দংশিবে ভ্রমরে॥ क्ति-कुष्ड-मण्ड किनि कुछ कूठ-शिति। **গজের** ভরমে পাছে পরশে কেশরী॥ ৰ্জ্বন-গঞ্জন আখি>> অঞ্চন ভাল শোভে। विश्वितक वार्थ (हम-हितीत्र)र लाए । সিন্দুরের বিন্দু ভালে^{১৩} ভানুর^{১৪} উদর। রবি শশী বলি মুখ রাছ গরাসয়> ॥ मिनिने-प्रम न तो है एवं मूच करते। ভ্ৰমর ছাড়িবে কেনে^{১৬} রস নাহি পিলে^{১৬} 🛭 ভড়িত ভড়িত বসন ঘন উত্তে। পাইলে ইজের বাব পাছে আমি পড়েং

বংশীবদনে কহে কহিলে সে ভাল>>। বিদগধ বট ভূমি ভাহা জানা গেল।৫৮॥১৩৬०॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৭০ ও প-র পুথির २৮।১১ मरबाक भंग। 'श्रीनासात्र' एटन 'भक्षम' भ-त। ২। 'না ৰাইছ না ঘাইছ রাই'ক ; 'না ৰাও না যাও রাই' প-র; 'আইস আইস বিনোদিনি' ৩। 'আফ কাছে বাজে পাছে' প-র। ८। 'कमरल' भ-द्र-मा, भ-द्र। भ-त्र-मा। ७। 'होङ्ग्**न' भ-त्र-मा। १। 'निर्दक'** थ। ৮। 'क्यद्र'थ, প-র-সা। ৯। 'উচ্নির' ষ; 'উড়নির' প-র-সা। ১০। 'নীপ' ইত্যাদি কলিটি প-র পুথিতে নাই। ১১। 'আঁথে' প-র। ১২। 'ছেম হরিপের' ক; 'ছেন হরিণীর' প-র-সা। ১৩। 'ভাল' ক, চ। ১৪। 'রবির' প-র-সা। ১৫। 'মুঝ' ইত্যাদি স্থলে 'রাহু গিলিবে ভোমার' প-র। ১৬। 'ভ্রমর' ইত্যাদি স্থলে 'চকোর না हाफ़िरवक' क, थ, ठ, भ-त्र-मा ; 'ठरकात ना हाफ़िरव রাই'ব। ১৭। অভঃপর প-র পুথিতে নিম্নটিখিত া কলিটি দৃষ্ট হয়, যথা—

'নানা অভরণ অংশ করে ঝলমলি।
দারুণ ব্রঞ্জের চোরে সইবে সকলি॥'
১৮। 'পাইলে ছাড়িবে না দারুণ ব্রময়ে।'
পাবা ১৯ ।

'গোবিন্দ দাসের বাণী শুন বিনোদিনি। শ্রাম সঙ্গে রস-রঙ্গে কর বিকিকিনি॥'---পানা।

शांतनी १३

ওবে নাগর খনাইরা খনাইরাং আইস কাছে।
সোণার বরণ মোর দেখিরা কৈরাছ ভোর
ভরমে পরশ কর পাছে।
আমরা ত॰ কুলবতী ভূমি সেং বাধার লাছিং
কি কবিতে কিবা কর্ম কারি

বাঙ্কনেভেশ্ চান্দ যেন ধারতে করয়ে মন
সেইন্স দেখি তোমার কাহিনী ॥
সহলে চুলাও মাথা শুনিয়া না শুন কথা
পুসারি আসিছ্ শুটি বাছ।
না বুৰিয়া কর শুন বল পাইবা তাহার ফল
ভখন কথা না শুনিবে কেছ ॥
শুনিয়া কহয়েশ্য দানী শুন শুন বিনোদিনি
না শুরিবা আমারে বিধিতে।
বিকি না ছাড়িবা তুমি আমি ভ্ৰম্প পথের দানী
নিভুই ঠেকিবা মোর হাতে ॥৫৯॥১৩৬১ ॥

১। ইছা প-র-সা প্থির ১৮৭১ সংখ্যক পদ।

২। 'ব্যাঞা' ক, থ; 'ব্যায়া ঘ্যায়া' প-র-সা।

৩। কেবল প-র-সা পুথিতে 'শু' আছে। ৪। 'সে'
প-র-সা। ৫। 'ডো' প-র-সা। ৬। 'মতি'
প-র-সা। ৭। 'হয়' প-র-সা। ৮। 'বাঙ্ডনের'

হ; 'বামনে এ' প-র-সা। ৯। 'ডেঞি' প-র-সা।
১০। 'প্সারিয়া আইস' প-র-সা। ১১। 'না'
বৃধ্ধি করহ' প-র-সা। ১২। 'শুনি শুনি কহে'
প-র-সা। ১০। 'ডো' প-র-সা।

পাঠান্তর

व्याभावत्रो ।>

ওহে নাগর,

কেমনে ভোমার সঙ্গে পিরিতি করিবং।

মোণার বরণ

ছুইলে বণল পাছে হবং ॥এল।

ভোমার গলায়

আমার গলায়

গল-মোল।

বিক্তাা

বনের ফুলে

চ্ডাটি বাহ্মিয়া লাহ

স্টরের

স্বিক্তার

নাহি অভরণ

সাক্ষিতি
বিবের

স্বিক্তার

চূড়াটি বেড়িয়া>
তাহে কি রমণী ভূলে ।
কি জানি কি করা। রাখালে ভূলাঞা>
আইলা কোন বনে থুঞা।
আমরা রাখাল নই চ্চুর>৮ সমাজে রই
ভূলাইবা কি বোল বলিয়া ॥৬০॥১০৬২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৭২ ও প-র পুথিয় ২৮।>• সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আসোয়ারি' প-র-সা ; 'ভাটিয়ারি' প-র । ২ । 'কেমনে তোমার' ইত্যাদি পার-সা ; হলে 'তুমি রাধাল রাজ-নন্দিনি আমি কেমনে' ইত্যাদি প-র। ৩। 'সোণার वद्रव कामि' भ-द्र । ४ । 'कक्षात्मद्र भूत कृमि' भ-द्र । । 'ছুহলে বোদণ' ইত্যাদি ব; 'তাম ছুলো মলিন इंडर' প-র। ७। 'ख्यात' प, हा १। 'साम् भरल' প-র-সা। ৮। 'নিক[৬য়৷' প-র-সা। »। 'कूल्बद' श-द-मा । >०। 'वासिश्राह' प, ठ । 'বাদিয়া আছ' শক্ষ ছইটি প-র-সা পুথিতে নাই। ऽऽ। 'भ्युव',कः, 'म**উ**व' **थ, घ,** চ। ऽ२। 'পাথা শ-র-সা। ১৩ । 'সাধী' ক । ১৪ । 'ভূষণ' প-র। ১৫ । 'চুড়ার উপরে' প-র-সাঃ 'চূড়ার উপরে কত' প-র। ১৬। 'শ্রমর' ক। ১৭। 'কি আনি' ইত্যাদি কলি প-র পুৰিতে নাই। তৎস্থলে নিয়লিখিত কলি দৃষ্ট হয়, বধা—

'অরণ্য ভিতরে পাইরা অবলা বিবাদ না কর কালা। বংশীদানে কর ভাল না বইবে আমরা কুলের বাণা ॥" ১৮। 'চডুরি' ব।

সিৰ্জা—তেওই।) শুন লো স্মার প্রেমেড আগরিং ভোমার অনুরাগে মরি। ভোমার লাগিরা সকল ছাড়িরা। আইলাম পোকুল পুরী ॥ ভোষার কারণে
ধেনু রাখিবার ছলে।
ভাষিরা ভাষিরা
ছলে বলি ভক্লভলে॥
রাই জামি লে ভোষার॰ দানী।
সকল ছাড়িরা রাধা নাম ধেরাঞা
নামের মছিমা শুনি॰ ॥৬১॥১৩৬৩॥
পাঠাত্তর

ইছা প-র-সা পূথির ১৮৭০ সংখ্যক পদ।
 বা কহি চাজুরি' প-র-সা। ৩। 'ডোমারি'
ক, ধ। ৪। অভংগর প-র-সা পূথিতে নিম্নলিখিড
অভিরিক্ত ফলিঙালি দৃষ্ট হয়, বধা—
শোপরের বাণী তানি বিনোদিনী
প্রেমে ছল ছল আঁথি।
ভোষার ছধে ত স্বাই ছথিত

ভব হে নাগর দরার সাগর
দরা না ছাড়িহ তুনি।
বকল ছাড়িরা তোমার লাগিরা
দ্বির প্রারিণী আমি ॥

তোৰার ছথেতে হুণী।

উচ্ত কৰি ছুইটি পরিজ্ঞাগ না করিলে পরবর্তী প্ৰের সহিত অসামঞ্চ হয় বলিয়াই, বোধ হয় বৈশ্বদাস উহা পরিজ্ঞাগ করিয়াছেন।

কানোগ।

বেদে হে কিশোরি গোরি, ভোহে পরিহার করি
শুনি কিছু কর অবধান।
শুনি কিছু কর অবধান।
শুনাম-মুখের হাসি কদরে রহল পশি
বৈদগধি দগধেং পরাণ॥
বাই ভোষার বৈদগভাং কি কহিব ভার কথা
কহিছে উথলে হিয়া যোর।
বা দেখিয়া ভোষারে পরাণ কেম্মন করে,
ভোষার শুনের নাহি ভার ॥

বে জন প্রণত হর তাহারে তেজিতে নর

মনে বিচারত এই কথা।

তুমি যে কহাও বাণী তাহাই কহিয়ে আমি

নিশ্চর জানিহণ সর্ববধা ॥

বে পণ কর্য়াছণ তুমি সেই পণ দিব আমি

তুমি মোরে দয়া না ছাড়িহণ।

জ্ঞানদাসেতেণ কর তুহুঁ তুমু একইণ হয়
পরাণে পরাণে বায়া পুইছ ॥৬২॥১৩৬৪॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৭৪ সংখ্যক পদ।
২। 'বধ' ক; 'বধহ' খ, চ; 'না ৰধ' খ। ৩।
'বৈদ্যাতা' ক। ৪। 'লানিও' ক। ৫। 'করহ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'ছাড়ির' খ। ৭। 'আনদাস' ক, খ, খ, চ। ৮। 'এক' ক। ৯। 'শুইর' চ।

कारमाय--- मजन 13

কিছু বৈশং না হে কৈয়° না হে
কথা শুনি ফাটে মোর বুক।
ভোমা না দেখিলে প্রাণ সদা করে আনহান।
দেখিলে সে জিয়েণ চাঁদ-মুখ । এল।
ভূমি কল আমি মীন আমি দেহ ভূমি প্রাণ
ভূমি চন্দ্র আমি বেন নিশি।
কে জানে কে হেদে কেনে।

ভোহে পরিহার করি আধ তিল ভোষা বিলে

অবধান। আপনা তলম সম বালি ॥

ফদয়ে রহল পশি সরল সারিকা হাম পঞ্চর ভোষার প্রথম
পরাণ॥ ভাহে বন্দী হইয়াছি হরি।

কি কহিব ভার কথা ভোষার বিরোগে হাম সনাই বিরোগী ছে

হিয়া যোর। ভেঞি আনি স্বাধির প্রসারি।

পরাণ কেলন করে, সাড়াঞা পরের মাঝে ভিলাঞ্জি নিলাম লাজে

নাহি ওর ॥ ভূমা ভবে বাজারাস্থ নিলাম নি

হের দেখ ওছে খাদ, ছুই বাউছে ১ ভোমার নাম দাগিয়া রাখিয়াছি নিজ প্রাণ ঃ ধৈরজ ধরিতে নারি এক নিবেদন করি ना रहेल त्यांत व्यवत वधी। वःशीवस्टन कन्न এ কথা অশুথা নয় এক জিট ছুই কৈল বিধি ॥৬৩॥১৩৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'वना' क, थ, ह। ७। 'देकह' च। ४। 'कानहान' क, था १। 'क्ष्इंब' भ-ब-मा। ७। 'क् बात्न' देखानि ऋत्न 'कि बानि ७ त्वर' श-त्र-शा। १। 'ब्यांभन' क, थ, ह, भ-त्र-गा। ৮। 'वस्र' প-র-সা। ৯। 'ভাছে লাগি' প-র-সা। ১০। 'वाकाका' कः 'वाकारेमा' प। >>। 'वाक्तर' क ; 'ৰাছতে' থ।

धामनी ।> আমার জীবন ভোমার বদন সরবস ধন ভূমি। খু জিতে খুঁ জিতে ভোষা ধরি চিতে আগিয়া পাইলাম আমি ! রাই হে. কি মোর করম ভাগি। সভাকার ধন অভের জীবন আসিয়া পাইলাম লাগি ॥ধ্ৰ॥ ফিরিয়ে জগত দারিজের মত চনক-মুঠের আশে।

হেম-বরিষণ ভার মাবে বেন

विधि विनायन भारम ॥ আশ পুরল এডফণে সোর

, 🐪 जांकन मत्मन धन्न ।

क्टब महेबन

পঠিবিত

)। हेर्रा श-व्र-मा श्^{र्}वत ১৮१७ मश्युक श्रम ।

षुणानी ।>

व्राधामाधव नोश-मृत्त । ८क्लि-क्ला-त्रम मान इटल । ছুরেং গেও সখিগণ সহিতে বড়াই। নিভূত-নীপ মূলে বৈঠল রাই । **जूष्म जूष्म (विक् लिशित वरान वर्त्रन)।** কমলে মধুপ যেন হইল মিলন ॥ (मैं:शत व्यथत-मधु (मैं। एक कर्क भान। निक कारक निन तोरे घन-तम **नान ॥** भीलन इर्छ कम शूरल वान। व्यानत्म (मवदे (गाविन्मगाम ॥७८॥১७५१॥ ইত্যাদি অমুরাগযুক্ত-দানপর্যায়ো গীভঃ পূর্ববাপর-মনোহরসাহি-শ্রীসংকীর্ন্তনামূসারেণ ভত্ৰ সকলেৰু পদেৰু এতদুগীত-সংগ্রহ:। ভণিতা নান্ত, কৈবলং গানামুসারেণ **সংগ্রহঃ।**

পাঠান্তর

১। इंहा भ-त्र-मा পुषित्र ১৮११ मध्याक भग। 'क्शानी' ऋत्म '(शोबी' क, ब, भ-ब-मा। २। 'पूर्व' क। ७। 'नुब्हे' क, थ, प, ह। ह। 'ब्हाद्य ब्हाद्य' भ-द्र-मा। । । 'बिगद्य' भ-द्र-मा।

অথ দান-কেলিঃ প্রকারান্তরং যথা।

তত্ৰ গৌৰচন্দ্ৰ।

यहरे ।)

(गोदावहारमद मत्न कि काव छेडिन । ন্দায়ার মাঝে॰ গোরা দান সিরজিল । कि ब्राम्ब मान गार्ड त्रावा विक-मनि। বেত্র দিয়া আগুলিয়া রাধ্যে তরুণী ৷

मान (पर मान (पर विन (गाता छाटकः। **্ নগরের** নাগরী সব পড়িল বিপাকে॥ কৃষ্ণ-অবভাবে আমি সাধিয়াছি দান। সে ভাব পড়িল মনে বান্তখোষে গান॥

こうにほうのかとま

পাঠান্তর

 रेश भ-ब-मा श्रुवित २৮१৮ मध्याक श्रम । २। 'अफ़िन' भ-ब-मा। ७। 'माबादब' क, थ। श 'किएनव' क, थ, ठ, श-व-ना। १। 'मान (कर विण छाटक' श-त्र-भा। ७। 'लान एकर एकर ৰলি খন খন ভাকে' প্ৰর-সা। ৭। 'নদিয়া' প-র-**সা** ।

প্রীরাপ ।১

কে যাবে কে যাবেং বড়াই ডাকে উচ্চশ্বরে। দ্ধি হ্র্যা স্থৃত খোল মথুরায় বেটিবারে । माकारेबा भगवा बारे फिल मामीव मार्थि । চলিলা মথুরার° বিকে রলিয়া বড়াই॰ সাথে॥ পথে যাইতে কহে কথা কামু-পরসঞ্জ। প্রেমে গরগর' চিত পুলকিত অক। নবীন প্রেমের ভবে চলিতে না পারে। **उक्त स्**तिशी (यन मीश मिहादिक ॥ হোর কি দেখিয়ে বড়াই কদম্বের ভলেও। ভড়িভে জড়িভ যেন নব জলধরে। **डाहात्र डेश**रत (मारङ नव हेन्द्र धन् । वफ़ारे वटन ठिरू ना नटमत्र (वर्षे। कांगू ॥ মধুরার বিকে বাইভে>> আর পথ নাই। পাভিয়া মলল-ঘট বভাছে ২ কানাই 🛚 বাহ্নদেৰ ঘোষ কছে দ্ধির প্সারিণি । পাতিয়া মঙ্গল-ঘট বলিয়াছে দানী ॥৬৭॥১৩৬৯ ॥

পাঠাবর

)। देश भ-व-मा भूषित ১৮१» म्रश्याक र्भन। २। (बारन नगार म, ४ । ७ । । रिक

- করিবারে' প-র-সা। ৪। 'হাথে' থ। 'মথুরা' ক। ७। 'वडाहेब्र' 'প্রেমে গদগদ' প-র-সা; 'আনন্দে আকুল' ।। ৮। 'मिन्न' क, ब, घ, श-त्र-ना । ১। 'निरुाल' ক। ১০। 'হোর' ইত্যাদি তিনটি কলি প-র-না পুৰিভে নাই। ১১। 'ৰাই' ক। ১২। 'বঙ্গেছে' ক। ১৩। 'বাহুদেব' ইত্যাদি ভণিতার কলিট কেবল প-র-সা পুথিতে দৃষ্ট হয়।

ভাটিয়ারি ৷১

এমনেং কেমনে যাব পথে খ্যাম দানী। আপন৷ খাইয়া কেনে আইলাম ভোমার সনে জাতি জীবনে টানাটানি ॥ঞ্চ॥ ঘরে হৈতে বারাইতে⁸ কতং না বিপদ পৰে मालिनो हिलगा (गल वाटम । তথনি বলিলাম আমি হাস্তা না শুনিলা ভূমি না জানি কি হয় পরিণামে নাপ-মূলে করি থানা ঘাট করিয়াছে মানা कानाइ देशग्राद्य महानानी। আময়া সে কুলৰতী ভাহে নব যুবতী কি করিলে কিবাণ হয় জানি ! হাতে বাঁশী মূখে হাসি পথের নিকটে১১ বসি আঁথি-ঠারে ত্রিভুবন ভুলে। জারিণ্থ দিব ছেনাণ্ড দ্ধি পসার পরশে যদি वां भि मिन यमूनात करन ॥ মনে না করিহ ভয় (गा-द्रटमद्र समी मद **७न ७न ब्राइ**२३ विलामिन । स्टब्रक्क माटन द्वाटन বাট আইস ডক্লডগে ষ্পানন্দে করহ বিকিকিনি ১৬৮১১৩৭০।

় ১। বুঁহা প-র-সা পুথির ১৮৮০ সংব্যক্ত প্র। र। 'व गरंब' भ-त-मा। 🐠 ,'त्याबार, 🖘 🕸 🚈 'वाविषारेएक' श-म-मा । हे हे 'बेक् शेर्मना। १ (क्षित्रा) প-র-সা। १। (क्ष्या क ; 'क्ष्या क, हा । ৮। (রাজপথ করি' প-র-সা। ৯।
 (ত' প-র-সা। ১০। (কি না' ধ, প-র-সা। ১১। (ক্ষপ্রের্ণ প-র-সা। ১২। (য়াচি' ক, ৩, য়, চ। ১৯। (য়ায়া' প-র-সা।

बिज्ञान ।>

কপট-দানেরং ছলে বিসিয়া বৈয়াছে।

এ পথে কেমনে বাব দানী ছোয় পাছে॥

এমন ছইবে বল্যাও আমি ত নাও জানি।

মধুরার বিকে ঘাইতে পথে মহাদানী॥

বিকি শিখাইব বল্যাও লৈয়া আইলা সাথে।

জানিয়া সোঁপিয়া দিছ রাখালের হাতে॥

বংশীবদনে বলে শুন ধনি রাইও।

দান সাধে ফিরে পথে রসিক কানাই॥

।৬৯:১০৭%॥

পাঠান্তর

>। ইহা প্র-দা পুথির ১৮৮১ দংখ্যক পদ।
 ২। 'দানীর' ক। ৩। 'বৈলে' প্র-দা। ৪। 'আমি নাহি' খ। ৫। 'বিলি' ক, খ, চ, প্র-র-দা।
 ●। 'বংশীবদন' ইভ্যাদি ভণিভার কণিটি কেবল প্র-র-দা পুথিতে দৃষ্ট হয়।

खोत्रात्र ।>

কোথা যাও গোয়ালিনি কোথা তোমার ঘর।
কিসের পদরা দাসীর মাথার উপর।
দ্বি দুয়া স্থাভ যোলে পদরাং আমার।
কে ভূমি ভোমার বোলে ওলাব পদার।
ঘাটের ঘাটিয়াল আমি পথেক মহাদানী।
আজি দাস দিতে হৈল শুন বিনোদিনি।

19-11/0921

পাঠান্তর
পাঠান্তর
পাঁচান্তর প্রদান পাঁচান্তর সংখ্যক পদ।
পাঁচান্তর প্রদান প্রদ

'বাটের' ইত্যানি কলিটি কেবল প-র-সা প্ৰিতে দৃষ্ট হয়।

नबाड़ी ।ऽ

চিকুরে চোরায়লি চামর-কাঁতি।
দশনে চোরায়লি মোতিম-পাঁতি॥
এ গজ-গামিনি তো বড়ি দেয়ানং।
বলে ছলে বাঁচলি গিরিধর-দানং॥
অধরে চোরায়লি স্কুরুল পারা।
বরণে চোরায়লি কুকুম-ভার॥
কন্যা,-কলসং দউ বল ভারি তাই।
হলয়ে চোরায়লি আঁচরে ঝাঁপাইং॥
তেতি আঁত মন্ত্র গমনং-সকার।
কোন ভেজবং তাহে বিনহি বিচার॥
স্বল লেহ ভুক্ত গো-রদ দান।
রাই করহ অব কুঞ্জে প্রান॥
যাই। বৈঠত মন্ম্থ মহারাজ।
গোবিকাশ্যে কহে পড়ল অকাজ॥

197170901

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৮৮০ ও প-র পূথিষ
২৮।৭ সংখ্যক পদ। ২। প-র-সা পূথিতে 'এ গলগামিনি' ইত্যাদি পংক্তিদ্বর দারা পদটি আরম্ভ করা
হইয়াছে। 'সিরানি' প-র। ৩। 'দানী' প-র।
৪। 'সিন্দ্র' প-র-সা। ৫। 'কনক' ক। ৩।
'কলসে' ক, ধ, দ, চ। ৭। 'দঙ' ইত্যাদি ক;
'তছ রস ভারি চার' প-র-সা। ৮। 'দাপার'
প-র-সা। ৯। 'তাহে' প-র-সা; 'তেঁ' প-র।
১০। 'চরণ' ক, খ। ১১। 'ছোড্ব' প-র-সা;
'ছাড্ব' প-র।

वानने ।>

হৃদ্দরি শুনিয়া না শুন মোর বাণীং। না জান কানাই পণ্ডে দানী॥ সিঁ বারণ সিন্দ্র ভোষার নরানে কাজর।
ছইণ লক্ষ দান ভার মার্গে গিরিখর ॥
ছবরেণ কাঁচুলি গলে গল-মোভি হার।
চারি গক্ষ দান মাগে করিরা বিচার ॥
করের কন্ধণ আর কটিভে কিছিণী।
ছরণ লক্ষ দান ভার মাগে মহাদানী ॥
রক্ষণ আগভা পারে রভন-নূপুর।
আট লক্ষ দান মাগে দানীর ঠাকুর ॥
এই সব দান বুলি দেহ দানি-রাজে।
আমি নিব দান ভোমার সজিনী সমাজেণ ॥
ভ্যানদাস কহে ভুমি ছাড় টাঠপনা।
ভুমি মহাদানী ভোমার ঠাকুর কোন জনা॥
॥৭২॥১৩৭৪॥

পঠিস্কির

 ইহা প-র-সা পুথির ১৮৮৪ সংথ্যক পদ।
 'ক্ষরি' ইত্যাবি পংক্তি-বর হলে প্-র-সা পুথির পাঠ বর্বা---

'লান কেং তন বিনোলিনি। আন না বে আমি এ গণের মহালানী॥' ৩। 'কপালে' প-র-সা। ৪। 'ছর' প-র-সা। ৫। 'হিরাম' প-র-সা। ৩। 'ছুই' প-র-সা। ৭। 'আজি হান বুঝি নিব স্থীর স্যাক্তে' প-র-সা।

निष्मण ।>

ত্ৰ ত্ৰণ ত্ৰণ ত্ৰণ ত্ৰন কানাই

ত্বি নেণ নৃত্ৰণ দানী।

বিকি কিনির দান গো-রসেণ মানিরে

বেশের গান কভুণ নাবি ত্ৰনি ন

বিবার সিন্দ্র নরানে কাজর রক্ষণ আগ্রামা গার।

(ই কিণ) বিকি কিনির ধন গারীর বেশ্বন

ষণি-শভরণ
আদ্যুগ কেবা নাৰি ।

বদি দানের এ গতি ভূমি ত গোরুল-গতি ।

দান সাধহ খনে খনের ।

আমরা ।

ভানির ভানিত না জানি, কহিতে ।

ভানিদাস দক্ষে কিনে বা বাজে ।

ভানিদাস দক্ষে প্রের মনের কাজে ৪৭৩৪১৩৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা পার-সা প্ৰির ১৮৮৫ ও পার প্ৰির ২৮।৫ সংবাক পদ। ২। 'গুল' শলটি পার-সা পৃথি ব্যতীত অল্পান্ত প্ৰিতে নাই। ৩। 'গু' পার। ৪। 'নোতুল' ব। ৫। 'রস' পার-সা। ৬। 'কভু' শব্দ পার-সা পৃথিতে নাই। ৭। 'একি' ক। 'কভু' শব্দ পার-সা পৃথিতে নাই। ৭। 'একি' ক। ৮। 'ভূবণ' পার। 'নারীর যৌবন' হুলে 'নারীর আলে অভরণ' পার-সা। ৯। 'ভাহে' ইভ্যানি পার; 'ইহাতে কিসের লার' পার-সা। ১০। 'রোলোকের পভি' পার-সা। ১৪। 'নার সাধ প্রতি ব্যর ব্যরে' পার। ১৫। 'নোরা' পার। ১০। 'লোলোকের পভি' পার-সা। ১৪। 'নার সাধ প্রতি ব্যর ব্যরে' পার। ১৫। 'নোরা' পার। ১৬। 'লোকিবে' পার। ১৮। 'নোবিক্ত লার' পার। ১৯। 'লাকিবে' পার।

कार्टियांची १३

নী। গানী দেখি কাঁসিছে শরীরণ।
গা-রসেণ মানিরে মো বদি জানিভামণ পাছে, এপথে কুকুঁক আছে,
নাহি শুনি। তবে বছেরণ না হইভাব হাছিল এ
নরানে কাজর বরে হৈছে রারাইছেণ ও চালং ঠেজিক আছে,
হাজি জিঠাং পার্চি কালা করে।
বারীর বৌর্জা বিশিষ্টি সামাজ্য সাহিত্য

विषय प्राचीत्रभ्य प्राप्त এক লয় আর চায়>২ ना भाहेरल कत्ररत्र विवाह १०। मान निवात (वटन Cनय वाम मिवात (वटन (मय): একেক লক্ষের পরিবাদ^{্ধ} ॥

ম্ণি১৬-অভরণ ছিল ভরে ভরে সব দিল তমুদানী না দেয় ছাড়িয়া। মো> হইলাম সোণার গাছ

দানী ত না ছাড়ে পাছ ডালে মূলে নিবে> উপাড়িয়া। **পথে रि**वत्री महानानीरः घरत्र देवत्री ननिषनी (प्रदित्र देवती इहेल देशोवन। যমুনায় দিয়ে ঝাঁপ হেন মনে উঠে ভাপ না রাখিব এ ছারং জীবন। বলে হাত্ৰ্ণ দিতে চায় অবলা বলিয়া গায়^{২২} পসারিয়া আইসে চুটি বাহু। মোর মনে হেন লয় জ্ঞানদাসেতেং কয়

हारम्य (यन श्रतां भ्रायः व्हार्क ॥१४॥) ७१७॥ পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৮৬ ও প-র পুথির ২৮।১৮ সংখ্যক পদ। `২। 'বড়ি মাই দান' ইত্যাদি প-র। ৩। 'এছ না গণিল' প-র। 81 'ब्राट्स' च, हा का 'वाब्राहिट्ड़' था छ। 'উচাল' প-র সা; 'এ চাল' প-র। ৭। 'বিটি' খ। ৮। 'নাপড়িল' क; 'নাপ্তণিলাম' প-র-সা। ৯। 'পলারা' প-র-সা, প-র। ১০। 'তেমতি' भ-त्र। ১১। 'विषय दिन प्रात्मत्र' भ-त्र-मां, भ-त्र। ১২। 'একে দিলে আরে চার' প-র-সা; 'একে লর আহের চার প-র। ১৩। 'করে পরমাদ' भ-ब-मा, भ-ब। **>८। 'मांब' क, थ,** भ-ब। >८। 'একে কলছের পরমান' ক, চ; 'একেক লক্ষের 'আলে' প-র-সা, প-র পর্মাদ' प । ১৬। ১৭। 'মুঞি' প-র। ১৮। 'কাছ' ক, ধ, চ। २०। 'टेरन मरानानी' >>। 'गरव' भ-व ।

ष, हः 'खेदौ देश मानौ' भन्द-मा। २०। 'भाभ' প-র সা, পর । ২২ । 'দেখিয়া ভার' প-র। २७ : '(कांग' भ-त । २८ । 'छामानसम्हादम' প-द्र। २०। 'ठांन्स शद्राटम देश ह्र' भ-द्र।

बबाडी (३

হেদে হে নিলজ কানাই

না কর এতেক চাতুরালী। যে না জানে মানসভাং তার আগে কহ কথা মোর আগে বেকত সকলি ॥ধ্রু॥ (तफ़ारेला शरू ेलग्रा (म लांक रफ़िला भूरेग्रा এবে रेटला मानी मटामय । রাজপণ কর মানা কদম্ব-ভলায় থানা দিনে দিনে বাড়িল বিষয় ॥ ভূমেতে না পড়ে পা আন্ধার-ৰৱণ কাল গা কুল-বধু সনে পরিহাস। আপনাকে চাও দেখি এ রূপ নির্যাথয় व्यारे व्यारे लाख नाहि वाम ॥ মা তোমার যশোদাং তার মুখে নাহি রা• नम (चार अकलक निर्धि। কাজ কর জিনি কং**সে** জনমিয়া ভার বংশে এ বুদ্ধি ভোমারে দিল বিধি॥

দেখা শুনা আট পর একই নগরে ঘর ভিল আধ নাহি আঁখি-লাজ।

রাঞ্জারে না করেদ ভর রায় শেখরে কয় এ দেশে বসতি কিবা কাল ॥৭৫॥১৩৭৭॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মাত্সভা' চ। ৩। 'গাবী' ক; 'পোক' च ; '(भक्ष' अ-त-ना। ४। '(मच ठांबा' अ-त-ना। वित्नामा त्राची शन्त-मा । अ । विविधः भ-त्र-मा। १। 'काममारम छ' च; 'वश्मीवस्त्म' প-র-সা। ৮। 'কর' क।

দৌরাষ্ট্র ।১

किंगित तर् কহ লন্ত লন্ত ভোমারে সভাই জানে। কহিতে কহিতে অনেকং কহিছ ে এড না গরব কেনে ॥ পসরা লইয়া যাইছ চলিয়া দানীরে না কর ভয়। রাজ-কাজ করি দান সাধি ফিরি এপা কিবা পরিচয়॥ এ রূপ যৌবনে নানা অভরণে যাইছ মথুরারণ বিকে। বুঝি দান নিব তবে যাইতেঃ দিব আমি ডরাইব কাকে। অমুল্য রতন করিয়া গোপন• রাখ্যাছ হিয়ার মাঝে। নিজ-ভালদ চাহ খসাই দেখাহ रेए कि आमात्र लाखा। এত কহি হরি ছু,বাহু পদারি রহে পথ ঝগুলিয়া। জ্ঞানদাসে কয় কিবা কর১১ ভয় যাহ হাত ঠেলা দিয়া ॥৭৬॥১৩৭৮॥

পঠিক্সির

১। ইছা প-র-সাপুৰির ১৮৮৮ সংবাক পদ। २। 'च्यानकि' थं, हा छ। 'मथुबा' क, हा ৪। 'ৰাইতে না' প-র-সা। ৫। 'কাথে' ঘ, চ। ৬। 'বভন' প-র-সা। ৭। 'রাখিছ' প-র-সা। ৮ । 'ৰাভ' প-র-সা । ৯ । 'থসাইয়া দেহ' প-র-সা। >•। 'আঞ্চিরা' প-র-সা। ১১। 'কারে করো' প-র-সা।

रबाडी ।> হেদে হে নন্দের হুত কে তোমাং করিলে মহালানী। দত্তে কাচত নানা কাচত না ছাড় রমণীরং পাছ व्याहरण ना वृत हिछ वानी ॥ अ॥ শুনিয়াছি শিশুকালে পুতনা বধ্যাছ হেলে তৃণাবর্ত্তের লৈয়াছ পরাণ। এখনি• নন্দের বাড়ী দেখিয়াছি গডাগডি এখনি সাধিতে আইলা দান ॥ কাড়ি লব- পীত ধড়া আলুয়্যা - ফেলিব চূড়া বাঁশীটি ভাসাঞা> দিব জলে : কুবোল বলিবা যদি মাথায় চালিব দ্ধি বসিতে না দিব ভরুতলে॥ মোহন চাতুরী করি বাঁশীতে সন্ধান পুরি বুকে হান মনমথ-বাণ। त्रभगी-मधन कति অভরণ লব কাড়ি>২ ভাল মতে সাধাইব ২০ দান ॥ রাখাল বর্বর ভাতি ধেনু রাখ্য দিবা রাডি महिस (गांधन वदम्भः लक्षांभः। कूल-वधु मान हाम - है दिल नाहि नाक वाम এখনি কংসেরে দিব কয়্যা>় ॥৭৭॥১৩৭৯॥ পাঠাক্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কের' প-র-সা। ৩। 'কর' প-র-সা। ৪। 'কাজ' প র-সা। ৫। 'রম্ণী' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'এখন' ক, চ; 'তথনি' ধ; 'অধনি' প-র-সা। গ। 'কনি কাগি' প-র-সা। ৮। 'অংশনি' প-র-সা।) 'निव' क। >०। 'अन्ताहेस्' च; 'चांछेनाहे' **१-त-मा । २२ । 'छामारेबा' क । २२ । 'कांड़ि' ब ।** o। 'निषाहेव' भ-त्र-मा। ১৪। 'स्वयः वाष' च्टन् 'বেছ রাবে' ক, ধ; 'বাঠে থাকো' গ-র-না। ১৫। 'बष्ट्' या २७। 'लव्का' यः, 'लट्डा' या २१। 'क्का' वः 'क्हेन्रा' वः

व्हरे । ১

কি করবং গোরস দান।

আপনেও দিল সমাধান ।

অধরে অমিয়া-রস ভোর।
বৌবনও যোধও আগোর ।

ভোহে কহিও স্থানরি রাধে।

ইরি সঞ্জে না করু বাদেও ।

শোভে ভাও মোভিম-হারেও ।

কুণ্ডল চক্রেও বিকাশে।

বেণি ভুঞ্জিনি পালে।
ভাঙ ধমুয়া জমু ভল্প।

খর শর নয়ন-তরল ।

অভয়ে বুঝিয়ে রণ-আশ্বর্ণ।

কহভহি গোবিন্দ দাস। ।
১৮০॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯০ ও প-র পুথির
২৮/৬ সংখ্যক পদ। ২। 'করিব' পর-সা। ৩।
'আপনি' ক। ৪। 'বৌবনে' ক, খ। ৫। 'বোধি'
ক; 'বোডা' খ; 'কোধে' ঘ, চ। ৬। 'বেতে কহি'
হলে 'শুন শুন' প-র। १। 'কর বাদে' প-র-সা;
'কর বিবাদে' খ। ৮। 'পরে' প-র-সা। ৯।
'শোভে' ইন্ড্যাদি শ্বলে 'হার-ম্বরেশ্রী ধারে' প-র।
১০। 'চক্র' প-র-সা। ১১। 'রস আশ' খ; 'রণভাস' খ; 'মন আশ' প-র-সা।

পঠনন্ধনী।>
নাই-মুখ হেরি মুখনা কহে।
এত কি আমার পরাণে সহে।
নাখাল হইরা ছুইতে চার।
অব কি করব নাহি উপার ।
দানী অবসর বুকিয়া কাজে।
সুকাহ বাইরাং নিকুঞ্জ মাবে ।

এত কহি সভে ধাইয়া চলে।
নিকৃঞ্জে রাই লুকায় ছলে ॥
রাসক নাগর বুঝিয়া কাজ।
লুকায়া। চলিলা কুঞ্জের মাঝা॥
রাই কামু ভাহাঁ দরশ পাই।
রহে হুহেঁ হুহাঁর বদন চাই॥
প্রতিঅকে দানী লইলা দান।
রতি রতি-পতি মুরতিমান॥
বে ছিল মানস পুরল আশ।
আনন্দে মগন শেখর দাস॥৭৯॥১৩৮১॥

পাঠারব

>। देश প-ब-मा পুথির ১৮৯১ मश्याक পদ।
२। मुकारे यहि' क, य; 'পুकात्र यहिता' छ। । ।
'मुकाका' क, य; 'मुकारेबा' छ। ४। 'ध्र्ड (वार्टा' क, य; '(দাহে দোহা' छ।

পুনশ্চ দিনাস্তে। শার্ব।> গোঠেং বিজই ব্রজ- ব্রাজ-বি

গাঠেং বিজই অজ- সাজ-কিশোরবর• বাজত বেণু বিধাণ⁸।

করি কও ছদ্ম পদ্ম-মূখি নিক্সই
হেরইভে বিপিনে পয়ান ॥
স্কুম্বরি ছেরই না পায়ল রক্ষ।

ফুন্দর প্রবদন দ্রুড চলি গেও বন

না কানিয়ে কোন তরঙ্গ। ঞ্জ ॥ মেঘ-নাদ শুনি বৈছন চাতকিনি

ধাওল পানিক আণে ।

দারুণ দ্ধিণ প্রনে ত্থ দেওলং

रेड (भन उर्वाह रेनज्ञारम १४०॥४००२॥

পাঠান্তর

১। हेन। প-ब-मा পूषित्र ১৮৯२ मरपाक भन। २। '(गाठे' प , '(गाटंक्टिंग भ-ब-मा। ७। 'ब्राय- কিশোর ক, প-র-সা। 8। বিশান চ; নিশান
ব। ৫। পাশে ক, ব। ৬। দিকিণ ক। ৭।
ক্ষেত্ত প-র-সা। ৮। মেশ-নাদ ইত্যদি পংক্তি
চারিটির মূলে প-র-সা পুথির পাঠ, বধা—

"মেখ-নাদ শুনি বৈছে চাতকিনি
ধাওল পানিক আসে।

ঐছন প্রেম আরতি নাই পাইরে
নিমিধে ত যুগ ছতাশে॥

লাকণ দখিণ প্রনে হুখ লেরও

তৈ পেল তবহি নৈরাশে।

পছহি ধরতর তাহে রবি প্রথর

কহতহি গোবিন্দ লাসে।"

ণানশী চ

কাম্মক গোঠ-গমন তহি হেরইতেং অভি উতক্ষিত রাই। मिन्द्रित निक मह-ठित्र मान देवर्रामण সোমুখ হৃদি অবগাই॥ সজনি কি করব অব হাম থেছ। গুরুজনে বঞ্চিয়া কৈছন মালব শ্রামর রসময়-দেহ 🛚 💵 🗈 ঐছন ৰচন রচন তব করইতে মুধরা মিলল সোই ঠাম। ভাকর বদন হেরি তহি জানল পুরব সব মনকাম 🛭 মুখরা কহড় তব চল সভে যাওব ্ গোবর্ছন গিরি পাশ। ভহিঁ সৰ বেচৰণ দধি মুভ গোরস

সঙ্গৰি মোৰনদাস ॥৮১॥১৩৮৩॥ পাঠাছর

)। देश भ-त्र-ना श्रीवेत अन्न० नःवाक भवः। २। 'छक्टि हित्रहेरक' चरन 'नाहि हित्रित्रा' क्, व, ह, भ त्र-ना। ७। 'सन्विदत्र' हेछावि चहन 'सन्विदत्र বৈঠলি নিজ সহচরি সনে' ধ। ৪। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'তহি' প-র-সা। ৬। 'কছে' ব। ৭। 'সব' চ। ৮। 'তহিঁ' ইত্যাদি ছলে 'সাজাইরা পদার' প-র-সা।

वब्राडी । ১

দধি স্থৃত গোরসে সাক্ষারা। পসার।
চীরহাঁ ঝাপন পদেওল তার ।
কিন্ধরিগণ সব শির পর নেল।
মুখরা সক্ষেধনি তহিঁ চলি গোল ।
সহচরি সঙ্গছি বিনোদিনি রাই।
দুরহি কামুক দরশন পাই ॥
পুলকে পুরল তমু গদ-গদ বোল।
ঘামহি জীগল নীল নিচোল ॥
কো ইহ কেলি-কদস্ক মুল।
নব মেঘে বিজুরি জড়িত সমত্ল ॥
বাহু তুলিয়া উহ' ডাক্রে কায়।
মুখরা কহরে ইহ' নব রস রায়॥
পন্থহি মাগরে গোরস দান।
মোহন কহে যোহে ঐছন ভান ॥

1150F81

পঠিকির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯৪ সংখ্যক পশ।
২। 'সাজাঞা' ক, খ; 'সাজাইরা' ছ। ৩। 'ঝাপিরা'
ছ; 'ঝাপন' প-র-সা। ৪। 'ভার' ছ, প-র-সা।
৫। 'কিছরগণ' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'ঘনি ভহি'
ছলে 'ধনী' খ। १। 'ভূহ' প-র-সা। ৮। 'হই'
গ র-সা।

वररे ।)

কপট দানের ছলে দান সিরজিয়া। ঘট পাভি বসিয়া রৈয়াছে বিনোদিয়া।

বড়াই দেখিয়া কহে বচন চাতুরী। कांत्र घटत्रत्र वधू रेलद्रा यां अ मटक कति॥ क्रिश त्वीयत्न (कांश्री त्विग्री योख वध्रुः) না জানি অস্তবে উহার কত আছে মধু॥ স্থকোমল চরণ-ভলিমা শোভা অতি। এ বেশে বাহির করে কেমন বা পতি। বড়াই কহে এত কথা কিবা প্রয়োজন। বেখানে সেখানে কেন না করি° গমন° ॥ পর-বধু প্রশংসিয়া ভোমার কি কাজ। ঘনায়্যা॰ আসিছ কাছে নাহি বাস লাজ। ভোর পিতা নন্দ রায় পরম উদার। ভাহার ভনয় হয়্য হৈন ব্যবহার ঃ এই পথ দিয়া মোরা যাই মধুরাতে। পথেতে । विद्यांभे कत्र कूल-वध् मार्थ ॥ চাভুরী না কর কানাই চতুর সিয়ান । কংস রাজা শুনিলে লইবে জাতি প্রাণ' ॥

পাঠান্তর

115-01 2076H

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ভদিষা শোভা' হলে 'শোভা দেখিরে সে'
প-র-সা। ৩। 'করে' প-র-সা। ৪। অভঃপর প-র-সা
পুথিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলি ঘারা এই পদটি
স্বাধ্য করা হইরাছে; ব্ধা,—

ঁৰংশীৰদনে ৰোলে কি কাল ভোষার। আমরা বাইৰ গো-রদ বিকিবার ॥"

খ, চ ও প-র-সা পুথিতে 'পর-বধ্' ইত্যাদি বাকি
চরপ্তলি অতর পদরপে লিখিত হইরাছে। ৫।
'খনাঞা' ক, খ; 'বনাইরা' খ। ৬। 'হইরা' খ।
৭। 'পথের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'নিরোধ'
চ। ৯। 'সেরান' ক, খ। ১০। অতঃপর প-র-সা
পুথিতে নির্লিখিত ত্রিতার কলিট ছুই হয়;
ব্ধা,—

"বংশীৰদনে বোলে ছাড় টাটপনা। তুমি মহাদানী তোষার ঠাকুর কোন জনা॥"

শীৰাগ।১

কানাই কন্ত ফরকাহ চুল।

দানী হইয়া
তার ধরম গণ্ডার মূল
আহে মেন
টানিয়া বাদ্ধাহ
ভালে।
ভাহার উপরে শিখা-পাখ্যের পাখা
জড়ান বকুল-মালে

এ ভাড় ভোড়ল বল্লা খাঘর

ইথে **আছে বুঝি ভাড়া**।

নন্দরাজ ঘরে নবনা **ধাইর।** হৈল্লাছ উমাদ বাঁড়োশ ॥৮৪॥১৩৮৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হৈয়া সে', ক। ৩। 'তার' ইত্যাদি হলে 'তার
ধরম গণ্ডা মূল' ক; 'অব ধরম গণ্ডা মূল' প-র-সা।
৪। 'মেনে' ক, খ; 'বেন' প-র-সা। ৫। 'বাদ্ধিছ'
প-র-সা। ৩। 'পাথের পাথা' চ; 'পাথা দেখি'
প-র-সা। ৭। 'অভান' ইভ্যাদি হলে 'অভান বকুল
ফুলে' ক, খ, চ; 'লবল মালভি মালে' প-র-সা।
৮। 'সাড়া' খ, চ; 'সাড়া' প-র-সা। অভঃপর
প-র-সা পুথিতে নিম্লিখিত ভণিতার কলিটি ষ্ট
হর, বথা,—

ৰশোলা বেমন ছ-করে বান্ধিতো দ্বাধিতো তোমারে কেবা। কহে মনোহর কেমন বাটপাড় বাটপাড়ি শিধি থাবা॥"

वैश्रीत ।>

দানী কৰে ফির ফিরং না শুনরে রাই। বাহু প্রারিয়া দানী রাধ্য ভাইণ। কছে কিয়ে পসারে বিধারিণ দেখি এখা।
আগে বুঝি নিব দান পাছেণ কব কথা ॥
যত অভরণ গায় বেশ ভূষা আছে।
সব লেখা করি দান দেহ মোর কাছে॥
নিতি নিতি গতায়াত কর এই ঠাঞি।
এ পথে মদন-রাজণ কভু শুনা নাই॥
কত ভজে কথা কছ ভয় নাহি বাস।
রাজ-অমুগত জনে হেরি পুন হাস॥
কাহার গরবে যাহ দিয়া বাছ নাড়া।
ভূষণ যৌবন ধন সব হবে হায়া।
বংশী কহয়ে বুঝি অরাজক হৈল।
পথে বাটোয়ারি করা নহিবেক ভাল॥

116176741

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরি ফিরি' ক। ৩। 'তথাই' প-র-সা। ৪। 'বিথারে' ক, ঘ। ৫। 'পাছু' ঘ, চ। ৬। 'রাজ' ক। १। 'শুনি' ক, খ, প-র-সা।৮। 'সারা' প-র-সা।

७वा मात्र ।>

রাজা এখা থাকে কোখা কেবা সাথে দান।
কিবা চায়ং কিবা লয়ং কেবা করে আন ॥
কুল-নারী হেরি হেরি ঠারে কও কথা।
সজে বুড়ী হাতে নড়ী ঘন নাড়ে মাথা॥
এখনি বাইয়া কবং গোকুল সমাজ।
কোখা বাবে দান সাধা কোথা যাবে সাজ॥
কোখা পলাইয়া যাবে স্বল রাখাল।
ভিলেকে ভাজিয়া যাবে সব ঠাকুরাল॥
অভয়ে আমার বোলে হও সাবধান।
কুলবতী দেখি আর না করিছ আন॥
বংশীবদনে কহে কেবা শুনে কথা।
এখনি দেখিয়া লবে ধেবা থাকে যথা॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পূথির ১৮৯৮ সংখ্যক পদ।

২। 'চাও' প-র-সা। ৩। 'কিবা লর' ছলে 'কেবা লের' ঘ; 'কিবা লরে' ধ; 'কিবা লও' প-র-সা।

৪। 'কবে' ঘ; 'কভো' প-র-সা।

বরাডী ।১

বান্ধিয়া চিকণ চূড়া বনফুল তাহে বেড়া श्रश-माला ভাছে वन-मालार। গোঠে থাক খেতু রাখ আপনা নাহিক দেখ বড় হেন বাসহ আপনা।। অহে কানাই বিষয় পাইয়া হৈলাও ভোরাও। আঁখি মটকিয়া হাস আপনা কেমন বাস আন হেন নহিয়ে আমরা ৷ধ্রু গাল্পের গরবে তুমি চলিতে না পার জানি রাজ-পথে কর পরিহাস। রা**জ**-ভয় নাহি মান কংস-দর্বার জান ্দেখি কেনে নহ এক পাশ 🛭 চহুরে চাহুরী কভ আর কছ অবিরভ काठा॰ काकटनत्र ममान। জ্ঞানদাস কছে হিয়ায় ক্ষিয়াণ লহ कारा नटर क्विंट भाषान ॥৮१॥১०৮३॥ পাঠান্তর

)। देश প-त-ना পूषित ১৮३৯ मश्याक शहा २। 'वन-मांग' व्हल 'वहना माना' भ-त-ना। ७। 'देहरन' क, थ, छ। ४। 'खाना' क, थ, छ, भ-त-ना। ६। 'कांग' क, थ, छ। ७। 'कांना' ब, छ; 'कत्रिता' भ-त-ना। १। 'कांग' क, थ, छ। ৮। 'कमंगि' व, छ।

ভাটিয়ারি ৷১

ওহে কানাই এ বুজি শিখিলা কারং ঠাঞি। পরের রমণী দেখি সম্বনে কিরাও আঁথি দুচুণ জনার হাতে ঠেক নাই ॥এ॥

ভূমিতে না পড়ে পা আন্ধার-বরণ গা কি গরবে ঘন ঘন হাস। বনে বনে চডাও গাই আপনাকে চিহ্ন নাই হায় ছিছি লাজ নাহি বাস : পেঁচ রাখি পর ধড়া টেড়া করি বান্ধ চূড়া কাণে গোঁজ বনফুল ভাল। ডিগর লইয়া সাখী বনে ফির নানা ভাভি বেচাইবে ব্রজ রাজের পাল ॥ বনে মাছে ফ্লগুলা তাহা তুলি পর মালা গারে সদা রাকা মাটী মাখি। এড° বেশ ভূষায় কিবা পরনারী ভুলাইবা वः नीपाटभव मत्न ८ प्रमुप्त माथी ।

1166117030H

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৯০০ সংখ্যক পদ।
২। কাক্ষ'থ। ৩। দিড়'থ, প-র-সা। ৪। চিরার'
খাং। চিন'প-র-সা। ৬। কুলগোলা' ঘ, চ। १।
'এ' থ। ৮। 'সনে দের' হুলে 'মনে দেথ' চ;

ভণা রাগ।১

স্থাও দেখি শুবল স্থা কার ঘরের এ হটীং। कि कान कतिन (इ দেখিতে দেখিতে মোরে ধেপা কৈলে এই বে॰ মায়্যাটি॰ ॥এ। লোক জন অগোচরে পার চোর চুরি করে ধন কড়ি সব লয় ছরি। দেখিতে দেখিতে মোর এ ৰডি বিষম চোর उन् मन नव किन চूर्ति ॥ मात्रादिक (यम भविद्यादक ্মার্য়াণ নয় এই যে निम्हम त्म वार्षात्रात्री वर्षे । সাবধানে দেখ ভাইয়া বল-বাস ঘুচাইয়া कि कि थन देशन निक रहे।

এত বলি গোপী-নাথ দিতে চাহে গায়ে হাত চুম্বন করিতে বারে বার। উচিত কহিল ভোৱে দান দিয়া যাও মোৱেণ নহে ত উতার অলম্বার । শুনিয়া ললিভা বলে বন মাঝে নছে ভালে রাজ-পথে এত কি জঞ্চাল। আপন নগর ঘরে যদি লাগি পাই ভোৱে তবে সে জানিয়ে ভালে ভাল ॥ मानो करह स्माहार व्याटक रेलग्रा यात त्राकात कारक তবে সে জা:নবা ভালে তৃমি। বংশীবদন কয় মোরে না করিহ ভয় বিরোধ ভালিয়া দিব আমি ॥৮৯॥১৩৯১॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৯०১ সংখ্যক পছ।
२। 'হটি' ক, চ; 'ইটি' ঝ, ছ। ৩। 'সে' খ। ৪।
'মেয়াটি' थ; 'মাইয়াটি' ঘ। ৫। 'মেয়া' খ। ৬।
'মেয়ার' খ। ৭। 'ছরে' প-র সা। ৮। 'ভালি তাল'
ঘ, চ।

वानने ।>

শুন শুন নীলকং কান।
কা সঞ্জে মাগহ দান ॥
সবে দধি ঘুতের পসার।
কাহে করহ অবিচার ॥
সহজই তুহুঁ সে অধীর।
ধর কুল-বধুগণ°-চীর ॥
রাজ-জয় নাহিক তোহার।
পথ মাহা এতছুঁ বেভার ॥
বোপ গোপালগণ সজ।
অহনিশি কৌতুক রজ ॥
তেঞিং সাহস এত ভেল।
পরশহ কুলবভি-চেল ॥

বিপরিত কর পরিহাস।
কহ রাধাবল্লভ দাস ॥৯০॥১৩৯২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপ্ৰির ১৯০২ সংখ্যক পদ। ২। 'নিল্ক' ক,চ,প-র-সা। ৩। বিধ্পূণ' ক।৪। 'পোরালাগণ' ক। ৫। 'ডেঞিড' প-র-সা। ৬। 'বিপরীড' ক।

'রাই-মুখ হেরি মুধরা কহে' ইত্যাদি গেয়ম্। পুনশ্চ দান-কেলি যথা।

शहर ।>

ত্রিভূবন-বিজই মদন মহারাজ।
বৈঠল বুন্দাবনে নিকুঞ্জক মাঝ॥
গোরস আওতং রসবতি ঠাম॰।
স্ফাল: বিপিন-পথে সরবস দান॥
তোহে কহোঁ। গোপিনি॰ আয়ানেরং রাণি।
কেমনে জানিবা দানা সহজে আয়ানি॥
ছুহুঁ গজ-গামিনি হরি জিনি মাঝ।
নব বৌবন-মদে নাহি দেহ রাজ॥
মোহেং গিরিধর বলি সোঁপল কাজ।
আপনে আপন কথা কহিতেহ লাজ॥
কেবল গোরস-দানে কেনে দেহ ভজ।
বিচারেং চাহিরে দান প্রতি অকে অস ॥
এ সব দানের কথা জানয়ে বড়াই।
গোবিন্দদাস কহং চপল কানাই॥

1060(1161

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০৩ ও প-র পুথির ২৮।২ সংখ্যক পদ। ২। 'আওল' ক। ৩। 'ঠান' প-র-সা ৪। 'পুজিল' প-র-সা। ৫। 'কহ' ক; 'ক্ষে' ব; 'কৃষ্ড' প-র-সা। ৩। 'আলো রাধে' প-র। १। 'রারাণের' ছ। ৮। 'জানিবা দান' ছলে 'জানিবে জুমি' প-র। ৯। 'জুছ' ইত্যাদি ছলে 'এ পজগামিনি ধনি' প-র। ১০। 'মোরে' প-র; 'তোহে' জ। ১১। 'বিচারি' চ, প-র-সা। ১২। 'কহে' জ।

ভাটিরারি।১

মাধৰ ছুৱেং কর উল্ট নয়ান । সোই চাতুরিপনা জগ মাহা জানিয়ে যোই রাখয়ে নিজ মান ১৫। হাসি হাসি নিয়তে আসিছ অবলা হেরিণ ভাল নহে• ভোহারি । বেভার । লোক-লাজ ভয় এক না মানসি ७ ॰ कूरल > करम छुत्रवात ॥ নহোঁ> কুলটা হাম বর-কুল-কামিনি নিকটে ভাত-ঘর মোর। ভুছ বন-চারি তোর মতি চঞ্চল ভাহে ১ সাহস এত ভোর ॥ শ্রুতি-সম্ভব্য নহ ইহ স্বকুবচন (वं भव कहिन मयू जार्ग। खामपान कर ঐছে কছসি কাৰে>৮ আওলি নৰ অনুৱাগে ১১ ৯২॥১৩১৪॥ পাঠান্তর

১। देहा প-य-मा পूषिय ১৯०৪ ও প-य পूषिय २৮। ४० मश्याप भवा । २। 'मृद्य' क । ७। 'खेन हे नद्यान' भ-य । ४। 'खरना' भ-य । ४। 'खरना' भ-य । ४। 'खरना' भ-य । ४। 'खरना' भ-य । ४। 'क्रिक् फूट् चार्थि' भ-य । ७। 'न्द्र' व, ६। ४। 'क्रिक् भ-य । ৯। 'खरहे' भ-य । ১०। 'खेरहे' भ-य । ১०। 'खेरहे' के। ४०। 'मह्य' के। ४८। 'म्याप भ-य । ४०। 'मह्य' के। ४०। 'मिर्ट भेया। ४०। 'मिर्ट के। ४०। 'मिर्ट भेया। ४०। 'मिर्ट भेया। ४०। 'मिर्ट के। ४०। 'मिर्ट भेया। ४०। 'मिर्ट के। ४०। 'मिर्ट भेया। ४०। 'मिर्ट के। 'मिर्ट के। 'मिर्ट के। भीय के। 'मिर्ट के। भीय के। 'मिर्ट के। 'मिर्ट

ইত্যাদি ছলে 'এত সে না বোলহ' পর। ১৯। 'আওলি' ইত্যাদি ছলে 'ধনি কাফু ধনি অফুরাগে' প-র।

পঠমঞ্জরী 1১

নিভি নিভি যাওং রাই মথুবা নগরে।

ত্বত দধি ত্বং ঘোলেঃ সাজাঞাং পদারে।
আমি পথে মহাদানী বিদিত সংসাদে।
কার বোলে কোন ছলে যাওঃ অবিচারে॥
দেহ মহাদান রাই বদিয়া নি : টে।
এক পণ অধিক কাহণ প্রতি ঘটেং॥
চির দিন আছে দান সমুখে আসাড়িং।
অকে বন্ত-মূল ধন আরু না: * ড়ি॥
সিঁথার সিন্দুর দান কহনে না যায়।
নয়ানে কাজল-রেখে ধরণী বিকায়॥
কি বসিধে বল রাই না সতে বেয়াজ।
ভূমি ধনী আমি দানী ইথে কিবা লাজ॥
ঈশবত চাহনি হাদি আধ আধ ক্থা।
ভ্রানদাস কহে দানী বিধ্য বিধাতাং॥

113:12:501

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-মা পুণির ১৯০২ ও গার পুণির ২৮।১৭ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' ফ্লে 'জীরাগ' পর। ২। 'ঘাহ' পর। ৩। 'হর্ম' ক; 'দ্ধ' ঘ। ৪। 'ঘালে' থ। ৫। 'সাজায়্যা' চ। ৬। 'কর' ক, থ। ৭। 'ঘাটে' ঘ, প-র-সা, পর। ৮। 'চির দিন আছে' ইত্যাদি হলে 'সমূথে আহরে' ইত্যাদি ক, থ, ঘ, চ। ৯। 'আবে' পর। ১০। 'বিষম বিধাতা' ফলে 'বাদ্ধ প্রেমলতা' প-র।

निक1

৭-৮। "চির দিন" ইত্যাদি। দান অর্থাৎ শুক্ষ প্রহণ করিতে হটলে ভিনটি জিনিস থাকা আবশ্যক,—(১) দানের প্রথা, (২) দান-প্রহণ-

কারীর সামর্থা, (৩ দান গ্রহণের উপযুক্ত জবা। এ স্থলে ঐ তিন্ট জিনিদের কোন্টির আভাব নাই— ইছা দেবাইবার জন্ত শীক্ষা বলিতেছেন,—চির দিন দান অর্থাৎ দানের নিয়ম আছে; সমূবে আযায়ী অর্থাৎ দণ্ডবারী রহিয়াছেন; তার পরে জীরাধার অজে দানের উপযুক্ত বহু-মূল্য **অগভার ও বসন** রতিয়াড়ে; প্রতরাং এ স্থলে দান ন: দেওয়ার কোনই কারণ নাই। ['পালাশো দণ্ড আয়াঢ়ঃ'; অমর-কোষ; 'অপাজিনায়াচ্ধর: প্রসন্তবাক্' কুমার-সম্ভব। একাসারার বৃত পলাশ-দ**ও হহতেই বোধ** হয় 'আ্বড়' (অপভ্ৰংশে আসাড় ; শক্ষের সাধারণ দিও ও 'আষ'টা', অপত্রংশে 'আধাড়ি') শক্ষের সাধারণ **प्रधारो वर्श आंग्रशास्त्र। श्रीकृषः (बाद हम** র্মাকতা করিয়ার ।নজের হস্ত-স্থিত গো-চারণের যৃষ্টি অপুৰা বংশাটিকেই দণ্ড বলিয়া করিয়াছেন]।

▲ 취기 :

পথ ছাড় জতে কানাই কিবা বন্ধ কর।

যার বাহান নতে না পাছৰ তার করে ধর।

শ্রেনি মরন হউ এ ছিল কপালে।

ব্যভাপু-শুভা-তপু ছুইলে রাখালে॥

একে সে হোমাবে ভা বাসে কংসাম্বর।

এবোল শুনলে হৈবে দেশ হৈতে দূর॥

কে ভোমাবে বিষয় দিলে ফেল দেখি পাটা।

ছুমিও নুহন দানা আমরা নহি টুটা ।

থাকিবা খাইবা > যদি যমুনার পানা।

গোপীগণে না রাখিহ না ইউও দানী > য়।

1>81:৩৯৬৪

পাঠান্তর

১। ইতা প-র-সা পূ'থব ১৯০৬ ও প-র পুশ্বির ২০।২ঃ সংধ্যক পদ। 'শ্রীরাগ' স্বলে 'দিকুড়া' প-র। ২ । 'নিতে না পা**ও' স্বলে 'দইতে নার'** প-র-সা। ৩। 'হাত' প-র-সা। ৪। 'হউক' প-র-সা। ৫। 'ছার' প-র। ৬। 'ছুইবে' প-র-সা। ৭। 'না বাদে' ক, খা ৮। 'হইবে' খ, চ। ৯। 'রাজ' প-র। ১০। 'তুমিও' ইত্যাদি হলে 'তুমি সে বড়ার পো আমি কিলে টুটা' প-র। ১১। 'থাকিবে থাইরা' প-র। ১২। 'না ছুইও গোপিকার অল না হইও দানী' প-র-সা; 'গোপীগৰে না বাটাহ পৰে হঞা দানী' প-র।

পঠমঞ্জরী।১

এড়িয়া না যাইহ বড়াই ধরি তোমার পার।
কি লাগি নদ্দের পোং ধরিয়া রহায় ॥

ঘরের বাহিরে কৈলা বিলয়া ক্হিয়া।
আনিয়া রাখালের হাতে দিলা যে সোঁপিয়া ॥
এ দেশে বিচার এই রাজা নাহি পাটে ।
গোয়ালা হইয়া দানী দান সাধে বাটে ॥
এ দেশে এমন বড়াই এ দেশে এমন।
দানী হৈয়া কেবা টানে অজ্বের বসন ॥
আবোধ নন্দের পোলা না শুনে কারো বোল।
পাছে চাহে দান দানী আগে চাহে কোল॥

বংশীবদনে বোলে হুর্ঘিত হিয়া।
দানী নহে নীক্ষ্তে আহে দাঁড়াইয়া॥

1261170911

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০৭ ও প-র পুথির ৮৮।১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বালা' প-র। ৩। 'রহর' প-র-সা। ৪। 'বাহির' প-র। ৫। 'কৈলা মোরে' পর। ৬। 'আনিয়া দানীর হাতে দিয়া বাও ছাড়িরা' প-র। ৭। 'এ দেশে' ইত্যাদি বাকি চরণঙলি কেবল প-য়-সা পথিতে আছে।

द्धिनो ।)

হেম-ঘট পাইয়া পাথারে। চোরার মন সাত পাঁচ করে। তুমি ইহায়ং পুছহ বড়াই।

কিবা ধন মাগয়ে কানাই ।

মাকছের হাথে নারিজল ।

খাইত্যে সাধ ভাঙ্গিতে নাহি বল ।

তুমি কি না জান বনমাল।

রাখালে কি ভজে চন্দ্রাবলি ।

সাপের মাধা(য়) মণি জ্লে ।

বড় কহে বাশুলির বলে ॥৯৬১১৩৯৮॥

পাঠাক্তর

১। ইহা প-ব-সা পুথির ১৯০৮।১৯১১ ও প-র পুথির ১৮।২১ সংখ্যক পদ। 'হৃছিনী' হুলে 'বরাড়ী' প-র। হ। 'উহার' প-র-সা; 'দেখি' প-র। হ। 'মাকড়ের' ইত্যাদি কলিটি কেবল প-র পুথিতে আছে। ৫। 'ভেটে' প-র। ৬। 'সাপের' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি শ্রীযুক্ত শিবরতন মিত্র মহাশয় একখানা প্রাচীন পুথিতে প্রাপ্ত ইয়াছেন। 'চণ্ডীদাসের পদাবণী'—বঙ্গীয়ন্দাহিত্য-পরিষদের সংস্করণ, পরিশিষ্ট ।০ পৃঠা দ্রষ্টবা।

টাক1

e— । "নাকড়ের" ইতাাদি। মাকড়ের অর্থাং
মর্কটের হাতে নারিকেল (বে প্রকার),— (মর্কটের)
থাইতে সাধ হয়, কিন্তু (নারিকেল) ভালিতে বলে
কুলার না (প্রীক্তঃক্ষার প্রীরাধাকে পাওয়ার বাশা
সেইরূপ অসম্ভব।)

শ — ৮। "তুমি" ইত্যাদি। হে বনমালী। তুমি কি জান না ? চন্দাবলি অর্থাৎ চন্দাবলিনায়ী ত্রীয়াধা কি রাধানকে ভজনা করে ? ত্রীয়ক্ত শিবরতন বাবুব প্রাপ্ত

'নিসেদ (१) নীলক বনমালি।
বাথানে কি ভেটে চন্দ্রাবলি॥'
পাঠের 'নিসেদ' ও 'বাথানে' শব্দ ছুইটি বে 'নিবেদ' ও 'রাথালে' শব্দের স্থলে অওক পাঠ, তাহা সহবেদ বুঝা বার। বদীর-সাহিত্য-পরিবদের প্রকাশিত চণ্ডীদাসের 'শ্রীক্বঞ্চনীর্ত্তন' প্রন্থে 'চন্দ্রাবলি' শক্ষ কেবল শ্রীরাধারই নামান্তরমপে অনেক হলে ব্যব-হত হইরাছে এবং ঐ গ্রন্থে 'মর্কট' বা 'বানর' অর্থে অপভ্রংশ 'মাকড়' শব্দেরও কয়েকটি প্রয়োগ আছে। 'মাকড়' শব্দের এইরূপ প্রয়োগ চণ্ডীদাসের পরবর্ত্তী বালালা সাহিত্যে পাইয়াছি বলিয়া ত্মরণ হয় না। 'হেম্বট' ইণ্ড্যাদি পদটি শ্রীরাধার স্থীর উক্তি; এ হলে চন্দ্রাবলিনামা প্রতিপক্ষ-নাম্নিকার কোন প্রসাদই নাই; স্কুরাং উল্লিখিত নানা কারণেই আমরা এই পদের 'চন্দ্রাবলি' শব্দের প্রতিপান্ধ শ্রীরাধা ও পদটি বড়ু চণ্ডীদাসের রচিত বলিয়া সিদ্ধান্ধ করিতে বাধ্য হইয়াছি।

পঠমঞ্জরী।১

আজি কেনে নাহি বাজাও বাঁণী।
অপাক্ষ-ইপ্লিড ইষত হাদি॥
কিবা ভরসায় আইস কাছে।
না জানি মরমে কি ভাব আছে॥
পসরাং ছুইতে করহ সাধ।
বরাকের দানী সোণায় সাধ॥
মুখের হুখেতে কহিতে° চাও।
বিপরীত ইথে করিলে পাও॥
কালা হৈয়া এত রসের ভোরা।
খঞ্জন কমলে দেখিলা পারা॥
কি গুণ দেখাঞা সঘনে চাও।
হাতে কি চান্দের পরশ পাও॥
জ্ঞানদাস কহে গোঁপ-বিয়ারি।
বলিতে পারিলে এত কিং বলিং ১৭॥১৩৯৯॥

পাঠান্তর

)। इहा शन्त्र-ना नूबित २०२८ मःबाक शहा १। 'भनाव' क, था ७। 'कहेट्ड' क, थ, शन्त-ना। ८। 'खन प्रिवा' थः, 'खल्प्ड फूबि' शन्त-ना। ८। 'कि व्युट्डक' क, शन्त्र-ना।

টাকা

৯—১০। "কালা" ইত্যাদি। তুমি কৃষকার
হইমা এক্লপ রদে বিভোব, (ইহা বড়ই বিচিত্র);
বোধ হয় বেন, তুমি পল্লের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দেখিয়াছ! (পল্লের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দৃষ্ট হুইলে শাক্ষনশাক্ষ অনুসারে দর্শকের বিশেব সৌকাগ্য স্থাচিত
করে।) তুলনা কক্লন,—

'একো হি ধন্ধনবরো নলিনীদলম্বো দুষ্টঃ করোতি চতুরস্ববাধিপভাষ্।'

— শুলার-ভিলক।
স্থীর উক্তির অপর গুড় অর্থ ইহাও বটে বে, জুমি
বোধ হয়, শ্রীরাধার বদন-কমলে থক্সবের ভার চকল
নয়ন-ভলী দেখিয়াছ; তাই এক্সল রলে বিজ্ঞার
ইইয়া পড়িয়াছ!

শ্রীরাগ ৷১

সংজই তমু তিরিভঙ্গ।

এমন হইয়া এত রঙ্গ।

যবেং তুমি কুন্দর হইতা ।

তবে নাকি কাহারে পুইতা ।

আপনা চতুর হেন বাস।

কি দেখিয়া কি বুকিয়া হাস।

চাহিতে সঘনে আঁখি চাপ।

পর-নারা দেখিয়া না কাঁপ।

যে দেখি মরমে এই ভাব ।
ভোক্রে সে বাতাসে রসে ভুব ।
ভ্রানদাস কহে শুন শ্রাম ।
ভাবনা না ভাব অমুপাম ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১৫ ও প-র পুথির ২৮।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বদি' প-র। ৩। 'হইতে' প-র। ৪। 'খুইতে'। অতঃপর প-র পুথিতে নির্নিধিত অভিরিক্ত ফ্রিটি ইই হয়ৢ বথা—

'পরশে ভোমার ঝুর্যা মরি। তেঞি সে তোমারে ভাল বলি ॥' (দিবি খন' প-র। ৬। 'ভাবো' প-র-সা। ১৪। 'কমা' ক; 'কেমা' প-র-সা। १। 'वाकाम' क, श-द्रा ৮। 'फूटवा' श-द्र-मा। ৯। 'রাই' প-র। ১০। 'কহিতে জানিলে এত कहें भन्द ।

অথ শ্রীকুফোক্তিঃ।

यानचे ।>

कि लागियार व्याह्मा पुत (पर्म। তোমার সহজ রূপ কাম হেরি কান্দে হেও जूरन जूलल ७ ना ८र८म ॥ ध्रम **बाहेम देवम॰ द्यांत्र कार्ट्ड द्रबीर प्र॰ मिलां । शाह्य** বদনে করিয়ে মন্দ বায়¹। এ ছুখাত্রি রাজা পায় কেমনে হাঁটিছুদ ভায় দেখিয়া হালিছে মোর গায়॥ কেমন তোমার ও গুরুজন

कि मार्थ माधिलभ्भ धन কেনে বিকে পাঠাইল ভোমা। ভোর নিঞ্চ পতি যে কেমনে বাচিবে সংস পাঠাইয়া'ত চিতে দিয়া খেমা' হাসি হাসি মোড় মুখ বসনে ঝাঁপিছ বুক (मिथिया वहेनूँ तफ़ क्यो। জ্ঞানদাসেতে কয় পদারী যে জন হয়

त्रमान वहरन करत विकि ॥৯৯॥১৪०১॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১৬ ও প-র পুথির ২৮।২৪ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' ছলে 'শ্রীরাগ' পার। र। 'नानि' भ-ता । '(ना' भन्ता हा 'कूनिन' ४, ६। ৫। 'व्याना क्याना' भ-द्र। ७। 'देवनक्' का ना 'विष्य क्षांच' श्रःब-ना। ৮। 'হাটিছ'ব; 'হাটিবে' প-র। ৯। 'কেমনে' প-র। ২৮/২৬ সংব্যক পদ। ২। 'পর্য' প-র-সা;

১০। 'ভোর' প্র। ১১। 'সাধিব' প্র। ১২। 'বাচয়ে' পর। ১৩। 'পাঠাইল' প-র।

ধানশী ৷১

वित्नामिन त्या वर्ष उपात्र मानी। সকল ছাড়িয়া দানী হইয়াছি তোমার মহিমা শুনি ॥ধ্রু॥ অঞ্নে রঞ্জিত পঞ্জন-নয়ন ভাহে কটাক্ষের বাণ। নাসিকা উপরে অমূল্য মুকুতা উহার অধিক দান। কুটিল কবরী অলকা উপরে **ाट उपान्त (देश)।** পরশ্ব-দাপনিত জিনি8 মুখখানি (क करत मार्नित (लक्षा II পীন পয়োধর স্থমের-শিখর তাহে মুকুতার হারে।' রতন অধিক যতন করিয়া कि धन टेलग्राइ (काटन ॥ -চরণ উপবে কনক-নৃপুর চলিতে করয়ে ধ্বনি। করি আগুসার রসের পদার **अर्याय कत्रश्र मानी ॥** বংশীবদনে কহল যতমে শুনহ রাজার ঝি। উচিত কহিতে মনে মন্দ ভাব আঁচলে ঝাঁপিলা কি ॥১০০॥১৪০২॥ পাঠান্তর

১। हेहा भ-त्र-मा भूषित ১৯১१, भ-त्र भूषित

'পরেদ' প-র। ৩। 'দর্পনি' ব; 'দাপিনি' প-র। কেবল প-র পুথিতে আছে; তৎপরিবর্ত্তে প-র-সা ৪। 'নিজ' ক, ধা ধা 'কেডন' পর-সা। 'कि धन' हेल्डानि भ-त्र ऋल 'अ धन लिखे बाउ'क, थ, घ; 'धन वहेबा' हेलापि श-त्र-प्रा। १। 'कहिरम' भ-त्र-मा। ৮। 'वाम' भ-त्र।

তথা রাগ।১

(इस् ला विस्तिमि अ श्राथ किन्रिट) যাবে ভূমি। गीजन कमय-जल বৈসহ আমার গোলে সকলৈ কিনিয়া নিবং আমি । প্রা শক্তিন পথের ধূলা এ ভরঃ চুপর বেলা ক্মল জিনিয়া পদ ভোৱি। বোজে ঘামিয়াতে মুখ দেখি লাগে বড় ছুখ শ্রম-ভবে আউলাইলা কবরা ৷ গোঙারের তথ্য গণে অমূল্য রতন সাথে লাগি পাইলে লইবে কাড়িয়া"। এই পথে মহাদানা তোমার লাগিয়া আমি তিল-আধ না যাও । ভাড়িয়া॥ ভেজ অত্য মনোরপ্র মধুরা অনেক পথ भात्र कार्ट्स देवम विद्याक्षिन । এই সে উ'চড ঽয় वःशीवम्दन क्य শ্যাম সংখ কর বিকিকিনি ॥১০১॥১৪০৩॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯১৮ ও প-র পুধিব ২৮।২৭ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'প্রীরাগ' भेन्त्र। २। '(कब्रान' क, थ, भन्त-भा, भन्त्र। ৩। লব'প-র। ৪। 'ভরি'প-র। ৫। 'ছ্ক্র'। (तथा। भ-त्र। १। 'कानगहेन' च; 'बान्-क्रांगा' ह, श-म। ৮। '(श्रीष्ठाटवद्र' थ। २। 'कांड़िया' व, श-द। >०। '(मঙ' श-द-मा; 'वाहे' প্ৰয়। ১১। 'মধুৱা' ইত্যাদি ভণিতার কণিটি

পুথিতে নিম্নিখিত পাঠ দৃষ্ট হয়, যথা---'শুনিয়া কামুর বানা সদয়ে হরি**ষ ধনী** প্রেমভরে গ্রথর মঞ্চ। বংশাবদনে ব্যোজ বৈগ ধনি ওক্সুলে 'àবামে করহ কাত্র-সঙ্গ ।।'

कल्ल वर्ताडी ।>

মোহন বিজন্ধ পরে । দুরে গেল স্থীগণে একলাও রহিলা ধনা রাই। তুটি আঁথি চল ছবে চংগ-কমল-ডবে কানু আসি পড়ল লোটাই। জন্ম স্ফুর জেল মোরগা ভোমা হেন গুণ-নিধি তথে আনি দিলা বিধি আনন্দেব কি কৰিব ওরা ।ধ্রা রবির কিরণ পাণছে । চান্দ-মুখ ঘামিয়াছে সুখর মঞ্চার ও ছটি পায় । হিয়ার উপক্ষেরাখি, জুড়াওস্ব সেমোর আখিস্ চন্দন চচিচত করি গায় ১৪ ৰ এতেক মিন্তি করি রাইয়ের সরেডে ধরি ১৫ বসায়ল নিজ পীতবাদে। নিজ্জন নিকুঞ্জ কৰে মিলল দোঁহার সনে मत्न मत्न शंदम वश्नीतितम ॥>०२॥>००॥ পাঠাগুর

১। ইহা পার-সা পুলির ১৯২০ ও পার পুশির ২৮।১০ সংখ্যক পদ। 'কক্ষণ ব্যাড়া' স্থলে 'ধান 🚉' প্র। ২। 'বিজ্ই' প্রসা; 'নিকুর' প্রা ७। 'এक्लि' প-র। ४। '६ल **ছ**ल' প-র। **६।** 'তল' প-র। ৬। 'জনম' ইত্যাদি স্থলে 'বিনোদিনি জন্ম' ইড্যাদি প-র। ৭**। 'মিলারল' প-র-সা।** ৮। 'আজুকার হৃথের নাহি ৬র' প-র-সা। ১। 'কিব্ৰণে ভোমার' প-র। ১০। 'সুবের মঞ্জরি' প-র। ১১। 'প\' প-র। ">२। 'क्णाङ्' भ-ता ১৩। 'চাক্ষমুখি' প-র। ১৪। 'গা' প-র। 'রবির
কিরণ' ইত্যাদি কলিটির হলে প-র-সা পুণির পাঠ,
বধা—
'পাতিয়া বসনধানি আইস বৈদ বিনোদিনি
হুথের মঞ্জরি ছটি পা।
রবির কিরণে পাছে চাক্ষ-মুখ বামিয়াছে
চক্ষন-চর্চিত করি গা॥'
১৫। 'এডেক মিনতি' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি
ক্ষেবল প-র-সা পুথিতেই আছে।

यत्रण ।

রাধানাধব নীপ-মূলে।

কেলি-কলা রস-দান ছলে ॥

ছুহুঁ দোহাঁ। দরশই নয়ন-বিভল।
পুলকে পুরল ওত্ম জরজর অল ।
ছুরেং পেল স্থিগণ সভিতে বড়াই।
নিজ্ত নীপ-মূলে পুঠই রাই ॥
দোহেঁ দোহাঁ কেরইতে গুহুঁ ভেল ভোর।
চাল্দ মিলল জন্ম পুরধ চকোর॥
ছুহুঁ জন জদয়ে মদন পরকাশ।
স্থিগণ ছেরি ছুরে বাঢ়ল উল্লাস ॥> ০॥>৪০৫॥
পাঠাবর

)। 'शृंबन' का २। 'पूर्द्व' का ७। 'यूर्ट्न' का डा 'जूडेंर' क; 'जूडेर्द्व' च, চा दा 'इंड्रं' क, चा का 'पूर्द्व' का

बद्राड़ी ।>

বিনোদিনি মুঞি বড় উদার দানী।
সকল ছাড়িয়া বিষয় লৈয়াছি
ডোমার সহিমা শুনি ।

কেম-বরণ মণি-অভরণ
সদাই নরনে দেখি।
পাসরিতে মারি ছিয়ার ভরি
পাসটিতে শীরি জাখি।

ভূমি সে পরাণ সরবস ধন

এ ছই নয়ানের তারা।

এত কলাবতা গোকুলে বসতি
কারো নহে হেন ধারা॥

কি জানি কি গুণে হিয়ার মাঝারে
পশিয়া করহ বাস।

অপরপ নহে এমতিং সহজে
কহয়েং বংশীদাস॥১০৪॥১৪০৬॥

পাঠান্তৰ

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৯২১ সংখ্যক পদ। ২। 'কাক'ক,খ। ৩। 'এমত'ক, খ। ৪। 'কহরে এ'খ।

थामणी ।>

এনাং ছান্দে কে না বান্ধে চুল।

চূড়ায় মঞ্চাল্যেও জাতি কুলং।

কেবা নাহি পরে বন-মালা।

মালার এতেক কেন জালাং॥

কেনা থাকেং গ্রিভঙ্গং ছইয়া।
প্রাণ কান্দে এং রূপ দেখিয়া॥

কেবা নাং এডেক জানে কলা।

যাহা দেখি ভূললং অবলা॥

কেবা নাহি কহে কথা থানি।

চাঁদ-মুখে স্থ্যা খনে জানিং ॥

কেবা নাহি ধরে রূপ কালা।

ভোমারং রূপে গ্রিভুবনং জালা॥

ভোমা বিনে মনে নাহি লয়।

ভ্রানদাস কহে ভাল হয়ং ॥১০৫॥১৪০৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯২২ ও প-র পুৰির ১৪৷১৪১ সংব্যক পদ। ২। 'এড' ক, ব। ৩। 'চুড়ার মঞ্জিন' প-র; 'ডোমার চুড়ার মকাইংল' ব। তোমার' ইত্যাদি পাঠে ছলঃ-পতন ঘটে। ৪। অতঃ-পর প-র পুথিতে নিম্বলিথিত কলিট দৃষ্ট হয়, যথা— এই ত চল্লনের ফোটা কেবা নাহি পরে। কপাল-শুণে ঝলমল করে ॥'

শোলার' ইত্যাদি ফ্লে 'তোমার মালায় সে
এতেক' ইত্যাদি ক, ঝ; 'তোমার মালায় এতেক'
ইত্যাদি ম, চ; 'তোমার মালা এত কৈল আলা'
প-র-লা। ৬। 'কেনে থাক' প-র-লা, প-র।
৭। 'অভিজ্প' ঝ। ৮। 'বে' ক। ৯। 'বা'
প-র। ১০। 'ভ্লেরে' প-র। ১১। 'চাঁদ-মুথে'
ইত্যাদি প-র ফলে 'তোমার চাল্লমুথে ফ্লা থলে
আনি' ক; 'তোমার চাল্লমুথে ফ্লা আনি' ঝ;
'তোমার চাল্লমুথে ফ্লা হেন আনি' ঝ; 'তোমার
চাল্লমুথের ফ্লা আনি' প-র-লা। ১২। 'ভ্লা'
প-র। ১০। 'সে ভ্বন কৈল' ক, ঝ, ম, চ;
'ভ্বন কৈলে' প-র-লা। ১৪। 'আনন্দান' ইত্যাদি
ফ্লে 'আনে কহে এই ভাল হয়' প-র।

कृशामो ।)

হাথক ৰ দরপণ মাথক ফূল।
নয়নক অঞ্চন মুখক তাম্বুল ॥
হাদয়ক মুগ-মদ গীমক হার।
দেহকত সরবস গেহক সার ॥
পাখিক পাখ মীনক পানি।
জীবক জীবন হাম ঐছে জানি ॥
ভুছুঁ কৈছে মাধব কহ ভুছুঁ মোয়।
বিভাগতি কহ ছুছুঁ দোহাঁ হোয় ॥

#206#280P#

ইত্যাদি গোষ্ঠবিহারাদি-দানলীলা। তৃতীর-শাখায়াং পঞ্চবিংশতি-পল্লবঃ।

পঠিব্র

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১০ ও প-র পুথির ১৪|১৪২ সংখ্যক প্রব। 'ভূপানী' খনে 'ধান-⊞'

প-র। ২। 'হাডক' ক, চ, প-র-সা; 'হাথকি' প-র। ০। 'বেহকি' প-র। ৪। প-র পুথিতে 'বিভাপতি কহ' ইডগদি পংক্তিটি নাই; উৎার স্থান ফাক রাথা হইয়াছে।

> অথ নোকা-বিলাস। **ওছ**চিত শ্রীমহাপ্রভু।

> > षुषी ।>

না জানিয়ে গোরাটাদের কোন ভাব মনে।

হুরধুনী-ভীরে গেলা সহচর সনে ॥
প্রিয় গদাধর আদি সজে ত করিয়া।
নৌকায় চড়িলা গৌর প্রেমানেশ হৈয়া॥
আপনেই কাণ্ডারী হৈয়া বায়ৢ৽ নৌকাধানি।,
ভূবিল ভূবিল বলি সিঞ্চে সভে পানি ॥
পারিষদগদ সবে হরি হরি বোলে।
পুরব সোঙু র কেনো ভাসে প্রেম-জলে॥
গদাধর-মুধ হেরি মৃত্ মৃত্ কাসে।
বাস্থদেব ঘোষে কহে মনের উল্লাসেণ ॥

12128091

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৯২৫ সংখ্যক পদ। ২। 'আপনি' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'বছে' প-র-সা। ৪। 'ভ্রিবে' প-র-সা।

महात ।>

সবর্ত্ৎ স্থীগণ চলু ঘর মাই।
নব নব রঙ্গিণি রস্বডি রাই।
মানস-ফ্রধুনি ছ কুলা পাথার।
কৈছনে সহচরি হোরব পার।
প্রারুট সময়ে গরজে ঘন ঘোর।
ধরতর পবন বহুই ভহিঁ জোর।

ছুরছিং নেহারত নাগর শ্রাম।

তরণী লেই মিলল সোই ঠাম।

হাসি হাসি কহয়ে নাবিকবর কান।

চঢ়ং সভে পার উতারব হাম।

শুনি স্বদনি ধনি হর্মিছ ভেলিং।

চঢ়লং তরণি পর সহচরি মেলিং।

নৌহুন নাবিক কছু নাহি জানং।

বৈগতে তরণি লেই করল পয়ানং।

টুটিংং তরণি হেরি ভেল তরাস।

সিঞ্যে পানি করেংই জ্ঞানগাস ঃ২৪১৪১০।

১। ইংগ প-র-মা পুথির .৯২% সংথাক পদ।
২। 'সকল' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'একুল' ক;
'দো কুল' পর সা। ১। 'দ্বিহি' ক ে ৫। 'চড়'
ক, প-র-সা। ৬। 'ভেল' ক, ঘ, চ, গ-র-সা।
। 'চড়ল' ক, প-র-সা। ৮। 'মেগ' ক, ঘ, চ।
৯। 'জানে' খ। ১০! 'পমানে' খ। ১১।
'টুটিল' ক; 'টুট' খ, চ, প-র-সা। ১২। 'মিঞ্জে'
ইত্যালি স্থলে 'সিঞ্চের পানি করি' ক; 'মিঞ্জের
পানি করি' ব, চ; 'সিঞ্জে পানি করে' প-র-সা।

পাঠাথর

कारियाति ।> মানস-গগার জল ঘন কৰে কল কল তু কুলং বাহিয়া যায় চেউ। গগনে উঠিল মেঘ পৰনে বাঢিলু বেগ তরণি রাখিতে নাহি কেউ। দ্বেখ স্থি নবান কাভারী শ্রামরায়। কখন না জানে কান বাহিবার সন্ধান জানিয়া চটিলুঁ । কেনে নায় ॥ খ।। নায়্যারং নাহিক ভয় হাসিয়া কথাটি কয় कृष्टिल नशांदन हाग्र॰ त्यादत । ভয়েত কাঁ পছে দে এ জালা সহিবে কে काछाती भतिया करत दकादत ।

অকাজে দিবস গেল নৌকা নাছি পার ছৈল
পরাণ হইল পরমাদ।
জ্ঞানদাস কহে সধি থির হৈয়া থাক দেখি
এখন না ভাবিহ বিষাদ ॥৩৯১৪১১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯>**৭ সংখ্যক পদ।** ২। 'দোক্ল'প-র-সা। ৩। 'পাড়িল'**খ। ৪।** 'উঠিহ' চ। ৫। 'নেয়ার' চ। ७। 'চাহে' ক,ঝ,প-র-সা। ৭। 'তুমি'প-র-সা।

ঞ্জীরাগ ৷১

য়ৰ লক্ত লক্ত গ্ৰি মরমে মরমেং পশি नारत छात्रल ७३०। তৈখনে মঝু মন ভেলহি অন্চন্গ বেকত ধয়ল ফল সোই।॥ এ স্বিশ্ হরি স্ত্রে মানহণ কুঞ্জ-বিনোদ। ইহ নাবিক অভি চঞ্চল চপল-মডিদ অা যেও তেও পরবোধ মধ্রণ বিজুরি ঘন ঝলকই গগনহি সঘন দিনহি ভেল আন্ধিয়ার। ভরণি ঘন ঘুরত্ত খরতর প্রনে পৈঠত জল অনিবার ৷ পড়ল জিউ সহটে চুরজন জানি ইए। জনিং করছ বিচার। তুয়া ইন্সিতে অবং২ সব সথি জীবউ১৩ (शाविन्समान कह नांत्र ॥ ८॥ ३॥ ३॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯২৮ ও প-র পৃথির ২৯৮ সংথ্যক পদ। 'শ্রীরাগ' ছলে 'কামোদ' প-র। ২। 'রহল' ক। ৩। 'এই' চ, প-র-সা; 'তোঘ' পার। ৪ 'আন ছল' ক, প-র; 'আছেন' প-র-সা। ৫। 'সোদ্ব'প-র। ৩। 'ক্ফ্রি' প-র। ৭। 'মানই' প-র-সা। ৮। 'চপল চরিত মতি' প-র। ১। 'ঝন ২। 'আশ' ব, প-র-সা। ৩। 'গৌরব' প-র-সা। ঝন কত' প-র। ১০। 'ঘুরত' ক, চ, পর-সা, भ-व । >> । 'कांनि' भ-त-मा । >२ । 'बाकू' भ-त । 50 । 'बीवड' क , 'बिडे' श-त्र-त्रा ; 'बिवहे' श-त्र ।

महात्र १३

কহ সখি কি করি উপায়। नाट्यत नाविक देश्या अ त्योवन हाय । भन्नमात देशन महे भन्नमात देशन। নায়ার গলার মালা মোর গলে দিল। (य किल कशांति महे (य किल कशांति। নাবিক ছইয়া মোবে পরশিল বলে॥ कला इंडेल महे कला इंडेल। वाल काल नांग्रा (माद्र Cकारल कविर निल ॥ জ্ঞানদাস কহে ধনি না ভাব বিষাদ। নন্দের নন্দন নায়া কিসের পরমাদ।৫॥১৪১৩॥ পাঠান্তর

)। देहा भ-ब-मा भूभित ३३२२ मध्याक भन । २। 'क्छ्र' क्।

व्यवस्था । ३

ৰায়্যা হে এখন লইয়া চল পার। পুরিল ভোমার আশাং কি আর বিচার॥ **অকলত্ব কুলে মোর কলত্ব** রাখিলে। এখন কিবা মনে আছে না বোলহ ছলে । नाजा। टेरबा हुड़ा डाक्ष मब्द्रव शास्य। ইথে কি গুরুব॰ কর কুল-বধু সাথে। পারে মাও। নুতন নায়া না কর বেয়াল। জ্ঞানদাস কৰে নায়। বড় রসরাজ ।৬।১৪১৪।

পঠিকির

ंकः। वेदां जन्मन्यां गुवित ५३०० मध्याच न्या ।

8। '(नश' क, भ-व-मा।

बाननी ।>

শুন বিনোদিনি ধনি নামার কাণ্ডারী তুমি ভোমার কাথারী কছ কারে। তৃয়া অমুরাগে প্রেম- সমুদ্রে ডুব্যাছিং ভাষি আমারে তুলিয়া॰ কর পারে॥ যোগী ভোগী নাপিভানী ভোমার লাগিয়াদানী ওঝা• হইলাম ভোমার করিণে। তৃয়া অনুবাণে নোরে লৈয়া ফিরেণ ঘরে ঘরে जुशा लागि कतिलू (पाकारन । मना किति (असू मत्न রাখাল হইয়া বনে ভুয়া লাগি বনে বনচারী। তোমার পিরিতি পাইয়া এ ভালা ভরণী লৈয়া जुग्रा लागि इहेनूं कांधावी ॥ র্মণীর শিরোধণি না বোল কুবোল ধনি ुर्गी ८ थरम कि ना कति यामि। না ঠেলিহ রাজা পার দাস জগন্নাথে কয় कां ि कौरन धन जूमि ॥१॥१८०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'ড়্বিয়াছি' ক। ৩। 'ড়্মি মোরে ডুলি' প-র-সা। ৪। 'বুলি জুণী' খ, চ। ৫। 'বালিয়া বনিকিনী' न-त-ना। ७। 'बानो' भ-त-ना। १। **'क्रिट्सा'** প্-ব্ল-সা ।

ettalfa 13

না বাও নবীন কাণ্ডারি। बनाक छेउँदिय सम स्टार कींगा मिति ॥ স্থুৱার ভরণী লৈয়া তীরে আইলা শ্রাম। 💛 🕟 সকল করিলা বিধি প্রিল সনকাস।

নবনিং মাধন ছেনা যে ছিল পসারে।
সকল দিলেন খ্যাম° নাগরের করে।
অঞ্চলি অঞ্চলি করি করিলা ভোজন।
সভে মেলি চুলিলেন আপন ভবন।
আইলা মন্দিরে রাই স্থাগণ সঙ্গে।
হরিষে বসিলা ধনা প্রেমের ভরকেও ॥৮॥১৪১৬॥

কীর্ত্তনিয়ামুখাৎ শ্রুতা নানামতে সংগ্রহঃ গাননির্বাহকার্থে। ইত্যাদি মানস-গঙ্গায়াং নৌকাবিলাসঃ।

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'নবীন' ক। ৩। 'ধনী' প-র-সা। ৪।
কভংপর প-র-সা পুথিতে নিয়লিথিত ভণিতার কলি
দৃষ্ট হয়, বথা—

'বংশীবদনে বোলে আহা মরি মরি। ছলে বলে বন্ধুয়া মিলে রাধিকা স্থল্বী।

অথ যমুনায়াং নৌকাবিলাসো যথা।

শ্রীরাধাকৃষ্ণ-চরণে মনো দন্ধাবধীয়ভাং।

আনো শ্রীমহাপ্রভুঃ।

थाननी ।>

আরে মোর আরে মোর গৌরাক রায়।
ক্ষরধুনী মাঝে বাইয়া নবীন নাবিক হইয়া
সহচর মিলিয়াং-খেলায়।
প্রিয় গলাধর সঙ্গে পুরব রভস-রজে
নৌকায় বসিয়া করে কেলি।
ভূব ভূব করে না বহুরে বিষম বা
দেখি হাসেং গোরা বনমালী।
কেহো করে উভরোল খন ঘন হরিবোল
ছ কুলে নদীয়ার লোক দেখে।

ভূবন-মোহন নায়া। দেখিয়া বিবশ হৈয়া
যুবতী ভূলিল লাখে লাখে ॥
অগজন-চিড-চোর গোরস্থানর মোর
যে করে ভাহাই পরতেক।
কহে দীন রামানন্দে এ হেন আনন্দ-কল্পে
বঞ্চিত রহিলুঁ মুঞি এক ॥৯॥১৪১৭॥

পাঠান্তর

)। देहां श-ब-नां श्रुधित ३२०० शर्थाक श्रमः। २। 'मिनिश' क, षः ७। 'हांनि' थे। ८। 'छांरे'थे। ৫। 'हरेनू' श-ब-नां।

कारमान १३

দধি-স্বভ-পদরা লেই স্বর্জিণিং আৰল কালিন্দি তীরে। যমুনা-তরজ-রস হেরি আকুল পরশ না পায়ই লীরে ॥ প্রাবিট-সময়ে উঠয়ে ঘন খুৰ্ণন• গরজন ছু কুল পাথার। ঐছন হেরি কহই সব কামিনি কৈছনে হোয়ব পার। মুখরা সক্তে ধনি রমণি-শিরোমণি বদন পাণিতলে নাই। হেরি নাগর-বর হর্ষিত জন্তর ভরণি লেই চলু ধাই। কর্ণধার-বর চড়িয়া ভরণি পর বাওল রাইক পালে। • উভারব এ ধনি চড় সভে পারে কিছু নাহি ভাব ভরাসে । এড কহি সবছ পাণি ধরি নাবিক্ণ ভরণি উপর সভে লেল>। कानमान ७१ ্লেই রম্পিগণ गरन भानि मारा ८गन ।>०॥>॥>॥

পঠিবির

১ । ইহা প-র-সা পুথির ১৯৩৪ সংখ্যক পদ।
২ । 'সন্ধিনী' প-র-সা। ৩ । 'কালিন্দির' ক, খ,

য়, চ। ৪ । 'পাবই' খ, য় ; 'পাই' চ। ৫ ।
'য়ুর্ণত' প-র-সা। ৩ । 'ছফুল' ক ়। ৭ । 'পান'

য় ৮ । 'ভরাস' ক । ৯ । 'পানি' ইভ্যাদি
আংশ ক পুথিতে লিপিকর-অনে পরিভাক্ত হইরাছে ।
১০ । 'পোল' ক ।

আশাবরী।১

যমুনার তু কুল আলা কৈল নায়ার রূপেই।
জগজন-মন ভূলে দেখিয়া° স্বরূপে ॥
গলে বনমালা দোলে শিরে শিখি-পাখা।
দেখি মেনং জাতি কুল নাহি যায়ং রাখা॥
মুচকি হাসিয়া নায়াযার পানে চায়।
যাচিয়া যৌ্বন দিতে সেই জন ধায়॥
ঠেকিলু নায়ার হাতে কি করি উপায়।
বজর পড়িল স্থি কুলের মাধায়॥
বংশীবদনে কহে থিরং কর হিয়া।
ভোমরা এমন হৈলাং না কাহতে নায়া॥

পাঠান্তর

11271178791

)। इहा भ-त-ना প्रवित २००६ नःश्वक श्रम।

१। 'यमुमात इक्न कतिरम' देखामि क, थ, व,

ह। ७। 'रम्ब ब्रह्म' घ। ह। 'स्मर्तिक।

१। 'रम्ब भ-त-ना। ७। 'स्ति' क, ह। १।
'रम्ब क, ह।

उदा वान ।>

রাই কাসু বমুনার মাবে[ং]। ক্ষিয়ারে ভ্রণী অলের যুরণী পুত্রে লেল কুল লাজে ১৯৮৪

কুন্তীর মকরণ

মান উঠড

স্বনে বদন ভূলি।

হরিবে বমুনা উপলে **বিগুণা** রাই কামু রূপে' ভূলি॥

ক্ষা ললিতা হৈরা প্রচাকিতা শুন লো মুখরা বুড়ি।

তোহারি কথায় চড়ি ভালা নার

পরাণ সহিত্তে মরি॥

মুখরা কহরে বে মাণে কাণ্ডারী

ভাগাই করহ দান।

এ ভাকা তরণী পাৰ হবে এখনি

কেনে বা যাইনে প্রাণ॥

এ দ্ব বচন শুনিয়া কাণ্ডারা

কহই ললিতা পাশে।

ভোমার স্থার প্রশ মাগিয়ে প্রশ মাগিয়ে বংশী শুনিয়া হাসে #১২॥১৪২০॥

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'মাঝে মাঝে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'মগর'
খ। ৪। 'গেল' প-র-সা। ৫। 'নায়া' খ।
৬। 'অমনি' প-র-সা। ৭। 'মাগরে' প-র-সা।
৮। 'বংশীদাস শুনি' প-র-সা।

कारियात्रि ।>

শুন লো বড়াই বুড়ি তৃমি সে নাটের শুঁড়িং
আনিয়া করিলি পরমাদ।
মোর মনে যত ছিল সকলি বিফল হৈল
দূরে গেল ঘরু যানার সাধ।
ছ কুলে বহিছে বায়ু কাঁপিছে রাধার পারুং
নদ্দ-স্তুত নবান কাণ্ডারা।
ভরণী নবান নয়ুং ভার দিতে করি ভর

নবীন নয়° ভার দিভে কাম ভয় ভালা নায় বসিতে না পারি°॥ পঠিক্তির

১। देहा भ-ब-मा भूषित ১৯৩१ ७ भ-त भूषित १२।२ **गरश्यक् भव । २। 'ख**ड़ि' च, भ-त्र ; 'खत्रि' **१-इ-मा। ७। 'विकी' १-इ। ८। 'वा'** १-द-मा, প-র। ৫। 'গা' প-র-সা, প-র। ৬। 'তর্ণী' ইভ্যাদি হলে 'ভক্ষণ নৰিন নায়' প-র। ৭। ¹ভরা দিতে নারি' প-র। ৮। 'হও' প-র। । 'অবিরত'। ১•। 'পার করি' প-র সা। ১১। 'করি' প-র-সা, প-র। ১২। 'কত শত' প-র-সা। ১৩। 'ভারি' প-র-সা। ১৪। 'ভ্রো' प-ब-मा। >e। 'दक्त मन' भ-ब-मा। >e। 'করিলেক' প-র-সা, প-র। ১৭। 'পার হও' প-র। ২৮। বিলিয়া বসুনাতীরে প-র। ১৯। ুজাঁচল ধরিতে চাহে' প-র-সাঃ 'আঁচল ধরিলা वांका' श-द्रा २०। 'व्यक' वा २०। 'द्राहे द्राह **ৰাছ এক গালে' ক**; 'ৱাই ৱহল কামু পালে' भ-म। २२१ 'व्यक्ति' भ-म। २०। 'मबौन्नव' ইভাবি ভণিভার কলিটি প-র-সা পুণিতে নাই।

धाननी ।>

এ নব নাবিক শ্যামর-চন্দ্র ।

কৈছন তোহারি॰ হাদয়-অসুবন্ধ ।
তুয়া বোলে গোরস যমুনহি॰ চার॰।
কারলুঁ কাঁচুলি ভারলুঁ । হার ॥
কর অবসর নাহি সিঁচইতে নীর।
অভিখনে তবহুঁ ১০ না পাওল ভার ॥
হাম নিরস ভুহুঁ হাসি উভরোল।
কেহ জিউ ভেজই কেহ হরি বোলং ॥
এত দিনে কুলবভি-কুলে পড়ু বাজ।
চড়ি ১০ ইহ নায়ে দুরে গেও ১০ লাজ ॥
উতরি ১০ পার যব যো ভূহুঁ মাগ।
কাহু সঞ্জে মাগি ১০ ধরব ভূয়া আগা॥
গোবিন্দদাস কহ সময়ক কাজ।
নাবিক বেতন নাওক ১০ মাঝা॥১৪॥১৪২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ১৯৩৮ ও প-র পুথির
১৯।৭ সংখ্যক পদ। ২। 'চান্দা' প-র-সা। ৩।
'ডোমার' ক; 'ডোহার' থ, খ, চ। ৩। 'নিরবদ্ধ'
প-র; 'নিরবাদ্ধা' প-র-সা। ৫। 'বমুনাম'
প-র-সা, প-র। ৬। 'ভার' চ। ৭। 'ভোড়িস্'
প-র-সা। ৮। 'অবসান' ক। ৯। 'নিঞ্চ্ডে'
ক, খ, খ, চ। ১০। 'এডখনে' প-র-সা। ১১।
'অবহ' ক, খ, খ, চ। ১২। 'হাম' ইভ্যাদি
পংক্রিবরে হলে প-র প্রির পাঠ, বথা—

'মর্ মুখ নীরস তুহ' বন হাস।
কোই জিউ ডেজই কোই হরি হরি ভাষ।'
১৩। 'চড়ি' প-র। ১৪। 'লেল' প-র। 'লুরে
পেও' হলে 'তিরাগিলু' প-র-না। ১৫। 'উডরি'
ইত্যাদি হলে 'উঠত কুলে পারে' ক, ঝ, ঝ, চ;
'উডরিলে পার অব' প-র-না। ১৬। 'ঝোলি'
প-র-না, প-র। ১৭। 'নাবক' ক, ঝ, প-র-না;
'নাবক' প-র।

পুনশ্চ দিনাক্তে।

মুখরার সঙ্গে রাই স্থীগণ সনে। য**মুনা সাঁতা**র দেখি ভাবে মনে মনে ॥ **डाक पिया वटन नाया ना यान चाटि।** আমরা ছইব পার বেলা সব টুটে॥ দেখিরা নাগর-রাজ জীর্ণ তরি লৈয়া। হাসিয়া কছয়ে কথা কাণ্ডারী হইয়া॥ কি দিবে আমারে কহ কভেক বেতন। একে একে পার করিব য়ঙ্জন 🛚 রাই কৰে যাহা চাও ভাহা সামরা দিব। কাণ্ডারী কহয়ে হিয়ার রতন লইব॥ मशी माद्या त्रीकाम हिल्म वित्नामिनी। তরক বাড়িল ভায় কীর্ণ ভরিখানি। ভরজের রঙ্গে নৌকা ভুবু ভূবু করে। হেরি সব সহচরী কাঁপয়ে অস্তরে॥ ভরঙ্গ দেখিয়া প্রহরি কাঁপে রাই। কোলে করি বায় নোকা কাণ্ডারী কানাই। রাই কোলে করি নাগর হর্ষিত চিতে। এ পার হইল নৌকা দেখিতে দেখিতে ॥ **হুত্ত অঞ্চ** পরশিতে হুত্ত প্রেমে ভাসে। त्नीका-विलाम कटह उद्यवनात्म । ১৫॥ ১৪২৩ I

পাঠাস্তর

%। 'मूथवा-वहत्म' क; 'मूथवाव मत्न' थ, ह। २। 'मृत्म' क, थ। ७। 'वाव' क, थ। ८। 'ब्राइ' क, थ।

शन्ती ।>

খিরং সর মাধন সহচরি দেল।
মাৰিক সো সব কছু নাছি নেল।
রাইক আঁচর হৈছিল। যায়।
সূব স্থিপণ ভবে রচয়ে উপার।

নাবিক কহয়ে দেহ বেওন মোর।
তব হাম ছোড়ব আঁচর° ভোর।
কহি কহি চুম্বয়ে রাই-বয়ান।
পুরয়ে মনোরপ নাগর কান।
পুরল মনোরপ আনন্দ ওর।
ব্যভামু-কুমারি ও নন্দকিশোর।
বিজ নিজ মন্দিরে সভে চলি গেল।
বংশিবদন চিতে আনন্দ ভেল।১৬॥১৪২৪।
ইতি স্তায়শাখায়াং বড়্বিংশাত-প্রবঃ।
পাঠাতর

১। ইংগাপ-র শাপুথির ১৯০৯ সংখাক পদ। ২। 'ক্ষির'ক, চ। ৩ গা 'আঁচল'ক, খ।

প্রার্ট-সময়-শেষে শরৎ প্রবেশিল।

কলে জলরুইগণ নিরমল হৈল ॥

বুঞাবনে বুন্দাবন-চন্দ্র গোপী সঙ্গে।

করিল রাগাদি-লালা নানা-রস-বঙ্গে॥

শরতের অস্তে সে হেমস্ত আতু নাম।

ভাছে যে বিলাস রাধা কৃষ্ণ অমুপাম॥

কুমারিকাগণ-বস্ত্র ইরিলা কানাই।

শুনি রাধা স্থাদনার কৌচুক সদাই॥

কেমস্তের অস্তে নব শিশির প্রবল।

অভিশয় শীভে ভমু সদাই চঞ্চল ॥

শীভে ভাত স্থামুগী প্রবেশে কুঞ্জেভে।

দেখি কৃষ্ণচন্দ্র ভবে মিলিলা ভথাতে।

নানা রস-কৌচুক মদন-যুদ্ধ করি।

নিবারিলা শীভ দোঁছে নাগর নাগরী॥

^{&#}x27;প্রারট-সময়-শেষে' ইত্যাদি পরার দ প্রিতে বতন্ত্র পদ-য়েপে গণিত হয় নাই; ইলাকে একটি পদ বলিয়া সপনা কায়লে সপ্তবিংশ পলবেয় নিন্দিট পদ-সংখ্যা হইতে একটি পদ বেশী হয়; ছাভয়াং এই পরারটি পদ-য়েপে গণিত হইল লা।

व्यथ तमलु-लोला तमलु-পঞ্চग्राः।

তত্র শ্রীমহাপ্রভু:।

ৰসম্ভৱাগ 1>

দেখ দেখ ঋতু-রাজ বসন্ত সময়।
সহচর সঙ্গে বিহরে গোরাই রায়॥
ফাগু খেলে গোরাচান্দ নদীয়া নগরে।
যুবতীর চিত হরে নয়নের শরে॥
সহচর দেলি ফাগু দের গোরা-গায়।
কুঙ্কুম পিচকা লেই কেহ কেহু ধায়॥
নানা যন্তে স্মেলি করিয়া শ্রীনিবাস।
গদাধর আদি সঙ্গে করুয়ে বিলাস॥
হরি বলি বাতু তুলি নাচে হরিদাস।
বাস্থদেব ঘোষ রস করিল প্রকাশ॥

112128541

পাঠান্তর

১। देश প-त-ना পूचित ১৯१৮ नश्याक शहा २। '(जोत' क, भ-त-ना। ७। '(नदे' देखाहि इत्न 'मदेता (कह (कह' प; 'मदेता (क्र्स्' भ-त-ना।

তথা বাগ ৷>

অভিনৰ-কুটালকুঞ্চিত কুন্তল-ভার।
প্রাণয়ি-জনেরিতচুর্লিত-বর-ঘন-সার॥
কয় কয় স্থন্দর নন্দ-কুমার।
সৌরজ-সঙ্কটবিছিত-বসস্ত-বিছার॥গ্রন্দ।
অথব-বিরাজিতরোচিত্ত-নিজ-পরিবার।
চটুল-দুগঞ্চলরচিত্ত-বংসাচ্চল-ত্-

त्राधा-मनन-विकास 👢

ভূবন-বিমোহন- মঞ্ল-নর্ত্তর-গভি-বল্লিত-মণি-হার। নিজ-বল্লবণ-জন- স্থতং সনাতন চিন্ত-বিহরদবতার ॥২॥১৪২৬॥

্ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৭৯ ও প-র পুথির ৩০;৯ সংখ্যক পদ। ২। বৈহন ক, খ, প-র। ৩। বোচিত ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৪।, বেজস প-র। ৫। বেসোজ্জন প-র-সা। ৬। বিরজ ধ, ঘ, প-র। ৭। বিলয় প-র-সা; বুজ্ত প-র।

১-->৫। "অভিনব-কুটুল" ইত্যাদি পদের রাধামোহন ঠাকুর-কৃত টীকা, যথা---'ভতত্তৎস্থা স্বলো নিরতিশ্য-মহোজ্জলরপং ঐক্তমং অভি-নবেত্যাদিকমাহ। ধে স্থলর! হে নক্ষরার! पः अत्र अत्र निर्वाटकर्यमाविष्ट्रकः। এতাগুक्रीः পরাজিভা: কুর্বিভি ভাব:। অত বীপায়াং বিছং। অভিনবকুটালানাং বিকাশোমুধকোরকানাং অছ্ত मयारशोक्ष्यकाः यत्राप (व जानुमा। कृषिणः कृष्यन-ভারো ৰস্য তথাভূত। প্রণয়িক্তনৈরীরিতো নিক্ষিথো বন্দনেন বসস্তধেলোচিত-চুর্ণবিশেষে**ণ সহক্তো** মিলিডশ্চুবিতো বর: শ্রেটো ঘনসার: কর্পুরো বিশ্বন্ তাদুশ। সৌরভেন সহটে ব্যাপ্তে বৃন্দাবনতটে विश्विः कृष्ठा वनस्विश्वादा (वन ॥ अ ॥ व्यवन-বিরাক্তিন মন্দতরশ্বিতেন রোচি**ড আনন্দিডো** निक्पतियात्वा (येन छान्म। हरूम-पूत्रकान हकन-ক্টাকেণ রচিতো রদোজেকেণ্ রাধানাং নগনস্য त्थारमा विकारना त्यन । ज्वनविद्याहमरे **४९ मञ्**न-নুৰ্ত্তনং তৃষ্য গভাগ ভগাগ বলিতঃ সুপস্থাৰমানঃ মণি-হারো বস্য। হে নিজবরবদনত্ত্ব ! হে সনাভন! হে চিত্তে বিহয়প্রকারে। গীলাবিশেবো বস্য ভাতৃশ। পক্ষে স্নাতনগোধানিনভিত্তবিহ্রদ্বতার 🛚

>-->१। (र क्रिक-दम्न विकासः दिशायन

ন্মুপ কোরকাবলি ভোমার অল-সংলগ্ধ হইরা অধিক-তর সমুক্ষল এবং প্রিয়ন্তনের নিক্ষিপ্ত কর্পুর-চূর্ব-মিশ্রিত কন্ত-চূর্বে ভোমার দেহ অশোক্তিত হইরাছে। হে অক্সর নক্ষকুমার! ভোমার বলিহারি! সৌরভ-পরিবাপ্ত বুক্ষাবন-পুলিনে ভূমি কি অপূর্বে বসস্ত-বিহারই করিতেছ! ভোমার অধরে মৃহ-মধুর হাত প্রক্ষুরিত হইরা নিজ-পরিজনগণকে আনন্দিত এবং ভোমার চঞ্চল কটাক্ষ-রাজি রস-বিহ্বলা প্রীরাধার প্রেম-বিকার উৎপাদন করিতেছে। ভোমার ভ্রম-মেহন মধুর নর্জনের গতি হারা ক্ষম-ছিত মণি হার নর্জিত হইতেছে; হে অন্নত-গোপ জনবাদ্ধর সমাজন শ্রীকৃষ্ণ! ভূমি আমাদিগের, পক্ষা-ব্যাক্ষ সমাজন গোরামীর অস্তরে ভোমার অবভার-সীলা বিভারে করিতেছ।

তথা রাখ ৷১ কেলি-রস-মাধুরী-তভিভিরভিমেত্ররী-কুত-নিখিল-বন্ধ-পশুপালং। क्कूब्रक्क् व-वक्क् नः र श्रमि विश्वज-हम्मनः **দেহ-**রুচি-নির্ভিত্তত-তমালং । স্থান বি মাধ্বম্বকলয়ালং। রত্বময়-ছোলয়া মিত্র-কর-লোলয়া চলিত-বপুরভিচপল-মালং ॥ধ্য॥ রচিত-গোরোচনা-ব্ৰহ্ম-ছবিণ-লোচনা-ভিলক-ক্লচি- ক্লচিরতর-ভালং। বদন-শশি-শোভয়া স্মিত-জনিত-লোভয়া বিজ্ঞমিত-নব-যুবতি-জালং॥ পুষ্পচয়ঃ-মণ্ডিতং নর্ম্মনয়ত পথিতং রমণমিত বক্ষসি বিশালং। প্রিয়ম্ধি সনাতনং প্রণতং-ভর-শভিনং (गार्छ-जन-मानंग-मतानः । ११) ४२१। পাঠান্তর इंदा भ-द्र-मा श्वित >>> ७ भ-त श्वित

ত্নাৰ সংখ্যক পদ। ২। বৈশ্বনং' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'নৰ্ম্ময়' প-র-সা। ৪। 'পুষ্ণ-কুল'প-র। ৫। 'প্রেণ্য'প্সর।

টীকা

১—১৫। "কেলি-রগে"ত্যাদি। হে স্করি। প্রীরাধে ! মাধবং শ্রীক্ষক অলং অভ্যর্থ ধবা স্থাৎ ख्या खरकतम् । कीमृनः जीकृष्णः भू---(किन-त्रम माध्या विकारिकः अकि-सिक्षीकृष्णः मकन-বন্ধু-গোপালকা যেন তথাভূতং। জুদি ধুত-চন্দ্রনং क्तूर्य अक्रवर्गा क्लानः वमनः वमन्तर्भाति अहर्न-विर्वाहः ৰশ্মিন তথা দেহ-কচিনা নিৰ্জিড স্তমালো যেন তথা-ভূতং। মিত্র কর-চঞ্চলয়া রত্বখচিত দোলয়া করণেন চলিতং ৰপু: তথা অভিচপলা মালা যস্য তথাভূতং। ব্ৰজ-হরিণ-নম্নাভিঃ রচিত্স্য গোরোচনা-ভিল্ক্স্য क्रिना श्रन्मव्रख्यः खांगः नगाँदः यभा ख्यांकृष्ठः। শ্বিভেনেৰ্দ্ধাস্যেন জনিতো গোডো ব্যা তথাভূত্ৰা মুখ-চন্দ্র কাঞা বিভ্রমিতঃ জাত বিভ্রমঃ নবীনালনানাং সমূহো যেন তথাভূতং। নশ্মনরপত্তিতং জীড়া-রীতি-কুশলং পুৰুৱাজিভূষিতং বক্ষসি বিশাবং গোপালনা-পীল-প্রোধর-পরিসর-মন্দ্রনাচিত-বিশাল-বক্ষকপাট-মিতার্থ: ইচ আত সংসারে প্রণতজনানাং ভয়-নাশনং আধিবং প্রিঃ গোঠজিত জনানাং মানসং চিভামেব মানসং সরঃ ভত্ত মরালং রাজভংগ-অরপ সনাতনং পুরুষং পক্ষে স্নাতন্ত্রামক: পদক্রী অস্যান্ডীতি অর্শাদিকাৎ অচ্সনাভনগোলামিনঃ প্রভূষিতার্থ:।

অপ্ৰাদ

>—> েহে কুলরি শ্রীরাধে! তুমি শ্রীকৃষ্ণকে উত্তম-রূপে নিরীক্ষণ কর। তিনি কেলি-রস-মাধুর্ব্য বিস্তার করিয়া নিজের মুক্তং সমস্ত গোপাল-গণের চিন্ত প্রেমার্ক্র করিয়াছেন; তাঁহার বক্ষে খেত চক্ষন-চিঞ্জ-রাজির সহিত্য আক্ষণ-বর্ণ কন্ত্র্য লোভা পাইভেছে এবং তাঁহার দেহ-কান্তির নিক্ট তমাল-তক্ষ পরাজিত হইয়াছে। মিঞ্জপণের ক্র-চালিত রম্বম্ব গোলার, অবিটিত হও রাম তাঁহার পেহ সঞ্চালিত ও কঠের মাল্য দোছ্ল্যমান হইরাছে।
ব্রন্ধ-হরিণাকীদিগের রচিত পোরোচনা-তিল্পের
কাস্তি ধারা তাঁচার ললাট অধিকতর ফুলর হইরাছে
এবং তিনি লোভ-জনক ঈর্থ-হাল্য-বুক্ত মুখ্-চল্লের
শোভার নব-বুবতীগণেব ডিভ-বিভ্রম উৎপাদন
করিতেছেন। তিনি কেলি-কৌশলে স্থনিপুণ, পুষ্ণারাজি-বিভূষিত ও বিশাল-বফাঃ; তিনি প্রণত জনের
ভর্মাশন, গোপগণের সম্ধিক প্রির, সনাতন-মূর্ত্তি
(পক্ষাভ্রের—পদক্রি। সনাতনের আগ্রন্থভ্ত)।

বসস্ত |১

শিশিরক অন্তরে আওয়ে বসন্ত।
ফুরলং কুসুম সব কানন-অন্তঃ
ব্রীবৃন্দাবনং পুলিনক রক।
ভোরল মধুকর কুসুমক সক্ষ॥
নব নব পরবে শোভিত ভালত।
সারী শুক পিক গাওয়ে রসাল॥
ভাহি সব রক্ষিণি মেলি এক সঙ্গে।
ভোতল নাগরি নাগর রক্ষে॥
বিহরই কাননে যুগল কিশোর।
নাচত গাওত রক্ষিণি জোর॥
বাজত গাওত কত কত ভান।
গোবিন্দদাস অবধি নাহি পানং॥৪॥১৬২৮॥

পঠিক্তির

় ১। ইছা প-র-সা পুথির ১৯৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'কুটল' ক, খ। ৩। 'শ্রীরুন্দাবনে' ক, খ। ৪। 'ভাল' প-র-সা। ৫। 'নাহি পান' হলে 'না জান' প-র-সা।

ख्या जोश । >

পাওত রে ঋতুরাজ বসস্ত। বেলভ রাই কামু ঋণবছঃ। ভক্তক্ল মুক্লিভ অলিক্ল ধাব।
মদন-মহোৎসব পিকৃক্ল রাব॥
দিনে দিনে দিনকর ভেল কিলোর।
শীত ভীতণ রহু শীধরঃ-কোরণ॥
মলয়জ পবন সহিতেও ভেল মীতণ।
নিরখি নিশাকর যুবজন-হাতে॥
সরবর-সরসিজ শুটামর লেহা।
ভ্রানদাস কহে রস নিরবাহাণ ॥৫॥১৪২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৮২ সংখাক পদ।
২। 'কিশোরি' ব। ৩। 'ভিতে' চ, প-র-সা।
৪। 'শিখর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কোরি' ঘ।
৬। 'পবন সহিতে' স্থলে 'সহিত পবন' ঘ। ৭।
'মিড' ক, চ, প-র-সা। ৮। 'হিড' ক, চ, প-র-সা।
১। 'নিধিবাহা' ক, চ।

টাকা

e—ভ। "দিনে দিনে" ইত্যাদি। দিনে দিনে
দিবাকর কিশোর হইলেন অর্থাৎ বাল্যোচিত মৃহ্তা
পরিত্যাগ করিয়া বৌবনের প্রাক্কালোচিত তীব্রতা
ধারণ করিলেন; (তাহাতে) শীত তীত হইয়া পর্কতের
শিশরে রহিল অর্থাৎ পরাজয়-ভরে সিরিপৃদ-রূপ
ছর্গের আশ্রর গ্রহণ করিল। তুলনা করুন,—

"দিনকর-কিরণ ভেল পৌগও।"

—বিভাপতি , প-ক-ত, ১৪০১ সং পদ।

৭—৮। "মলরক" ইত্যাদি। (কন্দর্শ-নুপতির
সহার) নিশাকরকে যুবক-জনের হিড-কারী অর্থাৎ
অন্তক্ত্ব দেখিয়া (কন্দর্শ-নুপতির অপর সহার)
বসবেরও (সম-কার্য-কারিড হেডু) মলর-পবনের
সহিত মিত্রতা জন্মিল অর্থাৎ বসন্ত, কন্দর্শের সহার
চক্র ওমলর পবনের সহবোগে ব্রক্ত-জনের প্রীতিবিধানে প্রবৃত্ত হইল। তুলনা কন্তন—

"খনর-প্রন সহ ভেল অভ্রাগ।" —(১৪৩০) বিভাগতি ; প-ক্-ড, ১৪৩১ সং গর।

ভণা রাগ ৷১

শ্রেল অশোক নাগ রঙ্গণ মালতী।
পরিমলে ভরল মাধবী রজলতী।
পাটল্ কিংশুক শোভা কাঞ্চন কেশর।
করুণ কমলং কুন্দ করবীর-বরণ।
মুকুলিত রসাল বকুল গন্ধরাজ।
ললিত লবজলতা বন্ধুজীব সাজ॥
লরোবরে সরসিজগণ দিল দেখা।
হংস সারস পড়ে মেলি ছই পাখা॥
ঝাঁকে ঝাঁকে অলিকুল গুণ গুণ খ্বের।
মধুমদেং মাতি পড়ে ফুলের উপরে॥
কোর-পবন বহু গন্ধ পাছে পাছে॥
নির্মাল ব্যুনা-জল পুলিনের শোভা।
এ বন্ধুনন্দন-পহঁ ভেল মনলোভা॥

10886161

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-না পুথির ১৯৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'কোষল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'পর' খ, খ। ৪। 'ঋণ ঋণ' ক, খ, খ, চ। ৫। 'মধুলোডে' প-র-না।

্ৰ তথা রাগ।>

আরলং অতু-পতি নাল বসস্ত।
ধারলং অলিকুল মাধবি-পদ্ম।
বিষ্ক্র-কিম্বন ডেল পৌগও।
ক্রেন্সকুত্ব ধরল কেমনত ॥
কাক্র-কুত্ব ছত্র ধরল মাধব ॥
বিশ্বন কুত্ব ছত্র ধরল মাধব ॥
বিশ্বন কুত্ব ছত্র ধরল মাধব ॥
বিশ্বনি রলাল-স্কুল জেল ভার।
সমুবহি কোকিল লাক্র গার॥

শিখিকুল নাচত অলিকুল যন্ত্র।
আন বিজকুল পড়ু আশিষ-মন্ত্র।
চন্ত্রাতপ উড়ে কুফ্ম-পরাগ।
মলয়-পবন সহ তেল অমুরাগ।
কুম্ম-বল্লিণ তরু ধরলণ নিশান।
পাটল তৃণ্ণ আশোক-দল বাণ।
কিংশুক লবজ-লতাণ এক সজ।
হৈরি শিশির রিপুণ্ণ আগে দিল ভজ।
ঠৈল্লাং সাজল মধুমক্ষিক-কুলাং।
শিশিরক সবহুঁ করল নিরমূল।
উধারল সর্বিজ্ঞ পাওল প্রাণ।
নিজ নব-দলেণ্ণ করু আসন দান।
নব-বৃদ্ধাবন রাজ্যেণ্ণ বিহার।
বিজ্ঞাপতি কহু সময়ক দার॥৭॥১৪৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্রির ১৯৮৪ লংখ্যক প∴।
২। 'আগুল' ক, খ, খ, চ। ০। 'বাঞ্চ' ক,
খ, চ। ৪। 'পাতি' প-র-সা। ৫। 'বাখি'
প-র-সা। ৬। 'কুন্দবিল্লী' ক; 'কুন্দবেশি' প-র-সা।
৭। 'ধবল' ধ। ৮। 'ডুল' ক। ৯। 'লভাবে'
ঘ। ১০। 'বাড়' ক। ১১। 'সৈন' ঘ। ১২।
'কুল' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'জন-বদ্নে' ধ।
১৪। 'রাজ্য' প-র-সা।

निका

১—২। "আহল" ইত্যাদি। অতু-পঠি বসভনুপতি আসিলেন; (সেই সংবাদ বোষণা ভ্যার
অন্তই বেন নুপতির পরিচারকভানীর) মধুকর-সমূহ
মাধবীর পথে অর্থাৎ মাধবী-লতার হিকে থাবিত
ছইল। (ফ্চতুর পরিচারকগণ বেরপ নুপতির
বিবেশ হইতে গুভাগমন-বার্তা সর্বাত্তে নুপতির
প্রিত্তমার নিডট ভাগন ক্রিয়া তাঁহার স্বোধবিধান ঘারা নুপতির প্রির হইতে চেটা করে, তত্ত্বপ
মধুক্রেরাও বস্তের প্রির্ভনা মাধবী-লভাকে বস-

ৰের ওভাগমন বিজ্ঞাপিত করার লক্কই তাহার নিকটে ধাবিত হইল, ইহাই ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

১০—১৪। "কুন্দ-বল্লি" ইত্যাদি। তক্ (তদা-প্ৰিত) কুন্দ-লভাকে নিশান ধরিল; পাটল অর্থাৎ পাটলি-পুন্স (বসস্ত-নূপতির) তুণ ও অশোক-(পুন্স)সমূহ বাণ হইল। তুলনা কক্ষন,—

"মিলিড-শিলীমুধ-পাটলি-পটল-

इ.ज.ज.ज.ज.विनारम ।"--- शेक्रांचिन । ১६-- ১৬। "किश्यक" हेलामि। किश्यक ও লবল-লভাকে এক মূলে দেখিয়া (বসত্তের) শত্রু শীত-ৰাডু প্ৰথমেই (পরাজয় খীকার করিয়া) ভঙ্গ দিল। (কিংডক পুষ্প শীতের শেব-ভাগে ফুটতে আরম্ভ করিয়া বসত ঋতুরও প্রায় মাঝামাঝি পর্যান্ত থাকে; কবি অভিশয়োক্তি-অণহারের সাহায্যে ইহাকেই শীভ-ৰাতুর শব্দ বসন্তের সহিত কিংগুকের देवजी विश्वा वर्गन कतिया, 'द्वित' हेकालि वाका-ষ্টিত প্রতীরমানা উৎপ্রেক্ষা-অলম্বারের সাহায়ে ৰুৱাইডেছেন বে, নিজের অমুগত ব্যক্তি, শতার অছপত ব্যক্তির সহিত বোগ দিলে, অরের আশা পরিভ্যাপ করিরা পৃঠভদ দিতে হর, এ স্থলেও শীত-ৰাভু সেইরাণ নিৰের আশ্রিভ প্রাশ-পূপকে ৰ্মত্তের আশ্রিত শবল-লতা পুলোর সহিত যোগ **বিজে বেখিরা, আর ক্রের আশা নাই** ভাবিয়া भनावन कविन ।)

मायूत्र ।>

নৰ স্থানাবন নবীন তক্লগণং
নৰ মৰ বিকসিত কুল।
নৰিন° ৰসস্ত নবিন° মলয়ানিল
মাতল নব অলিকুল ॥
বিহর্মই নওল কিলোর।
কালিনি-পুলিন কুঞ্জ নব শোভনং
নৰ নৰু ধ্যোমণ বিজ্ঞার ॥ প্রাধ

নবিন-রসাল- মুকুল-মধু-মাতিরা
নব কোকিলকুল গার ।
নব যুবতীগণ চিত উমতারইদ
নব-রসে কাননে ধার ॥
নব যুবরাজ নবিন নব নাপরি
মীলয়ে নব নব ভাতি ।
নিতি নিতি ঐছন নব নব ধেলন
বিভাপতি-মতি মাতি ॥৮॥১৪৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৮৫ সংখ্যক পদ।

২। 'লতাগণ' ছ। ৩-3। 'নবীন' ক। ৫।
'সোহন' প-র-সা। ৬। 'নব' ক, খ। १।
'প্রেমে' থ, প-র-সা। ৮। 'উমাতারই' খ, চ;
'উমতাওই'ছ। ৯। 'মিল্রে' ক, থ, গ-র-সা।

অথ হোরি।

শ্রীগোরচন্দ্র।

बगख ।>

দেখ দেখ অপরূপ গোরাজের লীলা।
রীভূথ বসজে সকল প্রিয়গণ মেলিও
জলনিধি-ভীরে চলিলা ॥এএ।
এক দিকে গদাধর সজে সক্ষণ দায়োদর
বাস্থবোষ গোবিন্দাদি মেলিও।
গোরীদাস আদি করি চন্দর পিচকা ভরি
পদাধরের অজে দের প্রেলিও॥
সক্ষণ নিজগণ সাথে আবির লইয়া হাতে
সন্থনে প্রেলারও গোরা-গার।
গোরীদাস খেলি প্রেলি ব্যারাজ কিছুলু নলি
কর্মভালি হিরাজানে হার ॥

ক্ষমিরা স্বরূপ কর হারিলা গৌরান্ত রার ক্ষিত্তল আমার গদাধর। কৃষ্ণালি দের কেন্তু নাচে গায় উর্জ-বান্ত এ দাস মোহন মনোহর ৪৯৪১৪৩৩।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ৰাজু' ক, খ, প-র-সা। 'ৰাজু' পাঠে ছলঃপদ্ধন ঘটে। ৩। 'মেলি' শদ্ধটি প-র-সা পুথিতে
নাই। ৪। 'মিলি' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'ফেলি'
প-র-সা। ৬। 'ফেলার' প-র-সা।

ভণা রাগ।>

ঋতুপতি বিহরই নাগর শ্যাম। রাধা রজিণি সজিনি বাম এখা পরিমল কুরুম চুয়াং চন্দ্ৰন **কান্ত-রজেঃ সব অরণ ভার।** মাতল মনসিজ মদনমোহন হৈরি মুবজি-যুগ শত গায়ত ঝুমরি । (क्रु' ज्यूत ध्रूष কেছু হার হর ,. কেছ">> তমু পরশিয়া রহল বিভোরি^{>২}। কেন্ত লেই মুদরি কেছ লেই মুরলি সুরহিঁ দুরে রহিঞ গাওত হোরি । উপাক্ত পাখাওক ভক্ষ> রবাব কর্তস-ভাল হুমেলি করি। নটবর-শেশর গোবিদ্দদাস-পত্ নাচভূ গাওভ ভাল ধরি ॥১०॥১৪০৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৯৮৭ ও প-র পৃথির ৩০।২ সংখ্যক পথ। ২। 'চুরা' ক, খ, খ, প-র-সা, প-র। ৩। 'মুগ্রহ' প-র। ৪। 'অলে' প-র। ৫। 'বিশি প-র। ৩। 'হোমি' প-র-সা। ৭। 'কোমি' প-র। ৮। 'বৃদ্ধ ধ্যর' চ, প-র। ১। 'কোই' প-র। ১০। 'ধক' প-র। ১১। 'কোই' প-র। ১২। 'পরশিবা' ইড্যাদি খুলে 'পরশিবা রহণহি ভোরি' ক, চ, প-র-সা; 'পরশি পুলকি রহু ভোরি' প-র। ১৩। 'কেক' ক; 'কোই' খ, প-র-সা। ১৪। 'দফ্'খ।

₹म७ ।>

বিহরই নিধুবনে যুগল কিশোর।
কাগু-রজে আজি সভে হৈয়াছে বিভার ।
চুয়া চন্দন ভরি পিচকারি।
শ্যাম-নাগর-অজে দেওত ডারি ॥
ললিতা বিশাখা আদি স্থাসণ মেলি।
রাইক নিয়ড়ে কামু লেই গেলি ॥
সব স্থা ডারত নাগর-অজে।
নাগর থেলই রাইক সজে।
বাণ রবাব মুরজ কপিলাস।
বিবিধ যল্প লেই করয়ে বিলাস ॥
কোই কোই গাওত নব নব তান।
ভ্যানদাস হেরি জুড়ায় নয়ান ॥১১॥১৪৩৫॥

পাঠান্তর

১। इंश भ-त-ना श्र्वित ১৯৮৮ नरशक भरा । २। 'আजि नएछ' इरन 'नव' भ-त-ना। ७। 'काख' क, थ, घ, घ। ८। 'श्रिनान' क। ८। 'क्तिरव' च; 'क्तुछ' भ-त-ना। ७। 'क्रिंट' क, च, भ-त-ना।

ভৰা বাৰ ।>

খেলত কাপ্ত বৃন্দাবন-চান্দ।
শুকুপতি মনমধ-মনমধ ছান্দ॥
শুন্দারিগণ করং মগুলি মাঝ।
বৃদ্ধিণি প্রোম-ভর্মিণি সাক।

1175178091

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯৮৯ সংখ্যক পদ।

। 'করু' প-র-সা। ৩। 'ধরল' ক। ৪।
'সিরিধরকি রসনে' প-র-সা। ৫। 'একা' ধ।
। 'কাড়ি' ক, চ। ৭। 'ক্লব্রে' ক, ঘ; 'উদ্রু'
প-র-সা। ৮। 'ভণ' ঘ।

जबबद्धी ।>

व्यक्षायु क्यांत्र नम्मक्यात्र। হোরিকং রজে অতে অক্লণাশ্বর মন আনন্দ অপার॥ নিরখত বর্মণ নয়ন⁸-পিচকারিত¢ **८थम-खना**व मनकि मन नाग। ত্ত অঅ-পরিমল চুরা চন্দন কাগু-রঙ্গ ভহিঁ নৰ অনুরাগ। শেশভ তমু মন লোরি ভোরি চুর্ন্ত কভরে ভলি॰ রস-ভাতি। তমু তমু সরস পরশে মন মাতল ছত পর ছত পড় মাতি।

ব্রজ-বনিভা বত রীকি' রিকার্ড রস-গারি মৃত্ ভাব। প্রস-গারি মৃত্ ভাব। প্রম-জল-কলেবর ধেরিরা চামর চুলারভ উদ্ধবদাস ॥১৩॥১৪৩৭॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৯৯০ সংখ্যক পদ।
২। 'হোরি' দ। ৩। 'নরন' দ। ৪। 'বরন'
দ। ৫। 'পিচকারি' ক, ধ, দ, চ। ৬। 'ভল'
ক। ৭। 'রিঝি' ক; 'রিঝিকি' প-র-সা। ৮।
'রীঝারত' দ, চ। ৯। 'মৃদ্ধু মৃত্' প-র-সা।

টাকা

৪—१। "নির্থত" ইড্যাদি। (ব্রীরাধা ও প্রীকৃষ্ণ) পরস্পরের ব্যন নিরীক্ষণ করিলে (উভরের) নরন-রূপ পিচকারী অর্থাৎ রস-বর্ধপের বন্ধ হইছে প্রেম-রূপ শুলার অর্থাৎ গোলাপ-জল (উভরের) মনে মনে লয় হইল; তাহাতে অর্থাৎ এই অপূর্ব ভারাত্মক হোরি-ক্রীড়ার উভরের অল-সৌরভ চুরাচন্দন ও নব-অন্থরাগ কাশুর রং (হইল)। (অন্থরাগকে লোহিভরূপে বর্ণন করা 'ক্রি-সমর-সিম্ধ' বলিরা অল্ডার-শান্ত্রে উক্ত হইরাছে।;

रेशन क्लांशे ।>

রীতুরাজং অজ-সমাজ হোরি রজে রজিয়া ॥এ॥
নাগরি-বর হোরি-রজ- উনমত-চত স্থাম-সজ
নাচত কত° তলিয়া ॥এ॥
সাওত কত° রস-প্রস্তুর বাওত কত বিণং বোরজ
বৈরা বৈণু মুখলিয়া ॥
চঞ্চল পতি অভি স্থরজ নির্মি স্থ্যেণ কত অনক
সজিত সবং স্থর্যালিয়া ॥
বরমওল সরং অজ্ঞা বিবিধ বন্ধ অ্লভর্ম
মধুর সর্ম উপাজিয়া ॥

(थनि श्रमान १ वक नान

স্থানর বর^{১২} জ্যুতি রসাল **রজিণিগণ সজিরা**। **ব্রজ-বধুগণ^{১৬} ধর**ত ভাল সাথিত পদ নন্দলাল

রাই অজে ত অলিয়া।

হো হো করি করত ভাষ

করতালি ঘন' মন উলাস

জর জয় বর ঢজিয়া^{১৬}।

গোবিন্দ-গুণ করি প্রকাশ

রচিত গীত^{১৭} উদ্ধব দাস **ংগরি^{১৮} রস-**ভর্গিয়া^{১১} ॥১৪॥১৪**৩৮॥**

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৯৯১ সংখ্যক পদ।

২। 'ঝডুরাজ' ক, প-র-সা; 'রিভুরাজ' চ। ৩।
'কর' থ। ৪। 'গাওত কত' হলে 'গাওত' ক,
থ। ৫। 'কভ বিণ' হলে 'বীণা' ঘ। ৬। 'বৈরা'
প-র-সা। ৭। 'ভুলে' ক, চ, প-র-সা। ৮।
'সদীত সর' ছ। ৯-১০। 'বর' ক। ১১।
'গোলাল' ক, খ, ঘ, চ। ১২। 'বর' শব্দ ক, থ
পুথিতে নাই। ১৩। 'বধুপণ' ক। ১৪। 'নলে'
ছ, খ; 'ভালেড' প-র-সা। ১৫। 'ভালি'
প-র-সা। ১৬। 'ভলিয়া' প-র-সা। ১৭। 'রচিত
পীড' হলে 'রচি গাইল' খ। ১৮। 'হেরি' চ।
১৯। 'রসেতে রলিরা' প-র-সা।

यमक ।>

আৰু রজে হোরি
খেলত শাস গোরী।
স্থিগণ সিলি গাওত বাওত
কিলোর কিলোরি নাচাওত
আনুষ্কে সন ভোরি।

বিবিধ যন্ত্ৰ ভাল মুদক্ত
কোই মোচক্ত বাওক্তে উপাক্তং
তন নন নন ভোক্তি ॥
তথ তথ তথ তথু ' থৈয়া
দৃগতি দৃগতি দ্ৰিমি ধৈয়া
চঙ্ক লঙ্ক লঙ্ক লোৱিং।
কুড়ু গুড়ু ' গুড়ুদাং দ্ৰিমিদাং

কিট কিট কিটধাং তৃগধাং

পাঠান্তর

শিবরাম গাওয়ে হোরি ॥১৫॥১৪৩৯॥

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৯৯২ সংখ্যক পদ।

২। 'বিবিধ বর' ইন্ডাদি কলিট ক, ধ পৃথিতে
নাই। ৩; 'ভাল নানা নানা ভোরি' প-র-সা। ৪।
'ভ' ক, ধ; 'ভ:' च; 'ভউ' প-র-সা। ৫। 'চঙ
লউ লউ লোরি' ক, ধ; 'চঙ চঙ চঙ নোরি'
প-র-সা। ৬। 'পৃড়্' চ, প-র-সা। १। 'পাওরে
বার্রে' ঘ।

তথা রাগ।১

রাধামাধৰ নাচত হোরি-আনন্দে। অক্লণ তাল ধৰে অরুণ ডম্ফ করে বাওত কত্হি প্রবন্ধে ।ধা। তথৈ তথৈ তৎ था जिमि जिमिरवा^र তা থো থো বোল মুদল। वीग-नाम अनि क्म क्म क्म धनि अत्रमश्रम-भारतः मृतरह जनकः॥ ধঞ্চন-গভি ভঞ্চিম **५ इन्हें १** इन्हें क्रमम् मित्र (वार्णः । সুমরি° সুমরা কোই° अम अम सूमति বাওরে ডক্ষ উতরোলে।

অরুণ নেবের কাছে অরুণ চক্র নাচে নথতর অরুণ আকাশে। অরুণ কোকিল গায় অরুণ ময়ুর>॰ ধায় ইহ শিবরাম রস ভাবে ১১৬১১৪৪০।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯৩ সংখ্যক পদ।
২। 'জিমিথো' দ। ৩। 'ধ্বনি' ক। ৪।
'থারে' ক। ৫। 'বোল' প-র-সা। ৬। 'বুনরে'
ক, খ।৭। 'বুমুঝীকোই' খ; 'বুমরানাই' প-র-সা।
৮। 'উডরোল' প-র-সা। ১। 'নখতরূ' খ;
'নখডর' দ। ১০। 'বরুব' ক।

भागून 13

রজে হো হোর।

বেলত নওল কিশোরী এঞা

বাজত ভাল রবাব পাথাওজ

স্থিগণ ঘন করভালি।

কুঙ্কুম চন্দন আবির উড়ত ঘন

বরিখন অপু পিচকারি॥

ফুর্ছু প্রই থেলন সমর-প্রবন্ধহি

জিতলু জিতলু খন ছহ-জন গরজন স্থিগণ ভণ বরজোরি⁸। ধেনে ধেনে থকিত বদন ছহ^{*} নির্থন

ছছ পর ছত পড় ভোরি।

বৈছন চাঁদ চকোরি। ভাষি শিবরাম দাস-মন স্থানন্দে ধেরি হাসে খোরি থোরি ৪১৭৪১৪১৪

পাঠান্তর

३। देश भ-ब-ना श्रुषित >>>० नेश्याक भव ।
 १ (विविष्ण के । ०) (विजन भ-ब-ना। ०। विविष्ण के ।

कूड़ी बनख ।> হোরি হো রজে মাভি। আবিরে অরুণ গোরি খ্যামরং-কাঁতি মঞ্চা নিপভঙি° বদ্ৰে হুরজিন কুছুন চুয়া চন্দন কেশর সাথা⁸। टोपिट्ग व्यवित्र উড়ায়ত ব্ৰজ-বধু জরুণ ডিমির কিয়ে ভেল দিন রাভি। বীণ উপাত্ত মুরজ সরমগুল ডক্ষ রবাব বাওয়ে রুড ভাডি। কোই মাউর° হুরট কোই সারক্ষিণ কোই বসস্ত গাওয়ে সর-জাতি # নাচত মোর ঘোর ঘন কোকিল রোল বোলে মত মধুকর পাঁতি। মনোহর খেলন ঋতুপতি পরম হেরি শিবরাম হরিখে ভরু ছাভি। H>F136146H

পাঠান্তৰ

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ভাষ' ক। ০। 'নিপতিত' ক। ৪।
'সাতি' দ। ৫। 'ষাযুর' ক। ৩।, 'সারল' ক,
থ। ৭। 'মযুর' ক। ৮৭ 'থোর' প-র-সা।
১। 'বোল' থ, দ, প-র-সা।

বিহণ্ডা।>
বাজে দিগ দিগ বৈ বৈয়া হোরি রজে ৯এছ।
কিশোর কিশোরি স্থিনি স্থেনি কেলি
তপন-ভনয়া-ভীরে কেলি
ক্থময় অভি মধু ঋতু-পভি
রভিপতি ভূষিং সজে ।
মহণ মুহণ চুবক চকান
বন্ধ রজে ব্রিথে স্বর্ম
অন্ধ্যণ ব্রুম স্বর্ম

বীণ মুরজ সর উপাক্স
জিমিকি জিমিকি জিমি মুদক
চক্ষল গভি বঞ্চন জিভি
নৃত্যতি অতি ভলে ॥
গাওয়ে গমকে গোপি মেলি
গৌরি শুর্জরি রামকেলি
স্কুল্যা স্থাহিনি সুহই সাহানি
স্কিত্প রস-তরকে।
যুব্ধে যুব্ধ যুব্ভির্নদ
মানে শোহত গোক্ল-চন্দ
গোবর্জন কলি বর্জন

করু মর্দ্দন অনকে ॥১৯॥১৪৪৩॥ পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ভাম' থ। ৩। 'ভক্রণ' প-র-সা। ৪।
'লোলিভ'চ, প-র-সা। ৫। 'ভূবণ' ঘ; 'স্ঘন'
প-র-সা। ৬। 'স্বাত' ক, থ। ৭। 'সাহিনি'
প-র-সা। ৮। 'স্বাত' ক। ৯। 'ইল্লে' ঘ,
প-র-সা; 'হ্নলে' চ।

धाननी ।>

খেলভ রাধাং

শ্যাম রঙ্গ ভরিণ

वृन्ता-विभिन मगान ।

চুয়া চন্দ্ৰন

वन्तन कुकूम

রক মুটকি° ভরি সাল ॥

বৈঠল খ্যাম

সজে মধুমকল

ভূবল স্থাদিক সাথে।

त्रांश निवाद विभाषा व

বিশাখা আদি সহচরি

ূপিচুকারি করি নিশ হাডে॥ পচকারি বর্ণি বরিখত

কামুক পিচকারি

্ঞ্কুহি শত শৃত ধারে।

गरहि (वित्

क्ष क्ष क्ष अन वादत ।

বছবিধ রঞ

অজ সব ভীগত

আঁচিরে মোহত মুখা।
জিত্ত বুঁ জিত বুঁ শুলি হাসি দেই ১০ করভালি
কাণে কাণে বাঢ়ত সুখা ১।
গাওত বাওত আবির উড়ায়ত

কোই নাচয়ে মনরঙ্গে।

ডক্ষ রবাব সব**হু মেলি সুস্থর**

উদ্ধব দাস ভছু সঙ্গে ।২০॥১৪৪৪॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্রির ১৯৯৭ সংখ্যক পদ।
২। 'রাধানাধব' প-র সা। ৩। 'রকে ভোরি'
প-র-না। ৪। 'নটুকি' ব। ৫। 'নলিতা আদি'
পে-র-না। ৬। 'বিশাথা আদি' ছলে 'বিশাথা'
প-র-না। ৭। 'বব' ক; 'ববহ' প-র-না। ৮। 'ছ্থ' ক, চ, প-র-না। ৯। 'ভ্রিড ভ্রিড ক, ব।১০। 'তেই' থা১১।'হ্র্থ' ক, চ, প-র-না।

ব্যস্ত (১

বিহরতি সহ রাধিকয়া রজা।

মধু-মধুরে রু দাবন-বেরাধান

হরিরেহ হর্ষ-ভরজা ॥এ॥

বিকিরতি যদ্রেরিভমন্থবৈরিণি
রাধা কুরুম-পঞ্চম।

দল্লিভাময়মণি সিঞ্চতি মৃগ-মদরঙ্গ-রাশিভিরবিশঙ্কম্থ ॥

ক্রিপতি মিধো মুবমিপুন্সিদং নবমরুণভরং পটবাসম।

ক্রিডমিতি লিভমিতি মুছরভিশ্লয়তি

কল্লয়ণতমুত-বিলাসম্।

ক্রবলো রণয়তি বন্দলী।

লাভভা বছতি সনাভন-বল্লভা
মঙ্গন্ত পশ্ত মনালী ৪২১৪১৪৪৪ ব্

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৯৮ ও প-র পুথির ৩০।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রাশিভিরভিশন্ধন্' ব, চ। ৩। 'মুত্রপি' প-র। ৪। 'করর তদ্মু' ব, প-র-সা, প-র।

টীকা

১-->৫। "বিছরতী"ত্যাদি। রন্ধী বিলাসী 🗐 রুক: রাধিকরা সহ বিহরতি ক্রীড়তি। কুত্র ? मधुना वमरस्थन मधुरत मरनाहरत हेह . चळ वृक्षावन-পুनित्न। कीषृत्रः कृषः १ हर्व-७३श्री जानत्स्राज्ञात्र-বান । ভতঃ ক্রীড়ন-প্রকারমাহ 'বিকিরতী'ভ্যাদিভিঃ। বাধা নৰবৈবিশি শ্ৰীক্লফে ব্যম্ভবিতং বস্ত্ৰচালিতং কুছুম-পৰং কুছুম-দ্ৰবং বিকিন্নতি বৰ্ষতি সুপীত-কুৰুম-ক্ৰমত শ্ৰীৱাধাৰৰপাম্যাৎ কুঞ্জিৱতাৎ ভগ্য **র্ক-দেহে মরকতে অর্ণ**সম্মেলনমিব নিতরাং শোভা-ধারকথাচেতি বোধান। অরং শ্রীক্লফোহপি অবি-শঙ্কং নির্ভন্নং যথা স্যাৎ তথা মৃগমদ-রস্-রাশিভি: मुश-मह-क्षव ममुदेदः पत्रिकाः त्थाप्रभार श्रीवाधार निकाछ। मृग-महस्रवमा श्रीकृष्य-वर्ग-मामार श्रीवाधा-প্ৰিৰম্বাৎ শ্ৰীবাধাৰাঃ অপীতাকে শ্ৰাম্মে কলছ-লেৰেৰ তস্যান্তি-শোভাধায়ক ৰাচেতি ৰোধ্যম। रेगर उक्रनगुननर क्षेत्रांशाक्रकाविकार्यः नवः अधिनवर তেন হেতুনা অবশ্ভরং অভিলোহিতং পটবাসং ত্মগদ্ধ-চূৰ্ণ ক্ষিপতি অভোহয়ং প্ৰতি বৰ্ষতি। তথা चार्क्य विमानः कमार्थ-कनिष्ठ-विज्ञमः वनविज्ञमः वा कत्रपुर ब्रह्मर क्रिक्ट क्रिक्ट मरब्रिक त्यवः मूह्यीवः-वातर पश्चिमक्राणि। कोषा-वर्णकः स्वयनः बनमानी জিতবানিভি খন-করভাণীং রণয়ভি বাদয়ভি শ্রীকৃষ্ণ-পক্ষপাভিত্তাদিভি ভাবঃ। তথা বীরাধিকা-স্থী ननिका यम जानी नेपी वीवादश्कार्यः मनाकन वहाकः বিষং শীকৃষ্ণং অনুষ্ঠ পঞ্চাবলোক্ষেতি বদ্ভি তস্যান্তবৈবাহুরপদাধিতি ভাবঃ।

चक्रवीम

১-->৫। বিলাগী ও হবেৎিমূল **এই** বন্ধান্ত এই বন্ধান্ত কৰা কুলাবন-পুলিনে **এ**য়াধান্ত সহিত

কীড়া করিতেছেন। শ্রীরাধা অব-রিপ্ শ্রীক্তমের উপরে বন্ধ বারা কুছুম-বারি বর্ধণ করিতেছেন; শ্রীক্তমণ্ড মুগ-মদ-বারি বারা প্রেরলীকে সেচন করি-তেছেন। তরুণ-মুগন নব ও অভিশ্র অরুণ স্থান্ধ-চূর্ণ নিক্ষেণ করিতেছেন ও অভস্থ-বিলাস প্রাকাশ করিয়ে "কিভিরাছি", "কিভিরাছি" বনিরা বারবোর বোষণা করিতেছেন। "বনমানী কিভিরাছেন" বনিরা স্থান বন করভানি বাদন করিতেছেন; লাভা বনিতেছেন,—দেখ দেখ, আমার স্থাপ্রিরতম (পক্ষান্ধরে—পোষামী সনাভনের ব্লভ) শ্রীক্তমেক পরাজিত করিয়াছেন।

তাৎপৰ্ব্য ဳ

শীরাধার বর্ণ-সাম্য হেতু পীত-বর্ণ কুছুম-বারি
শীরুফের প্রির ও তাঁহার স্থামালে মরকতে অর্থসংযোগের স্থার উহা নিতান্ত শোভাবিধারক বলিরা
শীরুফের দেহে কুছুম-বারি বর্বণ ধারা শীরাধার
অপূর্ব্ব প্রিরায়কুলতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।
তক্ষপ শীরুফের বর্ণ-সাম্য হেতু কন্তরী-বারি
শীরাধার প্রির এবং উহা তাঁহার অলে শশান্তর
কলক-চিক্তের স্থান শোভাবর্দ্ধক বলিরা শীরুফ
শীরাধার অলে কন্তরী-বারি সেচন করার তাঁহার
প্রিরা-নিঠতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।

তথা রাগ ৷>

খেলাভে হারির। শ্রাম পলাইভে চার।
চৌদিকে ব্রজ-বধু পথ নাহি পার॥
আবিরে অরুণ আঁথি মেলিভেং না পারিব।
হারিলুঁ হারিলুঁ শ্রাম বোলে বারে বারে॥
কর সঞ্জে মুবলী ভূমেভে পড়ে থলি।
করভালি মেইং সব স্থীপণ হালি॥
শিথি-পুছে আউলাইং পড়ে মহীভলে।
অরুণিভ বসন ভিজিলং ব্রম্মানীর ॥
শ্রামের বিভার দেখি রস্মানীর ॥
শ্রামের বিভার দেখি রস্মানীর ॥
শ্রমণ শ্রমণ দিরা ও মুখ্য মুহাই॥

1123112884N

সংহাসনে বৈসে রাই কোরে করি খাম।

শ্রম-ভরে ছহঁ অলে পরিপূর্ণ দাম।

শ্রীরভিনঞ্জরী দোঁহেণ চামর চুলায়।

শ্রীরূপমঞ্জরী দোঁহেণ ডামুল যোগায়।

শ্রীরূপমঞ্জরী দেই স্থাসিত জল।

এ মোহনদাস হেরি নয়ন সফল।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৯৯৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলতে' ঘ, চ। ৩। 'দেম' ক, প-র-সা।
৪। 'এলাইরা' ঘ; 'আল্যারা' চ। ৫। 'ভিগল' প-র-সা। ৬-৭। 'ছছ' প-র-সা।

কাষোদ (১

নাগরি নাগর অরুণ বসন ধরং শ্রম-ভরে ঝর ঝর ঘাম। विन्दू विन्दू हुव्रख् ত্ত মুখ-ইন্দ্ অরুণিভ মুকুভা•-দাম॥ पृष्ट् यम जानमन् भूरक्ष । হেলি হুহুঁ হুহুঁ তুমু वह्रविधः (धनि ে বৈঠল নিরজন কুঞ্চে। এ। আসন মণিময় রতন-াসংহাসন ফুলচন্ন-রচিত স্থঠান। করভহিঁ সেবন সকল সৰীগণ সময়োচিত বত জান । तिहे खनमञ्जी বারি কারি ভরি কোন স্থি চামর চুলার। ভান্থল বোগায়ই ত্রজ অধরে কোই উদ্ধৰ দাস বলি বার ।২৩।১৪৪৭।

) - वैद्यो शन्त-मा श्रीवत २००० मरवाक शर । २ विश्वक विद्या है। या श्रीवेश का

পাঠান্তর

'চোয়ত' প-র-সা। ৪। 'বুকুতার' ক, ঝ, প-র-সা। ৫। 'হত্তত্' ক, ঝ। ৩। 'গান' জ।

শীৰাগ ৷১

রন্দাং-রচিড° কতেক পরকার।
সধিগণ আনল বহু উপহার ঃ
রতন-থারি ভরি রাখল তাই।
বারি ঝারি ভরি দেওল যাই ॥
রতন-আসন পর বৈঠল কান।
ভোজন কয়ল আপন মন মান ॥
আচমন সারি তলপে মুখবাস।
ভোজন করু ধনি স্থিগণ পাল ॥
বো কছু শেষ ভুজলা স্থি সাথ।
আচমন কয়ল মোছল পদ ছাত ॥
খ্যাম-বামে ধনি বৈঠল বাই।
প্রির-সহচরি কোই ভাস্থল যোগাই ॥
শ্তলণ শেকে রাই ঘন-খ্যাম।
চামর বিজনণ করু দাস বলরাম ॥

15 6178811

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০০১ সংখ্যক প্র। ২: 'বৃন্ধার' ক। ৩। 'চর্চিড' প-র-সা। ৪। 'ভূলল' ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'গুডল' ক, প-র-সা। ৬। 'বীজন' ক, ধ, প-র-সা।

অথ বাদন্তী দোলা হোরি-বিলাস । 🗢 🦿 ভত্র শ্রীগৌরচক্ত ।

नम्य ।

কো ক**হু আজুক আনন্দ-ওর।** ফুল-বনে দোলত গোর কিলোর।

• 'त्यांति-विनान' चटन 'त्यांति वटण' 🛡, प, 'त्यांनी' प, छ । নিত্যানন্দ গণাধর^২ সলে।

শান্তিপুর-নাথ গাওই রলে।

সহচর ফাগু পেলই° গোরা-গার।

থারই শুনি সব লোক নদিরার।

থোল-করতাল-ধ্বনি হরি হরি বোল।

নর্নানব্দে আন্দে বিভোৱ ॥২৫॥১৪৪৯॥

পঠিক্তির

ইহা প-র-সা প্রথির ২০০২ সংখ্যক পদ।
 গেলাধর আদি' প-র-সা। ৩। 'লেপই' ক;
 'কেলবে' প-র-সা।

च्या मात्र ।>

নিপভভিং পরিতো বন্দনত-পালী।
ভংগ দোলরতি মুদা স্থলদালী।
বিলস্তি দোলোপরি বনমালী।
ভরল-সরোক্তহ-শিরসি বধালী।
ভরল-সরোক্তহ-শিরসি বধালী।
ভরল-সরোক্তহ-শিরসি বধালী।
ভাপি পুরো নৃত্যভি পশুপালী।
ভরমারণ্যক্ত-মগুনশালী।
ভরতি সনাতন-রস-পরিপালী।২৬৪১৪৫০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০০০ ৩ প-র পুথির
৩০৮ সংখ্যক পর। 'তথা রাগ' ছলে 'আসাবরি'
প-র। ২। 'নিপভিড' প-র। ৩। 'বছন' ড়, থ,
আছ। ৪। 'বংশ' ড়, থ, ব, চ। ৫। 'সির্মিজ থানী'
ড়, থ, ব, চ। ৩। 'অজ্যাবর্ণ্ডক' ক, থ, প-র-সা।
१। 'বঙ্গ' ফ, থ, ব, চ, প-র-সা।

টাকা

১—৮। "নিপততী"ভাবি। বোলায়াঃ পদ্ধাক্ষতেক্পরি বনমানী শ্রীক্রকো বিলস্তি। ভ্রোপ্রা ভ্রক্সা নরোক্রনা পদ্ধস্য শির্মি জনী বধা ভূক ইম্বান্ধ্য পরিভঃ স্বভাং বক্তন-পানী ভূকু-ভূকিন্তিঃ নিগভতি। স্থল্ববালী বিভাশের চ বুলা হর্ণে তথ বোলরভি চালরভি দোলা-প্রেরইণ্রিভি ভাবং। গোপী-জনানাং করভানী জনরভি কৌতুক্রিভি শেবং। কালি গশুপালী গোপী প্রিরস্য পুরো নৃত্যভি। জরং শ্রীকক্ষঃ আরণ্যক-মঞ্জলানী বন্ত-পূজা-পত্ত-জন্তা-বহাদিভিঃ কৃতভূবণঃ তথা সনাভন-রস্যা ভিরন্থারিক আনক্ষ্যা পরিপোবকঃ ক্রভি স্বেনোৎকর্বেণ বিশ্বা-ক্রভে। পক্ষে সনাভন্যা রস্যা প্রবর্জকঃ।

অস্থ্ৰাদ

>—৮। চড়ুর্দিকে কন্ধচুর্ণ-রাজি বর্ধিত হইতেছে; স্থান্থর্ব প্রীক্ষকে আন্দোলিত ক্রিডেছেন। বননালী (পলাক্ষতি) দোলার উপরে বিরাজিত রহিরাছেন,—বেন চঞ্চল পল্পের উপরে ক্রমর
শোভা পাইতেছে। গোপীজনের কর-তালী তাঁহার
কৌড়ুক উৎপাদন করিতেছে। কোন গোপী ব্রিয়ভব্যের সন্মুধে নৃত্য করিতেছেন। বস্তু ভ্রথে বিভূষিত ও
জনত-আনন্দের (পক্ষান্তরে—পদকর্জা সনাত্তনের
আনন্দের) পরিপোবক এই প্রীক্ষের বলিহারি!

दर्श क्षेत्र १३

মধ্বনে মাধব দোলত রলে।
অল-বনিতা কাপ্ত দেই প্রাম-ললে ।
কালু কাপ্ত দেরল অন্সরি-ললে।
মুখ মোড়ল ধনি করি কত তলে ।
কাপ্ত-রলে গোপী সব চৌদিগে বেড়িরা।
প্রাম-ললে কাপ্ত দেই লঞ্জলি অরিয়া।
কাপ্ত খেলাইতেই কাপ্ত উঠিলই গগনে।
বুন্দাবনই-ভক্ত-লভা রাভুল বরণে।
রালা মর্ব নাচে কাছেই রালা কোকিল গায়।
রালা কলে রালা ভ্রমর রালা মধু খার।
রালা বারেই রালা হৈল কালিনীর পানী।
গগন ভুবন দিগ বিদির না লানি।
বভি লয় রতি জয় বিজকুলে গায়।
ভারহার ভিড নয়ন জুয়ার ১২০৪১৪৪১৪

পাঠান্তর

>। देश भ-त्र-मा भूभित्र २००८ मरनाक भए। २। 'द्यनारे' थ। ७। 'উफ़िन', न-त्र-ना। ।। **'बुन्नांबरलब' प ; 'बुन्नां**वरन' ह, श-ब्र-ना । **৫ । 'शांरह' श-प्र-मा। ७। '**वात्र' क, च।

তথা যাগ ৷>

দোলভ রাধা মাধব সঙ্গে। ছোলায়ভ সৰ স্থিগণ বহু রজে ॥ ভারত কাণ্ড হুর্ত-জন-লঙ্গে। (अहेर छ छ - ज्ञा मूक्त विकास ৰাওত কত কত বন্ধ হুতান। কভ কভ রাগ-মালং করু পান। চন্দন কুন্ধুম ভরি পিচকারি। **হুহুঁ অচ্চে কো**ই কোই দেওত ডারি ॥ ৰিগলিভ অরুণ বসন হুহু -গায়। শ্রম-জল বিন্দু বিন্দু শোভে° তার ॥ হেম-মরকতে জমু জড়িত পরারঃ। ভাহে বেচুল গজমোভিম-হার। লোলোপরি॰ ছত্ত নিবিড় বিলাস। कानमात्र ८०वि शृतस्य जाम ॥२৮४३८८३॥

পাঠান্তর

३। देहा श-त्र-मा श्वित २००८ मः श्रम भागाः २,६ 'सात्र मान' क, ब, इ, श-त-गा। ७। 'लोका ः कटक्ष' थ । 🙎 । "त्यांकान" यन्त्र-या । 🗸 । "त्यांय পল্লি' ব ; 'বোলা পর' গ-র-না।

गेका

৫--৩। "বাওড" ইত্যাদি। ছন্দর-ভানবিশিষ্ট क्ष क्ष मा बावन कतिरखरह (धनः) क्ष क्ष য়ার-বালা রাম করিতেছে। তুলনা কর্ম--'গাওড बांध-बांबिका' कांबर्गन ; भ-क-क, ३०७० मरबाक

29.00

चार्गावत्री ।>

অঞ্চলি ভরি ফাগু লেই স্থিগণে। त्राहे-कायू-जाक एवरे चान चान ॥ দোলোপরিং হুর্ছ দোলত ভাল। গাওড কোই সধি ধরি° তাল 🖁 বাওত কড কড বল্ল পুরঙ্গ। বীণ রবাব সর-মণ্ডলঃ উপাল 🛚 লোভিড ভক্লকুল বিকলিভ কুল'। अङ्क मध्-मा नव जानकृत⁰ ॥ मनव-भवन वर्ष्ट यामून-जीव। নাচভ শিধিকুল কুঞ্জ-কুটীর। বিলস্ই ভহিঁ পোলোপরি কান। ইহ নবকান্ত তুহুঁক গুণ গান ৪২৯৪১৪৫৩৪

পঠিভির

३। हेरा भ-त-मा भूषित २००७ मध्याच भए। २। 'त्माना नित' क ; 'त्मान नित' थ। ७। 'वर्षि करन्न' क, भ-त्र-मी। ७। 'मत्रवद्यम' क, ४, ४३ ८। 'स्न' स्, ह, श-त्र-ता। ७। 'स्न' स्, ह, भ-त-मा। १। 'काहि' व, ह। ৮। 'स्वान **नवि' ५ ; '(लांग भन्न' भ-न्न-मा** ।

ততো হোরি-সম্ভোগত্য রুসোদগারঃ। তত্র প্রীগৌরচন্তঃ।

विश्वाय ।>

পৌর-বরণ

হিরণ-ক্রিপ

বক্লণ বসন তার।

नव्य-वृत्रेण

রাভা উভণল

Cक्षम-भात्र। यदि मात्र B (तय (तय नवदीश-नाजर।

, আবে বিভোর

न्या भव भव

বৰুর ভকত নাক । এ।

ক্ষয়ে আবেশে পুরব-বিগাসে

মধুর রজনী-কথা।

আমিয়া-করণ ঐছন বচন°

হরল মনের বেথা।

শুনি হরবিত সকল ভক্ত

প্রেম্মের সাগরে ভালে।

সেণ সব সোঙরি কান্দরে গুমরি
দীন গোবর্জন দাসেণ ॥৩০॥১৪৫৪॥

পঠিক্তির

>। देशं श-त्र-ना श्वित २००१ नश्याक शम। २। 'क्किताक' क, थ, ह, श-त्र-ना। ७। 'वत्रभ' ४। १। 'त्ना' क, थ, 'त्म' श-त्र-ना। ८। 'त्नांकिक हार्त्म' श-त्र-ना।

তথা রাগ ৷১

ঋতু-পতি-রন্ননিং বিলাসিনি কামিনি नानम हुन हुन जाथि। কাঞ্চন-ব্রণ-হরণ° তমু অরুণিত मधुत-मधुत युक् काथि । সৰ সহচরিগণ বাওল তৈখন এক জন করয়ে পুছারি। कर थिन किहान गित्रिवद्र-धद्र मृद्यः कंगि (बननि भिष्ठकाति ॥ পদ্মা সহচরি क्षिट्रान वीव्रति বাঁচলি॰ ভূমূল সংগ্রাম। গৃহ-পত্তি-সেবদ काटक त्रहर्नु ७व বাই বা পেখলু হাম 🏽 ত্তনি তব রসবভি रक्रिये जन्म मि বহ সোই কোতুক-ভাব। লো ক্লাব্ৰ रेक रंगांचिन बोल १००१० ४८८१

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সা পুথির ২০০৮ সংখ্যক পছ।
২। 'রক্ষনি' ক, খ, চ, প-রসা। ৩। 'হরণ বরণ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'সিরিবর দরশ্বে' ক।
৫। 'বাচলি' প-র-সা। ৬। 'রাচলি' ক; 'বাচলি'
প-র-সা। ৭। 'ডম্ল' খ, চ। ৮। 'হরবে'
প-র-সা। ৯। 'এও' প-র-সা।

টীকা

৯—>৽। "পলা" ইড্যাদি। (চন্তাৰণীর)
স্থী পলাকে কি প্রকারে বঞ্চনা করিলাছিস,—
(চন্তাবলীর) সহচরীদিগের সহিত ভুষুল কলহ
এড়াইয়াছিস্। (পূর্বাকলি-ছিড 'কহ ধনি কৈছনে'
বাক্যের সহিত ভ্রম্ব লীরাধার সহচরী চন্তাবলীর
স্থীদিগের সহিত ভূমুল কলহ এড়াইয়া প্রীকৃষ্ণকে
কিরপে হত্তপত করিয়াছিলেন,—"বিদ্যামাধ্ব" নাটক
ক্ষবল্যনে ১৪৫৭ সংখ্যক পদের বর্ণিত সেই ঘটনা
'পলা সহচরী' ইড্যাদি বাক্যে ইজিভ করা হইয়াছে।)

विज्ञान । ১

ভন ভন সথি তোহারে কহিছে
আতৃক রভসং-কেলি।
পিরার সহিত্তে শেলিতে খেলিতে খেলিতে
ভৈ গেলুঁ একই নেলি ॥
আবির লইরা ক্রানে কেওল
করে কচালিরে জাবি।
ক্রেনই সময়ে বরান ক্রেনির তারে কের্ছ নাহিং দেবি ॥
পিচকারি বেন বরিবর বন
অরণ বরণ নীর।
পুরুষ কি নারী ক্রিনিকে না পারি

নিয়ড়ে আসিয়া হেন ৰেলে॰ পিয়া হাসিয়া কয়ল কোরণ। পিরিভি-জারভি এ উদ্ব-গীতি

বন্ধুয়া জানয়ে তোর ।৩২॥১৪৫৬॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ২০০৯ সংখ্যক পদ। २। 'त्रहम' भ-त्र-मा। ७। '(शन' क, ४, ४, ४। श 'वदात्न' भ-द्र-मा। १। 'नाह्न' भ-द्र-मा। (বন' প-র-সা। १। 'কোরে' প-র-সা। ৮। 'চিতে' প-র-সা। ১। 'ভোরে' প-র-সা।

थाननी ।>

শুন শুন আজুক কৌতুক-কাজ। মীললং যব হাম নাগর-রাজ। हिल्लाविन निक जरहित स्मिन । বাওল কানু সঞে করইতে কেলি। **टिब्स्टन क्रुव॰ मध्यः द्विन् होम ।** বুৰহি যুধ কয়ল এক ঠাম। ভঞাদিক जानि मीनन भारा । ব্রহণ্ডর কাপ্ত উড়ারল সোর। **কাণ্ড-রজে সকল** কর**লুঁ**° আধিরার^৫। मात्रि भूक्रव (काहे नथहे ना भाति । ঐছনে কামুক সাঝহি খেরি। আনলু । নিধুবনে সো নাহি হেরি । ভাষা বাই সবহঁ হোই এক ঠান। পিন্না সঞে খেলি পুরারলুঁ॰ কাম ॥ সো সৰ কি কহব পুছ্' সধি-পাশ। গোৰ্মান কৰ পূৱল আল 1001>8691

পাঠান্তর

)। देश क्याना श्रीवद २०३० मःवाक भर। ्रिक्ड अञ्चलका एक नवन्त्र । ०। दर्भ क हरीक्षेत्रीके :: (कारण गन्य-गां। ८। 'वास्तिती'

थ। ७। 'शांति' थ। १। 'ब्लानन' कः, 'ब्लाबन् প-র-সা। ৮। 'ब्हे' क। २। 'পুরাঞ্চণ' प। **>०। 'कर्' क**।

সি**পুড়া**।১ আবিরে অরুণ गव वृन्मावन উড়িয়া গগন ছায়। হিয়ার মাঝারে বন্ধুরা আমার কেহুং না দেখিতে পায় ৷ পিচকারি যেন **Б**थन नजून নিরখে॰ নরন মোর।

ফাগুণ ভরণ নব অমুরাগ-

ভমু মন করি জোর॥ অল-পরিমল শুধুই শ্রামল

চন্দন চুয়াক ভাতি। खमन्नी उमक মোর নাগা জমু তত্তি পড়ল মাতি।

वब्रुटन बब्रुटन नष्रदन नष्रदन श्वनदत्र क्रमदत्र ध्यान ।

অফুণ অখ্য बूड् करनवर বাঁপিয়া কয়ল কেলি।

রসের সাগর রসিক নাগর কয়ল ঐছন কাল।

চতুর ছ জন এ উদ্ধাৰ ভণ রসবতী রগ-রাজ 1981>৪৫৮॥

পাঠাভৰ

)। देहा श-व-ना श्रवित २०**२३ नरवाक श**र्ग। ्र। '(कर्' क्, शन्द्र-गां। 🖭 'निवर्ष' शन्द्र-गां। s । 'काश्वता' व । ८ । 'वनव वनव' शन्त्र-गा।

e--- "हनन" वेखाति। (क्रिक्टकन) इक्न महत राम शिक्षकांदी चर्चार छेटा इक्न शिक् ভাষীর স্থার প্রেম্বরন বর্ষণ ভরিতেছে, এক্সপ আনার
নমন সৃষ্টি ভরিল; (এবং) নবীন অন্থরাগ-ক্ষপ
কাপ্ততে (উভরের) দেহ ও মনকে একজ করিরা
(সর্বাজ) পূর্ব করিল। তুলনা করুন,—
"নিরপত বরন নরন-পিচভারিত
প্রেম-গুলাব মনহি মন লাগ।
মূহ অজ-পরিমল চুরা চলন ভাগরক্ষ ভহিঁনব অন্থরাগ॥"

-- উष्दर्वातः १ - व-७, ১৪७१ भव ।

यश्मि।) কি কহব সোরসং-রজ। ৰাতু খেলই মনু সঙ্গ। স্থ্ৰল স্থা করি বাম। সমূপে দাঁভায়লু হাম। ললিভা ভাহিনে বহু॰ মোর। হেরি কামু ভেল ভোর[়] ॥ করহি খসল পিচকারি। ঐহে পড়ল তমু চারি। সচকিড হোইণ হাম ধাই। কোরে অগোরলু ভাই। बद्धान बद्धान वर्त (प्रम । ইবত খাস ওব ভেল্। क्रत कति मोक्रिय गुर्थः। (स्त्रहेट्ड विषत्रदत्र वृक्ष । **দৰ্শেকে চে**ডন বৰ হোই। क्रीकिएन स्टब्स्ट लाई । क्र बार कारी (भग। रेर प्रथ विदि कांद्र दिन । शंभ निक भनिष्य-वार्षे । क्ष्र्यं क्रज्यं श्रीत शानि । · **७२ मूप (रहारे (मात**ी शय वर्ष क्लांटर जारगारी

স্থিপণ সচকিত থারি।
বরনে দেয়ল তব বারি।
বৈঠল কুঞ্চহিঁ যাই।
তহিঁ সব কহলুঁ> বুঝাই।
তথ্য-বিচিত্র-বিলাল।
কহ পোবর্জন দাস ॥০৫॥১৪৫৯॥

পঠিবির

ইহা প-র-সা পৃথির ২০১২ সংখ্যক পদ।
 (সব'ক, চ, প-রসা। ৩। 'কছ'ব। ৪। 'বিভোর'ক, ব, চ, প-র-সা। ৫। 'হই'ক।
 (করি মালিরে'ছেনে 'কর মালই' প-র-সা।
 (সুব'ক, চ, প-র-সা। ৮। 'বুক'ক, চ, প-র-সা।

অথ অভিসারামুরাগ। দৃত্যক্তি।

ছুড়া।>
আজু কোই কুলবতি নাহি বাহিরাব।
বর্মনা সিনানে কোই নাহি বাব ॥
বিপতি পড়লং আরু বুবতি-সমাজ।
সখাসণ সজে খেলই যুব-রাজং ॥
পছহি পছং বেরল চৌ ওরং।
সব ব্রজ-বাকক তাহে আগোর ॥
বটু সুবলং ছুহুঁ ভেল এক ঠান।
বুধহি বুধ করল নিরমান ॥
ভারি পিচকারি লেই সভে হাভ।
বন বরিধণ জন্ম পড়তহিং বাধ ॥
আবিরে না হেরিলেং দীপ বিহিপাং।
রজে বসন বহি বাওভ তীগৃংণ ॥
কহু গোবর্জন রহু গুহু বাহ।
কোই জনিং সন্দির হোড়ি বাবিধাহ ॥

Total Short

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০১০ সংখ্যক পদ।
২। 'পছব' খ। ৩। 'ব্রজ-রাজ' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'পছ বিপছ' ক, খ, চ। ৫।
'চছুর' ক। ৬। 'ব্রবল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৭।
'পছু ভহি' প-র-সা। ৮। 'হেরই' প-র-সা।
৯। 'দিগ বিদিগ' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'ভিগ'
ক, চ; 'ভিক' প-র-সা। ১১। 'জানি' ক,
প-র-সাঃ।

काटमान ।>

चन मूत्रनी- श्वनि ডক্ষ-শবদ শুনি **উম**ড়ই হাদয় বিশাল। হো হো হোরি* স্বনে তহিঁ গ্রজন উনমত যত ব্ৰহ্ম-বাল। भावादि मनमथ-त्राक । বরণ তমু হেরইতে नवचन चक्र-'ভেজই কুলবভি লাজ।ধ্ৰ। মুগ-মদ কুস্কুম চুন্না চন্দন পিচকারি ভরি সভে॰ লেই। কোপিত হইণ হুহুঁ হুহুঁ লৰ জনু কোণে নয়ন বয়ন পর দেই। देश पिरन देकरह রহিতে কহ ঘর মাহা গো হুখে হোই নৈরাশ। বাই ভহিঁ হেরব ११ मध्य पानि मरण (शांवर्षन माम ॥०१॥)८७)॥ পাঠাত্তর

े १ देश शन्त-जा श्रीत २०२८ तरशक शर।
२१ 'वेनकरे' शन्त-जा। ०। 'द्रित' कः 'हिंति'
वा ६। 'शतकक' शन्त-जा। ०। 'कित तरक'
व्हाल 'किति' एकः 'कित किति' शन्त-जो। ७।
'द्रिक्ति' ए। '१। 'देश' ए। ৮। 'तत्त नत्तन'
व्हालको १००। 'वार' शन्त-जो।

47E 13

ব্রুক্তকে চেঠনাং থেলত হোরি।
সম্পৃথি গোকুল-বাল বিজেরি ॥
বাটছি বাটছি রহই আগোরি।
আবির গোলাব রচই বাকঝোরি॰ ॥
কেশর-কুত্ম গোলালকিং রজ।
ভরি পিচকারিছাঁ ভীগতং অল ॥
শ্যামত্ম্পর মনমোহন রায়।
সহচর সক্ষুহি কাণ্ড থেলায় ॥৩৮॥১৪৬২৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৫ সংখ্যক পদ।
২। 'চঠোনা' খ; 'টেটোনা' চ। ৩। 'গুলাল'
ক; 'পোলাপ' প-র-সা। ৪। 'বকা ঝোরি' দ।
৫। 'কুছ্ম গোলালকি' ছলে 'কুছ্ম গোলালকি'
ক, খ; 'কুছ্ম গোলাবকি' প-র-সা; 'কেশর' ও
'কুছ্ম' একই পদার্থের নামান্তর; হুডরাং 'কেশর
কুষ্ম' ইড্যাদি পাঠই সমীচীন। ৩। 'ভিগড' ক,
চ, প-র-সা।

ी का

৫। "কেশর" ইত্যাদি। কেশর-কুথ্য অর্থাৎ
কুত্ব ও খালা-নামক রল্পন-জবোর রং অর্থা
কেশর (কুত্ব), কুত্ব অর্থাৎ কুত্ত-পূলা ও
খলালের রং।

অথ হোরি প্রকারান্তরং যথা।

नगण ।>

নীলাচলে কনকাচলং গোরা।
গোৰিন্দ-ফাগু-রজে ভেল ভোরা ॥
দেব-কুমারি নারিগণ সজেও।
পূলক-কদম্ব-কর্মাত্ত অম্বেও ॥
কাগুরা খেলড গৌর-তমু।
প্রেমক মুধা-সিম্মু মুর্ডি অমু ঃধাঃ

কাণ্ড-অরুণ তমু অরুণহি চীর।
অরুণ নয়নে বহে অরুণহি নীর।
কণ্ঠহি লোলত অরুণিড॰ মাল।
অরুণ ভকত সবং গাওরে রুগাল।
কভ কভ ভাব বিধারল অঞ্চ।
নয়ন চুলাওত প্রোম-তর্লাণ।
হেরি গদাধর লক্ত লক্ত হাস।
সো নাহি সমুম্বল গোবিন্দদাস। ৩৯॥১৪৬৩॥

পঠিবির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৬ ও প-র পুথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কনক কাঁচন'থ। ৩। 'সল'ক, থ, চ। ৪। 'আক'ক, থ, 'চ। ৫। 'আকপহি'প-র। ৬। 'সণ'প-র। ৭। 'আকে' প-র-সা, প-র। ৮। 'তরকে' প-র-সা, প-র।

रम्छ ।>

খেলত ফাণ্ড গোরা বিজ্ঞ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ।
নিতাই অবৈত সহ খেলইং রসাল।
খেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোরালও।
সার্বভোম সজেও খেলে রায় রামানক।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুক্দ।
দোঁহে দোঁহেও খেলে ফাণ্ড করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজ্ঞমণি।
কৈই নাচে কেই গার করতালি দিয়া।
দীন কৃষ্ণদালে কহে জানক্দে ভাসিরা।

পাঠান্তর

. ||80||28 ||8||

১। ইবাপ-র-সাপুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' খ। ৩। 'নাভরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' খ, প-র-সা। ৫। 'বোহা' খ। —

তথা রাগ ৷ ১

মধুরিপুরম্ভ বসন্তে।

খেলঙি গোকুল- যুবভিভিক্ল**ভ্**ল-

পুষ্প-স্থান্ধ-দিগতে । ধ্রা।

প্রেম-করন্বিত-

রাধা-চুস্থিত-

মুখ-বিধুক্লৎসবশালী 🐛

ধুত-চন্দ্ৰাবলি-

চীক্ল-করাঙ্গুলি-

রিহ নব-চম্পক-মালী।

নব-শশি-রেখা-

লিখিত-বিশাখা-

তমুরধ ললিতা-সঙ্গী।

শ্যামলয়াঞ্চিত্ত্ব-

বাহুক্তৰঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রক্ষী 🛭

ভন্তা-লম্বিত-

শৈব্যাদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পশ্য সনাতন-

মূর্ত্তিরয়ং খন-

वृत्मावन-क्रिकात्री ॥8>॥>८७०॥

পঠিক্তির

>। ইংা প-র-সা পুথির ২০১৮ ৩ প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'খ্যামলয়াপ্রিড'ক, ধ। ৩। 'বক্তু' প-র-সা।

निक1

১—১৫। "মধুরিপু"রিত্যাদি। অভ বসত্তে
মধুরিপু: প্রীকৃষ্ণঃ পোক্ল-বুবতিভিঃ বেণতি ক্রীড়তি।
কীচুশে বসতে ?—উজ্জলীঃ নির্মাণঃ পূলাবুপত্তি।
কীচুশঃ প্রীকৃষ্ণঃ ?—বেশ-ক্রম্বিতা অভ্রাগ-বুজা
বা প্রীরাধা তরা চুবিতো বুধচক্রো বভ ভথাভূতঃ
তেন উৎসবশালী আনক্ষোৎসববান্। গুডঃ চল্লাক্যাভাককরাজুলিঃ বেন তথাজ্তঃ। তথা নকচম্পক্রাল্যবারী। প্রীরাধা-বর্ধ-সার্যাৎ চম্পক্ষবাল্য-ধারণেন প্রীরাধারাক্র্রাগাভিশরঃ ব্যক্তক্রে।
পুনঃ কীচুলঃ ?—নবশ্বিরেশ্তিঃ অর্ক্রন্তলাভ্রিক্র
ব্যিতিক্র্যিক্তা প্রিভা বিশাধারাজ্বর্বন অর্ক্রাভূতঃ।

অসুবাদ

১—১৫। পূপা-স্থরতি নির্মাণ আকাশবিশিষ্ট বসতে আবা মধুরিপু শ্রীকৃষ্ণ গোক্ল-মুবতিগণের সহিত ক্রীড়া করিকেছেল ॥বা অহ্বরাগ্রুক্তা শ্রীরাধা ইবাঁর চক্র-বন্ধন চুখিত করার, ইনি আনক্ষোৎসবমুক্ত হইরাছেন; ইনি চক্রাবনীর ফ্লার-করাসুলি ও নবচম্পক্রের মাল্য ধারণ করিরাছেন। ইনি (নথাছ-রূপ) নব-চক্র-কলা ঘারা বিশাধার কলেবর আছিত করিরাছেন ও ললিতার সঙ্গে বিরাজিত রহিরাছেন; ইনি শ্রামাণ কর্ত্বক শৃত-বাহ ও প্যার, বিলাসোক্রেক দুর্শনে ক্যোত্তক্ষ্কত। দেও! ইনি ভ্রামাণ কর্ত্বক উৎক্ষিপ্ত লোহিতক্রেন্ট্র-চুর্শ-ধারী মুক্ষাবনাহ্বরাগী নিত্য (পক্ষে স্নাতন গোহানীর শ্রণ) বেহ-ব্রিশিষ্ট।

क्यां मान ।>

বুজ-রাম্বাপিত-ভোব-তরকর। বাবে কর বুলাবন-রকরণ। ক্রমেরিস: ভক্ত-নিকিত-সাজা। মাজি নার্যাবনিক্তক্রস-থাকা। भारति छ्ल-वहाङ्ख-**याना**। यम वर्**या**व मनाजन लोगा ॥३२॥>८७०॥

পাঠান্তৰ

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-র পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' খলে 'আসাবরি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইভ্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টাকা

১----। "ৰতু-রাকার্পিতে"ভ্যাদি। ছে রাধে। वृत्यावनक वृत्रः विनागः एक चनोकृतः चवत्नाकृत পখ্যেতার্থঃ ৷ কীদুশং বিলাসম্ ?---বডু-রাজেন বসভেন অর্পিতান্তোবতরলা: প্রমোদ-লহর্ব্যো বল্মিন্ ডথা-ভূতম্। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরভি মলয়ানিলে-णापिणि:। यनप्रानित्नम **अक्न**वाधानत्कन निक्किन गांजा উপদিষ্ট-নৃত্য-কলা উচ্ছনহাতা খেতপুলছেলেন হাসকারিণী লভাবলিঃ নটভি নৃত্যভি। ইহাল ঃস্থা-বনে পিকতিড়িঃ কোকিলকুলং মুদদং বাদয়ভি কল-नारेक्यू क्ष- ध्वनियस्करबाछोडि छावः। अञ्चतक्षः অভুরচ্জেন রোমাঞ্তদেহং ভক্কলং ভংৰ্জনাদিক্ষিতি শেষঃ। অন্তত-শীণা বিচ্ছ-চরিত্রা ভূক-ঘটা ভ্রমরপঙ্জি: গায়তি ভ্রমশবৈদঃ গীতং করোভি। কেব 📍 সম বংশীব। 🗢 👣 🖣 সা?--সনাতনী চিরস্বারিনী দীলা কেলিইডাঃ। भक्त मनाउरनम भवकवा वर्षिका मौना वकाः।

व्यष्ट्रवान

১—৮। হে শ্রীরাধে। বসত্ত নৃপতি কর্তৃক জনিতানল বুলাবনের বিগাস অবলোকন কর।
বলরানিল ওফ কর্তৃক লিক্ষিত-নৃত্যালীলা (পুলক্ষেকে)
উজ্ঞাল-হাজ-কারিলী লভাবলি মৃত্যু করিভেছে।
কোকিল-কুল (কল-নাৰাজ্ঞ্জেল) মৃথক বাজাইভেছে।
এবং (অভ্য-জ্ঞালে) রোযাক্ষিত-বেছ ভক্ষুল (সুভা)
হর্পন করিভেছে। অভ্য-চরিত্র ক্ষমন-পংক্তি স্নাভ্য-(গল্পে—স্যাভন-বর্ণিত)-লীরা-বিনিষ্ট আবার ক্ষ্মীর ভার গাল ক্ষ্মিক্ট্রে

কাণ্ড-জরুণ ততু জরুণহি চীর।
জরুণ নয়নে বহে অরুণছি নীর।
কণ্ঠহি লোলত জরুণিত মাল।
জরুণ ভকত সবং গাওয়ে রসাল।
কভ কভ ভাব বিধারল জরুণ।
নয়ন চুলাওত প্রেম-তর্কণ।
হেরি গদাধর লছ লছ হাস।
সো নাহি সমুঝল গোবিন্দদাস।৩৯॥১৪৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৬ ও প-র পৃথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কনক কাঁচন'থ। ৩। 'সল' ক, থ, চ। ৪। 'আল' ক, থ, 'চ। ৫। 'আলণহি'প-র। ৬। 'গণ' প-র। ৭। 'আলে' প-র-সা, প-র। ৮। 'তরকে' প-র-সা, প-র।

बमछ ।>

থেলত ফাগু গোরা বিজ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ॥
নিতাই অবৈত সহ খেলইং রসাল।
খেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোয়াল॰॥
সার্ববিভৌম সজে৽ খেলে রায় রামানক।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুক্দ॥
দোঁহে দোঁহেং খেলে ফাগু করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজমণি॥
কেহ নাচে কেহ গায় করতালি দিয়া।
দীন কৃষ্ণদাসে কহে জানক্দে ভাসিয়া॥

পাঠান্তর

184841481

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' থ। ৩। 'মাতরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' থ, প-র-সা। ৫। 'দোহা' থ। — তথা রাগ।১

मधुतिश्रुत्रस्य वमरस्य ।

খেলভি গোকুল- যুবভি ফিক্ল আলুল-

পুষ্প-স্থান্ধি-দি**গন্তে ॥ধ্ৰ**॥

প্রেম-করম্বিত-

রাধা-চুন্মিত্ত-

मूथ-विधुक्र ९ म व भागी।

ধুত-চন্দ্রাবলি-

চারু-করাঙ্গুলি-

রিহ নব-চম্পক-মালী 🛭

नव-**णणि-**(द्रथा- हि

লিখিত-বিশাখা-

তমুরথ ললিতা-সন্ধী।

শ্যামলয়াঞ্চিত্র-

বাছরুদঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রজী ।

ভদ্ৰা-লম্বিত-

শৈব্যাদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পশ্য সনাতন-

মূর্ত্তিরয়ং ঘন-

वृन्मायन-ऋहिकात्री ॥४८॥५४७०॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৮ ও প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'স্তামলয়াশ্রিড' ক, ধ্। ৩। বিজ্ঞু'প-র-সা।

गिका

১—১৫। "মধুরিপু"রিত্যাদি। অভ বসত্তে
মধুরিপু: শ্রীকৃষ্ণ: পোকুল-বুক্তিভি: বেগতি ক্রীড়তি।
কীল্পে বসত্তে ?—উজ্জনী: নির্দ্ধনা: পূলাকগিনিদিগভা: কুম্ম-বাসিত-নিগত্তরালা: বস্থিন তথাড়তে।
কীল্প: শ্রীকৃষ্ণ: ?—ব্রোম-ক্রমিতা অহুরাগ-বুজা
বা শ্রীরাধা তরা চুবিতো মুধ্চক্রো বত তথাড়তঃ
তেন উৎসবশালী আনলোৎসববান। মুক্ত চল্লাবল্যাশ্চাক্রকরাকুলিঃ বেন তথাজ্তঃ। তথা নক্রমাশ্চাক্রকরাকুলিঃ বেন তথাজ্তঃ। তথা নক্রমাশ্চাক্রকরাকুলিঃ বেন তথাজ্তঃ। তথা নক্রমাশ্চাকরারার।
শ্রীরাধা-বর্ণ-সাম্রাধ্ চল্লাক্রমা
স্বার্গার শীল্পঃ ?—নবশনিরেথাতিঃ অর্ড্রমাশ্রীক্রমাশ্রীকর্মানি বিশ্বাধারাভ্রম্বেশ্য ত্রীভূতঃ।

তথা লগিভারা: সলো বিভতে বতেতি তথাত্তঃ। ভাৰণৰা ভরারা। গ্রীরাধা-সধ্যা অঞ্চতবার্থ তত্ত্বঃ প্রারাভরাম-চন্তাবলি-সধ্যা উদ্ধিতবিশ্রমরলী উল্লিক-বিলাসকোত্কী। প্ন: কীলুন: পূ
—ভঞ্জা সধ্যা আল্ডিভরা মুক্তরা শৈব্যরা উদীরিত
উজ্জালিত উৎক্ষিণ্ডো বা লোহিত-চূর্ণ-সমূহতং
বার্রিভুং শীলং বভেতি তথাভূতঃ। অরং বনবৃন্ধান-ক্ষতিকারী বলবভ্নাবনাহ্যরাধী সনাতন-মূর্তিঃ
সনাতন-দেহঃ পক্ষে সনাতনন্তরামকঃ অভা অতি
নিত্যঃ বাসরূপ ইতি সনাতনা। অর্ণাদিশাৎ অচ্।
ভাতুদী মূর্তিঃ বভেতি তথাভূতঃ পভাবলোকর।

অমুবাদ

১—১৫। পুল্-স্বতি নির্দ্ধ আকাশবিশিষ্ট বদত্তে আরু মধ্রিপু শ্রীকৃষ্ণ গোকুল-ব্বতিগণের সহিত ক্রীড়া করিভেছেন ॥এঃ অহুরাগযুক্তা শ্রীরাধা ইহাঁর চন্দ্র-বদন চুহিত করার, ইনি আনন্দোৎসবমুক্ত হইরাছেন; ইনি চন্দ্রাবালীর স্থান্ত-করাকুলি
ও নবচম্পন্তের মাল্য ধারণ করিরাছেন। ইনি
(নধাছ-রূপ) নব-চন্দ্র-কলা হারা বিশাধার কলেবর
অভিত করিরাছেন ও ললিভার সলে বিরাজিত
রহিরাছেন; ইনি শ্রামলা কর্ত্ব ধৃত-বাহ ও প্রার্থ
বিলাসোক্রেক দর্শনে কৌতুক্যুক্ত। দেও! ইনি
ভন্না স্থী সহকারে শৈব্যা কর্ত্ব উৎক্ষিপ্ত লোহিতমুক্ত-চুর্ব-ধারী বুল্লাবনাছরালী নিত্য পিকে স্নাতন
গোল্লানীর শ্রণ) দেহ-ব্রিলিষ্ট।

क्यां सांक ।>

बकु-श्रेषार्थिक-एडाय-उत्तयम् । श्रोदय क्ष्य स्थापन-उत्तयम् । स्थापन-विश्व-क्षय-विश्वप्र-शास्त्रा । इति स्थापन-विश्वप्रयम-राष्ट्रा । गांत्रिक ज्ञ-घडे।डूज-नीमा । मम वरनीय मनाजन मोगा ॥३२॥১৪৬२॥

পাঠান্তর

- >। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-র পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'আসাবরি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইত্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টীকা

১—৮। "ৰাডু-রাকার্পিতে"ত্যাদি। হে রাবে। वुन्धावनच ब्रह्म विनामः ভज जनोकुक जनरनाकः পখেতাৰ্থঃ ৷ কীদুশং বিলাসম্ १--ৰজু-রাজেন বসম্বেন অপিতাভোষতরলা: প্রমোদ-লহর্য্যো বিশ্বন ভ্রথা-ভূতম। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরভি মলয়ানিলে-ত্যাদিভি:। মলমানিলেন গুরুণাধ্যাপকেন শিক্ষিত-नाजा जनविष्टे-न्डा-कना उक्कनशका (चंड्यूमक्त्ने হাত্তকারিণী লভাবলিঃ নটভি নৃত্যভি। ইহাত রুক্ষা-বনে পিকতিতিঃ কোকিলকুলং মুদলং বাদয়ভি কল-नरिक्म् नव-ध्वनिमञ्करतार्थीा छातः। अक्रुत्रकः অভুরচ্চলেন রোমাঞ্চিদেহং ভক্রুলং পশ্ভতি ভঃৰ্ত্তনাদিক্ষিতি শেষঃ। অন্তত্ত-শীলা বিচিত্ৰ-চরিত্রা ভূক-ঘটা অমরপ্ত জি: গারভি ঋঞ্দশকৈ: গীতং করোতি। কেব ? মম বংশীব। ফীয়ুশী সাণ--স্মাত্নী চিরস্থারিনী শীলা কেলির্যভাঃ। পক্ষে স্নাত্নেন পদকর্ত্তা বর্ণিতা লীলা যক্তাঃ।

অমুবাদ

১—৮। হে প্রীরাধে। বসত নৃপতি কর্তৃক
ভানতানন্দ বুলাবনের বিগাস অবলোকন কর।
নগরানিল শুক্ত কর্তৃক শিকিত-নৃত্যলীলা (পুলছেকে)
উজ্জন-হান্ত-কারিনী লভাবলি নৃত্যু করিতেছে।
কোকিল-কুল (কল-নাৰছেলে) সুৰুল বাজাইতেছে
এবং (অভ্যুক্তকেলে) রোমাঞ্চিত-বেহু ভক্তৃক (নৃত্যু)
বর্ণন করিতেছে। অভ্যুক্ত হিছিল ব্যাস্থান করিতেছে।
ভক্তি শিক্তি-স্নাজন-বর্ণিক)-নীলা-বিশিষ্ট আরার্

তথা যাগ ৷১

নটবর-ভঙ্গী কাঞ্জ-রজী নাগর অভিনব নাগরি সঙ্গ। ঋতুং-পত্তি-গীত• চীত[ঃ] উমভায়ল **टिति वतन तून्सावन-त्रकः** । ফাগুয়া খেলত নওস্ক-কিশোর। রাধা-রমণ রমণি-মন-চোর ॥ঞ্ঞ ञ्च वित्रुम्प-করে কর মণ্ডিত মণ্ডলি মণ্ডলি মাঝাই মাঝ। নাচত নারিগণ্ ঘন পরিরম্ভণ **চুचन-नूर्यन न्हेरद्रः-द्राक** ॥ কান্যু-পরশ-রসে অবশ্য রম্পিগ্র অঙ্গে অঞ্চে মিলি ও কাঁপি রহু। পুরল সবন্ত মনোরথ মনভব১৪ মোহন শ্ গোবিন্দদাস-পত্ত ॥৪৩॥১৪৬৭॥

পাঠাস্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০২০ ও প-র পুথির ৩০।০ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝড়ু ঝড়ু' ক। ৩। 'গীডি' ক, ঝ, ष, চ, প-র-সা। ৪। 'চিড' ক, প-র-সা। ৫। 'হেরি' ইডাদি হুলে 'হ্নির বুন্দাবন মদনতরফে' প-র। ৬। 'নন্দাপ-র। ৭। 'মগুলি মপুলে' ঝ; 'বঙাল মপুলি' প-র। ৮। 'নারবি' প-র। ১০। 'গারব' প-র। ১০। 'গারব' প-র। ১০। 'আলস' প-র। ১৪। 'আলস' প-র। ১০। 'বেলি' প-র। ১৪। 'বনোভব' ক; 'মন-মধ' খ। ১৫। 'গাওড' প-র।

পুনশ্চ मिनाखरत ।

তথা রাখ ৷১

ঋড়-পতি রাধামাধ্য সঙ্গ। বিবিধ বিলাস হোরি-রস-রঙ্গিঞ্চ আরিরে অরুণ গুহুঁ অফ ॥এং॥

অরুণিত খ্যাম-রাইক প্রভিবিম্ব লাগি। ভরমহি আন त्रमणि मटन मानिहा মানিনি ভেলি বিরাগী। রসিক স্থনাগর রাইক মানং ছেরি মিনতি করত কর জোরি। পীত বসন গলে সাধই পদতলে রাই রহল মুধ মোড়ি । প্রিয়-সহচরি যত কভয়ে বুৰায়ভ মুখ সঞ্জে কাছে বিপরীত। থিজ হরিদাস কহত কাহে বোধলি প্রেমক ঐছে চরীত ।৪৪।১৪৬৮।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০২১ সংখ্যক পদ। ২। 'রাইক মান' হলে 'বিমুখি' দ; 'রাই মান' চ। ৩। 'চরিড' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ।১

এ ধনি মানিনি মান নিবারোং।
আবিরে অরুণ শ্যাম- অজ-মুকুর পর
নিজ প্রতিবিম্ব নেহারোণ॥
ভূত এক রমণি- শিরোমণি রসবঙি
কৌনং ঐছে জগ মাহ।
ভোহারি সমুখে খ্যাম সঞ্চে বিলম্ব

"কৈছন রস-নিরবাহ॥
ঐছন সহচরি- বচন আনুং মুর্বি
সরমে ভরমেণ মুর্ব কেরি।
ইবভ হানি মনে আনুং ব্রেক্তি

পুন সব জন খেলিও করয়ে বিনোদ কেলি
পিচকারি করি নিজ হাতে।
বিজ হরিদাস আবির বোগায়ভ
সকল স্থাগণ সাথে ॥৪৫॥১৪৬১॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিবার' ক। ৩। 'নেহার' ক। ৪। 'কোন'
ক, খ, প-র-সা। ৫। 'সরমে ধরমে' ক।
৬। 'মিলি' চ। ৭। 'করি নিঅ' হলে 'করি'
ক, 'করি লেরল' ম। ৮। 'চণ্ডীদাস' ক।
চণ্ডীদাসের রচিত নিঃসন্দিশ্ধ ব্রন্ধ-বোলি পদ পাওরা
মার নাই এবং খ, ম, চ ও প-র-সা পুথিভলিতে
'চণ্ডীদাস' হলে 'হরিদাস' পাঠ আচে,—এই উভরবিধ কারণে আমরা এই পদটি হিল্ল হরিদাসের রচিত
বলিরাই অমুমান করি।

दशक 13

ফাঞ্ড থেলত বর নাগর-রায়।
রাধা রজিণি বছবিধ গারণ ॥
হাসি হাসি স্থান্দরি মনমথ-রজে।
হাসি হাসি স্থান্দরি মনমথ-রজে।
হাসে ধসধস তমু আধ আধ হেরিং।
চুলা চন্দন দুই বেরি বেরি ॥
চপল নাগর কুচ পরশল খোরি।
চমকি চমকি মুখ রহলিছ গোরি ॥
হাকি দেওল হরি লোচন-ওরা।
মুক্তিণ ধনি সূহ লোচন-কোরণ।
অধ্বুহি চুক্তম কল্প তব কান্ত্রণ।
গোবিশ্বহাস সূহ ক গুণ গান ॥৪৬॥১৪৭০॥

বিধ গার' ছলে 'কাওরা থেলার' প-র। ৪। 'কাও लहें देखानि क्रम 'काक बावित महें शीवित-অকে' প-র। ৫। 'রুসে ধসধস' ইন্ড্যাদি পংক্তি-षद्र भ-त्र श्रविष्ठ नाहे। का^{्र} कमन **जल् ४।** १। 'लाहत्न (बाव' क. थ: 'लाहत्न (बाव' व. ह। বোধ হয়, লিপিকর-ভ্রমে কোন পুথিতে 'রোর' শক্ষের 'রো' বর্ণটি 'ৰো' লিখিত হগুয়ার, উহাই পরে কোন পণ্ডিতম্বত লিপিকর-কর্ত্তক 'জো'-রূপে সংশোধিত (?) হইয়া 'লোচনে জোর' এই অমুভ পাঠের স্থাট করিয়াছে। ব**ন্ধত: চকুর সন্নিকটে কাও দিলে** অভাবতই চকু মুক্তিত হয় ; স্বতরাং চকু-মুদ্রণের অব-সরে মুখ-চুখনের উদ্দেশ্তে রসিকচুড়ামণি প্রীকৃষ্ণ কর্ত্তৃক জীরাধার নরন-প্রান্তে কাণ্ড-চূর্ণ নিক্ষিপ্ত হওয়াই স্থপত। 'লোচনে', ভাহাভেও আবার 'লোরে' কাল্ড-নিক্ষেপ বর্করোচিত কার্য্য; পুক্রবোত্তম ঞীক্লফে কোনৱণেই উহা সম্ভবপর হইতে পারে না। ৮। 'मूनन' क, ४, ४, ५, ६; '(मानन' श-ब-ना। a। 'ठरकात' क; 'ठरकात' পाঠে ছ**रकाखन ग**रहे এবং এ স্থলে 'চকোর' শব্দ প্রয়োগেরও কোন সার্থ-কভাদেখা যায় না। ১০। 'অধরতি' ইডার্ফি श्रान 'व्यथत्रवि हृपन कक्ष कछ कान' क, थ, ह, প-র-সা; 'অধর চুখন তহি করলছি কান' প-র।

७व शंगांगि। अर्थांग्री।>

রাধা প্যারি সহ খেলত নন্দত্লাল।
অরুণিত মরকত অরুণ^২ হেমযুত
ঐছন মুরতি রসাল।এ॥
অরুণাশ্বর বর শোহে⁴ ক্লেবর

অক্লণ মোডি মণি-মাল।

নটপটি পাগ উপরে শিখি-চন্দ্রক' উচুনি রক্ত গোলাল ॥

्री हिंद्या ने का ने विश्व २०२० ७ वना वृत्ति। १०१८ स्थाप स्थाप ११ ११ वर्ग विश्व ११ ०। वर्ग পিচকা^ৰ রজে পাখাল। অক্লপিত যুবতী-জাল ॥ অরুণিত ভরুকুল অকণ লভা ফল অরুণ ভ্রমরগণ ভাল। অরুণিত শারী ত্রক শিখি কোকিল উদ্ধব ভণিত রসাল ॥৪৭।১৪৭১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০২৪ সংখ্যক পদ। २। 'बक्क विज' क, ब, ह, भ-त्र-मा। ७। 'भारक' का 81 'ठिक्किक' थ, भ-त्र-मा। ८। 'भिठ-कांत्रि' क, थ, প-त्र-मा ।

তেওট মারুর।১

বৃন্দাবনে ধুম পড়ল রজ হোরি। নওল কিলোর ফাগু-রঙ্গে রঙ্গিমং রলিণি নওল কিশোরি ৷ধ্রু সবছ সখিগণ মেলি করে লেই ভরি পিচকারি। স্থন্দর-মূখ ছেরি ছেরি সমুধহি ভাগ-পুন পুন দেওত ভারি ৷ क्रवन मथा गरम রোখি॰ শ্যাম পুন र्हित स्मात मूथ शाति। পিচকা॰ রক্ত ' অজে ঘন ব্যৱখত মোছত আঁখি মুখ মোরি। সহচর সহচরি मपूकि मपूकि खन्नि विविध शक्त क्षण (चात्रिः। ৰেয়ত বোগাই রাই শুনি খেলত **छष्यका**त्र मन ८७।ति ।८৮१>८९२।

পাঠান্তর ় ্

>। ইহা প-র-সাপুশির ২০২৫ সংখ্যক পদ। অরুণিত যমুনা- পুলিন কুঞ্জবন । বিওল' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির হলে ক পুথির পঠ, रथा--'कांश तरन त्रनिम त्रनिम नशन किरमात्री' क्। ७। 'दबारब' क, ह। ८। 'ख्यकी' र्श-त-मा। ৫। 'शिठक' का ७। 'त्रदक्' ह। १। 'बुइड' का ৮। 'बहेकि बहेकि' थुः 'মুটকি মুটকি' ক, চ, প-র-সা। ৯। 'ঝোরি' **ধ,** চ, প-র-সা।

> ७वा त्रात्र ।> দেখ শ্যাম গোরি সখি মেলি। আবিরে অক্তণ পিচকারি খন হোয়ল ভূমুলং খেলি ৷ধ্ৰু৷ স্থা স্থাল করিয়া সঞ্চ। জয় জয় বলি দেই করতালি হাসি হাসি রস-রঞ্জ 🛚 मधी ननिषा विमाधा जात्थ। হাসি খল খল ବିତମୁଁ ବିତମୁଁ বলে পিচকারি হাতে ॥ রস-শেখর রসিকা নারি। শ্রম-জন হুত্ বয়ন ভরণ এ উদ্ধৰ বলিহারি ॥৪৯॥১৪৭৩॥ পাঠান্তর)। देश श-त-मा श्रुवित २०१७ मरवाक श्रवा

> > - CI PRINT

२। 'कृष्ण' ह। । 'नरक' भ-त्र-ना । हें । 'ब्रह्म'

প-র-সা।

শ্ৰ্ম-জলে ৪র ৪র ভীগলং জুলুণ্ডিম বাস্।

जानक करहे ना वात्र। াচামর করে কোই वीक्न बीक्र কোই বারি লেই ধায় ১৫॥ তামুল বোগায়ই চরণ পাধালই কোই মোছায়ই ঘাম। ঐছন মূহাঁ তমু শিভল• করল জমু क्रवनम् हल्लक-माम । আর সহচরিগণে वद्यविध (मवरन ध्यम-कन कर्यलहिं पुत्र। ছহু মুখ হেরই আনন্দ-সারুরে গোবর্জন হিয়া পুর ॥१०॥১৪৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০২৭ সংখ্যক প্র। ২। ভিগল ক, চ, প-র-সা। ৩। 'শীতল'ক।

ভত্তাসুরাগাভিসারোৎকণ্ঠা।

তথা রাগ।>

কি করব এ সথি মন্দির মাহ।

ইহ মধু-যামিনি সব অজ-কামিনি
বুন্দা-বিপিনহি যাহ।

হোরীং-রজ- তরজিত শ্রামর

বিহরই কালিন্দি-তীর।

গোডরি সোডরি মন করত উচাটন
বজুনে না হোর্ড থীরণ।

বিহরত সব বজুই ডেয়ার।

স্ক্রমর ক্রমর

युग-मन हम्मन

কুমুমণ হারগণ

বভনে ঝাঁপি লেছ হাত। ভামুল কপুরযুত পেই চলহ ক্রভ গোবৰ্জন চলু সাধ ৪৫১৪১৪৭৫৪

পঠিবর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০২৮ সংখ্যক পছ।
২। 'হোরি' ক, খ, চ; 'হেরি হেরি' প-র-সা।
৩। 'থির' ক, প-র-সা। ৪। 'কুছ্ম' ক।
৫। 'কপুরবুথ' প-র-সা।

काटमार ।>

অভূ-পতি-বামিনি কালিন্দি-বতার।
বিকসিত ফুলচর কুঞ্জ-কুটার ।
কোকিল-কুলণ পঞ্চম করু গান।
শুঞ্জরি চঞ্চরি করু মধু-পান ॥
চান্দনি রক্তনি উলোরল তার্গ।
শুমলর পবন বহুই মৃতু বার ॥
ঐছন সময়ে বিহরে মরু নাহ।
কি করব অব হাম মন্দির মাহ ॥
সো স্থাং যবণ মরু উপজরে চীতা।
শুভি উতক্তিত না মানরে তীত ॥
কতরে মনোরথ মন মাহা হোর।
বৈহন রক্তসে মিলব পিরা মোর ॥
শুরিতে চলহ স্থি পূরব আশ ।
সলেহিণ্চলবণ গোবর্জন মান ॥৫২॥১৪৭৩॥

পাঠান্তর

>। देश भ-त-ना श्रीत २०२० नरपाक भए।
२। 'कानिनी' ह, भ-त-ना। ०। 'गभ' भ-त-ना।
ह। 'कात' भ-त-ना। ०। 'त्य' क, ब, ह, भ-त-ना।
७। 'नव' घ। १। 'हिक' क, भ-त-ना। ०। 'नटक'
क, ब, ह। ०। 'हम् क्य' व; 'हमक्रि'

कांटमांक बम्हा ।>

পক্ষা স্থি সহ আন্তল শূন্লু ^২ খেলব নাহক সাধ।

বংশীবট-ভট মীলন° ভেল বুৰি

কাপ্ত-যন্ত্র করি হাত॥

সঞ্জনি ইছ দারুণ পর্মাদ।

ঐছন ভাতি রচন³ করি চল স্থি যাই করিয়ে স্ব বাদ ॥ধ্রঃ

ভরা শ্রামল- রা সহং মীলব

যুথে যুথে এক হোই।

সভে মিলি ফাণ্ড- তিমির করি বেঢ়ব লখই না পারই কোই॥

ঐছনে কামু লেই সভে আওব ভুরিভহি নিধুবন পাশ।

গোবৰ্জন কহ আনন্দে খেলছা পদ্মা পাউদ নৈরাশ ॥৫৩॥১৪৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০০ সংখ্যক পদ।
২। 'শুনলু' ক, চ; 'শুনল' প-র-সা। ৩। 'মিলন'
ক, খ, প-র-সা। ৪। 'বচন' ক। ৫। 'সহজই'
প-র-সা। ৬। 'মিলব' ক, খ, প-র-সা। ৭। 'খেলই'
ক। ৮। 'লাউ' চ, প র-সা।

টাকা

>— 9। "পদ্মা" ইত্যাদি। শ্রীবাধার সধী দলিতা
বলিতেছেন,—ভনিতে পাইলাম, পদ্মা (ভাঁহার)
সধীর (চন্তাবলীর) সহিত কাশু-বন্ধ অর্থাৎ পিচন্
কারী হাতে লইবা আদিরাছে; (মনের বাধা এই
বে) লাথ শ্রীকৃষ্ণের সহিত (কন্ধ)-জীড়া করিবে;
বোধ হর, (এত ক্ষপে) বংশীবটের নিকটন্থ (বমুনা)প্রলিবে (শ্রীকৃষ্ণের সহিত ভাঁহারিপের) বিশন হইব।
বেশা বিপর্বা চল, ব্রীক্ষণ বোটনা ভরিরা বাই,
(বাহাতে) সকল পঞ্জারিতে পারি।

৮—১১। "তজ্ৰা" ইড্যাবি। (আমরা আ আ বুধ সহ বাইরা) তজ্ঞা ও ভামলা (বুংপগরীবরের) সহিত দল্মিলত হইব (এবং) বুংগ বুংগ (মিলিরা) এক হইরা, সকলে মিলিরা ফাওর অন্ধনার করিবা (শ্রীকৃঞ্চকে) বেটিত করিব—(বেন) কেহই (তাঁহাকে) কল্য করিতে না পারে।

১২—১৫। "এছনে" ইত্যাদি। ঐ প্রকারে
প্রীকৃষ্ণকে লইরা সকলে নিধুবনের নিকট লইরা
আসিব; (প্রীরাধার অন্তত্ম সধী-স্থানীর) গোবর্জন
দাস কহিতেছেন—ভোমরা (প্রভাবিত প্রশানীতে)
আনন্দে (ফ্ড)-ক্রীড়া কর,—(চন্দ্রাবদীর সধী)
পল্লা নৈরাক্ত প্রাপ্ত হউক।

वैश्वात ।>

মধুর শ্রীরুন্দাবনে অতু-পতি বিহরণে
তরু লভা প্রফুল্লিভ সব।
ফল ফুলে নম্র ডাল পুম্পোছান-শোভাই ভাল
কোকিল-শুমর-শিধি-রব॥

হোরি-রজে উনমত নানা বস্ত্র° চমৎক্ষত -গার বার বিলসরে শ্রাম।

রাই নিজ গৃহে থাকি অনুরাগে ওগমণি গমনঃ-ইচ্ছুক সোই ঠান ॥

সধী সজে বিনোদিনী কান্তি জিনি সোদামিনী ভাহে চিত্ৰ অক্লণ বসন।

বৈছে চলে পূৰ্ণচন্ত্ৰ সতে লৈয়া ভাষাক্ৰম ভৈছে ধৰী বায় কুঞ্চবন ॥

বছবিধ বন্ধ সঞ্চে কুছুম আবির রঞ্জে নৃত্য গীতে সভার উল্লাস্থ ।

भिनम नागत गरक वात्रक्षिमा (यमा तरक मित्रवर त्यावर्कन वार्ग स्ट्राइडियान

ा है। य-प्र-मा श्रीवर १-७२ मा विकास

প-র-সা। ৩। 'বাইতে' ব। ৫। 'আদে' ক। ৩। 'নৃত্যসীতে' ইত্যাদি পংক্তিবর ক পুৰি ও তদমু-বারী বটডলার মুক্তিত পুস্ততে পরিত্যক্ত কইয়াছে।

বিহুপড়া ৷>

বিহরে শ্রাম নবিনং কাম নবিনং বৃদ্দা-বিপিন ধাম সজে নাবন নাগরিগণ

নব ঋতু-পতি-রাভিয়া।
নবিন গান নবিন তান
নবিন নবিন ধরই মান
নোতুন গভি নৃভ্যভি অভি

নবিন শনবিন ও ভাতিয়া। ইয়ত সরস মধুর ভাষ

সরসে পরশে করু বিলাস রসবভি ধনি রস-শিরোমণি

সরস জ্রমর-পাঁডিয়া ॥ মধুর কেলি মধুর মেলি মধুর মধুর করত্তে খেলি মধুর>° হুবাড>৽ মাবে মধুর

শ্যাসর>ং-গোরি-কাঁডিরা।
কিবা সে ছক্ ক>৽ বদন-ইন্দু
ভাতে প্রাম-জল বিন্দু বিন্দু
আনলে মগন গোবৰ্জন>৽

বেৰিয়া ভৰল>দ হাতিয়া ৷৫৫॥১৪৭৯॥

🐃 ি পাঠান্তর

३६ देश भएना पृथित १००२ मधाय शह। २ अ. १ सिरीक केंद्र महिल्लाक सम्बाद

ष्टि। ১১। 'क्वन' क। ১২। 'नक्क' ह, প-র-সা। ১৩। 'स्थूत' ष। ১৪। 'सूत्रिक' প-র-সা। ১৫। 'स्रोस' क। ১৬। 'स्टोहरू' ष। ১৭। 'होत्र (গাবর্জন' क, थ, ह, প-র-সা। ১৮। 'ভরব' ক, খ।

रम्ख । >

যুথহি যুথ রমণিগণ মাঝ।
বিহরইং নাগরি নাগর-রাজ ॥
বরিখত চন্দন-কুরুম-পক।
নাচত গাওত পরম° নিশক ॥
ঝাতু-পতি রয়নি উজোরল চন্দ।
পরিমল ভরি বহু মারুত মন্দ ॥
বাওত কত কত বস্তু রসাল।
কত কত্ত ভাতি ধরই করেং তাল ॥
সারি শুক শিখি-কুল কেকেং তাল ॥
বাগরতে মধুকর মধুকরি ধাব ॥
অপরুপ তুহুঁ জন অত্যু-বিলাস।
গোবর্জন হৈরি বাঢ়েয়ে উলাস ॥৫৬॥১৪৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিহররে' থ, প-র-সা। ৩। 'পর্ছ' ক। ৩। 'ধররে' ক। ৫। 'কর'থ। ৬। 'শিথি' প-র-সা।

> অথ বসন্ত-বিহার প্রকারান্তর। ভত্ত শ্রিমদেগারচন্দ্র।

> > नगढ 15

মধু-ঋতু বিহরই পৌর কিশোর। সন্নাধন-মুখ ধেরি আনন্দে নরহরি পুরুষ্কভ্রেমে ভেস ভোর।

ৰবিনং লভা নৰ পল্লৰ ভক্তকুল मलन नवदोश थाम । বত্বত মধুকর কুল কুত্ৰমচন্ন সুখদ এ॰ ৰাজু-পতি নাম । গহন অভি স্থললিভ মুকুলিভ চূভ-. কোকিল-কাকলি-বাব। স্থাপুনি-ভীরঃ সমীর গন্ধিত ষরে ষরে মঞ্জ গাব। মনমথ রাজ সাজ লেই ফীরয়েণ বন,-ফুল ফল অতি শোভা। সময় বসস্থ নদিয়া-পুর স্থন্দরণ **উक्षरकाम-मन-(माञ्चा १८९१) ८५**३३

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৪ সংখ্যক পদ।
২। 'নবীন'ক। ৩। 'স্থদরে' ধ; 'স্থদর'
ক, ব, চ, প-র-সা। 'স্থদর' বা 'স্থদরে' কোন
পাঠেই ভাল অর্থ হর না; 'স্থদ এ' শব্দ ছুইটিই
কোন লিপিকর কর্তৃক 'প্রথম রে' নিথিত হওয়ার
এবং উভর শব্দের মধ্যের ফাঁকটি কোন লিপিকর
কর্তৃক পরিত্যক্ত হওয়ার এই পাঠ-বিল্লাটের ক্ষৃষ্টি
করিয়াছে, অনুমান হয়। ৪। 'তীরে' ক, ধ,
প-র-সা। ৫। 'বেই কাররে' হুলে 'বেই ক্ষিররে'
ক, চ, 'কররে বন' প-র-সা। ৬। 'নব' ক।
৭। 'প্র ক্ষ্মর' হুলে 'প্রন্দর' ক।

পাঠাকর

অভিনার।

रामने ।>

সালল রসবতি সহচরি সল।
মনস্থ-সমর মনহি মন রল।
কালিজি-কুলে নিকুঞ্জক মাধা।
রল-ভূমি অতি অুগলিক সালা।

শকু-পতি চমু-পতিং নৰ পরবেশ।
আওল বিপিনে রচন করি বেশ ।
মদন-কুঞ্জ মাহা শুদা রপ-বীর।
সাজলি তহিঁ ধনি সমরে স্থীর ।
উচনে হেরইতে কামুক পাল।
কহইতে আওল বলরাম দাস ।৫৮॥১৪৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২**০৩৫ সংখ্যক পদ।** ২। 'মৃণভি' (?) **प**; 'চুম্পভি' প-র-সা।

দুভ়াক্তিঃ বৈপরীত্যরসোচিতা যথা।

शंकात 15

যাকর মাঝ হেরি মুগ-রাজং। ভরে পৈঠল॰ शिद्धि-कव्यत्र मार्च ॥ं শুনইভে চমকিত সবহু মহল। **চরণছি সোঁপল নিজ গতি-ভল ॥** व्यानि (परे निष लाइन-प्रकी। বন পরবেশল সবছ কুরঙ্গী। मलन-कनम भट्यांस्त ट्यांत्र। তঁহি নব পল্লব অধর উজোর। ट्टोनिट्म॰ मधुकत मळ छहात । ঋতু-পতি বোধে**ণ ভেল⁹ আঞ্চ**রার ॥ একলি চচুলি মনোরখ সাহ। দৃচ্ করি কঞুক কয়ল সমাহ। । অব কি করৰ হরি করছ বিচারিণা ভূরা পর তৃশ্বি নাজন ধারিণ । এই। **ट्या**ठन-वाटन कन्नम भन्नमान । मैंन विभ नवह उपन व्यक्तियात 🛊 🧻 वर करत भवना कुछुवक शामन जन अति असु विशा अस्तरिक स्थापन কুন্ম-বিশিধ যব লেওব হাত।
পড়ব কুন্ম-শর বজন-বিঘাচ> ॥
বিধুমুখি নিধুবন> গ-সমরে স্থার।
যতনে পঠারল> শভু-পতি বীর॥
সোই> করব তহিঁ বীরক দাপ> ।
তাকর কোন সহব পরতাপ॥
সো যব আওব রক্ষক ঠাম।
কছ বলরাম কি হয়ে পরিণাম> ॥৫৯॥১৪৮৩॥

পাঠান্তর

)। हेहां भ-त-मा भूथिय २००७ **४०** भ-त भूथिय >७।>८ मध्याक भए। ২। 'মুগকুলরাজ' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'গৈঠনি' ক, প-র। ৪। 'সচ-किछ' कः 'हमकरु' श-ब-गाः 'हमकरु' श-व। 'क्टोबिरन' का 'cotca' 4 I 'পহিল' প-র। इरल 'ठएल वरन मरनामध' भ-त। ३। 'कति' ইভ্যাদি হলে 'কঞুক তহি কয়লি' ইভ্যাদি প-র। ১ । 'विচার' প-র-সা। ১১। 'ধাড়ি' थ ; 'ধার' প-র-সা। ১২। 'কুত্বয' ক, ধ। ১৩। 'নিঘাত' भ-ता) । 'मिधुवान' च, हा) । 'शांखन' ১৭। 'সোই' क् था ७७। '(मा मर' घा ইভ্যাদি পংক্তিবর প-র পুথিতে নাই। ১৮। 'কি हत्त भविनाम' ऋत्व कहिल भवनाम' भ-व-मा।

विका

১—২৬। (শ্রীরাধার দৃতী শ্রীক্তকের নিকট বাইরা শ্রীরাধার বিপরীত-সভোগেছন ইলিতে ব্যক্ত করিতেছেন) "অব" ইত্যাবি। হে হরি! এখন কি করিবে,—বিচার করিবা হির কয়। প্রকারী রাধা অবধারণ করিবা ভোবার উপর অর্থাৎ উল্লেখ্যে (বৃদ্ধে) সাঞ্জিরাছেন। লা (শ্রীরাধার পরাক্রম কিরপ, তাহাই ব্লিডেছেন) 'বাক্সম' ইত্যাবি। বালার মধ্যনেশ করিবা, শ্রীনাক্স করে বিরিক্সমর-মধ্যে প্রবেশ শ্রীকার, (বে শ্রীরাধার কার্ডা) শ্রীবারার বাত্য-

नकन चाननामित्रव शिल-छनी छाहात हवेरने नव-ৰ্পণ করিল অর্থাৎ গতি-ভন্নী প্রীরাধার চরণে অর্পণ कतिया, छांशांत भवन गरेन : आन्नाहिरन्द अवस-छक्षी আনিয়া দিয়া অৰ্থাৎ বাঁচার নরনে সম্পূৰ্ণ করিয়া হরিণী সকল (বৈরাগ্য হেডু) বনে প্রাবেশ করিল : (বাঁহার) কুচ-যুগল (মদন-নুপভির) মঞ্ল-ক্লস (এবং) ভাহাতে উজ্জ্বল অর্থাৎ আরক্তিম অধ্য নব-পলব-অরপ; মধুকরগণ (বাঁহার) চড়জিগে (রণ-অন্নের) মত্র উচ্চারণ করিতেছে (এবং) ঋতু-রাজ-রূপ বোদা (যাঁহার) আগে আগে অগ্রসর হুইভেছে; (সেই শ্রীরাধা) মৃদ করিয়া কঞ্ক (এক আর্থে---काँठ्रान, अन्न अर्थ-वर्ष) वद्यन कतिया (वीवश्रम অভের সাহায্য-নিরপেক হইরা) একাকিনী সন-রূপ 'রবে আরোহণ করিয়াছেন। (শ্রীরাধার বৃ**দ্ধ-প্রাণানী** বর্ণন করিতেছেন) শ্রীরাধা-নয়ন-বাণে (আকাশ) भंत-कानशूर्व कविरनन-- एम पिक् **मध्यहे चक्का**त **इरेग। (७िनि) यथन भूण-यम् कत्रयाता न्यार्य** করিলেন, তথন হইতে আমার হাদর ধর ধর করিয়া কাঁপিতেছে। (ভিনি) বধন পুশা-শর হাতে লই-বেন, (তথন) পুশা-শর বস্ত্র-নির্ঘাত অরপ পতিত विधुम्बी (निष्क्रे) त्रजि-बूष व्यवि-চলিত,—(ভাহাতে আবার সহার্থক্প) গড়-রাজ বীরকে (অগ্রে) পাঠ ইয়াছেন। সে সেখাৰে বীর-দর্প করিবে ; কে ভাহার প্রভাব সম্ করিবে ? তিনি অর্থাৎ সেই জীরাধা ববন (রতি-রণের) রখ-ভূমিতে আসিবেন—বলরাম কহিতেছেন, ডখন বি পরিণাম হইবে ?

> অস্থোত্তরং যথা। ধানদা।>

শুনইতে উলসিও সব অঙ্গ মোর।
ভেটব সমরে ধীর স্থি ভোর র
সঙ্গর, রক্ত জগরে মুকু আছে।
আনে ভূতু সরবি সরব হাব পাই। ৪

এ স্থি এ স্থিত তুই নাহি ডরবি। ভাষাত্তি বীরপণ দেখি কিয়ে মরবি মধ্যম निःह मङ्ग कृतक नह (काई। ত্ৰিভূবন-শোষন-মোষন হোই। ় ঋতুপত্তি-কোটি ছোটি করি ভান । यनमथ-८कांछि-मथन ग्राम कान ॥ कि করব মধুকর• মল্ল উচার। শ্যাম-ভ্ৰমৰ বাহাঁ কমলা বিহাৰ 🛚 **च्या कि कर्न देश वल-बीगा।** সহচরিগণ রণ-মুগতি-বিহীনা। किरत हिरत क्ल-थ्यू कुल्मक वान। **बिर्म म**नि-कित्रगिष्ट केवत रेमलान ॥ ভাত চাপ মঝু বিশিখ কটাখ। **ব্যরখনে জরজ**র করবহি তাক ॥ ভুজবুগ-বল্ল-পাশে করি বন্ধ। পিরব গিরায়ব । কড । করি ছন্দ ॥ (मा धनि कश्रम :या>२ कथ्यक मन्ना>०। মখর-কুপাৰে হাম করব বিভিন্নাস্থ নিরদয় অদয়-কপাটক চাপে। **লভি**ৰণ কু5-গিরি আগন প্রতাপে ॥ রণ-রখ> জখন করব অবলম্ব। যুকাৰ যুকায়ৰ করি কভ দস্ত ॥ নৰপল্লৰ জিনি অধর হুরাতে ১৭। कत्रव विश्वक त्रमन>४-विद्याटिः । **७व विम टेम्टिव कत्रद्वर- विभव्नेट** । ঐচন যুগতি করব গাম চীতে॥ मत्रवम (षष्टे (मग्रवश्र एक् भन्न(१) প্রাণ-পরাছিত সোঁপর চরণে ॥ ছুত পদ সেবন ছিথে ২ অভিলাস ২ । ৰল্মান দাস হিয়ে এ বড়ি উলাস।

15-118-81

পাঠান্তর

>। ইहा श-त-ना श्रुवित २०७० ७ श-त्रं श्रुवित 'ধানশী' হলে 'ভড়ী' 'नकर' ५, ह, भ-ब-नाः 'नकक' ৩। 'আছে' ক, খ। ইত্যাদি স্থলে 'আগে ভূহ' শব রিশবর' (🕈) ক 🕫 'আগে ডুছ সব বিসরব হাম পাছে' ধ, প-র ; 'আগে ভুত সৰ বিসরৰ মঝু পাশ' খ; 'আগে ভুত্' সরৰ সরব হাম পার্চ' প-র-সা। 'ব'-কার ও 'র'-কারের গোলযোগ ও ছেদের অভাব হেড এই পাঠ-বিভ্রাটের উৎপত্তি হইয়াছে। প-র-সা পুৰির পাঠ না পাইলে প্রকৃত পাঠ নির্দাবণ করা অসাধ্য হইত। ৫। 😘 স্থি' হলে 'রলি'ণ' প-র। ৬। 'অলিফুল' প-র। ৮। 'किउनकि' क. ४। ১। 'ভুক্ক' ইত্যাদি খলে 'ভুক্ত-বুগ পালে করব চিরা বন্ধ'প-র। ১০। 'রিবায়ড' ঘ'। ১১। 'কড্ড' >२। 'कब्रम (वा' चटन 'कब्रव वव' প-র। ১৩। 'কুঞ্জক' ধা ১৪। 'হাম' ইঙ্যাদি স্থলে 'করব হাম ভিন্না' প-র। >৬ (મનમર્થ બ-લા ১૧) >৮। 'वहन' थ। ১৯। 'तहन विशादक' প·র १ २२ । 'कामब' প-র-সা। ২৩। '58 ' ইত্যাদি কলির হুলে প-র পুথির পাঠ বধা,---

"অন্যে জন্মে পছ সেবন আগ। গোবিন্দ দাস চিতে বড়ই উল্লাস ॥"

১—২। গুনইডে" ইডাবি। (এক), জীরাধার স্থীর উজির প্রজুজেরে ক্রিডেছেন)— ভোনার স্থীর পরাজ্য গুনিবামার আমার স্কল জল হর্বোৎকুল হইরাছে; (লাবি) স্থারে গ্রীপা ডোমার স্থীর সলে স্থিতিত হুইসুঃ

०-०। "नवत" रेखानि । नक्ट्रबेव्हरू जानाव वनस्तरु जोटक । कृति जोटन जास्तर (स्थाताह সৰীর অবন্থিতি-ছলের পথ দেখাইরা) বাইবে—আনি পাঠে পাঠে বাইব।

৫—১। "এ স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি। তুনি (আমার পরিণাম ভাবিরা) তর পাইও না; আমার বীর-পণ (এই বে)—দেখিব কিংবা মরিব অর্থাৎ তোলার, স্থীর বীরত্ব একবার পরীক্ষা করিব; যদি মরি, ভাহাতেও ক্ষতি নাই।

৭—৮। "সিংহ" ইত্যাদি। (পূর্ব-পদে স্থীর
বিশিত জীরাধা কর্ত্ব সিংহ, মাতল প্রভৃতির পরাক্রের উদ্ধরে বলিতেছেন)—আমি (তোমার বর্ণিত)
সিংহ, মাতল কিংবা ক্রম—(ইহাদিগের) কোনটি
নহি, আমি অিজ্বনের শোভা ও মোহের জনক
(জীক্ষ)।

২৯—০২। "তব" ইত্যাদি। তবে যদি অর্থাৎ
পূর্ব্বোক্ত বীরত্ব করিলেও বদি দৈবে বিপরীত
(এক অর্থে—পরাক্তর; জন্ত অর্থে—বিণরীত
সন্তোগ) ঘটে,—(তাহা হটলে) আদি মনে এইক্রপ যুক্তি করিব—সর্বাত্ব দিরা তাহার শরণ লইব
এবং আমার পরাজিত (এক অর্থে—বিক্রমধারা
প্রাভূত; জন্ত অর্থে—শ্রেম্বারা বশীভূত) প্রাণ
তাহার চরণে সমর্পণ করিব।

कारमाम ।>

সাজল শ্রাম ত্রত-রণ-পথিত
করে করি কুস্ম-কামান।
সৌরতে জমরে কতর্ত কড মধুকর
জীতলং মনমধ-বাণ॥
ধনি ধনি অপক্রপ ছাল্দে।
বৈশ বিলাস স- রসময় মাধুরি
কামিনি-লোচন-কাল্দে।এল।
ত্রী চক্ষম

(a) 4# 4#4

কঙ্কণ-কিন্ধিণি **খনখন[ং] রণরণি•**রভি-রণ-বাজন বাজে।
ভ্যানদাস কর শসক-শিরোমণি

माजन तमनि-ममाटन ॥७১॥১৪৮৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০০৮ সংখ্যক পছ। ২। 'বিভল' ক, প-র-সা। ৩। 'বিচিক্স' প-র-সা। ৪। 'চরিঅ' প-র-সা। ৫। 'ঝল-ঝন'ক। ৬। 'ঝনঝনি' প-র-সা।

े विद्युष्ठी ।>

वृत्रं वृत्रं नग्रत्न नग्रत्न (अनं सिनि। লথই না পারি কলহ কিয়ে কেলি । গ্দগদ বচন কছই নাহি পারি। रिष्ठन ८२/८४॰ व्यवनै त्रह थाति ॥ ভার-ধনুয়া পর করই সন্ধান। মরমাহ হানল মনমথ-বাণ # ঋ চপতি সমতি সৈনপতিং-রাজ। আগহি ভেজন সময়ক সাজ । মুকুলিত চুত অশোক বক্দৃন । ভৈ গেল সবছ বিশিষ সমভূলা। তাহে মলয়ানিল ভেল অমুকুল। বাওই রণ-বাজন বিজকুল ॥ व्यभक्रभ उक्कृषि वेन माक्रे । रिश्वेल कुछ जन नमत-नमाज । व्यक्ति-वन-वोव >>- वयम-भवकाट्न । खात्रम जरहित क्रुवेहि दिस्होट्स^{३२} ॥ कृत्य कृत्य हुई कृत वह व इन्त । वंजनाम शोज ०८६ जागन ४५७०

ingly spel

পাঠাত্তর

>। ইহাপ-র-সা প্রবির ২০০৯ সংখ্যক পদ।

১। পারই' ক; 'পাবই' থ; 'পারে' ঘ।

০। 'ক্ষল' প-র-সা। ৪। 'রোবে' ক, এ, ঘ, চ।

৫। 'টেলপতি' খ, ঘ; 'রেনপতি' ক; 'টেনল পরি'

চ। ৩। 'মরমক' ক, খ। ৭। 'বকফ্ল' ক,

চ, প-র-সা। ৮। 'সমত্ল' ক, চ, প-র-সা।

১। 'বিলক্ল' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'রাল' থ।

১৯। 'বীরক' ক; 'বিরক' চ। ১২। 'নেহারে'

ক, চ। ১০। 'বল্ব' ক; 'বল্ব' চ।

है क

১—২। "ছব্" ইত্যাদি। (পদক্র বৃদ্ধারণে সংভাগ-দীলা বর্ণন করিতেছেন) উভরের দরনে নরনে সাক্ষাৎ হইল; (ইহা) বিবাদ, কি জীজা, গক্ষা করিতে পারি না।

৩—৪। "গদগদ" ইত্যাদি। প্রেমিক-যুগল পদ্পদ বাক্য বলিতে পারিতেছে না; বেন ক্রোধে অধীর দ্বীরা রহিরাছে। (সাদ্দিক-ভাবের ভার ক্রোধেও গদ্পদ বাক্য বহির্গত ও বাক্যক্তভ হয়)।

e—৩। "ভাঙ" ইত্যাদি। উভরে জ্র-রূপ ধছর উপর স্থান করিয়া (উভরের) মর্গে নর্থ-প্রায়ন্ত বাধ অর্থাৎ কটাক্ষ বিদ্ধ করিল।

৭—৮। "ৰভুপতি" ইভ্যাদি। নৈপ্ত-পতি-বাক অৰ্থাৎ সেনাপতি-শিরোধনি কম্পূর্ণ (নিকের অনুচর) ৰভুপতি বশতের সহিত বৃদ্ধের সক্ষা আগেই পাঠাইল।

৯—১২। "মুক্লিড" ইড্যাদি। (বুদ্রের সক্ষা
কি কি, ভাষাই বলিডেছেন) মুক্লিড চুড অর্থাৎ
চুড-মুক্ল, অনোক-পুলা, বক্ষুল—সমন্তই বাণের
ভুলা হইল; ভাষাতে মলন-প্রন অন্ত্রণ অর্থাৎ
মুদ্ধের ভঙ-প্রক হইল; বিহুলকুল (মধুর নিনাম
বারা) রথ-বাভ বালাইতে লাগিল।

२०--२०। "तिजनित" देखाति। विजन्न-वीव व्यविक-मूनरमय नवन-मन्न-मन्द वादा (जीक क्ट्रेश) नद्यवीत्रम् भवातम् कृष्टिन, (क्यि कानून বুৰ্ণনির কৌত্বন বেজু) দূর হইতে দেখিতে নাগিন।

टक्लांत्र 15

রাধানাধৰ কুঞ্জহিং পৈঠল
রতি-রণ-রঞ্চ রসালাণ।
রণ-বাজ্ঞম খন ক্রেন্সনালাণ।
স্বানী হেরি ছক্ত্^{ত্} দিঠিং ঝাঁপ।
মনমর্থ-সমরে কুস্ম-শর কো কহুণ
সোভরি সোভরি জিউ কাঁপ।
প্রথিলহি রাই নয়ন শরেণ হানল
আকুল কুঞ্জক রাজ।
ভূজযুগ-বরুণ-

নিকরণ হাদয়ক মাঝ॥
বোধলি রাই ডাহিঁ শুন হরি-উরে

কুচ-কাঞ্চন-গিরি হান।

त्मा गितिसत्र वत्र^{>3} नसंद्र विभातन विव्यालक मानिनि-मान ॥

শ্রম-ভরে ছত্ত ছত্ত অধর-মধু পিবইংং ছত্তিব^১° ছত্পরভংগ^১। ছত্ত⁶^১° গণ্ড- মুকুরে^১° নিজ ছাত তেরি^১° ভরমতি ছত্তিক ক্ল দংশ^{১৮}।

तिन्तूत परन-मुश्रम-जनार निवाधिः।

গিছ-মুকুট ভরেং - বেণি-জুকলিনি বিলুঠইং> মহি গড়ি বাউংং ম

নাতল সদনঅলক-অছুপ নাবি মান।
ভোজন নিধি-বছংশ

THE THE BETWEEN STREET

রভি-রণ ভূমুলংও পুলককুল-সর্ক খন খন মঞ্জির বোল। নিজ মদে মদন পরাভব পাওলংও কুগুল গণ্ডহি লোল। অমুখন কঙ্কণ কিছিনি কছক রভি-জয়-মজল-তুর।

মনমধ-কেছু মকর গড়িংশ যাওত গোবিন্দদাস কহ ফুরংগ ॥৬৩॥১৪৮৭॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুধির ২০৪০ ও প-র পুধির २। 'निकृत्ध' প-द्र। (तक त्रमाना' यहन 'तक त्रमान' भ-त-मा; 8। 'बाना' भ-द-मा। e। '(मारू' १-त-मा। ७। 'मिर्फ' प। १। 'क्ह' का छ। भिन्ने या ३। (धनि/ क. ४, १५त्र) ol 'ङ्क्टि' क्.स्,स्, हा ১১। 'सब' श-बा **>२। 'शैवहें' थ, यः 'शिवि शिवि' श-दा। ১8। 'भद्रम्'रम' भद्र।** ১৩। 'পুন' প-র। be। 'हर्ट् कन' श-त्र । >७। 'बुक्त' भ-त्र। ১৭। 'নিজ ছাত হেরি' গুলে 'বেরি ভরমহি' ष, भ-त्र ; 'निष हारे (रुति' भ-त-भा। १४। 'छत्र-यहि' देखादि चरन 'निक हार (रति इह दर्रम' य, প-म । ১৯। 'निका**ख'** भ-म-गाः 'निवाख' भ-म। ২০। 'ভরে' প-র-সা। ২১। 'বিপ্লিড' প-র। **६२। 'काक' शं-त्र-शाः, 'वाफ' श-त्र । २०। 'निशफ्'** र्भ-मा २८। 'तीयकत्र' स्, स्, हः 'तीय' श-मा २८। 'हर्स' नाहि' चटन 'किह्नरे ना' न-त्र। २७। 'त्रप क्रमुन' स्टन 'ब्रटन क्रूनन' श-व । भ-ता रेका 'बिक' वा २»। 'सूब' क, 5,

71

प्रवासक्ताः विश्वास्ति । (इस् स्टेस्ट

নধী অন্ত সধীকে বলিভেছেন) শ্রীরাধাক্তক ইতিরবের রল-ভূমিখরণ রসাল অর্থাৎ মনোহর নিক্তের
প্রবেশ করিল; কোকিলের খন খন কল-ধ্যনি রপু
বাভ (হইল); মধুকর-শ্রেণী (বংশীর ভার) বভার
দিতেতে।

e—१। "সন্ধনী" ইত্যাদি। হে স্থি । (শ্রীরাধাকুন্ধের রতি-বৃদ্ধ) দেখিরা দেখিরা (আমার) ছই চন্দ্র্
(ভরে আপনা-আপনি) সুদ্রিত হইতেছে। কে
বলে কন্দর্প-বৃদ্ধে (অ্কোমল) পুতামর বাণ ।
(সেই ভীবণ মুদ্ধ) শ্ররণ করিরা করিরা আমার প্রাণ
কাঁপিতেছে।

৮—>>। "পহিলহি" ইত্যাদি। (স্থী মুদ্ধ-প্রণা) বর্ণন করিয়া কহিতেছেন) প্রথমেই প্রীরাধা (প্রীকৃষ্ণকে) নরন-পর দারা বিদ্ধ করিল; (তাইাতে) কুম্ব-বিহারী প্রীকৃষ্ণ অহিন্ন হইরা (নিজের) ভূষাযুগলরূপ বক্লপের পাশ-অল্ল দারা (প্রীরাধাকে)
ধরিয়া (নিজের) কঠিন বক্ষের মধ্যে বাদ্ধিরা
বাধিল।

তং—তং। "অমুখণ" ইত্যাদি। (বদি
পূর্ব্বোক্ত অবহা বানাও কাহার কর, কাহার পরাবার
বাটল, তাহাতে কোন সন্দেহ থাকে, সেই বক্ত)
স্থী-ছানীর গোবিক্ষদাস স্পষ্ট করিয়া বলিতেছেন
বে, (রতি-রুণিণী শ্রীরাধার) কছণ ও কিবিধী
(তাহার) বৃদ্ধ-অরহতক মাললিক ছুবী-বাজের ভার
অবিরত বছার দিতেছে; (কম্মপ-ক্রণী শ্রীক্রকের
পরাক্ষর হুচিত করিয়া) মকর-বাহন মন্মধের ধ্যবাদ
ক্রপ (শ্রীক্রকের কর্ণ-ছিত মকর-ক্রওলের) বক্ষর
(ভুতলে) গড়াগড়ি বাইতেছে।

क्यां प्राप्त ।

রাধা মাধব কুঞ্জ-গৃহে।
ধ্যেইতে রূপ মধন-মন মোহে।
ছুর্ম জন বৈঠি কংছে রূপ-ভার।
আন-মাধন দুর্ম ক্ষেপ্ত ভিপ্তা ছুদ্ধ বাদ্ধ ।
১৯৪১ চন্দ্র

পাঠান্তৰ

>। 'ৰয়বাস' ক, ৰ, চ। এই পদের বাকি অংশ কোন পুৰিতেই পাওয়া বায় নাই।

व्यथ भूनम्ड मिनांखरत यथा।

वमस्य ।:

ভক্স ভক্স নব কিশ্লের বন লাগি।
কুম্ম-ভরে কত অননত শাধি।
ভহিঁ শুক শারিণি কোকিল বোল।
কুঞ্ল নিকুঞ্ল ভ্রমর করু রোল।
অপরূপ শ্রীরুন্দাবন মাঝ।
বড় শ্রু সলে বসন্ত শ্রু-রাজ।
বিক্সিভ কুবলয় কমল কদম।
মাধবি মালভি মিলিভ রুলম্বং।
কাই। কাই। দার্হরি উন্মত গান।
কাই। কাই। চাতক পিউ পিউ ফুর।
কাই। কাই। ভাক্র ভন্মত নাচয়ে মউর॥
গোবিন্দাস কহ অপরূপ ভাতি।
চৌদিকে বেঢ়ল কুম্মক পাঁভি। ৬৫॥১৪৮৯॥

পঠিক্তির

১। ইবা প-র-সা পুথির ২০৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলিড স্কলব' চ হলে 'মিলি তক্ষ লব' ক, ম;
'ভক্ষ লভা সথ' থ। চ পুথির পাঠ ব্যতীত অক্ষান্ত
পাঠে কোন অর্থ হর না; অসতর্ক লিলিকর কর্ত্বক
অবথা প্রজেব হওরার 'বিলিত রুলব' পাঠই 'মিলি
ভক্ষ লথ' এই অমুভ পাঠে পরিণভ হইরাছে।
'রোলব' শব্দের 'রো' অক্ষান্ত লঘু-বর্ণ-রূপে এ হলে
ব্যবহৃত হওরার, সকল পুথিতেই 'রো' হলে 'ক'
লিখিত হইরাছে; স্কভরাং প্রক্ষত সংস্কৃত শক্ষি
'রোলব' হইলেও অপ্রথশ 'ক্ষণব' শক্ষই মূলে স্বীচীন বলিরা শুরীভ হইন।

টীকা

>---- । "তক তক" ইত্যাদি। বনে তক তক অধাৎ প্রতি-তক্তেই নবীন পর্য লগ্ন অর্থাৎ উত্পত্ত এবং কত বৃক্ষ পৃষ্ণাতরে অবনত হইরাছে।

৭—৮। "বিক্সিড" ইড্যাদি। (বসজের সহিত্ বড়্প্রুর একল আবিজীব-স্চক) প্রমর-বৃক্ত নীলোৎপল, পল্ল, কদধ, বাধবী ও মাল্ডী বিক্সিড হইল।

পঠমঞ্জনী (১

কুত্বম-ভরে নৰ পল্লব দোল।
মধু পিৰি মধুকরি মধুকর রোলং ॥
ভাহে নব কোকিল পঞ্চম গান্ধ।
ছক্ত জন আরতি চন্দন-বার ॥
পুনমিক রাতি মোহন ঋতু-রাজ।
বৈদগধি বিদগধ মিলল সমাল ॥
নাই মালমণি বরণ হঠাম।
রাই মুকুর কাঞ্চন দশবান ॥
দৌহে দোঁহা হেরইভে ছক্ত ভেল ভোরি।
রাই ভেল শ্যাম শ্যামণ ভেল গোরি ॥
আলিজন করইভে উপজল হাস।
ও ক্লপ বলিহারি বলরাম দাস ॥১৬॥১৪৯০॥

পঠিবিত

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৪২ সংখ্যক পদ। ২। 'বোদ' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'বোহ' খঃ 'বোহে' প-র-সা। ৩। 'ঞানদ' খ।

Bet

ছহ বন ইত্যাদি। চক্ষর-বাহতে অধীৎ।
চক্ষরবুলোগগলিত নল্যাচনের বায়্বায়া শ্রীয়াধা
ক্ষেত্র আরতি অধীৎ নল্য আয়তির প্রন-ব্যক্ষর
(কইতেছে)।

৭—১০। "নাহ" ইড্যাদি। নাৰ জীকুক নীনকাত নৰিত্ৰ কৰেই ভাষ ক্ষমত্ব ও জীয়াৰা দিবল বশবান অৰ্ণের বর্ণণ-শরণ; উভবে উভরকে দেখিবা-মান্ত উভবেই আন্ত ইইল; (কেন না, শ্রীরাধার পীড অকে শ্রীক্তকের নীল অল-কান্তি প্রতিবিভিত হইরা নীল ও পীড বর্ণের মিশ্রণে) শ্রীরাধা (নব-দুর্নালনের ভার) ভার ও (শ্রীকৃত্তের দেহকান্তি শ্রীরাধার অর্ণ-কান্তির প্রাচুর্ব্যে আন্তানিত হওরার) শ্রাম অর্থাৎ শ্রীকৃত্ত গৌরালী শ্রীরাধা-শর্মণ ইইলেন।

তথা দাগ।

জপরপ নব মধুমাস।

চৌদিশে কুন্থম বিকাশ ॥

নিধুবনে মধুকর রোল।

পিককুল পঞ্চম বোল॥

নাহ রসিকবর রার।

রসবতি মীললিং ভার॥

উপজল রস-পরসল।

নোহন দেখত রজ॥৬৭॥১৪৯১॥

मिनाखरत्र।

478 I

পরশে পিক কুহরই मनग्रक भवन-শুনি উলসিড ত্রজ-নারী। সবহু লভা ভক্ল উল্সিড পুল্কিড मनन (छन अधिकांत्री । ্দুত ভেল ষটপদ মুকুলিড চূড भवनहिँ (मनः वाशहि। शुकात्रमः चरत चरतः गस वगस **जन-करम जामम बाग़ है।** ৰূপোড শিখণ্ডক চাত্তৰ পাত্ৰ? पूर्व अन लिथन नुवारे। বিহল পূক-মূখেণ

কুঞ্জ লভা পর সাজস ঋতু-পড়ি वह्रविथ हिज्र विश्राटन । কুত্ব বিকাশল রাস-খল বলম্ল কামু শুনল নিজ কাণে ঃ মাধবি মধুমভি বিষল চন্ত্ৰ-মূখি সভাকারে কহবি বুকাই। नात्रि याद्या देवक्रद्रम রুগ-পরধান ফুন্দরি রসবভি রাই। ত্ৰিয়া রসদায়িনি ইছ মৃত্তু বচন पृशे व्लाल खेलारम । গুরুয়া গমনে ড>• চলিডে না দেখে পথ जवह करन धनि भारण ॥ কান্তু পাঠাওল . শুনহ বচন মোর মোহে কছলি নিজ কাজে। শ্রাম হবড় मागत वम-(ण्यव द्रांत्र कदव वन मार्ख ॥ দৃতিক বোলে (लार्ल धन कश्चन व्यानत्म वदा पृष्टे वाथि। সফল তমু মানই রাধা হুসুবি পুন পুন কহ চল দেখি ॥ যভনত আননে व्यान नाभ्य दवालद्य স্বপনে নাহি আন ভান। রাভি দিবস ধনি আন না ভাবই নয়নে না হেরই আন ॥ কুন্ধুম কস্তুরি চন্দন কেশর ভরি কুচযুগ শোভিভ হারে। বেশ বনাওল বো বাইা সাজল औदम> • **ठ**णल विदादत ॥ চললি ধনি স্থন্দরি त्रजिनि मध्य मिक मक्के नारे। নৰ অসুৱাগে আগি ক্লপাণ অস্তব্যে ্সতে নেনি স্থানর বাই।

বর-রসে আগরি লব নব নাগরি রস-ভবে চলই না পারি। অক্ত করে টলমল গুরুয়া নিডম্ব ভরে হেরইতে কত মনহারী ৷ মুক্ত মুলহ মুক্ मत्रभटन পरिनरि व्याथ नयून-व्यविक्य । মুহু তমু পুলকিড ইষদবলোকিত বাঢ়ল কভই ২ আনন্দ ॥ সভাষ মধুর দিঠে পহিলহি হাস পরশিতে প্রেম-তরজ। হুছু রুসে উনমত কেলি-কলা কভ ভাবে ভরল তুওঁ অজ 🛭 চুলাচুলি উরে উরে ৬ নয়নে নয়ান व्यथ्दत्र व्यभिशा-त्रम (नग । য়াস-বিলাস খাস বহ ঘন ঘন ঘামে ভিলক বহি গেল 🛚 কুত্ম শিথি-চন্দ্ৰক> বিগলিত কেশ-বেশ ভূষণ ভেল আন। পরিপুরিত ভেল ছুত্ক মনোরপ ছুত্ ভেল অভেদ পরাণ॥ धनि वृन्मावन ধনি রঞ্জিণিগণ ধনি ত্রাস-রসময় কান। ধনি ধনি সরস কলারস ঋতু-পতি कानपात्र श्रेनशान ॥७৮॥>८৯२॥

পাঠান্তর

১। 'দেৱল' ক। ২। 'পুজারল' ক।

৩। 'বর ঘর' ক; 'বলৈ ঘর' চ। ৪। হত্তলিখিত পুথির 'পাঅ' শফটি 'পাঅ' কিংবা 'পাএ' ছই
রক্ষই পড়া বাইতে পারে। কোন কোন মুজিত
সংখ্যাপে 'পারে' পঠি আছে; 'পাঅ' শক্ষেক কোন
কোন লিপিকর 'পাএ' ক্রনা ক্রার, উহাই পরে
'পারে' পাঠে পরিশ্ব ক্রীরাছে। বাহা হউক, 'পাএ'

किश्वा 'शांक' शांकि अ चरण रकाम व्यर्व इत्र मा। शृंक् इरों के निएक 'मधन' बगरबन व्यथिकांनी व्यवीद कार्याश्यक ७ 'वर्षे भव' (वह भवच (वर्जू नीजगायी) वृष्ठ হইল-এরণ বর্ণিত হইরাছে; পরেও বিক্রবর সর্ত্ত विश्व भूक-मूर्व शक्य (वर्ष श्राहे वार्ष्ण क्षव-প্রসুধ বিহলদিগকে 'বিজ্বর' করনা করা হইয়াছে; হুতরাং 'চাতক পাত্র' ইত্যাদি মধ্যবন্তী চরণব্যে---'চাভক, কণোভ ও বয়ুর বসন্তের পাত্র অর্থাৎ কার্ব্যা-कांद्रक रहेवा (श्रीमक-वृशंगटक (यहात्वद्र जारहभ-স্চক) শিপি বুঝাইলা দিভেছে' এইক্লপ অর্থই সমী-চীন বোধ হয়। ৫। 'মুখ' খ, চ। ৬। 'পড়াই' क, ह। १। 'विकिब' क, थ, ह। ৮। 'देवमदा' षः। २। 'सधू'क, था >०। 'शमन मङ्'षः, 'গমনত'চ। ১১। 'আন'ধ। ১২। 'নাহি' का ७०। 'बेह्रस' ४, हा ५३। 'क्रभ' का >१। 'क्खरब' प, हा ১७। 'खेब³, क, था >१। 'हिक्किक' थ।

টাকা

৪১—৪৪। "রাজিণি" ইত্যাদি। স্থন্দরী নারিকা (প্রীরাধা) রাজিণী স্থীদিগের সলে চলি-লেন এবং (তাঁহাদিগকে) লইরা সন্ধীতের সঞ্চার করিলেন; (প্রীক্তকের প্রতি) নব অন্তরাস হেডু (প্রীক্তকের) রূপ (তাঁহাদিগের) ক্লমে স্থাসিল; (অতএব) সকলে মিশিরা শ্রামস্থ্রের (৩৭) গান করিতে লাগিলেন।

पूर्वामी ।>

বিদ্যাধ নাগরি নাগর রসিরা।
মধুকর মধু পিরে কমলিনি পশিরা।
বাঢ়ল রস-সিকু ছতে এক হিরা।
কালা মেবে কাপল কুমুদ বজুরা।
রাই কামু নিধুবনে মধুর বিলাস।
হত হত মুধু হৈছি বাছারে ইলাস।

পুনিম্-চান্দ-মুখে সেদ বিন্দু বিন্দু।
আনল লাবণ্য-ফুলে পুজল ইন্দু ।
বিগলিত কেশ বেশ বিগলিত বাস।
রভি-রস-আমে বহে দীঘ'নিশাস॥
আলসে মুদিত আঁখি বয়ানে বয়ান।
আন কৰে চান্দে কিয়ে চান্দের মিলান॥
॥৬৯॥১৪৯৩॥

পাঠান্তর

)। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪০ সংখ্যক পদ।
 ং পুনিম' ক, প র-সা; 'পুনমিক' খ।
 া ছেরমে' ক, খ, খ, চ; 'ছরমে' পাঠে ছলোভদ
 হর, স্থতরাং প-র-সা পুথির 'শ্রমে' পাঠই সমীচীন।
 গালে' ক, খ।

অথ বাসন্তী রাসলালা। ভত্নচিও শ্রীগোরচক্র। शनकी वा वमस्य ।> नवदीर्भ डेएग्र कतिमा विष-त्रांक। কলি-ভিমির ঘোর গোরাচাঁদেং উজোর পারিষদ-ভারাগণ মাঝ 💵 অল ধূলি-ধূসর कीर्खान एवं एव হালত ভাব-ভর্মে। বোলত হরি হরি ক্রে করডাল ধরি ক্ষেণে কেণে রহই ত্রিভকে। কান্ধের উপরে তার বামে প্রিয় গদাধর সূবলিত বাহু আজানে⁸। আকুল অমুখণ সোভরি বৃন্দাবন थाता वरह जक्रग-नदारन । (यन नव जनश्र জাখিযুগ কর কর मनन विक्ती किनिः इते। কলি-জীব উদ্বারিতে ৰামুদেৰ ঘোৰ গীডে ् त्रतिश्रम् प्रति-सान-पर्गे ॥१०॥>৪>৪॥

পাঠান্তর 🔍

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'গোরাটাদের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'হেলড' ।
ধ। ৪। 'আঞ্চানে' ধ; 'অঞ্চানে' প-র-সা।
৫। 'বেন্' প-র-সা। ৩। 'বরিখড' খ।

द्वहरे ।>

মধু-ঋতু-বামিনি হ্রেধুনি-জীর।
উলোর হৃথাকর মলর-সমীর।
স্বচর সঙ্গে গোর নট-রাজ।
বিহররে নিরুপম কার্তন মাঝা।
বেগল করতাল-ধ্বনি নটন-হিলোল।
ভূজ তুলি ঘন ঘন হরি হরি বোল।
নরহরি গদাধর বিহরই সজা।
নাচত গাওত কড্ড বিভলা।
কোকিল মধুকর পুঞ্ম ভাষ।
নর্নানন্দ-পত্ত করুরে বিলাল। ৭১॥১৪৯৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ২০৪৫ সংখ্যক পদ।

অভিসারিকা।

कृषांनी ।>

চান্দ-বদনি ধনি করুং অভিসার।
নব নব রজিণি রসের পাসার ।
মধু-ঋতু রজনি উজোরল চন্দেণ ।
স্মলর-পবন বহুরে মৃত্ মন্দ ॥
কপুরি চন্দন অজে বিরাম ।
অবিরভ কছণ কিজিণি বাম ॥
মৃপুর চরণে বাজারে রুপুরুত্ম ।
মদন বিরুদ্ধি বামণ হাজে মুল্-খসু ॥

বৃন্ধা-বিপিনে ভেটলং শ্রাম রায়।
কোকিল মধুকর পঞ্চম গায়॥
ধনি-মুখ হৈরি মুগধ ভেল কান।
বৈঠল তক্তলে তুর্ট এক ঠাম ॥
পূরল তুর্টুক মরম শ- অভিলায।
আনদেদ হেরভ বলরামদাল সংগ্রহণ ১৯৯৬॥

পাঠাশ্বর

১। ইহা প-র-সাঁ পুথির < ০৪৬ ও প-র পুথির
১৫।১৫ সংখ্যক পদ। হ। 'ধনি করু' হলে 'ধনি হরি'
প-র-সা, 'চললি' প-র। ৩। 'মধু-ঝতু' ইভ্যাদি
কলিটি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'বিজ্ঞার' ক, প-রসা। ৫। 'বাণ' ক, ঝ, ড়, চ, প-র। ৬। 'ভেটিল'
ক। ৭। 'কোকিল মধুক্র' হলে 'নব নব কোকিল'
প-র। ৮। 'বভ্লে' ঝ। ১। 'বৈঠল' ইভ্যাদি
হলে 'করে ধরি কুঞ্জি করল প্রান' প-র। ১০।
'ক্র্কে মর্ম-' হলে 'বভ্লু ক্র্ম-' প-র। ১১। 'আনক্রে' ইভ্যাদি ছলে 'দ্রহি দ্রে রছ গোবিন্দদাস'
প-র।

कारबाव ।>

সরস বসন্ত সময় বন শোহন
মোহন মোহিনি সহা।
অপরপং রাস- বিলাসহিও নিমগন
হুহুঁ ছুহুঁ অসহি অস ॥
দেখ স্থি রাস-বিলাস।
কত কত বল্ল তল্ল সঙারত
কতহুঁ রাস পরকাশ ॥গ্রন্থ।
যুথহি যুথ মেলিও স্ব কামিনি
বামিনি বিলসই ভালও।
নাচত রঞ্জিনি
পাওছ ক্ষা স্থোপাল ॥

বাধ্যে উপাল ডক্ম সর-মধ্যল
কন্ধণ-কিন্ধিণি-রোল।
বন্ধবিধ ডাল মান ধরু করন্ডলে
অনস্ত আনন্দ হিলোল ॥৭০॥১৪১৭॥
পাঠাকর

>। ইহা প-র-সাপুধির ২০৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'অপরপ'ক। ৩। 'বিলাসই' ক, খ, চ;
'বিলসই'প-র-সা। ৪। 'মিলি'ক, চ, প-র-সা।
৫। 'মামিনি' ইত্যাদি স্থলে 'বিলসই ভালহি' ভাল'
থ। ৬। 'অনকাদান'ব, চ, প-র-সা।

CTTT 13

ফুটল কুসুম অলিক মেলি। कुरुत क्विकित वितर्भ किला কপোত নাচত° আপন রচ্ছে। রাই নাচত শ্যাম সঞে। দেখ রি স্থি কুঞ্চ মাঝ। শ্যাম নায়র নায়রি* সাজ 🛚 বিবিধ যন্ত্ৰ একই ভান⁹। গাওত বাওত অথও মান ৷ ভাভা জিমিকি জিমি মুদক। সরশ পরশ **অজ³• অজ** । √ अ**हरक भा**षि । তাহে कडह १२ महेमा । नग्रान नग्रान भ्रमुत्र मीर्ठ भा 🖰 जिमग्रा-जिथक द्वालरत भीठे । হিয়ে হির-হার **আলস লোল।** চরণে মঞ্জির খুলর বোল। অধরে মধুর মৃত্ত হাস व्यानगान-विक-विकातः १४८। ५८ ३৮।

পাঠান্তর

১। ইবা প-র-সা পুথির ২০৪৮ ও প-র পুথির ও৮,১৩ সংখ্যক পদ। 'কেদার' বলে 'কানড়' প-র। হ। 'বরিহা' ক, থ, ছ, চ। । 'চাতক' প-র। হ। 'রক' প-র। হ। 'রক' প-র-না। ৮। 'খও' খ। ৯। 'মান' প-র-সা। ১০। 'অফহি' প-র। ১১। 'অফহি' প-র। ১২। 'কতেক' প-র-সা। ১৩। 'নরন' ক। ১৪। 'নরন নরন' প-র। ১৫। 'দিঠ' ক, প-র-সা। ১৬। 'মিঠ' ক, প-র-সা।

ভাটবাৰি ৷>

बुम्मा-विभित्न विष्ठब्रहे मार्थवि माथव जिल्ह्या । তুহুঁ-গুণ হুহুঁ জনং পাওত স্থললিত চলভ নৰ্ত্তন'-গতি-ভাতিয়া।ধ্ৰ। কুণ্ডল শোহই ভাবণ-যুগলে নবং কিশলয় ভোড়িয়া। ভুজ শোহই মূহু কান্ধে মূহু **চুসই মুখ শশি মো**ড়িয়া ॥ মুরলি ভাহে বায়ে মন্ত কোকিল নাচত শিধিগণ মাতিয়া। ধাই বেঢ়ল **८७कि मकत्रम** মুখর মধুকর-পাঁতিয়া। কুন্তম বরিষণ সকল স্থিপণ

ও রস-সায়রে গাহিয়াশ ॥৭৫॥১৪৯৯॥

षांग भाविष

আনন্দে ও রসে ভাসিরা ।

ক্বহিঁহেরব

5। देहा भेज-मा श्रीवेत २०४० ७ भेज श्रीवेत अभव मरवाक भेज । 'खाँडेवाजि' वटन 'दिटनावाज' भन्त । १२ व्यक्तिक 'देखाजि वटन 'हर्स' अने हर्स्

গাঠাতর

প্র। ৩। 'নর্জক' প্র। ৪।' 'নবিন্ধ প্র। ৫। 'শোহই অপর্নণ' প্র। ৬। 'বোরিনা' प्, চ, প্র-সা। ৭। 'বাওড' ক, খ, प, চ, প্র-সা। ৮৭ 'ও রসে ভাসিরা' হলে 'রসে স্ব মাতিরা' প্র। ১। 'অবগাইরা' प।

বিহস্তা।১

মধ্-ঋতু মধ্কর-পাতি।

মধ্র-কুত্ম-মধ্-মাতি।

মধ্র বৃদ্ধাবন মাঝা।

মধ্র মধ্র রস-রাজা।

মধ্র মধ্র রস-রজাণা।

মধ্র মধ্র করতালা।

মধ্র নটন গতি-ভজা।

মধ্র মধ্র রস-গান।

মধ্র মধ্র রস-গান।

মধ্র মধ্র রস-গান।

মধ্র বিভাগতি ভাগা।

মধ্র বিভাগতি ভাগা।

পাঠান্তর

)। देश श-त-जा श्रवित २०६०, जरवाक शव। १। ११ जन्म वरण १तज्ञ तक वा । १। १३ जन्म वरण ११ वर्ष के । १ वर्ष

चनार्थ ।>

ঋতু-পতি-রাতি রসিকবর-রাজং।
রসময় রাস-রভর্স রস মাঝ ॥
রসবতি রমণি-রতন ধনি রাই।
রাস-রসিক সহ রস অবগাই ॥
রাজিণিশণ রসং-রজহি নটই।
রণরণিং কল্প কিছিপি রটইং॥

রহি রহি রাগ রচরে রসবস্ত।
রতি-রতণ -রাগিণি-রমণ বসন্ত॥
রটতি রবাব মহতি কপিলাসণ।
রাধারমণ করু মুরলি-বিলাস॥
রসমর বিছাপতি কবি ভাণ।
রূপনারারণ ভূপতি জান॥৭৭॥১৫০১॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুধির ২০৫১ সংখ্যক পদ।

২। 'বর-রাজ' ছলে 'রস-রাজ' ছ। ৩। 'সব'

ড়, ড়, চ, প-র-সা। ৪। 'রস্ব জ্বপু' প-র-সা।

৫। 'রচই' ক। ৩। 'রস্বতী' প-র-সা। ৭।
'বহজি', খ, প-র-সা; 'সহতি' চ। ৮। 'ক্লিনাস' ড়, ড়; 'কোপিনাহ' প-র-সা।

(ब्रावादात ।)

বাৰত জিগি জিগিং ধোজিমি জিমিয়া। **নট**ভি কলাবভি খাম সংখ মাতি **করে করু ভাল প্রবন্ধক ধনিয়া**ু । ভগমগ ডক্ষ जिभिकि जिभि मानन ক্রপু বৃত্থ সঞ্জির বোল। किश्विव त्रवत्रवि বলয়া কন্যা মণি निश्वतन जान कृत्र्म छल्दतान । बीग ब्रवाव মুরজ সর-মণ্ডল সারি গম পাধ নি সাবছবিধ ভাব। বেটিভা বেটিভা বেনিং মুদক্ষ গরজনি চকল সর-মওল, একু রাব। শ্রম-ভরে গলিভ ললিভ ক্বরীযুত মালভি-মাল বিথারল থোভি। नमम यम् রাস-রস-বর্ণন বি**ভাপ**তি-মতি ক্লোভিড হোভি^ত 🛊

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৫২ সংখ্যক পদ। '২। 'জসি জসি' ব । ০। 'থবনিরা' ক, ব, প-র-সা। ৪। 'রস্বজ্ব'প-র-সা। ৫। 'ল্লি' প-র-সা। ৬। 'অভি'প-র-সা।

ज्भानो ।>

त्राम-विवादमर भूगध नहे-त्राञ । যুপহি যুপ রমণিগণ মাঝ 🛭 চুম্বরে রময়ে সবহু সম-ভাব। হেরইতে সুবদনি ভেল বিভাব । কোপে কমল-মুখি করল পরান। বৈঠলি ভিমির-কুঞ্জে করি মান 🛭 মণ্ডলি ছোড়ি রাই যব গেল। হেরি নাগরবর চমকিড ভেল 🛭 व्याकृत (शाकृत-व्याध कान। ছাডি° সব ব্যক্তিণ করল পরান। विलगरे मनमथ-वाट्य छरे श्रीय। ঢ় ড়ই পবছ কুঞ্চে মভিহীন। बारे ना পारे यारे এक कुछ। রোয়ত বৈছন মধুকর গুঞ্জ। কাহাঁ গেও বিধু-মুখি কহি পুন রোর। পুন किया मा धनि मीलव भाषा ॥ विन भरे त्रांब्रेट त्या वन-विका। আকুল উদ্ধৰ দাসক সন্মিয়া ॥৭৯॥১৫০৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিলাস' प। ৩। 'হোড়ি' প-র-সা। ৪। 'বিলপিড' ক। ৫। 'চুঁড়াই' ক। ७। 'বরু-রুখি' प। ৭। 'বিলখ' ক, প-র-সা।

ভত্ত শ্ৰীগীতগোবিন্দে যথা।

मामित्रः চलिङा विलाका बुङः वधुनिहत्यन । সাপরাধভরা ময়াপি ন বারিভাভিভয়েন ॥ হরিহরি হতাদরভবা গতা সা কুপিতের ॥ঞ্চা কিং করিয়াতি কিং বদিয়াতি সা চিরং বিরছেণ। किः थरनन करनन किः मम कीविर्छन शुर्ह्ण ॥ চিন্তরামি ভদাননং কুটিল-ত্রু কোপ-ভুরেণ। শোণ-পদ্মমিবোপরি ভ্রমতাকুলং ভ্রমরেণ। ভামহং হৃদি সক্ষতামনিশং ভূশং রুময়ামি। কিং বনেহমুসরামি তামিহ কিং বুথা বিলপামি n ভবি খিলমসূর্য়া হৃদয়ং তবাকলয়ামি। তন্ন বেদ্মি কুতো গতাসি ন তেন তে২সুনয়ামি। দৃশ্যনে পুরভো গভাগতমেব মে বিদধাসি। किः भूटतव अमञ्जयः भतित्रञ्जनः न प्रपामि ॥ ক্ষয়তামপরং কদাপি তবেদৃশং ন করোমি। **८१६ि जुला**ति पूर्णनः मम मन्नार्थन क्रानामि ॥ वर्गिङः क्याप्तवाकन स्वातिषः अवान । (कन्द्रविचे-मग्रज-मञ्जर द्राहिगीत्रमणन ।

পঠিক্তির

16-176-81

১। ইহা প-র পৃথির ২১।৯৪ সংখ্যক পদ।
'শুর্জারা' হলে 'বরাড়া' প-র। ২। বদিও সকলশুলি পৃথিতে এবং সৃত্রিত বলীর সংহ্যবে 'কিং ধনেন'
ইন্ডাদি হলে 'কিং ধনেন কিং জনেন কিং নদ স্থানন গৃহ্ণে' পাঠ আছে, কিন্তু উন্থানে ক্লোভদ-ছই, ভাষা মংসম্পাধিত প্রীক্রীতগোবিন্দের ৭৯ পৃঠার পাদ-টাকার সবিভারে আলোচিত হইরাছে; আমরা ঐ পাদ-টাকা হইতে করেক ছল্ল নিরে উভ্ত ক্ষরিলার; —"ম্বানিরং চলিতা বিলোক্য বুজং বধ্নিচ্বেন' ইন্ডাদি শীত্রির বুরা বাতীত অভাত সকল চরণেই ১০৭ ও ১৬শ অকর গুরু ও অবশিষ্ট অকর গণু ছৃষ্ট হর; বোঘাই নির্ণয়-সাগর বছের মুজিত পুক্তকে এবং রনিক-প্রিরা ও রন-মঞ্জরী টীকার বে পাঠ্য পূর্বাক্ত ও বাাধ্যাত হইরাছে, তাহাতে পূর্বোক্তরূপ অকর-বিকাস রক্ষিত হইরাছে। এ করু আমরা অগত্যা ঐ পাঠই গ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাছি।

মহাকবি অরদেবের রচনার ছন্দোভল অসগ্রব, ইহা বলাই বাহল্য।" অরদেবের নীকা ও অনুবাদ সর্ব্ব্রেক্ষণত বলিয়া এ ক্লে দেওরা হইল না।

তথা রাগ ৷১

কহে ং হেন হবে কি আমারে।

এ নমনে দেখিব রাইরেরে।
লালতা-অসুলি করে ধরি।
অভিসার করব সুন্দরী॥

সে বদন-চান্দের মাধুরী।

সে হাস্ত সে বিনোদ-চাজুরী॥

সে নমন-কোণের চাহনি।

মৃত্ হাস্ত মুখ-মোড়ায়নি॥
বলয়া-কিঙ্কিণী-ধ্বনি শুনি।

মদনকে জাগায় মোহিনী॥
ভাহা আমি শুনিব কিপ কাণে।

চমক পাইবে মোর মনে॥

এ বস্তুনন্দন দাস ভণে।

রাই বিমু না রহে জীবনে ৪৮১॥১৫০৫॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সাপুথির ২০৫৪ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' হলে 'বিহাগড়া' প-র-সা। ২। 'ক্ষ' ক; 'ক্ষে' চ, প-র-সা। ৩। 'সে' ক, থ। ৪। 'পাইয়ে' ক। তথা রাগ ৷>

(इनरे नमरत्र এक नथी। निकृश्व-मन्तित तारे पिथि॥ कट्ट यात्रि वित्नात नागद्य। দেখ রাই কুঞ্জের ভিতরে। स्त्रिश हमिक डिट्रं कान। সখী সত্তে করল পয়ান। बाहै। वभिर त्राधिका ऋसर्त्री। नम् व कहरम् कत्र (यां फ़ि॰। (क्यम धनि मञ्जू अभवाध। হেন প্রেমে না করহ বাদ ॥ হাম ভুয়া অনুগত কান। কাছে করসি মোছে। মান ॥ এত কহি চরণে ধরিয়া। जाश्य अवनी (लाउँ दिया ॥ ে কাতর দেখিয়া ধনী রাই। করে কর ধরে মুখ চাই॥ मृद्र (११७ मानिनी-मान। এ ষত্ৰক্ষৰ গুৰু গান ॥৮২॥১৫০৬ ॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপ্থির ২০৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বৈসে' প-র-সা। ত। 'যুড়ি' ছ। ৪। 'মুকে' প-র-সা। ৫। 'ধরি' ক, প-র-সা।

शंवनी ।

রাই হেরল যব সো মুখ-ইন্দু।
উছললং মন মাহা আনন্দ-সিব্ধু॥
মান-জনিত তুখ সব দুবেং গেল।
তুহুঁ মুখ দরশনে আনন্দ ভেল॥
লালিডা বিশাখা আদি যত স্থিগণ।
আনন্দে মগন ভেল দেখি দুই জন॥

নিকুঞ্জের মাবে দোহাঁর কেলি-বিলাস। ত্ত্রহি দূরে রহু নরোন্তম দাস।৮০॥১৫০৭॥

় পাঠান্তর

)। 'উहन' था रा 'मृत्त्र' क, था

বিহণভা ৷>

সরস বসন্ত **স্থাকর নিরমল** পরিমল বকুল রসাল।

রদের পদার পদারল রসবভি গাহক মদনগোপাল B

বৃদ্ধাবনে কেলি-কলা-নিধি কান। হাস-বিলাস- মগন দিঠি মন্থর

হেরি মুরছয়ে পাঁচবাণ ॥এ॥

নব যুৰধা**জ পরশি ভরল মণি** পুছই মূলকি বাত।

তরল-নয়ানি হাসি মুখ মোড়ই ঠেলই হাডহি হাড ম

ছহু রসে ভোর ওর নাহি পায়ই

রস চাধই মদন দালাল।
দাস অনন্ত কহ ইহ রস-কৌভূক
বিজকুল কহে ভালি ভাল।৮৪॥১৫০৮॥

পাঠান্তর

১। এই পেষ্ট ২র শাধার ৪ব পরবে ২০৯ পূঠার একবার উদ্ভ ক্রোছে ; প্রভরাং পাঠান্তর ও টাকা সেই ক্লে এইব্য।

(मशंब १)

রজনি উজাগরি নাগর নাগরিং আঁথি মেলিভে নারে অুমে। অভিশয় রসভবে ভাষ নাগরের কোরে অজ হৈলি রহুগ নিসুমে। দেখ স্থি অপক্ষণ হান্দে।
ভাম নাগর-কোরে শুভিরা রহল ধনিও
কামু নেহারে মুখ-চান্দে ॥ধ্রঃ
কুটিল কুন্তল সবং শ্রীমুখ বেচিল গোণ
সিন্দুর ভিলক মোছেও ঘামে।
কুয়লাও কবরি আধ বেননও পাটের জাদ
বীড়াও খসল কর বামে ॥
নীল বসন ভিগি অলে লাগিয়াছে গোওও
শ্রীজ্ঞান দেখিতে উদাস।
বৈছেও চান্দের কলাও মেঘে ঝাপিয়াতে গোওও
নির্ধইওং গোবিন্দদান ।৮৫॥১৫৩৯॥

পাঠান্তর

)। **हेहां श**-ब्र-तां शृथित ५८७२। २०६१ ७ প-র পুৰির ৩৯।৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'ধানশী' প-র-সা। ২। 'নাগর নাগরি' ফ্লে 'রাই অ্নাগরি' প-র। ত। 'অতিশয় রসভরে' क्रान 'अधिक अनम्ভदार' भ-ता। । 'नागतर'- ४. य। ৫। 'প্রাম' ইত্যাদি ছলে 'রভির ছরমে রাই' প্-র। ৬। 'রহণ ধনি' হলে 'ররাছে গো' প্-র। १। 'कूडिन क्खन नव' श्रान 'क्षिण क्खन' क, **ब. व. ह. १**-त-मा। ৮। 'श्रेषुब विक्रिन भी' इरन 'डारन नानिवारह' क, थ, व, ठ, भ-द-मा। »। 'खिनक स्वांद्ध' श्राम 'कांबन मृश्' क, ब, ठ, প-ब-मा। ১०। 'कूक्म' প-ब। ১১। 'विनन' कः, '(वनन' ह, भ-तः।)२। 'निविष्' भ-तः। ১০। 'ঝো' ক, খ, খ, চ ও প-র-সা প্রথিতে নাই। >8। '(यमन' श-तू। >€। 'हारम' क। ১৬। 'त्वरच' देखाबि क्रांच 'बनान वानिवारह त्यां' श-द्वा **>१। "(इत्र**क्ष' श-द्वा

লক্ষিত 15

দেখি সখি গোরি শুতল শ্রাম-কোর^২। নাগলত নীল বতন কিয়ে কাঞ্চন কুবল চম্পক **জোর**ং। গোরি স্থনাগরি অধরে অধর ধরি ঘুমায়লঙ বিদেশধ চোর। কনয়-কমলে অলি মাভি রহল জমুণ ছিমকর শ্রামণ চকোর # তুল্ণ মনোহর পীন পধ্যোধর রাতৃল কর্যুগ> সাঞ্চ> । विक6 किएम सानन উলটি>২ কমল কন্যু>৩ ধরাধর-রাজ>৪॥ নাগর বেঢ়ল নাগরি গ্রহ্ম উরু> নাগরি-ভুজ **৬ বে**ঢ়ি **অক^{১৭}।** জলদে বিজুরি অমু>> বেঢ়ল ছুহু ডমু গোবিন্দদাস কহ রঙ্গ ১৮৬॥১৫১•॥ পাঠান্তর

১। हेहा প-त्र-मा প्षित्र २०८৮ ७ প-त প्षित ৩৯৮ ও ৪২।৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কোরে' প-র-সা৷ ৩। 'লাগল' প-র-সা৷ ৪৷ 'রভলে' প-র। १। 'Cकारत' প-র-সা। 🔸। 'च्यन' ৮। 'হিষ্ক্রে প-র। ৭। 'কিয়ে' প-র। ट्वरहर भ-ता अ। व्यक् अ-त कानावा 'করন্তল' প-র। 'সাব্দে' >>1 **२०। 'क्यन्त्र' (१) थ। ३२। 'छलडे' প-**র। ১৪। 'दारक' भ-त्र। ১৫। 'छेरद्र' क, ह, भ-त्र। ১৬। 'নাগর ভূলে' প-র ৪২।৪৯। ১৭। 'ছব্ব' भ-त 8२।8३। अस्। 'दिरह' क, प, प, ह, श-य-मा। >>। 'त्रक् धन्म' -व्या 'क्य मृत्र' প-র ও৯৮ |

রামকেলি ৷১ নলিনগণ হাসভ হিমকর মলিনং खक्रन-कित्रन (हति (धांत्र⁸। কোকিল বোলে ভ্ৰমরকুল আকুল ভেজত কুমুদিনি-কোর॥ কৈছে ঘুমায়ত যুগল কিশোর। চঙকি কহত শুক সারিক কোর ॥ধ্রশ নিচল-ভমু শ্রামর কিশলয়-শয়নে মরকভ কাঞ্চন গোরি⁹। কীয়ে কুত্বম-শর-তুণ শূন ভৈল কিয়ে ছ্ৰু রভি-রসে ভোরি 🔏 সহচরি ছোড়ি মন্দির জমু' যাওড জাগহু১১ হুন্দরি রাধে। গোবিন্দদাস-পত শুনইতে কাতরুংং (कान क्यल वन-वांटण ॥৮१/১१১)॥ পাঠান্তর .

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৫৯ ও প-র পুথির ৩৯|১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরণে' প-র। ৩। 'হাসউ' ক, খ, দ, চ। ৪। 'ঘোর' প-র-সা। ৫। 'গানে' প-র। ৬। 'ঝামরু' প-র। ৭। 'আরি' প-র। ৮। 'ডোর' প-র। ৯। 'ছাড়ি' খ। ১০। 'চিলি' প-র। ১১। 'আগহি' প-র। ১২। 'আকুল' প-র।

গলত।

পদউধং কাক কোনিলা বামিনী শেবং।
ভূরিতে নাগরীং গেলা নিজ হর
বান্ধিতে বান্ধিতে কেশং
ভ্রমণ আলিসে ঠেসান বালিসেং
ভূমে চূলু ভূলু আঁখি।
বসন ভূষণ ভধনি উঠিয়া দেখি
এ

মহা ভোলে পরিবাদ।

মহা ভোলে পরিবাদ।

জানিলে এখন কুইবে কেমন
বড় দেখি পরমাদ॥

চণ্ডীদাসে কছে শুন লো স্কর্মরি
তুমি সে বড়ুয়ার বহু।

শ্যামের মোহিনী' - গুণের কর্মী''

লখিতে নারিবে কেছু ॥৮৮॥১৫১২॥

ইণ্ডাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

পাঠান্তর

)। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬০ সংখ্যক পদ।

१। 'পথউধ' थ। ৩। 'কোকিলার' প-র-সা।

१। 'শেবে' প-র-সা। ৫। 'নাগর' क। ७।
'কেলে' প-র-সা। १। 'ঠেসানা' क; 'ঠেসাল'
প-র-সা। ৮। 'বোদল' থ, চ। ৯। 'মোহন'
ক, থ, ঘ, চ। ১০। 'কারণ' ক, খ, ঘ, চ।'

টীকা

১০—১৬। "চণ্ডীদানে" ইত্যাদি। চণ্ডীদান কহিতেছেন, হে স্থলরি। তৃমি শ্রবণ কর; তৃমি কিনা বড়ুরার বধু (তাই তুমি তোষার নির্মাণ কুলে কলম্ব হুইবে বলিয়া কত আশহা করিতেছ।) কিছ স্থামের মোহিনী বিভার কার্য্য (এইরপ বে), কেহই তোমাকে লক্ষ্য করিতে পারিবে না।

শ্রীকৃষ্ণ চৈতত্ত্য-শ্রীনিত্যানন্দ-শ্রীঅবৈতচন্দ্র।
বদস্ত-সময়োচিত-গীতং।
বাসন্তী-রাসলীলা প্রকারান্তরং যথা।
তত্ত্চিত শ্রীশ্রীমহাপ্রভূ।
তৃষ্ট ।>
নাচেরে নাচেরে নিভাইং গৌর বিজমণিয়া।
বামে প্রিয় গদাধর শ্রীবাস অবৈত বর
গারিষদ ভারাগণ জিনিয়া । শ্রা

বাজে খোল করভাল মধুর-সংগীত ভাল হেন অবভারে গগন ভরিল ছরি-ধ্বনিয়া। চন্দ্ৰ-চৰ্চিত গায় काश विन्यू विन्यू खान्न वन-भाना (मार्ट्स छार्टाः विद्या । গলে শুল্রু উপবীত ক্রপ কোটি কাম ঞ্চিত চরণে নৃপুর রণরণিয়া। कूरे छारे नाहिया यात्र সহচরগণ গায় গদাধর-অক্তে পড়ে ঢুলিয়া ॥ পুরুব রন্তস-লীলা এবে পত্ত প্ৰকাশিলা সেই বৃশ্বাবন এই নদিয়া। বিহরে গঞার তারে (भर्रे श्रीत मभीदत वुम्मावनमात्र कट्ड कानिया ॥৮৯।১৫১०। পাঠান্তর

১। ইহাপ-ব-সাপুথির ২০৬১ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচে নাচে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'মধুবস গীত' প-ব-সা। ৩। 'ভাল' ক, খ, প-ব-সা। ে। 'ভাষে' খ। ৬। 'ফুল্ল' চ; 'শোভে' প-র-সা। ৭। 'ইবে' ক, খ, চ।

क्मानि।)

গোরাক কুন্দর নাচে। শিব বিরিজির অগোচর প্রেম্থ বিভোর॰ হইয়া বাচে ॥ এ ॥ ब्रह्मद्र कार्याम व्यक्त हत्र हत्र **हिन्द अ**न्ताग्रा भट्छ। সোণার বরণ यूनोतः शुक्तो ভূমে গড়াগড়ি বুলে। শুনিয়া পুরুষণ আপন বৈভব वुन्नावन-ब्रम-लीला । कोर्सन-बाटन्टबन्नः প্রেম-সিক্স মাকে ्ष्र्विमा महीत बामा ॥

ংন ক্ষরতারে বে জন্স বঞ্জিড

তারে করু কুপা-লেশেং।

ত্রীকৃষ্ণতৈতক্ত ঠাকুর শ্রীনিত্যানন্দ
গুণ গারুণ বৃন্দাবনদাসে ॥১০॥১৫১৪॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ২০৬২ ও প-র পৃথির ১৩৩১ সংখ্যক পদ। 'কল্যান্ত্র' হলে 'বিভার' প-র। ২। 'প্রেমধন' ক, ব, ব, চ। ৩। 'ভাবের' প-র। বভোর' ক, ব, ব, চ। ৩। 'ভাবের' প-র। ৫। 'গলপদ' প-র। ৬। 'আলাঞা' ক; 'আউলায়া' প-র-সা; 'আল্ঞা' প-র। ৭। 'ননীর' ক; 'নোনির' অ; 'হিনর' চ। ৮। 'ভনিয়া প্রক' হলে 'প্রবে বে কিছু' প-র। ৯। 'নিল' ক; 'নিলহি' প-র-সা। ১০। 'আনক্রে' প-র। ১১। 'করু' ইভাানি হলে 'রুপা কর নাব' প-র। ১০। 'ভণ গার', হলে 'গার' প-র-সা।

ত্রভিসারিকা। ভূগালী।১

নব মধুমাস কুজুমমর গন্ধ।
রজনি উলোরল গগনহি চন্দ ॥
মলর-পবন বহে সৌরভ মেলি।
কোকিল রাবং শুমর করু কেলি॥
ঐছে রজনি হোর রসবাতি রাই।
সহচার সহ নিজ বেশ বনাই॥
কার্থা চলাল ধান কালিকি-ভীর।
কার্পাণ সহ ভাহি মাললা কান।
ছহাঁ জন হেরই ছহাঁক বয়ান॥
ছহাঁ মুধ হেরইতে মুদ্ধ মুদ্ধ হাল।
ভ্যামদাস কর্ম ছহাঁক বিলাল ৪৯১৪১৫১৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'রাও' প-র-সা। ৩। 'অপরূপ'ক। ৪। 'ফিলন'ক, প-র-সা।

धाननी ।>

মধুর বামিনি কাম কামিনি
বিহরে কালিন্দি-তার।
কোকিল কুহরতং জুমর কম্পুত
বদত কীর° সুধার॥
রাধা মাধব সলং।
সঙ্গে সহচরি নাচয়েং ফিরি ফিরি
গাপ্তয়ে রস-পরসলং॥ধা॥
করছি বন্ধন ঝমকে কম্প্

চরণে মঞ্জির রোল⁹।

কটিতে কিন্ধিনি বাজয়ে কিনি কিনি

গণ্ডে কুণ্ডল দোল⁶ ৪

রাই নাচত কত্ত রসভূত⁸

কামু কত কত গাওই⁹ ।

সবহুঁ সখি মেলি রচয়ে মণ্ডলি জ্ঞানদাস মতি ভাওই›› ॥৯২॥১৫১৬॥

পঠিবির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬৫ সংখ্যক পদ।

২। 'কুহকত' অ। ৩। 'বরত কীর' হলে
'বরন কিরণ' প-র-সা। ৪। 'সলে' প-র-সা।

৫। 'নাচত' প-র-সা। ৬। 'পরসলে' প-র-সা।

৭। 'বোল' ক, অ, চ; 'বোলে' প-র-সা। ৮।
'বোল' প-র-সা। ৯। 'কডর্ছ' রসভ্ত' হলে
'কডর্ছ' রসভ্ত' চ; 'কবছ রসভ্ত' প-র-সা। ১০।
'গারই' ক। ১১। 'ভারই' ক।

(क्षांत्र ।>

রাধা মাধ্য সল।
বিহরত্বে প্রেম-ভরজ ॥
চৌদিশে সহচরি মেলি।
মণ্ডলি করি করু কেলি।
করিং করিং বন্ধান।
মাক্ষহি রাধা কান ॥
বন্ধার রাগিণি ছন্দ।
গাওত কভন্ত পরবন্ধ ॥
কভ কভ যন্ত্র রসাল।
ভেদ পরনং ধরু তাল ॥
অপরূপ রাস-বিলাস।
কহু জগুমাহন দাস ॥১০৪১৫১৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'করহি করহি' দ; 'করহি কর' প-র-সা। ৩। 'কডহি' প-র-সা। ৪। 'পরণ' প-র-সা।

क्षिक्ष ।

জিনি কাদখিনি আড়খিনি পটা।
সম্পায়ন কম্পা কম্পিত চম্পা
কম্পিত বিখাধর কিম্বা অণ্ডল
ডিম্বালয়-সম্বিতং ছটা। প্রঃ
ইন্দুবদনি সিন্ধু অমিময়
বিন্দু বিমল সিন্ধুর ক্লচিচয়
চন্দন বন্দন কেশর বেশরবর-মোডি-ঠটা ।
খন্ধন-সভি-গল্পন গোচন
অচলয়-অলন রঞ্জন
ডম্পু-ভাগ-বিভাগন পদ
নিশ্বির ক্ষেন্দ বঁটা।

শিবরাম ভণিয় তাগরধ্ব নাগরধুগ তদ্ধি লীজ লীজ মৃদক্ষ রজিয় তিয়-ভলিয় ঘটা ॥১৫॥১৫১৮॥

পাঠান্তর

১। 'আড় নিত্বিনী' ক। ২। 'ছবিড' ব।
৩। 'বিষ্' ক, ব, চ। ৪। 'মিলব' ক, ব।
৫। 'ছটা' ক, ব। ৬। 'ডবিতরা' ক, ব, ব।
৭। 'নাগরধুগ্' ক, ব পুবিতে নাই। ৮। 'ডবির'
ব।

টাকা

১—৪। "বিনি" ইত্যাদি। (রাস-নৃত্যকারিশী অঞ্চলনাদিগের) পট অর্থাৎ পরিধের-বসন
আড়বরমর কাদবিনী-চয়কে জর করিরাছে। (উাহাদিপের দেহ-কান্তি) চল্পকপুলসমূহের কল্প-সল্পাদন
ও (কান্তির) আজ্ঞানন করিরাছে। (উাহাদিগের)
বিষাধর কল্পিত হইডেছে; (তাহাতে নাসার নিয়ে
দলন-পঙ্জি কিন্দিৎ দৃশ্য হওরার) বেন ভিশ-মুক্ত
নীড়োপবিই (শুক) পক্ষীর প্রার লোভা হইরাছে।
(বোধ হয়, এ ফ্লে শুকপক্ষীর চঞ্ নাসিকা-রূপে ও
দত্ত-রাজি অন্ত-পংক্তিরপে করিত হইরাছে; শুকচঞ্ব সহিত নাসা উপ্রিত হয় বলিরা, এ ফ্লে
'অন্তর্গাণকে শুক-পক্ষীই বুরিতে হইবে)।

ছ-৮। "ইন্দ্ৰদান" ইড্যাদি। ইন্দ্ৰদনী (অলাজনার।) অস্তমর সমুজ-সরপ; (তাঁলাদেগের) বিন্দ্-রপে শোভযান নির্দাদ সিন্দ্র, চন্দন, বন্দন (ক্ত-চূর্ণ), কেশর-(কুছুম) ও বেশর-নামক নাসা-লভারের মুক্তার ঠাটু কি দীর্ভিবর !

৯—১২। "ধর্মন" ইত্যাদি। (তাঁহাদিপের)
লোচন ধ্রুনের গতিকে গ্রুমা করে ও অচলিত
অর্থাৎ অচ্যুত ক্স্মান ধারা রঞ্জিত। (তাঁহাদিপের)
চর্ম-নূপ্রের বঞ্জন-রটিত শক্ষ জ্রীকৃষ্ণের (ক্সার্শ-তাপের শান্তিকারী।

>७--->७। (नष-कर्छा) विषयांव 'कानव्रवृत्

নাগমধুগ্' ইত্যাদিরণ বৃহদ-রদিশী অর্থাৎ মুবদবাহন-রতা (এক)খ্রীদিপের তদীসমূহ বর্ণন করিতেছেন।

(PRIS I)

বিনোদিনি বিনোদ নাগর।

প্রেমে নাচে আনন্দে বিভার ॥

বাজত কড কড তান।

কঙং রস করতছি গান ॥

গগনে মগন ভেল চন্দ।

ফিরুরে দীপ ধরণ ছম্দ ॥

অপরূপ তুই ক বিলাস।

কহ রাধানোহন দাস ॥৯৫॥১৫১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫১৪ সংখ্যক পছ। ২। 'কত কত' ক, খ, খ, চ। ৩। 'থরি' প-র-সা। - ৮

ীকা

৫ -৬। "গগনে" ইতাদি। আকাশে চন্দ্র (শ্রীকৃষ্ণের সহিত) ব্রজালনা'নগের রাগ-লীলা নর্শনে বোহিত হইলেন এবং প্রদীপ-ধারীর স্থার (রাগ-স্থলী আলোকিত করিরা) পরিশ্রষণ করিতে লাগিলেন। তুলনা কক্ষন,—

"ভূগণ গগনে সগণে রজনীকর
চৌগলে কিরত বীপধর ছক।"
—গোবিকদান; গ-ক-ত, ১২৬৮ সংখ্যক পর্ব।

विश्वाच ।>

বৃন্দাবন রম্য ছান কোটি-চিন্তামণি-বাম রজন-মন্দির মনোহর । আনন্দে কালিন্দা-জলে রাজহংস কেলি করে কনক-ক্ষমল উত্তপল । ভার মধ্যে হেম-পৃষ্ঠং অন্টনলে বেপ্তিভ

অই সধী প্রধানা নায়িকা।
ভার মধ্যে রত্মসন
 বসিলেন ছই জন
ভাম গোরী স্থানর রাধিকা॥
ভাম পারহাস সম্ভাবনে।
নরোত্তম দাস কর নিভ্যানন্দ স্থান্য
সদাই সোভক্ষক ও মোর মনে ও ॥
॥৯৬॥১৫২০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৬৬ ও প-র পুথির ৪০৪৮ সংথ্যক পর। 'শ্রীরাগ' হলে 'কানড়া' প-র-সা। ২। 'হেমপীঠ' ক; 'অই প্রেষ্ঠ' প-র। ৩। 'রমা ছানে' প-র। ৪। 'বসিরাছে' ক, থ, প-র-সা, প-র। ৫। 'জনে' প-র। ৬। 'মণি' প-র। ৭। 'নে' প-র। ৮। 'হাস পরিহাস' ছলে 'সহাস মধুর' প-র; ৯। 'রসমর' ক। ১০। 'শ্রক্ক' প-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

শ্রাম মনোহর স্কার সল।

দুহেঁ চুহাঁ হৈরি হেরি করু কত রল।

নব মধু মাসে নিধুবন গাল।

দুহাঁ স্থা মঞ্ল কৃপ্ত বিরাল।

রাধামাধর রভি॰ -রস-কেল।

বিদাসধ নাগর বৈদগধি মেলি॰ ।

দুচ্ পরিরন্ত পুলক ভুল দও।

চুম্বে লুবধল চুহুঁলন পীব।

উৎপলে পুলত হেমক পীব।

শার্ত নার্রি শার্ত কান ।

শার্ত নার্রি শার্ত কান ।

শার্ত নার্রি শার্ত কান ।

তুহঁ গুণ-রূপ-কুলা-রূস-সাম্। জ্ঞানদাস কর তুহুঁক মহাম । পাঠারর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৬৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বোহেঁ হছ' ক, ' ছছ ছহে' প-র-সা। ৩।
'নিধ্বনে' ক, খ, খ, চ। ৪। 'হছ' প-র-সা।
৫। 'বিদগধ' প-র-সা। ৬। 'নিব' ক, খ,
প্-র-সা; 'সীব' খ। ৭: জানদাসের পদাবলির
মুক্তিত সংস্করণে 'অধুত নার্বি অধুত কান' পাঠ আছে,
কিন্তু আলোচা কোন প্থিতেই ঐকপ পাঠ ছুই ১ইল
না। ৮। 'সীমা' প-র-সা। ১। 'মহিন' ক, চঃ
'মহিমা' প-র-সা।

টাকা

৯—১০। "ছহ" ইত্যাদি। উভরে উভরের অধরামৃত পান করিতেতেন, (অধিকন্ধ) **ত্রীরক্ত** উৎপল (করাস্থালি) বারা অর্ণের নিবলিককে (শ্রীরাধার পরোধর) পূকা করিভেছেম।

১১—১২। "আরত" ইত্যাদি। (গাছ আলিলন হেতু) নাগরী শ্রীরাধা (প্রীক্তকের অল্পারা)
আচ্ছাদিত এবং শ্রীকৃক (প্রীরাধার অল্পারা)
আচ্ছাদিত, পঞ্চবাপ কলপ রসাধিক্য হেতু অবশ
হইল অর্থাৎ তাহার আর বিক্রম প্রকাশের শক্তি
রহিল না। ('অধুত নারবি' ইত্যাদি গাঠের 'অধুত'
শক্ষটির এ হলে কোন সম্ভত অর্থ হয় না; 'অধীর'
অর্থে 'অধুত' শক্ষের প্ররোগ দেখা বার না; 'অধীর'
অর্থ গারুতে 'অভিরসে ভেল অবশ পাঁচবাণ' পরবর্তী
গংক্টির সার্থক্তা থাকে না; স্কুতরাং 'অধুত'
ইত্যাদি পাঠ কোন প্রবিতে পাওরা গেলেও উহা
লিপিক্য-প্রমাদ ক্ষরিত বলিরাই বিবেচনা ক্ষরিতে
হইবে।)

CONTRIB

রতি-রসে বাওল অভিনয় নাহ। অসিয়া-সরোধরে ছুর্ছ অবগাহ। সহজে নিরশ্বশ নাগর-রাজ ।
ভাতে মনমগ-নৃপা-কৌতুক কাজ ।
দৃঢ় পরিরস্তবে খন সিতকার ।
অসুধান কিছিলি কররে ফুকার ॥
কর গহি রাখিও যুগ চকেবা ।
দংশইতে সরসিজ বারব কেবা ॥
কর ছবিবল্লভ সহচরি-কুলো ।
দেশই নিস্কুতে উলাসহিঁ ফুলো ॥

Nave > 0 2 2 1

Hospitelle

পাঠান্তর

১। এই পদটি ২য় শাধার ৩য় শয়বে ৩০১ সংখ্যক পদরশে উভ্ত হইয়ছে; স্বতরাং পাঠান্তর ও টাকা ঐ পদে য়য়বা।

বিহপড়া ৷১

স্থুরভ সমাপি শুভল বর নাগর পাণি রহল কুচ্ আপি। কনক-শস্ত্ৰু^ বৈছে পুক্তকেঃ পুকাওলং নীল সরোকহ ঝাঁপি॥ नाथ *ए*ड (कमय-(कनि-विनारम[®]। মালভি অলি-রমি নাহ আগোরল পুন রভি-রক্তক আশে । প্র ॥ রহল মুখ-মণ্ডল বদৰ মিলাই कमरल मिलारे रिश्ह हन्ना। ্ভাৰর চকোৰ গুড়া রভদে মিলারই পিবই অমিয়া-মকরন্দ ॥ ্জাগি সৰ স্থিপণ मिणि-जब्दण्टव विष्ट्रम-क्राप्त क्रम (अम । ভণ্যে বিভাপতি माज्ञण विकि देवन (का #

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৬৯ ও প-র পৃথির ৩৯/১০ ও ৪২/৪৭ সংখ্যক পদ। 'বিহুপ্ড়া' এবলে 'বিভাস' প-র ৩৯/১০ । 'বরাড়ী' প-র ৪২/৪৭। এই পদটি ২৭৪৪ সংখ্যক পদরপে পুনক্ষভূত হইরাছে। ২। 'রহুল কুচ' কলে 'পরোধরে' পার। ৩। 'কুড়া' পার-সা। ৪। 'পুরুকে' ক। ৫। 'পুরারল' ক। ৬। 'স্থি হে' ইত্যাদি ফলে ১৫২০ সংখ্যক পদের ক, খ, ব, চ ও পার-সা পুরির পাঠ, বধা—

'রাধা মাধব কেলি-বিকালে। অাবেশে কোরে আগোরল পুন পুন অতিশর স্থরত তিয়ালে ॥'

২৭৪৪ সং পঢ়ের ও প-র পৃথির পাঠ, বথা—
"সথি হে মাধ্য কেলিবিপাসে। আরতি রতিকসে কোকে যুমারল পুন পুন স্থরতিক আশো ॥ঞ্চা"

নগেক্তবাবু মিধিলার তালুপত্তের পুথি হইতে এই পাঠের পরিবর্ত্তে নিয়লিখিত পাঠ উভ্ত করিয়াছেন, বধা—

"স্থি হে মাধ্ব কোল বিলাসে। মালতি রমি অলি নাই অগোরসি পুড়ু রতিরকক আসে ॥"

সার প্রিরারসন সাহেবের সংশ্বরণে কিন্তু 'নাই' অপোরাস' পাঠের পরিবর্তে 'নাই অপোরণি' পাঠ দৃষ্ট হর। নগেন্দ্র বারু 'নাই' শব্দের অর্থ—'ভার' ও 'অপোরসি' শব্দের অর্থ—'ভার' ও 'অপোরসি' শব্দের অর্থনার গ্রীপদাবিল-সাহিত্যে দৃষ্ট হর না; 'আওলাইতেছে' অর্থেও মধ্যম-পুরুষের স্কৃতক 'সি'-বিভক্তিযুক্ত 'অপোরসি' পর হইতে পারে না; স্কৃত্যাং নরেন্দ্র বারুর প্রতিপাদিত অর্থ সমর্থনিবার্গ্য নহে। সার প্রিরারসন এই প্রের ইংগেনি অন্থবাদে 'নাই' মধ্যের অর্থ 'bendeth' ও 'অপোর্থি' শব্দের অর্থ 'watcheth' দিখিরাহেন। ব্যক্তঃ এ ক্লে 'নাই'

প্রকৃত পাঠ হইলে, উহার অর্থ 'নোরাইরা' অর্থাৎ 'bending' হুইবে; কিন্তু আমাদিগের বিবেচনা হর ুবে, নগেন্দ্র হাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিপ্তান্তর হাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিপ্তান্তর হাবিদ্যান্তর কিংবা স্থান গ্রিপ্তান্তর হাবিদ্যান্তর পাঠ "হরিবল্লভ" নামে প্রসিদ্ধ বৈক্ষবাচার্য্য বিশ্বনাপ চক্রবর্ত্তী মহোদ্যের স্ক্লিভ 'ক্লণ্দা-গীত-চিন্তামণি' গ্রন্থেই দৃষ্ট হয়, ব্যা—

'স্থি হে কেশ্ব-কেলি-বিলাদে।
মালতি অলি-ম্নি নাহ আলোরল
পুন রতি-রজক আশে॥'
অর্থাৎ 'পুরত সমাণি' ইত্যাদি প্রথম কলিতে
নারকের রতি-প্রাপ্তি বর্ণন করিয়া, দ্বিতীর কলিতে
প্রকর্তা প্রীরাধার শরন-পদ্ধতি বর্ণন করিয়া বলিতেছেন বে, আলিছারা রমিত মালতী (ধ্বনি-প্রমা
অর্থে নারিকা) পুনর্কার রতি-বিলাদের আশার
নাথকে (ধ্বনি-প্রমা অর্থে নারককে) অভাইয়া
ধরিয়া রাধিল। গীততিভামণির গাঠই সমীচীন

' অতঃপর ১৫২৩ সংখ্যক পদে ক, ধ, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নিয়লিখিত প্রক্রিপ্ত কলিট দৃষ্ট হয়, বধা,—

(बार्ट्स प्रत्न श्रहीण हहेन।

'হছঁ হছঁ নিবিড় আলিলনে চুম্বই

হছ'-রলে হছঁ মন ডোর।

অধর-হুধারল পীবই হুহুঁ হুহুঁ

কোকহ আরতি-ওর॥

পদক্ষতকর ৪র্থ দাধার ২৭৪৪ সংখ্যক পদে, কিংবা 'পদাস্ত-সমূত্র', 'গীতচিত্তামণি ও 'পদাস্ত-মমূত্র' প্রছোকর' প্রছে এই কলিটি না ধাকার এবং 'পদাস্ত-মমূত্র' প্রছে রাধানোহন ঠাকুর কর্তৃক ইহার প্রায় সমূপ-ভাষাত্মক 'বদন মিলাই' ইত্যাদি কলিটি উদ্ভ ও ব্যাখ্যাত হওবার, 'হহু' হহু' ইত্যাদি কলিটি প্রক্রিও বলিয়াই প্রতীতি হইতেছে।

१। 'বছন' ইভাদি কলিটি ১৫২০ সংখ্যক পদে
নাই, কিছ এব দাখার ২৭১৪ সংখ্যক পদে ৩

'পৰামৃত-সমূত্ৰ' প্ৰভৃতি সকল প্ৰছেই আছে; স্থত হাং উহা অপৰিহাৰ্য্য বোৰে মূলে গৃহীত হইল। ৮। 'নিলি অবলেবে' ইত্যাদি তণিতার কলিট কেবল 'পদ-ৰত্নাকর' পুণিতে আছে; ইহার পৰিবর্তে লগেক্ত বাবু তালপত্রের পুণি হইতে নিম্নলিখিত পাঠ উদ্ভূত করিয়াছেন, যথা—

'ওণই অমিকর প্রন্থ মধুরণতি
রাধাচরিত অপারে।
রাজা সিবসিংহ রূপনরাখন
প্রকবি তন্ধি কঠছারে॥'

নগেক্স বাবুর ক্বত ইহার অর্থ—'অমিকর—অমৃতকর, শিবসিংহের মন্ত্রী।' অমৃতকর নামের সহিত
বুক্ত ভণিতা নগেক্স বাবুর সংগ্রহেও আর নাই।
বিশেষতঃ স্যর গ্রিয়ারসন ইহার পরিবর্তে নিরলিখিত পাঠ উদ্ধৃত করিয়াছেন, বধা—

'ভণহি' বিভাপতি ভনহ মধুর পভি রাধা চরিত অপারে।

রাজা শিবসিঁহ স্কণ নারারণ প্রাণবতী কঠহারে ॥'

এ হলেও ভাল-পত্তের পুথির পাঠ আন্ত বলিরাই_। অন্ত্যান হয়।

টাকা

৮—১১। "বদন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার)
বদনে (নিজের) মূথমঞ্জল, নিলাইরা (শ্রীরুক্ষ)
রহিলেন—বেন চক্র (নীল) কমলের সহিত নিলিত
হইল। (চক্রের সহিত কমলের স্বাতাবিক বৈরিতা
থাকার এই অসম্ভব-নিলন হারা 'অভ্তোপনা'
অগন্ধার ঘটিরাছে।) শ্রীরুক্ষের চঞ্চল-মর্থন-রূপ
শ্রুর ও শ্রীরাধার নিঃম্পন্ধ-নরন-রূপ চকোর পর্মশার
রসোজ্বাস বিশ্রিত করিরা (পরম্পারের) রুপার্তরূপ মধু পান করিতেছে।

তথা নাগ।
নওল কিশোর নওল নাগরিয়া।
আপন ভূজে শুদা-মুখ-মণ্ডল শুদা- উরে নিজ উর ধরিয়া ॥
করত বিনোদ তরণি তনয়া-তট
উপারে অমির-রস ভরিয়া ॥১০০॥১৫২৪॥
ইত্যাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

অথ ফুল-দোল। তত্র শ্রীমহাপ্রভু। ভুড়া।>

ফুলবন গোরাচাঁদ দেখিয়া নয়নে।
ফুলের সমর গোরারং পড়ি গেল মনে।
ঘন জয় জয় দিয়া পারিষদগণে।
গোরা-গায়ে ফুল পেলিও মারে জনে জনে।
প্রিয় গদাধর সজে আর নিভানন্দ।
ফুলের সমরে গোরার হইলও আনন্দ।
গাদাধর সজে পছ করয়ে বিলাস।
বাস্থদেব ঘোষ এই করলও প্রকাশ।

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'লোরা' ক, প-র-সা। ও। 'ফেলি' ক। ৪। 'সমরে' ইড্যাদি ছলে 'সমরে সৌর বিহরে' প-র-সা। ৫। 'রস' ম।

বরাড়ী।>
বন মাহা কুস্থ ভোড়িং সব স্থিগণ
সরস সমর করু ভাহিঁ।
মারত বদন নেহারি কুসুম-শর
শোহত সমরক মাহিং ॥

কো কছঁ মরমক। কেলি।
নওল কিশোর নওল বরণ নাগরি
ললিভা বিশাধা। সখি মেলি ॥ এ ॥
মণিময় ভ্ষণ ভমু ভমু শোহন
রুণু রুমুণ নৃপুর বাজে।
গোবিন্দদাস কহ রমণি-শিরোমণি
জীতলা বিদগধ-রাজে ॥১০২॥১৫২৬॥

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভৌরি' ব; 'ভেজি' চ। ৩। 'সাহি'
প-র-সা। ৪। 'সমরড' প-র-সা। ৫। 'নব'
ক। ৬। 'ললিডাদিক' প্র: পুৰি। ৭। 'ঝুরু
ঝুরু'ব, প-র-সা। ৮। 'জিতল'ক, চ, প-র-সা।

পাঠান্তর

कनानि ।>

 লেই সব স্থিগণ ফুলক গেন্দু ভারয়ে শ্রামক অবে। আপত শ্যাম ব্ৰড় রণ পণ্ডিড वर्षे भूवन कति भए ॥ অপরুপ রাইক কেলি। দূরহি তাকি গেন্দু পেলিং মারুরে শ্যাম-অকে স্থি মেলিং ॥ এ ॥ রোখলি তহিঁরণ- রসিক-শিরোষণি ফূল-ধ্যুক পেই হাত। এক বেড়ি ডারয়েণ শত শত গেন্দু সবছ স্থীগণ মাণ্ড ॥ রমণি ভেল এক্ষুণ যুগৰি যুগ শ্যাসক অংক পড়ায়ে ফুলরাশি। ফুল-ধমু ছোড়ি করছি কর্ণ বার্তী>> (भोत्रपान देश तन भत्रकाणि ॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১০৭২ সংখ্যক পদ।
২। 'আঙল' ক। ৩। 'ত্বল' ক, খ, চ প-র-সা।
৪। 'কেলি' ছ। ৫।' 'শ্রাম-' ইত্যাদি ত্বলে
'কৌডুকে শ্রাম সধী মেলি' খ। ৬। 'ফুল' ক,
খ, প-র-সা। ৭। 'ডারত' প-র-সা। ৮। 'সাখ'
প-র-সা। ১। 'এক্যুখ' ক, প-র-সা। ১০। 'ক্ত' ক, খ, চ। ১১। 'বারঙ' ক।

ভূণালী।১

নিধুবনে রাধামোচন-কেলি।
কুক্ম-সমর করু সহচরি মেলি॥
বুন্দা দেবা বাো গুড ফুলং।
বছনিধ গোডক বচিড বকু তা।
সহচরি কু: ম বিধেশ শ্রাম অল।
গোড়ল পিঞ্জুকুট বছ রল॥
লাখে লাখে গেন্দু পড়য়ে শ্রাম-গায়।
মধুমলল সহ স্থাল পলায়॥
স্বিগণ মেলি দেই করভালী।
ফুল-ধতু লেই ফিরয়ে বন্মালী॥
রাইক সলো করয়ে ফুল-রণ।
কোই না জীভারে সমণ ছই জন॥
আদভ্ত ছত্ত জন কুক্ম-বিলাসণ।
হেরি বস্থনন্দন লানন্দে ভাসং॥

#208#2\:P#

পাঠান্তর

)। ইবাপ-র-সাপুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'সুল' ফ, চ. প-র-সা। ৩। 'বরুল' ক, চ, প-র-সা। ৪। 'বের' পার-সা। ৫। 'সহান' ব। ৬। 'কুসল'ব। ৭। 'উল্ল', প-র-সা।

७वा माव ।>

সমৰ সমাধিয়া যুগল কিলোর। আওল ত্তু যাহাঁ কুত্ম-ভিভোরং # বৃশা দেবি-রচিড ফুল-দোলা। কুলয়ে চত্জন আনন্দে বিভোলা ॥ কুহুম বরিখে সব সহচরি মেলি। গাওত বহুবিধ মনসিজ-কেলি॥ কত কত বন্ধ সুমেলি করি। নাচত গাওত তাল ধরি॥ দোলত হুছ ভন কুত্ম-ছিভোৱে। छूडे मिर्टा छूडे मधि (महे बरकारित• ॥ তডিতে হুডিত ক্ষুণ কলধর-কাতি। প মলে খাওলা মধুকর-পাঁভি॥ অপরূপ দোলত কেলি-নিকুঞে। তুছ পর কুতম পড় ₹৮ পুঞে পুঞে ॥ ছত মুখ হোর ছত মৃত্ মৃত্ হাস। হোর মুগধ বছনক্ষণ দাস ॥১০৫॥১৫২৯॥

পাঠান্তর

>। ইহা গ-র-না পু.ধর ২০৭৪ সংখ্যক পদ।

২। 'কুথ্মক ভোল' ক; 'কুথ্ম হিংগ্রাণ' ব, চ;
'কুথ্ম হিংগ্রাগ' ক, চ।
৪। 'ঝাহেনরে' ব, চ; 'ঝোকারে' প-র-না।
৫। 'আড়ডে' ক, ব, চ। ৬। 'ডগ্র' কন্দা।
৭। 'থাওড' প-র-না। ৮। 'গড়রে' ক, চ,
পর-না।

गठेमक्षत्रो ।ऽ

स्न-बर्न र्माश्रीय स्नम् उत् । स्नम्य वश्या कर्य स्न-प्र ॥ स्नम्य विजित्ता स्नम्य स्म । स्मम्य निविद्या स्न-भूक ॥ क्ल-ख्यू रहित भूगंथ क्ल-वांव।
क्र्ग-भरतः होनन क्लमतं कोन ॥
क्रान खेत्रन वनः क्ल-वांत्र् मम्म।
क्ल-तरम खेळारवर मधुकत-वृत्तः ॥
ब्रानका क्ल-राम क्ल-विनाम।
क्ल करत तह यहनमानांम ॥

>00# >600#

रेडािं वामडी यून-प्रान-नीना।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৭৫ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখিরা' ক, খ। ৩। 'ক্তিতল' ক। ৪।
'বরিখে' ক, খ। ৫। 'ফুল সরে' প-র-সা। ७।
'কুলে' ক, চ, প-র-সা। १। 'তফ্' প-র-সা।
৮। 'ঋররে' ক, খ, প-র-সা। ৯। 'পুল' দ।
১০। 'কুল' ক, চ, প-র-সা।

অথ মাধবী-বিলাস। ভছ্চিত শ্রীগৌরচন্দ্র।

वैद्यान ।>

চৌদিকে ভকতগণ হরি হরি বলে।
রক্ষন-মাণতী-মালা দেই গোরা-গলে॥
কৃত্বম কন্তরী আর সুগদ্ধ চন্দন।
গোরাচাঁদের অকে সব কররে লেপন॥
রাজা-প্রান্ত পট্টবাস কোঁচার বলনি।
কলমল করে কিরেং অক্ষের লাবনি॥
চাঁচর চিকুরে চাঁপা মনোহর বুটা।
উন্নত নাসিকা উদ্ধ চন্দনের কোঁটা॥
আলামুদাবিত সুল সরু পৈতা কাছে।
মন্ত্র বিশ্বন পাঁঞা বুলি কুলি কালে॥
সাল্য বিশ্বন পাঁঞা বুলি কুলি কালে॥

দেবকীনন্দন বলে সংচর সমে।
দেখ সভে গোরাচাঁদ শ্রীবাস-ভবনে॥
॥১০৭॥১৫৩%

পাঠান্তর

)। देश প-ब-ना পूथित २०१७ मः(थाक शक। २। 'अंगमन अनमनं करत' क, थ, ह।

चुड़ी ।३

বিনোদ ফুলেরং বিনোদ মালা विताम भटन प्लाटन। গাঁথিলে॰ মালা ८कान विटर्नामनी विताप विताप कृत्न ॥ अ ॥ विद्रमान दक्षा বিনোদ বেশ विट्नाम वद्रग-श्राम । গলায়• আলা বিনোদ মালা विरनाम विरनामं प्रामिन । বিদোদ চিফুর বিনোদ বন্ধন বিনোদ মালা বেড়া। বিনোগ চাহনি वित्नाम नग्नातन বিনোদ জীবির ভারা।। বিনোদ সুখ বিনোদ বুক वित्नाम (भाषा करता। বিনোদ নাগর विरमाम नगरत विदनाम विदनाम विरुद्ध 🛊 विरमाण हनम विताम वननः वित्नाम निषदा नत्य। विद्यानिमी मुश्र লোচন ৰোলে विदन्ति (भोत्राटक १००४ १००४) পাঠাবৰ

)। देहां शन्त्र-मा श्रुवित २०११ मरवाक श्रेष । बाहे शर्मा वर्व पहिला २००२ मरवाक शरकाश

পুনক্ষ ত হইয়াছে। ২। 'ফুলে' ক। ৩। 'গাৰিল' ष, ह (১৫৩२ मश्याक श्रम)। ८। '(भोत' क, ४, ৰ, চ (১৫৩২ সংখ্যক পদ)। ৫। 'শরীর' ক, ৰ, ष, ५ (১৩१२ मरबाक शक्) । २५७२ मरबाक शक्त ও প-র-সা প্ৰিতে 'গৌর' ও 'শরীর' স্থলে বধাক্রমে 'কেশ' ও 'বেশ' পাঠ আছে, উহাই সমীচীন বোধে मूरन शृहील हहेन। ७। 'श्रमा' क, ४, ठ; 'গলাভে' খ। १। 'বিনোদ' ইত্যাদি স্থলে 'বিনদ लाननि ४; (४, ४, ७ ६ পूथिट 'विरनाम' স্থলে সর্ব্বত্ত 'বিনদ' পাঠ আছে)। ৮। 'বান্ধা' क, ब, ब, ह (১৫ १२ शर्बाक श्रम) ; 'वस' श-व-ना। २। 'दिनम' क, च, च, ह (১৫৩२ मरबाक भए)। ১•। 'विनम' क, प, **५** (२५७२ **मः**थाक **अप)। ১**১। 'वमन' **थ** (১৫৩२ **স**ংখ্যক পদ)। > १। 'विद्यांकिनित्र मत्न' थ (२००२ मःश्वाक भक्)। >0। '(त्रावातात्म' **य**।

बद्राष्ट्री ।>

মাধৰ মাধবি মাধবি-কুঞ্জহিং वित्रहरे माधवि-८वणः। মাধবি-হার বলয় কর-কঙ্গ মাধৰি-স্বচিত কেশঃ॥ (मथ निव मांधवि-त्रण। যাকর কুণ্ডমহি স্বমহি॰ ভূলন মাধৰ মাধৰি সল ॥ঞ্ৰা (या मधु-मरम छन-মত মধুকর বর ব্দবিরত করত ঝন্ধার। विकाशना धन धन মঙ্গল-কলরব ভক্লগণ কল-ফুল>-ভার ॥ कूड्रम छन्मन युग-मरम रलभन कक्र इकिनिश्रन वक्र। ত্রসু তমু১০ উত্তপ্র তমু তমু সতমু মৃ-

শাৰৰ হেনত নক ॥১০৯॥১৫৩০। 😘

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুষির ২০৭৮ সংখ্যক পছ।
২। 'বাধব কুলহি' ক। ৩। 'কেশ' ক, খ,
প-র-সা। ৪। 'বেশ' ক, খ, গ-র-সা। ৫।
'কুম্মহি' ব। ৬। 'ভুলন' ক, ঘ, চ, প-র-সা।
१। 'বিলবর' ক। ৮। 'কুম্বর' ক, খ, ঘ, চ।
৯। 'ফুলে' খ। ১০। 'ফুত্রু তর্ম্ম পুথিতে
নাই।

भाष्त्र । >

চ্যাং চন্দন বন্দন গোরোচন লেপ**ই তুহুঁজন অফ**ঃ।

কুস্ম-শিক্ষার কুস্ম-স্কুমারিকণ করু সথি মাধব সঙ্গ ॥ দেখ দেখ বিনোদ বিলাস।

শ্রীরুন্দাবন নি**রুপম-লোভন**

আনন্দে ফুল ছলে ছাস। প্র ।
কোকিল শবদে পভিরণ গদগদ রবণ
কপোত-শবদে সিঙকার।
মুকুল পুলককুল আসবণ বার বার

অসু লোচনে জল-ধার । হেরি ছুহুঁ সধি সঞ্জে নিমগণ জৌড়নে । কৃত কৃত অতমু-বিলাস।

মাধব হেরি মন আমন্দে ভূলল ১১ আপন সহচরি পাশ ॥১১০॥১৫৩৪॥

পাঠান্তর

)। देश श-त्र-मा श्रुवित २०१३ मध्यास श्रा । १ क्वां क, इ. श-त्र-मा। १। क्वांश्व ४ । क्वांश्व क, क, श्वन्त इ. श-त्र-मा। १। क्वांश्व श्वर्म के स्वांश्व श्वर्म के स्वांश्व श्वर्म के स्वांश्व श्वर्म के स्वांश क

'क्षेत्र प्रक्रमाहिक क्षेत्रमें निर्मेश कर्य मेथिनक वीपर नोर

e-- । "দেখ" ইত্যাদি। (প্রীরাধা ও প্রস্কৃত্তকর) ননোহর বিদাস-দীলা দর্শন কর। অভ্ননীর খোভা-মুক্ত প্রীর্ফাবন (ঐ গীলা দর্শন করিয়া) পূলা-ছেলে হাত করিতেছে।

৮—১১। "কোকিল" ইত্যাদি। (নীলাদর্শন করিয়া প্রীর্কাবনের কিরূপ গদগদ প্রভৃতি
নাছিক ভাবের উদর হইরাছে, তাহা দেখাইতেছেন)
কোকিলের দকে (প্রির্কাবন) গভীর গদগদ-ধ্বনি
ও কপোতের দকে হরার প্রভৃতি শীৎকার-ধ্বনি
(প্রকাশ করিতেছে); (প্রীর্কাবনের তক্সমূহের)
মূকুল (ভাহার) রোমাঞ্চ ও আসব অর্থাৎ মধু বেন
(ভাহার) নরনে অঞ্জ-ধারা অক্সম্ববিগণিত হইতেছে।

शामने ।

চন্দন-চরচিত বিরচিত বেশ।
কুত্ম-বকুল-মালে বারল কেশ।
মাধবি-কুঞ্জে রাই সধি সজ।
বিনহ^ব-বিলাসে মগন শ্রাম-অঙ্গ ।
কাঞ্চন-কেতকি চম্পক-দাম।
ধনি-অঙ্গে বিরচল নাগর শ্রাম ॥
নাগরি কুবলয়ে বিবিধ শিকার।
নাগর-অজে রচত কত আর ॥
কুঙ্গুম চন্দন রাই অজে দেল।
শ্রামতকু স্থামদে লেশন কেল।
শ্রামতকু ব্যামদে লেশন কেল।
শ্রামতকু ব্যামদে লেশন কেল।
শ্রামতকু ব্যামদে লেশন কেল।
শ্রামতকু ব্যামদে লেশন কেল।
শ্রামতকু ব্যামদ ভাকর শ্রেম।

हेड्यापि मांधवी-विनाम । मुश्रादक अवन्त्रीवर (गतम् । हेड्डिक्कीन-मोधानीर नवविश्मकिनानवः ।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০৮০ সংখ্যক পদ।
২। 'বিনোদ' ক, প-র-সা; 'বিনোদ' পাঠে
ছলোভক বটে। ৩। 'বৈছন' ক।

অথ জৈচি পূর্ণিমায়াং স্নান-যাত্রা।. ভতুচিত-গৌরচন্দ্রঃ।

ज्भागो ।>

শশ্ব সৃন্দুভি-নাদং বাজয়ে স্থারে।

গোরাচাঁদের অভিষেক করে সহচরে ॥
গান চন্দন শিলা ধূপ দ্বীপ জালি।
নগরের নাগরিগণ আনে অর্থ্য-থালী ॥
নদীয়ার লোক যত দেখি আনন্দিভ।
ঘন জয় জয় দিয়া সভে গায় গীত ॥

গোরাচাঁদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।

গোরা-অভিষেক-রস বাস্থ ঘোৰ গানে॥

17176001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-য়-সাপ্থির ২০৮১ সংখ্যক পদ।
 -২। 'নাদ' ক, ধ প্থিতে নাই। ৩। 'বাজই' প-য়-সা; 'বাজায়' ব। ৪। 'নায়ীগণ' ক, ধ।
 ৫। 'আর্ঘ্য' (আজা?) প-য়-সা। ৬। 'বেখে' ক; 'ড়নি' ব। १। 'সব' ক।

ধরাড়ী দেশাক।>

তৈল হরিদ্রা আর কুরুস কন্তরী।
গোরা-অঙ্গে লেপন করে নব নব নারী।
স্বাসিত জল আনিং কলসেং পৃরিয়াং।
স্থান্ধি চন্দন আদি তাহেং মিশাইরা এ
জয় জয় দিয়া জল চালে পোরা-গায়।
শ্রীক্ত বোচ্ায়্যাং কেহ বসন পরায়।

সিনাৰ-মণ্ডপে দেখ গোৱা নটরায়। মনের হরিবে বাহুদেব যোব গায়॥২॥১৫৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুধির ২০৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'পুরি' প-র-সা। ৩। 'কলসী' ক। ৪।
'আনিরা' প-র-সা। ৫। 'আনি' ক, দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'নোছাঞা' ক, ধ; 'মুছার'
প-র-সা।

च्या जात्र । ১

বসিলা গৌরাজচন্দ্র রত্ম-সিংহাসনে। শ্ৰীবাস পণ্ডিত অফে লেপয়ে চন্দনে। গদাধর দিল গলে মালভীর মালা। कारशत क्रोप्य प्रभ पिश देश जाला । বচ্চ উপহার যত মিফার পকার। বিভ্যানন্দ সহ বসি করিল ভোজন ॥ ভাষুণ ভক্ষণ করি বসিলা সিংহাসনে। भंठी मिने करिलन मानिनीव जान । পঞ্চরীপ **স্থালি তেহ[ং] আ**রাত্রি° করিল। निर्पाक्षन कति भिरत श्रांक पूर्वदा क्रिन ॥ **७स्त्रथम करत मर्छ भूभा** विश्वया অবৈত আচার্য্য দেই তুলসী চন্দন। प्रिचिट्ड बार्रिय प्रव मदन এक मदन। बिजानम डास्टिन वित्री एएट इटन পোরা-অভিবেক এই অপরূপ লীলা। त्राविक मार्थ वाङ् त्थात्मछ छात्रिला ॥ 10176011

रेणानि औरगोनठऋष ।

প্রাধারন

)। देशों शन्त-महिश्चित्र २०४० मध्यान शह। १। 'बिरश' क, य, व, छ। ०। 'बांबवि' क।

8 1 'COCTES' T. # 7-71 1

व्यथ शिकृष्णक्य वथा।

शांनचि ।>

शिविष्-नमग्र शृह मार । যশোমতি হরিষ বাড়াহ°। কহি সব গোকুল-লোকে। নিজ হুতে কল্প অভিযেকে ৷ গিরিষ-ভপন ভয় লাগি। বাসই। কুমুম-পরাগি। স্থালিতল° বারি মধুর। কলস কলস ভরি পুর । মলয়জ কপুর বিশাই। হিমকর-শীকর পাই। রভন বেদি নিরমাণ। ভাহিঁ আনাওল কান ॥ বাসিত তৈল লাগাই। দাস দাসিগণে আই # শির পর ঢালত বারি। মাধব ছোব বলিহারি #৪॥১৫৩৯॥

পাঠাবর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৮৪ সংখ্যক পদ।
২। 'গিরিশ' ব; 'গিরিস' চ। ৩। 'বাচাই' ক।
৪। 'বাস্ত' ক; 'বাস্ত' ধ, ব, চ। ৫। 'ক্ষীডস'
ক। ৬। 'সীকর' ক; 'গিকর' প-র-সা। ৭।
'ডইি' ক। ৮। 'ঢাস্ড' ক; 'ঢাস্ট' ধ, ব, চ।

व्यक्तिशि ।

চৌদিকে অজ-বধু ধেই জনকার ।

ঘট তরি শির পর ধেই জল-ধার
অপারুপ কার্ড ইব অভিবেক।

চৌদিকে অজ-রুর শিরুর মেশ ।

কুমুর পোলাব করেবুর মারি।

ঘট ক্রিকি প্রায় নিশ্বিক ক্রিকি

সিনান স্থাপি পরই পিতবাস।
সহচরগণ বেচুল চারি॰ পাশ ।
বৈঠল মন্দিরে সহচর মেলি।
বেশ বনাওত আনন্দ কেলি।
মলরজ কুছুম ফুলিওল গন্ধ।
বহুবিধ ঘূতণ লেপরে বহু ছন্দ।
মলরজ-কপুর-বাসিত ফুলহার।
পরায়ল কড্ছ রভন-অলছার।
হেরি বশোমতি তব আনন্দে ভাসং।
মাধব দেখরে রাইক পাল্য ।৫।১৫৪০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০২৫ সংখ্যক পদ।

१। 'বধু' ক। ৩। 'জফোকার' প-র-সা। ৪।
'শির' ইভ্যাদি হলে 'বেরল শির পর ডার' প-র-সা।

१। 'চৌদিকে' ক; 'চৌদিগে' চ। ৬। 'ফ্লীডল'
ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'বেলণ' ঘ। ৮। 'ফ্লীডল'
ক। ১। 'কপুর' চ। ১০। 'ভানে' প-র-সা।
১১। 'পাবে' প-র-সা।

शंवचे ।>

পহিলহি ভ্রদনি পাক রচন করি
ভোজন বহু উপহার।
সহচরি সজে গোপতে হেরি পিরামুখ
আনন্দ রজ অপার ॥
বশোষভি-বচনহি গোরি।
রৌইপি-কর পর কেই বহু উপহার
ভোজন কররে নন্দন³ থোরি ॥এ॥
ইত পরিষ্ঠান
ভাজন রুমানি
আজন রুমানি

বছবিধ শপতি বচন কৰি বশোমতি
ভোজন করাওল রাইরে।
ও রস-সারর ঐছন নিভি নিভি
মাধব অবধি না পাইরে' ।৬।১৫৪১।
ইভ্যাদি ঐীম-কালোচিত অভিবেক।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৮৬ সংবাক পদ। ২। 'প্রিরার্থ' ক। ৩। 'সন্দ-নক্ষণ' ক। ৪। 'পরকাশ' প-র-সা। ৫। 'ক্রপ' প-র-সা। ৬। 'স্বীগ্র' ক। ৭। 'পারে' প্র-সা।

वर्ष नीनां हमहस्त्रका श्रनः यथा।

व्यात्मात्राति ।> छेक्तिता त्यमहा ।

ৰের হো নিলসিরি⁴-রাজহি । মুভন্তা বলরাম সিনান-মণ্ডপ মাঝহি।এ। পথ বন্টা কাঁণী (वर्ष विनाः नीमि मधुत हुन्दृष्टि वाकस्ति। সেবাতি পড়্যারি यहै जित्र संजि ঢার**উ ভাক্**ছ মাধন্তি[•] ॥ क्य क्य ४नि च्य नव भूमि ন্তুতি নতি প্রণিপাত হি। নোরভা আউছুদ **অ**মুখচন্দ্ৰকু গলেন্ড বেশউ^{*} আগহি ৷ জন্ন বছপডি ডিন-লোক-পত্তি

বহু উপহার ভোজন্তি?।

मनिद्रकाठीकरम[>]> मानद्रवस्थ नामद्रवस्थ वर्

(१५-माब्रिशन मार्गाच ।११३० हर।

क्षणारि सामगावा ।

Below son Trains ্ পাঠান্তর

३। वैद्या ग-त-ना श्रुचित्र २०৮१ मध्याम भग। ং: 'শ্লীদ্দিরি' ক। ৩। 'রাজ্হি' চ। এ। 'बीबा' का ८। 'श्रक्षित्रात्रि' श-त्र-ता। ७। 'हात्र्रेष्ठ' ইভাদি হলে 'ঢার উভাকতু মাথন্তি' ক, ধ। উড়িরা-ভারার ছপণ্ডিত অধ্যাপক প্রীযুক্ত রোগেশ-চন্দ্র রার বাহাছর আমাদিপের জিচ্চাদার উত্তরে निवित्रारहन (व, 'छात्रडे छाक्ड मांवर्डि' बाकाछि वक्ष-भून ; 'हात्रखे' यहन 'हात्रहे', 'छावसू' यहन 'ভাহাছু' ৩ 'মাধন্তি' হুলে 'মাথায়ে' ৩% পাঠ रहेरव। भरावनि-माहिरछा चरनक चरन वर्तनान काल कृष्ठीत शुक्रायत अक्बारित वा बह्बहात 'हे' विकक्तित परम 'छे' विकक्तित आतान हुई दत्र। স্তরাং প্রাচীন কালে উড়িয়া ভাষায়ও দেরুপ व्यद्मात्र (व दिन मा, देश निम्हिक नमा यात्र कि ? 'ভাহার্ডু' কোন পুৰিভেই দুষ্ট হইল না—স্থতরাং আৰৱা মূলে 'ভাকড়' পঠিই গ্ৰহণ কৱিতে বাধ্য হইলাব। 'বাৰ্ডি' শক্টি 'রাক্ডি' শ্বের নিতাকর ৰুটে; 'নাথারে' শব্দে নিল থাকে না; স্থভরাং প্ৰকৰ্মা এ হলে 'মাণ্ডি' খক প্ৰয়োগ না করিয়া 'হাধারে' কিংবা ডজণ অভ কোন শব্দ প্রবোগ ক্রিয়াছেন বশিয়া সম্ভব বোধ হয় না, স্নতরাং ইয়া আচীৰ অয়োগ বলিয়া সমৰ্থন করাই বোধ হয় नक्छ। १। '(जोत्रदक' थ। ৰ, চ, প-র-স।; 'লাউহ' ব। এীযুক্ত বোগেল बाब निविद्याद्यत, 'बाउँहि' ७६ शाउँ व्हेटव। ১। 'বেশহঁ' হ। ১০। : 'সোভডি' হ। ১১। শ্রীযুক্ত বোগেশ বাৰু লিখিরাছেন—'মণিকোঠা চলে' বোধ दत्र 'मनिरकाठी फरन' हरेरन। 'फरन' नार्ठ रकान পুৰিতে ৰাই , আমরা 'মণিকোঠাচলে' পাঠ ধরিরাই বর্থ করিতে চেটা করিয়াছি। ১২। 'লালবেদ' হু।

"रनवाि" रेकााि । अनुक स्वार्तन बाव निविधीरकेन (व, 'त्नवाणि' ७ 'नक्षेत्रक्षि' नदसंब वर्-'(ननावर'। क्यांबर्टन व्यवस्था (नवाकि' १। 'बनाकि' के बार

क्तिबाद्याः "'नकावि' अक्रियात्री, ्वश्क्रेक अक्रि-ষারী ; বারণাল। ছতরাং গুলবাভিত ইত্যান্তি नारकात वर्ष--त्रनात्रर ७ श्राक्तिहातीता वष्ठ श्रून क्षित्रा डांशिरशत व्यवीर नीनाहननायु, क्ष्या उ বলরাশের মাধার চালিভেছেন।

>•—>>। "औत्र्वहस्तकु" देखाणि। .**अनुक** বোগেশ বাবুর প্রজিপানিত অর্থ---"গ্রেজ-বেশ रहेरछ चार्गन जीप्रकास मोत्र चार्गिर हा 'নৌরঙ' এধানে সৌন্দর্যা ভর্থ করিছে হইভেছে। সংস্কৃত 'সৌরভ্য' শব্দের 'সৌন্দর্য্য' অর্থ আছে।"

>২--->৫। 'বর' ইত্যাদি। বছণতির বলি-राति ! जिनि बिरनारकत्र चार्थन-एन ; जिनि तप्त-(वहीक्षण कारन क्यां नीन-श्यक्तिक क्रमरवहीरक (থাকিয়া) ভক্তগণের প্রণত বহু উপহার ভোলন করিতেছেন। প্রকর্তা সালবেগ বলে (প্রাকুর ममू(४) (१व-नाती वर्षाए (१व-गानीश्रव नृष्ठ) করিতেছেন।

क्रुहो ।>

এই বারং করুণা কর চৈত্ত নিভাই। মো সম⁴ পাতকী আর ত্রিভূবনে নাই I মুঞি⁶ অভি মৃঢ়-মতি মায়ার নকর। এই সব পাপে মোর তমু জর জর ॥ মেচ্ছ অধন ৰত ছিল অনাচারী। তা সভা হইতে বুকি মোর পাপ ভারী 🛭 অশেষ পার্গের পাপী জগাই মাধাই ৷ অনায়াসে উদ্ধারিলা ভোমরা ছুই ভাই 🛭 লোচন বোলে॰ মো অধমে॰ লয়া নৈল কেনে। कृषि ना स्विरण पत्र। त्क स्विरय जात्न ॥

ইভি তৃতীয়-শাখারাং অঞ্চীবিংশকি পল্পবঃ।

विकेश के हो। दा 'स्वास्थ के श्रीवेरक नारे।

ा 'वृद्धिः क्यस्तरव' कः 'वृद्धिः क्यस्त्य' व,
भेन्युना।

অথ আবাঢ়ে রথ-যাত্রায়াং জ্রীগোরচক্রক রথাত্রে নর্তনং বথা।

यहरे ।>

नीमांहरम कशज्ञाव दाव । **७७**ठा-मन्मिटत हान वांत्र ॥ অপরূপ রথের সাজনি। ভাহে চড়ি বার বহুমণি ! দেখিরা আমার গৌরহরি। নিজগণ লৈয়া এক করি। माना ठन्सन मटक सिम्रा। जनवाच निक्रि याहेग्रार ॥ त्रष (विष्: माज मन्ध्रारात्र । কীর্ত্তন করয়ে গোরা[®] রার 🛭 আজামুলখিত বাছ ভুলি। খন উঠে হরি হরি বলি। भगन एक पिन (मह श्वनि। পশ্য আর কিছুই না শুনি। निजारे क्रेंबड रविदान। नाट बद्धमान जैनियान । मूकुन्तः चन्नुग त्राम बात् । ্দদ বুঝি উচ্চবরে গার। পোৰিন্দ মাধৰ ৰাজ বোৰ। যার গানে অধিক নজোব। क्ष्य बागानक गत्रद्वि । গৰাৰৰ পাতিভাগি করি। TARE THE TREET STATES

विष्य कीर्त्वन नर्त्तत् । विश्व विश्व किर्माण किर्माण

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২-৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'আসিরা' দ। ৩। 'লৌর' ক, চঃাডঃ কড'ক। ৫। 'বৈক্ষব'ধ।

শ্রীচৈতক্সচরিতামৃতে যথা।

· া**উ**হাগ ৷১

লাপনে নাচিতে যবে প্রান্তর মন হৈল।

সাত সম্প্রদার তবে একত্র করিল।
উদ্দণ্ড নৃত্যে প্রভু ছাড়িয়া ছবারং।
চক্র-শুমি জমে কেন লালাভ-লাকার।

নৃত্যে যাহাঁ যাহাঁ প্রান্তর পড়ে পদতল।
সসাগর শৈল মহী করে টলমল।

তত্তে স্বেদ পুলকাশ্রু কম্প বৈবর্ণ।
নানা ভাবে বিবল গর্বব হর্ষ দৈক্ত ॥২॥১৫ ৪৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৯০ সংখ্যক পর। ২ । 'হাড়িবা হড়ার' হলে 'হাড়ি কুহড়ারু' প-র-সা।

हेमन 12

ज्ञान ज्ञान-जारम

নাচে গোরা রার

गटक श्लाम मान

বত বত নহাতাগে ৷ঞা

ভাবেতত অবশ া প্ৰাৰ্থ বিশ্ব বিশ্ব

बारक्टन किंदू में कारन

MIN TO THE PARTY OF THE PARTY O

খোল করতাল কীৰ্দ্তন রসাল चन चन इतिरंगन। वर वर भनि স্থুর নর মুনি গগলে উঠয়ে রোল ॥ बीलांडल-वांनी আর নানা দেবী लांटकर छेप्टन विशे। সভাই সাঁতাৰে তোষের পাথারে ছুৰী বহু অভাগিয়া ১০৪১৫৪৬৪ পাঠান্তর

३ । देश भ-त्र-मा भूषित २०३० मःश्रक भव । 'देवन' चरन 'देवन कन्मान' श-व-ना। २। 'कारव' 4. 9-4-71 I

नवन। सन्दर्गतान।>

চৌদিকে মহান্তং মেলি করয়ে কীর্ত্তন কেলি নাভ সম্প্রদার গার গীত। বাজে চভুৰ্দাশ খোল গগন ভেদিল বোল দেখি জগন্ধাৰ আনন্দিত I উনমত নিত্যানন্দ **লাচার্য্য লবৈ**ভচন্দ্র পণ্ডিড 🕮 বাস হরিদাস। এ সভাবে সজে করি মাকে নাচে গৌর হরি **७२७-मधन** চারি পাশ । रित रित दान दाएँन भग-करत मरी माएन नद्यारम वर्दाय कन-श्रंत । থেমের ভরজ-রজ সুদের কিনিয়া কল ভাবে अके माधिक-विकात । ভাবাবেশে পোৱা ব্যায় নাচিতে নাচিতে বায় নাচে পটানন্দ্ৰ কৰি প্ৰাণ স্বাভৰ शिदन शिदन करन जनमांच । पानम विकासनान राषि (धान-मरनी धेन शाह होते सीमानम् स्वापना वासीमानम्

দূরে গেল ছঃখ শোক প্রেমার ভাসিলং লোক স্থাবর জন্ম পশু পাথী। বে প্রেম-বিলাস-ধাম বঢ় কৰে অপুপীৰ বে দেখিল সেই ভার সাধী ৷ 18136891

পাঠান্তর

३। हेर्चा भ-त्र-मा श्रीवत्र २०३२ मध्यास भव । ২। 'মোহস্ত' প-র-সা। ৩। 'চডুর্ছিন্ডে' ব। ৪। 'পরিপণ তাহে' প-ম-সা। ৫। 'ভাসবে' ব, চঃ 'ভাবার' গ-র-সা।

बांगरकति। जान-जन्मः।>

हिज्ज निजारे चादत त्मान चारे नात्हरत्वर । খোল করভাল পঞ্চম রুসাল जारेबज्ञा जारेबज्ञा[®] बाटक ८त्र ॥ সোণার ক্ষল করে টলমল প্রেম-সুধা-সিদ্ধু মাঝে রে। উত্তম মধ্যম शीन दीन जन এ চেউ সভারে বাজে বে. 🛚 HCH)CBPH

পাঠান্তর

३। हेरा पं-त्र-मा পुवित्र २०३० मश्याक भग। 'जानवार' क, ब, ह ७ भ-त्र-मा श्रविष्ठ मारे। २। 'চৈডভ' ইভ্যাৰি পংক্তির ছলে প-র-সা প্রথির পাঠ वथा--'टेड्ड निछारे ादा दर्शन छारे मरम भविषम मारह रहा" ७। 'छारेच छारेच' भ-व-मा। ।। 'व्यथम' क, ब, ह, श-म-ना । ७ । 'बारब' श-म-ना ।

> विश्वाचात्र ।> াশ করে শক্ষণ দাবোদর।

निय गरिवसम्बर्धाः गाप इ

প্রভুর দক্ষিণ পালে নাচে নরহরি দাসে ামে নাচে প্রিয় গদাধর। নাচিতে নাচিতে প্ৰভু আউলাইয়া পড়ে কভু **का**नांटवरम भटत त्मांशत कत्र ॥ নিভ্যানন্দ-মুধ হেঁরি বলে পছ হরি হরি কৃষ্ণ কৃষ্ণ ডাকে উচ্চশ্বরে। সোঙ্ধরি শ্রীরুন্দাবন প্রাণ করে উচাটন পরশ কররে রায়ের করে॥ 🕮 নিবাস হরিদাস নাচে গায় প্রেমোলাস প্রভুর সান্বিক ভাবাবেশ। ইই রস প্রেম-ধন পাওল জগ-জন গোবিন্দ মাগয়ে এক লেশ ॥৬॥১৫৪৯॥ ইতি তৃতীয়-শাখায়াং উনত্রিংশ-পল্লব:। পঠিস্তির ১। ইছাপ-র-সাপুথির ২০৯৪ সংখ্যক পদ। '**এপানা**র' ছলে 'গানার' ক। ২। 'মুক্ল'

ইত্যাদি হলে 'মাধৰ মুকুন্দানন্দ' প্-র-সা। ৩। 'ন্যাউলাঞা' ক; 'এবাইরা' ধ; 'এলুরাইরা' চ। ৪। 'পড়রে' ক।

অব আবিশ-শুক্লপক্ষে আন্দোলন-ক্রীড়া যথা। বুলন।

ভত্র শ্রীগৌরচন্তঃ।

দ্যধ্যরতা।>
দেশত সুলত গোরচক্র
অপরূপ দ্বিজ্মণিয়া।
বিধির অবধি রূপ নিরূপম

ক্ষিল কৃষ্ণিন জিনিয়া ॥ ঝুলায়ত কড়ং ভক্তবুন্দ

শৌরচন্দ্র বেট্টিরা।

जानराष जयन जन जन वर्ष द्व

क्षेत्रहरू मध्य मधिया

নরন-কমল \ মুখ নিরণল শরদ-চাঁদ জিনিয়া।

নগরের লোক । ধার এক-মুর্থ হরি হরি ধ্বনি শুনিরা॥

ধয় কলিযুগ গোৱা **অবভার** স্থরধুনী ধনি ধনিয়া।

গোরাচান্দ বিনে আন নাছি মনে বাসুঘোষে কৰে জানিয়া #১॥১৫৫০॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুধির ২০>৫ সংখ্যক পদ। । ২। 'ঝুলারত কত' ফলে 'ঝুলাওড' ক। ●। 'করি' প-র-সা। ৪। 'গোরাণদ' প-র-সা।

कारमान ।>

দেশ সধি গৌরচন্দ্র বর রজীং।
বুণত যুগলণ – , কিশোর বৈছনণ
চলত সোই করি ভলীং ॥ এছ।
রচহ শিক্ষার বুলনণ-তুথ (হান্তব

তৈছন° সহচর পাওত আনন্দ গৌর পত্ঁক মননীত॥ বেরি গদাধর লভ লভ বোলভ

মন মাহা কিয়ে ভেল রক।
আজু হাম তুরা সনে বুলন বিলস্থ
সহচরগণ করি॰ সক।
এতে বিলাস গোর পত্ত বিলস্তর

আছে।বলাস গোর পছা বলসন্ত্রে
পূরৰ প্রেম+রসে ভোর।
কহ শিবরাম মনহি তুপ এছন

েলাই করব অব ওর এং।১৫৫১ঃ পাঠাভর

)। देश भन्तना पृषित्र २००७ नाशास्त्र भन्निकः १। 'बलिबा' भन्तना । १००० दशोब' भन्त-मा । গুট্ন প-র-সা। ৫। করি ভলী ছলে
 ক্র ভলিয়া প-র-সা। ৬। ঝুলনে প-র-সা।
 গা বৈহন ক। ৮। বিন ধ। ৯। করণ
প-র-সা।

지하다

নব ঘন কানন শোহন কুঞ্জং।
বিক্সিত কুসুমেণ মধুকর গুঞ্জং॥
নব-নবং পলবে শোভত ডাল।
সারী শুক পিক গাওয়েণ রসাল॥
তহি বনি অপক্ষপণ রচন হিঁডোরা।
ত্যুপুরি বৈঠলি কিশোরি কিশোর॥
ব্রজনরমণীগণ দেওত ক্কোর।
গিরত জানি ধনিশ করতহি শ কোর॥
কত কত উপজ্জল রস-প্রস্তা।
গোবিক্দাস ভহি দেখত রক্ষা গোচার বং ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ২০১৭ ও প-র পুণির ৩০।১১ সংখাক পদ। ২। 'শোভন পূল' ক, খ, ঋ, চ। ৩। 'কুম্ম' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'মধু-কর অল' ফ্লে 'শোভিত অনিপূল' প-র। ৫। 'ল্লা-ন্নন্থ' ফ্লে 'ন্তন' প-র। ৬। 'বোলত' প-র। ৭। 'বনি অপফ্ল' ফ্লে 'অপক্লপ ন্ব' প-র। ৮। 'হিন্দোল' ফা, 'হিন্ডোর' খ, প-র। ১। 'কানি ধনি' ফ্লে 'ধনি কাফু' প-র। ১০। 'ক্র-ল্ছি' প-র।

विका

৭—৮। 'ব্ৰক' ইত্যাদি। ব্ৰহ্মদনাগণ (সেই হিক্ষোণাকে) বকোন অৰ্থাৎ থাকা দিতেছে ; ক্ষমনী জীৱাধা পড়িবে কানিয়া (জীক্ষ) ভাঁহাকে ক্ষোড়ে ধানণ ক্ষিতেছেন।

मायुष ।> বিপিন্-বিহার করত নন্দ-নন্দন স্থবদনি ধনি করি সঞ্চ। চুহু প্রেম-আর্ছি সকল কলাবভি मन मारा उपलल उल ह রতন-হিখোর° পর ্বৈঠল ছুহু জন স্থিগণ দেওত ঝকোরি। প্ৰান্থি ম্বান সগনং রজনীকর আনন্দে করত নিহাি । (पर्थ (पर्व ज्ञानकार इंटिंग्स । মদন-মোহন হেরি মাতল মনসিজ ' ় কামু নিহারে মুখ-চাঁদে। এ। বারিদ গরজি গরজি স্ব খেরল বুন্দ বুন্দ করু পাত। কহ শিবরাম মলয় চল হুত্ত পর মূহ মূহ করতহিঁ । বাত ॥৪।১৫৫৩।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'বিপিনে' খ, প-র-সা। ৩। হিন্দোল' ক।
৪। 'ঝোকারি' ক; 'ঝোকারি' খ, চ । ৫। 'সখন'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'নেহারি' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৭। 'কার্ম' ইড্যাদি হলে 'কানন হেরি'
ক; 'কানন হের' ও; 'কানন হের্ম' চ, প-র-সা।
ব পৃথির পাঠ ব্যতীত অভাত পাঠ অর্থপ্ত ও লিশিকর-প্রমাদ-জনিত বলিরা ব পৃথির 'কার্ম নিহারে'
বুলে গৃহীত হইল। ৮। 'মলর' ইড্যাদি হলে
'সমরে চল হ্র্ম্ম' প-র-সা। ৯। 'ক্র্ডাহি' প-র-সা।

महात (३

নেখ সথি বুলত যুগলং কিশোর। নীলমণি জড়ায়ল কাঞ্চন কোর। লালড়া বিশাখা সখা খুলায়ড় স্থাৰত। আনজে বঙ্গন হৈছি হোঁহে হোঁহা-মুখে। গরজত গগনে সন্ত্রে বন খোর।
রিলিণি সজিনি খেরত চৌওর ॥
বিবিধ কুস্থনে সভে° রচিয়া হিন্দোলা॰।
দোলার যুগল সখী জানন্দে বিভোলা॥
বুলাওত সধীগণ করতালী দিয়া।
বিগলিত চুকুল উদিত খেদ-বিন্দু।
জমিরা করয়ে খেন ছত্ই-মুখ-ইন্দু॥
হেরি সব সধীগণ দোহাকার শ্রাম।
চামর বীজন লেই করয়ে সেবন ॥
ভামর কোকিল সব বসি তর্রু-ডালে।
রতি জয় রাধাক্ষ্ণ রোধাক্ষ্ণ বোলে॥
কর্ছে জগলাথ কনে হবে শুভ দিনে।
সধী সহ দোহাকারে হেরিব বিপিনে॥
॥৫॥১৫৫৪॥

পাঠান্তর

३। ইহাণ-র-সাপৃথির ২০১৯ সংখ্যক পদ।
 ३। 'লোরি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমে সভে' খলে
'কুল্বম সোভে' প-র-সা। ৪। 'হিস্ভোলা' চ।
 ৫। 'য়ৢবরে' প-র-সা।

वैद्यात ।>

দেশ স্থি বুলভ বিনোদ বিনোদিনা।
বুলন উপরে শোভে হেন নাল-মণি॥
বুলি বুলি বুলাওরে সকল স্থীগণ
হেরি আনন্দে মাতিয়া।
হুছ ব গুণ সভে গাওত বাওতং
হেম-পুতলী-পাঁতিয়া।
বুল বার শুক সারী কোকিল
মর্র নাচত মাতিয়া।
হুছ ব না মাহা উরল মন্সিল

বরনে মৃত্ মৃত্ হাস উপক্ষত
হিলন ত্ত দোহাঁ-সাতিয়া।
রভি-রভস-রসে হাদয় গর গর
বিছুরল প্রেম-সাঙ্গাতিয়া ॥৬॥১৫৫৫॥
গাঠাত্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ২>•• সংখ্যক পদ। ২! 'বাজারত'প-র-সা। ৩। 'ছ্হ'ক' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ঘ পথি ছাড়া অভাগ প্থিতে নাই, মুলাকর-প্রমাদে পরিত্যক্ত হইয়াছে।

कश्यक्तो । > মাহ শাঙ্ৰ विद्रिष्य धन धन -ছহ বুলে কুঞ্জ মাঝ। বনি ফুল-মালা রচিত• দোলা তুত্বিচ নটবর বাঞ্ গগনে গরজনি नमटक नामिनि ত্বহু গাওয়ে বছবিধ ভান। কচ্ছপীনা দুছ রবাব বীণা করহিঁ কর ধরু মান । সঙ্গে সঞ্চিনি সবহু রঞ্পি হ্ছ গান-পণ্ডিত শুর। কৌ কানড়া কেদার কোড়া ত্ত রজ-সায়রে বুর । জমু মেঘ দামিনি রূপণ লাবনি বুলত ১ বাধা কান। শুক সারী মোর চকোর বোলভ শিবরাম ছহু গুণ গান ॥৭॥১৫৫৬॥ পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना श्रवित २००० नश्याक नव। २। 'मारब' भ-त-ना। ७। 'वित्रिष्ठि' क, ब्र इ, भ-त-ना। ७। 'त्रारब' भ-त-ना। ६। 'छोन' भ-त-ना। ७। 'मार्ग' भ-त-ना। १। 'रक्ने' देखावि दरम 'रकांकिम खारक वांव रकांको खोडके' প-র-সা। ৮। 'বুর' ক, চ, প-র-সা। ৯। 'রূপরস' ব, 'রূপত্' প-র-সা। ১১। 'বয়ুর' ক, 'মৌর'ব।

অভোচিত নর্ড মার্ছ।

নওল নওল নও রক্ষমে। সুধ শোহানি সূব সঙ্গদে॥ त्रम-माधुति धक्र भ व्यक्तरम । षউ॰ নৃত্যত প্রেম-তরক্ষমে 🛊 উহ সঙ্গে ভামিনি* मगटक मामिनि মধুর যামিনি অভি বনি । সুভগ শাঙ্ৰ বরিখে ভাঙন वुन्नं स्नमन निर्मा निर्मा বদত মোর কতার হাক্যব কীর কোরিল অনগণি। রটভ দরদরং তোয়েণ দান্তর जञ्जायदा गतकि । গাওয়ে স্থি রি জোরি জোরি। রস হেরি হাসই পরারি থোরি । द्यांति द्यांति हक्ष উপাল আওজ বাজে পাখায়জ বিবি বিনাং। वानन वान मनः ঝাগর্না ঝাগ্র নন ভাগর্থি নাগর্ধি দিমি ১০ দিনাং ॥ উহ দৃষ্টি ১২ ঠেরণ পহির ভূখণ यनटक वाहिति २० वालमन्। উষট ঘট ঘট (बा निग् निग् Cचा निश्वासर्ग निश्व थूण थूणं नि वि वि वि नर³ । वार्ष श्रुष् भीमा। यत्र-मध्य ग्रामित वीवा ।

বর বীণ ভাল প্রবীণ পূর্ব

প্রেম-ভরে হিরা হরপনি।

মণি-বিন্দু শর্ম-ইন্দু

করত জয়ত বরখনি।
হংস সারস বদত পাবস

চারু চাতক রস-ঘনি।
বিহরে যে জন্ম শিরোমণি।৮১১৫৫৭॥

পাঠাত্তর

> পুনশ্চ দিনান্তরে ঝুলন। ভচ্চত-শ্রীগোরচন্দ্র।

কানোগ।

কোপ দেশ বৃগত গোর কিলোর।

মুরপুনি-তার গলাধর সলছি,

চান্দনিং-রজনি উজোর ৪

শান্তন মাস গগন মন গরজন

লগণিত লামিনি-মালণ।
বরিশত বারি পানন মুদ্ধ সন্দাহি

স্বাধানাক বিশাল ৪

্ব বিবিধ স্থান বিচিত ভবি দোলাণ খচিত কুমুমচর - দাম। · বট-ভক্ল-ভালে ভোর করি বন্ধন মানভি-গুছ সুঠাম। े देवर्जन ८गोत्र বামে প্রিয় গদাধর বুলন বল-বদে ভাস। সহচর মেলি ঝুলায়ত মৃত্ মৃত্ लाला यदि कि भाग বাজত মুদত্ত পুরব-রস গায়ত সংকীর্ত্তন-সুধ-রঞ। শান্তিপুর-নায়ক নিজ্যানন্দ^ হরিদাস শ্রীনিবাস সক। সঞ্জয় আদি ব্যৱখত পুরুষোত্তম क्कूम उन्दर्भ कृत । উদ্ধৰ বাস নয়নে কব ছেরব গৌর হোরর অমুকুল ১৯॥১৫৫৮॥ পাঠান্তর

)। देश भ-त्र-मा भूषित्र २००२ मश्याक भागा १। 'ठाल' क, थ, ठ। ०। 'छाल' भ-त्र-मा।
। 'छहिं होना' इहन 'हिंहाना' क। ६। 'क्स्यम्ब भ-त्र-मा। ७। 'हा' भ-त्र-मा। १। 'तृष्ठानक्ष्य' भ-त्र-मा।

देवन (बटनांशीत ।)

আজু রচিত নব রতন-হিঁডোর ।

হ্বরধুনি-তার তুল - তর্ল-তর তহিঁ
রসময় গোর কিশোর । প্রা
পরিকর প্রবড় ঝুলায়ত লছ লছ

গাওত তান সরস রস মাতি।

ইম্মটত বোল বোল তক বৈ বৈ

নাচত মধুর মারত বহু তাতি।

নদীয়া নগর না রহণ কোই হর
তেজি চলত চৌদিশে নরনারী।
অধিক উছাহ হোরত হিয়েশ পছঁকর
হাস-মিলিত মুখ-চাঁদ নেহারি ।
অ্বনণ গগনে মগন গণ সহ সুখে
বরিখত কুস্ম করত জর্কার।
নরহরি ভণত ভুবন উমতারল
কো কহঁ অদভূত রল অপার ॥১০॥১৫৫৯॥
০পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১০৩ সংখ্যক পদ।
২। 'রতন হিঁডোর' হলে 'লগিত হিজোর' খ,
প-র-সা। ৩। 'তরল' প-র-সা। ৪। 'উষ্টড মুখে' প-র-সা। ৫। 'কভ' ক, খ। ৬। 'বাছা-রত' প-র-সা। ৭। 'রহে' ক, খ। ৮। 'হিরে' প-র-সাপ্থিতে নাই।

यूनएत्र स्मात রসমর পোরা না কানি কি রঙ্গে মাভিয়া গো। হেরি হেরি গদা-थत्र मूथ कें। थि- े ভন্নী করে কত ভাতিয়াং গো 🛊 নরহরি মুকু-न्तापि° मिन्नग्राप ষ্ত্ৰত্হাসি হাসিয়া গো। স্থুরচিত নব হিডোলা যতনে বুলারত স্থাে ভাসিরা সাে।। মধুর স্থারে গায় কেছো কেছো েকে ধরে ধৈরক শুনিয়া গো.। সে শোভা দেখি আখি কে ক্ষিরাবেণ ু মৈলু মনে মনে গুণিয়া৽ গো 🛊 **এ**छ पिरन कून-ালাৰ বাবে সৰ विनिद्ध मध्य बार्डेब्राप्ट द्या । নরহরি-নাথে टनराव बाटबक

चन्नपुनी-फीटन यारेना ८गा ॥>>॥>८७०॥

পাঠান্তর

)। हेरा भ-द्र-मा श्रुबित २००८ मरबाक भए। ২। ভৌভিয়া চ। ৩। 'মুকুনদ আবাদ' আৰু, भ-त-भा। 8। 'हिएड़ाला' प। १। 'दक क्विताद' ब्राम 'क्रियावादा' क ; 'रक क्रियाब' श-ब-मा। ७। 'পণ্ডিমা' ঘ। ৭। 'শপথ' হুলে 'দব দে পথ' ক; 'नव नभर्य' च ; 'नभर्य' च , ठ , भ-त्र-ना । ৮ । 'बहिरब' क, ब, श-ब्र-मा।

মলার I> .

দেখ সখি ঝুলত রাধা শ্রাম। বিবিধ বল্ল স্থ-মেলিং স্থস্থর তান° মান হঠাম 🥫 🦠 আবাড়ণ গভ পুন মাহ শাঙ্কন স্থদ যমুনা-ভার। **ाणि**नि देखनी स्थमत्र स्थमत्र स्थमत्र মনদামলয় সমীর ॥ পরিপূর্ণ সরোবর প্রফুল্লিভ ভরুবর 🕟 গগনে গরব্বে গভার। বোরু ঘটা ঘন দামিনি দমকভ বিন্দু বরিখত নীর॥ (ভহি) কলপদ্ৰুম-ভন্ন ছাহ শীত্ৰণ রচিত-রভন-হি ভোর। বুলয়ে ভছু পর১১ গোরি শ্যামর यूनारत्र मधि छूटे उत्र॥ ভড়িত ঘন^{্ধ} জমু : দোলয়ে সুহু[®] ভমু ব্দধরে মৃত্ মৃত্ হাগ। ব্যান হেম নিল ১৬ ক্মল বিকশিত স্বেদ-বিন্দু পরকাশ। इतम दर्शित दगारे विजन १० वीजरे 🍎 কপুর ভাষুণ বোগাঁর। ত্রট মেষ ম- লার গাও্ড

লোহন মুদ্দ বাজায় 🕽 🗀

হার লটকড কুজুমচয় বর ভ্ৰমর গুণ গুণ রোল 🕶 🔻 হংস সারস^{১৬} পুসর-শ্বদিভ^{১৭} দাসুরি ঘন ঘন বোল্স্ (হুহুঁ) ভালে চন্দন-চাঁদ চমকিভ ভিলক রচিভ কপোল। চঞ্চল মুকুট স্থাক চন্দ্ৰিক পীঠ পর বেণি দোল। (হুহুঁ) শ্রেবণে কুগুল **Б**थन सन मन হৃদয়ে শশি-মণি-ছার। ঝলকে অভরণ বঙ্গুত কন কন্যু বুকিত বুলন-বিহার # (কোই)মস্থ ঘুস্থ স্থান্ধি ছিব্নকত শ্যাম-গোরি-অক হেরি। স্থি-ভাষ্ণ ইলিভ্ছি দাস উদ্ধৰ করত কুস্থমক ঢেরি ১১২॥১৫৬১॥ পাঠান্তর

३। हेहा श-त-ना श्रीवत २००६ नश्याक श्राप्त २। 'सूरमन' প-ब-ना। ॰ ७। 'छान' **প-ब-ना।** धा 'जावाह' कः '८। 'ठान्म' भ-द-मा। ७। 'ऋरबोहत्र' श-त-मृ। १। 'मम्स मम्स' 💗, 🌂 🏾। ৮। '(बर्च' भ-ब-मा। ३। 'कब्रखक' भ-ब-मा। ১०। 'स्नीउन' क, ब, ब, ह। ১১। 'शर्बि' श-म-ना। ১२। 'मायिनी' श-म-ना। **১●।** 'नीन' क। 28। 'बीचन' क, ४। 2८। 'विन' क, ब, ह, ११-व-मा। ५७। 'मिबि' व। ५१। 'অসর শব্দিত' কলে 'অসৰ সর্বিত' কঃ 'অসুর नवन्ति थः 'नावन स्नवन्ति '। ১৮। 'तान' प, प। ১৯। ('बुनवन' भ-द-ना। २०। 'कान' **4**, 51

् क्लानि ।>

ক্ষত শ্রাম গোরি বাম

আনন্দ-রক্ষে মাতিয়া।

ইবত হসিত রজস-কেলি

ক্লায়ত সব স্থিনি মেলিং
গায়ত কত ভাতিয়া॥ এছ ॥

হেম মণিযুত বর হিঁডোর

রচিত কুসুম-সক্ষে ভোর
পড়লা জায়ত ভাল
ব্দা-বিশিন শোভিত ভাল

নবখন-ভকু দোলয়ে শ্রাম রাই সলে ঝুলভ বাম তড়িত জড়িত-কাঁতিয়া। ভারামণি চন্দ্রহার ঝুলিতে দোলিত গলে দোঁহার ্হিলন তুত্ঁক গাতিয়া॥

চাদ-উজোর রাতিয়া॥

ধিধিকট ধিয়া তাথিয়া° বোল
বাজে মৃদক্ত মোহন রোল
ভিনিনা ভিনিয়া তা ভিয়া°।
তেদ পরণ গ্রাম-পূর
যোর শবদ জীল° সূর
বরণ নাহিক বাভিরা।
বি-জভরণ কিছিণি বছ
বুলনে বাজয়ে বুমুর বছ
বন বন বাজায়ে।

রাধানোহন-চরণে শাশ কেবল ভরসা উদ্ভবদাস ্মান্তিভ শুন্ধিভ ছাতিশ্লাণ ৪১৩/১৫৬২। পাঠান্তর

১। ইহা পার-সা পুথির ২১০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'নাগরী' পা-র-সা। ৩। 'পড়ত' ক। ৪।
'মাতিরা' পা-র-সা। ৫। 'তা পৈরা' ক, খ,চ,
পা-র-সা। ৬। 'ভাতিরা' ক। ৭। 'পবল' ক,
খ; 'পরল' চ। ৮। 'মরদ' ক, ঘ; 'মুরদ' পা-রসা। না 'কীতল' চ। ১০। 'পরিত' খা

বেলোছার ১

কুলত সুখময় শ্যামরং গোরি। বুন্দাত-বিপিন .. নিকুঞ মাঝ মিলি প্রিয় ল'লভাদি ঝুলায়ত খোরি । স্থললিত তথল হিঁডোর মাঝ শ্রন্তি ঝলকত যুগল-রূপ রুচি ধাম। মুগ্মদ-অঞ্জন-পুঞ্জ-জনদ-ভমু কেশর-বিদ'লত-দামিনি-দাম॥ বিজয় নহ সম্ভূল শোভা ডুবন ছত মুখ-চন্দ বিমল পরকাশ। গাওত চৌদিশে হেরি ছুহুঁক গুণ শুক পিককুল হিয়া আধক উলাস ॥ यक्क खमन যন্ত্ৰ জনু বাজত নৃভাতি শিখিকুল উমগ অভঙ্গ। নরহরি কহ ক্রিদ ्का वद्रगव हेर বৃন্দাবন মধি বিবিধ তরঙ্গ ॥১৪:১৫৬৩॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-না প্থির ২১০৭ সংখ্যক প্র।
২। 'খাম' ক, চ। ৩। 'র্ফাবন' ক, ব,
প-র-না। ৪। 'ঘোরি' প-র-না। ৫। 'ভরু'
প-র-না। ৬। 'হর্ছ মুখ-চলু' ইভ্যাদি ভিন্তি
পংক্তি থ প্থিতে গিপিকর-প্রমানে পরিভ্যক্ত হইঃ
রাছে।৭। 'হর্ছক ঋণ' হুংল 'হ্র্ছ কুঞ্জন' প-র-না।
৮। 'ক্রি' ক, ব, ব, প-র-না।

(क्षांत्र ।)

আজু ললিভ হিঁডোর মাঝে। রতে ঝুলত নাগর-রাজে। রাই স্থবদনি বাম পাশ। কভত্ত আনন্দ-সায়রে ভাস। কিবা অদস্ত তুহুঁকং শোভা। নাহিক উপমা ভূবন-লোভা। ত্ত হৈ মুখ্তত সে কেরি। হাসিয়াণ চুম্ব দেই বেরি বেরিঃ । আঁখি-ভন্নী করে॰ কতেক ভাতি। কৰে গদ গদ রভসে মাতি 🛭 ললিভাদি সখী সে হুখে ভাসি। নেহারে দোঁহার বদন-রকে ঝুলায়ত মন্দ মন্দ। মিলিয়া গাওত গীত সুছন্দ। বাজত বেণু বীণ উপাল। मध्त भूषण भूतक ठण ॥ কেহ নাচে রুত ভঙ্গী করি। অতি মোহিত' তা দোঁহে হেরি 🛭 ञ्ब-नाबी निक्र गण्ड ग्राविष् পুষ্প-বৃষ্টি করত রক্ষে 👢 जन्न जग्न भया वृत्सावन खन्नि। শুনিয়া রজে মাতে নরহরি॥১৫॥১৫৬৪॥ পাঠান্তর

>.। देश भ-त-में। পृथित २>०৮ मरश्यक भए।
२। 'लाइक' च, भ-त-में। ७। 'हानि' क, थ,
च, छ। ८। 'दिति दिति' द्राम 'दिति दिति' क्। '८। 'किति' क, च, छ, भ-त-म।। ७।
'छान' च; 'ऋबीना' च। २। 'साछिष्ठ' च;
'मिरिष्ठ' भ-त-मे। ৮। 'निष्यभा' क, च, छ। ३।
'बात बात भवा' क्रिम चनत' क, च; 'क्रम भवा'
च, छ। ,

THE IS

कांनिकीत्र कुन विकतिष्ठ सून मश्च विनिकून পড়বহি পাঁডিয়া ৷ নাচত মোর করতহিঁ সোর অনক অগোর ফিরভহি মাতিয়া। কানন-ওর হেরইভে ভোর কিশোরি কিশোর প্রেম-রসে ভাসিয়া। ज्लन (किन पृष्टं कन (भिन व्यक्त व्यक्त (किन হৃদয় উল্লাসিয়া। ক হয়ে স্থভান করভহি গান রাখত মান বন্ধ হুরঙ্গিয়া। দেই করতাল অভি সুরসাল করে ভালি ভাল वाश्वरय मुक्तिया । কত রস-ভাষ কমল বিকাশ মৃত্ মৃত্ হাস হ্হ-চন্দ্রাননে। উদ্ধবদাস-চিত-মন-আশ তুত্ঁক বিলাস

পাঠান্তর

पत्रणन कानटन ॥১७॥১৫७৫॥

)। देश भ-त-मां भूषित २००७ मृश्युक भए। २। 'कानिनो' क, ह, भ-त्र-मा। ७। 'बालात' क, ४, ४, ५-त-मा। ८। 'कछ दि' क।

क्ष्या साथ ।>

আজু রাধা শুগন সলেতে বুলে।

মণিমর নব হিণ্ডোলাং সাজাইরা

বংশীবট-ডট কালিন্দি-কুলে ।

ললিডাদি রঞে ভলী দরি বেগে

বুলারই সূত্র বদন চাঞাণ।

রসবভি ভূজ পারার নামরে

মরে ভারে ক্লি আঁকুল বৈয়া ।

ভান রজেও চারু চিবুক পরশি

চুম্ব দেই বন মনের সুখে।

ভাষা দেখি সধী হাসেও রসে ভাসি

বসন-মুকল কাঁপিয়া মুখে॥

কোতুক-বচন কহি বুন্দা দেবী

বুলায়ই পুন যভনে ধীরে।

কি আনকা বুন্দা- বনে নরছরি

ভায় জন্ম দিয়া রজেড কিরে॥

॥১৭॥১৫৬৬॥

পাঠান্তর

)। देश श-त-ना श्रीवेत २००० नश्याक शव। २। 'हिस्त्वाना' क। ७। 'हाहिता' च, श-त-ना; 'हाहेता' ह। ८। 'हहेता' च, ह। ८। 'जरन' क। ७। 'हानि' क। १। 'तरनरुष' क, च।

> বিহগড়া কেছারিকা।১ উপলই कांशिन्ति-नीत्र। ভাতে । अधि स्थमत्र भीत्र ममीत्र ॥ 🕮 বৃন্দাবন মাঝ। কলপ-ভক্লণ-ভক্ল সাক। ভাহে বনি রতন-হিঁডোর। পরিষলে অমর অমরিগণ ভোর 🛚 বিবিধ কুহুম শোহে ভায়। बृद्ध युद्ध भनत्र शवन कब्न वात्र ॥ बुर्ल विनिष्ति विनिष्या । 'স্থিলায়ত সখি ছন্ত'-বদন চাহিয়া। চান্দৰি বজনি উজোর। পিৰত অনিয়া-রস ভূখিল চকোর। (किर्दे नाहरे मन-त्रापः। वीशा त्रवाय बाकाटक मुक्टक ॥ ুকুছে প্ৰবন্ধ প্ৰভান। क्छ क्छ बाँग स्वति क्षेत्र भाग ॥

> > **49**

আনন্দ কো করু ওর। হেরি শিবরাম দাস রছ° ভোর॥
॥১৮॥১১৫৬৭॥

পাঠান্তর

)। देश श-त्र-ना श्रुवित २>>> नेश्वाक शह। २। 'अहि' ष। ०। 'विट्नांषिनी' क, छ। ७। 'विट्नांषित्रा' क, छ। ८। 'नीवर्ष्ण' ष, छ। ७। 'वाक्यत्र' श-त्र-ना। १। 'त्रह्म' ष श्रुविष्ठ नारे।

शनने ।>

কুলনা হইভে নামিলা ভূরিতে রসবভী রস-রাজ। বসিলা বন্তনে রডন-আসনে রতন-মন্দির মাঝ 🏾 স্থচামর লেই वीजन वीजह সেবা-পরারণ স্থী। স্থাসিত জলে वषन भाषात्म বসনে মোছাঞা দেখি॥ থারি ভরি কোই विविध विठार **धति छ्छं-नम्राध ।** ৰতহঁ কোৰুকে नबीभन मटह ভোলন করিল অ্থে। ভামুল সালাঞা কোন স্থী লৈয়া (मार्थात वम्रात मिन। এ কেশং-কুহুমে निश्चित्रा निश्चित्रा निल । কুসুম-ডলপে चनर्भ चन्र বসিলা রাধিকা ভাষ। আলসেণ ঈবজ नम्भ मृत्रिक रहित्रा स्वादिक काम क

দেখি স্থাগণে কড্ছ বডনে
শুভারল ছন্ছ তার।
স্থার ইলিভে চরণ সেবিভে
এ দাস বৈক্ষর বার ॥১৯॥১৫৬৮॥
ইভি জুভীয়-শাখায়াং ত্রিংশংপল্লবঃ।
পাঠান্তর
১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১২ সংখ্যক পদ।
২। 'একেক' প-র-সা। ৩। 'অস্সে' ক।

থাভিষেক-বিলাসঃ। আদৌ শ্রীগোরচম্রক্ত। ভোষা।>

আৰু শচিনন্দন-নব-অভিবেক।
আনন্দ-কন্দ নয়ন ভবি দেখ ।
নিভানন্দ অবৈভ মিলিং বলে।
গাওত উনমত ভকভহিঁ সলে ।
হেরইভে নিরুপম কাঞ্চন-দেহা।
ব্রিখরে সবহুঁ নয়ন"-ঘন-মেহা ॥
পুন পুন নিরখিতে গোরা মুখ-ইন্দু।
উহলন প্রেম-কুধারস-দিকু ॥
ভগ ভবি পুরল প্রেম-ভংকে।
বঞ্চিত গোবিন্দ্রনাস প্রস্পে ॥১॥১৫৬১॥

नाशेखन ১। देशं न्द्र-मां श्रीत २००० मःश्रम नव। २। 'मिनि वह' न-त्र-मां। ♦। 'मदह' नदन' दर्ग 'मददन मदह' न-द-मां।

ব্যই।>
আনন্দে ভক্তপণ বেই জন্নব।
বীবাস পণ্ডিভ-বনে মহামহোৎসব॥
পঞ্চপন্য পঞ্চান্ত শভ বট জনে।
মৌরাজের শভিবেক করে মুজুহনে॥

রভন-বেদীর পর বলি গোরাচাক্ষ।

অপরপ রূপ দে রমপ্র-মন-কাঁদ ॥

শান্তিপুর-নাথ জার নিজ্যানক্ষ রায়।

হেরিয়াই গোরাজ মুখত প্রেমে জানি বার॥

মুকুক্ষ মুরারি জাদি স্মধ্র গার।

হরি বলি হরিদাস নাচিয়া বেড়ার॥

কটে কৃষ্ণদাস গোরাটাদের অভিবেক।

নদীয়ার নরনারা দেবে পরতেক॥২॥১৫৭০॥

পাঠান্তর

১। देश श्रम्भना श्रुवित २००८ म्रायास शरा २। 'द्वित' क्रव, श्रममा । ७। 'ज्ञर्ग' श्रममा ।

ভূপালী ।১

শখ-ছুন্দুভি-নাদ বাজরে ত্বেরে।
গোরাটাদের অভিবেক করে সহচরে ॥
গদ্ধ চন্দন শিলা ধূপ দীপ খালি।
নগরের নারীগণং করে অর্থ্যালীং ॥
নদীয়ার লোক সবং দেখি আনন্দিও।
ঘন জর জর দিরা সভে গার গীত ॥
গোরাটাদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।
গোরা-অভিবেক-রস বাস্থ্যের গানে ॥
॥০॥১৫৭;॥

পাঠাক্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪১ সংখ্যক পদ। ২। 'নাগরিগণ' দঃ 'নাগরী লোক' প-র-সাঃ ৩। 'আর্যাহলি' প-র-সা। ৪। 'বড়' দ।

থানৰ।>
আনন্দ-কক্ষ বিভাগনৰ গোৰচক্ৰ সকং।
কোনে ভানি হানি হানি বোগ-হৰ্ব সকং।
সীভানাথ লেই॰ সাথ পৃথিত ক্ৰিয়ান।
স্বাধৰ মানোহৰ শ্ৰিকান পাৰে ।

বরিবাল উচ্চরোল বীর্তনের সাধ।
গোর-শিরণ চালে নীরণ শান্তিপুরনাধ।
অভিবেক সভে দেখা পরতেক পছ।
নৃত্য-গীত-আনন্দিত প্রেম-হাক্ত লছ।
বট জরি চালে বারি গৌরচন্দ্র-মাধ।
শুক্রর্প গৌরবর্ণ ভাব-পূর্ণ গাত।
ক্ষরেপ গৌরবর্ণ ভাব-পূর্ণ গাত।
ক্ষরেপারণ কেশ-ভার চামরের হান্দ।
নৃথ-চন্দ্রণ-ভরে জক্ষরার বৈছে কান্দ।
বঙ্গ মোছি বস্ত্র কোঁচিণ্ণ পরাইলা রামাই।
সিংহাসনে দিব্যাসনেশ্ব বসিলেন বাই।
কবিত্রন্দ্র প্রেম-কন্দ পূজা কৈলা বত।
করি নিভান্ত রামকান্ত ভাহাণ্ণকৈবে কত।

পাঠান্তর

18124921

3। इंश ल-ज-ना श्रीवंज २००२ मः वाक लहा १। 'भरत' का छ। 'ज्यान' का छ। 'तिरव' क, ल-ज-ना। १। 'जेंछरजांग' का छ। 'तिरव' क, ल, ल-ज-ना। १। 'जेरिज' क, ल, ल-ज-ना। छ। 'स्वर्य' का छ। 'ख्रिवंज के छ। 'त्र्य-हज्ज' क, ल, ल ज ना। ३०। 'स्वर्गि क, ल-ज-ना। ३२। 'स्नावांग्रिं वा ३७। 'ख्रारा त्र' क, ल, ल, हा।

यवन ।)

সৌর স্থাপন পরস মনোহর*

ত্রীবাসপথিত সেই ।
সোণ-চম্পদ কনক-বরপণনিন্দি স্থাপর সেই ।
রাসিয়া সেই হাসিয়া সই লই
কাহরে পণ্ডিত ঠান ।
কোহারি ত্রোম-রলে এ মোরং প্রকাশে

শুনিয়া পণ্ডিড **पिर्द १ रत्रविक চরণ-एলে গড়ি বার।** ৰুরয়ে স্ত্রতি নতি প্রেম-ললে ভাসি र्नादक शृथ्म शात # ভাগবভগণে আনিয়া তৈখনে পত্ৰ করে অভিৰেক। বারি ঘট ভরি রাখল সারি সারি গন্ধ আদি পরতেক 🛭 मुकुन्म गर्माधन পণ্ডিত দামোদর মুবারি হরিদাস পার। উঠिन अन्नश्वनि मणग-त्रव स्वि नहीयां-नवनात्री श्राप्त ॥ পণ্ডিত শ্রীবাস্য পছক শিৰে চালি বাবি। कोमिर्ग एतिर्वाम বড়ই উভৱোল मक्न-द्रव भ नव होती 🛭 নিভাই অধৈভ • অভিহ' হরবিভ হেরই ডাহিন বাম। সিনান স্বাপল্ বসন পরায়ল> পুরল সবংগ মন-কাম ॥ কভ**হ**ঁ উপচারি পুৰল> পোরহরি ভোজন আসন বাস। দণ্ডবত মতি कर्म रह खर्डि कर शिवर्षम गांग ४०४/००

পাঠাবৰ

>। देश श-त-नां श्रवित २>८० मरवाक शृक्ष ।
२। 'श्रवणत' य। ०। 'द्यादन' श्र त-नां। ८।
'द्याव' क। ०। 'द्यावट द्याव' व्यत्न 'द्याद द्याव' का का श्रवाच व्यावच द्याव' का का श्रवच व्यावच द्याव' का का श्रवच व्यावच व्यावच द्याव' का का श्रवच व्यावच व्यावच व्यावच द्यावच व्यावच व

১২। 'স্থাপন' ক, খা ১৩। 'প্রশ প্রার্ক' ক, খা ১৪। 'পূর্ক' ক। ১৫। 'পূঞ্জ' ক।

ভবা রাগ ৷১

পূৰ্ব হুখময় ধাম অন্থিকা নগর নাম ষাতে গৌর নিভাইর বিলাস। অভে প্রিয় নর্ম্ম-সখা স্থল বলিয়া লেখা भी बीमान ऋत्भ भवकाम ॥ এক দিন রাত্রি-শেষে দেখিলেন স্বপ্নাবেশে মহাপ্রভু নিত্যানন্দ সনে। কৰে ওতেং গৌরীদাস পুরিবেণ ভোমার আশ আমরা আসিব ছুই জনে॥ নিশ্চয় করিয়া কহি ভোরে। ভোষারে ছাড়িয়া থেনে সোয়াথ না হয় মনে (माँटि वर्व लामाव मन्मिर्व ॥ ध ॥ উঠিয়া বসিলা জাগি শ্বপ্ৰ-ভল-অমুৱাগী मत्न देशन जानक द्रममग्र। **অভিবে**ক বত কাজ ভূরিতে করহ সাজ স্ক্রপ চরণ ধরি কয় ॥৬॥১৫৭৪॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আহে' ক। ৩। 'পুরিতে' প-র-সা। ৪। 'আমারে' ক, খ, খ, চ। ৫। 'সোরাহ্' খ; 'নোহাব' ম, চ।

ত্থা হাগ।>
আনন্দে ঠাকুর গোরীদাস।
ভাকিয়া আপনগণে কহিলেন জনে জনে
বে হর চিজের পরকাশ। প্র-।
আনহ বজল-দ্রব্য তৃত্থ পূকা পঞ্চগর্য
ধূপ দীপ বড উপহার।
আরশাধা মটে বারি কলা রোপং সারি কারি
আর বড বস্তু অলহার।

শত ঘট পূর্ণ জল থড়া° গুরা নারিকল
মধ্যে পাতি দিব্য সিংহাসন।
ভক্তবৃদ্দ-যত জন আর কীর্তনীয়াগণ
আনহ করিয়া নিমন্ত্রণ য়
হেনকালে আচ্বিতে নিত্যানন্দ করি সাথে
কর-ধরাধরি তুই ভাই।
সেই স্থানে উপনীত পণ্ডিত আনন্দ-চিত
স্বরূপাণ কহয়ে বলি যাই ৪৭॥১৫৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রোপণ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'জোড়া' পর-সা। ৪। 'বরপ' প-র-সা।

বরাড়ী।১

দেখ সুই ভাই গোর নিভাই
বসিগা বেদার পরে।
গগন ভেজিয়া জাসিলা নামিরাই
বেন শশি* -দিবাকরে #

হেরি হরবিত ঠাকুর পণ্ডিড নিজগণ লৈরা সাথে। ়

জল স্থাসিত ঘট ভরি কভ ঢালয়ে দোঁহার মাধে ॥

শম ঘণ্টা কাঁশী বেপু বীণা বাঁশী ধোল করভাল বারণ।

জর জর বোল হরি হরি রোল চৌদিগে ভকত গার° ।

সিনান করার্য়া বসন পরার্য়া বসাইলা সিংহাসনে।

ধূণ দীপ খালি লৈয়া অৰ্থাণীত পূজা কৈলা ছুই জনে ॥

উপহারগণ করায়া ভৌজন -ভাষুল চন্দন লেহে ।

ফুল-হার দিয়া শারাত্রি করিয়া আপনিল মুক্তরালে ৪৮৪৯৫৭৬৪

পঠিকির

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৩ সংখ্যক পদ।

२। 'নাবিলা আসিরা' ক, খ, খ, চ। এন 'নিদা'

ক, খ। ৪। 'বাবে' প-র-সা। ৫। 'নাবে'
প-র-সা। ৩। 'আধ্যধানী' প-র-সা।

অধ নিত্যানন্দচন্দ্র স্থাভিষেকঃ।

可管的 15

चनत्रन निजाइँहारमत चिख्रत्रकः। ৰামে গদাধর দাস মনে বড় স্থোলাস প্রির পারিষদগণ দেখে শত ঘট জল ভরি शक्षमया आपि कवि निजारेकारमञ्जानित जारम । ट्योबिट्य सम्बोधन जनकांत्र चन चन আর সভে হরি হরি বোলে॥ ৰাম পাদেৎ গৌৱীদাস হেরই দক্ষিণ পাশ चारवरम नाहरत्र छेकात्र। ্বাস্থ আদি ভিন ভাই আনন্দ মলল গাই यनक्षत्र गुएक वांत्रन ॥ খন হরি হরি বোল গগনে উঠিছে রোল প্রেমার সকল লোক ভাসে। সঙরি° পরমানক ঠাকুর শ্রীনিজ্যানন্দ ७१ शांत्र बुन्यायन घाटम ॥२॥১৫९९॥ পাঠাকর

)। देश भ-त्र-मा भूषित २५८१ मरश्यक् भए। २। 'बिक्टिरक' व, छ। ७। 'द्रब्य' व, व। छ। 'व्यक्तांत्र' क, 'ब्रद्यांकात्र' भ-त्र-मा। ८। 'वांद्रव 'द्रित' भ-त्र-मा। ७। 'बांत्रद्य' क, व, भ-त्र-मा। १४८%(मांकत्रि' क। ৮। 'निकानक्य' क, व। देश कोने 15

কর রে কর রে কর নিত্যানন্দ রার।
গণ্ডিত রাঘব-ঘরে বিহরে সদার
।
গারিবদ সকল দেখরে পরতেক।
ঠাকুর পণ্ডিত সে করেন অভিবেক ।
নিত্যানন্দ-রূপ বেন মদন সমান।
দীঘল নরান ভাঙ প্রাস্ক বরান ।
নানা অভরণ অলে বলমল করে।
আজামুলন্দিত মালা অভি লোভা করে ॥
আজামুলন্ডিত মালা হুখানি চরণ।
ক্রাদ্রে ধরিচা ক্রে দাস বুন্দাবন ॥
॥১০৪১৫৭৮॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा भूषित २১৪৮ मरवाक शह।

় তত্ত্ৰ পূৰ্বাভিষেক:।

वानचे ।>

श्वभूनि-वावि वांबि चबि हावह পুন ভরি প্ন ভরিং চারি। কো জানে কাছে - লাগি অভিনিক্ট্ नीना वृबंधे ना भावि ॥ **८६त्रहेटछ मञ्**ष्यान नाणि वस्तार গীভাগতি এখাৰৈত পৰ 💵 नव नव कुनजी॰ मक्त मक्ती णदि एके राति राति। কৰছঁ গৌৰ পিড খামর লোহিড কৰ্ছ" সুর্ভি পরকাশি । ভাহিনে রহ পুরু-বোড়ৰ পণ্ডিড কামদেব বছ' বাম ৷ অপস্ত্রণ চরিত বেরি সব চম্বিক্ত (शक्तिमान क्रानामः? ३३)॥) १९३॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২১৪৯ ও প-র পৃথির ১১৭ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হলে 'কামোদ' প-র। ২। 'পূন' ইত্যাদি হলে 'পুনহ ভরি ভরি' প-র-সা। ৩। 'কাহে' ইত্যাদি হলে 'কি কাগে কাহে পুন সিঞ্চই' প-র। ৪। 'হু হৈও' ক, খ, ছ, চ। ৬। 'ভুলসীক' প-র। ৭। 'তাহি' ইত্যাদি হলে 'তহি পুন' ইত্যাদি প-র। ৮। 'সিত' ক, খ, ছ, চ, প-র-সা। ৯। 'কো জানে কতহঁ' ফ, খ, ছ, চ, প-র-সা। ১০। 'স্ব চম্বিত' হলে 'চম্বিভ ভেল' প-র। ১১। 'পান' ক, খ।

অধ ঐীকৃষ্ণশ্য দেবাভিষেক:।

क्नाने ।>

ভর পাই অভি দেব স্থরপতি আসিয়া গোকুলপুরী। হর্ষিত হৈয়াং মিভূতে পাইয়া भट्ड कुक-भन भति ॥ স্তুতি ৰতি করি পুন পুন পড়ি व्यवशय क्यारेल। দেবগণ লৈয়া একত্র হইরা कुक-विध्वक देवन । লালিয়া হয়ভি কৃষ্ণ-শিরোপরি চালরে তলের কার। শির পর চালি॰ দেখগণ মেলি वाकान-गवात नीत ह विद्यायती मेरह মুন্দুভি বাবে গদ্ধের বাধুর পার। পড়ে স্বভি-থাণী 🐬 -अप्र अप्र स्वति (एव-क्लब्र **ৰহা**নহৈছিলৰ নানা মতে পুলা কৈল। হৈয়া দণ্ডৰত্তে পড়িলা ভূমিডে **ठब्र८१ भव्र१ टेनल ॥** ভুষ্ট হৈয়া হরি 🗢 ७ मृष्टि॰ कन्नि नव प्रविश्व भारत । शप-त्रक टेनजा অভয় পাইয়া গেলা সব দেবগণে । चारेना खरन न(मप्त्र नम्पन লোকে কেছ না জানিল। গাইল মাধ্ব কৃষ্ণ-অভিবেক (प्रवग्रत (यव देक्न ॥)२॥)१४०॥

>। ইহাপ-র-সাপুথির ২১৫০ সংখ্যক পছ। ২। 'হরবিত হৈয়া' বলে 'হরিব হইয়া' ব। ৩। 'ছালে' ব। ৪। 'লুট' প-র-সা।

পাঠান্তর

অথ শ্রীরাধিকায়া অভিবেকো বথা।
"প্রীহ্যা মজল-গীত-নৃত্য-বিদসবীণাদিবাডোৎসবৈ"রিভ্যাদি বিলাপ-কুসুমাঞ্চলো।

• ভদবধা।

कारनांव ।>

এক দিন সুন্দবি নাই সুবাগরি
সব সহচরিগণ সন্ন ।

বীবৃন্দাবনে কুঞ্জ-নিকেজনে
বৈঠল কৌডুক-রল ।
ভাই পুন ভাগতি লোকানি বোকা
আজ-বনদেবিকি সাধ ।
রাইক শুভ অভি- বেক ক্রণ লাকি
ভাগত উল্লিখ্য গাভ ।

কড শতং ঘট ভরি বারি স্থ্বাগিড ভাহি করল উপনীত i मिथ चुड (भारत कुष्य छन्पन কুমুম-হার মুগলীত 🛊 বাস ভূবণঃ উপ-হার রসায়ণ আনল কভ পরকার। বৈঠল শশি-মুখি রতন-বেদি পর স্থিগণ দেই জয়কার # **ब्येवुम्मा**वन ভূমীশ্বরি করি ভগৰভি কক্ল অভিবেক। टोपिट्श कर कर মঞ্চল-কলরব चानरम् (मार्न (एथ १)७॥)०৮)॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্রির ২১৫১ সংগ্যক পদ। ২। কভ'প-র-সা। ৩: ক্লেলিড'ক, ধ; ক্রেলিড'প-র-সা। ৪। ক্রেণ'ক।

(प्रशासीय १)

ৰীণা উপাক ভক্ষ কত বাছত মধুর মৃদল সজে করতাল। ट्रोपिट्ग जरुहित জয় জয় রব করি নাচত গাওত পরম ংসাল ঃ দেখ দেখ রাইক শুভ অভিষেক। বদন চাঁদ জমু ক্ৰক মুকুর ওসু निःभग नीरत यगरकः भरूरङकः। ভগৰতি কঙহ যতন করি রাইক শির পরি॰ চালই বাসিভ বারি। **भ**ऊ-मूचि खुरधूनि सूरमङ्ग-निषदः **व**स् **Cबटन नितरम यदि औरइ टनशति ॥** ৰুঞ্চিত কুন্তল বাহি পড়ারে জল চাসরে মোতিম চরকে জমু। হেরইতে কবিল नव्रन यन ज्ञाद्यः षानत्य (बारन षर्ग-७४ ॥)॥)१४२॥

পাঠাভৰ

১। ইয়াপ-র-সাপ্থির ২১৫২ সংখ্যক পশ। ২। 'নীবে নির্মণ' ক, খ। ৩। 'প্র' প্-র-সা। ৪। 'কুশ্রে' ক, খ, প-র-সা।

द्या प्राप्त ।>

সিনান সমাধান মুচল অল। প্ৰিরণ নালিম বসন সুরঙ্গ 🛭 শ্বিষয় অভরণ ভগবভি দেল। याहै। (यह ८माजन भवित्र । (यम ॥ मिन-मिन्द्र भारा जात्रनि दारे। রতন-সিংহাসনে বৈঠল বাই 🛊 वनकूल-साम (मग्रम वन रमित । क्षेत्रन व्यापन वह या प्राप्ति ॥ दुम्मावद्यम्बद्धिकवि एखन नाम। **ডाहित्न मनिका विभाषा देव्यम बारम ।** মধুমতি ছত্ত। ধরল ধনি মাধ। চিত্রাণ বিচিত্র দণ্ড ধরণ হাত 🛭 চম্পকলভিকা চামর করু গায়। भ/भ-कला भभि मघ बोक्स बाब । ভগৰতি পঞ্চাপ করে নেগ। আরতি করি নিরম্পন কেল 🖁 আর সব সহচরি মঞ্ল গার। भारत छुत्रहि तिशंत्र**हे जात्र** ॥.

. Iselsevol

পঠিবির

১। ইহাপ-র-সাপ্রবির ২১৫০ সংখ্যক প্রদা ২। 'শোভগ' ক, বা ৩। 'আরণ' ব, চা ৪। 'মধুবভি' ক, ব, প-র-সা। ৫। 'ধরিল' ক; 'ধরল' বা ৬। 'বেঅ' প-র-সা। १। 'ক্সম' ক, ব, চ, প-র-সা। ৮। 'ধুবহি' ক। **भूतम्ह और्द्वमाणित्र**का वर्षा।

ভাষা ।

আকাশ ভরিরা উঠে জর জর ধানি ।

নাচে শিব জ্বনা ইক্স চক্র দিনমণি ॥

জন্মতিথি-পূলা কৃষ্ণচক্র-অভিবেক ।

ক্রন-নর-মূনিগণ দেখেং পরতেক ॥

পঞ্চপব্য পঞ্চারুত শত ঘট জলো ।

জর জর দিয়া কৃষ্ণচক্র-শিরে ঢালো ॥

দানা বস্ত্র-বাজ গীত ছুন্দুজির বোল ।

এ তিন ভূবনের লোক বলে হরিবোল ॥

কলরব মহোৎসব জগত বেঢ়িরাণ ।

কান্দে হাসে প্রেমে ভাসে ভূমিতে পড়িরা ॥

অধিন-জ্বনাও-নাথ নন্দের নন্দন ।

নরসিংহ দেব মানেণ চরণে শরণ ॥

১১৬৪১৫৮৪॥

পঠিবির

)। देवां श-त्र-तां श्रुवित्र २०१८ त्रश्वाक श्रवः। । 'स्वय' व । ७। 'छत्रिता' व । ७। 'स्वय एक' व्यरम 'बोस्क त्राका' श-त्र-ता ।

CHAIR IS

আছু বনি নব অভিবেক গোবিদ্দকি।
পর্মানন্দ প্রোম-স্থ-কদ্দকি ॥
বালকন্ত নীল-কলিনি মুখ-শোহাং।
বেরইতে অখিল-ভূবন-মন-মোহাং॥
গোরস কবি কৃত বলদিক নীরে।
গাগরি ভবি ভবি ছারইং শিবে॥

বাজত ঘণ্টা॰ ভাল মুধজ।
জয়॰ দেই পুর-নারীসণ রজ।
বলি বলি বাড়াই চরণারবিজ।
পরমানন্দকে পছ জীগোবিজ।১৭৪১৫৮৫৪

रेणापि चिटियकं।

পাঠান্তর

- ১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১৫৫ সংখ্যক পদ। । 'শোভা'প-র-সা। ৩। 'লোভা' প-র-সা। । 'চারউ' য়। ৫। 'ঘণ্টা কভ' প-র-সা।
- জর জর গোরচন্দ্র জর নিত্যানন্দ ।
 জরাবৈত চন্দ্র জয় গোর-ডক্তবৃদ্দ ।
 জয় রূপ সনাতন ভট্ট রখুনাথ।
 শ্রীজাব গোপাল ভট্ট দাস রখুনাথ।
 শ্রীজাবার্য প্রভু জয়ং করুণা-সাগর।
 কুপা করি দেহে নিজ প্রেম-ডক্তি বর ॥

ইভি একব্রিংশৎ পরবঃ। পাঠান্তর

ঠাকুর বৈক্ষৰ গোসাঞি দলা কর মোরে। দত্তে ডুণ ধরি ডাকেণ এ দীন পাবরে॥

)। हेवा भ-त-ना श्वित २०१७ मरवाण अयः। अरे भवति चण्डा भरवाभ भग्ना चलित्म, अरे भज्ञत्वत्र निर्वित भव-मरवाा अस्ति द्वते एव बह्नित्त रेवा भविष्ठ व्हेण मा। २। '(बात' क, वं। ०। '(वहि' क, वं। ०। 'क्रांकि' भ-व-म।

ইভি পদক্ষতক্ষ-প্ৰতে ভৃতীয়-শাৰা সম্পূৰ্ণ।